

















असली प्राचीन हस्त लिखित

श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्







(१४३७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूपवान्, गुणवान्, कलाओं का ज्ञाता तथा कलाकार के रूप में ही प्रसिद्धि प्राप्त होता है। यह व्यक्ति अपने कुटुम्ब के लिए कण्टक स्वरूप समझा जाता है तथा कभी-कभी इसके स्वभाव में ऐसी कठोरता आ जाती है कि उसके कारण सम्बद्ध लोग तो परेशान होते ही हैं, बाद में यह स्वयं भी आश्चर्यचकित होता है कि मैं इतना कठोर कैसे बन गया। यह पराये काम करने हेतु सदैव तत्पर बना रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से कष्ट मिलता है तथा सन्तान की ओर से भी दुःखी बना रहता है। ३० वर्ष की आयु में इसकी नियुक्ति किसी विशिष्ट कार्य के सम्पादन हेतु की जाती है, तत्पश्चात् यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा पीछे मुड़ कर नहीं देखता। ६५ वर्ष की आयु में इसे संसार से वैराग्य होता है, फलतः ईश्वर भक्ति में लीन रहते हुए ७९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४३८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कठोर प्रकृति, चंचल तथा हठी स्वभाव का तथा जिद्दी होता है। अधीरता के कारण कभी-कभी यह अपने कामों को भी बिगाड़ लेता है। ज्ञानी होते हुए भी यह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहता है। इसका विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त कृपण स्वभाव की तथा धन को सर्वोपरि समझने वाली होती है। इसके पास धन का पर्याप्त संग्रह हो जाता है और कभी-कभी उसकी व्यर्थ हानि भी होती है। ३० वर्ष की आयु में इसे शारीरिक कष्ट होता है। सन्तान के लिए तथा सन्तान की ओर से इसे दुःख भोगना पड़ता है। ३९ से ५७ वर्ष की आयु में यह विशेष उन्नति करता है। ५६ वाँ वर्ष विशेष सुखदायक सिद्ध होता है। आर्थिक दृष्टि से प्रायः सम्पन्न बने रहते हुए भी इसे मान-प्रतिष्ठा का लाभ नहीं होता है। पूर्णायु लगभग ७८ वर्ष की होती है।

भु० सं० २०२२

कु० र०

(१४३९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद वाला, विशाल तथा उदार हृदय का, महत्वाकांक्षी, राजमान्य तथा राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। यह धनी भी होता है तथा परिवारीजनों में श्रेष्ठता प्राप्त होने के कारण उनकी ईर्ष्या का पात्र भी बनता है। इसका स्वभाव रहस्यमय होता है, अतः इसके मन का भेद कोई नहीं जान पाता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी देखने में सीधी-सादी, परन्तु गंभीर स्वभाव की होती है। यह आत्मकेन्द्रित तथा स्वार्थी प्रवृत्ति का होता है, तथापि इसे राज्य, लोक तथा समाज द्वारा यश एवं धन का लाभ होता है। स्वतन्त्ररूप से आजीविका अर्जित करनेवाला यह जातक अनेक साधनों से धन कमाता है। इसे ४५, ४८, ५३, ५८ एवं ६६ वर्ष की आयु में अत्यधिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से कष्ट मिलता है। पूर्णायु ७१ अथवा ७६ वर्ष की होती है।

(१४४०)- इस जन्मांग चक्र का अधिपति अत्यन्त उदार, महत्वाकांक्षी, विशाल-हृदय तथा कला के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता पाने वाला होता है। यह अपने जीवन के ३० वें वर्ष तक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो सम्पूर्ण जीवन के लिए पर्याप्त एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, छरहरे शरीर की, नासमझ तथा स्वयं को सर्वोपरि मानने वाली अहंभावी होती है। यह जातक अन्य स्त्रियों से भी अनुरक्त होता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे लंबी यात्रा करनी पड़ती है। इसकी प्रसिद्धि देश-विदेश में फैलती है। इसके भाग्य में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। यह भाई के सुख से रहित तथा माता का अल्प-सुख पानेवाला होता है। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह उच्चस्थिति प्राप्त करता है। ५६ वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार से सुखी हो जाता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

भू० सं० १२०३

कु० र०

(१४४१) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य कोमल प्रकृति, शर्मीले स्वभाव का, सुन्दर, आकर्षक एवं प्रतापी होता है। इसे अपने परिवारी जनों द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। बन्धु-बान्धव इससे द्वेष मानते हैं। इसके सभी कार्य हानि देने वाले सिद्ध होते हैं। योग्य होते हुए भी इस पर अयोग्यता का दोषारोपण किया जाता है। परोपकारी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होने पर भी इसे अपयश प्राप्त होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। विवाहोपरान्त ही इसकी भाग्योन्नति होती है तथा यह सुखी-जीवन व्यतीत करता है। धन का संचय करना इसे नहीं आता, तथापि यह दूसरों की सेवा करते हुए सफलता का सुख भोगता रहता है। इसे ज्येष्ठ पुत्र का सुख नहीं मिलता। ५० वर्ष की आयु में कुछ धन एकत्र करके यह अपना मकान बनवाता है तथा आनन्द पूर्वक लगभग ८० वर्ष का जीवन प्राप्त करता है।

(१४४२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वच्छ, सद्गुणी, गंभीर स्वभाव का तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। इसकी बुद्धि अन्वेषणात्मक होती है। यह गंभीर दार्शनिक विचारक, मौलिक विचारों से सम्पन्न तथा उद्दण्डता से दूर, छोटी बातों को नापसंद करने वाला होता है। इसे अपने सांसारिक कार्यों तथा मित्रों एवं बन्धुओं के निमित्त किए गए कार्यों के कारण कष्ट प्राप्त होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है तथा स्त्री के सहयोग से ही इसका भाग्योदय होता है। ३२ वर्ष की आयु में इसे अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ होती हैं। यह अपने दुःख को किसी के सम्मुख प्रकट नहीं करता तथा दूसरों के लिए पर्याप्त कष्ट उठाता रहता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। अपने धन को वह बन्धु-बान्धवों तथा धार्मिक कार्यों पर खर्च करता है। इसे अन्य लोगों से भी मान-सम्मान मिलता है। पूर्णायु ८१ वर्ष होती है।

भू० सं० १०२४

कु० र०

(१४४३) - इस जन्माङ्गचक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, सुरुचिपूर्ण, कला-कौशल का ज्ञाता, एवं आमोद-प्रमोद-प्रेमी होता है। यह सुन्दर घर, सुन्दर वस्त्र, कोमल शय्या, सुस्वादु भोजन तथा आनन्ददायक वस्तुओं का उपभोक्ता होता है। इसे जुआ खेलने का शौक होता है। अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी इसका संबंध रहता है। उनके कारण यह कष्ट भी उठाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तीव्र स्वभाव की होती है। वह जातक को अपनी इच्छानुसार चलाती है और यह भी उसके निर्देशों का उल्लंघन नहीं कर पाता। इसे राजकीय-सेवा, जलीय वस्तुओं तथा जल-पान द्वारा धन का लाभ होता है। यह परदेश में रहकर आजीविकोपार्जन करता है। ५७ वर्ष की आयु में इसे प्रत्येक वस्तु की उपलब्धि हो जाती है। ५९ वर्ष की आयु में अरिष्ट-भय होता है, परन्तु पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(१४४४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कला-संगीत का प्रेमी, विद्या-बुद्धि से युक्त, साहित्यिक-अभिरुचि सम्पन्न तथा परोपकारी वृत्ति का होता है। यह उन कार्यों को करने में रुचि लेता है जिनमें अत्यधिक लाभ शीघ्र होता हो। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह राजकीय-सेवा में रहकर भी विशेष लाभ उठाता है। कभी-कभी अपनी दुर्बलता-वश इसे हानि भी उठानी पड़ती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, तदुपरान्त ही इसकी कार्य शैली बदल जाती है। इसे सन्तान की प्राप्ति बड़ी आयु में होना सम्भव है। संतान सुख के अभाव की भी संभावना रहती है। ५५ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। जीवन के २४, २८, ३०, ३५, ३९, ४५, ४८, ५२, ५६, ५९ तथा ६१ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पत्नी से सुख मिलता है। सामान्यतः सम्पन्न एवं सुखी जीवन बिताते हुए यह ८१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सरल स्वभाव का, मितभाषी, ईश्वर-भक्त तथा ज्ञानी होता है। इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है। माता भी पराश्रित रहने के कारण इसे आत्मीयता नहीं दे पाती तथा कुछ रूखा व्यवहार ही करती है। इसका विवाह २१ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। २३ वर्ष की आयु से यह धन कमाने लगता है, जिसके कारण इसे दुःखों से छुटकारा मिलता है तथा सुखी-जीवन का आरम्भ होता है। ३५ वर्ष की आयु से यह साहस अथवा किसी नवीन कार्य द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। इस आयु में धन-प्राप्ति के स्रोतों में वृद्धि होती है। इसे सन्तान से कष्ट तथा शत्रुभय की प्राप्ति होती है। ५० वर्ष की आयु तक इसके पास बहुत धन इकट्ठा हो जाता है। ६१ से ६६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष हो सकती है।

(१४४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, ज्ञानी, धर्मात्मा तथा सदैव लाभ पाने वाला होता है। यह अपने उद्योग एवं परिश्रम द्वारा स्थापित व्यवसाय से धन कमाता है। धनी-मानी परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है। जीवनान्त तक इसके सुखोपभोग में कमी नहीं आती। इसकी शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होती है। विद्याध्ययन समाप्त करने के उपरान्त यह इच्छित कार्य को आरम्भ कर, उसमें सफलता प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, कलामर्मज्ञा, गुणवती, विद्वान् एवं कार्य-कुशला होती है। यह पति को वश में रखती है। इसे पुत्र-लाभ अधिक आयु में होता है, परन्तु उससे विशेष सुख का लाभ भी होता है। इसे राज्य द्वारा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सब प्रकार के सुख भोगता हुआ यह लगभग ८०-८१ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१४४७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर, रूखे स्वभाव का, मर्यादानुसार कार्य करनेवाला बुद्धिमान, विभिन्न कलाओं का ज्ञाता तथा अनेक विषयों का जानकार होता है। यह अपने धन का प्रायः पूरा लाभ उठाता है तथा धर्म को सदैव लाभप्रद स्थिति में रखता है। इसे सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं। शिक्षा अच्छी प्राप्त होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल, सुन्दरी तथा लाभप्रद सिद्ध होती है। वह स्वयं के व्यक्तित्व से लाभ उठाती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा द्वारा धन कमाने लगता है तथा उच्च पदों को प्राप्त करता हुआ अपने धन, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि करता चला जाता है। इसे कोष पुत्रों का लाभ होता है, जो धन तथा सुख की वृद्धि करते हैं। ६३ वर्ष की आयु में अरिष्ट की संभावना रहती है। पूर्णायु ६६ अथवा ८१ वर्ष होती है।

(१४४८) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान एवं कुशल कलाकार होता है। यह २४ वर्ष की आयु में ही उच्च राजकीय सेवा में नियुक्त हो जाता है। भोग-विलास तथा अनेक स्त्रियों के सम्पर्क का सुख प्राप्त करते हुए यह सदैव सुखी बना रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में किसी उच्चकुलीन कन्या के साथ होता है। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी, कला-संगीत, मधुर भाषिणी, व्यवहार-कुशल, पति की अनुगामिनी तथा सौन्दर्य-शृंगार पर अधिक व्यय करने वाली होती है। सन्तानें भी सुयोग्य तथा सुखदेनेवाली होती हैं। जीवन के २४, २८, ३०, ३८, ४१, ५२ तथा ५६वें वर्ष विशेष उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सभी सुख प्राप्त होते हैं। धन की कोई कमी नहीं रहती। ५६ वर्ष की आयु में यह बहुत भाग्यशाली बन जाता है। मृत्यु ७२ वर्ष की आयु के बाद होती है।

(१४४९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी महाबली, पराक्रमी, न्यायप्रिय, तीव्रबुद्धि, आततायियों को दण्ड देने वाला, दृढ़ निश्चयी तथा देव-गुरु-भक्त होता है। यह ज्ञानी, बुद्धिमान तथा किसी भी कार्य को हाथ में लेने के बाद उसे पूरा करके ही साँस लेने वाला होता है। यह राजकीय-सेवा अथवा किसी बड़े संगठन में कार्य करते हुए उच्च पद प्राप्त करता है तथा अपने प्रिय-कलापों से छोटे-बड़े सभी लोगों को प्रसन्न बनाये रखता है। यह माता-पिता को प्रिय, पैतृक-धन को प्राप्त करने वाला, स्वस्थ, सुन्दर, उन्नत कद का, परन्तु कुछ आलसी स्वभाव का होने के कारण प्रत्येक कार्य को आराम-आराम से करने वाला होता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी, कला-कौशल की ज्ञाता, कभी विलग न होने वाली, सुन्दरी, कृपणा, चंचल प्रकृति की तथा पति से दूर रहने वाली होती है। सब सुखों से युक्त ७८ या ७९ वर्ष की पूर्णायु होती है।

(१४५०) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक, दृढ़ निश्चयी, प्रतापी, उदार प्रकृति का, माता-पिता का भक्त, स्व कार्य में संलग्न रहने वाला, धार्मिक प्रकृति का तथा ज्ञानी होता है। यह स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों का भला करने को प्रस्तुत बना रहता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अपने ऊपर अधिक धन खर्च करने वाली तथा पति के लिए कष्टप्रद सिद्ध होती है। यह जातक राजकीय-सेवा तथा यात्राओं द्वारा धनोपार्जन करता है एवं भाग्य पर भरोसा रखता है। ४५ वर्ष की आयु में यह उच्चतम स्थिति प्राप्त कर लेता है तथा भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सुखों से सम्पन्न बना रहता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, धनी-मानी, आज्ञाकारी तथा वृद्धावस्था में सुख देने वाले होते हैं। इसकी पूर्णायु ८५ वर्ष के लगभग होती है। यह पुत्र-पौत्र तथा धन-सम्पत्ति से युक्त सुखी-जीवन बिताता है।

(१४५१)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य शिक्षा-दीक्षा से पूर्ण, उदार एवं आनन्दी प्रकृति का, सुन्दर, स्वस्थ, माता-पिता-गुरुजनों का भक्त और सेवक, आमोद-प्रमोद अथवा अन्य कार्यों में धन को व्यर्थ खर्च करने वाला, साथ ही धैर्य, पराक्रम तथा उद्योगद्वारा धनोपार्जन में प्रवृत्ति रखने वाला भी होता है। २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसी अवधि में इसका विवाह भी हो जाता है, पत्नी सुन्दरी, चंचल स्वभाव की, अनेक कलाओं की जानकार, अच्छे रहन-सहन वाली, रूपगर्विता तथा आयु में बहुत छोटी होती है। ३६ वर्ष की आयु में जातक की आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो जाती है। यह कई स्रोतों से धन प्राप्त करता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। यश, मान तथा धन से पूर्ण सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७९ अथवा ८९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४५२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सदैव विघ्न-बाधाओं से युक्त जीवन व्यतीत करने वाला तथा प्रायः बीमार रहने वाला होता है। सदैव दरिद्रता की स्थिति बनी रहती है। इसके प्रत्येक काम में अपने ही लोग रोड़े अटकाते हैं। यह धन-लाभ हेतु अनैतिक कार्यों का भी सहारा लेता है। यह राजमान्य लोगों की सहायता से कुछ लाभ उठाता रहता है। विवाद के लिए सदैव प्रस्तुत रहता है तथा किसी से पराजित नहीं होता। २४ साल की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी का पूर्ण सुख इसे ३०-३२ वर्ष की आयु में ही मिल पाता है। २५ वर्ष की आयु में यह परदेश में रहने लगता है तथा वहाँ रहते हुए अच्छे कामों को करता है, अनेक विद्याओं का पंडित बनता है तथा उदार प्रकृति का दानी स्वभाव का रहते हुए सुख प्राप्त करता है। ५५-५६ वर्ष की आयु में इसे पूर्ण सुख मिलता है। सन्तानें गुणवान होती हैं। पूर्णायु ८९ वर्ष होना सम्भव है।

(१४५३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, सुशील, पुण्यवान, सुप्रसिद्ध, अनेक मित्रों वाला तथा सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न होता है। सर्वप्रिय होते हुए भी कुछ लोग अकारण ही इसके शत्रु होते हैं तथा इसे हानि अथवा अड़चनें पहुँचाने की चेष्टा करते रहते हैं, फिर भी न तो इसे कोई हानि होती है और न यह किसी से विद्वेष ही रखता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथापि एक अन्य स्त्री से भी इसका स्थायी सम्बन्ध बना रहता है। इस प्रकार यह दो स्त्रियों का स्वामी होकर भोग करता है तथा दूसरी स्त्री से अधिक प्रेम करता है। इसकी विवाहिता पत्नी (प्रथम स्त्री) से उत्पन्न पुत्र द्वारा इसे कष्ट मिलता है। विवाहोपरान्त परदेश में रह कर यह विशेष धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यात्राओं से लाभ उठाता है। ४५ वर्ष की आयु में विशेष सम्पन्न होता है। पूर्णायु ८४ वर्ष होती है।

(१४५४)- इस जन्मांग चक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ तथा धीर-गंभीर स्वभाव का होता है। इसके कार्यों में प्रायः विघ्न-बाधायें आती रहती हैं, परन्तु यह उनका बड़े साहस एवं धैर्य के साथ मुकाबिला करता है और अपने भाग्य को बनाता है। यह बाल्यावस्था से ही माता-पिता तथा गुरुजनों का भक्त होता है। राजकीय-सेवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर यह बहुत धन, यश तथा सम्मान प्राप्त करता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरंभ कर देता है। प्रारंभ में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु ४० वर्ष की आयु में यह यथेष्ट सम्पन्नता प्राप्त कर लेता है। विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से बहुत प्रेम करता है। पुत्र होते हैं, परन्तु उनसे सुख नहीं मिलता, फिर भी यह पुत्रों को सुयोग्य बनाने का पूर्ण प्रयत्न करता है। पूर्णायु ७४ अथवा ८९ वर्ष की होती है।

(१४५५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक तथा देखने में विनम्र तथा सरल स्वभाव का बुद्धिमान व्यक्ति प्रतीत होता है। तथापि इसका यथार्थ रूप दूसरा ही रहता है। मूलतः यह क्रूर, शठ एवं धूर्त होता है तथा धन-संग्रह करने के सभी साधनों का उपयोग करने वाला, किसी भी अनैतिक कार्य को करने में संकोच न करने वाला, जुआरी, कृपण, चोर तथा महाशठ होता है। अच्छे स्रोतों से भी इसे धन का पर्याप्त लाभ होता है। बाद में इसका स्वभाव बदल भी जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पुत्र सुयोग्य होते हैं। इसे राज्य तथा परदेश से लाभ होता है। ३० वर्ष की आयु तक यह धन-धान्य से सम्पन्न हो जाता है। पुत्र कठिनाई से प्राप्त होते हुए। अनेक प्रकार के सुखों को भोगते हुए भी इसकी सभी महत्वाकांक्षाएँ पूरी नहीं हो जाती। यह केवल ५६ वर्ष की आयु में ही परलोक-गमन कर जाता है।

(१४५६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चालाक, धन-संग्रह करने में चतुर तथा कृपण स्वभाव का होता है। यह दूसरों से बिना बात के ही विवाद अथवा द्रोह कर बैठता है। इसे पिता का अल्प सुख मिलता है तथा बाल्यावस्था से ही यह अपने पाँवों पर खड़ा हो जाता है। परिस्थितिवश उद्यमी तथा परिश्रमी बनकर यह धनोपार्जन के साथ ही विद्योपार्जन भी करता है। अनेक कठिनाइयों का शिकार बनते रहने के कारण यह स्वयं भी बड़ा मायावी हो जाता है। इसके मन के भेद को कोई प्राप्त नहीं कर पाता। विवाह २६-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान् तथा उदार प्रकृति की होती है तथापि यह जातक अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। अपनी पत्नी से भी विशेष प्रेम करता है। पुत्र एक या दो होते हैं। सुखी-जीवन बिताते हुए यह ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४५७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणवान् तथा अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखने वाला होता है। जन्म के समय इसका पिता या तो परदेश में होता है अथवा उसकी मृत्यु हो चुकी होती है। इसकी मां बहुत दुःखी रहती है। पिता इंदिरा-चीन का व्यक्ति होता है। यह जातक अपने परिश्रम से ही आगे बढ़ता है। यह यथेष्ट विद्योपार्जन करता तथा परिश्रम पूर्वक धन का संचय करता है। यह धन को विशेष महत्व देता है, अतः कृपण होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा अच्छे कुल की होती है। वह जातक को अपने प्रभाव में रखती तथा बुद्धिमानी से घर-गृहस्थी का सफल संचालन करती है। यह व्यक्ति देशान्तर में सम्मान पाता है। 30-32 वर्ष की आयु में परदेश में ही इसका भाग्योदय होता है। वहीं रहकर यह धन, सन्तान, भूमि भवन आदि का सुख भोगते हुए ७६ वर्ष की आयु में परलोक जाता है।

(१४५८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व संपन्न तथा शत्रुओं को नीचा दिखाने वाला अत्यन्त प्रतापशाली होता है। यह विपुल भूमि का स्वामी तथा बाल्यावस्था से ही भाग्यशाली होता है। इसकी दो पत्नियाँ होती हैं और दोनों ही जीवित रहती हैं। विवाह 20-27 वर्ष की आयु में होता है। दूसरी पत्नी अवैध-सम्बन्ध वाली होती है। इसके अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध रहते हैं। इसे माता-पिता का अल्प सुख प्राप्त होता है। यह कुछ जन्म की स्वभाव का तथा विपुल सम्पत्ति का स्वामी होने के कारण कुछ उन्मत्त स्वभाव का भी होता है। इसे कोई काम करने या परिश्रम की आवश्यकता ही नहीं होती। यह प्रारब्धवादी होता है। स्त्रियों पर यह विश्वास करता है तथा उन्हीं की ओर से खतरा भी रहता है। इसे शमिगत धन का लाभ भी होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(१४५९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्थूल शरीर का, बलवान, राजा के समान ऐश्वर्यशा-
-ली, माता का विरोधी तथा पिता का अल्प-सुख पाने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की
आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है, तथापि यह अन्य स्त्रियों में भी अनुरा-
रक्त रहता है। २८ वर्ष की आयु में इसे राजकीय-सम्मान मिलता है अथवा यह किसी राज-
कीय पद पर प्रतिष्ठित होता है। इसकी गति-मति गंभीर होती है, फलतः इसके मन की थाह
पाना कठिन होता है। यह स्त्रियों में आसक्ति के कारण ही दुःख उठाता है। अत्यन्त साहसी
होते हुए भी इसकी स्त्री-सम्बन्धी कमजोरी इससे कभी-कभी भीरुता का प्रदर्शन भी कराती है।
इसे ४५, ५३ तथा ५९ वर्ष की आयु में विशेष सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता है। इसके जीवन में
अद्भुत घटनाएँ घटती रहती हैं। यह लगभग ८६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४६०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, वीर, धार्मिक, साहसी, उदार-हृदय, परोपकारी
तथा दानी होता है। सब लोग इसके क्रिया-कलापों को बड़ी श्रद्धा से देखते तथा सम्मान देते हैं।
इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। धन की इसके पास सदैव बहुलता बनी रहती
है। विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी आयु में छोटी होती है। यह उससे बहुत प्रेम
करता है तथा उसकी बातें मान कर चलता है। इसकी पत्नी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाली,
प्रदर्शन-प्रिय तथा स्वतन्त्र विचारों की होती है। वह पति के अनुरूप चलती है तथा अपने वैय-
क्तिक प्रभाव को भी बढ़ाती है। जातक का भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में परदेश में होता है।
संतानें सुन्दर तथा होनहार होती हैं। ४० से ५५ वर्ष की आयु के बीच इसे रोगी-जीवन भी बिता-
ना पड़ता है। पूर्णायु ७८ वर्ष से अधिक ही होती है।

(१४६१) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों का निर्वहन करने वाला तथा अत्यन्त मनस्वी होता है। इसके साहस तथा पराक्रम के बल पर धन का पर्याप्त आगमन होता रहता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी रूपवती, गृहस्थी के संचालन में कुशल, पति को उचित सलाह देने वाली, गुणवती एवं धीर-गम्भीर स्वभाव की होती है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। ३५ से ४५ वर्ष की आयु के मध्य विपुल धनागम होता है। यात्राओं से इसे विशेष लाभ होता रहता है। नीच व्यक्तियों के द्वारा इसे कष्ट प्राप्त होने की सम्भावना भी रहती है। चोरों द्वारा धन का हरण सम्भव है, फिर भी इसके पास धन की कमी नहीं रहती। उदर-रोग के कारण यह दुःख भोगता है। सन्तान सुख देती है। पूर्णायु ७५ अथवा ८१ वर्ष की होती है।

(१४६२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे क़द का, सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। स्त्रियाँ इसकी ओर सहज रूप से आकर्षित होती हैं। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह राज्य कर्मचारी के रूप में भी विपुल धनोपार्जन करता है। अपने अधीनस्थ तथा सहयोगी लोगों पर इसका बड़ा प्रभाव रहता है। इसका विवाह या तो बहुत विलम्ब से होता है अथवा होता ही नहीं है। विवाह होने पर पत्नी सुन्दरी, सुशीला, श्रेष्ठ आचार वाली, दायित्वों का निर्वाह करने वाली एवं सुख देने वाली प्राप्त होती है। परदेश में रह कर यह विपुल धन तथा मान अर्जित करता है। नीच व्यक्तियों के संग के कारण इसे कभी दोष भी लगता है, परन्तु कोई हानि नहीं होती। पुत्र-पुत्री दोनों ही होते हैं। चोट-भय तथा ५० वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट सम्भव है। पूर्णायु ७९ वर्ष की होती है।

(१४६३) - इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी क्रोधी, विद्वेषी, सत्कर्म से हीन तथा दुर्बुद्धि होने के कारण
अनेक प्रकार के कष्ट उठाने वाला होता है। यह अपने ही जाल में फँसने का कष्ट पाता है।
दूसरों का पराभव चाहने के कारण अपना पराभव करता है। जुआ आदि व्यसनों में प्रवृत्त रहता
है। धन की इसे विशेष कमी रहती है। राजकीय-सेवा में किसी निम्न पद पर कार्य करता
है। नीचों के साथ रहने का लाभ उठाता है तथा पर-स्त्रियों का भोग भी करता है। इसका
विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुरूपी होते हुए भी असभ्य-व्यवहार करती है तथा इससे
मतभेद रखती है। वह जातक के पराभव का कारण भी बनती है। सन्तान की ओर से भी
दुःख प्राप्त होता है। ५६ वर्ष की आयु में अस्थिर होता है। सामान्यतः अभाव पूर्ण जीवन
बिताते हुए यह लगभग ७६ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१४६४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य विचित्र-चित्त, भोगी, सुखी, सम्पन्न तथा अपने
पिता से अधिक लगाव-स्नेह रखने वाला होता है। अन्य परिवारी जनों से विशेष लगाव नहीं
रखता। यह अपने पिता के यश की वृद्धि करने वाला, गंभीर, पर-दुःख-कातर, परोपकारी,
तथा दानी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। कुछ समय तक पति-पत्नी में
प्रेम रहता है, फिर वैचारिक-मतभेदों के कारण पत्नी से असन्तोष होता है। इस स्थिति में यह
अन्य स्त्रियों के साथ भी सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। संतान-पक्ष से इसे सुख नहीं मिलता
फिर भी यह अपनी संतानों से बहुत प्रेम करता है। यह राजकीय-सेवा भी करता है तथा नीचों
के संसर्ग से सुख पाता है, परन्तु नीच वर्ग के वे लोग उच्च विचारों वाले होते हैं। सामान्यतः
सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७५ वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(१४६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी पद-दलित गुणीजनों का स्नेही तथा उन्हें ऊँचा उठाने के लिए नित्य सहायता प्रदान करने वाला होता है। यह स्वयं अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा शत्रुओं एवं विवादों द्वारा धन लाभ करने वाला होता है। यह परदेश में रहकर बहुत सुख उठाता है तथा उन्नति करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु स्त्री से मन नहीं मिलता। पत्नी प्रायः रुग्णा एवं पति के प्रति शंकालु तथा ईर्ष्यालु बनी रहती है। संतान की ओर से सुखी रहता है। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसे धन का विशेष लाभ होने लगता है। संतानें कम होती हैं। यह आजीवन धनी बना रहकर सुख भोगता है। इसे राज्य से भी धन का लाभ होता है। ४८ वर्ष की आयु में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं जो ५६ वर्ष की आयु तक दूर हो जाती हैं। पूर्णायु ६८ अथवा ७८ वर्ष की होती है।

(१४६६) - इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, उदार स्वभाव का तथा परदेश में रह कर ऐश्वर्यों का उपभोग करने वाला होता है। इसे अपने पिता से विशेष स्नेह होता है। माता-पिता का भक्त होने के कारण यह उनके सुख को ही अपना सुख समझता है। परिवार के अन्य लोगों से यह बहुत दूर रहता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा तेजस्विनी की होती है। उससे मतभेद रहते हुए भी जातक सुखी रहता है। पत्नी बुद्धिमती तथा उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने वाली होती है। विवाहोपरान्त जातक का पूर्ण भाग्योदय होता है। राजकीय-सेवा के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी यह धन प्राप्त करता है। २८ वर्ष की आयु से यह नित्य सुख तथा ऐश्वर्य पूर्ण सुखी जीवन बिताता है तथा अपने यश की वृद्धि करता हुआ ८६ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(२४६७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था से ही अनेक प्रकार के सुखों को प्राप्त करता है। यह माता-पिता का भक्त तथा परम प्रतापी होता है। यह विशाल हृदय का, दीन-दुखियों के प्रति उदार तथा उनकी सहायता करने वाला होता है। यह विदेश या परदेश में रहकर अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा वहीं पर अपना स्थायी-आवास (मकान) भी बनवाता है। इसका विवाह देर से होता है, परन्तु पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तान हेतु दुःखी रहता है। माँ का आशीर्वाद इसे प्राप्त रहता है। धनागम के अनेक मार्ग खुले रहने से इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। यह अत्यन्त धीर-गंभीर स्वभाव का होता है तथा प्रत्येक परिस्थिति का धैर्य पूर्वक सामना करता है। यह अपने साहस एवं उद्यम से धनोपार्जन करता रहता है। इस प्रकार से सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ८० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(२४६८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल शरीर का, धनी तथा अत्यन्त गुणवान होता है। यह राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी तथा प्रभावशाली होता है। यह वैभव-सम्पन्न, देशभक्तों में सम्मान पाने वाला, यशस्वी तथा हानि के कार्यों से भी लाभ पाने वाला होता है। यह पिता के पश्चात् उनका व्यवसाय की वृद्धि करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है (विवाहोपरान्त भाग्योदय विशेष रूप से होता है। यह आजीवन सुख प्राप्त करता है तथा इसे राजकीय-सम्मान का लाभ भी होता है। मित्रों तथा पुत्रों से इसे कष्ट मिलता है, फिर भी यह उनके प्रति दयालु बना रहता है तथा स्वधर्म एवं कर्तव्य का पालन करता है। यह किसी को दुःख नहीं देता। ४२ वर्ष की आयु में इसे कष्ट होता है। इसे ६५ अथवा ६६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(१४६९)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य को अपनी विद्या, बुद्धि तथा साहस पर बड़ा अभिमान होता है। यह शरीर से दृढ़, क्रुद्ध क्रोधी स्वभाव का तथा अहंकार-पीड़ित होता है। इसके पास धन की कमी नहीं रहती। यह स्थूल-शरीर का, बलवान तथापि धार्मिक प्रकृति का होता है। दान-परोपकार में भी इसकी बहुत श्रद्धा होती है। इसका विवाह लगभग २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुशीला तथा अनुगता कन्या के साथ होता है। अपनी पत्नी से यह बहुत सन्तुष्ट रहता है। प्रत्येक कार्य में उसकी सलाह लेता रहता है। ३५ वर्ष की आयु में इसकी भाग्य वृद्धि होती है तथा ~~यह~~ अपने लिए एक नवीन कार्य की शुरुआत करता है। इसे पिता का सुख न के बराबर मिलता है, परन्तु पिता यदि जीवित रहे तो उसे पुत्र की सम्पत्ति का अहं रहता है। इसे ४८ वर्ष की आयु में ओपरेशन २९ वें वर्ष में दूसरी बार कष्ट होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष से अधिक होती है।

(१४७०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी भीरु-स्वभाव का, चंचल-बुद्धि तथा दयालु होता है। यह अपने दुश्मन की व्यथा-कथा सुनकर भी द्रवित हो जाता है। यह नौकरी पसन्द नहीं करता, अतः व्यवसायी होता है। यह दूसरों के काम में अपना धन खर्च करने में पीछे नहीं हटता। यह गुणी, ईश्वरभक्त तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। इसे किसी पर-स्त्री का कार्य करने में भी प्रवृत्त होना पड़ता है और यह उसके धन की रक्षा भी करता है। यह लोक में मान्य तथा राजा से भी सम्मान प्राप्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा सन्तान से भी सुख प्राप्त होता है। यह जीवन भर कार्यशील बना रहता है तथा मृत्यु पर्यन्त धन, यश तथा सुख-सम्पन्न रहता है। परिवारी जनों तथा ~~माता-पिता~~ से भी इसके मधुर सम्बन्ध रहते हैं। इसे लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(१४८१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, चंचल चित्त वाला, सुदृढ़ शरीर, मध्यम कद का तथा बलवान होता है। यह ग्राम-वास से प्रेमी तथा पशुओं से विशेष प्रेम करने वाला होता है। यह स्वपराक्रम से धनोपार्जन करनेवाला तथा अपने धन से दूसरों का उपकार करने वाला होता है। यह व्यवसाय में भी रुचि लेता है तथा संयोगवश राजकर्मचारी भी बन सकता है। इसे माता-पिता से प्रेम तथा सुख की उपलब्धि होती है। यह राजमान्य होकर, उच्चपदों को सुशोभित करता है। राजकीय-सेवा का योग २८ वर्ष की आयु में बन सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा स्वतन्त्र अभिरुचि वाली होती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुख देने वाले होते हैं। यह ३६ वर्ष की आयु से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ५६ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है तथा ७८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१४८२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, मनस्वी, काव्य-साहित्य का प्रेमी अथवा सर्जक एवं महत्वाकांक्षी होता है। यह चिकित्सक भी हो सकता है। इसे राजकीय-सेवा में उच्चपद पर कार्य-रत रहने के कारण अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। अपनी स्त्री से प्रेम करते हुए यह पर-स्त्रियों में भी अनुरक्त बना रहता है। पिता के द्वारा इसे सुख मिलता है। व्यवसाय में भी इसे धन का विशेष लाभ हो सकता है। भूमि, भवन, वाहन आदि के सुख इसे सदैव उपलब्ध रहते हैं। २८ वर्ष से लेकर ५६ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा विपुल धन अर्जित करता है। यह अपने धन को धार्मिक कार्यों में भी खर्च करता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट होता है, तत्पश्चात ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(१४६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चिन्तन, बुद्धिमान्, गुणवान्, उदार तथापि किंचित् क्रोधी स्वभाव का एवं दयालु प्रकृति का होता है। दीर्घसूत्री होने के कारण यह सभी कार्यों में विलम्ब करता है, तथापि हानि नहीं उठाता। राजकीय-सेवा से इसे आमदनी होती है। इसे २५-२६ वर्ष की आयु से राज्य द्वारा लाभ होने लगता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, गंभीर तथा गुणवती होती है। यह पत्नी से बहुत प्रेम करता है, तथापि अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके संबंध बने रहते हैं। यह किसी के व्यवसाय की देखभाल, व्यवस्था आदि के कार्य से भी धनोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु में इसकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो जाती है तथा इसे राज्य द्वारा मान्यता एवं सुख की प्राप्ति भी होती है। ५६ वर्ष की आयु में अरिष्ट की सम्भावना रहती है। तभी विदेश-यात्रा भी होती है। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

(१४६४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति विद्वान्, बुद्धिमान्, सुन्दर एवं सर्वगुण सम्पन्न होता है। यह साहित्य एवं काव्य-प्रेमी, साहित्य-सर्जक तथा शान्त स्वभाव का होता है। शत्रु इसके सामने टिक नहीं पाते। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोऽनुकूला मिलती है, वह घर-गृहस्थी की सुचारु व्यवस्था करती तथा सम्पत्ति का संचय करने में कुशल होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। यह किसी अन्य स्त्री की साझेदारी अथवा सहयोग से अथवा किसी अन्य स्त्री का कार्य करके पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इस जातक को किसी की मित्रता अथवा साथ पसन्द नहीं होता। किसी वन्ध्या-स्त्री का साथ भी इसे प्राप्त हो सकता है। यह पुत्र-पौत्रों से युक्त भरा हुआ परिवार पाता है तथा सब प्रकार के सुख भोगता हुआ ८५ वर्ष की आयु में परलोकगामी होता है।

(१४८७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कोमल स्वभाव का, विनम्र तथा निर्णयोचित प्रकृति वाला होता है। यह प्रायः आत्मबली रहता है। राजकीय-सेवा से इसे विपुल धन की उपलब्धि होती है। यह अपनी माता के आदेशों का यथावत् पालन करता है तथा उनकी आयु तक उनका संरक्षण प्राप्त किये रहता है। विवाह के मामले में यह सौभाग्यशाली नहीं होता। विवाह होने में कठिनाइयाँ आती हैं तथा पत्नी रुग्णा मिलती है। इसके संबंध किसी अन्य स्त्री से हो जाते हैं तथा कालान्तर में वही स्त्री इसके लिए सुखदायक एवं सच्चा प्रेम करने वाली सिद्ध होती है। सामान्यतः यह अत्यन्त पराक्रमी तथा धनी होता है। इसके भाई आज्ञाकारी, तथा मित्र सच्चे हितैषी होते हैं। सन्तान आज्ञाकारिणी तथा सुख देने वाली होती है। यह स्वस्थ रहते हुए लगभग ८२ से ८८ वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है।

(१४८७६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, परम बुद्धिमान, काव्य-साहित्य का रचयिता, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, नीतिज्ञ तथा सुखी होता है। यह बाल्यावस्था में रोगी रहता है। बड़ा होकर स्वपराक्रम से धनोपार्जन करता है तथा २४ वर्ष की आयु तक किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसे स्त्रियों के प्रति एवं विवाह के प्रति कोई लगाव नहीं होता, अतः प्रायः अविवाहित ही रह जाता है। यदि विवाह हो ही जाय तो इसकी पत्नी इसके पुंसत्व में कमी के कारण खिन्न बनी रहती है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। परदेश में रह कर यह पर्याप्त धनोपार्जन करता है। ६० वर्ष की आयु तक यह बहुत ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता है। विवाह हो जाने पर इसे पुत्र-प्राप्ति का सुख भी सम्भव होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४१, ४५ तथा ५२ वें वर्ष विशेष उन्नति प्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८२-८४ वर्ष सम्भव है।

(१४७७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी धनी-मानी, कला-मर्मज्ञ, सुन्दर, विवेकी, गुणवान् तथा बुद्धिमान होता है। यह अपनी विद्वत्ता से लोक में सम्मान्य तथा यशस्वी बनता है। यह माता का आज्ञाकारी बना रहता है। इसे धन-धान्य की कभी कोई कमी नहीं रहती। यह राजमान्य तथा सब प्रकार से सुखी जीवन बिताता है। २५ वर्ष की आयु में इसे विपुल धन का लाभ होता है। राजकीय-सेवा में रह कर उच्च पद प्राप्त करता है तथा व्यवसाय द्वारा भी धन की वृद्धि कर सकता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी परन्तु कुछ स्थूलकाय होती है। पत्नी अच्छे स्वभाव की होती है, तथापि अपनी वैचारिक-भिन्नता अथवा पति की शारीरिक-त्रुटि के कारण वह दुःखी रहती है। जातक स्वयं भी इसी कारण विकल बना रहता है, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं होता तथा स्त्री चिड़चिड़े स्वभाव की हो जाती है। जातक की पूर्णायु लगभग ८० वर्ष होती है।

(१४७८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, विनम्र, ज्ञानी तथा धनी-मानी होता है। इसे अपने पिता से प्रेम होता है, माता से अधिक प्रेम नहीं होता। यह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा सभी को पराजित करने में समर्थ होता है। यह पिता के धन से सुख प्राप्त करता तथा पिता के व्यवसाय को ही अपनाता है। यह बहुत धन कमाता है। विवाह २८-२९ वर्ष की आयु में विलम्ब से होता है, परन्तु स्त्री के साथ विचार-भिन्नता रहती है; अतः यह स्त्री की ओर से दुःखी रहता है। इसकी स्त्री का मन भी जातक में अनुरक्त नहीं रह पाता, फलतः वह अलग रहती है। यह व्यक्ति प्राप्त सुखों का कृपण की भाँति उपभोग करता है। धन को बहुत कम खर्च करता है। इसके सभी कामों में रोड़े अटकते रहते हैं, जिन्हें दूर करने में इसे कष्ट उठाना पड़ता है। पुत्र अच्छे होते हैं। यह लगभग ७९ वर्ष की आयु में परलोकयात्रा करता है।

(१४७९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, मानी, ज्ञानी, कला-मर्मज्ञ तथा धन-धान्य सम्पन्न होता है। यह कुछ स्थूल शरीर का, राजा के समान प्रतापी, भूमिपति, न्यायप्रिय तथा अपने प्रियजन के अपराध को भी क्षमा न करके उसे दण्डित करने वाला न्यायी पुरुष होता है। यह एक से अधिक स्त्रियों का प्रेम प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। वह उससे प्रेम भी खूब करता है तथा पत्नी भी आकर्षक व्यक्तित्व एवं अपना अलग स्थान रखने वाली होती है। यह अपने छोटे भाई से बहुत प्रेम करता है। छोटा भाई भी इसे बहुत आदर देता है तथा आज्ञाकारी बना रहता है। ३५ से ५० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धनोपार्जन करता है। इस आयु के बाद यह किसी अपराध का दोषी सिद्ध होकर दुःख भोगता है। पूर्णायु ५९ अथवा ७८ वर्ष की होती है।

(१४८०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रियवादी, रसिक, काव्य शास्त्र का ज्ञाता, मधुर आचरण करने वाला, धनी, सुखी, सात्विक, सम दृष्टि वाला तथा शिष्ट-आचरण करने वाला होता है। इसे राजकीय-सेवा तथा अपने कर्मयोग द्वारा धन-लाभ का योग होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है, तथापि पर-स्त्री से भी इसका सम्बन्ध बना रहता है। वह स्त्री अपने सहयोग तथा सहायता से इसके भाग्य की वृद्धि करती है। यह उस स्त्री पर अभिमान भी करता है। यह अनैतिक रूप से प्राप्त होने वाले धन को ग्रहण करने में भी कोई संकोच नहीं करता। यह अपने पुत्रों के विरोध तथा द्वेष का शिकार बनता है, वैसे इसे सन्तान-प्राप्ति प्रायः होती ही नहीं है। ६५ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष होना निश्चय है।

(१४८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, नीरोग, अनेक कलाओं का ज्ञाता, प्रतापी अपने पराक्रम एवं योग्यता के बल पर मान-प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला होता है। यह बड़ा गुणी तथा उदार स्वभाव का होता है। दरिद्रों का सहायक बन कर उनके लिए स्वयं कष्ट तथा हानि उठाने के तत्पर बना रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है एवं इसके मनोनुकूल आचरण करती है। यह शत्रु-रहित, शत्रुओं को पराजित करने वाला होते हुए भी अपने पुत्र के समक्ष कुण्ठित हो जाता है। इसका पुत्र इसके धन का नाश करता है। अपनी सुन्दरता तथा उदारता के बल पर यह जातक अनेक स्त्रियों के आकर्षण का केन्द्र बनता है तथा उनका हित भी करता है। यह विवेकयुक्त बुद्धि वाला तथा त्यागी होता है। ४६ वें वर्ष में अनिष्ट होता है तथा ७८ वर्ष की आयु पाता है।

(१४८२)- इस कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम, पराक्रमी तथा साहसी होता है। इसे सिंह की भाँति निर्भय तथा शक्तिशाली भी कहा जा सकता है। यह साहित्य एवं कला का ज्ञाता, ग्रंथ-लेखक तथा परम गुणी होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी उच्चाकांक्षाओं से युक्त तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने की अभिलाषिनी होती है। यह जातक बाल्यावस्था में रोग ग्रस्त रहता है, किन्तु आजीवन प्रायः स्वस्थ ही बना रहता है। यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है तथा उनके कारण कभी-कभी अपने कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। यह ईश्वरभक्त तथा उदार दानी होता है। यह अपने जीवन के लगभग २० वर्ष परदेश में व्यतीत करता है। इसे भूमि, भवन वाहनादि के सभी सुख प्राप्त होते हैं। मृत्यु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१४८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, लोकपालक, लोक-प्रिय, परन्तु अस्थिर चित्त वाला होता है। इसे विविध प्रकार के सुख स्वयमेव उपलब्ध होते रहते हैं। यह अपने कुटुम्बियों से अलग रहता है। भाइयों की संख्या भी कम होती है। २० वर्ष की आयु से ही इसे धन तथा ऐश्वर्य का लाभ होता है, फलतः यह अनेक मित्रों से सम्पर्क स्थापित कर उनका भोग करते हुए धन को नष्ट भी करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी मनस्वी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व की धनी होती है। वह जातक को अपने वश में रखती है तथा उसे सन्तुष्ट रखने का प्रयत्न भी करती है। यह जातक अपने सभी कामों में विलम्ब करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह कोई मन्त्रित्व को प्राप्त कर किसी संस्था का अध्यक्ष बनता है और उसे अपनी विवेक बुद्धि से बहुत ऊँचा उठाकर स्वयं यशस्वी बनता है। ५६ तथा ६१ वें वर्ष में अरिष्ट। आयुः ७२

(१४८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी महाबली, सुन्दर, पुरुषार्थी, देव-गुरु भक्त, राज्य में उच्च पद पाने वाला, बुद्धिमान, गुणवान तथा यशस्वी होता है। यह जिस काम को हाथ में लेता है, उसे पूरा करके ही दम लेता है। यह अनेक कलाओं में पारंगत, अपने मन का भेद किसी को न देने वाला तथा बड़ा मायावी होता है। धन-संग्रह करने में इसे बड़ा आनन्द आता है। धन को खर्च करने में यह अत्यधिक कृपण होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु कटुभाषिणी एवं वाचाल होती है, तथापि उसके साथ इसकी खूब पटती है। यह ईश्वरभक्त तथा धन-वैभव से सम्पन्न होता है। ४६ वर्ष की आयु में यह उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। यह नये-नये कामों द्वारा धनोपार्जन कर सुखी रहता है। पूर्णायु ८० अथवा ८८ वर्ष होती है।

भु० सं० १२२५

कु० र०

(१४८५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विनम्र, आत्मकेन्द्रित स्वभाव का तथा बन्धुहीन होता है। बड़ा भाई होता किन्तु वह है। इसे होटल, सिनेमा आदि आमोद-प्रमोद के किसी स्थान की व्यवस्था अथवा संगठन करने का अवसर मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी, विदुषी तथा मधुरभाषिणी कन्या के साथ होता है। विवाह के बाद ही इसका भाग्योदय भी होता है। २४ से ४८ वर्ष की आयु तक यह धन-सम्मान प्राप्त करता हुआ किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है तथा पर्याप्त सम्पन्न होकर सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह मुकदमों में तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। व्यवसाय आदि श्रेष्ठ साधनों द्वारा धन कमाता है। सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा भूमि, भवन, वाहन आदि का लाभ भी होता है। पूर्णायु ८८ वर्ष के लगभग होती है।

(१४८६)- इस कुण्डली वाला जातक दृढ़ शरीर वाला, सामान्य सुन्दर, क्रूर भाव युक्त मुखमंडल वाला, क्रोधी स्वभाव का, सदैव तेज मण्डित रक्तवर्ण चेहरे वाला तथा सदैव अशान्त सा दिखाई देने वाला होता है। यह निर्दय प्रकृति का होता है तथा दूसरों को कष्ट देने में आनंद का अनुभव करता है। यह शत्रुओं को दबाकर रखता है। विरोधी लोग इससे घबराते रहते हैं। यह लोभी तथा कृपण होने के साथ ही मातृ-विरोधी भी होता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से होता है। पत्नी श्यामा, सुन्दरी तथा अपने मतलब-से-मतलब रखने वाली होती है। यह पुलिस अथवा किसी अन्य सरकारी विभाग में नौकरी करता है। सैनिक भी हो सकता है। नौकरी में निरन्तर उन्नति करते हुए उच्च पद प्राप्त करता है। सब प्रकार के सम्मान तथा सुखी जीवन बिताते हुए लगभग ७६ वर्ष की पूर्णायु पाता है।

(१४८७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक गुणों से युक्त, सुशील तथा गुरु-माता-पिता का भक्त एवं विद्वान होता है। यह राज्यद्वारा लाभान्वित होता है। इसके अनेक भाई होते हैं, वे सभी एक-से-बढ़कर-एक पराक्रमी होते हैं। यह अनेकों कौतुक से धनी होता है। राज्य-कर्मचारी के रूप में यह उच्च पद प्राप्त करता है। धन-संग्रह करने में बड़ा चतुर तथा कृपण होता है। इसे अर्थ के विवाद तथा विघ्न बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है, जिनके कारण इसकी उन्नति विलम्ब से होती है। ४२ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। इसकी दो पत्नियाँ भी हो सकती हैं। यह पुरुषार्थ को ही सब कुछ मानने वाला, एक प्रकार से नास्तिक होता है। लगभग ५६ वर्ष की आयु में यह उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। पुत्रादि द्वारा सुखी होता है। पूर्णायु ६८ वर्ष।

(१४८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, कला-कौशल का ज्ञाता, सब प्रकार के सुख-ऐश्वर्य से सम्पन्न, उच्च राजपद पाने वाला, परिवार का तथा अन्य अनेक लोगों का पोषक तथा धन-सम्पन्न होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा मनस्विनी होती है। वह जातक को सदैव अनुप्रेरित करती रहती है। यह 30 वर्ष की आयु में परदेश में अपना घर बनाता है। उदार व्यक्ति के रूप में इसकी सर्वत्र प्रशंसा होती रहती है। इसे पिता से पुत्र परिवारी जनों से सम्मान मिलता है। बन्धु-बान्धव भी इसे खूब चाहते हैं। इसे विभिन्न स्रोतों से धन का लाभ होता है। विघ्न-बाधाओं पर यह विजय प्राप्त करता चला जाता है। भूमि, भवन, वाहन के अतिरिक्त इसे पशु, धन-रत्न तथा अन्य धातुओं का लाभ भी मिलता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(१४८९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, विद्वान, गुणवान, सबका मित्र तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त होता है। यह निश्चित कार्य करने वाला तथा नवीन कार्य करने पर हानि उठाने वाला होता है। नये कार्यों में इसके धन की हानि भी होती है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है. वह जातक को सदैव अपने प्रभाव में रखती है तथा जातक के सभी कार्यों की देखभाल रखती है। इसका पूर्ण भाग्योदय ४६ वर्ष की आयु में होता है। इसे कई स्त्रियाँ सहायता पहुँचाती हैं। यह भी नारियों का कार्य कर उन्हें लाभ पहुँचाता है। यह अत्यन्त पराक्रमी होता है तथा राज्य का विरोध करने में भी नहीं चूकता। अपने विचारों से यह हजारों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। राज्य द्वारा दण्डित भी हो सकता है, तथापि कोई पराजित नहीं कर पाता। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१४९०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति मनस्वी, महत्वाकांक्षी, सुन्दर, आकर्षक, राज्य से लाभ पाने वाला अथवा राजकीय सेवा में उच्च पद पर बैठकर विपुल धन का संचय करने वाला होता है। यह अपने विचारों से राज्य को प्रभावित करने वाला, आग उगलने वाली वाणी का प्रयोग करने वाला, अत्यन्त साहसी तथा पराक्रमी होता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। सब लोग इससे डरते तथा सम्मान देते हैं। इसकी अपने पिता से भी नहीं बनती है। यह पिता के सुख से वंचित भी रहता है। भाग्य का धनी होता है। ४०-४५ वर्ष की आयु में इसे सभी सुख उपलब्ध होते हैं। जन साधारण इसे अपना नेता, प्रियजन तथा हितैषी एवं रक्षक के रूप में मानते हैं। विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा मनोनुकूला कन्या के साथ होता है। यह विरोधियों को पराजित कर, स्वयं उच्च स्थान पाता तथा ७५ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१४९१)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद वाला, सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता, मधुरभाषी, चतुर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने गुणों के कारण सब की प्रशंसा का पात्र बनता है। २०-२२ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा वाक्पटु होती है। इसे अनेक पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु में यह गलत लोगों की संगति में पड़ कर अशोभनीय कार्य करता है तथा इसकी प्रकृति में परिवर्तन आ जाता है। अनेक स्त्रियों में इसकी आसक्ति रहती है। यह धन खूब कमाता है। सामान्यतः सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है। आयु ७८ वर्ष होती है, इसके बाद भी बचा है तो ८९ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१४९२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चंचल चित्त वाला, साहसी तथा क्रोधी होता है। यह विद्वान्, कला-मर्मज्ञ होने के साथ ही अपने पौरुष तथा साहस पर बड़ा विश्वास रखता है। यह तीव्र वाणी बोलता है। दूसरों को बुरा लगने पर भी यह मनचाही बात कहने से नहीं चूकता। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। पत्नी चंचल मन वाली तथा सुलक्षणा होती है। इसे सुन्दर पुत्र-पुत्रियों का लाभ भी होता है। धन कमाने के स्रोत अनेक होते हैं। ३९ वर्ष की आयु में यह महाधनी बन जाता है। इसे अपनी माता से प्रेम नहीं होता। बुद्धिमान होते हुए भी यह क्षुद्र विचार रखता है। यह लोभी प्रकृति का होता है। वर्ष ३८, ४५, ५१ तथा ५६वें खराब जाते हैं। शेष वर्षों में सुखी रहता है। पूर्णायु ७९ वर्ष के लगभग होती है।

(१४६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी, काव्य-साहित्य का मर्मज्ञ तथा अपने व्यक्तित्व से सब को आकर्षित करने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है, परन्तु वह धन का अधिक खर्च करने में शान समझने वाली होती है। श्रेष्ठ कार्यों में धन खर्च करके वह सब की प्रशंसा की पात्र भी बनती है। वह दानी, उदार स्वभाव की तथा धार्मिका भी होती है। यह जातक राजकीय कार्यों में संलग्न रह कर अथवा अन्य कार्यों द्वारा भी विदेश-वास करता हुआ पर्याप्त धनोपार्जन करता है। यह अपनी पत्नी को ही सर्वोपरि मान कर सदैव उसी के अनुरक्त बना रहता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे प्रचुर धन-लाभ होता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे अरिष्ट की संभावना रहती है तथा दुर्घटना का शिकार बनता है। मृत्यु अचानक होती है। पूर्णायु ६८ वर्ष से अधिक होती है। यह धनी भी होता है।

(१४६४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, लम्बे कद वाला, गौर वर्ण, रक्तिम आभा युक्त, अशान्त स्वभाव का तथा दीर्घ-रोगी होता है। इसके शत्रु भी बहुत होते हैं, परन्तु यह उनको पराजित करने वाला धीर, गंभीर, साहसी तथा बलवान होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, धार्मिक प्रवृत्ति की तथा धीर-गंभीर स्वभाव की होती है। वह जातक के सम्मान की वृद्धि करती है। पत्नी के सहयोग से जातक को धन-लाभ भी होता है। २५ वर्ष की आयु से धन का लाभ होना आरम्भ हो जाता है, जो निरन्तर होता ही रहता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता। ५६ वर्ष की आयु में इसे हानि उठानी पड़ती है। शारीरिक-कष्ट भी होता है। पुत्र सुन्दर होते हैं, परन्तु प्रथम पुत्र से सुख नहीं मिलता। आयु ७६ वर्ष के लगभग होती है।

(१४६५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, कला-कौशल का ज्ञाता, सब का मित्र तथा लोक-हितैषी होता है। यह स्वस्थ, लम्बे कद का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसे अप्रत्याशित रूप से धन-लाभ होता रहता है। जोखिम के कामों में भी बिना कोई कष्ट उठाये इसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। किसी स्त्री के द्वारा भी इसे यथेष्ट लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूल मिलती है। इसे सात चार पुत्रों की प्राप्ति होती है। पुत्र एक या दो ही होते हैं। वे इसे सुख देते हैं। इसे २६, ३८, ४५ तथा ५० वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। राज-कार्य से सदैव लाभ होता है। सेवा में संलग्न हो तो उच्चपद की प्राप्ति होती है। ५१ वें वर्ष में कुछ हानि की संभावना रहती है। ५३ वर्ष की आयु में बीमारी होती है, परन्तु परलोक-गमन ७६ वर्ष की आयु के बाद ही होता है।

(१४६६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, ऊँचे कद का होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी रूप-लावण्य-सम्पन्ना, पति पर अनुशासन रखने वाली, चतुर, व्यवहार-कुशल, कला-मर्मज्ञ तथा मधुरभाषिणी होती है। जातक सुखी या सुयश बना रहता है। इसका विवाह के बाद ही भाग्योदय होता है। २४ वर्ष की आयु से यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे बड़ी कठिनाई से तथा मनौती आदि करने पर एक पुत्र की प्राप्ति होती है। यह जातक सम्पूर्ण परिवार को अपनी छत्रछाया में रखने को उद्यत बना रहता है तथा सभी की यथाशक्ति सहायता भी करता है। यह राजकीय-सेवा में रहते हुए भी उसकी कोई चिन्ता नहीं करता। इसे बहुत धन प्राप्त होता है। ४५ से ६० वर्ष की आयु तक इसे निरन्तर लाभ होता रहता है। यह ७२ अथवा ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सामान्यतः सुन्दर, स्वस्थ, उन्नत कद वाला, विदेशवासी, नीचों की संगति से दोषयुक्त, किसी गुप्त-कार्य द्वारा लाभ अर्जित करने वाला अथवा सार्वजनिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है, परन्तु यह जातक अपनी अत्यधिक कार्य-व्यस्तता के कारण उसे सामीप्य का अधिक सुख नहीं दे पाता। पुत्र थोड़े होते हैं, परन्तु वे गुणवान् तथा ज्ञानी होते हैं। यह जातक अत्यन्त प्रतापी होता है तथा सर्वत्र अपने प्रभाव का विस्तार करता है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है तथा यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३५ वर्ष की आयु में यह किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का निर्वाह कर यश तथा धन अर्जित करता है। राजकीय क्षेत्र में भी इसे पर्याप्त ख्याति प्राप्त होती है। कोई व्यक्ति इसका विरोध नहीं कर पाता। ५० वर्ष की आयु में इसे सभी ऐश्वर्य उपलब्ध हो जाते हैं। ५१ तथा ५६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१४६८) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य धीर-गंभीर, गुणवान्, ज्ञानी तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है, तथापि १६ से २४ वर्ष की आयु तक इसे शारीरिक-कष्ट भोगना पड़ता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। २५ वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है। यह कुछ समय तक राजकीय सेवा में रहता है तथा राज्य द्वारा लाभ भी उठाता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे बहुत हानि उठानी पड़ती है। इसे मित्रों से तथा विदेश-यात्रा से लाभ होता है। ४८ से ५६ वर्ष की आयु में इसे प्रायः शारीरिक-कष्ट होता है, तदुपरान्त आजीवन स्वस्थ बना रहता है। यह अपने मित्रों, परिचितों तथा परिवारीजनों को लाभ पहुँचाता है। यह सब लोगों को अपने मीठे वचन तथा नेक सलाह से प्रसन्न बनाये रखता है तथा उनके द्वारा स्वयं भी यथेष्ट सम्मान अर्जित करता है। इसका जीवन आर्थिक दृष्टि से सफलता का होता है। यह लगभग ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४९९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कोमलचमक का, मधुरभाषी, काव्य-संगीत आदि कलाओं का ज्ञाता, अत्यन्त विद्वान्, गुणवान तथा ज्ञानवान होता है। यह अपनी वाणी द्वारा लोगों को अपनी ओर तीव्रता से आकर्षित करता है। यह विवादी तथा धर्म में रुचि रखनेवाला होता है। साथ ही कृपण स्वभाव का भी हो सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसे अपने निर्देशानुसार चलाती है तथा अपने मोहपाश में फँसाये रखती है। ३३ से ४४ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट भी होता है। यह अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों के लिए भी कष्ट उठाता है तथा अपने काम को भूल कर उन्हें सन्तुष्ट करने में लगा रहता है। ४५ वर्ष की आयु में यह उन्नति के चरम शिखर पर होता है तथा अपने कुल में मान्य होता है। इसे राज्य, चोर अथवा अग्नि से भय होना निश्चय है। इसकी पूर्णायु लगभग ७९ वर्ष होती है।

(१५००)- इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक तथा उद्यमी होता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा यह पत्नी के प्रति विशेष रूप से आकर्षित भी बना रहता है। इसे बाल्यावस्था में मातृ-सुख नहीं मिलता। किसी विवशता के कारण माता-पुत्र को अलग-अलग रहना पड़ता है। यह गृहकार्य तथा बन्धु-बान्धवों के कार्य में संलग्न रहने वाला तथा अपने सत्कर्मों से उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। राज्यकर्मचारी के रूप में यह बहुत उन्नति करता है। विद्या, बुद्धि तथा पुरुषार्थ से भी पूर्ण यह अत्यन्त साहसी होता है तथा ४६ वर्ष की आयु तक बहुत श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त कर लेता है। पिता से कभी स्नेह और कभी मन-मुटाव बना लेता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर, गुणी तथा सुयोग्य होते हैं। ५० वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट मिलता है। ५६ वें वर्ष में विशेष सफलता मिलती है। पूर्णायु ७८ अथवा ८३ वर्ष की होती है।

(१५०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल शरीर का, बलवान तथा धन-सम्पन्न होता है। यह धन की चिन्ता नहीं करता तथा ईश्वर पर भरोसा रखते हुए खूब दान करता है। यह अद्भुत वक्ता तथा विभिन्न मार्गों से धन कमाने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक यह अपने कार्य में जम जाता है। २० वर्ष की आयु से ही अपने गुणों को प्रकट कर उठता है। २६ वर्ष की आयु तक इसका विवाह हो जाता है, तथापि यह अन्य अनेक स्त्रियों के साथ स्वच्छन्दता पूर्वक रमण करता है, जिसके कारण विवादास्पद भी बन जाता है। २९ वर्ष की आयु में यह अपना कार्य बदलता है। इसे पिता के धन तथा मकान की उपलब्धि भी होती है। राजकीय-सेवा द्वारा भी यह लाभ उठाता है। इसकी आयु अधिक नहीं होती। ४५ अथवा ५६ वर्ष की आयु में यह परलोक-गमन करता है। इसकी पत्नी एक सन्तान के साथ वैधव्य-जीवन बिताती है। कुल मिलाकर यह अपने जीवन-काल में सुखी बना रहता है।

(१५०२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, पुरुषार्थी, धनी, मानी तथा बड़े कुटुम्ब वाला होता है। यह बड़ा बलवान तथा पराक्रमी होने के साथ ही स्वच्छन्द विचारों का होता है, जिसके कारण पारिवारिक-जीवन में अशान्ति पैदा कर लेता है। २१ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गरिमामय व्यक्तित्व वाली होती है, तथापि वह इसे अधिक सुख नहीं दे पाती। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में संलग्न होता है। सन्तान के बारे में यह चिन्तित बना रहता है। १९ वर्ष की अवस्था में इसे अरिष्ट होता है, तत्पश्चात् ३१ एवं ५८ वें वर्ष भी शारीरिक कष्टकारक रहते हैं। ६० वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। उदार स्वभाव का होने के कारण लोग इसे बहुत प्यार करते हैं, तथापि इसके साहस तथा पराक्रम से डरते भी हैं। इस की मृत्यु किसी आकस्मिक कारण से होती है, समय निश्चित नहीं किया जा सकता।

(१५०३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, विवादी, परन्तु नीचों की संगति में रहने के कारण कुसंग-दोषी होता है। यह अपने साहस तथा पराक्रम से धनोपार्जन करने वाला, अत्यन्त मानी, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अपने स्वभाव एवं प्रभाव द्वारा सर्वत्र अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने वाला होता है। यह २२ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उन्नति करना आरम्भ कर देता है। अपने पौरुष, विद्वत्ता एवं गुणों से यह सब के मन को जीत लेता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता, चतुर तथा नीति-निपुण मिलती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग करती है। ३० वर्ष की आयु तक यह जातक बहुत धन-सम्मान प्राप्त कर लेता है तथा अपने लिए भवन आदि का निर्माण भी करता है। इसे सन्तानों का भी श्रेष्ठ योग रहता है। ६२ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट तथा ८३ वर्ष की आयु में परलोक-गमन सम्भव है।

(१५०४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में रोगी रहता है तत्पश्चात् स्वस्थ एवं सुखी जीवन बिताता है। यह गुणी, साहसी, सुन्दर, पराक्रमी तथा प्रतिदिन धन की वृद्धि करने वाला होता है। माता की अपेक्षा पिता से अधिक प्रेम रखता है। २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ इसका विवाह होता है। २४ वर्ष की आयु से इसे राज्य से लाभ होना आरम्भ हो जाता है, जो जीवन पर्यन्त होता रहता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह असाधारण समृद्धि प्राप्त कर लेता है। इसे श्रेष्ठ पुत्रों की प्राप्ति होती है। अपने धर्म-कर्म, उदारता एवं पुण्य के कारण यह लोक-विख्यात होता है। इसकी पत्नी के स्वतन्त्र व्यक्तित्व एवं मनस्विता के प्रति अनुरागी रहते हुए, यह उसे बहुत प्रेम करता है। वह भी अपने पति तथा परिवार की श्रीवृद्धि में सहायक होती है। जीवन के ३२, ३५, ३८, ४२, ४६, ५१ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८३ वर्ष या इससे भी अधिक होती है।

(२५०५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, रक्त-गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, उदारचित्त, बुद्धिमान, धीर-गंभीर तथा शान्तचित्त का होता है। यह शत्रुओं को भी क्षमा कर देता है। शत्रु इसके आगे शरणागत हो जाते हैं। यह एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क रखने तथा उनसे प्रेम पाने वाला होता है। १७ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त शिक्षित बन जाता है। यह अत्यन्त ज्ञानी तथा तीव्र बुद्धि होता है। २३ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा द्वारा जीविकोपार्जन करने लगता है। इसे लाभ तथा हानि - दोनों समान रूप से प्राप्त होते रहते हैं। ३५ वर्ष की आयु के उपरान्त यह देशान्तर में जाकर पर्याप्त लाभ तथा यश अर्जित करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इसके जीवन के २३, २४, २८, ३६, ३९, ४१, ४२, ५२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष ३४, ३८, ४४, ४८ तथा ५७ में शारीरिक-कष्ट सम्भव हैं। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२५०६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न तथा अनेक कलाओं में निपुण होता है। इसे बाल्यावस्था में मातृ-प्रेम नहीं मिल पाता। यह अपने पुरुषार्थ तथा शक्ति के बल पर उन्नति करता है। २३ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। भाइयों से इसे सुख अथवा लाभ के स्थान पर कष्ट की प्राप्ति होती है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय में कोई स्त्री सहायक बनती है तथा उसी के कारण उच्चस्थिति भी प्राप्त होती है। यह देशान्तर में सम्मान पाता है तथा यात्रायें करता है। इसकी पत्नी अपने पति के प्रति समर्पित बनी रहती है। अपने कुटुम्ब तथा समाज में जातक को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। ५६ वर्ष की आयु में अरिष्ट की आशंका रहती है। ६६वां वर्ष भी अरिष्ट कारक हो सकता है। पूर्णायु ७८-७९ वर्ष की होती है।

भु० सं०

(१५०७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त धैर्यवान्, उदार, संयत तथा दूसरों को दुःखी देखकर द्रवित होने वाला होता है। यह देवताओं का भक्त, गुरुजनों के प्रति श्रद्धालु तथा संकल्पित कार्य को पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ सम्पन्न करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार मिलती है। वह परिवार के प्रति अपने दायित्वों का पालन करती हुई जातक को विशेष सुख देती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। उन्नति के शिखर पर शीघ्र जा पहुँचने में इसे कोई कठिनाई नहीं आती। ४५ से ४६ वर्ष की आयु में यह अनेक ऊँची-नीची स्थितियों से गुजरता है। उस समय इसके स्वभाव में भी परिवर्तन आ जाता है और यह अनेक लोगों को कष्ट भी पहुँचाता है। इसे सुन्दर तथा यशस्वी पुत्र प्राप्त होते हैं। ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताते हुए यह ७८ अथवा ८३ वर्ष की पूर्णायु पाता है।

(१५०८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व, परन्तु उग्र स्वभाव का होते हुए भी उदार होता है। यह कठोरता का प्रदर्शन करते हुए भी कोमल होता है। यह २१ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा आदि में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा विद्यावान् होती है। जीवन के २५, २८, ३३ एवं ३८ वें वर्ष इसके लिए विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। यह पत्नी की ओर से सुखी रहता है तथा उस पर गर्व का अनुभव भी करता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है तथा सन्तानों द्वारा वृद्धावस्था में सुख भी मिलता है। ५४ वर्ष की आयु में यह विपुल सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है तथा उसका उपयोग दान-धर्म तथा परोपकार में करके यह लोक में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करता है। ६८ वर्ष की आयु के बाद भी बचा रहे तो यह ८० वर्ष की पूर्णायु पाता है।

कु० र०

(१५०९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सुवक्ता, व्यवहार-कुशल, सर्वप्रिय, मानी तथा लोक-सम्मानित होता है। यह बलवान, साहित्य-प्रेमी, कवि तथा १९-२० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करनेवाला होता है। इसे माता से विशेष लगाव नहीं होता। माता से किंचित् असंतुष्ट ही बना रहता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर वाली तथा आकर्षक व्यक्तित्व की धनी होती है। वह पति तथा परिवार को बहुत प्रेम करती है तथा मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाती है। यह जातक प्रायः विदेश में अधिक रहता है और वहीं से इसे धन-सम्मान का भी विशेष लाभ होता है। ३४ वर्ष की आयु में यह किसी विशेष पद पर कार्य-रत होता है। अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के प्रति यह सद्भाव रखता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३७, ४१, ४६, ४९, ५२, ५६ तथा ५८ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह आजीवन स्वस्थ रहते हुए ७५ अथवा ८१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१५१०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सुवक्ता, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा बड़ा ऐश्वर्यशाली होता है। यह शरीर से कुछ स्थूल तथा बलवान भी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला, गुणवती तथा अपने सम्मोहक व्यक्तित्व एवं मधुर व्यवहार से सबको प्रसन्न रखने वाली होती है। इसका दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है तथा सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। यह राजकीय-सेवा में रह कर अर्थोपार्जन करता है तथा देशान्तर में विशेष सम्मान पाता है। यह २७ वर्ष की आयु से पदोन्नति प्राप्त करना आरम्भ करता है तथा ५३ वर्ष की आयु में विपुल धनी हो जाता है। यह शत्रुओं से भी धन प्राप्त करता है तथा पुत्रों द्वारा भी सुखी रहता है। बाल्यावस्था में इसे कुछ समय तक कष्ट प्राप्त होता है, तत्पश्चात् सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। सम्पन्नता का जीवन बिताते हुए यह ८२ अथवा ८६ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१५२११)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चतुर, पराक्रमी, नास्तिक, अपने मन का भेद किसी को न देने वाला, अपने गुणों द्वारा सब को प्रभावित करने वाला, देव-गुरु-भक्त, दानी, आमोद-प्रमोद प्रिय, गंभीर लोगों से मैत्री रखने वाला तथा धार्मिक-प्रकृति का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोरमा तथा सन्तुष्ट रखने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। जीवन के ४४ वें वर्ष में यह विशेष उन्नति करता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा इसका अधिकांश समय भी विदेश में ही व्यतीत होता है। ५४ वर्ष की आयु में यह विपुल राजसम्मान एवं धन प्राप्त करता है। इसकी सन्तानें सुन्दर, सुशील, सद्गुणी एवं सुख देने वाली होती हैं। भाइयों से भी इसे सह-योग मिलता है। यह लगभग ७९ वर्ष तक शान्त एवं सुखी जीवन बिता कर परलोक-गमन करता है।

(१५२१२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सद्गुणी, मधुरभाषी तथा गंभीर स्वभाव का होता है। यह बड़ा पराक्रमी, शूर-वीर तथा दानी भी होता है। अपने स्वभाव की सरलता के कारण यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। यह भगवद्भक्त, धर्मात्मा तथा दीनों का सहायक होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनस्विनी, सुन्दरी, मनोनुकूला तथा सुख देने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही यह किसी उच्च-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करने लगता है। ३१ वर्ष की आयु में परदेश में जाकर रहता है तथा वहीं इसका भाग्योदय भी होता है। इसकी सर्वोच्च उन्नति ५३ वर्ष की आयु में होती है। इसके पुत्र सुन्दर, सद्गुणी तथा सुख देने वाले होते हैं। वे पिता के सम्मान को बढ़ाते हैं। जीवन के ३१, ३५, ३८, ४२, ४६, ५०, ५१, ५३ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७३ वर्ष के लगभग होती है।

(१५२३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, दैनन्दिन कार्यों में आवश्यकता एवं उद्विग्न बना रहने वाला, तथापि अपने गुणों के कारण सबको अनुकूल बना लेने की क्षमता वाला होता है। यह साहित्य तथा विलास में रुचि रखता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। यह अपनी पत्नी के व्यक्तित्व से प्रभावित बना रहता है। विवाहोपरान्त इसे राजकीय-सेवा का योग बनता है। वृद्धावस्था तक यह राजकीय सेवा द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन कर लेता है। यह बड़े नीति-मार्ग से चलता है, अतः इसे कभी कोई कष्ट नहीं होता। इसे सद्गुणी पुत्र तथा पुत्रियों की उपलब्धि होती है। जीवन के २५, २८, ३२, ३७, ४२, ४६, ४९, ५१ तथा ५५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। ६९ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। उससे बचने पर ८० वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१५२४) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मनस्वी, पुरुषार्थी तथा स्वच्छन्द प्रकृति का होता है। यह सुखी तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा उपार्जित धन से धनी होता है। यह अपनी माता से मतभेद रखता है, इसकी माता मनस्विनी तथा स्वतन्त्र-प्रकृति की होती है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं तथा यह अपनी समृद्धि हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी का अल्प-सुख मिलता है। इसे सन्तान तथा भाइयों के संबंध में कष्ट होता है। शत्रुओं तथा राज्य से भय रहता है। जल से भी भय होना सम्भव है। इसे रुग्णावस्था-जन्य लाभ होने की भी सम्भावना रहती है। शत्रु हर समय पीड़ित करते रहते हैं। जीवन के ३५, ३८, ४१, ४५, ४८, ५० तथा ५३ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। आयु के ६८, ७१ एवं ७९ वें वर्ष में अरिष्ट होता है। इनसे बचने पर ८५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(१५२५)- इस जन्म कुंडली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, काव्य-संगीत-प्रेमी, कुशल वक्ता तथा परदेश में रह कर उन्नति करने वाला होता है। नीच व्यक्तियों के संपर्क के कारण यह दोष का भागी बनता है। शिक्षा उपयुक्त होती है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता, साहित्यिक-अभिरुचि सम्पन्न तथा काव्य-संगीत में निपुण होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा द्वारा जीविकोपार्जन करता है। यह सुखोपभोगी, स्थिर चित्त वाला, बन्धु-बान्धवों से अधिक तथा अन्य लोगों से सामान्य-स्नेह रखने वाला तथा सदैव धनोपार्जन हेतु प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। इसके पुत्र सुन्दर, आज्ञाकारी तथा देव-गुरु-भक्त होते हैं। शत्रुओं द्वारा प्रयत्न किये जाने पर भी, इसे कोई हानि नहीं पहुँचती। यह ६७ वर्ष की आयु में रोगी होता है तथा लम्बी बीमारी के बाद ७६ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१५२६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, पराक्रमी तथा साहसी होता है। यह अपने व्यक्तित्व से सब को आकर्षित करने वाला, धन तथा सुख से सम्पन्न, विख्यात, चिरजीवी तथा सर्वत्र सम्मानित होता है। यह अनेक भवन तथा वाहनों का स्वामी, समाज में अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा सुन्दर पुत्र-पुत्रियों का पिता होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी आकर्षक व्यक्तित्व वाली, मनस्विनी तथा धनी परिवार की पुत्री, विदुषी तथा कला-कौशल की जानकार होती है। यह जातक राज्य से भी अत्यधिक सम्मान प्राप्त करता है। इसकी आय के अनेक स्रोत होते हैं। इस जातक को ६५ वर्ष की आयु में दुर्घटना के कारण मृत्यु-योग की संभावना रहती है। इससे बच जाने पर ७८ वर्ष की आयु प्राप्त होती है। इसके जीवन के २३, २५, २८, ३२, ३५, ३८, ४०, ४५ तथा ५२वें वर्ष विशेष लाभ प्रद सिद्ध होते हैं।

(१४५७) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ और बुद्धिमान होते हुए भी अपने कर्मों से च्युत होकर, संसार में अपयश प्राप्त करता है। सब लोग इसे गलत समझते हैं तथा इसका मित्र-वर्ग ही इसे समय-समय पर बदनाम करता रहता है, फिर भी यह किसी की चिन्ता न करके अपने काम में लगा रहता है तथा अपने लिए सुख-साधनों की वृद्धि करता है। यह अत्यन्त धनी तथा अपने पिता के यश को बढ़ाने वाला होता है। इसका विवाह २०-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी होती है। यह साहित्य तथा विज्ञान का प्रेमी होता है। इसे स्वजनों द्वारा ही गलत राय दी जाती है, जिसके अनुसार चलकर यह हानि उठाता है, तथापि सभी लोग इसके प्रताप से डरते हैं तथा यह राज्य द्वारा भी लाभ उठाता रहता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा श्रेष्ठ आचरण वाले होते हैं। ६८ वर्ष की आयु में इसे अरिष्ट होता है। उससे बचकर यह ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४५८) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गेहुँए रंग का, बलवान, शत्रुजयी, धनवान तथा भू स्वामी होता है। यह सत्कर्म करनेवाला, दानी, धर्मात्मा, परोपकारी तथा दूसरों का दुःख दूर करने के लिए सदैव उद्यत रहने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाकपटु तथा अच्छे व्यवहार वाली होती है। इसी आयु में इसे राजकीय सेवा (नौकरी) का अवसर भी प्राप्त होता है। यह व्यक्ति स्थिर चित्त वाला, भौतिक सुखों को भोगने वाला तथा नीच लोगों की संगति से धन प्राप्त करने वाला होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। ५६ वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक यश एवं प्रतिष्ठा का लाभ होता है। इसके पुत्र तेजस्वी होते हैं, जो अपने पिता के यश की वृद्धि करते हैं। जीवन के ४६, ५२ तथा ५८ वें वर्ष अरिष्ट कारक होते हैं, परन्तु पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखमय बना रहता है।

(१५१९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उत्तम वस्त्र धारण करने वाला, उत्तम स्थान में निवास करने वाला, उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करने वाला, संगीत-प्रेमी तथा राज्य से सम्मान पाने वाला होता है। यह अपने ज्ञान-भण्डार को साहित्य-सृजन के रूप में प्रकट करता है। इसके द्वारा रचित ग्रन्थ उत्तम कोटि के होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। इसी आयु में राजकीय सेवा का सुयोग भी बनता है। २४ वर्ष की आयु से यह अपनी मननशीलता के कारण अनेक कार्यों को नवीन ढंग से करता तथा लाभ उठाता है। इसमें छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति पाई जाती है। ४५ वर्ष की आयु तक यह सर्वगुणसम्पन्न हो जाता है तथा इसके पास पर्याप्त धन संग्रहीत हो जाता है। इसकी कीर्ति भी खूब फैल जाती है। जीवन के ४८, ४९, ५३ तथा ५६ वें वर्ष कुछ कष्टकारक होते हैं, परन्तु यह उन्हें हँसते हुए झेल जाता है। ८२ वर्ष की आयु में इसका आकस्मिक रूप से देहावसान हो जाता है।

(१५२०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, मृदुभाषी तथा राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह निरन्तर उन्नति करता रहता है। राज्य में इसका सम्मान होता है। यह अनेक भवन, वाहन तथा सेवकों का स्वामी, माता-पिता का भक्त, धर्मात्मा, दानी, परोपकारी, दान-पुण्य करने वाला, सर्वत्र सम्मानित तथा यशस्वी होता है। ४६ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे पद पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा सुख देने वाली होती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा आज्ञाकारी होते हैं। भाई तथा अन्य लोग भी इसे अत्यधिक प्रेम करते हैं। इसे कभी आकस्मिक चोट लगने का भय भी होता है। इसकी सामान्य आयु ६९ वर्ष की होती है, परन्तु इससे बच जाने पर यह ९० वर्ष तक जीवित रहता है। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखी तथा यशस्वी बना रहता है।

भृ० सं० ६५४३

कु० २०

(१५२१)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, नीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, राजयोगी, समस्त विघ्न-बाधाओं पर विजय पाने वाला, शत्रुजयी तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। प्रारम्भिक जीवन में इसे रोगादि का सामना करना पड़ता है, परन्तु बाद में यह निर्द्वन्द्व होकर आगे बढ़ता है। यह उत्तरदायित्वपूर्ण उच्च राजकीय पदों पर कार्य करता है तथा ३० वर्ष की आयु से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। सन्तान विलम्ब से होती है। गर्भनष्ट होना भी सम्भव है। यह अनेक स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध रखता है। इसके पास सम्पत्ति चारों ओर से खिंच कर आती है। परदेश में रहकर यह विशेष यश कमाता है। भूमि, भवन, वाहन, धन, रत्नादि की इसके पास कमी नहीं रहती। ६५ वर्ष की आयु में यह बहुत यश पाता है। पूर्णायु ८२ वर्ष के लगभग होती है।

(१५२२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार-हृदय, धनी, उच्चशिक्षा प्राप्त तथा बन्धु-बान्धव एवं मित्रों से प्रेम पाने वाला लोकप्रिय व्यक्ति होता है। यह राजकीय-सेवा में ३० वर्ष की आयु में उच्चपद प्राप्त करता है। इसका जीवन ऐश्वर्यशाली होता है तथा रहन-सहन भी ठाठ-बाट का बना रहता है। यह शत्रुओं को नष्ट करने वाला, किन्तु दुःख पाने वाला तथा अपने बन्धु-बान्धवों को ऊँचे पद पर आसीन करने वाला होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, सम्मान की वृद्धि करने वाली, सुशिक्षिता तथा गृहकार्य-कुशला होती है। वह परोपकारिणी तथा धर्म-कर्म में रुचि रखने वाली होती है। सन्तानें भी सुन्दर, श्रेष्ठ तथा सद्गुणी होती हैं। सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करता हुआ यह जातक ७८ से ८२ वर्ष की आयु में परलोकवासी होता है। पत्नी भी लम्बी आयु पाती है।

भु० सं० ११८२८

कु० र०

(१५२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, अत्यन्त बलवान्, देव-गुरु-भक्त, अपने प्रताप से शत्रुओं को परास्त करने वाला, राज्य में उच्च पद पाने वाला तथा मित्र एवं बन्धु-बान्धवों का पालन करने वाला होता है। यह आरंभ से ही उच्चपदासीन होता है तथा श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने के कारण बाल्या-वस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में मनोनुकूला, सुन्दरी, गुणवती स्त्री के साथ होता है। २७, २९, ३३, ३८ तथा ४६ वर्ष की आयु में इसे कुछ कठि-नाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उन्हें यह आसानी से पार कर जाता है। बाद के समय में इसकी आय अनेक स्रोतों से होती है तथा भूमि, भवन, वाहन एवं धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती। पुत्र-पौत्रों से सम्पन्न होकर यह लगभग ८० वर्ष की लम्बी आयु प्राप्त करता है।

(१५२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त धनी, विद्वान्, सुन्दर, उत्साही, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, संगीत-प्रेमी, साहित्यिक तथा माता-पिता को सुख देने वाला होता है। यह अपने उद्योग-व्यवसाय द्वारा प्रचुर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उदार तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। ४० वर्ष की आयु में यह किसी नवीन कार्य को आरंभ करता है और उससे लाभ उठाता है। इसके पुत्र तथा पुत्रियाँ सुन्दर, सुयोग्य तथा गुणवान् होते हैं। इसे अपनी ससुराल से भी सुख तथा धन का लाभ होता है। यह पत्नी के परामर्श को महत्व देता है। अनेक असंभव कार्यों को भी संभव करके प्रचुर लाभ प्राप्त करता है। इसे अपने पिता तथा मामा आदि का सहयोग भी प्राप्त होता रहता है। सुखी जीवन बिताता हुआ यह लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१५२२५) - इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान्, गुणवान्, सम्माननीय तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह उच्चपदस्थ राजकर्मचारी बन कर शासन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाता है तथा भूमि, भवन, वाहन, सेवक, धन आदि सुख से सम्पन्न, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, माता-पिता का भक्त, धार्मिक, दानी तथा उदार स्वभाव का होता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है, तथापि उसके विचार भिन्न होते हैं, अतः जातक उससे कुछ खिंचा-खिंचा सा रहता है। किन्तु पत्नी अपनी बुद्धिमत्ता से गार्हस्थ्य-जीवन में किसी कटुता को नहीं आने देती। इसे ३३, ३८, ४४, ४८ तथा ५३ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। भाग्योदय २४ वर्ष की आयु से होता है। सन्तानें श्रेष्ठ तथा सद्गुणी होती हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(१५२२६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, साहसी, अत्यन्त उद्यमी, भाई-बन्धुओं से युक्त तथा व्यवहार में किंचित् रूखापन लिए रहता है। यह माता-पिता का भक्त, पिता के व्यवसाय को आगे बढ़ाने वाला अथवा राजकीय-सेवा करने वाला होता है। २८ वर्ष की आयु में यह उच्च पद प्राप्त करता है तथा ३६ वर्ष की आयु में बहुत सम्मान पाता है। इसका विवाह २३ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रिय कार्य करने वाली होती है। वह कार्य एवं कला कुशल तथा अपनी इच्छानुसार चलने वाली होती है। पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं, वे पिता के आज्ञाकारी तथा सुख देने वाले होते हैं। ३६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट संभव है। यह जातक देश-प्रदेश में रहकर विशेष प्रतिष्ठा अर्जित करता है। इसकी पूर्णायु ८२ वर्ष से कुछ अधिक ही होती है।

(१५२७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी हृष्ट तथा पुष्ट शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुर व्यवहार का तथा अत्यधिक ज्ञानी होता है। इसका कद लम्बा, वर्ण गौर तथा स्वभाव सरल होता है। इसे क्रोध तो आता है, लेकिन यह हृदय का उदार होता है, अतः अपने अपराधी को भी क्षमा कर देता है। यह दीनों को आश्रय देने वाला तथा अपने जीवन के ४३, ४९ एवं ५७वें वर्ष में अत्यधिक प्रतिष्ठा पाने वाला होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सद्गुणी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। इस जातक को यात्रायें बहुत करनी पड़ती हैं तथा परदेश अथवा विदेश में जाने एवं वहाँ से धन कमाने के सुअवसर प्राप्त होते रहते हैं। यह सब प्रकार के लोगों की संगति करता है तथा उनसे प्रतिष्ठा पाता है। पूर्णायु ८२-८३ वर्ष के लगभग होती है।

(१५२८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत कद तथा हृष्ट शरीर वाला, उच्च आकांक्षाओं से युक्त, धीमान्, साहित्य एवं संगीत का प्रेमी, कला-निपुण, अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला, बुद्धिमान, शूरवीर, साहसी, धनवान, कम भाइयों वाला, कुटुम्ब से अलग रहने वाला तथा धनी होता है। यह २६ वर्ष की आयु से धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने लगता है तथा ३७ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार तथा जातक की भाग्यवृद्धि में सहयोग करने वाली होती है। ४५ वर्ष की आयु में इसे निम्न कोटि के लोगों द्वारा कष्ट मिलता है। सामान्यतः इसे अच्छे मित्रों का सहयोग प्राप्त होता रहता है। पुत्र-पुत्रियों से सम्पन्न इस जातक को ५४ वर्ष की आयु में अभीष्ट होता है तथा ६८-६९ वर्ष की पूर्णायु होती है।

भु० सं० १४२९

कु० २०

(१५२९)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा साहित्य-संगीत आदि कलाओं का प्रेमी होता है। यह अपने पराक्रम तथा अध्यवसाय द्वारा अपनी आयु के ३०, ३५ तथा ४८वें वर्ष में तीन बार नवीन कार्य करके सफलता प्राप्त करता है। इसे अपने कार्य में बाहरी स्थानों तथा लोगों से पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। धन-संचय करने में इसे कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि धन की आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। ५०-५५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। गुप्त स्थानों से भी इसे धन का लाभ होता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के अतिरिक्त धन, रत्न, आभूषण आदि भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। यह अपने लोगों को बहुत प्रश्रय देता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्र सद्गुणी होते हैं। ६८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७५ वर्ष।

(१५३०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, दृढ़ शरीर का महत्वाकांक्षी तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह २२ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह राजकीय सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है तथा खूब धन भी कमाता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों को यथेष्ट संरक्षण देता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। पराई-स्त्री से इसे बहुत सहयोग मिलता है तथा उसके धन का अधिकारी भी बनता है। अपने प्रताप के कारण यह अनेक मित्रों का प्रिय होता है। ४५, ४९, ५३ या ५९ वर्ष की आयु में इसे थोड़ी आर्थिक-हानि होती है, परन्तु उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। २५ वर्ष की आयु में किसी पर-स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध के कारण यह कुछ लांछित भी होता है। इसके पुत्र-पुत्री सद्गुणी होते हैं। परमायु ७८ अथवा ८८ वर्ष होती है।

भु.० सं.० २१४८७

कु० १०

(१५३१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुक्र, कलाओं का ज्ञाता तथा विभिन्न कार्य करने का आदी होता है। यह भोला-सा बना रह कर, अपने मन की बात किसी पर प्रकट नहीं करता तथा जो मन में आता है, वही करता है। यह स्थूल-शरीर का, धनी, विलासी, सौन्दर्य-प्रेमी तथा मनोरम स्थानों पर भ्रमण करने वाला होता है। यह धार्मिक आस्थावान् तथा दानी भी होता है। इसका विवाह या तो होता ही नहीं है और यदि होता है तो पत्नी सुन्दरी परन्तु रुग्णा मिलती है। यह पर-स्त्रियों के साथ ही भोग-विलास में रत रहता है। इसके सम्पर्क में निम्न श्रेणी की स्त्रियाँ अधिक रहती हैं। यह शत्रुओं से डरने वाला तथा उनके द्वारा हानि उठाने वाला भी होता है, परन्तु अन्त में उन्हें पराजित करके ही दम लेता है। मुकद्दमा तथा विवाद आदि में यह प्रतिपक्ष को पराजित करता है तथा स्वयं राजमान्य एवं प्रभावशाली बना रहता है। ५६ वर्ष की आयु में अनिष्ट तथा ८० वर्ष की आयु में परलोक-गमन सम्भव है।

(१५३२)- इस कुण्डली का स्वामी कृशकाय, नेत्र रोगी, अनेक प्रकार के कष्ट पाने वाला, गायन वादन एवं नृत्य विद्या का जानकार तथा व्यवसाय कुशल होता है। इसके शत्रु अनेक होते हैं परन्तु इसे कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा तेजस्वी स्त्री के साथ होता है; उसके प्रति यह सदैव समर्पित बना रहता है। यह अपने पिता से विशेष स्नेह रखता है तथा उनके साथ मिल कर गृहस्थी का संचालन करता है। २३ वर्ष की आयु में इसे किसी मुकद्दमे आदि में विजय का लाभ होता है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करने वाला, धनी, धर्मात्मा तथा दो-तीन स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाला होता है। ३४, ३५, ५६, ६३ तथा ६८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पत्नी प्रायः रुग्णा बनी रहती है, तथापि लम्बी आयु प्राप्त करती है। जातक की परमायु ७९ वर्ष होती है।

(१५३३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मधुर भाषी, व्यवहार-कुशल, नीतिज्ञ, विद्वान् तथा अपनी बुद्धि के बल पर अत्यधिक प्रतिष्ठा पाने वाला होता है। यह अपने जीवन के २५वें वर्ष में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा ३६ वें वर्ष तक बहुत उन्नति कर लेता है। इसे अनेक स्रोतों से आर्थिक-लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु तक इसके पास भूमि, भवन, वाहन तथा धन-धान्य प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हो जाते हैं। इसे मित्रों तथा परिवारीजनों से सहयोग मिलता है, अन्य लोग भी इसके द्वारा सुख एवं समृद्धि प्राप्त करते हैं। यह विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में लोकमान्य होता है। इसका विवाह २५ से २६ वर्ष की आयु में किसी ऐसे परिवार की कन्या के साथ होता है, जो इसे अपने से हीन मानता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। पुत्र सद्गुणी होते हैं। इसे कभी कोई व्याधि नहीं होता। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(१५३४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बलवान, धनी, अनेक प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त, विभिन्न कलाओं का प्रेमी तथा उनका जानकार, दीर्घायु एवं अपने प्रताप के कारण सर्वत्र पूजित होता है। यह ज्ञानी, विज्ञानी, देश-परदेश में ख्याति अर्जित करने वाला तथा अपने परिवार से दूर रहने वाला होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह ख्याति के उच्च शिखर पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, समझ-दार तथा पति की आज्ञानुवर्तिनी होती है। इसके पुत्र तथा पौत्र सभी सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। इस जातक को कभी अरिष्ट नहीं होता। आजीवन स्वास्थ्य बना रहता है। इसकी ख्याति से कुटुम्बीजन ईर्ष्या करते हैं, अतः यह उनके सम्पर्क में नहीं रहता। इसे भवन, वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(१५३५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कोमल हृदय परन्तु चंचल-चित्त वक्ता, गीत वाद्य में निपुण, पराक्रमी, विजयी तथा धनी होता है। यह अपने स्थान से ही रहता हुआ यश तथा धन प्राप्त करता है। यह २५ वर्ष की आयु से धन कमाना आरंभ कर देता है। स्वभाव से कृपण होते हुए भी धार्मिक-कृत्यों तथा परोपकार के कार्यों में अपना धन खर्च करना इसे अच्छा लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, स्वस्थ, नीतिज्ञ तथा सुख देने वाली होती है। आयु के २८, ३५, ४२ तथा ४६ वें वर्ष में शत्रु पीड़ा पहुँचाते हैं। पशुओं से धन की हानि होती है। यह देशान्तरों में आना-जाना बना रहता है और वहीं से काफी धन कमाता है। इसे अपनी सन्तानों की ओर से कष्ट होता है। संतानें होती भी कठिनाई से हैं। सामान्यतः इसकी आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। परमायु ७० से ७५ वर्ष के मध्य होती है।

(१५३६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, परन्तु अधिक विचारों वाला होता है। यह बड़ी दूर की बात को भी शीघ्र सोच लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशिक्षिता मिलती है, जो घर की मान-मर्यादा में वृद्धि करती है। पुत्रों की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। यह जातक माता-पिता का सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है। यह धार्मिक स्वभाव का, बन्धु-बान्धवों से युक्त, अत्यधिक धन-सम्पत्ति कमाने वाला तथा अनेक सन्तानों का पिता होता है। कुछ सन्तानें मर भी जाती हैं। यह अपने साहस तथा पराक्रम से विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। अपने व्यवसाय द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। एक के बाद दूसरा व्यवसाय करना भी सम्भव है। ७० वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट होता है, परन्तु उसके बाद तीन वर्ष तक और भी जीवित बना रहता है।

(१५३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कुछ आलसी प्रकृति का, चित्त का उदार तथा चरित्रवान होता है। यह बाल्यावस्था में कुछ कष्ट पाता है, परन्तु बाद में नीरोग रह कर आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। यह परोपकारी तथा दयालु स्वभाव का होता है, एवं शत्रुओं पर भी कृपा करता है। इसका भाग्योदय २३-२४ वर्ष की आयु से होता है। अपने साहस, परिश्रम तथा विद्या-बुद्धि के बिना ही यह केवल भाग्य के बल पर ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। ३४ से ५७ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा गृह-कार्य कुशला होती है। वह जातक के सम्मान में वृद्धि करती रहती है। इसकी सन्तानें उत्तम होती हैं। पुत्रों के सद्गुणों के कारण भी जातक की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सन्तानें दीर्घायु होती हैं। इसकी आयु ७८ वर्ष होती है, यह समय निकल जाने पर ८५ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१५३८)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सर्वगुण सम्पन्न, कलाओं का ज्ञाता, ख्याति युक्त तथा धन-सम्पत्ति से समृद्ध होता है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है तथा सत्कर्मों द्वारा यशस्वी एवं सुखी बना रहता है। इसे राज्य द्वारा भी मान्यता मिलती है तथा यह किसी पद पर भी प्रतिष्ठित हो सकता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा श्रेष्ठ विचारों वाली मिलती है। यह पति को सुख पहुँचाती, सुन्दर पुत्रों को जन्म देती तथा मान-प्रतिष्ठा बढ़ाती है। माता से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। पुत्रों से सुख प्राप्त होता है। यह जातक अपनी महत्वाकांक्षाओं को सफल करने में सक्षम होता है। भूमि, भवन, वाहनादि के सुख से संयुक्त यह यशस्वी जीवन व्यतीत करता है। ३२ से ५६ वर्ष तक की आयु का समय विशेष उन्नति कारक सिद्ध होता है। पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

(९५३९)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, विद्वान, बुद्धिमान, उद्यमी, संतोषी, पराक्रमी, उग्रस्वभाव का तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह विभिन्न कलाओं में निष्णात, काव्य-साहित्य का प्रेमी एवं ग्रंथलेखक होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, कला-कुशल एवं व्यवहार-कुशल स्त्री के साथ होता है। वह भाग्योदय में पति के लिए सहायक सिद्ध होती है। यह जातक अपनी स्त्री तथा अन्य स्त्रियों से भी भोग-विलास एवं धन का लाभ प्राप्त करता है। अनेक महिलाओं का प्रेम पाकर इसे अभिमान होता है। यह बन्धु-बान्धवों से युक्त, आश्रितजनों का पोषक तथा उन्हें उन्नति-पथ पर आगे बढ़ाने वाला होता है। ३० से ५४ वर्ष की आयु के बीच इसका सर्वाधिक उत्कर्ष होता है। इसके पुत्र सुन्दर, मानी, आज्ञाकारी, बुद्धिमान तथा यशस्वी होते हैं। इसे जीवन में कभी अनिष्ट नहीं होता। पूर्णायु ९० वर्ष के लगभग होती है।

(९५४०)- इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, दूरदर्शी, उद्यम तथा पराक्रमी होता है। इसे जीवन में किसी बात की कमी नहीं रहती। यह सांसारिक कार्यों का सफलता पूर्वक संचालन करता हुआ लोक में सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा भाग्यवती स्त्री के साथ होता है। इसी आयु में इसका भाग्योदय भी होता है। इसे अप्रत्याशित स्थितियों तथा स्थानों से धन तथा यश की प्राप्ति होती है। जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक यह धन-सम्पन्न बना रहता है। इसे उच्चपद प्राप्त होता है। अपनी स्त्री से पूरा-पूरा सुख प्राप्त करते हुए भी यह अन्य कई स्त्रियों का प्रेम प्राप्त करता है। पुत्र-पौत्र योग्य तथा आज्ञाकारी होते हैं। इसे जीवन में शारीरिक-कष्ट प्राप्त नहीं होता। जीवन के २५, २८, ३२, ३५, ४०, ४६, ४८, ५२, ५६, ५८ तथा ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे पूर्णायु लगभग ९२ वर्ष की प्राप्त होती है।

भु० सं० १२५४३

कु० १०

(१२५४१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, विद्वान्, बुद्धिमान, प्रभावशाली तथा अत्यधिक उन्नति करने वाला होता है। २३-२४ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। यह निरन्तर आगे बढ़ता हुआ शीघ्र ही उच्च शिखर पर जा बैठता है। परदेश में रहकर यह विशेष उन्नति करता है। इसका विवाह भी २३ से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी एवं कला-कुशला होती है। वह संगीत-नृत्य आदि में कुशल होकर स्वतन्त्र रूप से धन-प्रतिष्ठा अर्जित करती है तथा अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखती है। इस जातक के सन्तान या तो होती ही नहीं है और यदि होती भी हैं तो वह अकाल में ही काल-कवलित हो जाती हैं। बड़ी कठिनाई एवं पूजा पाठ से यदि कोई संतान बच जाती है तो वह रोगग्रस्त बनी रहती है अथवा अत्यधिक भाग्यशाली होती है। जातक को बंधु-बांधवों से सहयोग मिलता रहता है। पूर्णायु ८६ वर्ष होती है।

(१२५४२) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, उदार, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा लोगों को अत्यधिक प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर की, परन्तु अत्यन्त रूपवती, विदुषी तथा गुणवती होती है। उसके साथ जीवन भर सुख का अनुभव होता रहता है। संतानें भी उत्तम प्राप्त होती हैं। यह जातक अनेक प्रकार से धनोपार्जन करता है तथा इसे सब प्रकार के सुख-साधन उपलब्ध बने रहते हैं। कभी कोई कठिनाई नहीं उठानी पड़ती। यह राज्य की सेवा अथवा अपने निजी व्यवसाय द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसके पुत्र भी बड़े होकर पर्याप्त सम्पत्ति को बढ़ाते हैं। वे भी जातक की भाँति ही सुखी तथा यशस्वी जीवन व्यतीत करते हैं। इस जातक के अनेक स्त्रियों से प्रेम-संबंध रहते हैं। यह सब प्रकार से सुखी रहता हुआ, लगभग ९० से ९६ वर्ष तक की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१५४३)- इस जन्म कुंडली का स्वामी कुछ स्थूल शरीर का, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, धर्मात्मा तथा अपने परिवारी जनों की सहायता करने वाला होता है। यह पिता का आज्ञाकारी, शरीर से स्वस्थ रहनेवाला तथा अपने ही श्रम से धनोपार्जन कर धनी बनने वाला होता है। इसका विवाह 20 से 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, धैर्यवान तथा गुणवती मिलती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है तथा प्रगति पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। पुत्र सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। यदि जीवन में शुक्र की महादशा आ जाय तो यह जीवन में अत्यधिक धन, ऐश्वर्य, कृषि, भवन, वाहनादि का सुख एवं स्वामित्व प्राप्त करता है एवं उच्च पदासीन होता है। अपनी स्त्री की ओर से इसे कुछ चिन्ता भी बनी रहती है। यह देश-प्रदेश में सर्वत्र धन तथा यश प्राप्त करता है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष या इससे भी कुछ अधिक हो सकती है।

(१५४४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति शुक्र, शिशुवस्था तथा माता द्वारा पालित होने पर भी माता से विशेष प्रेम रखने वाला होता है। श्रेष्ठ शास्त्रों का ज्ञाता होते हुए भी लोभी प्रकृति का होता है। यह २६ वर्ष की आयु में ही जनता का योग देता है तथा बाहर रहकर धनोपार्जन करता है। इसका शरीर किंचित स्थूल, परन्तु व्यक्तित्व आकर्षक होता है। इसका विवाह विलम्ब से होता है तथा स्त्री का सुख भी अल्प ही मिलता है। पुत्रों से इसे सुख मिलता है। वे धनोपार्जन कर इसका सम्मान भी बढ़ाते हैं। इस जातक का राज्य से विरोध रहता है। पर-स्त्री के लिए कार्य करने पर इसे अत्यधिक लाभ होता है। इसे पराये-धन की प्राप्ति भी निश्चय है। यह अपने व्यवसाय द्वारा यथेष्ट धन कमाता है। ३२ से ६५ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसकी पूर्णायु ६८ अथवा ७५ वर्ष होती है।

(१५४५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, शूर-वीर, पराक्रमी तथा विभिन्न गुणों से युक्त होता है। यह उच्च आकांक्षाओं वाला, क्रियाशील तथा अध्ययनशील होता है। यह अपने परिश्रम द्वारा अपने उद्योग को बढ़ाता है। यह पिता से धन पाने वाला, दयालु, दूसरों की सहायता करने वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त, राजमान्य तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी, सुख देने वाली तथा स्वतन्त्र-व्यक्तित्व की धनी होती है। यह पत्नी के भाग्य से अपने भाग्य की वृद्धि करता है। सामान्यतः यह २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है, तथापि ४६ वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक धन तथा प्रतिष्ठा का लाभ होता है। ५६ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट होता है तथा परमायु ७६ वर्ष होती है। सामान्यतः इसका सम्पूर्ण जीवन सुखी बना रहता है।

(१५४६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति स्वस्थ, बलिष्ठ, सुन्दर, क्रोधी तथा रूखे स्वभाव वाला, साहसी, पराक्रमी, तथापि हृदय से उदार होता है। यह अपने साहस के बल पर बड़े-बड़े कठिन कार्यों को पूरा करने वाला है। यह बन्धुओं का पालक, मित्रों का आश्रय देने वाला तथा ब्राह्मणों का पोषक होता है। यह 23-28 वर्ष की आयु में परदेश चला जाता है और वहीं रह कर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोहारिणी होती है, फिर भी उसे जातक द्वारा सुख प्राप्त नहीं होता। इसके पुत्र सुन्दर, गुणवान, सुखदायक तथा प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले होते हैं। 32, 35, 36 तथा ४० वर्ष की आयु में इसे संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उनसे मुक्त भी हो जाता है। ५६-५८ वर्ष की आयु में विशेष उन्नति करता है तथा भूमि, भवन, वाहनादि प्राप्त करता है। ६५ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा ७५ वर्ष की पूर्णायु होती है।

(१५४७)- इस कुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर, हठी, शुष्क स्वभाव का तथा कलाओं का जानकार होता है। लौह-काष्ठादि का कार्य करने में इसे प्रवीणता प्राप्त होती है। यह माता-पिता का भक्त, पिता का धन प्राप्त करने वाला, अनेक भाइयों से युक्त तथा बहुत धनी होता है। २७ वर्ष की आयु तक यह किसी राजकीय-सेवा में संलग्न होकर बहुत धन कमाता है। राज द्वारा सम्मान भी प्राप्त करता है। भोग-विलास में धन खर्च करना इसे अच्छा लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी जातक से छोटी आयु वाली, अत्यन्त सुन्दरी, आकर्षक तथा सुखदायिनी होती है। इसका भाग्योदय स्त्री के द्वारा ही होता है। यह अनेक स्त्रियों के प्रेम-पाश में बँधकर उनसे लाभ उठाता है। ५३ वर्ष की आयु में इसे अनिष्ट होता है, परन्तु सुन्दर, धनी तथा सम्पन्न पुत्रों को छोड़कर लगभग ७६ वर्ष की आयु में यह परलोक-गमन करता है।

(१५४८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, शान्त स्वभाव का; आलेखन, चित्रकला, साहित्य आदि का ज्ञाता, रचयिता तथा धन-संग्रह करने में कुशल होने के साथ-साथ कंजूस प्रकृति का भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मृदु व्यवहार करने वाली, मधुर भाषिणी तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। इसके क्रियाकलाप रहस्यमय होते हैं। दूसरे शब्दों में यह मायावी होता है। विवाहोपरान्त ६५ वर्ष की आयु तक इसे शारीरिक-कष्ट नहीं होता। यह जुआ खेलने का शौकीन होता है तथा नीचों की संगति को पसंद करता है। इसे कभी आर्थिक कष्ट भी नहीं होता। यह भाग्य का धनी होता है। बहुत समय तक राजकीय-सेवा में भी बना रहता है। ५२ वर्ष की आयु में इसे अनिष्ट होता है। परन्तु उससे बचकर यह ८० वर्ष से भी अधिक की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१५४९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, ज्ञानी, पण्डित, विद्वान्, बुद्धिमान्, कोमल स्वभाव का, अत्यधिक स्वाभिमानी तथा लोक-सम्मानित होता है। यह बन्धु-बान्धव तथा मित्रों से रहित होता है। किसी भी नवीन कार्य को आरम्भ करने पर इसे हानि उठानी पड़ती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। २८ वर्ष की आयु में यह जातक बहुत धन कमाता है तथा बड़े जन-समूह का पालन-पोषण भी करता है। पत्नी के कारण इसके भाग्य में बड़ा परिवर्तन आता है। यह ज्योतिष का भी ज्ञाता होता है। राजकीय-सेवा में संलग्न रहकर भी यह अत्यधिक धन, यश तथा सुख प्राप्त करता है। इसके पुत्र सुन्दर, साहसी तथा उच्छृंखल स्वभाव के होते हैं। यह जातक अनेक स्त्रियों का उपभोग करता है तथा सुखी रहते हुए लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१५५०) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, पराक्रमी, राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उच्च पद पाने वाला, जुआ आदि व्यसनों में अपना धन बर्बाद करने वाला, तथापि कृपण स्वभाव का होता है। यह माता-पिता का भक्त होता है, परन्तु उनसे सुख नहीं मिलता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह अनेक स्रोतों से धनोपार्जन करता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर दीर्घकाल तक प्रचुर धनोपा-र्जन करता है। यह अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा मनस्वी होते हैं, तथापि इसे पुत्रों से सुख नहीं मिलता। इसे जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४२, ५० तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख मिलते हैं। इसकी पूर्णायु लगभग ६५ वर्ष होती है।

(१५५१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, धैर्यवान, नीतिज्ञ, ज्ञान-विज्ञान को जानने वाला, सुखी तथा गहरी सूझ-बूझ वाला होता है। यह राजकीय-सेवा में उच्च-पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा बुद्धिमती मिलती है। वह जातक की आज्ञाकारिणी, मनस्विनी, वाक्पटु तथा अपने मधुर-व्यवहार से परिवारीजनों को प्रसन्न रखने वाली होती है। लगभग ३० वर्ष की आयु तक जातक अपनी पत्नी की इच्छानुसार ही प्रत्येक कार्य करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुशील होते हैं। यह जातक अपनी विद्या-बुद्धि तथा पुत्रों की सहायता के बल पर सुन्दर भवन का निर्माण करता है। यह जातक न्यायोचितों का पालन करने वाला होता है तथा ४० वर्ष की आयु में किसी नवीन कार्य को आरम्भ करता है, जिससे इसे पर्याप्त लाभ होता है। इसकी परमायु ७९ वर्ष होती है।

(१५५२)- इस जन्मांग चक्र में जातक मनुष्य सुन्दर, चतुर, नीतिज्ञ, मनमानी करने वाला तथा विचित्र स्वभाव का — कुछ हठी, कुछ क्रोधी होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाली होती है। वह जातक को भी नियन्त्रित रखती है। यह जातक अपने पराक्रम से धनोपार्जन करने वाला, विघ्न बाधाओं को पार करते हुए सर्वत्र सफलता पाने वाला तथा राज्य से आदर-सम्मान पाने वाला होता है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी यह संबंध रखता है। इसे ४५, ५१, ५४ तथा ५६वें वर्ष में बहुत धन का लाभ होता है तथा सर्वत्र सम्मान भी प्राप्त करता है। इसकी मृत्यु राज्य के अधीन किसी स्थान अथवा कार्यालय में होने की सम्भावना होती है। सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५५३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, रुक्ष शरीर तथा लम्बे क़द वाला, अत्यन्त धैर्यवान तथा सभी कार्यों को नीतिपूर्वक करने वाला होता है। इसकी शिक्षा उत्तम होती है। विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा प्रिय आचरण करने वाली होती है। वह तेज स्वभाव वाली पति को अपनी इच्छानुसार चलाने में भी सफल होती है। संतान की ओर से चिन्ता रहती है। सन्तान यदि होती है तो वृद्धावस्था में। यह २३ से ४८ वर्ष की आयु तक विशेष उन्नति करता है। धन संग्रह करने में अत्यन्त निपुण तथा कुल में विख्यात होता है। इसका कोई मित्र नहीं होता, क्योंकि यह बहुत ही एकान्तप्रिय रहता है। परदेश में इसे बहुत सम्मान प्राप्त होता है। लोग इसे धनी, गुणी तथा यशस्वी व्यक्ति के रूप में जानते हैं। इसे ६८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है, उससे बचने पर ७८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१५५४)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सामान्य क़द तथा रूप का, स्वेच्छाचारी, कटुभाषी, रोगग्रस्त तथा चोरी करने में निपुण होता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है और कभी-कभी यह शुभ एवं पुण्य कार्यों की ओर भी अग्रसर होता है। यह राज्य के उच्च-पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा अपने चातुर्य के बल पर अपने अधीनस्थ एवं उच्च अधिकारियों को अपने प्रभाव में बनाये रखता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा व्यवधानों के साथ पूरी होती है। ३० वर्ष की आयु तक यह दुःख भोगता है। इसी आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, मनस्विनी तथा अपनी बुद्धिमत्ता से गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करने वाली होती है। वह अपनी योग्यता से पति पर शासन भी करती है। इसे सम्मान देने से प्रसन्न होती है। धनोपार्जन यथेष्ट बना रहता है। सामान्यतः दुःख भोगता हुआ यह ७६ वर्ष अथवा ८७ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ०३२८...

(१५५५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान, विद्वान, धर्म-भीरु, परन्तु गुप्त रूप से विलासी प्रकृति का होता है। भोग-विलास के साधन जुटने पर इसे बड़ी प्रसन्नता होती है, तथापि प्रकट रूप में यह अपने शील पर धब्बा न लगने देने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। इसका विवाह १९ से २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, रूपवती तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। यह जातक अपने चारों ओर के वातावरण को अनुकूल बनाये रखने में सफल होता है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में नियुक्त होकर परदेश के लिए प्रस्थान करता है तथा अपनी योग्यता एवं पुरुषार्थ के बलपर शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसके पुत्र सुन्दर होते हैं। अपनी आयु के ६८वें वर्ष तक इसे अत्यधिक सुख प्राप्त होता रहता है। परमायु लगभग ७६ वर्ष होती है।

(१५५६)- यह जातक सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, साहित्य तथा कलाओं का ज्ञाता, ग्रंथकर्ता एवं बड़ा विद्वान होता है। इसे अपने पिता से उचित मात्रा में सुख नहीं मिलता, तथापि यह अपने ही पुरुषार्थ द्वारा ३० वर्ष की आयु तक अत्यधिक ख्याति अर्जित कर लेता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक बहुत ऊँचाई पर पहुँचकर धन, सम्पत्ति, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह भी लगभग ३० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी नवयौवना, सुन्दरी, गुणवती, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा महत्वाकांक्षिणी प्राप्त होती है। इसकी सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है, परन्तु सभी सन्तानें सुन्दर तथा सुखदायक होती हैं। ६८ वर्ष की आयु में यह चरमोत्कर्ष प्राप्त कर लेता है तथा अंतिम समय तक सक्रिय बना रहता है। यह ७३ अथवा ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

कु० र०

(१५५७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, अत्यन्त गुणी, बड़ा विद्वान्, अत्यन्त बुद्धिमान तथा धनवान भी होता है। इस पर सरस्वती तथा लक्ष्मी - दोनों की समान रूप से कृपा रहती है। यह राज्य द्वारा सम्मानित तथा उच्च पद प्राप्त करनेवाला होता है। यह विभिन्न स्रोतों से धनोपार्जन करता है तथा देश-प्रदेश में सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा पाता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा आज्ञानुवर्तिनी कन्या के साथ होता है। इसका गार्हस्थ्य एवं दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। इसकी पत्नी परिवार का संचालन करने में कुशल तथा पति को सुख देने वाली होती है। इसका भाग्योदय २३ वर्ष की आयु में अथवा मंगल की महादशा में होता है, तत्पश्चात् यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे आजीवन सुख प्राप्त होता है। ४६ वर्ष की आयु में कष्ट, ६८ वें वर्ष में अरिष्ट तथा ७९ वर्ष की आयु में परलोक-गमन होता है।

(१५५८)- इस जन्मांग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, विद्वान्, ज्ञानी, धर्मात्मा, शिक्षा-दीक्षा में अत्यन्त उन्नति पानेवाला, ग्रन्थकर्ता, साहित्यप्रेमी तथा राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। राजकीय-सेवा से संयुक्त होने का अवसर लगभग २९ वर्ष की आयु में प्राप्त होता है, इसके पूर्व अन्य प्रकार के सेवा-कार्यों से संलग्न रहता है। इसे माता-पिता का प्रेम प्राप्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील तथा मृदु स्वभाव की एवं भाग्योदय में वृद्धि करने वाली मिलती है। इसकी सन्तानें सुन्दर तथा बहुगुणी होती हैं। विवाह के बाद ही भाग्योदय आरम्भ हो जाता है तथा ६९ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ६९ वर्ष की आयु में ही अरिष्ट भी होता है, परन्तु उससे बचकर सुखी जीवन बिताते हुए ८१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० २३२८

कु० र०

मु० सं० १२२३

कु० र०

(१५५९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, ग्रंथ-लेखक, सुहृद्-प्रेमी, उग्र कार्यों को करने में रुचि रखने वाला, भ्रमणेच्छुक, दृढ़ शरीर का, साहसी, पित्त एवं रक्त की पीड़ा वाला तथा भू-स्वामी होता है। यह अपने कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी ऐश्वर्यों का भरपूर उपभोग भी करता है। यह अत्यन्त भाग्यशाली तथा सुन्दरी स्त्री का पति होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है तथा यह निरन्तर उन्नति करता हुआ शीघ्र ही उच्चपद पर जा प्रतिष्ठित होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर महाधनी तथा ऐश्वर्यशाली बन जाता है। सर्वत्र इसकी चर्चा एवं प्रशंसा होती रहती है। इसकी पत्नी धार्मिक प्रवृत्ति की तथा पति को सुख देने वाली, मनस्विनी होती है। संतानें भी सुन्दर तथा गुणवान होती हैं। सब प्रकार से सुखी-जीवन बिताता हुआ यह जातक ९० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(१५६०)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्थूल शरीर का, बड़ा बलवान, बहुत बुद्धिमान, काव्य-साहित्य का प्रणेता, धनी, दीर्घजीवी, राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम प्रकार से होती है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा प्राप्त होती है। पुत्र गुणवान, सुन्दर तथा कुल की कीर्ति को बढ़ाने वाले होते हैं। २५ वर्ष की आयु से इसका विशेष भाग्योदय होता है। यह शासन में किसी उच्चपद को प्राप्त करता है तथा ३५ वर्ष की आयु में यह पदोन्नति करता हुआ किसी अधिक उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। जीवन के ४०, ४८, ५९ तथा ६१ वें वर्ष में इसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक, पुत्र-पौत्र, धन-रत्न, आभूषण आदि से सम्पन्न सुखी जीवन व्यतीत करता हुआ यह ८६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१५६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, प्रभावशाली, सद्गुणी एवं स्व-पराक्रम द्वारा अत्यधिक उन्नति करने वाला होता है। यह माता-पिता के सुख से सम्पन्न, बाल्यावस्था से ही ऐश्वर्यों के बीच पलने वाला, धनवान, दीर्घजीवी; भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सुखों से युक्त तथा उच्च पद पर प्रतिष्ठित होने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक यह शिक्षा-दीक्षा पूर्ण करके शासकीय-क्षेत्र में कार्य-रत हो जाता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में परम सुन्दरी कन्या के साथ सम्पन्न होता है। पुत्र भी सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। अपनी पत्नी के अतिरिक्त इसे अन्य अनेक स्त्रियों का सम्पर्क-भोग भी प्राप्त होता है। लोक में सर्वत्र इसे सम्मान मिलता है तथा इसके सद्गुणों की सब लोग प्रशंसा करते रहते हैं। ७८ वर्ष की आयु में इसे अरिष्ट होता है। परमायु ८६ वर्ष की होना संभव है।

(१५६२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, अनेक कलाओं का ज्ञाता, जुए तथा सट्टे अथवा लाटरी से धन कमाते रहने वाला, देश-विदेश की यात्राएँ करने वाला, सर्वत्र सम्मानित, यशस्वी, प्रियभाषी, ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा यशस्वी होता है। २२ से २४ वर्ष की आयु में शिक्षा सम्पन्न करके यह राजकीय-सेवा में जाकर उन्नति करना प्रारम्भ कर देता है। २६ वर्ष की आयु में ही यह सब प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त कर लेता है। २८ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी तथा धनी परिवार की कन्या के साथ होता है। यह उसमें आसक्त रहते हुए अन्य स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध बनाये रखता है तथा उनका उपभोग भी खूब करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। यह दयालु तथा परोपकारी प्रकृति का भी होता है एवं दूसरों की सहायता करके प्रसन्न होता है। यह लगभग ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मुख-रोग अथवा नेत्र-रोग से पीड़ित रहता है। यह कष्टसहन का अभ्यस्त, बुद्धिमान, वक्ता-कुशल, सुन्दर, सुगन्ध-प्रिय तथा नृत्य-संगीत आदि का ज्ञाता होता है। माता की अपेक्षा यह पिता को अधिक प्यार करता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा २५ वर्ष की आयु तक राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उन्नति-पथ पर अग्रसर होने लगता है। यह अपने शत्रुओं को न केवल पराजित करता है, अपितु उनसे लाभ भी उठाता है। यह जुआ खेलने का शौकीन भी होता है तथा उसमें सदैव विजयी भी रहता है। सभी जगह इसे अच्छा सम्मान मिलता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा धनी परिवार की होती है। यह उससे प्रेम रखता हुआ अन्य अनेक स्त्रियों की ओर भी आकर्षित होता है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। ६१ वें वर्ष में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(१५६४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली, मधुरभाषी तथा अपने सद्व्यवहार से सब लोगों को मोहित करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, गुणवती तथा पति को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है। २४ वर्ष की आयु से यह उन्नति करना प्रारम्भ कर देता है तथा शीघ्र ही उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर पर्याप्त धन तथा यश अर्जित करता है। यह अपने व्यवसाय द्वारा भी धनोपार्जन कर सकता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, गुणवान तथा यशस्वी होते हैं। यह ५२, ५६ तथा ६१ वर्ष की आयु में विदेश अथवा दूर देशों की यात्राएँ करता है। ६८ वर्ष की आयु में तीर्थयात्रा भी करता है। यह ईश्वर भक्त, दयालु, धर्म-कर्म में मन लगाने वाला, सहिष्णु तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। पत्नी भी ऐसी ही होती है, अतः ये दोनों ही यशस्वी बने रहते हैं। पूर्णायु ७८ या ८३ वर्ष की होती है।

(१५६५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, सद्गुणी, धनी, मानी, दानी, दीर्घजीवी तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। यह धर्म में आस्था रखने वाला, उग्र स्वभाव का, अपने स्थान के लोगों का मुखिया, चतुर तथा धन-संग्रह करने में कुशल होता है। यह २० वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में स्थान प्राप्त कर लेता है। तदुपरान्त यह निरन्तर उन्नति करता हुआ थोड़े ही समय में उच्च पद पर आसीन हो जाता है। यह ३८ वर्ष की आयु में ही अपने विभाग अथवा संस्थान का उच्चाधिकारी बन जाता है। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धर्मपरायणा, गुणवती तथा उच्चपद एवं सम्मान प्राप्त करने वाली होती है। वह अपने भाग्य द्वारा भी पति के सौभाग्य की वृद्धि करती है तथा स्वयं भी राजयोग का पूरा-पूरा उपभोग करती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ८९ वर्ष के लगभग होती है।

(१५६६)- इस कुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, सद्गुणी तथा बाल्यावस्था से ही ऐश्वर्योपभोग करने वाला होता है। इसके माता-पिता वैभवशाली तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होते हैं। इसके भाई-बहिन सुन्दर तथा सब प्रकार से सम्पन्न होते हैं। यह काव्य-शास्त्र का ज्ञाता तथा सद्गुणी होते हुए भी [illegible] होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। २४ वर्ष की आयु में ही इसे प्रशासकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त होता है। यह प्रशासक अथवा उच्च कोटि का चिकित्सक भी हो सकता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में मनवांछित कन्या के साथ होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। पुत्रियाँ भी ऐसी ही होती हैं। ४५, ५१ तथा ५८ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक, धन आदि सब प्रकार के सुखों से सम्पन्न, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता हुआ यह ८८-८९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५६७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रियवक्ता, परन्तु नीचों की संगति करने के कारण दोष पाने वाला होता है। इसका विवाह नहीं होता और यदि होता है तो वैवाहिक-सुख थोड़ा ही प्राप्त होता है। विवाह होने की स्थिति में पत्नी सुन्दरी मिलती है। यदि पत्नी की आयु के ग्रह प्रबल हों तो वह जीवित भी रहती है, परन्तु जाति से विलगाव बना रहता है। पुत्र तथा पुत्री श्रेष्ठ तथा सुन्दर होते हैं। स्वपत्नी के अतिरिक्त इस जातक का सम्बन्ध किसी अन्य स्त्री से भी रहता है। यह अपने कार्य में अत्यधिक व्यस्त बना रहता है तथा संगीत आदि कलाओं का जानकार भी होता है। यह २६-२७ वर्ष की आयु से ही अपने पिता के व्यवसाय से अलग अपना स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक उसे बहुत उन्नत बना लेता है। इसकी पूर्णायु ६५-७६ वर्ष के लगभग होती है।

(१५६८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विद्वान, ज्ञानी, श्रेष्ठ वक्ता, मधुर भाषण करने वाला, प्रतिभा वाला तथा व्यवहार-कुशल होता है। यह २५-२६ वर्ष की आयु से किसी ऐसे कार्य में रत हो जाता है, जो वक्तृता अथवा उपदेश देने से सम्बन्धित हो। शिक्षक भी हो सकता है। इसका विवाह २३ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं कला-कौशल की जानकार होती है। स्वतन्त्र व्यक्तित्व का धनी यह जातक देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, सर्वत्र सम्मानित तथा धन कमाने में कुशल होता है। परदेश में रहकर यह विशेष उन्नति करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है तथा सुख के अन्य साधन भी उपलब्ध हो जाते हैं। राजयोग होने के कारण यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है। पुत्र-पुत्री सद्गुणी होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष की सम्भव है।

(१५६९) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, धैर्यवान्, गंभीर स्वभाव का, माता-पिता की ओर से सुखी, पैतृक-सम्पत्ति से विरक्त तथा आचार-व्यवहार में सन्यासी जैसी प्रकृति का होता है। यह परोपकारी, दयालु, अत्यन्त ध्यानी, पंडित, मानी तथा सौहार्द का भण्डार होता है। इसकी आमदनी राजकीय-सेवा से होती है, जिसमें यह २५ वर्ष की आयु में ही प्रवेश पा लेता है। ४० वर्ष की आयु तक यह उच्च पद प्राप्त कर लेता है तथा ५१ वर्ष की आयु में बहुत धनी, यशस्वी तथा सब प्रकार से सम्पन्न हो जाता है। इसका उद्योग, पराक्रम तथा व्यवहार प्रशंसनीय होता है। प्रत्येक व्यक्ति इसका सम्मान करता है। यह शान्त प्रकृति का होता है तथा किसी को कष्ट नहीं देता। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। संतानें भी उत्तम होती हैं। भरे-पूरे परिवार सहित सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५७०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धैर्यवान्, स्नेही स्वभाव का, महत्वाकांक्षी तथा उत्तम कुल में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा प्राप्त होती है। संतान दो से होती है। यह अपने मित्रों से तो प्रेम रखता है, परन्तु अन्य परिवारी जनों से कोई प्रेम नहीं रखता। ऊपर से कठोर दिखाई देने वाला यह व्यक्ति भीतर से बड़ा कोमल होता है तथा अपने दुश्मन के लिए भी मन में दयाभाव रखता है। यह राजमान्य होता है अथवा राजकीय-सेवा में किसी उच्च-पद पर प्रतिष्ठित होता है। ५० वर्ष की आयु में यह अपना कोई व्यवसाय भी करता है। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी इसे धन का यथेष्ट लाभ होता रहता है। यह तीर्थयात्रा करता और धर्म-कर्म में अपना ध्यान लगाया करता है। इसकी पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

२३२८ सं. भू०

(१५७१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, समदृष्टि वाला, सत्य-व्यवहार करने वाला तथा लोकप्रिय होता है। यह धनी परिवार में जन्म लेने के कारण जन्म से ही सुखों का उपभोग करता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा किसी उच्च-संस्थान से सम्बद्ध होकर यथेष्ट सम्मान तथा धन का उपार्जन करता है। यह अपने माता-पिता का अत्यन्त प्रिय होने के साथ ही परिवारीजनों से भी आदर-सम्मान पाता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती, परिश्रमी तथा व्यवहार-कुशला होती है। इसे संतान की प्राप्ति विलम्ब से होती है तथा उसके लिए चिन्तित भी रहना पड़ता है। यह अपने पिता के व्यवसाय से भिन्न व्यवसाय ४१ वर्ष की आयु में करता है, जिसमें इसे बहुत लाभ होता है। यह धन-ऐश्वर्य सम्पन्न सुखी जीवन व्यतीत करते हुए लगभग ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१५७२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, धनी, राजमान्य, लोकपूजित, उच्च पद पर प्रतिष्ठित तथा सहृदय प्रकृति का होता है। यह गुप्त रूप से दीन-दुःखियों की सहायता करता है। धनी माता-पिता का पुत्र होने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है। इसके छोटे-बड़े भाई-बहिन भी बहुत प्रेम करने वाले होते हैं। यह उच्च शिक्षा प्राप्त, ग्रंथकर्त्ता, उपदेशक तथा श्रेष्ठ लेखक होता है। इसका विवाह 28 वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी सरल स्वभाव की, सुलक्षणा, बुद्धिमती, नीतिज्ञा एवं व्यवहार-कुशला होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखी बना रहता है। संतान कुछ विलम्ब से होती है तथा पुत्र से सुख भी प्रायः नहीं मिलता। यह परदेश में ही अपना घर बना कर वहाँ स्थायी-निवास करता है। यह किसी पर आश्रित नहीं रहता तथा स्व-पराक्रम से ही भूमि-भवन, वाहन आदि का उपार्जन कर सुखी बना रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक होना सम्भव है।

कु० र०

(१५८३) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गम्भीर स्वभाव का, बुद्धिमान, राजसी प्रकृति का, किसी उच्च पद को प्राप्त करने वाला, मित्रों में अधिक उठने-बैठने वाला, मित्रों जैसी चेष्टा वाला तथा मित्रों के साथ मिलकर कार्य करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है। २४ वर्ष की आयु में यह किसी शासकीय-सेवा में अथवा राजमान्य स्थिति में पहुँचकर धन तथा यश का उपार्जन करते हुए शीघ्र ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। ४१ वर्ष की आयु में इसे धन, सम्मान आदि का विशेष लाभ होता है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता है। संतानें सुन्दर तथा बुद्धिमान होती हैं, परन्तु पुत्रों से विशेष सुख नहीं मिलता। ५४ वर्ष की आयु में इसे और भी अधिक उच्चस्थान मिलता है। यह सर्वत्र सम्मान पाता हुआ तथा सुखी-जीवन बिताता हुआ ८३ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१५८४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धनी, राजाओं जैसा जीवन व्यतीत करने वाला बड़ा दानी, परोपकारी, कुछ स्थूल शरीर का तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह देव-गुरु-भक्त, माता-पिता का सम्मान करने वाला, अपने पौरुष तथा व्यक्तित्व से सबको अनुकूल बनाये रखने वाला होता है। इसका विवाह २६-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुखदायक मिलती है। २३ से २६ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। ३८ वर्ष की आयु तक यह बहुत अच्छी स्थिति को प्राप्त कर लेता है। कुशलवक्ता, महाविद्वान् होने के साथ ही यह सुन्दर पुत्रों से युक्त, परिजनों से समादृत एवं अनेक लोगों का पालनकर्त्ता भी होता है। सब लोग इसकी प्रशंसा करते हैं, तथापि अपनी माता से यह असंतुष्ट ही बना रहता है। अपने परिश्रम एवं योग्यता के आधार पर यह सफलता प्राप्त कर सुखी जीवन बिताता है। पूर्णायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

३३८८ सं. भु.

कु. २०

भु० सं० १२६०

कु० र०

(१५७५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी, समृद्ध, दीर्घजीवी, वेदोक्त कर्मों को करने वाला, माता से असन्तुष्ट तथा अपने साहस द्वारा विपुल धन, सम्पत्ति, भूमि, भवन, वाहन आदि का उपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, धीर-गंभीर स्वभाव की, मतिवती, नीतिज्ञा, समय को पहिंचानने वाली तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली मिलती है। लगभग २६ वर्ष की आयु में यह राजकीय सेवा में संलग्न होकर, निरन्तर उन्नति करता हुआ, शीघ्र ही उच्च पद पर जा पहुँचता है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा सफल्दार होते हैं। वे धन तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि करते हैं। इसके जीवन के ४२, ४४ तथा ४८ वे वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परदेश में रहकर यह यथेष्ट धनोपार्जन करता है। आजीवन विभिन्न प्रकार के सुखों को भोगता हुआ यह लगभग ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५७६) - इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तथा स्वस्थ होता है। यह बाल्यावस्था में बहुत सुखी रहता है। फिर १३-१४ वर्ष की आयु में कष्ट पाता है। अनेक प्रकार के विघ्नों को पार करते हुए यह कुछ अधिक आयु में ही अपनी शिक्षा को पूरी कर पाता है। इसके विवाह में भी अनेक बाधायें पड़ती हैं। विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है और वह घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती हुई जातक को सुख प्रदान करती है। अर्थोपार्जन हेतु आरम्भ में यह कोई व्यवसाय करता है, परन्तु उसमें सफलता नहीं मिलती, तब यह विदेश जाता है। बाद में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर ४५ वर्ष की आयु में उच्चस्थिति प्राप्त करके सुखी होता है। फिर स्वदेश लौटकर व्यवसाय करता है तथा ५६ वर्ष की आयु तक बहुत धन कमा लेता है। वृद्धावस्था इसकी सुख-शान्ति से बीतती है। पूर्णायु ८१-८२ वर्ष होती है।

(१५७७)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूपवान, नीतिज्ञ, अत्यन्त उदार, गुणवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सङ्गीत-वाद्य-प्रेमी, चिकित्साशास्त्र का ज्ञाता तथा भूमि-भवन से युक्त विपुल सम्पत्ति का स्वामी होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में अपनी शिक्षा समाप्त करता है, उसके पूर्व २१ वर्ष की आयु में ही अर्थोपार्जन हेतु कोई कार्य भी आरम्भ कर देता है। शिक्षा की समाप्ति पर यह अपने कार्य-व्यवसाय के संबंध में विदेश-गमन करता है तथा वहाँ धन तथा यश प्राप्त करता है। इस जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। यह राज्य की सेवा में नियुक्त होकर निरंतर उन्नति करता है तथा धन-धान्य, सम्पत्ति आदि से संयुक्त होकर यशस्वी बनता है। इसका विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, मनस्विनी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखने वाली होती है। यह जातक सुखी जीवन बिताते हुए ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५७८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, नीरोग, पराक्रमी, उदार तथा धनी होता है। यह अनेक गुणों से युक्त होता है तथापि इसे धन की तृष्णा अधिक रहती है। २६ वर्ष की आयु में राज-कीय सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा ४५-४६ वर्ष की आयु में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर खूब सम्पन्न बन जाता है। इसकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होती है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु, मधुरभाषिणी एवं धन-सम्पत्ति को सँभाल रखने वाली प्राप्त होती है। यह जातक को छूटे हाथ से सुख नहीं दे पाती तथा अपने पुत्र-पुत्रियों से अधिक स्नेहपरता बनाये रखती है। वह भी लोभी प्रकृति की होती है तथा घर का संचालन बड़ी कृपणता से करती हुई पर्याप्त धन एकत्र कर लेती है। जातक भी बड़ी कृपणता से जीवन-यापन करता हुआ ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भू० सं० १२८७

कु० २०

(१५७९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, विशाल-हृदय, श्रेष्ठ विचारक, भावुक तथा उत्तम बन्धु-बान्धव एवं मित्रों वाला होता है। यह अपने मित्रों तथा परिवारीजनों का पालक होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में सुन्दरी, गुणवती, मनस्विनी, परन्तु अपने मान-सम्मान पर विशेष गर्व करनेवाली स्त्री के साथ होता है। पश्चात वह अपनी पत्नी के अनुकूल बना रहता है। विवाहोपरान्त ही जातक राजकीय-सेवा में पहुँचकर अपनी योग्यता एवं परिश्रम के बल पर उच्चपद प्राप्त करता है। जीवन के ३५, ५१ तथा ५९ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। इसके पुत्र सुन्दर, सुशील तथा गुणवान होते हैं। ४८ वर्ष की आयु में यह किसी नवीन-कार्य को आरम्भ करता है, परन्तु आगे ७ वर्ष बाद उसे बन्द भी कर देता है। सामान्यतः सुखी एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताते हुए यह धन सम्पत्ति का संचय करता है तथा ७९ वर्ष से अधिक की परमायु पाता है।

(१५८०)- इस जन्मांग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी, विद्वान, अनेक भवन तथा वाहनों का स्वामी, अनेक भोगों का उपभोग करने वाला तथा सुखी एवं यशस्वी जीवन बिताने वाला होता है। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है, तथापि उससे मन नहीं मिलता। सुन्दर तथा तेजस्वी पुत्रों को जन्म देने के बावजूद भी उसके स्वभाव की स्वतन्त्रता पति से उसे अलग करके ही रहती है। २३ वर्ष की आयु के पश्चात वह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अपनी योग्यता के कारण शीघ्र ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। राजमान्य तथा राज्य द्वारा सब प्रकार से पोषित होने के कारण यह ऐश्वर्य की विविध सामग्रियों को प्राप्त कर धनी तथा यशस्वी बन जाता है। इसके पुत्र भी इसी के जीवनकाल में उच्चपदों पर पहुँचकर सुखी, धनी तथा यशस्वी बनते हैं। इसे ५९ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा ७३ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१५८१) - इस जन्मकुंडली का स्वामी बलवान, साहसी, पराक्रमी, क्रोधी, धूर्त तथा कूटनीतिज्ञ होता है। यह अनुचित कार्यों से धनोपार्जन करता है तथा निम्न श्रेणी के लोगों से अधिक सम्पर्क रखता है। यह स्त्रियों के संपर्क में भी अधिक रहता है तथा इसके धन की हानि भी खूब होती है। फिर भी इसके सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं। इसके सम्मुख शत्रु ठहर नहीं पाता। अपने बल-पराक्रम से यह सब को त्रस्त बनाये रखता है। राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने पर यह शासन द्वारा सम्मानित किया जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में विदुषी, गुणवती तथा मधुर भाषण वाली स्त्री के साथ होता है। यह जातक अपनी पत्नी की सम्मति लिए बिना कोई कार्य नहीं करता। प्रसिद्ध हो जाने पर इसके प्रारम्भिक-जीवन के निन्दनीय कार्यों को कोई स्मरण नहीं करता। ४८ वर्ष की आयु में इसे बहुत सम्मान मिलता है। इसके पुत्र ग्रंथ-लेखक तथा धनी होते हैं। यह ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१५८२) - इस जन्मांगचक्र में उत्पन्न मनुष्य धनी, धर्मात्मा, सुन्दर, दो अथवा तीन स्त्रियों का स्वामी तथा एकाधिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। प्रारंभ में यह व्यवसाय करता है, परन्तु बाद में राजकीय-सेवा से संलग्न हो जाता है। वहीं 30-32 वर्ष तक सेवा-कार्य करके धन कमाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल आचरण करने वाली होती है। एक से अधिक पत्नियाँ भी होती हैं, उनके प्रति यह सामान्य भी रहता है, तथापि अन्य अनेक स्त्रियों के साथ भी इसके संबंध रहते हैं। इसके पुत्र बड़े धनी-मानी तथा प्रभावशाली होते हैं। परन्तु सन्तान का योग विलम्ब से बनता है। इस जातक के समक्ष शत्रु ठहर नहीं पाते। यह बड़ा धनी होता है। ६२ वें वर्ष में यह धर्म-कर्म में मन लगाकर तीर्थयात्राएं करता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१५८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त बुद्धिमान, चतुर, लोक-व्यवहार में चतुर, कला तथा साहित्य का ज्ञाता एवं सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करता है, तत्पश्चात् राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उच्च पद प्राप्त करता है। यह विख्यात, तेजस्वी, सबका मित्र तथा बन्धु-बान्धवों का प्रिय होता है, तथापि माता से कुछ असंतुष्ट तथा पत्नी से अत्यधिक सन्तुष्ट रहता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त बुद्धिमती, विद्वान, सुन्दरी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली, प्रतिभाशालिनी होती है। इसके पुत्र भी बड़े तेजस्वी तथा गुणवान् होते हैं। ५६ वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार के सांसारिक-ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है। ६८ वर्ष की आयु तक यह भूमि, भवन, वाहन आदि के अतिरिक्त प्रचुर धन का संग्रह कर चुका होता है। प्रसिद्धि भी खूब मिलती है। इसकी परमायु ७६ अथवा ८३ वर्ष होती है।

(१५८४)- इस जन्मांगचक्र में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह सद्-परिवार में जन्म लेता है। माता-पिता के बाद भी यह अपने पराक्रम तथा उद्योग द्वारा सब प्रकार के सुखों को न केवल बनाये रखता है, अपितु उनमें वृद्धि भी करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा गुणवती होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय भी आरंभ हो जाता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर बड़ी शीघ्रता से उन्नति करता तथा उच्च पद प्राप्त करता है। अपनी पत्नी से प्रेम रखते हुए भी यह किसी अन्य स्त्री से भी प्रेम-सम्बन्ध रखता है। यह बड़ा भाग्यशाली होता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, भाग्यवान् तथा सुख देने वाले होते हैं। यह जातक अपने गुण, ज्ञान तथा विद्वत्ता के बल पर सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसकी परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१५८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दीर्घायु, सुखी-जीवन बिताने वाला, भूमि-भवन का स्वामी, विख्यात पुत्र-पौत्रों वाला, सुन्दर, धर्मशास्त्र तथा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, चतुर, गुणवान, विद्वान् तथा कोमल स्वभाव का होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनमोहक, गुणवंती, लोक-व्यवहार में चतुर तथा सबको प्रसन्नता प्रदान करने वाली होती है। इस जातक की आय राजकीय सेवा, वक्तृता, उपदेश अथवा अध्यापन आदि कार्यों से होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। ४० वर्ष की आयु तक इसकी आर्थिक स्थिति बहुत उत्तम हो जाती है तथा इसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं। ४८, ५३ तथा ५६ वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक आदर-सम्मान प्राप्त होता है। ६१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है, परन्तु उससे बचकर ८० वर्ष से अधिक की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१५८६) इस जन्म कुण्डली का अधिपति लम्बे-मध्यम कद का, गौरवर्ण, सुन्दर, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा बाल्यावस्था में शारीरिक-कष्ट पाने वाला होता है। इसके छोटा भाई प्रायः नहीं होता। शिक्षा-दीक्षा ठीक चलती है। २३ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय तथा २७ वर्ष की आयु में विवाह होता है। इसे राजकीय सेवा अथवा व्यवसाय से आर्थिक-लाभ होता है। आयु के साथ ही इसके प्रभाव तथा पराक्रम में वृद्धि होती चली जाती है। इसकी पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह उन्नति के शिखर पर जा पहुँचता है। भूमि, भवन, वाहन, धन, आभूषण आदि सब प्रकार के ऐश्वर्य इसे उपलब्ध होते हैं। ६५ वर्ष तक सुखी-जीवन बिताते हुए यह अरिष्ट को प्राप्त होता है, परन्तु उससे बच जाने पर ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५८७)- इस जन्म कुंडली का स्वामी दृढ़ शरीर वाला, कठोर प्रकृति का, रूक्ष स्वभाव एवं अनुशासन-प्रिय होता है। स्नेह भाव से की गई अपनी अवहेला को भी यह सहन नहीं कर पाता तथा ऐसी अवहेला करने वाले के प्रति भी शत्रुता मानने लगता है। यह स्वभाव से क्रोधी होने के कारण बात-बात पर बिगड़ जाता है। इसकी पत्नी ही अपने प्रभाव से इसके क्रोध को शान्त करने में सक्षम हो पाती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्थूल शरीर वाली तथा तेजस्विनी होती है। वह अपने प्रतिकूल स्वभाव को बड़े धैर्य के साथ सहन करती है तथा लोक में प्रतिष्ठित करती है। यह जातक राजकीय-सेवा अथवा किसी शासकीय-संस्थान द्वारा अर्थोपार्जन करता है। २८ से ५८ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। ५२ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। ६१ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है तथा पूर्णायु ७८ या ८३ वर्ष होती है।

(१५८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अहंकार, क्रूर स्वभाव का, रूखे व्यवहार वाला तथा स्वार्थ के समय नम्रता प्रदर्शित करने वाला होता है। इसे राजद्वार से लाभ होता है। २७ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा द्वारा उच्च पद तथा धन प्राप्त करता है। जीवन के ३५, ३८, ४१ तथा ४७ वें वर्ष इसे विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा स्थूल शरीर की होती है। जातक उससे प्रेम करता है तथा उसकी सम्मति के बिना कोई कार्य नहीं करता। वह सुशीला भी जातक को पर्याप्त सुख देती है। इस जातक को राज्य द्वारा बहुत धन प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान के लिए चिन्तित रहता है। प्रारंभ में पत्नी को गर्भस्राव भी होते हैं, बाद में एक पुत्र की उपलब्धि होती है। यह जातक अन्य लोगों से विशेष मिलना-जुलना पसन्द नहीं करता। इसकी परमायु ७६ अथवा ८४ वर्ष होती है।

(१५८९) यह जातक सुन्दर, स्वस्थ, कलाओं का ज्ञाता, तकनीकी ज्ञानवाला, विज्ञान अथवा चिकित्साशास्त्र से सुपरिचित तथा लोहा एवं अग्नि सम्बन्धी कार्यों से धनोपार्जन करने वाला होता है। यह अपनी योग्यता के कारण २३-२४ वर्ष की आयु में ही राजकीय सेवा में पहुँच कर यथेष्ट धन, मान तथा सुख अर्जित करता है। २८ वर्ष तक राजकीय-सेवा में रह कर यह पर्याप्त प्रसिद्धि तथा ऐश्वर्य उपलब्ध करता है। यह हठी स्वभाव का होता है तथा अपने आगे किसी की चलने नहीं देता। इसे भाइयों, परिवारजनों तथा सेवकों - सबका सहयोग प्राप्त होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मितव्ययिनी होती है। वह सूझबूझ से धन-संग्रह करने में कुशल होती है, जो आड़े समय पर काम आता है। ४३, ४८ तथा ५६ वें वर्ष इसे विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पुत्र अच्छे होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(१५९०) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विशाल हृदय, परोपकारी, तेजस्वी, उदात्त स्वभाव का तथा सत्कर्म करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी रूपवती तथा श्रेष्ठ सन्तानों को जन्म देने वाली होती है। यह जातक बड़ा साहसी, राज्य प्रिय, राज्य द्वारा सम्मानित, विद्वान् तथा शासन में कोई उच्च पद पाने में सफल होता है। यह अनुशासन प्रिय होता है तथा अनुचित क्रिया-कलापों को सहन नहीं करता। जीवन में यह पर्याप्त धन, यश तथा सम्मान अर्जित करता है। ५६ वर्ष की आयु में यह विरक्त-सा हो जाता है, तब धर्म-कर्म एवं तीर्थयात्रा आदि में विशेष रुचि लेने लगता है। सन्तान की प्राप्ति कुछ विलंब से होती है, परन्तु सभी संतानें श्रेष्ठ एवं सद्गुणी होती हैं। ६७ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ९० वर्ष के लगभग होना संभव है।

(१५६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विद्वान्, साहित्य एवं काव्य का प्रेमी, दर्शन शास्त्र का ज्ञाता तथा अध्ययन से विशेष प्रेम करने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु तक उच्च शिक्षा समाप्त करके यह राजकीय-सेवा में प्रवृत्त होकर किसी शिक्षा-संस्थान अथवा ऐसे संगठन में कार्य-रत होता है, जिसमें व्यवस्था एवं अध्यापन - दोनों कार्यों का उत्तर-दायित्व वहन करना पड़ता हो। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा आह्लादवर्तिनी होती है। वह विद्या तथा गुणों में भी जातक के अनुरूप सिद्ध होती है। वह भी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती है तथा जातक को सदैव सुखी बनाये रखती है। सन्तानें भी श्रेष्ठ होती हैं। ६५ वर्ष की आयु तक जातक सभी सुख-साधनों को प्राप्त कर लेता है तथा ७८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१५६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सहृदय, उदार, दानी, परोपकारी तथा दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाला होता है। यह गुणवान्, विद्वान् तथा धर्मात्मा भी होता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह राजकीय-सेवा में युक्त होकर, काफी समय तक धनोपार्जन करता है। यह वक्तृता, उपदेश, अध्यापन, ज्ञान एवं अनुशासन के क्षेत्र में विशेष रूप से कार्यरत रहता है। यह देश-देशान्तर में सम्मान पाने वाला, अपने कुल के गौरव को बढ़ाने वाला तथा यथेष्ट धनोपार्जन करने वाला होता है। यह उत्तरदायित्वों का पूर्ण रूपेण निर्वाह करता है। राजकीय-सेवा में पहुँच कर उच्च पद पाता है तथा लोक में भी सदैव सम्मानित बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुख देने वाली तथा सुन्दरी होती है। संतानें उत्तम गुणों से युक्त होती हैं। यथेष्ट सुख भोगता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५६३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, क्रियाशील, अनुशासन-प्रिय, उदार, दानी साहसी, पराक्रमी तथा कर्मठ होता है। यह अपने कार्य के बीच किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करता। इसका विवाह २३-२८ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुर-भाषिणी तथा व्यवहार-कुशल होती है। यह जातक राजयोग से युक्त, राजमान्य तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला होता है। इसे श्रेष्ठ पुत्रों का लाभ होता है। वे विद्वान, गुणवान तथा पिता के सुयश की वृद्धि करने वाले होते हैं। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। यह राजकीय-सेवा में भी जा सकता है अथवा कहीं अत्यन्त उच्च पद प्राप्त करता है। इसे देश-विदेश से सर्वत्र लाभ प्राप्त होता है। ३४ वर्ष की आयु तक यह अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है। इसकी परमायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(१५६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, रूप से क्रोधी प्रतीत होने वाला, परन्तु यथार्थ अत्यन्त भावुक, मधुरभाषी तथा उदार स्वभाव का होता है। कभी-कभी इसमें स्त्रियों जैसी कोमलता भी परिलक्षित होती है और कभी यह अत्यन्त साहसी, पराक्रमी तथा तेजस्वी दिखाई देता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री मनोनुकूल, सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। पुत्र भी सद्गुणी तथा यश की वृद्धि करने वाले होते हैं। २६ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर अथवा शासन के सम्पर्क में रहते हुए विपुल धन का उपार्जन करना आरंभ कर देता है। यह अभिनव कार्यों तथा अकल्पित क्षेत्रों से भी लाभ उठाता है। इसका प्रताप सूर्य की भाँति चमकता है। यह यशस्वी, धनी, लोकप्रिय तथा सुखी जीवन बिताने वाला ६० वर्ष के लगभग की परमायु प्राप्त करता है।

(१५६५) - इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, धनी, मानी, सम्पन्न, गुणवान, विद्वान एवं उच्चपद को प्राप्त करने वाला होता है। यह काव्य-मर्मज्ञ, कवि, संगीतज्ञ अथवा चित्रकार होता है। यह स्त्रियों की भाँति संकोची स्वभाव का, विद्या द्वारा यशस्वी होने वाला तथा प्रशिक्षण अथवा अध्ययन-काल में ही उच्चपद अथवा प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेनेवाला होता है। इसे राज्य तथा समाज में विशेष सम्मान प्राप्त होता है। इसका विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला प्राप्त होती है। संतानें सुन्दर तथा सुख देने वाली सिद्ध होती हैं। ३३ वर्ष की आयु में यह पर्याप्त धन, यश तथा सम्मान अर्जित कर लेता है तथा निरन्तर प्रगति करता हुआ सम्पूर्ण जीवन सुखी रहकर बिताता है। यह राजकीय-सेवा अथवा अपने व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(१५६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल शरीर का, अत्यन्त बलवान, तेजस्वी, धनी-मानी, भू-स्वामी तथा राजतुल्य ऐश्वर्यों का उपभोग करने वाला होता है। यह अपने साहस, पराक्रम तथा उद्यम से उच्च स्थान प्राप्त करता है। यह अपने पिता को स्नेह करता है, परन्तु अन्य परिवारीजनों से इसे कोई प्रेम नहीं होता। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है तथा पुत्रादि सुशील एवं सद्गुणी होते हैं। विवाहोपरान्त इसकी सभी परिस्थितियों में परिवर्तन आता है। २६ वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है। ३४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा के उच्च पद प्राप्त करता है। इसके अधीन काम करने वाले सभी कर्मचारी इसका बड़ा सम्मान करते हैं। यह खूब सफलता का सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा लगभग ८५-८६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१५६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अपने कार्य में दक्ष, कला-कौशलयुक्त, गुणी, विद्वान, मायावी, धन-संग्रह करने में निपुण तथा धन खर्च करने में अत्यधिक कृपण होता है। इसे धन की कमी कभी नहीं रहती। जहाँ से कोई आशा ही न हो, वहाँ से भी इसे धन का लाभ होता है। यह २६-२७ वर्ष की आयु में कोई व्यवसाय आरंभ करता है तथा उसमें यथेष्ट सफलता पाकर अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली मिलती है। पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य, सद्गुणी तथा मान-प्रतिष्ठा एवं धन को बढ़ाने वाले होते हैं। यह जातक ५६ वर्ष की आयु तक बहुत धनी तथा प्रतिष्ठित हो जाता है। इसे जीवन में कभी किसी प्रकार का विशेष शारीरिक-कष्ट नहीं होता और न किसी मुसीबत का सामना ही करना पड़ता है। इसकी परमायु ८९ वर्ष होती है।

(१५६८) - यह जातक सामान्य, सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान तथा समझदार होता है, तथापि इसे जीवन के आरंभ से ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी यह धनवान बन जाता है तो कभी निर्धन। परन्तु संघर्ष करता हुआ, अन्ततः यह सभी संकटों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह १९ से २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार, सुख देने वाली तथा भाग्यशालिनी मिलती है। इसकी संतानें आरंभ में जीवित नहीं रहतीं। बाद में इसे पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है। इसका भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु में होता है तथा ४५वें वर्ष तक यह अपने व्यवसाय से श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर, आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है तथा गृहस्थी का सफल संचालन करता है। ५७वें वर्ष में इसे बहुत प्रतिष्ठा मिलती है। वृद्धावस्था में तीर्थाटन आदि करता है। पूर्णायु ८९ वर्ष होना निश्चित है।

(२५९९) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, वाक्पटु, मधुर व्यवहार करने वाला, कोमल स्वभाव का, साहित्य एवं कलाओं का ज्ञाता, पिता से प्रेम करने वाला तथा अन्य परिवारीजनों से विशेष सम्बन्ध न रखने वाला एवं शत्रुओं को संताप देने वाला होता है। यह कलाकार, राज्य में विशेष प्रतिष्ठा पाने वाला तथा अपने पराक्रम एवं अध्यवसाय द्वारा विपुल धन अर्जित करने वाला भी होता है। इसका विवाह २४ से २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। संतानें भी सुन्दर तथा सद्गुणी होती हैं। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय भी होता है तथा यह राजकीय-सेवा में भी संलग्न हो सकता है। ४२ वर्ष की आयु तक इसे कभी-कभी कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। सातवर्ष बाद फिर कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ५८ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है तथा इसे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। परमायु ७८-७९ वर्ष होती है।

(२६००) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, शान्त स्वभाव का तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। ~~यह~~ कलाप्रेमी, कोमल हृदय का, मध्यम कद वाला, पराक्रमी तथा हठधर्मी वाला होता है। ज्ञानी होते हुए भी यह कृपण होता है। इसे सब ओर से आदर-सम्मान की उपलब्धि होती है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अप्रत्याशित अर्जन कर लेता है। ३८ वर्ष की आयु तक यह उच्च पद प्राप्त कर लेता है। ४२, ४४, ४८ तथा ५१ वर्ष की आयु के विरोधियों के कारण इसे दुःख उठाना पड़ता है। इसी समय में इसे ग्राम छोड़ना पड़ सकता है। परन्तु बाद में पराजित विरोधी शान्त हो जाते हैं तथा इसका दुःख भी दूर हो जाता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सुख देने वाली मिलती है। संतानों की ओर से चिन्तित रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२६०१) — इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चंचल प्रकृति, परन्तु गंभीर स्वभाव का, प्रियवादी, विवाह के प्रति उपेक्षा भाव रखने वाला तथा अपने ही काम में लगा रहने वाला होता है, तथापि २५-२८ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है एवं पत्नी सुन्दरी तथा समझदार मिलती है, जो भाग्यशाली पुत्रों को जन्म देती है। यह जातक बाहरी कामों में भी मन लगाता है। यह जीवन में शुभ काम तथा कष्ट अधिक प्राप्त करता है। इसे लोग कुटिल समझते हैं, जबकि यह कुटिल स्वभाव का नहीं होता। यह २६ वर्ष की आयु में परदेश जाकर उन्नति प्राप्त करता है। यह अपने व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है तथा 30-32 वर्ष की आयु में व्यवसाय को भली भाँति स्थापित कर यश, मान, धन तथा सुख प्राप्त कर लेता है। पुत्र एक अथवा दो ही होते हैं, जो इसे सहयोग तथा सुख देते हैं। ५६ वर्ष की आयु में निजी भवन बनाता है। ६२वें वर्ष में कष्ट तथा बाद में मृत्यु।

(२६०२) — इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, त्वरित निर्णय लेने वाला, कला-प्रेमी तथा अपने साहस, जोखिम एवं उद्यम द्वारा लाभ उठाने वाला होता है। यह जिस कार्य को भी आरंभ करता है, उसे ऊँचाई पर ले जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समर्पित, परन्तु रुग्णा होती है। इसके पुत्र भी रोगी रहते हैं, परन्तु सभी की आयु लम्बी होती है। ३५ वर्ष की आयु में यह जातक परदेश में रह कर विशेष सफलताएँ प्राप्त करता है। तभी इसका भाग्योदय भी होता है। यह अपनी वाक्पटुता तथा मधुर-व्यवहार से सबको प्रसन्नता प्रदान करने वाला, धार्मिक कार्यों में रुचि लेकर उनमें धन व्यय करने वाला, नीचों की संगति में सुखी तथा संतुष्ट रहने वाला तथा संकट-हीन जीवन बिताने वाला होता है। ५१ से ६२ वर्ष की आयु में बहुत धन कमाता है। पूर्णायु ७४-७२ वर्ष की होती है।

(१६०३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल चित्त वाला, असमान विचारों का, अस्थिर चित्त वाला तथा व्यवसाय द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। यह परदेश में जाकर अपने उद्यम तथा अध्यवसाय से अपने व्यवसाय को जमाता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यथेष्ट धनी हो जाता है। इसे माता-पिता से अधिक सुख नहीं मिलता। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सद्गुणी होती है, तथापि उसके साथ इसके विचार मेल नहीं खाते। इसकी संतानें सुयोग्य होती हैं, परन्तु उनसे भी मतैक्य नहीं रहता। पत्नी कुछ समय तक रोग-ग्रस्त भी रहती है, तथापि दाम्पत्य-जीवन साधारणतः सुखमय बना रहता है। स्त्रियों के व्यवहार में आने वाली वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा यह जातक विशेष धन अर्जित करता है। ५१ से ६६ वर्ष की अवधि में बहुत धन कमाता है। पूर्णायु ६७ से ७० वर्ष।

(१६०४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे कद का, सुन्दर, स्वस्थ, मधुरभाषी, परोपकारी, पराये हित के लिए अपनी हानि कर लेने वाला तथा व्यावसायिक-बुद्धि से सम्पन्न होता है। यह धन जमा कर धन कमाता है। इसे धन कमाने की बड़ी तृष्णा रहती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सत्कर्म करने वाली तथा गुणवती होती है। पत्नी के भाग्य से भी यह जातक धनोपार्जन करता है। ३० वर्ष की आयु तक यह अपने व्यवसाय को भलीभाँति स्थापित कर लेता है तथा सब प्रकार के सुखों को उपलब्ध करता है। ४२, ४६ तथा ५३ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है, परन्तु उसका निवारण भी शीघ्र ही हो जाता है। पुत्र सुन्दर होते हैं, परन्तु वे अवज्ञा करने वाले होते हैं। साधारणतः सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ९८२८

कु० १०

(१६०५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान तथा दीर्घायु होता है। यह समय, स्थान तथा व्यक्ति की पहिचान का कार्य करने वाला, मधुरभाषी एवं विभिन्न व्यवसायों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। इसे आरम्भकीय-कार्यों से भी धन का लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा गुणवती होने के साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में इसे सहयोग देकर आगे बढ़ाने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय होता है तथा निरन्तर धन का आगमन बना रहता है। यह जातक अत्यन्त प्रतापी होता है। इसे कभी भी हानि नहीं उठानी पड़ती और न किसी संकट का सामना ही करना पड़ता है। इसके पुत्र सुन्दर, भाग्यशाली तथा स्वतन्त्र मार्ग पर चलने वाले होते हैं। पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक सुन्दर स्त्रियाँ इस जातक को प्रेम करती हैं। यह अत्यन्त सुखी जीवन बिताता हुआ ८६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६०६) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, दीन-दुःखियों की सहायता करने वाला, परोपकारी, अपना धन दूसरों के लिए खर्च करने में शान्ति का अनुभव करने वाला, धर्मात्मा तथा स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय कर विपुल सम्पत्ति अर्जित करने वाला होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा सुख देने वाली मिलती है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा गुणवान होते हैं। पत्नी-पक्ष अर्थात् ससुराल से भी इसे पर्याप्त धन मिलता है। इसे राज्य से भी सम्मान प्राप्त होता है। २३ से ३८ वर्ष की आयु में यह नवीन कार्यों को आरम्भ करता तथा उनसे विपुल धन कमाता है। यह कुछ समय के लिए राजकीय-सेवा में भी रह सकता है अथवा शासन से सम्बन्धित किसी अन्य कार्य से सम्बन्ध रखता है। इसके जीवन में एक पत्नी विशेष महत्त्व रखती है। परमायु ८० वर्ष के लगभग हो सकती है।

(२६०७)- इस जन्म कुंडली का स्वामी अत्यन्त बुद्धिमान, विवेकी, सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा आनन्द लेता है। यह ज्योतिषी भी होता है तथा उस विद्या के द्वारा धनोपार्जन भी करता है। यह कवि, उपदेशक, स्वतन्त्र कार्य करने वाला, परदेश में रहकर धन कमाने वाला, पिता का भक्त, परन्तु माता से असंतुष्ट एवं शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा जातक से मतभेद रखने वाली उपकारिणी होती है। ३५ वर्ष की आयु में यह जातक किसी राजनीतिक-क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त कर, विशेष उन्नति करता है। यह अत्यन्त मायावी भी होता है तथा विरोधियों को अपने नकली व्यवहार से भ्रमित कर लेता है। इसके पुत्र सुन्दर, धार्मिक तथा आज्ञा-पालक होते हैं। परमायु ८९ वर्ष से अधिक होती है।

(२६०८)- इस जन्म कुंडली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, व्यवहार-कुशल, सब लोगों से सामान्य सम्बन्ध रखने वाला तथा अपयश देने वाले कार्यों को करने वाला होता है। अपने विशिष्ट स्वभाव के कारण यह ऐसे कार्य करता है, जिनसे लोग इसे गलत समझते हैं। यह धन, सम्पत्ति तथा आमदनी के अनेक स्रोतों से युक्त होता है, परन्तु जुआ खुलकर खेलता है तथा नीच लोगों की संगति में रहकर दोषी भी बनता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त जब सन्तान का जन्म होता है, तभी इसका भाग्योदय भी होता है। २५-२६ वर्ष की आयु में ऐसा होना सम्भव है। बाद में पुत्रों के सहयोग से यह बहुत धनी होता है तथा आजीवन सुखी रहता है। इसकी मृत्यु पत्नी से पहले हो जाती है। पूर्णायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

(१६०९) - इस जन्मांगचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, सुगंध-प्रिय, उत्तम भोजन एवं वस्त्रों को पसन्द करनेवाला, अत्यधिक उदार प्रकृति का, व्यवहार-कुशल, ईश्वर-भक्त तथा सुख-भोगी होता है। यह दान देने वाला, दयालु, विद्वान तथा अनेक सद्गुणों से युक्त होता है। संगीत-प्रेमी होने के साथ ही यह अत्यधिक सहनशील तथा वचन का पक्का होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। इसे सुन्दर, श्रेष्ठ, सद्गुणी तथा आज्ञा-पालक पुत्रों की उपलब्धि होती है, जो जातक के यश, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की अत्यधिक वृद्धि करते हैं। इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता। जिस स्थान में दान आदि का धन एकत्र होता हो, वहीं से इसे धन की उपलब्धि होती है। इसका भाग्योदय भी २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। यह जीवन में सुखी रह कर ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६१०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, साहित्य-प्रेमी, ज्ञानी, व्यवहार-कुशल, अनेक कलाओं का ज्ञाता, प्रत्येक परिस्थिति में अपने को ढाल लेने वाला तथा धन का अत्यन्त लोभी होता है। यह साहसी, हर प्रकार के सुख-साधनों से युक्त, अनेक प्रकार के दंद-फंद करके धन कमाने वाला एवं अनेक स्रोतों द्वारा आर्थिक लाभ उठाने वाला भी होता है। यह सट्टा, जुआ आदि व्यसनों का व्यसनी भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है तथा संतानें भी उत्तम एवं आज्ञा-पालक, सुयोग्य होती हैं। यह जातक देवताओं का भक्त, २३ वर्ष से ३० वर्ष की आयु तक राज्य-कर्मचारी के रूप में कार्य करने वाला, तत्पश्चात् स्वतन्त्र रूप से धनोपार्जन करने वाला एवं सर्वत्र सम्मान पाने वाला भी होता है। यह ८० वर्ष की आयु पाता है। इससे बचने पर ८२ वर्ष तक जीवित रहता है।

२२८४ सं० भु०

कु० २०

(१६११) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सच्चरित्र, स्वस्थ, पिता को स्नेह करने वाला, परन्तु माता से विरक्त-सा रहने वाला, राज्य से धन कमाने वाला तथा अनेक भाइयों से युक्त होता है। इसे राज्य में उच्च स्थान प्राप्त होता है। २३-२४ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाने लगता है तथा ३० वर्ष की आयु तक विपुल सम्पत्तिशाली बन जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह शिक्षक, उपदेशक, वक्ता अथवा किसी शिक्षा-संगठन का पदाधिकारी होता है। यह श्रेष्ठ प्रशासक होता है तथा अनुशासन को विशेष महत्व देता है। इसके जीवन में कई मोड़ आते हैं, जो कहीं-न-कहीं इसे प्रतिष्ठित करते रहते हैं। यह प्रत्येक क्षेत्र से लाभ तथा यश प्राप्त करता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा पुत्र सुयोग्य होते हैं। यह ज्योतिषी भी होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

(१६१२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, स्वस्थ, विद्वान, सुकर्म करने वाला, लोकमान्य, राजा के समान ऐश्वर्यशाली, विशाल-हृदय तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। यह माता-पिता से कष्ट पाता है और उन्हें कष्ट देता भी है। इसे राज्याश्रय प्राप्त होता है एवं बड़े-बड़े राजपुरुषों के साथ रह कर यह पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसे ज्योतिष का यथेष्ट ज्ञान होता है तथा इस विद्या से धनोपार्जन भी खूब करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है, परन्तु यह जातक अपने व्यक्तित्व से पत्नी को प्रभावित नहीं कर पाता। यह अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध रखता है तथा विभिन्न प्रकार के भोगों को भोगने में रुचि लेता है। यह भूमि, भवन, वाहन, धन-धान्य आदि से पूर्ण होकर सुखी-जीवन बिताता है। ४२ वर्ष की आयु में विशेष लाभ होता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१६५९३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, स्वस्थ, धनी, तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा गुणवती मिलती है, जो पति के प्रत्येक क्रिया-कलाप पर दृष्टि रखती हुई और प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा बहुत धन कमाता है तथा राज्य द्वारा सम्मानित भी होता है। अपनी विद्वता के कारण यह लोक में भी आदर प्राप्त करता है। यह वेद-वेदाङ्गों का ज्ञाता, धर्मात्मा तथा कुशल वक्ता होता है। अपने धर्माचरण द्वारा ही यह पर्याप्त धनो-पार्जित करता है। इसे संतान से सुख प्राप्त नहीं मिलता तथा पुत्र के कारण दुःखी रहता है। इसके संताप का मुख्य कारण भी पुत्र ही होता है। वैसे इसे अन्य किसी बात की कमी नहीं रहती तथा सभी सुख-साधन उपलब्ध रहते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१६५९४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान्, गुणवान, मनस्वी तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से यह समृद्ध होता है तथा राजकीय- सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, सुखदायक तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है। यह अपने पराक्रम से ५६ वर्ष की आयु तक अत्यधिक धन-सम्मान प्राप्त कर लेता है। परदेश-यात्रा से भी इसे पर्याप्त धन-लाभ होता है। इसके मित्र प्रायः नहीं होते। बन्धु-बान्धवों से भी सम्बन्ध नहीं रखता, यह अपने आप में मग्न रहने वाला, भूमि तथा भवन आदि का स्वामी तथा ३० से ५० वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करने वाला एवं राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला होता है। यह अपने पुत्र से दुःखी तथा असन्तुष्ट रहता है। इसकी पूर्णायु ८१ अथवा ८५ वर्ष होती है।

(१६११५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, महाविद्वान, परम ज्ञानी, संतुलित विचारों का; गुरु-माता तथा पिता का भक्त, सुशील, विनम्र एवं राज्य द्वारा सम्मानित होता है। २५ वर्ष की आयु से यह राजकीय-सेवा अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान से सम्बद्ध होकर, अपने दृढ़ कार्य, अध्यवसाय एवं योग्यता के बल पर उच्च पद प्राप्त करता है। ४० वर्ष की आयु तक यह हर प्रकार से सफल हो जाता है। वेदोक्त कर्मों का अनुपालन करने वाला होते हुए भी यह माता का द्वेषी होता है तथा संकुचित मनोवृत्ति का परिचय भी देता रहता है। नीचों की संगति से यह बहुत धन कमाता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा वाक्पटु होने के साथ ही धन संग्रह करने में भी चतुर होती है। पत्नी के अतिरिक्त जातक के अन्य स्त्रियों से भी संबंध रहते हैं। पुत्रों द्वारा सुख मिलता है। पूर्णायु ८३ वर्ष होती है।

(१६११६)- यह जातक सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, रसायन-क्रिया का ज्ञाता, दानी, उदार, परोपकारी तथा राज्य द्वारा आर्थिक-लाभ एवं मान-सम्मान पाने वाला होता है। यह शूर-वीर, पराक्रमी, लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ वक्ता होता है। २५ वर्ष की आयु से यह राजकीय-सेवा से संबद्ध होकर ४५ वर्ष की आयु तक अत्युच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे धन तथा सम्मान की कोई कमी नहीं रहती। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत योग्य, व्यवहार-कुशल तथा सुन्दरी होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा आज्ञाकारी होते हैं। कुछ समय के लिए पुत्रों के कारण यह दुःखी भी रहता है। ऐसा समय ६१ से ६२ वर्ष की आयु में आता है। यह उत्तरदायित्व पूर्ण पदों का निर्वाह करता हुआ सानन्द सुखी जीवन व्यतीत करता है। आर्थिक-दृष्टि से भी समृद्ध रहता है। परमायु ७८ वर्ष की होती है।

(१६१७) - यह जातक सुन्दर, मध्यम क़दवाला, क्रोधी तथा निर्दयी स्वभाव का होता है। अपनी हठी प्रकृति के कारण यह दुःखी भी रहता है तथा दूसरों को भी दुःखी करता है। यह धन-धान्य से सम्पन्न, सब प्रकार के भौतिक-सुखों से युक्त, चिरंजीवी, विख्यात, तेजस्वी, अनेक भवन तथा वाहनों का स्वामी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाने वाला होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। मुख्यतः यह सार्वजनिक संस्थानों, शिक्षा-प्रतिष्ठानों आदि से संबंधित रहता है। यह कठोर-प्रकृति का होते हुए भी संगीत-शास्त्र में निपुण तथा यात्राओं का प्रेमी एवं उनसे धन कमाने वाला होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी, सुन्दरी, महत्वाकांक्षिणी तथा तेजस्विनी होती है। अत्यधिक मानिनी होने के कारण वह पति पर नियन्त्रण भी रखती है। संतान की ओर से चिन्ता तथा कष्ट की उपलब्धि होती है। पूर्णायु ७८ या ८३ वर्ष होती है।

(१६१८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चिन्तक, चंचलचित्त का, परन्तु सब बातों को गम्भीरता से समझने वाला, नीतिज्ञ एवं तकनीकी-ज्ञान वाला होता है। यह १७-१८ वर्ष की आयु से ही अर्थोपार्जन करने लगता है। अपना धन दूसरों के साथ लगाकर भी काम करता है। पैतृक-धन को पाकर महाधनी होता है तथा स्व-पराक्रम से भी पर्याप्त धनोपार्जन करता है। यह उच्चकोटि का इंजीनियर अथवा वास्तुकला विद भी हो सकता है। 28 वर्ष की आयु में ही यह राजकीय सेवा में चला जाता है तथा अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करता हुआ ५६ वर्ष की आयु में अत्यन्त धनी तथा सुखी बन जाता है। यह देश-देशान्तर की यात्राएँ करता है तथा विभिन्न प्रकार के सम्मान तथा पुरस्कारों को प्राप्त करता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। सन्तान सुखी तथा सद्गुणी होती है। पूर्णायु ७९ वर्ष की होती है।

(१६१९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सहृदय, उदार तथा परोपकारी होता है। यह दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला तथा उनकी सहायता करने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु से यह किसी संस्थान अथवा शासकीय-सेवा से संलग्न होकर उच्चपद प्राप्त करता चला जाता है। ४५ वर्ष की आयु में यह सर्वोच्च पद पर पहुँचकर पर्याप्त धन तथा प्रतिष्ठा अर्जित कर लेता है। यह व्यक्ति उच्च कोटि का अभियन्ता हो सकता है तथा अपने नियन्त्रण में अनेक लोगों को रखता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक तथा आज्ञाकारिणी स्त्री के साथ होता है। अन्य अनेक स्त्रियों के प्रति भी इसका आकर्षण बना रहता है तथा उनसे प्रेम-सम्बन्ध भी रहते हैं। इसका भाग्योदय भी किसी स्त्री के द्वारा ही होता है। सन्तानें सद्गुणी होती हैं। ४४ वर्ष की आयु में अमीर होता है तथा पूर्णायु ७७ वर्ष की होती है।

(१६२०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, सुखी, धनी, देशाटन करने वाला तथा यात्राओं से लाभ उठाने वाला होता है। यह किसी उच्च प्रतिष्ठान अथवा शासकीय-सेवा से संलग्न होकर पर्याप्त धनोपार्जन करता है तथा ३२ वर्ष की आयु में कोई अपना उद्योग स्थापित कर, पर्याप्त लाभ उठाता है। इसका पूर्ण भाग्योदय ४६ वर्ष की आयु में होता है। राज्य की संलग्नता से इसे पर्याप्त लाभ होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की अवस्था में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, प्रभावशालिनी तथा पति को अपनी इच्छानुसार चलाने वाली होती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देकर उसकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करती है। इसके पुत्र भी सद्गुणी होते हैं। भूमिगत द्रव्य-प्राप्ति का योग भी बनता है। यह भोग-विलास तथा धर्म-कर्म-दोनों में ही अपने धन का व्यय करता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(९६२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही सुखों में पलता है। यह मध्यम कद एवं कुछ दबे हुए रंग का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, अन्य लोगों को प्रभावित करनेवाला तथा सर्वत्र आदर प्राप्त करने वाला होता है। २२-२३ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन समाप्त करके यह राजकीय-सेवा अथवा किसी प्रसिद्ध संस्थान में नियुक्त हो जाता है। अध्ययन-काल में इसे अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं, तथापि यह उच्च शिक्षा प्राप्ति तक अपना अध्ययन चालू रखता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, उदात्त विचारों वाली, धर्म-कर्म में आस्थावान् तथा सदैव सुख देने वाली मिलती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। पत्नी उसमें सहयोगिनी बनती है। सन्तानें सद्गुणी तथा आज्ञापालक होती हैं, इसे आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता रहता है। पदोन्नति ५१ वर्ष की आयु में होती है। परमायु ७० वर्ष होगी।

(९६२२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, संतुलित विचारों का, प्रकाण्ड पंडित, स्थूल शरीर, मध्यम कद, गौर वर्ण, ग्रंथ-लेखक, साहित्य-मर्मज्ञ तथा उदार हृदय वाला होता है। जीवन-काल में इसके गुणों का प्रकाश नहीं फैल पाता। इसकी योग्यता या तो ७० वर्ष की आयु के बाद प्रकट होती है अथवा परलोकवासी होने के उपरान्त लोग इसके गुणों से परिचित हो पाते हैं। यह मित्रों द्वारा उपेक्षित अथवा स्वयं ही उनका विरोध करने वाला तथा बन्धुओं को भी कोई सुख-सहयोग न देने वाला होता है। यह विदेश में रह कर जीविकोपार्जन करता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कमनीय तथा मधुरभाषिणी होती है, परन्तु उससे भी इसके विचार नहीं मिल पाते। २५ वर्ष की आयु में नौकरी करता है तथा ४५ से ५० वर्ष की आयु में बहुत धनी हो जाता है। पर-स्त्री द्वारा इसे प्रेम तथा सहयोग काफी मिलता है। पूर्णायु ७५ या ७९ वर्ष होती है।

(१६२३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति मध्यम कद, गौरवर्ण, स्थूल शरीर वाला, सुन्दर, धनी, सर्वत्र सम्मान पाने वाला तथा प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में सुन्दरी, वाक्पटु, मधुरभाषिणी तथा अपने व्यवहार से सबको आकर्षित करने वाली होती है। इसे सुशिक्षिता एवं सुशीला पत्नी द्वारा बहुत सुख भी मिलता है। २६ वर्ष की आयु में यह किसी सेवा-कार्य अथवा व्यवसाय आदि में संलग्न होकर धन कमाना आरंभ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में बड़ा धनी तथा सम्मानित व्यक्ति बन जाता है। यह भाग्यवान, अनेक विषयों का ज्ञाता, धार्मिक तथा श्रेष्ठ संतानों का पिता होता है। जीवन के ४२, ४७ तथा ५१ वें वर्ष विशेष लाभप्रद एवं सम्मानदायक सिद्ध होते हैं। किसी विद्वान् पर-स्त्री से इसे बहुत सहयोग मिलता है। पूर्णायु ७४ वर्ष होती है।

(१६२४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं कुछ लम्बे कद वाला, न्यायप्रिय तथा संयमित विचारों वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी होती है। यह उसे प्रेम करने के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध रखता है तथा पर-स्त्री-प्रेम के कारण कभी-कभी अपनी हानि भी कर बैठता है। यह बंधु-बांधवों का हितैषी होता है। २८ वर्ष की आयु में राज्य से किसी कारणवश विरोध होता है। किसी पर-स्त्री का सहयोग उस समय विशेष सहायक सिद्ध होता है। ४२ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है, वैसे जीवन में इसे अर्थाभाव कभी भी नहीं रहता। ४८ वर्ष की आयु में इसे राज्य द्वारा विशेष सम्मान भी प्राप्त होता है। यह किसी सम्मानित पद पर रहकर बहुत उन्नति करता है। संतानें उत्तम होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१६२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, ऊँचे कद वाला, व्यवसाय-कुशल तथा ज्ञानी होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा प्रायः कम ही होती है। इसे अध्ययन में बाधायें आती हैं, तथापि यह पर्याप्त व्यावहारिक-बुद्धि-सम्पन्न होता है। इसका विवाह २३-२६ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा सौभाग्यशालिनी स्त्री के साथ होता है। उसे यह बहुत स्नेह करता है। विवाहोपरान्त यह अप्रत्याशित रूप से धन प्राप्त करता है। बन्धु-बान्धव इसके विरोधी हो जाते हैं तथा शत्रु भी भयभीत करते हैं। परदेश में जाकर यह बहुत धन, सम्मान तथा सुख प्राप्त करता है। ४७ वर्ष की आयु तक यह बहुत अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेता है। ५१वें वर्ष में इसकी सभी आकांक्षायें पूर्ण हो जाती हैं। स्त्री के बारे में यह कुछ चिन्तित भी रहता है। सन्तानें सुन्दर, सद्गुणी ~~तथा~~ आज्ञा पालक होती हैं। पूर्णायु ६५ या ७८ वर्ष होती है।

(१६२६) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्थूल शरीर वाला, बलवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, वक्ता-कुशल, धनी-मानी तथा दीर्घजीवी होता है। अपनी योग्यता, अध्यवसाय एवं सद्गुणों के बल पर यह अत्यन्त सुख भोगता है। पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यह व्यवसाय में चित्त लगाता है। राज्य से भी इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। पत्नी गुणवती तथा भाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। ३७ वर्ष की आयु तक ~~यह~~ अपने कुल तथा समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान प्राप्त कर लेता है। इसे माता द्वारा सुख नहीं मिलता। इस कारण जातक स्वयं भी दुःख का अनुभव करता है। यह पत्नी से प्रेम करने वाला तथा श्रेष्ठ सन्तानों से युक्त होता है। पूर्णायु ६५ से ७० वर्ष के मध्य होती है।

कु० २०

भु० सं० ४३८७

कु० २०

(१६२७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, साहसी तथा अपने अध्यवसाय के बल पर अत्यधिक उन्नति करने वाला होता है। यद्यपि इसे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं होती, तथापि यह व्यावहारिक-बुद्धि में प्रवीण होता है। यह बीमार अधिक रहता है तथा इसके धन का व्यय भी अधिकतर बीमारी पर ही होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दर, चतुर, शिक्षित तथा श्रेष्ठ कुल की कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त यह अत्यधिक धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। इसे व्यवसाय से भी लाभ होता है तथा राज्य द्वारा भी अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है। इसके पुत्र भी भाग्यवान तथा सुख देने वाले होते हैं। ऐश्वर्य सम्बन्धी सभी आकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं। ५३ तथा ५६ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है, परन्तु इनसे बचने के बाद ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१६२८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बलवान, सुन्दर, पराक्रमी, बुद्धिमान, अच्छे मित्रों से युक्त, देव-गुरु-भक्त तथा अपने बुद्धि, उद्योग एवं पराक्रम द्वारा अत्यधिक धन कमाने वाला होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यवान होती है। वह जातक को पूर्ण प्रेम देती है, फिर भी इस जातक के प्रेम-सम्बन्ध अन्य स्त्रियों के साथ भी बने रहते हैं। ऐसे सम्बन्धों के कारण इसका धन भी अधिक खर्च होता है। २५ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन करने लगता है तथा ५१ वर्ष की आयु तक यह अपनी समस्त आकांक्षाओं को पूरा कर लेता है। इसे माता-पिता का सुख प्राप्त नहीं होता, परन्तु अपने सद्गुणी एवं यशस्वी पुत्रों के सहयोग से यह समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। इसे राज्य से भी पर्याप्त लाभ होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष के लगभग होती है।

(१६२९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, रसिक स्वभाव का, काव्य-संगीत-प्रेमी, रोगहीन, अत्यन्त परिश्रमी तथा अपने अध्यवसाय द्वारा यथेष्ट धन अर्जित करने वाला होता है। यह मुकद्दमे आदि विवाद के मामलों में भी लाभ उठाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कलाओं की ज्ञाता, सुरुचि-सम्पन्न तथा सद्गुणी होती है। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय होता है। यह माता-पिता का भक्त होता है तथा वृद्धावस्था में उन्हें बहुत सुख देता है। राज्य की सेवा में संलग्न रहकर अथवा अपने निजी व्यवसाय द्वारा यह पर्याप्त धनोपार्जन तथा सम्मान प्राप्त करता है। ३७ वर्ष की आयु में यह बहुत सम्पन्न हो जाता है। ४०, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष इसके लिए विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। ६१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा ८३ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१६३०) - इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर, उदात्त स्वभाव का तथा परोपकारी होता है। यह अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से बहुत उन्नति करता है तथा अत्यधिक सुख पाता है। २३ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त यह राजकीय सेवा में नियुक्त होकर २८ वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त करता है तथा ३३ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है। यह अपनी स्त्री से बहुत प्रेम करता है और उसकी सम्मति लिए बिना कोई काम नहीं करता। ५५ वर्ष की आयु में बहुत सुख मिलता है। भूमि, भवन आदि का स्वामी बनता तथा अनेक स्रोतों से धन कमाता है। सन्तान की ओर से दुःखी रहता है। ७९ वर्ष की आयु पार करले तो ८५ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१६३१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मधुर व्यवहार करने वाला, कोमल भावनाओं का, विभिन्न कलाओं से युक्त तथा कार्य-कुशल होता है। यह धार्मिक तथा धनी होता है एवं व्यवसाय द्वारा सदैव लाभ उठाता है। यह २५ वर्ष की आयु में ही अपना कोई व्यवसाय आरंभ कर देता है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। पुत्र भी सुन्दर, शिक्षित, सौभाग्यशाली होते हैं और माता-पिता को सुख देते हैं। ३२, ३७, ४२, ४८ तथा ५१ वर्ष की आयु में इस जातक को बहुत लाभ होता है। पुत्र-पुत्रियाँ भी इच्छित रूप में प्राप्त होते हैं। यह अपना मकान बनवाता है तथा भूमि, वाहन आदि सभी सुखों को प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है तथा पत्नी इसकी उन्नति में बहुत सहयोग करती है। पूर्णायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(१६३२)- यह जातक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, वाक्पटु, अध्यवसायी, अत्यधिक उत्साही तथा पराक्रमी होता है। परन्तु जल्दबाज होने के कारण इसे अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती। इसके भाई-बन्धु ही इसके कार्य में व्यवधान उपस्थित करते हैं। २३ से २५ वर्ष की आयु में इसे पत्नी प्राप्त होती है, जो सुन्दरी, धन-संग्रह करने वाली, मधुर-भाषिणी एवं कार्य-कुशला होती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुख देने वाली होती हैं। २४ वर्ष की आयु में यह परदेश में जाकर अपने उद्यम तथा अध्यवसाय द्वारा यथेष्ट धन अर्जित करता है। व्यवसाय में हर तीन-चार वर्ष बाद उत्थान-पतन की स्थिति आती रहती है। इसे जुआ खेलने का भी शौक होता है और उसमें यह कभी भी विजयी नहीं होता, तथापि इसके पास धन की कमी नहीं रहती। इसकी पूर्णायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(१६३३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुवक्ता, स्वस्थ, मधुर-व्यवहार करने वाला तथा परदेश में रहकर भाग्य वृद्धि करने वाला होता है। यह बड़ा मायावी तथा कृपण स्वभाव का भी होता है। २१ वर्ष की आयु में यह परदेश चला जाता है तथा देश-विदेश की खूब यात्रायें करता है। २३-२४ वर्ष तक परदेश में रहने के बाद पुनः स्वदेश में ही लौट आता है। यह ३० वर्ष की आयु में या तो राजकीय-सेवा में संलग्न होता है अथवा फिर किसी बड़े संस्थान में उच्चपदाधिकारी के साथ व्यक्तिगत रूप में संलग्न रहता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी कृशकाय शरीर वाली, सुन्दर, चतुर तथा मधुर-व्यवहार करने वाली होती है। ४१ वर्ष की आयु में इस जातक के पास प्रचुर धन संगृहीत हो जाता है उन्हीं दिनों इसे विशेष प्रतिष्ठा भी मिलती है। पुत्र-पुत्रियाँ सुन्दर होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१६३४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सत्यवादी, मधुर व्यवहार करने वाला, सबको प्रसन्न रखने वाला तथा अपने पुरुषार्थ एवं अध्यवसाय द्वारा अत्यधिक धनोपार्जन करने वाला होता है। यह अद्वितीय कौशल द्वारा अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सौभाग्यशालिनी होती है, तथापि अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। स्त्री-वर्ग द्वारा इसे कभी हानि नहीं पहुँचती, सदैव लाभ ही होता है। इसके पुत्र श्रेष्ठ तथा सद्गुणी होते हैं वे धन तथा मान-सम्मान की वृद्धि करते हैं। यह जातक तीर्थ-यात्रा तथा धार्मिक कृत्यों में अपना धन अधिक खर्च करता है, तथापि धन तथा सुख की कोई कमी नहीं रहती। भाग्योदय जल्दी हो जाता होता है। २१ तथा २६ वर्ष की आयु में अरिष्ट तथा ७८वें वर्ष में देहान्त होता है।

भू० सं० १६३३-१६३४

कु० २०

(१६३५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बहुत सुन्दर, विनम्र, मध्यम कद वाला, आकर्षक, व्यवहार-कुशल, मधुरभाषी, बुद्धिमान, गुणवान तथा सुयोग्य होता है। यह अपनी कमाई से धनी होता है। पढ़ाई-लिखाई में रहकर भी भाग्यवृद्धि के अवसर बनते हैं। परिवार से इस जातक का मतभेद रहता है, परन्तु माता-पिता का भक्त होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। यह अपनी उन्नति स्थापित करने हेतु सदैव प्रयत्नशील बना रहता है। इसे राज्याश्रय प्राप्त उच्च व्यक्तियों का संपर्क मिलता है। यह राज्याधिकारियों द्वारा मान्य अथवा व्यापारी किसी-न-किसी रूप में राज्य से संबंधित रहता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। ३९, ४३, ४९ तथा ५१ वर्ष की आयु में विशेष लाभ होता है। धर्मार्थ अधिक करता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१६३६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गंभीर, बुद्धिमान तथा चंचल चित्त वाला होता है। यह प्रत्येक विषय का गंभीरता पूर्वक चिन्तन करते हुए भी ललित कलाओं में प्रवीण होता है। यह व्यवसाय द्वारा उन्नति करता है। सत्कर्मों में रुचि रखते हुए दूसरों की सहायता करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्वाभिमानिनी तथा जातक को सदैव प्रसन्न रखने वाली होती है। वह सम्पूर्ण परिवार को भी सुख देती है। २८ वर्ष की आयु में यह जातक अपना व्यवसाय आरम्भ करता है। राजकीय-सेवा अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में सेवा करना भी संभव है। कुछ समय के लिए विदेश भी जाता है। अपनी स्त्री के प्रति कुछ समय के लिए चिन्ताग्रस्त भी होता है। ४२, ४६, ४८ तथा ५३ वर्ष की आयु में इसे विशेष आर्थिक-लाभ होता है। परमायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(१६३७) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, गुणवान्, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, प्रियभाषी, धर्मात्मा, ईश्वरभक्त तथा प्रभावशाली होता है। इसे राजा, चोर अथवा अग्नि से भय होता है। यह सत्कर्म तथा परोपकार करते हुए अपने व्यवसाय द्वारा अल्पकाल में ही धनी हो जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर, लम्बे कद वाली, प्रभावशालिनी तथा जातक के मनोऽनुकूल स्त्री के साथ होता है, उससे श्रेष्ठ, सुन्दर तथा सद्गुणी पुत्र भी होते हैं, तथापि इस जातक का संबंध दो-तीन अन्य स्त्रियों के साथ भी बना रहता है। पर-स्त्रियों में अनुरक्त रहते हुए यह लोभ भी उठाता है। इसका भाग्योदय प्रथम सन्तान के जन्म के बाद होता है। परदेश में जाकर इसकी अत्यधिक भाग्योन्नति होती है। ४५ तथा ४८ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। ५६ अथवा ६५ वर्ष की आयु में ही इसका देहान्त हो जाता है।

(१६३८) - इस जातक का माता-पिता के प्रति प्रेमभाव बना रहता है। यह शरीर से सुन्दर, स्वस्थ, प्रियदर्शी, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, अच्छे काम करने को तत्पर तथा धन का लोभी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। प्रथम पुत्र का जन्म २३ वर्ष की आयु में होता है। पुत्र-जन्म के बाद ही इसका भाग्योदय होता है। अपने व्यवसाय द्वारा यह यथेष्ट धनोपार्जन करता है। इसके सद्गुणी पुत्र भी व्यवसाय-वृद्धि में सहायक बनते हैं। इसे बन्धु-बान्धवों से कष्ट मिलता है। मित्रों से कभी सहयोग तो कभी असहयोग मिलता रहता है। ४२, ४५, ४८, ५३ तथा ५८ वर्ष की आयु में कष्ट होना निश्चय है। सामान्यतः यह जातक सुखी जीवन बिताता है। इसकी पूर्णायु ७५ से ८१ वर्ष तक हो सकती है।

(१६३९)- इस कुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, सुन्दर, सहृदय, स्वस्थ, विशाल हृदय का तथा परोपकारी होता है। यह २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान से संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। सेवा-कार्य के अतिरिक्त व्यवसाय से भी इसे लाभ होता है। २७, ३० तथा ३५ वर्ष की आयु में इसे पद-वृद्धि प्राप्त होती है। अपने व्यवसाय द्वारा यह यथेष्ट धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २४-२७ वर्ष की आयु में सर्वगुण सम्पन्न, सुशीला, सुन्दरी तथा पतिव्रता स्त्री के साथ होता है। इसे श्रेष्ठ पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है तथा सद्गुणी-पुत्र व्यवसाय-वृद्धि में सहायक बनते हैं। अपनी पत्नी के अतिरिक्त यह जातक अन्य अनेक स्त्रियों से भी प्रेम-संबंध रखता है तथा किसी स्त्री का कार्यकारी बनकर उसके लिए व्यवसाय करता तथा स्वयं भी लाभ उठाता है। मृत्यु ७८ से ८३ वर्ष के मध्य होती है।

(१६४०)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, विशाल-हृदय तथा गंभीर भावनाओं वाला, दीन-दुःखियों के प्रति संवेदनशील तथा परोपकारी होता है। यह विपत्ति में पड़े व्यक्ति की सहायता के लिए स्वयं हानि उठाना भी स्वीकार करता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा सुशीला प्राप्त होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान की सेवा द्वारा विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। उच्चपद पर कार्य करते हुए यह यथेष्ट सम्मान अर्जित करता है। ३१ से ४८ वर्ष की आयु में यह सब प्रकार के सुख-साधनों को प्राप्त कर लेता है। इसकी सन्तानें भी सद्गुणी तथा सुख देने वाली होती हैं। यह धर्म-भजन, दानादि से सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा ८० वर्ष की परमायु पाता है।

(१६४१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, धैर्यवान, ज्ञानी, उदार, परोपकारी, धार्मिक तथा सब की सहायता के लिए उद्यत रहने वाला होता है। २४-२५ वर्ष की आयु में यह पैतृक-व्यवसाय को अपना कर शीघ्र ही अपनी आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति को मजबूत बना लेता है। यह राज्य द्वारा सम्मान पाता है तथा पिता का परम भक्त होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसका भाग्योदय मानो प्रतिदिन होता है। अल्प परिश्रमों से यह दूना-दूना बना लेता है। माता के प्रति भी इसे अधिक स्नेह नहीं होता। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशील होती है। वह जातक से बहुत प्रेम करती है। व्यावसायिक कार्य में भी जातक की सहयोगिनी सिद्ध होती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। राज्य द्वारा भी विपुल लाभ होता है। ६६ तथा ७१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(१६४२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बहुत धीर-गंभीर, सुन्दर, मध्यम कद वाला, गौरवर्ण, अनेक कलाओं का जानकार, काव्य-साहित्य आदि ललित-कलाओं का प्रेमी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रश्रय देने वाला होता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में सुन्दरी, मनस्विनी तथा सुख देने वाली विदुषी कन्या के साथ होता है। यह गुणवती, आज्ञाकारिणी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। पुत्र भी सुयोग्य तथा सुख-सहयोग देने वाले होते हैं। व्यवसाय द्वारा इसके पुत्र भी बहुत अधिक धनोपार्जन करते हैं। इसे बन्धु-बान्धवों का भी भरपूर सहयोग मिलता है। इसके श्रेष्ठ मित्रों की संख्या भी बहुत होती है। यह अपने पिता का भक्त तथा व्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाने वाला होता है। इस प्रकार के सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७३ वर्ष से अधिक की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६४३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त निश्चिन्त स्वभाव का, अपने में ही मग्न रहने वाला, एकान्त-प्रिय, सुन्दर, परिश्रमी तथा अपने उद्यम द्वारा विपुल धन अर्जित करने वाला होता है। यह व्यवसाय द्वारा धन कमाने के साथ ही सम्मान-प्रतिष्ठा भी उपार्जित करता है। यह विलास एवं वैभव का प्रदर्शन करने वाली वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा धन कमाता है, इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी स्थूल शरीर की, परन्तु सुन्दर, विदुषी, कला-कौशल की जानकार तथा मधुर-व्यवहार वाली होती है। वह जातक से भी अधिक प्रभावशालिनी होती है। यह जातक जुआ आदि व्यसनों का शौकीन भी होता है, जिसके फलस्वरूप कभी-कभी आर्थिक-संकटों में भी फँस जाता है। इसका भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु के बाद होता है। पुत्र सुन्दर तथा कर्तव्य-निष्ठ होते हैं। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१६४४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पराक्रमी तथा उद्योगी होता है। यह भू-स्वामी तथा कई भवनों का अधिपति होता है। धर्म-पालक, कर्तव्यनिष्ठ तथा मधुरभाषी होने के साथ ही यह नीच लोगों के संपर्क में रहकर उनसे लाभ भी उठाता है। यह विदेश में रहकर प्रचुर धन तथा यश कमाता है। इसे राज्य द्वारा भी मान्यता प्राप्त होती है। यह भाग्य का बहुत धनी होता है, अतः निरन्तर प्रतिष्ठा प्राप्त करता चला जाता है। ३२, ३८, ४१, ४८ तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे राज्य द्वारा विशेष सम्मान तथा धन-सम्पत्ति की उपलब्धि होती है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें भी सुयोग्य तथा सुख देने वाली सिद्ध होती हैं। ४३, ५१ तथा ५६ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट होता है तथा परमायु ७८ अथवा ८४ वर्ष की होती है।

(१६४५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने वाला, सहृदय तथा उच्चभावनाओं वाला होता है। इसके पास धन की कमी नहीं रहती, यह परिवार का भरण-पोषण करने वाला, यात्रा-प्रिय तथा देशान्तर में धन एवं सम्मान पाने वाला होता है। यह बड़ा विद्वान, समझदार, व्यवसायी तथा कुशल कार्यकर्त्ता होता है। ४५ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक धनी हो जाता है तथा इसी आयु में यह कोई ऐसा कार्य भी करता है, जिसका संबंध बाहरी स्थान से होता है। उस कार्य-व्यवसाय से इसे बहुत लाभ होता है। २२ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी कन्या के साथ होता है। वह कुलीन तथा धनी परिवार की एवं प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। सन्तानें भी सद्गुणी होती हैं। वे पिता के यश को तथा धन-सम्मान को बढ़ाती हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(१६४६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सहृदय, चतुर, सुन्दर, रसिक-स्वभाव का, ज्ञानी, काव्य-साहित्य का मर्मज्ञ तथा अपनी प्रतिष्ठा को अत्यधिक बढ़ाने वाला होता है। यह शुक्र, मध्यम कद वाला, श्याम तथा कुछ स्थूल शरीर का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा मनस्विनी स्त्री के साथ होता है, वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में अपना अपार-प्यार सहयोग देती है तथा देश-देशान्तरों में भी साथ जाती है। यह २४ वर्ष की आयु में शिक्षा-दीक्षा समाप्त कर राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है तथा महत्वपूर्ण कार्यों को उत्तरदायित्व सहित सम्पन्न करता है। इसकी पदोन्नति ३६ वर्ष की आयु तक होती है तथा २१ वर्ष की आयु में यह सभी वांछित सुखों को प्राप्त कर लेता है। ५६ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है परन्तु आयु ७८ वर्ष से अधिक होती है। पुत्र सद्गुणी तथा सुख देने वाले होते हैं।

भु० सं० ३०३४

कु० र०

(२६४७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सिंह के समान पराक्रमी तथा किसी भी जोखिम भरे काम को करने के लिए सदैव तत्पर रहने वाला होता है। यह किसी अन्य के काम से देश-देशान्तरों में भ्रमण करता है तथा किसी स्त्री के माध्यम से धन लाभ करता है। यह स्त्री स्थूल शरीर की, अत्यन्त सुन्दरी तथा मृदुभाषिणी होती है और अपने सहयोग द्वारा जातक को बहुत ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित कर देती है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में सुन्दरी स्त्री के साथ होता है। इसकी पत्नी भी प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है तथा धनी घर की बेटी होने के कारण पति की अवमानना भी करती है, परन्तु इसके माध्यम से भी जातक को धन, सम्मान आदि का बहुत लाभ होता है। जातक अपनी पत्नी का भी अनुगत बना रहता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। ४०, ४२ तथा ४६ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक कष्ट होता है। आर्थिक स्थिति सदैव उत्तम बनी रहती है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२६४८) - इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सदाचारी, धर्म-कर्म में तत्पर, सहृदय, उदार, गंभीर स्वभाव का, विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान, काव्य-साहित्य का प्रेमी तथा संगीतादि कलाओं का ज्ञाता होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर, बलिष्ठ, सहृदय तथापि कुछ कठोर स्वभाव की स्त्री के साथ होता है, जो जातक से मतभेद भी रखती है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों के साथ भी जातक के प्रेम-सम्बन्ध रहते हैं। कुछ लोग इससे शत्रुता भी मानते हैं। दूसरी स्त्री इस जातक को अपने साथ काम में लगाये रखती है तथा उसके कारण इसे पर्याप्त लाभ भी होता है। ३० से ५३ वर्ष की आयु तक यह देश-देशान्तरों का भ्रमण कर प्रचुर धन अर्जित करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। वे धनी-मानी तथा पिता की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले सिद्ध होते हैं। इसकी परमायु ७२-७३ वर्ष की होती है।

(१६४९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, पिता से स्नेह रखने वाला, परन्तु माता से विमुख एवं परिवारी जनों से कोई सम्बन्ध न रखने वाला होता है। यह कुछ क्रोधी स्वभाव का, हीनकर्म करने को अनुचित न समझने वाला। जुआ-सट्टा खेलने में आनन्द का अनुभव करने वाला तथा अपने उद्योग एवं परिश्रम के बलबूते पर धनोपार्जन करने वाला होता है। खतरा स्वीकार करने में इसे आनन्द आता है, अतः जोखिम भरे कामों को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूल तथा प्रेम करने वाली होती है, तथापि यह जातक अन्य स्त्रियों में भी रुचि रखता है तथा अपने कार्य-साधन में पत्नियों से सहयोग प्राप्त करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सम्मान वृद्धि करने वाले होते हैं। यह जातक पर्याप्त धन कमाता और सुखी रहता है। परमायु ७६ वर्ष से अधिक होती है।

(१६५०)- इस जन्मांगचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, ऊँचे कद का, क्रोधी स्वभाव का, पिता से प्रेम करने वाला, परन्तु अन्य परिवारी जनों से अलग रहने वाला होता है। यह विदेश में रह कर लाभ उठाता है। २१ वर्ष की आयु में ही परदेश में जाकर रहता तथा धनार्जन करता है। २४-२५ वर्ष की आयु में ही इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम हो जाती है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा प्रेमभाव रखने वाली मिलती है। वह चंचल मन वाली भी होती है। यह जातक राजगृह अथवा राजकीय-सेवा द्वारा भी बहुत समय तक जीविका चलाता है। राजा द्वारा इसे सम्मान भी दिया जाता है। संतान के विषय में यह चिन्तित तथा दुःखी रहता है। वृद्धावस्था में पुत्र-प्राप्ति सिद्ध होती है। सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ यह ८१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६५१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, किञ्चित् क्रोधी स्वभाव का तथा कठोर-कर्म करने वाला होता है। यह व्यवस्था एवं अनुशासन का प्रतीत है पालन करता है तथा अपने घरों और बड़े दीवाले व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। यह राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य उच्च प्रतिष्ठान में व्यवस्था सम्बन्धी उच्च प्रशासकीय पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा अपने दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह करता है। २५ वर्ष की आयु तक यह क्रियाशील होकर उन्नति करना आरंभ कर देता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दर, स्वस्थ, कलाओं में अभिरुचि रखने वाली, आज्ञानुवर्तिनी कन्या के साथ होता है। परन्तु वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखती है। सन्तान के लिए पति-पत्नी दोनों ही चिन्तित रहते हैं। धन की कमी कोई कमी नहीं रहती। ४७ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष या ८० वर्ष होती है।

(१६५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, न्यायप्रिय, कृपालु, परोपकारी, दूसरों की बात सुनने तथा समझने वाला एवं साहित्य आदि विषयों में रुचि रखने वाला होता है। यह अपने अध्यवसाय द्वारा देशान्तर से लाभ उठाता है। राजकीय अथवा किसी बड़े संगठन की सेवा में संलग्न होकर बहुत धन तथा प्रतिष्ठा अर्जित करता है। २४ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन कर उठता है। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्वस्थ तथा वाचाल होती है। वह गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली तथा पति को सुख देने वाली सिद्ध होती है। संतान कुछ विलम्ब से होती है, परन्तु वे भाग्यशाली होती हैं। यह जातक आरंभ से ही अपने परिवार से अलग रहता है तथा यथेष्ट मात्रा में धन कमाता है। इसे किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२६५२३)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूप, भाग्यवान, विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करने वाला तथा देश-परदेश की यात्राओं से लाभ उठाने वाला होता है। यह साहसिक कार्यों में सफलता पाने वाले, अधिकतर विदेशों से भी सम्बन्ध रखनेवाला तथा भू-गर्भ से भी लाभ उठाने वाला होता है। २३-२४ वर्ष की आयु से ही यह कमाना आरंभ कर देता है। शिक्षा उच्च श्रेणी की प्राप्त करता है। पिता का स्नेह-भाजन बना रहता है तथा २८ वर्ष की आयु में ही विशेष उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। सन्तान की ओर से दुःखी रहता है, क्योंकि पत्नी के गर्भस्राव अधिक होते हैं। ३५, ४८ तथा ६३ वर्ष की आयु में आकस्मिक-चोट लगने का भय रहता है तथा ७० वर्ष की आयु में आकस्मिक चोट से ही मृत्यु भी होती है। यों जीवन भर दुःखी बना रहता है।

(२६५२४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धनी, सुन्दर, स्वस्थ, विचारवान्, दयालु, काव्य-संगीत का प्रेमी तथा परदेश की यात्राओं द्वारा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। इसे देशान्तर से धन का लाभ भी खूब होता है। निम्न कोटि के लोगों से इसके गहरे संबंध होते हैं। यह भूमिगत-द्रव्य को प्राप्त करता है तथा खनिज-पदार्थों से लाभ उठाता है। खेती से भी लाभ होना संभव है। यह माता-पिता से दूर रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सबको प्रभावित करने वाली मिलती है। संतानें सद्गुणी तथा आज्ञा-पालक होती हैं। जीवन के २३, ३१, ३८, ४२, ४८ तथा ५३ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५७ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। इसे शत्रु आदि का भय नहीं होता तथा सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१६५५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्य सुन्दर, स्वार्थी, नीच लोगों की संगति से लाभ उठाने वाला तथा निम्न वर्ग की स्त्रियों में अनुरक्त होता है। यह विभिन्न स्रोतों द्वारा धनोपार्जन कर अपनी आमदनी को बढ़ाता है तथा अपने धन को बहुत सँभाल कर रखता है। इसकी कार्य-पद्धति विचित्र होती है। इसे मायावी भी कहा जा सकता है। इसे अपनी माता से प्रेम नहीं होता। २५ वर्ष की आयु तक यह अपने उद्यम तथा पराक्रम से बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेता है। धन भी बहुत कमा लेता है। इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्वी तथा गुणवती होती है। यह माता-पिता से अलग रह कर अपनी गृहस्थी का संचालन करता है। २८, ३२, ३६, ४२, ५१, ५५ तथा ५८वें वर्ष में इसे विभिन्न प्रकार के लाभ होते हैं। इसे पुत्र-पुत्रियों का भी यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष की होती है।

(१६५६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पतला-दुबला, चेहरे से कठोर स्वभाव का प्रतीत होनेवाला, मध्यम कद का तथा अपने अध्यवसाय एवं प्रभाव द्वारा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बनाकर प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों का पालन करता है तथा मित्रों की सहायता करने वाला भी होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की होती है। यह जातक २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान से सम्बद्ध होकर देशान्तर का भ्रमण करता है तथा धन कमाता है। इसे सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। संतान बड़ी आयु में प्राप्त होती है। २६, २८, ३२, ३३ तथा ३७ वर्ष की आयु में विशेष आर्थिक-लाभ होता है। ४५ वर्ष की आयु में कष्ट तथा पीड़ा से कोई क्लेश होता है। परमायु ७१ वर्ष की होती है।

(१६५७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, साहसी, कुछ साँवले रंग का, मध्यम कद वाला, अनेक विद्याओं तथा कलाओं का जानकार तथा परिश्रमी स्वभाव का होता है। बाल्यावस्था में इसे बहुत चोट लगती है तथा जीवन की रक्षा बड़े नाटकीय ढंग से होती है। २२ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह अर्थोपार्जन के क्षेत्र में प्रवेश कर, सफलताएं पाना आरंभ करता है। अपने उद्यम तथा कठोर परिश्रम से यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है, वह अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास करती हुई भी पति को सुखी बनाये रखती है। यह जातक स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय करता है तथा देश-देशान्तर में भ्रमण कर प्रचुर धन कमाता है। यह प्रत्येक क्षेत्र में सफलताएं पाता है। ५१ तथा ५७ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा ६७-६८ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है।

(१६५८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, समदर्शी, न्यायप्रिय, परोपकारी, काव्य-साहित्य का प्रेमी, कलाओं का ज्ञाता तथा अपने मधुर व्यवहार से सब लोगों का प्रिय बन जाने वाला होता है। यह अपने काम को निकालने में बड़ा चतुर होता है। अपने पैतृक-व्यवसाय को ही अपना कर यह उसे आगे बढ़ाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आज्ञापालक तथा सुख देने वाली होती है। यह जातक ३५ वर्ष की आयु तक बहुत धन कमा लेता है। जीवन में आने वाली सभी विघ्न-बाधाओं को यह पार करता चला जाता है। पारिवारिक-क्षेत्र में ही कलह का वातावरण बनता है, बाहर से कोई कष्ट नहीं मिलता। इस जातक के अन्य अनेक स्त्रियों से भी प्रेम संबंध रहते हैं। ५६ वर्ष की आयु में यह चरमोत्कर्ष प्राप्त कर लेता है। इसकी परमायु ६८ अथवा ७२ वर्ष होती है।

(२६५९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, काव्य-संगीत का प्रेमी, अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करने वाला तथा विद्वान् होता है। विद्याध्ययन के समय अनेक बाधायें आती हैं। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा व्यवहार-कुशल कन्या के साथ होता है। इसे ससुराल से भी बहुत धन तथा सहयोग मिलता है। राजकीय-सेवा द्वारा यह बहुत धन कमाता है तथा किसी अन्य व्यवसाय द्वारा भी धनी हो सकता है। २४ वर्ष की आयु के बाद यह किसी प्रतिष्ठित पद पर आसीन होता है। पारिवारिक-व्यवसाय को भी यह आगे बढ़ाता है तथा देशान्तर से जाकर भी लाभ उठाता है। इसकी आमदनी कई प्रकार से होती है, अतः यह बड़ा धनी होता है तथा अत्यन्त सुखी जीवन बिताता है। ३२, ३७, ३९, ४२, ४७ तथा ४९ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। पुत्रादि भी सुयोग्य तथा सुख देने वाले होते हैं। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२६६०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, न्याय-प्रिय, शत्रु के प्रति भी न्यायपूर्ण व्यवहार करने वाला, प्रत्येक के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला, कलादि का प्रेमी, शास्त्रज्ञ तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। विद्याध्ययन के समय इसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, तथापि यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसे अपयश देने वाले कार्यों में भी रुचि बनी रहती है तथा यह उनसे भी लाभ उठाता है। २५ से ३० वर्ष की आयु तक यह ऐसे ही कार्यों में संलग्न रहता है, जिनमें जुआ-सट्टा भी सम्मिलित है, परन्तु यह सब जगह से लाभ लेता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। ससुराल से भी इसे बहुत धन तथा सहयोग प्राप्त होता है। संतान हेतु दुःखी रहता है। ३९, ४२, ४६, ४८ तथा ५१ वें वर्ष में बहुत धन कमाता है। ४३ तथा ५९ वें वर्ष में कष्ट मिलता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

सं० भु० ९३३९३

कु० २०

(१६६१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धनी, सुखी, राजयोग युक्त तथा सर्वत्र आदर-सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह उच्चशिक्षा प्राप्त करता है तथा २२ वर्ष की आयु से ही राजकीय सेवा में नियुक्त होकर उन्नति करना आरम्भ कर देता है। २५, २८, ३२ तथा ३५ वर्ष की आयु में पदोन्नतियाँ होती हैं। इसे अपने पैतृक-व्यवसाय से भी लाभ होता है। यह जो भी कार्य आरम्भ करता है, उसमें अपने साहस, उद्यम तथा परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता है। धन-लाभ के अनेक साधन इसके पास स्वयं जुट जाते हैं। २३ वर्ष की आयु में यह सुन्दर, गुणवती तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली पत्नी को प्राप्त करता है, जो परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाती तथा सब लोगों को सुख देती है। यह देश-विदेश में सम्मान प्राप्त करता है। ६४ वर्ष की आयु में इसे बहुत धन उपलब्ध होता है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। यह ८८ वर्ष अथवा ९३ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६६२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान, विद्वान तथा बाल्यावस्था से सब प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाला होता है। इसे भूमि, भवन, वाहनादि का सुख बचपन से ही प्राप्त रहता है, क्योंकि इसका जन्म सम्पन्न परिवार में होता है। २३ वर्ष तक उच्च शिक्षा प्राप्त करके यह राज्य में किसी उच्च पद को प्राप्त करता है। इसे कभी दुःख नहीं मिलता, क्योंकि सब प्रकार के सुख इसके चारों ओर उपस्थित बने रहते हैं। २८ वर्ष की आयु में इसे लाभ होता है तथा ३५ वर्ष की आयु में पदोन्नति होती है। इसे देश-विदेश की यात्राओं में सम्मान तथा धन का लाभ होता रहता है। विदेश में राज्य द्वारा सम्मान मिलता है। चारों ओर प्रशंसकों की भीड़ लगी (रहती है)। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। अन्य स्त्रियाँ भी प्रेम करती हैं। पूर्णायु ८२ वर्ष की होती है।

(१९६६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुक्र, स्वभाव से चंचल, स्वयं को बड़ा समझने के अहंभाव से पीड़ित, अनेक कलाओं का ज्ञाता, तेजस्वी तथा लोक में प्रतिष्ठित स्थान रखने वाला होता है। इसका विवाह 20-21 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखने वाली होती है। वह अपने प्रभाव से सबको प्रभावित बनाये रखती है। जातक के धन तथा ऐश्वर्य पर अधिक नियन्त्रण रखता है। यह जातक राज्य की सेवा में संलग्न होकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा यथेष्ट धन एवं सम्मान अर्जित करता है। इसकी पत्नी भी अपनी योग्यता के कारण राज्य के सम्मान प्राप्त करती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। वे धनवान, गुणवान भाग्यशाली तथा पिता को सुख देने वाले होते हैं। सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक बिताते हुए यह जातक 78 वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९६६४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलवान, गुणवान, धनवान तथा अत्यन्त प्रतापी होता है। इसका विवाह 21-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्वी तथा अनेक प्रकार के रहन-सहन को पसन्द करने वाली बड़ी विदुषी एवं गुणवती होती है। यह जातक अपनी पत्नी की रुचि के अनुकूल ही प्रत्येक कार्य को करता है। यह 23 वर्ष की आयु में अपना व्यवसाय आरम्भ करता है तथा उसका देशान्तरों तक विस्तार करके पर्याप्त लाभ कमाता है। इसकी सम्पत्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जाती है। इसे श्रेष्ठ पुत्रों का लाभ होता है, जो इसे भरपूर सुख पहुँचाते हैं। यह जातक राजनीति में भी विशेष रुचि रखता है। इसका सम्पूर्ण जीवन आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तथा सब प्रकार से सुखी बना रहता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सुख सदैव उपलब्ध रहते हैं। इसकी पूर्णायु 75 वर्ष की होती है।

(१६६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ज्ञान का भण्डार एवं सबको प्रभावित करने वाला होता है। २२ वर्ष तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। इसी अवधि में इसका विवाह भी हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुसंस्कृत, परिवार की प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाली तथा जातक के मनोनुकूल चलने वाली होती है। यह ३५ वर्ष की आयु तक तीन बार पदोन्नति प्राप्त कर लेता है तथा ५३ वर्ष की आयु में अंतिम बार पदोन्नत होकर उच्च स्थान पर पहुँच जाता है। इसके पास धन-सम्पत्ति तथा मान-प्रतिष्ठा की कोई कमी नहीं रहती। धन की अधिकता होते हुए भी यह दूसरों की सहायता एवं परोपकार में धन खर्च करते हुए पीछे नहीं हटता। इसकी पत्नी भी वैसी ही करती है। पुत्र-पुत्री तथा सुयोग्य होते हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१६६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व एवं मधुरभाषी होता है। इसकी कुशलता का शत्रु भी लोहा मानते हैं। २३ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद यह राजकीय-सेवा में कोई उच्च पद प्राप्त कर लेता है। सेना अथवा पुलिस विभाग की सेवा में अथवा गुप्तचर या विदेश-विभाग से संबंधित सेवा में जाना अधिक संभव होता है। यह अपनी योग्यता, ज्ञान तथा साहस के बल पर शीघ्र ही बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा इसके सम्मान एवं धन को अधिकाधिक ऊँचा उठाने वाली मिलती है। यह अपने परिवारीजनों से अलग प्रायः विदेश में रहता है। माता-पिता को बहुत स्नेह करता है। पिता का ध्यान ही रखता है। ५४ वर्ष की आयु में स्वयं लाभ पा लेता है। पुत्र-पुत्री विलम्ब से होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१६६७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण, मध्यम कद का, ज्ञानी तथा साहसी होता है। यह अपनी विद्या, बुद्धि तथा अध्यवसाय के बल पर विपुल धन अर्जित करता है। इसकी आजीविका राज्य द्वारा अथवा राजकीय-सेवा द्वारा प्राप्त होती है, परन्तु इसका खर्च भी बढ़-चढ़ा रहता है, अतः आय-व्यय समान ही बने रहते हैं। ३० वर्ष की आयु के बाद इसके पास धन का संचय आरंभ हो जाता है। विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है, तभी से भाग्योदय भी आरंभ हो जाता है। इसकी पत्नी कृपण स्वभाव की, धन का संचय करने वाली, सुन्दरी तथा गृहस्थी का संचालन करने में कुशल होती है। ३५ वर्ष की आयु के बाद यह जातक स्वयं भी धन का संचय करने लगता है। ४० वर्ष की आयु में आर्थिक-संकट के समय संचित धन काम आता है। इसको पुत्र से सुख नहीं मिलता। परदेश में अधिक समय तक रहते हुए यह ६७ वर्ष की आयु पाता है।

(१६६८)- इस जन्मकुंडली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, कला-मर्मज्ञ, भोग-विलास में जीवन बिताने वाला तथा धन का अपव्यय करने में संकोच न करने वाला होता है। यह जातक पर-स्त्रियों के सम्पर्क में अपना धन अधिक नष्ट करता है, जबकि इसकी पत्नी, जो कि २१ वर्ष की आयु में ही प्राप्त हो जाती है, सुन्दरी, आज्ञानुवर्तिनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। धनी होने तथा मधुरभाषी होने के कारण लोग इसके चारित्रिक-दुर्गुणों की चर्चा नहीं करते। यह स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करता है। कभी खूब मुनाफा कमाता है तो कभी घाटा भी देता है। अनेक बार ऋण भी लेता है। इसके पुत्र अनेक होते हैं, परन्तु वे जातक को कोई सुख नहीं दे पाते। प्रत्येक परिस्थिति में पलता हुआ यह जातक प्रसन्न ही दिखाई देता है। यह ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६६९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, काव्य-रसिक, ग्रंथ-लेखक, आध्यात्मिक गूढ़ विषयों का ज्ञाता, महापण्डित, बुद्धिमान तथा हर प्रकार से योग्य होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। उसी के बाद इसका भाग्योदय भी होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है। पुत्र-पुत्री भी सद्गुणी होते हैं, जो बड़े होकर बहुत सुख पहुँचाते हैं। परन्तु परस्त्री-गमन आदि कुछ बुरे व्यसन इसके धन को बहुत नष्ट करते हैं। यह माता-पिता का भक्त, राज्याधिकारियों द्वारा धन का लाभ प्राप्त करने वाला तथा स्वयं भी राज्याधिकारी होता है। इसे अपने जीवन में शत्रुओं से बहुत भय होता है, रोगादि भी कष्ट देते हैं। जल-भय तथा सर्प-भय की सम्भावना भी रहती है, तथापि कुल मिलाकर यह सुखी जीवन बिताता है। ४८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(१६७०) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बलिष्ठ, अनेक विद्याओं में कुशल, गुणवान, अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल धन अर्जित करने वाला, अपने बन्धु-बान्धवों की सहायता एवं उनका पालन-पोषण करने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर राजकीय-सेवा में नियुक्त हो, २५-२६ वर्ष की आयु से ही अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है। ४० वर्ष की आयु तक यह उच्चपद प्राप्त कर लेता है, तत्पश्चात और अधिक उन्नति करता हुआ धनी तथा यशस्वी बनता है। यह घर को सजाने में, सुख-सुविधा ओं तथा दान-धर्म में अपने धन को खर्च करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सब प्रकार से अनुकूल तथा सुन्दरी होती है। सन्तानें एक या दो ही होती हैं। उनसे सुख भी नहीं मिलता। प्रायः सम्पूर्ण जीवन सुख से बिताते हुए यह जातक ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६७१)- यह जातक सुन्दर, सन्तुलित विचारों का, निर्णायक-बुद्धि सम्पन्न, कोमल भावनाओं वाला एवं मधुरभाषी होता है। इसे धन-धान्य की कभी कोई कमी नहीं रहती। यह संपत्तिशाली, बड़े परिवार वाला तथा सब प्रकार से सुखी होता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, मिष्टभाषी, विदुषी तथा सुख देने वाली मिलती है। इसका भाग्योदय भी विवाहोपरान्त ही होता है। २२ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन आरंभ कर देता है। यह या तो चिकित्सक या इंजीनियर होता है अथवा राजकीय सेवा में कोई उच्च पदाधिकारी बनता है। यह अपने घर से बाहर परदेश में रहता है। ४६ वर्ष की आयु तक खूब धन तथा यश कमाता है। इसी आयु में शत्रु भी कष्ट पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु वे मुँह की खाते हैं। यह संतान के लिए कष्ट उठाता है। एक पुत्र कठिनाई से जीवित रहता है। पूर्णायु ७१ वर्ष की होती है।

(१६७२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कोमल स्वभाव का, दृढ़ निश्चयी तथा जीवन यापन सम्बन्धी साधनों को अपने पराक्रम एवं उद्योग द्वारा प्राप्त करने वाला होता है। अपने परिश्रम से ही यह सब प्रकार के सुखों को उपलब्ध करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। परन्तु संतान के लिए पति-पत्नी-दोनों दुःखी रहते हैं। बड़ी कठिनाई से और दीर्घकाल के बाद ही इसे संतान की उपलब्धि होती है। २४ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है। यह सरकारी-सेवा में अथवा अन्यत्र भी उच्च पद प्राप्त करता है तथा पर्याप्त धन-सम्मान पाता है। यह माता-पिता से अलग परदेश में रहता है तथा ४४ वर्ष की आयु तक बहुत उन्नति कर लेता है। देशान्तर की यात्राओं से इसे बहुत लाभ एवं सम्मान मिलता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(२६७३)- इस जन्म कुंडली का अधिपति सुखी, चंचल चित्त वाला, प्रत्येक कार्य को शीघ्र कर डालने की इच्छा रखने वाला, परिवार का पोषक, ग्रंथ-लेखक तथा महाविद्वान होता है। यह बन्धु-बांधवों से सहयोग पाने वाला, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करने वाला, सत्कर्मों में उदारता पूर्वक धन खर्च करने वाला, विरोधियों पर भी दया दिखाने वाला तथा प्रत्येक के काम आने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी मिलती है। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय भी होता है। यह राज्य द्वारा भी धनोपार्जन करता है तथा भूमि एवं रत्न आदि का व्यवसाय भी करता है। २७ से ५५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है तथा अपनी पैतृक संपत्ति को सुरक्षित रखते हुए अपनी ओर से उसमें बहुत वृद्धि करता है। संतान के लिए कष्ट उठाता है। पुत्रियों के विवाहादि में धन खर्च करता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२६७४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखी, सुरूपवान, मनस्वी, चंचल-चित्त वाला, ईश्वर भक्त, गुणवान, कलाओं का ज्ञाता तथा धन-सम्पत्ति से युक्त होता है। यह बाल्या- -वस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है। विद्याध्ययन द्वारा अपने को योग्य बनाकर राजकीय-सेवा अथवा अपने ही व्यवसाय द्वारा यह प्रचुर धन कमाता है। विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। संतानों से भी सुख प्राप्त होता है, परन्तु पुत्रों का सुख ४० वर्ष की आयु के बाद ही मिल पाता है। ३४ वर्ष की आयु में यह जातक बहुत धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। भूमि आदि के द्वारा इसे धन का लाभ होता है। अपनी व्यावसायिक-बुद्धि के कारण यह अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है। जीवन के ५६ वें वर्ष में अरिष्ट होता है तथा पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

भू० सं० ८३३८

कु० २०

(१६७५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान, विद्वान् तथा अपनी योग्यता के बल पर विपुल धन अर्जित करने वाला होता है। यह ईश्वर, भक्त, धर्म-कर्म में रुचि रखने वाला, स्त्रियों से सम्बंधित कार्यों को करने वाला तथा राजकीय-सेवा एवं निजी व्यवसाय - दोनों से धन कमाने वाला होता है। यह २८ से ५० वर्ष की आयु तक निरंतर उन्नति करता चला जाता है तथा उच्च पद, सम्मान, यश तथा विविध प्रकार की सुख-सम्पत्तियाँ प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी सुन्दर तथा गुणी होते हैं। पारिवारिक-सुखों का यथेष्ट भोग करता हुआ यह व्यसनों से रहित सात्विक-जीवन व्यतीत करता है। ४१ वर्ष की आयु में देशान्तर का भ्रमण करता है तथा वृद्धावस्था में तीर्थ-यात्राएं भी करता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(१६७६)- इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, उदार, सहानुभूति पूर्ण स्वभाव का, दीन-दुःखियों का भला करने वाला, परोपकार हेतु अपने काम को भी बिगाड़ देने वाला तथा अनेक कलाओं एवं विषयों का ज्ञाता होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, सुशीला, इकहरे शरीर की तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह पति को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय भी होता है। २६ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। स्त्री के भाग्य वश भी इसे बहुत लाभ होता है। भूमि, भवन, वाहन आदि सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हैं। इसके अनेक पुत्र होते हैं। सभी पुत्र, सुशील तथा सद्गुणी होते हैं। इसे कभी शारीरिक अथवा मानसिक-कष्ट नहीं होता। सब प्रकार से सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ६९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १३२८

(१६७७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त उदार, काव्य-साहित्य का प्रेमी, धन-सम्पन्न तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है। यह २४ वर्ष की आयु से राजकीय सेवा में संलग्न होकर अथवा अपने व्यवसाय द्वारा विपुल धनोपार्जन करता है। नौकरी में हो तो शीघ्र ही उन्नति करना आरम्भ कर देता है तथा ४४ वर्ष की आयु तक बहुत उच्च पद पर जा पहुँचता है। यह बड़ा मायावी अर्थात् नीतिज्ञ, अपनी भावनाओं तथा कार्यशैली को किसी पर प्रकट न होने देने वाला तथा हर प्रकार से स्वार्थ को सम्पन्न सिद्ध कर देने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुशीला, सुन्दरी, विदुषी तथा सुलक्षणा कन्या के साथ होता है। वह जातक को हर प्रकार से सुखी रखती है। पुत्र तथा कन्या भी सुयोग्य होते हैं और वे पारिवारिक दायित्वों का पालन करते हुए यश बढ़ाते हैं। जातक को कभी कोई दुःख नहीं होता। पूर्णायु ८९ वर्ष होती है।

(१६७८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मधुरभाषी, न्याय-प्रिय, अनेक कलाओं में दक्ष तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। यह विद्वान, सम्पत्तिशाली तथा अपनी विद्या एवं पौरुष के बल पर उन्नति करने वाला होता है। इसे मातृ-सुख प्राप्त नहीं होता। २४ वर्ष की आयु से ही यह राजकीय-सेवा में रह कर धनोपार्जन करता है। ३० वर्ष की आयु से अत्यधिक उन्नति कर लेता है। यह राज्याधिकारियों का प्रिय, देशान्तर में सम्मान प्राप्त तथा यथेष्ट धन कमाने वाला होता है। इसे अपनी पत्नी से सुख नहीं मिलता। विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सन्तोष नहीं होता, अतः अन्य स्त्रियों से संबंध रखता है। सन्तान भी बड़ी आयु में मिलती है। कन्या-सन्तान प्रसन्नता दायक रहती है। इसे कभी शारीरिक-कष्ट भी नहीं होता। प्रायः सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बिताते हुए यह ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

कु० र०

(१६७९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बहुत सुखी, धनी, संपत्तिवान, सुन्दर, गुणवान तथा विद्वान् होता है। यह संगीत-वाद्य में निपुण, चतुर एवं विभिन्न प्रकार की सुरुचियों से सम्पन्न होता है। २४ वर्ष की आयु तक यह विद्याध्ययन करता है, तदुपरान्त किसी बड़े प्रतिष्ठान में कार्य-रत होकर निरंतर उन्नति करता है। ३० वर्ष की आयु में इसके कार्यों में विघ्न पड़ते हैं, परन्तु एक वर्ष बाद सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। ३६ वर्ष की आयु तक यह पद-वृद्धि तथा अत्यधिक मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु यह अधिक समय तक पत्नी के साथ नहीं रह पाता। उससे अलग होकर अन्य स्त्रियों के साथ प्रेम-संबंध स्थापित करता और उनके लिए बहुत खर्च भी करता है। वृद्धावस्था में पुत्र का लाभ होता है। एक कन्या बड़ी सुलक्षणा होती है। कभी कोई कष्ट नहीं पाता। सुखी होते हुए ७८ वर्ष जीवित रहता है।

(१६८०) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सद्गुणी, भोग-विलास में अधिक रत रहने वाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता, कर्मठ, गुणवान् तथा लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखनेवाला होता है। अत्यन्त धनी होते हुए भी इसे पत्नी की ओर से कष्ट रहता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु पत्नी से मतैक्य नहीं हो पाता, वह रुग्णा भी होती है तथा अल्पायु भी हो सकती है। उससे अधिक सुख नहीं मिलता। तथापि पुत्र पराक्रमी एवं सुख देने वाले होते हैं। जातक उन्हें भी उच्च पद पर प्रतिष्ठित करके सन्तोष का अनुभव करता है। यह जातक दीर्घकाल तक राजकीय-सेवा में रहता है तथा अपनी विद्वत्ता, योग्यता एवं गुणों से उच्चाधिकारियों को प्रसन्न एवं प्रभावित करता है और स्वयं भी उच्च पद पाता है। इसे कभी दुःख नहीं भोगना पड़ता। पर-स्त्रियों से प्रेम करके सुख पाता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१६८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मध्यम कद का, साँवला, कलाओं का जानकार, गुणवान, अध्ययनशील तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह स्वपराक्रम से धन प्राप्त करता है। इसकी आय के स्रोत स्वतन्त्र तथा एक से अधिक हैं। इसे मित्रों, धन का लाभ होता रहता है। २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में प्रविष्ट होकर अथवा स्व-व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। ३५ वर्ष की आयु में उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु विवाहोपरान्त पत्नी रुग्ण हो जाती है, जिसके कारण यह सदैव कष्ट पाता है। ३९ वर्ष की आयु में किसी आकस्मिक-दुर्घटना के कारण इसे बहुत चोट लगती है। सन्तान का सुख सामान्य रहता है। स्मरणीय है कि यह जातक अल्पायु होता है। यदि २२, २३ वर्ष बाद भी जीवित रहे तो आपत्तियाँ घटती हैं। (पूर्णायु ५८ वर्ष तक हो सकती है)

(१६८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, संगीत-वाद्य का श्रोता तथा अपने उद्यम से प्रचुर धन अर्जित करने वाला होता है। यह २८ वर्ष की आयु में अपना व्यवसाय स्थापित कर लेता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु रुग्ण होती है, जिसके कारण इसे बहुत कष्ट होता है। पुत्र होता है और वह भी पिता के कष्ट को देख कर दुःखी रहता है। परन्तु यह अपने पुत्रों को सुयोग्य बनाता है और वे माता-पिता के सेवक तथा सद्गुणी होते हैं। पत्नी की मृत्यु या तो पहले हो जाती है अथवा किसी दुर्घटना में पति-पत्नी एक साथ मृत्यु को प्राप्त करते हैं। इस जातक को दुर्घटनाओं का योग होता है तथा जीवन में अनेक बार अरिष्ट आते हैं। यह बहुत धन कमाता है तथा आर्थिक-दृष्टि से सम्पन्न भी बना रहता है। पूर्णायु ५५-५६ वर्ष की होती है। यह बड़ा साहसी होता है।

(१६८३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गेहुँआ रंगका, मध्यम कद वाला, सुन्दर, प्रभावशाली तथा अनेक गुणों से सम्पन्न होता है। यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है तथा साहित्य, ज्योतिष आदि अनेक विद्याओं का पण्डित, सुवक्ता, अनुशासन-प्रिय तथा सम्मतिदाता भी होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों को सुख देता है, परन्तु बदले में वे इसे कष्ट पहुँचाते हैं। यह व्यवसाय अथवा किसी राज्य-सम्बन्धित कार्य द्वारा विपुल मात्रा में धनोपार्जन करता है। अपने साहस तथा अध्यवसाय से यह आमदनी के अनेक स्रोत बना लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गृह-कार्य में कुशल होती है। वह जातक तथा परिवार को सुख पहुँचाती है, परन्तु स्वयं बहुत कष्ट भोगती है। ४८ वर्ष की आयु में पत्नी को दुःख होता है। पुत्र सद्गुणी तथा सहयोगी होते हैं। सब प्रकार के सुख भोगता हुआ यह जातक ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६८४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, तेजस्वी, सुन्दर, विलक्षण-बुद्धि से युक्त, धर्मात्मा, ज्ञानी तथा अपनी योग्यता एवं गुणों के प्रकाश को चारों ओर फैलाने वाला होता है। २३ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन समाप्त कर कुछ समय तक सेवा-कार्य करता है, तदुपरान्त स्वतन्त्र व्यवसाय में संलग्न होता है। ३६ वर्ष की आयु में अपना व्यवसाय स्थापित कर, उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। इसके पुत्र भी योग्य तथा आज्ञाकारी होते हैं। ४५-४६ वर्ष की आयु में यह जातक बड़ा धनी हो जाता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सभी सुख इसे उपलब्ध रहते हैं। इस जातक का सम्पूर्ण जीवन सुख में बीतता है। परिवारीजनों से भी अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

भुं० सं० ९३२४

कुं० २०

(१६८५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, अपने अध्यवसाय तथा प्रयत्नों से ही उन्नति करने वाला तथा सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों का मन मोहित करने वाला होता है। २३ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त करके यह किसी उच्च राजकीय सेवा से सम्बद्ध होकर देशवासियों का प्रेम तथा यश प्राप्त करता है। बाहर जाकर इसकी प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि होती है। यह साहसपूर्ण कार्यों में विशेष रुचि लेता है तथा आगा-पीछा सोचे बिना ही किसी भी कार्य में हाथ डाल देता है तथा उसमें सफल भी होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन तथा यश प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, गुणवती, मधुर व्यवहार करने वाली तथा विविध कलाओं की जानकार होती है। सन्तान विलम्ब से होती है। आमदनी के स्रोत अनेक रहते हैं। सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६८६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, व्यवहार-कुशल, मितभाषी, कुछ-कुछ क्रोधी भी, तथा अत्यधिक साहसी होता है। जोखिम पूर्ण कार्यों को करने में इसे आनन्द आता है। यह दूसरों के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए स्वेच्छा से आगे बढ़ता है। यह बड़ा उद्यमी, निडर तथा सर्वत्र प्रशंसा एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। इसके विद्याध्ययन-काल में बाधाएँ आती रहती हैं तथापि यह आजीविका-उपार्जन करने योग्य शिक्षा प्राप्त कर लेता है। यह राज्य अथवा किसी बड़े संस्थान की सेवा में रहकर बड़ी जल्दी प्रगति करता है तथा उच्चपद पर पहुँचकर यथेष्ट धन तथा मान अर्जित करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, हर क्षेत्र में साथ देनेवाली तथा बड़ी सौभाग्यशालिनी होती है। २८-२९ वर्ष की आयु में एक पुत्र का जन्म होता है। इस जातक की पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

भु० सं० ३८२४

कु० र०

(१६८७) - इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, सुशील, परिश्रमी, अत्यन्त साहसी, एकाग्रचित्त से कार्य करनेवाला एवं अपनी शक्ति द्वारा शत्रुओं को दबाये रखने वाला होता है। यह अपने परिश्रम द्वारा उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। बुद्धि-विवेक द्वारा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है। २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान से सम्बद्ध होकर अपनी योग्यता से पर्याप्त यश एवं धन का उपार्जन करता है तथा अपने उच्च अधिकारियों को प्रसन्न बनाये रखता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, कलाओं में दक्ष, मधुर-भाषण करनेवाली तथा आज्ञाकारिणी होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसकी सन्तानें सुन्दर तथा सद्गुणी होती हैं। जीवनभर सुख तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए यह ७९ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१६८८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उन्नत कद वाला, गौर वर्ण, सौभाग्यशाली, अत्यधिक साहसी, परिश्रमी तथा उच्च पद पाने वाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी पत्नी को प्राप्त करता है। वह गुणवती, सुयोग्य तथा पति की आज्ञा का पालन करने वाली होती है। जातक उससे प्रेम रखते हुए भी अन्य स्त्रियों के साथ भी प्रेम-सम्बन्ध बनाये रखता है तथा इस हेतु बहुत धनराशि खर्च करता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। परिजन तथा परिवारजनों से भी इसे सहयोग मिलता है। ३५ से ५६ वर्ष तक की आयु में यह अनेक महत्वपूर्ण कार्य करता है तथा यदि सरकारी नौकरी में होता है तो अपने उच्चाधिकारियों की दृष्टि में अपना विशेष महत्व प्रतिपादित कर देता है। संतानें सुयोग्य होती हैं, उनमें पुत्र एक ही होता है जो ३०-३२ वर्ष की आयु में प्राप्त होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष है।

(१६८८९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, काव्य-साहित्य का प्रणेता, विद्वान् तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह अपने पाण्डित्य से अपने परिवार, कुल, बन्धु-बान्धव, मित्र तथा क्षेत्रीय लोगों में विशेष लोकप्रिय होता है। २५ वर्ष की आयु तक यह विद्याध्ययन करता है। तदुपरान्त राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठित संस्थान में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर धन तथा यश का उपार्जन करता है। अपने हँसमुख तथा विनोदी स्वभाव के कारण यह बड़ा लोकप्रिय होता है। अपने पाण्डित्य को किसी पर थोपने का प्रयत्न नहीं करता। ५० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त उन्नति कर लेता है। यह शिक्षक अथवा व्यवस्थापक के पद पर भी कार्यरत हो सकता है। विवाह ३०-३२ वर्ष की आयु में करता है। जहाँ सेवा-रत होता है, वहीं से विवाह भी करता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें श्रेष्ठ होती हैं। पूर्णायु ८२ वर्ष की होती है।

(१६८९०)- इस जन्म कुंडली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाला, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, पंडित, गुणवान तथा अनुशासन-प्रिय होता है। यह प्रतापी व्यक्तित्व से किसी उच्चपद पर आसीन होकर अपने अधीनस्थ लोगों को भी प्रसन्न रखने का प्रयत्न करता है तथा उच्चाधिकारियों को भी सन्तुष्ट बनाये रखता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में अत्यन्त विदुषी, सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी कन्या के साथ होता है। पत्नी का व्यक्तित्व गरिमामय रहता है। यह स्त्री बड़ी मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। यह जातक की भाँति स्वयं भी प्रतिष्ठा प्राप्त करती है तथा अपने सम्मान को बढ़ाती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा तेजस्वी होते हैं। इस जातक को जीवन में सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं। धन, यश, भूमि, भवन, वाहन किसी की कमी नहीं रहती। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

भृ० सं० ८३२८

कु० २०

(१६८१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, विविध विषयों का ज्ञाता, किसी विज्ञान के तकनीकी-ज्ञान में विशेष दक्ष, पंडित तथा राजकीय-सेवा में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अत्यधिक यश-मान तथा धन अर्जित करने वाला होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति होते रहने के कारण यह अपने परिवार से दूर ही रहता है। बाहर ही यथेष्ट धन अर्जित करता है। इसके स्वभाव में भोग-विलास तथा योग-वैराग्य का मिश्रण पाया जाता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुर भाषिणी तथा चिन्तन स्वभाव वाली होती है। जातक उनसे प्रेम करते हुए भी अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसे धन अनेक स्रोतों से प्राप्त होता रहता है- अतः भौतिक सुख-साधनों की कभी कोई कमी नहीं रहती। पुत्र योग्य होते हैं। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(१६८२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, मितव्ययी, नीतिज्ञ, कार्य-कुशल तथा विद्वान् होता है। यह अनेक संस्थाओं अथवा प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध रहकर लाभ उठाता है। विलासी-प्रकृति का होने के कारण यह अनेक स्त्रियों से प्रेम-संबंध रखता है, फिर भी इसकी प्रतिष्ठा पर कोई आँच नहीं आती। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी घर-गृहस्थी चलाने में कुशल, योग्य, सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा आज्ञापालक होती है। यह जातक परदेश में अपने लिए मकान बनवाता है। ३० वर्ष की आयु में इसे बहुत प्रतिष्ठा मिलती है। पुत्र सुन्दर, स्वरूपवान तथा भाग्य-शाली होते हैं। पुत्रियाँ भी सुयोग्य होती हैं। इसके किसी भी कार्य में कभी कोई विघ्न नहीं पड़ता। यह भूमि, धन, मान, प्रतिष्ठा, भोग तथा सुख प्राप्त करता हुआ आनन्दमय जीवन बिताता है। परमायु ६९ वर्ष होती है। इससे बचने पर ८९ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(२६९३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, मधुर वाणी बोलने वाला, सरल स्वभाव का, विद्वान्, गुणवान् तथा व्यवहार-कुशल होता है। इसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सन्तुष्ट रहता है यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, राजकीय-सेवा के किसी उच्च पद को पाने वाला। निम्न तथा उच्च अधिकारियों में अत्यन्त लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ मान-प्रतिष्ठा के साथ ही पर्याप्त धनोपार्जन करने वाला होता है। इसके पास धन-धान्य, भूमि, भवन, वाहन आदि किसी वस्तु का अभाव नहीं होता। ३८ वर्ष की आयु में किसी बाहरी व्यक्ति के सहयोग से इसे अत्यधिक लाभ होता है। यह भोग-विलास की प्रवृत्ति वाला, माता से असन्तुष्ट तथा अनेक स्रोतों से धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। पुत्र सद्गुणी होते हैं। परमायु ७९ वर्ष की होती है

(२६९४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सरल हृदय, महत्वाकांक्षी, अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति हेतु दत्तचित्त होकर कार्य करने वाला, बड़ा विद्वान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, अनेक विषयों का जानकार तथा शिक्षा-समाप्ति के उपरान्त २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय सेवा में प्रविष्ट होकर धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह साहित्य तथा काव्य आदि का प्रेमी, माता-पिता को सुख देने वाला, परिवारजनों का पोषक तथा ६० वर्ष की आयु तक सब प्रकार के सुख-साधनों को प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सद्गुणी तथा सुगृहिणी होती है। पुत्री अत्यन्त सुन्दर तथा पिता के नाम को बढ़ाने वाली होती है। पुत्र भी अच्छे होते हैं। इसे धन की कमी नहीं रहती तथा सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करता है। पूर्णायु ७१ वर्ष की होना सम्भव है।

(१६६९५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, दृढ़ चित्त वाला, कुछ क्रोधी स्वभाव का, परन्तु हृदय का उदार, विद्या-बुद्धि का धनी, अनेक विषयों का ज्ञाता एवं नीतिज्ञ होता है। २६ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से संलग्न हो जाता है, फिर निरन्तर प्रगति करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त कर लेता है। सेना, पुलिस अथवा अनुशासन से संबंधित किसी विभाग में कार्य करना अधिक प्रिय होता है। ४२ वर्ष की आयु में यह विशिष्ट पद तथा मान्यता प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी, पति के भाग्य की वृद्धि करने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। पुत्र भाग्यवान तथा योग्य होते हैं। पुत्रियाँ भी बहुत होती हैं। धन-द्रव्य की कोई कमी नहीं रहती। पूर्णायु ८१ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१६६९६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, न्यायप्रिय, सुन्दर, सरल स्वभाव का तथा बड़ा विद्वान होता है। यह किसी के प्रति अन्याय होता हुआ देख भी नहीं सकता। प्रत्येक अनाचार के निवारण हेतु प्रयत्नशील रहता है। विद्याध्ययन के पश्चात् यह किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा धन-सम्मान प्राप्त करते हुए अपने कार्यों द्वारा लोगों में विशेष प्रिय होता है। इसकी पदोन्नति ४५ वर्ष की आयु में होती है। यह अपने बन्धु-बान्धवों की भी बहुत सहायता करता है। अपने छोटे भाई को बहुत स्नेह करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पतिव्रता, बुद्धिमती तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। जातक उससे बहुत प्रेम करता है तथा वह भी प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। पुत्र तथा कन्याएँ सुन्दर एवं सद्गुणी होते हैं। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। परमायु ६० वर्ष अथवा इससे भी अधिक होती है।

(१६९७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, विचारवान, गुणवान, कोमल हृदय वाला, ग्रंथ-लेखक, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, चतुर तथा साहसी होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में नियुक्त होकर अर्जोपार्जित आय का देता है। यह बन्धु-बान्धवों की सहायता से धन प्राप्त करने वाला तथा उनके सुख-दुःख में साथ देने वाला तथा किसी स्त्री के कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेकर उसे पूरा करने वाला होता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल होती है, उसे यह बहुत प्रेम करता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। ३१ वर्ष की आयु से इसकी पदोन्नति होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ६९ वर्ष होती है।

(१६९८) - यह जातक बलवान, मजबूत कद-काठी वाला, गौरवर्ण, लम्बा, प्रभावशाली व्यक्तित्व का तथा अपने उदात्त गुणों के कारण बहुत धनी तथा लोकप्रिय होता है। यह बड़ा विद्वान तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है, अतः इसे सम्मान भी बहुत मिलता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी परम सुन्दरी, सुयोग्य, मधुर भाषिणी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। यह अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है, वह भी इसे सदैव श्रेष्ठ सम्मति देती है। ४५ वर्ष की आयु में यह कुछ धन कमा लेता है, तब बन्धु-बान्धव तथा मित्र इसे कष्ट पहुँचाते हैं। यह अपना स्थान भी बदल देता है। राजकीय-सेवा इसे २५ वर्ष की आयु में ही प्राप्त हो जाती है। परदेश में आना-जाना लगा रहता है। एक पुत्र होता है, जो सुन्दर तथा सुयोग्य सिद्ध होता है। बाहर इसे बहुत सम्मान मिलता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१६८९६) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सत्संग-प्रेमी, मनस्वी, अपने कुल के प्रभाव, अपने तेज से सबको प्रभावित करने वाला, तथापि क्रोध के समय नियन्त्रण न रख पाने के कारण कष्ट उठाने वाला होता है। सामान्यतः यह बड़ा धर्म-भीरु, साहसी तथा पराक्रमी होता है। यह अनेक कार्य करता है तथा कुछ अच्छे कार्यों के कारण यशस्वी भी बनता है। राजकीय अथवा किसी अच्छे प्रतिष्ठान की सेवा से इसे बहुत आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा कलाओं का ज्ञान रखने वाली होती है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है, तथापि यह अन्य स्त्रियों के साथ भी भोग-विलास में अनुरक्त रहता है। स्त्रियाँ भी इसके पीछे लगी ही रहती हैं। संतानें कम होती हैं। पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। ४१ से ४८ वर्ष की आयु तक परदेश में रहता है। परमायु ७१ वर्ष होती है। ५६ वें वर्ष अरिष्ट सम्भव है।

(१६९००) – इस जन्म कुंडली का अधिपति सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मध्यम कद का, क्रोध-रहित, उदार, कला तथा साहित्य का प्रेमी एवं सेवक तथा विद्वान होता है। यह शिक्षा समाप्त कर २४ वर्ष की आयु में ही राज्य अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान की सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा अपने भाई-बन्धु एवं परिवारी जनों की सहायता भी करता रहता है। सेवा-रत रहते हुए यह स्वयं का कोई व्यवसाय भी आरम्भ करता है तथा उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत अच्छी स्थिति में पहुँच जाता है। इसके पास भूमि, भवन, वाहन आदि सभी सुख-साधन उपलब्ध रहते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मधुर व्यवहार वाली, सुन्दरी तथा प्रसन्नतादायक मिलती है। पुत्र भी आज्ञाकारी होते हैं, यद्यपि उनकी संख्या कम रहती है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

भृ० सं० १३३२

कु० २०

(१६०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, शीलवान, उदार-हृदय, मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल तथा अपने कुटुम्ब में प्रतिष्ठा पाने वाला समझदार व्यक्ति होता है। यह सब लोगों का प्रिय करने वाला होता है। इसकी शिक्षा अपूर्ण रहती है। अतः इसे कोई निम्नस्तरीय कार्य करना पड़ता है। इसके जीवन में निरन्तर विघ्न-बाधाओं का आगमन होता रहता है। यह उनसे संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। इसे सुख कम, दुःख अधिक मिलता है। जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। परिवार में सम्मानित रहते हुए भी अपनी पत्नी तथा पुत्रों से उपेक्षा पाता है। विवाह २५वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विपरीत स्वभाव की मिलती है, वह इससे उदासीन बनी रहती है। इसके जीवन के ३०, ३५, ४१ तथा ५० वें वर्ष कुछ अच्छे जाते हैं। शेष जीवन में संघर्ष बने रहते हैं। किसी दुर्घटना में मृत्युभय है। ५४ वें वर्ष में अथवा ६५ वें में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट तथा इनसे बचे तो ७१ वर्ष की परमायु होती है।

(१६०२)- इस जन्मांगचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, धनी, बन्धु-बान्धवों को प्रेम करने वाला तथा परिवार का पोषक होता है। इसकी शिक्षा अधिक नहीं होती, तथापि स्थिर सम्पत्ति से युक्त होने के कारण सदैव सुखी बना रहता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी तथा गृह-कार्य-कुशल होती है। वह जातक पर प्रभाव रखती है तथा सदैव अपने मन का काम ही करती है। समयानुसार सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। पुत्र कार्य को आगे बढ़ाने वाले तथा सुख देने वाले होते हैं। विवाहोपरान्त इस जातक का भाग्योदय होता है। यह किसी नये उद्योग या व्यवसाय को आरम्भ करके प्रचुर धन कमाता है। भाई-बन्धु भी उसकी सहायता करते हैं। यह अनेक गूढ़ कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। इसे कभी आर्थिक-हानि नहीं होती तथा सुख के सभी साधन उपलब्ध रहते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(१६०७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान तथा अपने उद्यम एवं साहस द्वारा उद्योग स्थापित कर पर्याप्त धन कमाने वाला होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धव तथा परिवारीजनों से बहुत प्रेम होता है। २१ वर्ष की आयु में यह किसी विद्यालय आदि शिक्षा-संस्थान से संबद्ध होकर सेवा-कार्य करता है तथा अपने अध्यवसाय के बल पर उन्नति करता चला जाता है। यह ईश्वरभक्त, धर्म में आस्था रखने वाला तथा धर्म-कर्म में ही अपने धन का अधिक व्यय करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इससे कहीं अधिक शिक्षित, स्थूलकाय, घर-गृहस्थी का सुचारु-संचालन करने वाली तथा स्वयं भी किसी शिक्षा-संस्थान में कार्य करके धनोपार्जन करने वाली एवं पति को सुख देने वाली होती है। इसके एक या दो पुत्र तथा इतनी ही कन्याएं होती हैं। वे सुयोग्य होते हैं। ५७ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१६०८)- इस जन्मांग चक्र वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, सुशिक्षित, धन-धान्य एवं सम्पत्ति से सुखी, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त तथा अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु में यह या तो किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्य-रत होता है अथवा स्वयं का उद्योग स्थापित करता है। इसका विवाह भी इसी आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर, किसी व्यवसाय को करने में दक्ष, सुशिक्षित तथा स्वयं धनोपार्जन कर जातक को सुख देने वाली होती है। पुत्र भी सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। ४५ वर्ष की आयु में इसकी पत्नी रोग-पीड़ित होती है, जिसके कारण जातक बहुत दुःखी रहता है। पत्नी की मृत्यु होना भी संभव है। सामान्यतः यह जातक भूमि, भवन, वाहन, रत्न-आभूषण आदि सुख के सभी साधन अर्जित कर लेता है। इसके जीवन काल में ही पुत्र इसका कार्य-भार संभाल लेते हैं। ६३ वर्ष की आयु में कुछ हानि उठाता है। पूर्णायु ८९ वर्ष होती है।

(२६०९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बहुत बुद्धिमान, प्रत्येक कार्य पर तुरन्त निर्णय लेने वाला, माता की ओर से कष्ट पाने वाला, पैतृक-धन पर माता, बड़े भाई एवं बहिन के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण दुःखी तथा छोटे भाई से बहुत प्रेम करने वाला होता है। छोटा भाई भी इसका बहुत आदर करता है। यह उत्तम शिक्षा प्राप्त कर २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है अथवा स्वतन्त्र-व्यवसाय आरम्भ करता है। २१ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा आकर्षक होते हुए भी मर्यादा न रखने वाली होती है, अतः वह आत्मकेन्द्रित रहती और पति की बात पर कोई ध्यान नहीं देती है। हर बात पर अपनी ही चलाती है। पुत्र एक ही होता है जो सुन्दर तथा होनहार होने के साथ ही माता-पिता — दोनों को सुख देता है। यह जातक पर्याप्त धनी तथा सुखी रहते हुए ६९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२६१०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, गुणवान, रसिक स्वभाव का, काव्य-संगीत-नाटक का प्रेमी, उदार, विशाल-हृदय तथा विद्वान होता है। इसके विनम्र स्वभाव के कारण सभी लोग इसे स्नेह करते हैं। यह छोटे-बड़े सभी लोगों का मित्र रहता है, परन्तु अपनी माता को सुख नहीं दे पाता। २५ से ४५ वर्ष की आयु तक यह परदेशवास करता है तथा वहीं पर अपना मकान भी बनवाता है। अपने परिवार से अलग होकर वहीं पर अपने वंश की नींव रखता है। इसके पुत्र तथा पुत्री होनहार होते हैं। पत्नी २३ वर्ष की आयु में प्राप्त होती है, जो सुन्दरी तथा गुणवती होने के साथ ही जातक को सदैव सुख देती है। अपने पुत्र के प्रति भी वह विशेष स्नेह रखती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा से संलग्न होकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा पर्याप्त धन कमाता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

भू० सं० ४३३४

कु० २०

(१६०३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, साहित्य तथा ललित कलाओं में रुचि रखने वाला, लोगों को अपनी मधुर वाणी से प्रसन्न करने वाला, महत्वाकांक्षी तथा बन्धु-बान्धवों से प्रेम करने वाला होता है। यह अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् २३ वर्ष की आयु में अपने पैतृक-व्यवसाय को सँभालता है। २४ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक धन-लाभ होता है। किसी अपरिचित व्यक्ति के माध्यम से यह बहुत लाभ उठाता है। २८ वर्ष की आयु में कोई नया व्यवसाय आरंभ करता है। अपने उद्योग तथा अध्यवसाय के बल पर ४० वर्ष की आयु में यह बहुत श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, मनस्विनी तथा सुख देने वाली कन्या के साथ होता है। वह इसे प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है, तथापि इसका कई अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रहता है। पत्नी सहित अन्य स्त्रियों के साथ भोग-विलास का यह भरपूर आनन्द उठाता है। पुत्र-पुत्री सन्तान होते हैं। परमायु ६१ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१६०४)- इस जन्मांग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुशील, मधुरभाषी, काव्य-संगीत आदि कलाओं का जानकार तथा अपने मधुर व्यवहार से सब लोगों को आनन्दित करने वाला होता है। यह उदार, पराक्रमी तथा बन्धु-बान्धवों को स्नेह करने वाला होता है। २१ वर्ष की आयु तक यह शिक्षा प्राप्त करता है, तदुपरान्त अपनी पिता-सम्पत्ति द्वारा कोई व्यवसाय आरंभ करता है। २२-२३ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी, मनस्विनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली कन्या के साथ होता है। पत्नी भी बड़ी महत्वाकांक्षी होती है। पति-पत्नी में परस्पर खूब प्रेम बना रहता है। सन्तानें भी सुन्दर तथा सुखदायक होती हैं। ४१ वर्ष की आयु में यह जातक कोई नया व्यवसाय आरंभ करता है, जिसे अपने दोनों पुत्रों को सौंप देता है। यह विभिन्न स्रोतों से पर्याप्त धन कमाते हुए सुखी जीवन व्यतीत करता है। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१६०५)- इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, धीर-गंभीर, ललित कलाओं का ज्ञाता, आलोचना में कुशल, मधुर भाषी तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह ईश्वर-भक्त, मान-सम्मान युक्त तथा अपने सद्गुणों के कारण परिवार में प्रमुख स्थान पाने वाला होता है। यह स्वयं कष्ट सह कर भी दूसरों का भला करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, नीतिज्ञ, ऊँच-नीच को समझने वाली तथा आज्ञा-पालक होती है। यह अपने ही उद्योग-व्यवसाय से धन कमाता है तथा लोक-कल्याण, तीर्थयात्रा, भगवद्-भक्ति आदि शुभ कार्यों में उसे खर्च करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुख देने वाले होते हैं। यह अपनी पत्नी सहित देश-विदेश की यात्रा करता है। ३० वर्ष की आयु में इसे बहुत धन तथा यश की प्राप्ति होती है। ५८ वर्ष की आयु में पत्नी के वियोग का दुःख होता है तथा स्वयं ६८ वर्ष की परमायु पाता है।

(१६०६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर प्रभावशाली, दबे हुए गोरे रंग तथा मध्यम कद वाला, गुणवान, विद्वान् तथा अपनी बुद्धिमत्ता से सब को आकर्षित करने वाला होता है। यह अपने परिवारीजनों तथा मित्रों में बहुत लोकप्रिय, सबकी सहायता करने वाला, ईश्वरभक्त, तीर्थादि का सेवन करने वाला तथा बाल्यावस्था से ही सुख पाने वाला होता है। यह अपने माता-पिता का प्रिय होता है। इसके जीवन में कोई अप्रिय घटना नहीं घटती। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुलक्षणा तथा भाग्य की वृद्धि करने वाली होती है। विवाहोपरान्त यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर अप्रत्याशित रूप से उन्नति करता चला जाता है। इसके पुत्र गुणवान तथा सुख देने वाले होते हैं। यह पर्याप्त धन तथा सुख प्राप्त करता है। भूमि, मकान, वाहन आदि से सम्पन्न होकर यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६११)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, अपना उद्यम, शास्त्रों का जानकार, संगीत आदि ललित-कलाओं में निष्णात तथा विद्वान् व्यक्ति होता है। यह २५ वर्ष की आयु से कार्य-क्षेत्र में प्रवेश करता है तथा राजकीय-सेवा कार्य से संलग्न हो जाता। पिता से दूर रहता है। कुछ समय बाद यह अपना व्यवसाय आरम्भ कर देता है तथा बहुत धन कमाता है। यह अपने कुटुम्बियों की भी सहायता करता है। २६ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। विदेशवासी बन कर यह वहीं पर आवास-स्थल बनाता है। ५० वर्ष की आयु तक इसे सब प्रकार के भौतिक ऐश्वर्यों की उपलब्धि हो जाती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी दुबली पतली तथा अत्यन्त सुन्दरी होती है। पुत्र भी होनहार होते हैं। जातक की पूर्णायु ५६ वर्ष मान होती है।

(१६१२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अपने विचारों को दूसरों पर थोपने वाला, क्रोध आने पर धीरे-धीरे शान्त होने वाला तथा संगीत-कला आदि में रुचि रखने वाला होता है। यह भ्रमण की बहुत इच्छा रखता है। २३ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्य-रत होता है। २८ वर्ष की आयु में यह बहुत धन कमा लेता है। इसे लेखन, आजीवन कला तथा ललित-कलाओं के माध्यम से बहुत लाभ होता है। इसका विवाह २३, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। विवाह में बहुत व्यवधान पड़ते हैं। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुख देने वाली होती है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य तथा माता-पिता को सुख देने वाली होती हैं। ५६ वर्ष की आयु में जातक को भयंकर शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ६७ वर्ष की होती है।

(१६२३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, धीर-गंभीर, चित्रकला का ज्ञाता अथवा किसी अन्य तकनीकी-ज्ञान का जानकार होता है। अपने कार्यों में विघ्न-बाधाएं आने पर भी वह उन्हें पूरा करके ही मानता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर तथा लम्बे कद वाली, बहुत आकर्षक तथा बुद्धिमान होती है। वह जातक को सुखी रखती है तथा अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पूर्ण घर पर शासन करती है। 39 से 46 वर्ष की आयु के बीच इस जातक को अत्यधिक धन का लाभ होता है। 38, 41, 43 तथा 47 वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इस जातक को देश-परदेश सभी स्रोतों से आमदनी होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा होनहार होते हैं। 50 वर्ष की आयु में इस जातक को शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु 70 वर्ष की होती है।

(१६२४) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, धार्मिक, ज्ञानी तथा अत्यन्त धनवान होता है। यह 24 वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा अथवा अन्य कार्य द्वारा धनोपार्जन करना आरम्भ कर देता है। 30 वर्ष की आयु में परदेश में जाकर रह उठता है। यह उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने में सक्षम तथा अपने व्यक्तित्व से सब लोगों को प्रभावित करने में सफल होता है। इसे 24 वर्ष की आयु में पत्नी की प्राप्ति होती है, जो सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर की तथा सुगृहिणी होती है। इसके पुत्र भी होनहार निकलते हैं तथा घर-बाहर के सभी कार्यों में भरपूर सहयोग देते हैं। इस जातक को परदेश तथा विदेश से सुन्दर-सुन्दर वस्तुओं का लाभ होता है, जिससे इसका घर भरा रहता है। आर्थिक-स्थिति बहुत अच्छी होती है तथा सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। इसे 71 वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(२०१५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अनेक विषयों का अध्ययन करनेवाला, कई प्रकार से धन प्राप्त करने वाला, सुन्दर, धीर-गम्भीर तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त यह आजीविका प्राप्ति के लिए परदेश में जाता है और वहीं धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। परदेश में स्थायी-निवास करने के कारण वहाँ के लोग इससे घुल मिल जाते हैं। इसका मकान भी वहीं बनता है। २६ वर्ष की आयु में इसका विवाह किसी सुन्दर तथा विदुषी कन्या से होता है, जो बहुत सुशिक्षित तथा सुन्दरी होती है। यह जातक अपने भाई-बन्धुओं से स्नेह रखता है। इसके पुत्र-पुत्री भी बहुत योग्य होते हैं तथा घर की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं। इस जातक को २८, ३०, ३१, ३५, ४१, ४२, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। ५३ तथा ५८ वें वर्ष में अनिष्ट होता है तथा परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२०१६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद वाला, स्वस्थ, परिश्रमी तथा कठोर काठी का होता है। २२ वर्ष की आयु तक यह शिक्षा प्राप्त करता है फिर २४-२५ वर्ष की आयु में कोई अपना ही उद्योग-व्यवसाय स्थापित करके धन कमाना आरम्भ कर देता है। इसका विवाह भी २४-२५ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, कर्मठ तथा सभी विपत्तियों के समय पति के साथ मिल कर कार्य करने वाली होती है। यह जातक राज्य से सम्बंधित सरकारी लाभ उठाता है। कला सम्बंधी वस्तुएं इसे विशेष लाभप्रद सिद्ध होती हैं। वैसे, इसकी आय के अनेक स्रोत होते हैं तथा इस जातक का व्यक्तित्व भी बहुआयामी होता है। मित्रों के योगदान से इसे अपने अनेक कार्यों में सफलता मिलती है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुन्दर, सुयोग्य तथा अनुकूल व्यवहार करने वाले होते हैं। इसे ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१०१७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा संगीत-नाटक आदि ललित-कलाओं का जानकार होता है। इसकी ओर स्त्रियाँ सहज रूप से अनुरक्त होती हैं। यह अपने माता-पिता से अलग रहता है। माता से इसका मतभेद रहता है। २२ वर्ष की आयु से यह अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोऽनुकूला मिलती है। वह जातक की आज्ञा-पालक रहती हुई भी उसे अपने निर्देशानुसार चलाती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, तेजस्वी, उच्चशिक्षा प्राप्त तथा जातक के यश-गौरव की वृद्धि करने वाले होते हैं। इस जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है। यह अपनी कला तथा विद्या के माध्यम से प्रचुर धन कमाता है तथा सभी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ सुखी जीवन बिताता है। पूर्णायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(१०१८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक सुन्दर, सौम्य स्वभाव एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बलिष्ठ, खेती से लगाव रखने वाला अथवा कृषि-कर्म या भूमि-उत्खनन संबंधी किसी कार्य से संबंध रखने वाला अथवा वन-उपवन आदि से संबंधित कार्य करने वाला होता है। यह अपने कुल का श्रेष्ठ दिखाई देता है तथा २१ वर्ष की आयु से ही आजीविकोपार्जन करने लगता है। इसके जुआ खेलने तथा भोग-विलासादि के व्यसन भी होते हैं। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली, श्रेष्ठ तथा सुन्दर पुत्र-पुत्रियों को जन्म देकर उन्हें सुयोग्य बनाने वाली, पति पर नियन्त्रण रखते हुए भी उसकी ओर से दुःखी रहने वाली तथा कुल का सम्मान बढ़ाने वाली होती है। इस जातक को २६, ६३ तथा ६८ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। शेष जीवन सुख पूर्वक बीतता है। पूर्णायु ७३ वर्ष के लगभग होती है।

(१०१९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलिष्ठ शरीर वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। सम्पन्न माता-पिता की संतान होने के कारण यह बाल्यावस्था से ही विलासप्रिय होता है। इसका पालन-पोषण उत्तम प्रकार से होता है। शिक्षा भी उच्च स्तर की प्राप्त करता है परन्तु कुसंग के कारण बाल्यावस्था से ही यह अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों का शिकार बन जाता है। २५ वर्ष की आयु में इसे राजकीय-सेवा से निवृत्त होने का अवसर प्राप्त होता है। यह यथेष्ट धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा प्राप्त होती है। सन्तानें भी सुन्दर, गुणवान तथा सुख देने वाली होती हैं। यह जातक भोग-विलास में अत्यन्त दक्ष तथा रसिक होता है, अतः स्त्रियाँ इसे घेरे ही रहती हैं। यह धार्म-कर्म तथा ईश्वर में अनास्था रखता है। पूर्णायु ६५ वर्ष से अधिक नहीं होती।

(१०२०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अपने गुणों से प्रकाशित, विद्या तथा पराक्रम में बढ़ा-चढ़ा, साहसी तथा उदार-स्वभाव का होता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसके माता-पिता अपने जीवन-काल में ही पुत्र को सम्पत्तिशाली देखकर सुखी होते हैं तथा उसके द्वारा निर्मित भवन, वाहन आदि का भी उपभोग करते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बहुत योग्य तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। पुत्र सुन्दर तथा बुद्धिमान होते हैं। स्त्री अपने भाग्य से भी धनोपार्जन करती है। ४० वर्ष की आयु में जातक उच्चपद पर अभिषिक्त, लोकमान्य, यशस्वी तथा विपुल वैभवशाली हो जाता है। इसे ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

भु० सं० ३३४३ कु० २०

(१०२१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पतले तथा लम्बे शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा बड़ा बुद्धिमान होता है। विद्याध्ययन अधिक न कर पाने पर भी यह बहुत समझदार तथा गुणवान् होता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह किसी राजकीय अथवा बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भाग्यवती, मनस्विनी तथा घर को सजाने-सँवारने में कुशल होती है। वह जातक को प्रत्येक कार्य में सहयोग देती है। सन्तानें पुत्र तथा सुख देने वाली होती हैं। ३१ वर्ष की आयु में जातक पदोन्नति प्राप्त कर विपुल धनोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु में भूमि भवन, वाहनादि से संयुक्त होता है तथा परदेश में भी स्थायी-निवास बनाता है। २६ वर्ष की आयु में विदेशयात्रा करता है। सुखी-जीवन बिताते हुए ७१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०२२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, नीतिज्ञ, बुद्धिमान, सभी कार्यों को सुचारु रूप से करने वाला तथा अधिक शिक्षित न होते हुए भी राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने वाला होता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। ४५ वर्ष की आयु तक यह विपुल सम्पत्ति अर्जित कर लेता है तथा अपने लिए मकान भी बनवाता है, तथापि उस मकान आदि का सुख स्वयं नहीं उठा पाता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। सन्तानें विलम्ब से होती हैं और वे होनहार भी नहीं होतीं, अतः इसे उनकी ओर से चिन्ता बनी रहती है। यह स्वयं पर्याप्त धनोपार्जन करता है तथा आजीवन प्रायः स्वस्थ ही बना रहता है। इसे ६४ अथवा ७४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(१०२३) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, पतले परन्तु बलिष्ठ शरीर का, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों पर योग्यता-गुणों की छाप छोड़ने वाला होता है। यह अपने से निम्न-स्तर वाले लोगों की संगति से सुख प्राप्त करता है। इस वर्ग के लोगों से धन तथा भोग-विलास का लाभ भी उठाता है। यह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, अतः राजकीय सेवा में इसकी नियुक्ति किसी निम्न-स्तरीय-पद पर होती है, परन्तु बाद में अपने अध्यवसाय, युक्ति एवं बुद्धिमत्ता के बल पर यह उच्च अधिकारियों की अनुकूलता से बहुत लाभ उठाता रहता है। बाद में कोई उच्च-पद भी प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी तथा आमदनी के क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। वह स्वयं भी कोई नौकरी कर सकती है। सन्तान से चिन्ता रहती है। ५६ वें वर्ष में अनिष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(१०२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, आकर्षक, आरम्भ में शिक्षा से वंचित रहने वाला, बाद में मध्यम श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने वाला एवं २५ वर्ष की आयु से राजकीय सेवा में किसी सामान्य-पद पर नियुक्त होकर, बाद में उन्नति करने वाला तथा अपने अध्यवसाय एवं पराक्रम से पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित करने वाला होता है। तथापि इसे धन से विशेष लगाव नहीं होता। उसे खर्च करने में ही इसे आनन्द आता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुशीला तथा वाक्पटु कन्या के साथ होता है। वह इसे पूर्ण नियंत्रण में रखती है तथा धन का भी स्वयं व्यय करती रहती है। सामान्यतः इसका जीवन सुख में बीतता है। सन्तानें सुन्दर तथा होनहार होती हैं, जो पत्नी के प्रयत्न से उच्च शिक्षा प्राप्त कर, योग्य बनती हैं। इसे ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

भु० सं० १३४४

कु० २०

भृ० सं० ३३८५

कु० र०

(१८२५) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, क्रोधी स्वभाव का, परन्तु क्रोध को पी जाने वाला तथा प्रतिशोध लेने में कुशल होता है। यह बहुत समय बीत जाने पर भी अपने शत्रु को क्षमा नहीं करता तथा अवसर मिलते ही बदला लेता है। यह बहुत खर्चीला होता है तथा अपनी पैतृक-सम्पत्ति को भी व्यर्थ ही नष्ट कर बैठता है। २२, २३ वर्ष की आयु में यह अपना घर छोड़ कर देशान्तर में कार्य करता है। इसकी शिक्षा मध्यम होती है तथा किसी निजी प्रतिष्ठान में सेवा-कार्य करता है। यह अपराधिक प्रवृत्ति का तथा जुआ आदि खेलने वाला भी होता है। इसे अनेक विघ्न-बाधाओं तथा संघर्ष से पूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। विवाह २५, २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी परम सुन्दरी तथा सुख पहुँचाने को प्रयत्नशील रहती है, परन्तु उससे भी यह संतुष्ट नहीं रहता। पुत्र बड़े होकर गुणवान तथा धनवान होते हैं। पूर्णायु ६८ वर्ष की होती है।

(१८२६) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, प्रियदर्शी, कलाविद्, अनेक विषयों का ज्ञाता, शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन करने वाला, सामाजिक मर्यादाओं का पोषक तथा परिवार की परम्परानुसार जीवन बिताने वाला होता है। इसकी शिक्षा अधिक नहीं होती, परन्तु इसका बुद्धि-चातुर्य विलक्षण होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहती, यदि जीवित रहे तो रक्त-विकार से पीड़ित बनी रहती है। इसे संतान-सुख भी नहीं मिलता। यह जो भी धन कमाता है, सब खर्च होता चला जाता है। अतः धनाभाव से सदैव पीड़ित बना रहता है। ३८ वर्ष की आयु में इसे धन-संचय करने की लगन होती है। परदेश में रहकर यह अपना जीवन सुख से बिताता है। बाहरी लोग भी इसके मित्र होते हैं। यह किसी राज्याधिकारी के पास रहने का अवसर भी पा सकता है। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(१०२७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, श्याम गौर वर्ण, अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करनेवाला, सामान्य शिक्षित, माता-पिता से अलग प्रदेश में रहनेवाला और वहीं आजीविकोपार्जन करने वाला, अन्तर्मुखी प्रकृति का, गुप्तरूप से भोग-विलास में प्रवृत्ति रखने वाला तथा बन्धु-बान्धवों से कष्ट पाने वाला होता है। यह अनेक काम करता है तथा इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। धनोपार्जन हेतु यह छोटे-से-छोटा काम करने के लिए उद्यत बना रहता है परन्तु अपने बुद्धि-चातुर्य से यह सब-लोगों में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी सदैव दुःखी रहती है, अतः इसे दाम्पत्य-सुख की समुचित रूप से उपलब्धि नहीं होती। सन्तान का योग भी नहीं बनता। यह अपने परिश्रम तथा योग्यता के बल पर पर्याप्त धनी हो जाता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१०२८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, अपने कार्यों को निष्ठापूर्वक करनेवाला, परिवारीजनों को सुख देने वाला तथा मध्यम-स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है। कालान्तर में यह उच्चशिक्षा भी प्राप्त कर सकता है। इसे ज्ञान की चाह बनी रहती है। २४ वर्ष की आयु में यह किसी प्रतिष्ठान की सेवा से संयुक्त होकर परदेश अथवा विदेश में रहने लगता है। इसे माता-पिता का विशेष सुख प्राप्त नहीं होता। यह निरन्तर धनोपार्जन में ही लगा रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सहयोगिनी तथा सुशिक्षिता होती है। वह इसे पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखती है। घर-बाहर के सभी कार्यों में यह पत्नी की राय मानकर ही चलता है। वह ४० से ४५ वर्ष की आयु में रुग्णा रहती है, जिससे जातक बहुत दुःखी रहता है। सन्तानें उत्पन्न होती हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(१०२९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, परन्तु क्रोधी स्वभाव का, अपने को सर्वोपरि मानने वाला, निज प्रभुता मानने वाला तथा धनी होने का अहंकारी, क्रूर प्रकृति का होता है। यह शिक्षा उत्तम प्राप्त करता है तथा २५-२६ वर्ष की आयु में घर से बाहर परदेश में जाकर सेवा-कार्य करता है। इसे देशान्तर में बहुत धन तथा सम्मान प्राप्त होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी अनुकूल तथा पति के धन पर नियंत्रण रखने वाली होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धन कमाना आरम्भ करता है तथा अपने अध्यवसाय एवं कुशलता के बल पर ४५ वर्ष की आयु में काफी धन संचित कर लेता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं। इसकी पत्नी को ३६ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। इसे स्वयं ४९ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पत्नी का देहान्त पहले हो जाता है। जातक ७३ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१०३०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, ज्ञानी, पुरुषार्थी, अनेक विषयों का ज्ञाता, पूर्ण शिक्षित, राजयोग युक्त तथा किसी अनुसंधान-संबंधी सेवा-कार्य में संयुक्त होने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा अपना सम्पूर्ण जीवन राजकीय-सेवा में ही व्यतीत करता है। यह देश-परदेश में रहता है तथा देशान्तर में रहकर बहुत धन तथा सम्मान अर्जित करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-निपुण, जातक के प्रति अनुरागिनी तथा परिजनों से प्रायः विमुख रहने वाली अथवा उनके प्रति विशेष प्रेम रखने के कारण पति को खिन्न करने वाली होती है। जातक की पत्नी को गर्भस्राव होते हैं तथा सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। अन्ततः कोई एक सन्तान जीवित बच पाती है। यह जातक सामान्यतः सुखी जीवन बिताता हुआ ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भू० सं० १२३४८

कु० र०

(१०३१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कोमल हृदय का, बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञाता, अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, ज्ञानी, साहसी तथा अपने उत्तम एवं जीविका द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु के बाद देशान्तर में जाकर धन तथा यश कमाना आरंभ कर देता है, २९ वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक बहुत धन तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, वाक्पटु तथा जातक को अपने वश में रखने वाली होती है। ४५ वर्ष की आयु में विशेष लाभ होता है। वैसे नित्य न्यूनाधिक लाभ होता ही रहता है। इसे पुत्र तथा होनहार संतानों का लाभ होता है, बीच में कुछ समय ऐसा भी आता है, जब पत्नी से सुख प्राप्त नहीं होता। यह जातक ७३ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०३२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, कुछ स्थूलता लिए स्वस्थ शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा राजाधिकारियों को प्रभावित करने वाला होता है। यह अनुशासन तथा शिष्टाचार-प्रिय, भूमि तथा स्थायी सम्पत्ति का स्वामी, दूसरों से अपनी बात मनवाने में कुशल, राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करने वाला अथवा किसी विद्यालय में प्राध्यापक होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता, २५-२६ वर्ष की आयु से आजीवन उन्नति करते रहने वाला तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आत्म-केन्द्रित स्वभाव की होती है, तथापि यह उसे अत्यधिक स्नेह करता है। पत्नी द्वारा तिरस्कृत होने पर भी बुरा नहीं मानता। सन्तानें सामान्य स्तर की होती हैं। इसकी परमायु ६८ वर्ष होती है, यदि इससे जीवित बचे तो ७७ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(२६३३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वभाव गौर वर्ण, मध्यम कद, चंचल नेत्रों वाला, तीक्ष्णदृष्टि युक्त, चतुर, स्वतन्त्र विचारों का तथा तुरन्त निर्णय लेने में कुशल होता है। यह विघ्न-बाधाओं से जूझने में आनन्द का अनुभव करता है। यह गुणवान्, पराक्रमी, अनुशासन-प्रिय तथा विनम्र स्वभाव का होता है। यह देश-प्रदेश ऊँचे स्थानों पर यश, मान, सुख तथा धन प्राप्त करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में सुन्दर, राजसी-स्वभाव की तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन पसन्द करने वाली कन्या के साथ होता है। यह अपनी पत्नी की प्रत्येक इच्छा को पूरा करने की चेष्टा करता है। स्त्री भी बड़ी मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा भाग्यशाली होते हैं। यह जातक ४०-४५ वर्ष की आयु तक उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है तथा पर्याप्त धनी हो जाता है। इसे ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(२६३४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, कलाओं का ज्ञाता, शास्त्रानुकूल आचरण करने वाला, ज्ञानी, गुणी, बुद्धिमान, विद्वान्, राज्य के उच्च पद पाने वाला तथा प्रतिभाशाली होता है। यह २०-२१ वर्ष की आयु से ही धन कमाने लग जाता है तथा संचयी-प्रवृत्ति का होने के कारण अल्प-समय में ही बहुत धनी हो जाता है। यह देश-प्रदेश की यात्राएँ करता है तथा उनसे लाभ उठाता है। इसे धन-सम्पत्ति की कभी कमी नहीं रहती। इसका विवाह २२ अथवा २८ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। इसकी सन्तानें भी सुन्दर, सुशिक्षित तथा उच्च पद पाने वाली होती हैं। ४० वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसे परिवारीजनों से नफरत होती है। ५८ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ७० वर्ष की होती है।

(२०३५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, लम्बे कद का, कुछ मोटे होंठ तथा लम्बी आँखों वाला, बलिष्ठ तथा पुरुषार्थी होता है। यह स्वभाव से जिद्दी, कम लोगों को मित्र बनाने वाला, अनुचित कार्य करने से बचने वाला, अपने परिश्रम पर विश्वास करने वाला, साहित्य-नाटक आदि का प्रेमी तथा राग-रंग आदि में रुचि रखने वाला होता है। यह दिन-रात परिश्रम करके अपने भाग्य को बनाता है तथा ४५ वर्ष की आयु में बहुत सम्पत्तिशाली बन जाता है। यह कई स्थानों पर नौकरी भी करता है एवं धनोपार्जन हेतु अनेक उपायों का आश्रय लेता है। यह स्वतन्त्र विचारों का तथा ३२ वर्ष की आयु में अपना निजी व्यवसाय आरंभ करने वाला होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। अनेक संतानें नष्ट होती हैं तथापि पुत्र-पुत्रियाँ जीवित भी रहती हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२०३६)- इस जन्मांग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौर वर्ण, आकर्षक नेत्रों वाला, उन्नत ललाट, धीर-गंभीर, विचारक तथा साहित्य, संगीत एवं ललित-कलाओं का प्रेमी होता है। यह बड़ा परिश्रमी, परोपकारी तथा यशस्वी होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। व्यावसायिक-क्षेत्र में इसकी पत्नी भी सहयोग करती है। यह पैतृक-व्यवसाय द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है तथा ४० वर्ष की आयु में अन्य स्रोतों के सम्पर्क द्वारा अत्यधिक लाभ अर्जित करता है। यह अपने लिए मकान बनवाता है। वाहनादि का सुख भी उपलब्ध होता है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखमय तथा सम्पन्न बना रहता है। यश-सम्मान भी खूब मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

भु० सं० ८३५०

कु० र०

(१०३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बलवान, मध्यम कद का, अत्यन्त परिश्रमी तथा धीर-गंभीर स्वभाव वाला होता है। इसे क्रोध प्राय: नहीं आता और जब आता है शीघ्र शान्त भी नहीं होता। यह स्वतन्त्र-विचारक, धर्म के प्रति तटस्थ भाव रखनेवाला एवं विपुल सम्पत्ति का स्वामी होता है। इसे पैतृक-व्यवसाय से जहाँ बहुत लाभ होता है, वहीं निजी व्यवसाय द्वारा भी यह आशातीत धन कमाता है। इसका एक बड़ा भाई होता है, जो इसी के निर्देशानुसार कार्य करता है। भाग्य के दृष्टिकोण से इस जातक को ही मान्यता प्राप्त होती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानें भी पुत्र, सद्गुणी तथा यशस्वी होती हैं। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है तथा यह निरन्तर अधिकाधिक उन्नति करता चला जाता है। संतानें भी इसके जीवन-काल में ही धनवान हो जाती हैं। इसकी पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(१०३८)- इस जातक का स्वभाव सरल तथा स्वच्छ सुन्दर होता है। यह कठिन परिश्रमी तथा एक क्षण भी व्यर्थ न गँवाने वाला होता है। यह साहित्य तथा ललित कलाओं का प्रेमी होता है तथा राजाओं की भाँति ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है। इसके पास धन की कमी कभी नहीं रहती। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, आज्ञा-पालिका, परन्तु प्राय: रुग्ण बनी रहनेवाली मिलती है, जिसके कारण इसे मानसिक-कष्ट बना रहता है। इसे सन्तान का सुख भी देर से प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय विवाह के पश्चात् ही होता है। यह अपने कौशल, चातुर्य तथा योग्यता के बल पर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। विवाहोपरान्त इसकी पद-वृद्धि भी होती है। यह किसी अच्छे प्रतिष्ठान अथवा राज्य की सेवा से संलग्न भी हो सकता है। लक्ष्मी सदैव इसके चरण चूमती है। इसे यश भी खूब मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२०३९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, परिश्रमी, स्वस्थ, अपनी विद्या तथा बुद्धि के प्रभाव से सब लोगों को आकर्षित करने वाला, तथा अपनी योजनाओं को गुप्त रखते हुए उनकी सफलता सफलता हेतु निरन्तर प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। २३-२४ वर्ष की आयु में ही यह किसी प्रतिष्ठित संगठन अथवा राज्य के उच्च पद पर आसीन होकर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके विरोधी इससे भयभीत बने रहते हैं। शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक- सभी दृष्टियों से यह सुखी बना रहता है। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी का चुनाव यह स्वयं करता है अर्थात् प्रेम-विवाह करता है। पत्नी सुशीला, सुशिक्षिता तथा सुन्दरी होती है। सन्तानें कुछ विलम्ब से होती हैं। यह विदेशों में जाकर बहुत धन कमाता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(२०४०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, काव्य-साहित्य का प्रेमी, विद्वान, गुणी तथा पैतृक-सम्पत्ति से धनी होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा भी सम्पत्ति की निरन्तर वृद्धि करता रहता है। यह धन का अपव्यय नहीं करता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त ही इसके कार्य क्षेत्र में भी परिवर्तन होता है। यह अपनी पत्नी की इच्छानुसार ही चलता और उसी के निर्देशानुसार धन खर्च करता है। यह नवीन व्यवसाय स्थापित कर प्रचुर धन कमाता है। किसी अन्य प्रतिष्ठान से संयुक्त होकर भी लाभ उठा सकता है। इसे मणि-माणिक्य, धातु तथा भूमि आदि से धन का लाभ होता है। जीवन के २५, ३१, ३६ तथा ४६ वें वर्ष परिवर्तन लाने वाले सिद्ध होते हैं। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। सब प्रकार से सुखी जीवन बिताते हुए यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

<u>(२०४१)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, निहदय तथा अपने श्रेष्ठ व्यवहार से सबलोगों को आकर्षित करने वाला होता है। यह वाक्पटु होता है तथा अपने तर्क से लोगों को आश्चर्यचकित करदेने में सफल रहता है। इसे भूमि, लकड़ी एवं धातु आदि पदार्थों द्वारा धन का लाभ होता है। 21 वर्ष की आयु में ही यह धनोपार्जन आरंभ करदेता है। 28 वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी होजाता है। यह देव-गुरु का भक्त, परोपकारीजनों का प्रेम करने वाला तथा सुन्दरी, गौरवर्ण, कुछ स्थूलकाय एवं विदुषी स्त्री का पति होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में ही हो जाता है। विवाहोपरान्त निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। राजकीय-सेवा से सम्मान होताभी संभव है, अन्यथा अपने व्यवसाय से ही प्रचुर धन कमाता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७६ वर्ष की प्राप्त होती है।

<u>(२०४२)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली, अत्यन्त चतुर, शीघ्र निर्णय लेने वाला, परोपकारी, उदार, गुणवान तथा बुद्धिमान होता है। यह किसी का अहित नहीं चाहता, यह धनी, कुल-दीपक, विशाल-हृदय, अपने अधीनस्थ लोगों को सुखी बनाने का प्रयत्न करने वाला तथा दुःखियों की सहायता करने वाला होता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। यह राजकीय-सेवा में भी संलग्न हो सकता है। उस स्थिति में यह निरन्तर उन्नति करता हुआ ४२ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। इसका वैवाहिक-जीवन कष्टपूर्ण रहता है, क्योंकि पत्नी रुग्णा एवं किसी की बात न मानने वाली भी होती है। इसके पुत्र सुन्दर, गुणवान तथा सुखी होते हैं। वे जातक को सुख देते हैं। 26, 28, 35, ४२ तथा ४५ वर्ष की आयु में विशेष उन्नति होती है। ५६ तथा ५८ वें वर्ष में अरिष्ट। परमायु ७०-७५ होती।

भृ० सं०

कु० र०

(२०४३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मनस्वी, चंचलचित्त का तथा महत्वाकांक्षी होता है। वह भाग्य के भरोसे न बैठकर अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है। अपने मित्रों तथा भाइयों को परदेश-विदेश में ले जाकर उनकी भी उन्नति करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य मिलती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। माता से भी सहयोग प्राप्त होता है। ३२ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। विवाह के कुछ वर्ष बाद पत्नी रोगिणी रह जाती है, तब जातक के मन तथा गृहस्थी में अशान्ति का वातावरण बन जाता है। इस जातक को राज्य से भी धन तथा मान्यता का लाभ होता है। २८, ३५ तथा ३८ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक कष्ट होता है। सन्तान सुयोग्य होती है। पूर्णायु ६८-६९ वर्ष की प्राप्त होती है।

(२०४४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, दयालु स्वभाव का, दीन दुःखियों के प्रति सहानुभूति रखने वाला तथा उनकी सहायता करने वाला, परन्तु शत्रुओं को पीड़ा देकर (उनसे) धन प्राप्त करने वाला भी होता है। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सौम्य तथा विदुषी होते हुए भी आत्म केन्द्रित स्वभाव की होती है तथा अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझती। यह जातक २७-२८ वर्ष की आयु में घर छोड़कर विदेश में रहने लगता है तथा ३५ वर्ष की आयु में भाग्योदय प्राप्त करता है। यह शत्रुओं को पीड़ित कर अपने पूर्वजों की खोई हुई संपत्ति को प्राप्त करता है। ४५-४६ वर्ष की आयु में विशेष धनी होता है तथा नीच लोगों के साथ रहकर, उनकी मदद करता और लाभ भी उठाता है। सन्तानें सुन्दर तथा सद्गुणी होती हैं। पत्नी धन का संचय करती है। पूर्णायु ६६ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१०४५)- इस कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर का, कला-साहित्य-प्रेमी, वाक्पटु, मधुरभाषी तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा सबको आकर्षित एवं प्रभावित करने वाला होता है। इसी बाल्यावस्था से ही सब सुख प्राप्त रहते हैं। यह उच्चपदस्थ एवं राज द्वारा मान्य पिता का पुत्र होता है अतः इसका लालन-पालन भी ऐश्वर्यपूर्ण ढंग से ही होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि पुत्रों के बड़े हो जाने पर जातक का उनसे मत-वैभिन्य बना रहता है। पुत्र भी पिता के प्रति अच्छे भाव नहीं रखते, अतः जातक उनके द्वारा तिरस्कृत होकर, परदेस में जाकर रह उठता है। पत्नी का पालन इसके पुत्र करते हैं। परदेस में इसे बहुत मान-सम्मान तथा सहयोग मिलता है। परिवारीजन इसे स्नेह करते हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत समृद्धिशाली हो जाता है। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(१०४६)- इस जातक को सुन्दर, साहसी, पराक्रमी, उदार, दीनों का पालन करने वाला तथा अनेक गुणों से युक्त, बुद्धिमान तथा विद्वान होना चाहिए। यह २३ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करता है, फिर राजकीय-सेवा में संलग्न हो उच्च पद पाता तथा प्रचुर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उससे मतभेद हो जाता है। इसके पुत्र भी बड़े होकर माता का पक्ष लेते हैं तथा पिता से अलग हो जाते हैं। यह जातक अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व, अध्यवसाय एवं परिश्रम के बल पर यशोपार्जन करता है तथा देशान्तर में रहता हुआ प्रचुर मान-प्रतिष्ठा भी अर्जित करता है। २७ वर्ष की आयु से इसकी पदोन्नति आरम्भ होती है। तत्पश्चात् यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१०४७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, शिष्ट, उदार, विनम्र, सहानुभूतिपूर्ण तथा परोपकार की भावना से युक्त होता है। इसे दूसरों की सहायता करने में अत्यधिक सुख का अनुभव होता है, अतः यह अपना काम बिगाड़ कर भी दूसरों की मदद करता है। यह धन-धान्य से पूर्ण होता है तथा इसके धन की वृद्धि निरन्तर होती रहती है। यह उच्च-शिक्षा प्राप्त करता है। माता-पिता का भक्त, उनके अनुकूल चलने वाला तथा उन्हें सुखी रखने वाला होता है। २५-२६ वर्ष की आयु तक यह राजकीय-सेवा से संलग्न होकर, अपनी योग्यता के आधार पर उन्नति करना आरंभ कर देता है। इसका विवाह २३-२४ की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अच्छे स्वभाव तथा पतले शरीर की, अत्यन्त प्रभावशालिनी तथा सबको अपने अनुकूल चलाने वाली होती है। जातक के परिवारीजन तथा पुत्र आदि अलग होते हुए भी सम्मान करते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१०४८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, वीर, साहसी, अत्यन्त उदार तथा सबसे सहानुभूति रखने वाला होता है। यह सबका प्रिय रहते हुए सबका भला करता है। इसे अपनी माता से विशेष लगाव नहीं होता। इसे अनेक स्त्रियों का प्रेम प्राप्त होता है तथा स्त्रियों का कार्य करने में इसे विशेष सुख भी मिलता है। २५ वर्ष की आयु तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। संतानें सुन्दर, सुयोग्य तथा पुरुषार्थी होती हैं तथा वयस्क होकर पिता से अलग रहकर कार्य करती तथा धनोपार्जन करती हैं। ६१ वर्ष की आयु तक यह पौत्रों से सम्पन्न हो जाता है। सभी परिवारीजनों में पारस्परिक स्नेह बना रहता है। परमायु ८२ वर्ष होती है।

(१०४९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, अत्यन्त महत्वाकांक्षी, धनी, स्वस्थ एवं स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षित रहने वाला होता है। स्त्रियाँ भी इसकी ओर स्वतः ही आकर्षित होती हैं। आरंभ से ही इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गृह-कार्य-कुशला, स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा पति के सम्मान को बढ़ाने वाली मिलती है। उसके प्रति जातक का विशेष प्रेम रहता है। २५ वर्ष की आयु में जातक राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक राजमान्य, प्रतिष्ठित तथा उच्च पद पर आसीन हो जाता है। इसे विदेश में रहने तथा वहाँ से धन प्राप्ति का अवसर भी प्राप्त होता है। इसके पुत्र सद्गुणी, सुयोग्य तथा सुखदायक सिद्ध होते हैं। इसकी पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१०५०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, मितभाषी परन्तु स्पष्टयुक्त अर्थभरी वाणी बोलने वाला, धीर-गंभीर एवं लोकप्रिय होता है। यह २५-२६ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा द्वारा अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है तथा ३४ वर्ष की आयु तक उच्चपद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसे धन का अभाव नहीं होता। यह पढ़ने-लिखने तथा अन्य अच्छे कामों में अपना समय व्यतीत करता है। ३३ वर्ष की आयु में किसी स्त्री की सहायता से अधिक उन्नति करता है। वह स्त्री इसके जीवन में प्रमुख भूमिका अदा करती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पतिव्रता होती है। वह गृहस्थी का संचालन उत्तरदायित्व के साथ करती है। इसके पुत्र भी सुयोग्य, सद्गुणी तथा बड़े होकर सुख देने वाले होते हैं। आयु के २८, ३६, ४१ तथा ४८ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१०५१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रतापी, काव्य-मर्मज्ञ, रसिक स्वभाव का तथा सामर्थ्यशाली होता है। इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सौभाग्यशालिनी होती है। विवाह होते ही यह राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करने लगता है। योग्यता एवं कर्मठता के कारण इसकी पद वृद्धि होती चली जाती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। ४२ वर्ष की आयु में इसे भाइयों की ओर से कष्ट मिलता है। ४५ से ५६ वर्ष की आयु तक इसे बहुत सुख मिलता है। इसके पुत्र साहसी, उत्तरदायी तथा सम्मान की वृद्धि करने वाले होते हैं। ५१ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लगती है। ६८ वर्ष की आयु में पुनः संकटग्रस्त होता है, परन्तु इन दोनों ही अवसरों से बचकर ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१०५२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी प्रियदर्शन, मधुरभाषी, लोक-प्रसिद्ध, सुन्दर, स्वस्थ, भावुक, कुशल तथा उच्च शिक्षित होता है। यह २०-२१ वर्ष की आयु में ही राज्याश्रित होकर आजीविकोपार्जन करने लगता है फिर दस वर्ष की अवधि में ही पर्याप्त धन अर्जित कर सुखी जीवन बिताना आरम्भ कर देता है। यह अपने परिवारीजनों की भी सहायता करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, परोपकारिणी, साहसी, संवेदनशीला तथा गुणवती होती है। पुत्र भी आगे चलकर बड़े गुणोत्तम सिद्ध होते हैं। इसे ३८, ४२, ४८ एवं ५३ वर्ष की आयु में संकटों का सामना करना पड़ता है। अपने ही लोग इसे कष्ट पहुँचाते हैं तथा राज्य की ओर से भी परेशानियाँ आती हैं। बाद में सब कुछ ठीक हो जाता है। इसे जीवन में भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

(१०५३)- इस जन्म कुंडली का स्वामी सुन्दर, चतुर, कलाओं का ज्ञाता, लोक-प्रसिद्ध तथा बहुत धनी होता है। परन्तु अनेक स्त्रियों से प्रेम-संबंध रखने के कारण इसका धन बहुत खर्च हो जाता है। यह माता-पिता को सुख देने का प्रयत्न करता है, परन्तु मन से उनका विरोधी भी होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने वाली होती है। इसका भाग्योदय भी विवाहोपरान्त ही होता है। यह २४ वर्ष की आयु से अर्थोपार्जन करता है। इसे अपने व्यवसाय तथा देशान्तर-भ्रमण से धन प्राप्त होता है। ३० से ४६ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन कमा लेता है। इसके पुत्र सद्गुणी तथा यशस्वी होते हैं एवं अपने पिता के सम्मान तथा वैभव की वृद्धि करते हैं। इसकी परमायु ७० वर्ष से कुछ अधिक ही होती है।

(१०५४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, ईश्वर-भक्त, काव्य-साहित्य का रसिक एवं ज्ञाता, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसे धन की कोई कमी नहीं रहती। पैतृक-सम्पत्ति का भी यथेष्ट लाभ होता है। स्वोपार्जित धन द्वारा भी यह बड़ा ऐश्वर्यशाली बनता है। यह साहस पूर्वक अपनी सामर्थ्य से परे के कार्यों को करके बहुत लाभ उठाता तथा सफलता प्राप्त करता है। इसे वसीयत-धन का लाभ होना भी निश्चित है। ३० से ६० वर्ष की आयु में इसके पास बहुत सम्पत्ति इकट्ठी हो जाती है तथा मान-सम्मान भी खूब मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। पुत्र भी सुन्दर तथा सद्गुणी होते हैं। सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०५५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, श्रेष्ठ विचारों वाला, न्यायप्रिय, ईमानदार तथा छल-छिद्र रहित होता है। यह अपने शत्रु का भी अपकार करने से डरता है और यदि कभी ऐसा हो भी जाय तो मन में बहुत दुःखी भी होता है। इसे सब प्रकार की सुख-संपत्ति तथा पैतृक-धन का लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। यह २३ वर्ष की आयु से ही परदेश की यात्रायें करके धनोपार्जित करता है। इसे २८, ३५ तथा ४० वर्ष की आयु में कुछ कष्ट प्राप्त होता है। ४२ वर्ष की आयु में इसे राज्य से लाभ होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा गुणी होते हैं। पत्नी से इसे बहुत सुख मिलता है। ४३ वर्ष की आयु में यह किसी विशेष कार्यवश बाहर जाता है तथा वहाँ से बहुत लाभ प्राप्त करता है। जल तथा अग्नि से भय की सम्भावना रहती है। पूर्णायु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

(२०५६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, परोपकारी, उदार प्रकृति का, साहित्य-रसिक आस्तिक तथा लोकप्रिय होता है। यह पिता से स्नेह रखता है, परन्तु माता से मतभेद रहते हैं। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुखोपभोग प्राप्त करता है। शिक्षा उच्च श्रेणी की मिलती है। यह देव-गुरु का भक्त तथा समयानुकूल चलने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। विवाहोपरान्त ही यह राजकीय-सेवा से संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है। २८ वर्ष की आयु में पदोन्नति पाता है। ४५ वर्ष की आयु तक अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होकर धन तथा प्रतिष्ठा का प्रचुर लाभ प्राप्त करता है। विदेश में भी रहता है। स्त्री के प्रति कोई चिन्ता भी रहती है। विवादों तथा विरोधियों से धन-लाभ होता है। पुत्र सहयोगी होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(१०५७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सच्चरित्र, अत्यधिक महत्वाकांक्षी तथा महामनस्वी होता है। इसकी आकांक्षायें भाग्य तथा ईश्वर की कृपा से पूरी भी होती हैं। यह शिक्षा-दीक्षा में निष्णात होने के पश्चात् २३-२४ वर्ष की आयु में ही उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होकर जीविकोपार्जन करने लगता है। राजकीय-सेवा में उच्च पद पाकर यह निरन्तर प्रगति करता चला जाता है एवं राजतुल्य ऐश्वर्यों का उपभोग करता है। मान-प्रतिष्ठा भी अत्यधिक प्राप्त होती है। आयु के ३२, ३६ एवं ३९ वें वर्ष पदोन्नति तथा विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, मनस्विनी एवं जातक से कुछ भिन्न प्रकृति की एवं विशेष महत्वाकांक्षिणी होती है। उससे जातक को सुख-दुःख - दोनों का ही अनुभव होता है। सन्तानें सुन्दर, सुशील तथा सच्चरित्र होती हैं। इसकी परमायु ७५ वर्ष होती है।

(१०५८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी प्रियवादी, सुन्दर, न्यायप्रिय, निरभिमानी, पंडित तथा ज्ञान का भण्डार होते हुए भी स्वयं को तुच्छ मानने वाला सरल प्रकृति का होता है। यह धन-धान्य से पूर्ण, सौभाग्यशाली तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुभाषिणी, परदुःखकातर, बहुत सरल हृदय तथा परोपकारिणी होती है। यह प्रत्येक क्षेत्र में जातक की सहायता करती है तथा सुन्दर एवं सुयोग्य सन्तानों को जन्म देती है। इसके पुत्र बड़े होकर अत्यधिक धन-मान अर्जित करते हैं। यह २४, २८, ३५ एवं ३८ वर्ष की आयु में परदेश जाकर बहुत लाभ प्राप्त करता है। वैसे इसे २४ वर्ष की आयु में ही राज्य में कोई अच्छा पद प्राप्त हो जाता है। यह २५ से २७ वर्ष की आयु तक निम्न स्तरीय कार्यों से, तदुपरान्त उच्चस्तरीय कार्यों से धन कमाता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१०५९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आनन्द, कलाओं का ज्ञाता होते हुए भी ऐसे कार्य करता है, जो सामाजिक दृष्टि से अनुपयुक्त होते हैं। युवावस्था में यह ऐसे लोगों की संगति में रहता है, जो इससे निम्नस्तरीय कार्य कराते हैं तथा हानिकर सिद्ध होते हैं। यह जुए का शौकीन भी होता है। लगभग २६ वर्ष की आयु में यह कुसंगति से हटकर राज्य से आजीविका प्राप्त करने लगता है तथा साधु एवं विनत स्वभाव का बनकर यश तथा धन का उपार्जन करता है। ३९ वर्ष की आयु तक यह राजकीय-सेवा करता है, तत्पश्चात् कोई अपना व्यवसाय स्थापित कर, उससे पर्याप्त लाभ कमाने लगता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोऽनुकूला मिलती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। पत्नी तथा पुत्रों से सहयोग भी मिलता है। ४८ वें वर्ष में अरिष्ट होता है तथा परमायु ७१ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१०६०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सहृदय, धार्मिक होते हुए भी भावनाशून्य होता है। यह दूसरों की भावनाओं का सम्मान नहीं करता। यह जो कुछ करता है वह अपनी इच्छा से ही। इसे अनेक मित्र प्राप्त होते हैं तथा यह परिवारीजनों की सहायता भी करता है। बन्धु-बान्धव आदि इसके द्वारा लाभान्वित होते रहते हैं। इसका भाग्योदय किसी स्त्री के माध्यम से होता है। वह इसके जीवन से किसी-न-किसी रूप में संयुक्त बनी रहती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोऽनुकूला मिलती है। पुत्र भी आत्म स्वभाव के, सुन्दर तथा दायित्वों का निर्वाह करने वाले होते हैं। विवाहोपरान्त यह राजकीय सेवा अथवा अन्य माध्यम से धनोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे शत्रुओं से कष्ट मिलता है। ३१ से ५८ वर्ष की आयु तक यह पद में रहकर धन-सम्मान का उपार्जन करता है। परमायु ७२-७६ वर्ष की होती है।

(१७६१)– इस जन्मकुण्डली का अधिपति धीर, गंभीर एवं धनी होता है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है। यह सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व का तथा १८-१९ वर्ष की आयु से ही अपने पैतृक-व्यवसाय से संलग्न होकर उन्नति करने वाला होता है। यह अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाता है तथा उससे पर्याप्त धनोपार्जन कर सुखी-जीवन बिताता है। यह राजमान्य तथा लोकमान्य होता है। इसे माता-पिता से विशेष लगाव नहीं होता। यह स्वतन्त्र तथा स्वावलम्बी प्रकृति का होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों में भी आसक्त रहता है। पत्नी सद्गुणी होती है तथा पुत्र भी सुयोग्य सिद्ध होते हैं। इसे चोर-डाकुओं का भय भी होता है। ४९ वर्ष की आयु में अनिष्ट पाया जाता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होना निश्चित है।

(१७६२)– इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, विभिन्न प्रकार के कार्य करने वाला तथा अपनी सम्पत्ति को बढ़ाने वाला होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा अधिक नहीं होती। यह १५ वर्ष की आयु से ही अर्थोपार्जन करने लगता है। छोटे-बड़े लोगों के साथ रहकर उनसे लाभ उठाता है। ४० वर्ष की आयु तक यह यथेष्ट धनोपार्जन कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा घर को प्रभावित करने वाली मिलती है। वह परिवार में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लेती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, इच्छानुकूल चलने वाले तथा घर के धन-सम्मान की वृद्धि करने वाले होते हैं। इसकी आयु के २४, २८, ३२, ३२, ३८, ४०, ४२, ४५ तथा ४८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५१ वर्ष की आयु में इसे किसी कठिन रोग का शिकार बनना पड़ता है। पूर्णायु ६९ वर्ष होती है।

भु० सं० ४३३८

कु० २०

(१०६३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, धार्मिक, बड़ा सम्पत्तिशाली, सुखी, समृद्ध, परन्तु १६ से २७ वर्ष की आयु तक जुआ आदि दुर्व्यसनों का शिकार बना रहने वाला होता है। यह वेद-शास्त्रों का ज्ञाता तथा अनेक स्रोतों से धन-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, तेजस्विनी तथा गुणवती होती है, जो जातक को सदैव अपना अनुगत बनाये रखती है। यह २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। यह अनेक व्यवसायों को करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है, फिर यह निरन्तर उन्नति करता हुआ वृद्धावस्था तक सुख एवं सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करता है। इसके पुत्र भी बड़े कर्मठ, धनोपार्जन करने वाले तथा परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले होते हैं। ५० वर्ष की आयु में इसे कुछ समय तक कष्ट होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१०६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धन, वाहन, भूमि, भवन, सेवक आदि सब प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्यों से सम्पन्न, सुशिक्षित तथा प्रतिष्ठित होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर, व्यवहार-कुशल तथा सुयोग्य होती है, परन्तु पति के साथ उसका मतभेद बना रहता है। वह धर्म-कर्म में संलग्न होकर, निष्ठापूर्वक घर-गृहस्थी का संचालन करती रहती है। पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले होते हैं। यह जातक अनेक स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध रखता है। यह २२ वर्ष की आयु से धनोपार्जन करने लगता है तथा ३० से ३५ वर्ष की आयु में अत्यधिक उन्नति करता है। यह पर्याप्त धन कमाने के साथ ही राज्य से सम्मान भी पाता है। ४३ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता हुआ लगभग ६० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गौरवर्ण, मध्यम कद का तथा सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखोपभोग प्राप्त करने वाला होता है। २१ वर्ष की आयु तक इसकी शिक्षा-दीक्षा समाप्त हो जाती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी, वाक्पटु, विद्वान तथा गुणवती होती है। वह जातक को अपने प्रेम पाश में आबद्ध किए रहती है। यह जातक विवाहोपरान्त अथवा उससे एक वर्ष पूर्व ही राजकीय-सेवा में प्रवृत्त होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। ३७ वर्ष की आयु तक यह आपन्न धनी, राजमान्य, प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। इसे सभी प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके पुत्र भी बड़े योग्य तथा भाग्यशाली होते हैं। वे पिता के धन तथा मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं। इसकी परमायु ८८ वर्ष से अधिक होती है।

(१०६६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सिंह के समान पराक्रमी, साहसी, शूर-वीर, उदार परोपकारी प्रकृति का तथा अत्यधिक लोकप्रिय होता है। यह अपने प्रभाव को चारों ओर फैलाता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा सुचारु रूप से सम्पन्न होती है। यह लोकोपकार की भावना को हृदय में रखता हुआ दूसरों का कष्ट दूर करने हेतु सदैव प्रयत्नशील बना रहता है। यह २३ वर्ष की आयु से राजकीय सेवा में संलग्न होता है तथा देश-देशान्तर की यात्राएँ करता हुआ अपरिमित धन तथा सम्मान अर्जित करता है। लगभग ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, विनीत-वाक्चातुर्य की खान तथा सुन्दर पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। परन्तु इस जातक का पत्नी के अतिरिक्त किसी एक अन्य स्त्री से भी संबंध रहता है, जो इसके सौभाग्य को बढ़ाती है। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

(१०६७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, शास्त्रज्ञ, अनेक कलाओं का जानकार, साहित्य-सर्जक, गुणी तथा यशस्वी होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होकर निरन्तर उन्नति करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों का प्रिय तथा उनका हित करने वाला होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में सुन्दरी, मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी कन्या के साथ होता है। वह पति के अनुकूल चलती हुई घर-गृहस्थी का समुचित संचालन करती है। ३८ वर्ष की आयु में यह विदेश-यात्रा करता है। बाद में भी विदेश आना-जाना बना रहता है। इसे कभी किसी प्रकार का अभाव नहीं होता। अपनी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता तथा सद्व्यवहार से यह सबको प्रभावित बनाये रहता है। पुत्र भी गुणी, सुयोग्य तथा यशस्वी होते हैं। पूर्णायु ८५ वर्ष की होती है।

(१०६८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, प्रतापी, शास्त्रादि का ज्ञाता, साहित्य-मर्मज्ञ एवं यशस्वी होता है। इसकी शिक्षा पूर्ण होती है। २३ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर धनोपार्जन करने लगता है तथा शीघ्र ही उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर पर्याप्त धन तथा सम्मान कमाता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती, वाक्पटु एवं मधुरभाषिणी तथा विदुषी होती है। वह पति को अपने अनुगत रखने का प्रयत्न करती है तथा सुन्दर पुत्रों को जन्म देती है, तथापि इस जातक का एक अन्य सुन्दरी से भी ऐसा प्रेम-सम्बन्ध बनता है, जो द्वितीय-पत्नी के समान सदैव साथ देती रहती है। इसके जीवन के २६, २८, ३२, ३५, ३८, ४१ तथा ६६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१०६९) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, समझदार, सद्गुणी, सुशील तथा माता-पिता का भक्त होता है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुखी जीवन बिताता है तथा इसे विपुल धन-सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होता है। शिक्षा-प्राप्ति के उपरान्त यह लगभग २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ, महत्वपूर्ण पद को प्राप्त कर यशस्वी बनता है। ४० वर्ष की आयु तक यह उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह सुन्दर, गुणवान तथा भाग्यशाली पुत्रों को जन्म देती है। यह जातक जीवनभर राज्य में प्रतिष्ठापूर्ण पदों पर रहकर, सम्मान प्राप्त करता है तथा सुख भोगता है। ६३वें वर्ष में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(१०७०) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, साहित्यज्ञ, कलाकार, कवि तथा ग्रंथ-लेखक होता है। यह संगीत तथा नृत्य का ज्ञाता भी होता है। २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे धन तथा सम्मान की उत्तरोत्तर अधिक प्राप्ति होती चली जाती है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। इसे सर्वत्र यश, मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा जातक के जीवन-काल में ही आशातीत धन एवं सम्मान का उपार्जन करने वाले होते हैं। इसके जीवन के ३१, ३६, ४०, ४२, ४५, ४८, ५२, ५५ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५४ वर्ष की आयु में इसे अरिष्ट होता है। उससे बचने पर ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१८८१)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ग्रंथ-लेखक, साहित्य-कार, संगीत आदि का मर्मज्ञ, माता-पिता का भक्त तथा अपने परिवारी जनों से विशेष प्रेम रखने वाला होता है। यह विभिन्न गुणों से युक्त, भोग-विलास में रुचि रखने वाला, वैभवपूर्ण जीवन बिताने वाला, स्वतन्त्र-विचारक, कुछ नास्तिक स्वभाव का, तथापि सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह २५-२६ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर शीघ्र ही उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है तथा राज्य द्वारा इसे विशेष मान्यता भी मिलती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, समझदार, गुणवती तथा जातक पर प्रभाव रखने वाली होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, गुणवान, धनी तथा भाग्यशाली होते हैं। उन्हें सर्वत्र मान-सम्मान प्राप्त होता है। जातक को ४१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। परमायु ८१ वर्ष की होती है।

(१८८२)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला जातक सुन्दर, मधुरभाषी, काव्य-साहित्य का रसिक, ग्रंथ-लेखक, नीति-निपुण तथा ऐश्वर्यशाली होता है। इसके पास पैतृक-सम्पत्ति विपुल परिमाण में होती है तथा अपने परिश्रम द्वारा भी यह बहुत धन कमाता है। यह राजाओं जैसा वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है। देश-देशान्तरों में भ्रमण कर मान-सम्मान अर्जित करता है, अपने भाग्य के प्रभाव धन प्राप्त करता है तथा अपनी विद्या एवं गुणों के बल पर सर्वत्र सम्मान पाता है। राजकाज से युक्त हो यह बहुत बड़े पद पर प्रतिष्ठित होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होते हुए भी रुग्ण बनी रहती है, अतः दुःख का कारण बनती है। इसके कन्याएँ अधिक होती हैं। अन्त में एक पुत्र भी होता है। यह जातक धर्म-कर्म तथा तीर्थयात्रा में रुचि लेने वाला, दीन-दुःखियों का सहायक तथा ८० या ८६ वर्ष की परमायु प्राप्त करने वाला होता है।

(१६६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली, झूठ-वचन बोलने में चतुर तथा अपने तर्कों को पुष्ट करने की कला में निष्णात होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों को प्रेम करने वाला, उन्हें प्रश्रय देने वाला तथा उन्हें आजीविका दिलाने वाला भी होता है। इसे देशान्तर में गमन से बहुत आय होती है। यह अपना उद्योगी तथा राजकीय-सेवा के पुलिस आदि विभागों में कार्य करने वाला तथा कुटिल-कर्म करने में निपुण होता है। अपनी इस विशेषता के कारण ही यह अपने विभाग में उच्चपद प्राप्त करता है। २४ से ५० वर्ष की आयु तक यह पुलिस-सेवा में रहकर प्रतिष्ठित बना रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला होते हुए भी रुग्ण बनी रहती है। इसे सन्तान-कष्ट भी होता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहते हुए यह ६० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६६४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, ज्ञानी, गुणी, चंचल चित्त वाला तथा बहुत धनी होता है। यह विद्या-बुद्धि में प्रवीण, माता से अलग रहने वाला तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है। शिक्षा समाप्त करके यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है अथवा किसी सुदृढ़ आर्थिक-स्थिति वाले प्रतिष्ठान में कार्यरत होता है। यह निरन्तर उच्चपद, धन तथा सम्मान प्राप्त करता चला जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, धीर-गंभीर स्वभाव की तथा पति को सुख देने वाली मिलती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी सिद्ध होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा धनी-मानी होते हैं। यह जातक अपने पुत्रों द्वारा भी मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसे ६१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। जीवन के सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ यह [illegible] वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१७७५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणवान्, काव्य-संगीत आदि ललित-कलाओं का ज्ञाता, श्रेष्ठ-लेखक, सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, लोक-विख्यात तथा तुरन्त निर्णय लेने वाला होता है। विद्याध्ययन समाप्त करने के पश्चात् यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है तथा २५, २८ एवं ३० वें वर्ष में पदोन्नति प्राप्त करते हुए ३८ वर्ष की आयु में बहुत उच्च पद पर आसीन हो जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुशीला तथा तेजस्विनी कन्या के साथ होता है। पत्नी से सर्वत्र सहयोग प्राप्त होता है। इनका दाम्पत्य-जीवन बड़े सुख से बीतता है। इस जातक को कभी भी शारीरिक अथवा आर्थिक कष्ट नहीं होता। इसे अपने देश, परदेश तथा विदेश - सभी स्थानों से प्रचुर लाभ होता है। इसके पुत्र भी विवेकी और सुन्दर होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१७७६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान्, सुन्दर, कार्य-कुशल, सद्गुणी तथा अपने व्यवहार से सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। यह काव्य-साहित्य में रुचि रखने वाला, पैतृक-व्यवसाय द्वारा धन प्राप्त करने वाला तथा पिता के व्यवसाय को बहुत उन्नत स्थिति में ले जाने वाला होता है। यह माता से असन्तुष्ट रहता है। धन का अत्यधिक लोभी होता है, अतः अपने भाई-बन्धु एवं परिवारीजनों से भी धन के कारण वैमनस्य रखता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा सहयोगिनी होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं। यह जातक विलासी प्रकृति का होता है तथा अनेक स्त्रियों से संबंध रखते हुए उन पर अपने धन का विशेष व्यय करता है। परमायु ८१ वर्ष के लगभग होती है।

(१८७७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल चित्त वाला, शीघ्र निर्णय लेने वाला तथा अपने कार्यों को शीघ्रता से समाप्त करने का इच्छुक होता है। यदि किसी बात से इसकी भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो यह भला-बुरा सोचे बिना कुछ भी कर डालता है। बड़े-से-बड़े निर्णय को यह बहुत हल्के रूप में लेता है। फलस्वरूप धोखा भी खाता है। इसे आगे बढ़ते जाने की तीव्र लालसा रहती है। यह एक भी क्षण व्यर्थ नहीं खोना चाहता। यह २२-२३ वर्ष की आयु में अपना अध्ययन समाप्त कर, अपना कोई निजी व्यवसाय करने का प्रयत्न करता है। राजकीय-सेवा से भी इसे लाभ होता है और यह उच्च पद प्राप्त करता चला जाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा मनोनुकूला मिलती है। इसका भाग्योदय १६ वर्ष की आयु से ही हो जाता है तथा अनेक स्रोतों से धन-लाभ होता है। सुख सुयोग होते हैं। पूर्णायु ६५-६८ वर्ष के मध्य रहती है।

(१८७८) - यह जातक सिंह के समान पराक्रमी, उदार, अपने कामों को धीरे-धीरे करने वाला; दूसरों के कामों में बढ़कर सहायता देने वाला तथा इस कारण कष्ट भी उठाने वाला एक बहुत गुणवान, विद्वान तथा ज्ञानी होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी रुग्णा तथा अपने स्वभाव से पति को असन्तुष्ट रखने वाली होती है। यह जातक अपनी सन्तान की ओर से भी दुःखी रहता है, क्योंकि वह भी प्रतिकूल स्वभाव की एवं वृद्धावस्था में मानसिक-सन्ताप देने वाली होती है। यह राजकीय-सेवा में रह कर उच्च पद प्राप्त करता है तथा अपने परिश्रम द्वारा विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्त करता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों की सहायता करता है तथा वे भी इसका साथ देते रहते हैं। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ६८-६९ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१८७९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलिष्ठ, सबको प्रभावित करने वाला, उदार, सहृदय, पराये दुःख से दुःखी होने वाला, दीनों की सहायता करने वाला तथा काव्य-संगीत आदि में रुचि रखने वाला होता है। इसे क्रोध अत्यधिक आता है, परन्तु वह क्षणिक ही होता है। यह साहित्य-सर्जक एवं ग्रंथ-लेखक भी होता है। संगीत तथा काव्य में इसे विशेष रुचि होती है। भ्रमण का शौकीन भी होता है। अपने सामान्य उपकारी के प्रति भी यह अत्यधिक कृतज्ञ होता है। इसका भाग्योदय २१ वर्ष की आयु में होता है तथा इसे राज्य की सेवा में संलग्न होने का अवसर भी प्राप्त होता है। इसका विवाह भी २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी रुग्णा तथा कष्ट देने वाली मिलती है। वह विदुषी तथा शिक्षिता होते हुए भी क्षुद्र स्वभाव की होती है। बच्चे भी माता के अनुरूप होते हैं। पूर्णायु ६६ वर्ष की होती है।

(१८८०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार विचारों का, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु परिश्रम कम करता है, अतः सफलता प्रायः नहीं मिल पाती। यह किसी को हानि नहीं पहुँचाता, परन्तु भलाई के लिए सदैव प्रस्तुत बना रहता है। यह शीघ्र सन्तुष्ट हो जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशिक्षिता होने पर भी पति को सन्तुष्ट नहीं रख पाती, क्योंकि वह स्वयं भी जिद्दी स्वभाव की होती है। हानि-लाभ का विचार किये बिना वह अपनी मनमानी करती रहती है। बच्चों पर भी माता की इस आदत का दुष्प्रभाव पड़ता है और वे कोई उन्नति नहीं कर पाते। इस जातक के पास धन का अभाव नहीं रहता। राजकार्य अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान के कार्य से इसे देशान्तर में रहना पड़ता है। ४८वें वर्ष में जल-भय होता है। पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

भू० सं० १२८३

कु० २०

(१०८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त उदार प्रकृति का, सहृदय, सुन्दर तथा शत्रु को भी क्षमा कर देने वाला होता है। अपनी प्रशंसा सुन कर इसे प्रसन्नता होती है। खुशामदी व्यक्ति इससे मनचाहा लाभ उठा सकते हैं। इसे धन की कमी कभी नहीं रहती। २१ वर्ष की आयु से ही यह राजकीय-सेवा में चला जाता है तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धि के बल पर उन्नति करता हुआ उच्च पद प्राप्त कर लेता है। देशान्तर में जाकर इसे बहुत सम्मान मिलता है। यह अपने परिवार में भी सुविलक्षण माना जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह इसके सुख का पूरा ध्यान रखती है। पुत्र भी सुयोग्य निकलते हैं और वे अपने पिता को पूर्ण सुख एवं सम्मान देते रहते हैं। सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करके यह जातक ६८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१०८२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान्, विद्वान तथा धनवान होता है। यह २४ वर्ष की आयु तक किसी जिम्मेदारी के पद पर बैठकर धन तथा सम्मान प्राप्त करता है, तदुपरान्त निरन्तर उन्नति करता हुआ राजा के समान ऐश्वर्यशाली, बड़ा भू-स्वामी एवं अधिकार सम्पन्न व्यक्ति बनता है। २४ वर्ष की आयु के बाद इसे देशान्तर में विशेष सम्मान मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, आज्ञानुवर्तिनी तथा मनस्तोषदायिनी मिलती है। पुत्र भी सुयोग्य, सुशिक्षित तथा सेवाभावी होते हैं। इस जातक को अपने जीवन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। पुत्र-पौत्रों से युक्त सुखी परिवार में ऐश्वर्यशाली जीवन बिताते हुए यह ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१२८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, परिश्रमी तथा अपने अध्यवसाय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है। विद्याध्ययन समाप्त करके यह किसी अच्छे प्रतिष्ठान में नौकरी करके धनोपार्जन करता है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। वह इसके सुख का सदैव ध्यान रखती है। २४ वर्ष की आयु के बाद यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। धनागम के अनेक मार्ग खुल जाते हैं। २८ वर्ष की आयु तक यह बड़ा धनी तथा पूर्ण सुखी बन जाता है। अपने माता-पिता की ओर से इसे बाल्यावस्था में पूर्ण सुख मिलता रहता है, परन्तु युवावस्था में यह माता से द्वेष मानने लगता है। इसकी पत्नी बहुत भाग्यशालिनी होती है। उसके आते ही घर में लक्ष्मी का स्थायी-निवास बन जाता है। ४८ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(१२८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, परिश्रमी तथा अपने उद्यम से ही उन्नति करने वाला होता है। यह माता, पिता तथा देव-गुरु का भक्त होता है। २० वर्ष की आयु तक यह शिक्षा प्राप्त करता है। २३-२४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक प्रचुर धनोपार्जन कर लेता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा सुयोग्य मिलती है। वह जातक को निरन्तर अपना अनुगत बनाये रखती है। पत्नी द्वारा संचालित यह जातक शीघ्र ही धन-सम्पन्न होकर उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसके घर लक्ष्मी का स्थायी-निवास बन जाता है। इसके पुत्र सद्गुणी तथा जातक को सुख देने वाले होते हैं। वे पिता के धन तथा यश की वृद्धि करते हैं। विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ यह ७३ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १३८५

कु० र०

(१७८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, काव्य-साहित्य का प्रेमी, अत्यन्त उग्र तथा बहुत क्रोधी भी होता है। २२-२३ वर्ष की आयु तक यह अपनी शिक्षा पूरी कर लेता है, फिर राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर धनोपार्जन करता है। इसकी आय के अनेक साधन होते हैं। २९ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी हो जाता है। लगभग इसी आयु में यह राजकीय-सेवा त्याग कर अपना कोई निजी व्यवसाय आरम्भ करता है, जिसमें भाई-बन्धुओं का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। ५४ वर्ष की आयु तक यह जातक बहुत ऊँची स्थिति में पहुँच जाता है। इसे कभी दुःख नहीं मिलता। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। विवाह होने से पूर्व यह स्त्रियों के साथ भोग-विलास में मग्न रहता है, परन्तु विवाहोपरान्त सबको त्याग कर पत्नी का अनुगत बन जाता है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। परमायु ८४ वर्ष तक हो सकती है।

(१७८६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, काव्य-संगीत का ज्ञाता एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह उन कार्यों से धन प्राप्त करता है, जिसमें स्त्रियों का सहयोग रहता है। अनेक प्रकार के कौतुक-क्रीड़ा, विनोद वाले कार्यक्रमों से इसे धन की उपलब्धि होती है। इसकी आय के साधन भी अनेक होते हैं। २७ वर्ष की आयु में यह विशेष लोकप्रियता प्राप्त कर लेता है। इसके पास भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुख उपलब्ध रहते हैं। विवाह से पूर्व इसके सम्बन्ध अनेक स्त्रियों से रहते हैं। परन्तु २६ वर्ष की आयु में विवाह हो जाने पर वे सब छूट जाते हैं। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, स्नेहमयी, चतुर, बुद्धिमती तथा गुणवती होती है। जातक स्वयं को उसके प्रति पूर्णरूपेण समर्पित कर देता है। इसके पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। ५५ वर्ष की आयु तक सभी ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(१८८७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, गुणवान, विद्वान तथा धनी होता है। उन्नतिशाली कुल में जन्म लेने के कारण इसे बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त होते हैं। २३ वर्ष की आयु में यह अपना अध्ययन समाप्त कर लेता है। इसी आयु में इसका विवाह भी हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी, कलाओं की ज्ञाता, व्यवहार-कुशल तथा मधुरभाषिणी होती है। वह पति पर पूर्ण नियन्त्रण रखती है। जातक उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करता। विवाह होने पर ही जातक का भाग्योदय भी होता है। यह राजकीय सेवा अथवा किसी व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन कर, अपनी पैतृक-सम्पत्ति में अत्यधिक वृद्धि करता है। इसे भूमि, भवन, वाहन, सेवक, आभूषण, धन, सम्मान आदि किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। पुत्रादि सुयोग्य होते हैं। सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८८८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, परिश्रमी, स्वभाव से कुछ तेज तथा शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु तक यह विद्याध्ययन करता है, फिर राज्य में किसी सम्मानजनक पद को प्राप्त कर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह भी २४ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु वह जातक को सुख नहीं दे पाती। परिस्थितिवश वह जातक से अलग रहती है। यह जातक दीर्घकाल तक विदेश में रहता है। वहीं इसका भाग्योदय भी होता है। यश, मान, प्रतिष्ठा, धन, वाहन, भवन आदि सब प्रकार के सुख इसे उपलब्ध होते हैं। पुत्र सुयोग्य तथा दायित्वों का पालन करने वाले होते हैं और वे भी प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करते हैं। ४१ वर्ष की आयु में जातक को शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ६८ वर्ष की होती है।

भू० सं० १३८०

कु० २०

(१८८६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, कला-मर्मज्ञ, धनी तथा सौभाग्यशाली होता है। इसे अनेक स्त्रियाँ प्रेम करती हैं। यह स्वभाव से अत्यन्त रसिक तथा ठाठ-बाट का जीवन बिताने वाला तथा अपने मित्रों एवं प्रशंसकों से घिरा रहने वाला होता है। विद्यार्थी-जीवन से ही यह अपने साथी छात्रों तथा अध्यापकों को प्रभावित करता है तथा बड़ा होकर विभिन्न क्षेत्रों में सम्मान एवं लोकप्रियता प्राप्त करता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं करता, परन्तु इसका व्यावहारिक-ज्ञान विस्तृत होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मान-सम्मान को बढ़ाने वाली मिलती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(१८६०) - इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, प्रारंभिक काल में सामान्य आर्थिक-स्थिति का तथा सामान्य शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है, तथापि २५ वर्ष की आयु में ही यह अपनी व्यावहारिक-बुद्धि के बल पर यथेष्ट धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा दस वर्ष के भीतर ही बड़ा धनी हो जाता है। यह माता-पिता को सुख देता, घर को सँभालता तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। विवाह ३० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सौभाग्यशालिनी होती है। लोहे आदि धातुओं के निर्धारित व्यवसाय द्वारा यह विशेष धन कमाता है। अफसरों के साथ भोज-विलास में भी यह धन खर्च करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं। वे पिता को सुख देते हैं। पूर्णायु ७१ वर्ष की होती है।

(१८६१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, माता-पिता का भक्त, कुटुम्ब की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, धन-सम्पत्ति से युक्त तथा बड़ी मान-प्रतिष्ठा वाला होता है। यह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, तथापि राजकीय-सेवा से सम्बद्ध होकर कोई प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। कुछ दिनों तक पत्नी इससे अलग भी रहती है, तत्पश्चात् साथ रहना आरम्भ हो जाता है, उसी समय से इसका भाग्योदय भी आरम्भ हो जाता है। 32 वर्ष की आयु तक यह यथेष्ट धन अर्जित कर लेता है। इसे पहले तथा बाद में भी कभी धन सम्बन्धी कष्ट नहीं होता। यह बड़ा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। आयु के २६, २८, 32, ३५, ४२, ४८ तथा ५३ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होना सम्भव है।

(१८६२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सम्पत्तिशाली परिवार में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं करता। दोनों में सुन्दर, विनम्र तथा बुद्धिमान होता है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय द्वारा ही सम्पत्ति की वृद्धि करता है। इसका विवाह 21 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त यह अपना कोई स्वतन्त्र व्यवसाय भी आरम्भ करता है। यह परिवार के भाई-बन्धुओं के साथ मिलकर रहता है तथा सब का सहयोग भी प्राप्त करता है। यह स्वयं के परिश्रम से भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार की ऐश्वर्योपभोग सम्बन्धी वस्तुएं तथा प्रचुर सम्पत्ति उपार्जित करता है। धनी होने पर भी भाइयों के साथ इसके सम्बन्ध नहीं टूटते, इसके पुत्र भी सुयोग्य तथा उत्तरदायित्वों का पालन करने वाले होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१८६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा बाल्यावस्था से ही दुःख भोगने वाला होता है। इसकी पढ़ाई में रुकावटें आती हैं तथा यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। १५-१६ वर्ष की आयु से ही इसे नौकरी करके धनोपार्जन करना पड़ता है। जब यह १८ वर्ष का होता है, उस समय इसके पिता को बहुत कष्ट होता है। तब धन की कमी के कारण बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। किसी प्रकार घर का खर्च चलता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। तीन वर्ष बाद यह अपना निजी व्यवसाय करता है। आरम्भ में असफलता मिलती है, परन्तु बाद में सफलताएं मिलने लगती हैं। दस वर्ष तक गरीबी से घोर संघर्ष करने के बाद इसकी आर्थिक-स्थिति में सुधार आता है। पुत्र गुणवान होते हैं। वृद्धावस्था में धनी हो जाता है। परमायु ६८ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१८६४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अच्छे कुल में जन्म लेने वाला, बाल्यावस्था में अत्यधिक सुख पाने वाला, बड़ा विद्वान, बुद्धिमान तथा चतुर होता है। यह सुन्दर आवास में रहने वाला, सेवकों से युक्त, वाहन सम्पन्न, अत्यन्त धनी तथा बन्धु-बान्धवों को प्रेम करने वाला होता है। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय के अतिरिक्त स्वतन्त्र कारोबार भी करता है तथा यथेष्ट धनोपार्जन करता है। यह अपने आप में ही मगन रहने वाला तथा अन्य परिवारीजनों के प्रति विरक्ति का भाव रखने वाला होता है। वृद्धावस्था में यह पर्याप्त धनोपार्जन के उपरान्त भगवद्-भजन में लीन होकर साधु-संतों की संगति में अपना समय व्यतीत करता है। पुत्र पौत्र तथा गुणवान होते हैं। यह परमायु ७२ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१८६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गंभीर स्वभाव का, कला-मर्मज्ञ, गुणवान तथा किसी विशेष विषय में निष्णात होता है। यह विद्या-बुद्धि से युक्त, अध्ययनशील तथा संगीत में विशेष रुचि रखने वाला होता है। १९ वर्ष की आयु तक यह शिक्षा प्राप्त करता है फिर २१ वर्ष की आयु से धनोपार्जन करता है। इसे राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होता है तथा राजकीय-सेवा में रहकर भी धन कमा सकता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे विशेष ख्याति मिलती है। यह देश-देशान्तर में भ्रमण करता है तथा भ्रमण से मान-सम्मान तथा धन की उपलब्धि भी होती है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है, परन्तु वैवाहिक-सुख अधिक समय तक नहीं रहता। किसी अन्य स्त्री के कारण यह पत्नी से अलग हो जाता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह क्रियाशील रहता है तथा ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८६६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली, कान्तिवान सम्पन्न तथा गुणवान होते हुए भी अनेक व्यसनों में फँसे रहने तथा विलासी-स्वभाव के कारण समुचित लाभ उठाने में असफल रहता है। २३ वर्ष की आयु तक यह अपना समय निष्फल अध्ययन में व्यतीत करता है, क्योंकि कोई भी परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पाता। अन्ततः यह कोई निजी व्यवसाय करके अर्थोपार्जन करता है। यह नौकरी भी कर सकता है तथा उसके रहते हुए दूर-दूर की यात्राएँ करके सुख तथा लाभ उठाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में किसी सुन्दर तथा प्रभावशालिनी कन्या के साथ होता है। वह इसे तथा इसके माता-पिता को पूर्ण सुख देती है। सन्तान की ओर से इसे कष्ट होता है तथा चिन्ता भी बनी रहती है। ६४ वर्ष की आयु में यह बीमार पड़ता है तथा ६९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१७६७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गंभीर स्वभाव का, रूक्ष प्रकृति का तथा क्रोधी होता है। यह प्रत्येक बात की गहरी तह तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। यह नीतिज्ञ होता है तथा हर प्रकार के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने की कला में दक्ष भी होता है। इसके अध्ययन में विघ्न-बाधायें आती हैं, अतः यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, परन्तु सन्तान के संबंध में चिन्ता रहती है। परिपक्व आयु में पहले कन्या, फिर पुत्र की प्राप्ति होती है। विवाहोपरान्त यह पैतृक-व्यवसाय में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। २८ वर्ष की आयु में कोई स्वतन्त्र व्यवसाय भी आरंभ करता है। यह अपने जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा बड़े प्रयत्न से सभी सुख-साधनों को एकत्र कर लेता है। पूर्णायु ६८ वर्ष या ७६ वर्ष होती है।

(१७६८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, अनेक कलाओं का ज्ञाता, विद्वान, प्रभावशाली तथा वाक्पटु होता है। यह काव्य-संगीत में रुचि रखता है। शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं कर पाता तथा किशोरावस्था से ही अपने पैतृक व्यवसाय अथवा नौकरी में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। इसे देशान्तर से अपरत्व से लाभ होता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह धन्धे करना आरंभ कर देता है तथा उनसे धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के पास अधिक न रह पाने के कारण दाम्पत्य सुख में कमी रहती है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत सम्पत्ति अर्जित करता है तथा सब प्रकार के सुख-साधनों को जुटा लेता है। इसे पुत्र का सुख नहीं होता। पुत्री होती है। परमायु ६५ से ७५ वर्ष की होती है।

(१७९९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आमोद-प्रमोद प्रिय, विलासी, धनी तथा स्त्रियों में अधिक आसक्ति रखने वाला होता है। यह स्त्रियों के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का व्यवसाय करता है तथा उन्हीं के द्वारा धनोपार्जन भी करता है। इसे शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं होती। यह अपने ही अध्यवसाय से आगे बढ़ता है तथा कुछ समय तक पढ़ाई-नौकरी भी करता है। २२ वर्ष की आयु से यह घर से बाहर निकलना आरम्भ करता है तथा बाद में निरन्तर यात्राएं करता रहता है। देशान्तरों में भ्रमण से इसे पर्याप्त धन तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह लोहा आदि धातुओं के व्यवसाय से भी धन कमा सकता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह अपने व्यवसाय को बहुत बढ़ा लेता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक व्यवसाय शिखर पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु तथा कफ प्रकृति की मिलती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। भाई-बंधुओं से प्यार मिलता है। पूर्णायु ६९ वर्ष की होती है।

(१८००) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी उच्च कुल में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखी, संगीत-काव्य आदि अनेक कलाओं का ज्ञाता, सुन्दर, स्वस्थ तथा अध्ययनोपरान्त २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर सम्मान तथा धन उपार्जित करने वाला होता है। २५ से ४८ वर्ष तक की आयु में यह धन, मकान, वाहन आदि सब वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। ४८ से ५३ वर्ष तक का समय कष्टप्रद रहता है, तत्पश्चात् पुनः स्थिति में अत्यधिक सुधार हो जाता है। इसका धन भोग-विलास में अधिक खर्च होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं की ज्ञाता तथा अपने सद्गुणों के कारण सबको आनन्द प्रदान करने वाली मिलती है। वह सुन्दर तथा सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है, जो बड़े होकर पिता के सम्मान की वृद्धि करते हैं। इस जातक की पूर्णायु ७३ वर्ष की होती है।

भू० सं० ८३८३

कु० २०

(१८०१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यमकद का एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसे अनेक कलाओं का ज्ञान होता है। काव्य तथा साहित्य में भी विशेष रुचि रखता है एवं ग्रंथ-लेखक भी होता है। यह प्रशासनिक-कार्यों में पूर्ण दक्ष तथा नीति-निपुण होता है। प्रत्येक कार्य को बड़े धैर्य तथा समझदारी से करता है। 21 वर्ष की आयु में यह राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ करता है। 30 वर्ष की आयु में उच्चपदासीन होकर अन्यत्र चला जाता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती। वह मधुरभाषिणी, व्यवहारकुशल, स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखने वाली एवं सुन्दर पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। इस जातक को कभी कोई अभाव नहीं होता। सुखी जीवन बिताता हुआ यह ७८ वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१८०२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, तेजस्वी, अपने प्रभाव से चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करने वाला, वाक्पटु, उपदेश देने में कुशल तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह नेतृत्व-कुशल होता है तथा लोग इसके निर्देशानुसार चलते भी हैं। २४ वर्ष की आयु में शिक्षा समाप्त करके यह राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा अपने पराक्रम, अध्यवसाय एवं मधुर-व्यवहार से शीघ्र ही बहुत उच्च स्थान पा लेता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी भाग्यशालिनी होती है तथा जातक को ससुराल से भी धन का लाभ होता है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों में भी इसकी आसक्ति बनी रहती है तथा उनके कारण अपने काम को भी बिगाड़ लेता है। उच्च वर्ग की प्रतिष्ठित स्त्रियाँ ही इसके सम्पर्क में आती हैं। सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ६८ या फिर ७० वर्ष की दीर्घायु पाता है।

(१८०३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, [illegible] मनस्वी, नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न तथा अत्यधिक लोकप्रिय होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता, विज्ञान तकनीकी ज्ञान का विशेषज्ञ तथा वाक्पटु होता है। 23-24 वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त सरकारी-सेवा में उच्चपद प्राप्त करके अर्थोपार्जन करने लगता है। इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा गुणवती होती है। वह अपने स्नेह व्यवहार से पति को प्रसन्न बनाये रखती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय भी होता है। यह विवाद के एवं बन्धु-बान्धवों से लाभ प्राप्त करता है। अनुसन्धान संबंधी कार्य में संलग्न होकर 32 वर्ष की आयु में विशेष उन्नति करता है। इसके दो पुत्र पुत्री तथा बड़े सुयोग्य होते हैं। अन्त रोगों से भी यह अनुरक्षित रहता है। सम्पन्न तथा सुखी जीवन बिताते हुए यह ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८०४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, स्थिरचित्त वाला, धनी, मानी तथा उदार प्रकृति का होता है। यह सहानुभूति पूर्ण, परोपकारी तथा काव्य-संगीत का प्रेमी एवं ज्ञाता भी होता है। २५-२६ वर्ष की आयु तक उच्च विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह राज्य में अथवा किसी शिक्षा-संस्थान में प्रविष्ट होकर आजीविकोपार्जन आरम्भ करता है तथा कुछ ही दिनों में उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २६-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी सुन्दरी, तेजस्वी तथा सब प्रकार से योग्य प्राप्त होती है, परन्तु वह संतान के लिए दुःखी रहती है। इसे गर्भ प्रायः नहीं रहता और रहता भी तो स्राव हो जाता है। अन्त में बड़े प्रयत्न से एक बालक प्राप्त होता है। ५३ वर्ष की आयु में यह अत्यन्त उन्नति करता है। परिजनों से भी इसके संबंध रहते हैं। इसकी परमायु ७४ अथवा ७९ वर्ष की होती है।

भु० सं० १८२४

कु० र०

(१८०५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, काव्य-सर्जक, साहित्य-प्रेमी, अनेक कलाओं का ज्ञाता, किसी विषय का विशेषज्ञ तथा अपनी योग्यता के बल पर राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। २८ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक सम्मान प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी होती है। वह स्वभाव से चंचल, अपने रूप, सम्मान तथा पैतृक-सम्पत्ति का गर्व करने वाली तथा कुछ कठोर प्रकृति की होने के बावजूद विवेकशील तथा उदार मन की भी होती है। वह जातक के धन को अपने ऊपर तथा अच्छे कार्यों में भी व्यय करती है, जबकि जातक स्वयं कृपण स्वभाव का होता है। यह जातक ३७-३८ वर्ष की आयु में अत्यधिक उन्नति कर लेता है। ४५ एवं ४८ वर्ष की आयु में पदोन्नति एवं ५१ वर्ष की आयु में किसी विशेष महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करता है। सुखपूर्वक ८३ वर्ष की आयु पाता है।

(१८०६) - यह जातक सुन्दर, अनेक विषयों का ज्ञाता, ज्ञानी तथा बुद्धिमान होते हुए भी ऐसे कार्य करता है, जो इसी के लिए कष्टप्रद सिद्ध होते हैं तथा पूर्व के बने बनाये कार्यों को बिगाड़ देते हैं। यह कुछ समय के लिए जुआ खेलने आदि व्यसनों में भी पड़ जाता है, बाद में उनसे विरक्त होता है। इसे गूढ़ कार्यों तथा ज्योतिषादि से लाभ होता है। ऐसे-वैसे लोगों से भी लाभ होता है, जो सामान्यतः इससे कोई संबंध ही नहीं रखते और न जिनसे कुछ लाभ होने की आशा ही रहती है। यह राजमान्य व्यक्ति के रूप में भी लोक-प्रतिष्ठित होता है। यह अनेक रूपों में कार्य करता है तथा इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला होती है तथा सन्तानें भी सुयोग्य निकलती हैं। यह जातक अपने जीवन के सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८०७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थिर चित्त, स्वाभिमानी, अत्यन्त साहसी तथा अपने अध्यवसाय से बड़े कठिन कामों को भी पूरा कर दिखाने वाला होता है। यह बड़ा जिद्दी, साहसी, चतुर तथा यशस्वी होता है। इसे कोई धोखा नहीं दे पाता। यह दुष्टों को उचित दण्ड देने वाला तथा अपने स्नेही, परिजनों एवं दीन-दुःखियों का मित्र होता है। ईश्वर भक्त होने के साथ ही यह अनेक प्रकार के व्यवसाय करनेवाला तथा भूमि से लाभ उठाने वाला होता है, परन्तु खर्चीली प्रकृति का होने के कारण सदैव धन की कमी का ही अनुभव करता रहता है। इसका विवाह २३-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला, सती, गुणवती, सुन्दर पुत्र पुत्रियों को जन्म देने वाली तथा धन का संचय करके पति को सुखी रखने वाली होती है। यशस्वी जीवन बिताता हुआ यह जातक ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८०८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मधुर स्वभाव का, चित्रकार, लेखन-कार्य में कुशल तथा अत्यधिक ख्याति प्राप्त कलाकार होता है। यह सर्वत्र विशेष सम्मान पाता है। राज्य द्वारा भी इसे मान किया जाता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करने का विशेष इच्छुक रहता है। २७ वर्ष की आयु तक यह अध्ययन करता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा जातक को सुख देने वाली मिलती है। यह जातक अपने जीवन के ३०, ३५, ३८, ४६ तथा ४८वें वर्ष में विशेष सम्मान तथा धन प्राप्त करता है। इसके परिवारीजन इसे सहयोग करते हैं तथा पुत्र सुयोग्य एवं गुणवान निकलते हैं। इसके पास धन का कोई अभाव नहीं रहता। विवाहोपरान्त यह एक प्रकार से स्वतन्त्रता पूर्ण सुखी जीवन व्यतीत करता है। इसकी परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१८०९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी चंचल चित्त का, क्रुद्ध, तुरन्त निर्णय लेने वाला, तीव्र धन का त्यागी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसे कुछ वस्तुएं पसन्द होती हैं। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा २४ वर्ष की आयु में ही शासन अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। यह कूटनीतिज्ञ होता है तथा कोई इसे धोखा नहीं दे पाता। पैनी दृष्टि वाला यह जातक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २६, २८, ३४ तथा ४२ वें वर्ष इसके लिए बड़े सम्मानदायक तथा लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने पुरुषार्थ को दांव पर लगाने तथा हानि उठाकर भी कठिन काम करने के लिए प्रस्तुत रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की तथा तेजस्विनी भी होती है। वह जातक पर अपना प्रभाव रखती है। पुत्र अनेक होते हैं। परमायु ६५ अथवा ७८ वर्ष की होती है।

(१८१०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, ज्ञानी, काव्य-साहित्य में रुचि रखने वाला अथवा इनका सर्जक तथा अपनी बुद्धिमानी से लोगों को अपने अनुकूल बनाये रखने में कुशल होता है। विद्याध्ययन के पश्चात २४-२५ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करने लगता है। यह परदेश में रहकर विपुल यश, धन तथा सम्मान अर्जित करता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। धन-संचय की प्रवृत्ति होने के कारण यह बहुत धन इकट्ठा कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुख देने वाली तथा सौभाग्यशालिनी होती है। जातक उसकी इच्छानुसार चलता है। वह सौभाग्यशाली सुयोग्य पुत्रों को जन्म देती है। सब प्रकार से सुख-सम्पन्नता का जीवन बिताता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८९१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, दूरदर्शी, बुद्धिमान, मन की बात छिपाने में चतुर तथा पूर्ण शिक्षित होता है। यह जो कहता है, उसे स्वयं भी माने - यह आवश्यक नहीं है। यह किसी विषय का विशेषज्ञ भी होता है तथा २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान से संलग्न होकर जीविकोपार्जन आरम्भ करता है। इसकी उन्नति में बहुत रोड़े आते हैं। शत्रु तथा विरोधियों के अतिरिक्त बन्धु-बान्धव भी दुःखी करते हैं। परिवारीजनों की ओर से भी इसे दुश्चिन्ताएँ रहती हैं। परन्तु इन सब विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी यह उन्नति करता है तथा धन भी कमाता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसे बहुत सुख देती है तथा यह उसी की राय पर चलता भी है। पुत्र सुयोग्य तथा भाग्यशाली होते हैं। धन-सम्पत्ति से युक्त ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८९२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नत कद का, गौरवर्ण, गम्भीर स्वभाव का, उदार, सहानुभूति पूर्ण, दयालु तथा परोपकारी होता है। यह दूसरों को सामान्य लाभ पहुँचाने के लिए अपनी बड़ी हानि भी सहन कर लेता है। इसे कई स्रोतों से आर्थिक-लाभ होता है। २३ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह कलाकृति का रसिक एवं ललित-कलाओं का ज्ञाता होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी मन के अनुकूल नहीं होती, अतः दाम्पत्य-सुख में कमी रहती है। सन्तान से सुख अवश्य मिलता है। ४५ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक सम्मान प्राप्त करता है। सामान्यतः २५, २८, ३२, ३५, ४२, ४५, ४८, ५२ एवं ५५ वें वर्ष इसे विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसकी परमायु ६८ अथवा ७३ वर्ष की होती है।

(१८२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त उदार, सुन्दर, सर्वप्रिय, बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञाता एवं अपने परिवार का मुखिया होता है। २३ वर्ष की आयु तक यह विद्याध्ययन करता है। तत्पश्चात २८ वर्ष की आयु तक यह अर्थोपार्जन हेतु अनेक कार्य, कारोबार तथा नौकरी आदि करता है। यह अपने साहस तथा परिजनों के सहयोग से निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। इसकी सौभाग्य वृद्धि में भी इसका कोई परिजन ही सहायक बनता है। उसकी सहायता से ही यह उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है। फिर इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल नहीं मिलती। वह गर्व तथा जातक को दुःख देने वाली होती है। यद्यपि धन-संग्रह करने में कुशल होती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ६२ वर्ष की होती है।

(१८२४) - इस जन्मकुण्डली में अत्यन्त सुरूप सुन्दर, गम्भीर, विद्वान, गुणवान, काव्य-साहित्य आदि कलाओं का ज्ञाता, चित्रकला में विशेष दक्ष, रसिक स्वभाव का तथा प्रियवादी होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। इसकी शिक्षा भी उत्तम प्रकार से होती है। अध्ययनोपरान्त यह राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठित सेवा में पहुँचकर जीविकोपार्जन आरम्भ करता है। २६ वर्ष की आयु से यह विशेष लाभ उठाता है तथा २८ वर्ष की आयु में ही उच्च पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी, समझदार तथा बुद्धिमान पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। वह जातक को सुखी रखती है तथा स्वयं भी पति तथा पुत्रों द्वारा सुख प्राप्त करती है। कभी-कभी पति से मतभेद भी हो जाता है, परन्तु वह गम्भीर नहीं होता। सुखी तथा सम्मानित जीवन बिताता हुआ यह जातक ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

<u>(१८२५)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, मधुरभाषी तथा अपने सद्‌व्यवहार से सब को आकर्षित करने वाला होता है। २३-२४ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करके यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इस अवधि में इसके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव भी आते हैं। माता-पिता के सुख से वंचित रहना पड़ता है। माता के धन को नष्ट करता है तथा पिता से भी इसका मनमुटाव रहता है। अध्ययन समाप्ति के तुरन्त बाद ही इसे कोई कार्य नहीं मिलता। २६ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन आरंभ करता है तथा १० वर्ष तक एक ही स्थान पर रहकर धन कमाता है। लगभग ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत सम्पत्तिशाली हो जाता है। इसका विवाह २३-२८ वर्ष की आयु में होता है। यह पत्नी को कभी संतुष्ट नहीं कर पाता। उससे मतभेद रहता है। पुत्रियाँ अपनी माँ के साथ अलग रहते हैं। यह ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

<u>(१८२६)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्पष्टवादी, तेजस्वी, अध्ययनशील, कलाओं का जानकार, साहित्य-मर्मज्ञ तथा धन-सम्पन्न होता है। यह अपने गुणों द्वारा अन्य लोगों को प्रभावित करता है। २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर बहुत लाभ प्राप्त करता है। यह माता से प्रेम तो रखता है, परन्तु उसके धन को नष्ट करता है। पिता से द्वेष रखता है। बाद में यह अपने चिन्तन व व्यवसाय द्वारा जीवन में अत्यधिक उन्नति करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से इसका मतैक्य नहीं हो पाता। पुत्र सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं, परन्तु उनसे भी इसे प्रेम नहीं होता। वे अपनी माता के साथ अलग रहते हैं तथा अपने पिता अर्थात् जातक के प्रति उदासीन बने रहते हैं। यह जातक सामान्य सुखी जीवन बिताते हुए ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ८३३७

कु० र०

(१८२७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, काव्य-नाटक आदि का प्रेमी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसे अपने प्रारम्भिक जीवन में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। जैसे-तैसे शिक्षा पूरी करके यह राजकीय-सेवा में संलग्न होता है तथा प्रदेश या विदेश में जाकर पर्याप्त उन्नति करता है। २३ से ३५ वर्ष की आयु में यह प्रचुर धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। बाद में भी यह निरन्तर प्रगति करता चला जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धीर-गंभीर स्वभाव की तथा पति की अनुगता होती है। वह जातक को पर्याप्त सुख तथा एक श्रेष्ठ पुत्र भी देती है। दाम्पत्य-जीवन बड़ा उत्साह पूर्ण बना रहता है। यह जातक अपने कुल का दीपक बनता है तथा भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख प्राप्त करता है। केवल ४८ वर्ष की आयु में ही यह किसी दुर्घटना का शिकार होकर परलोकवासी होता है। इससे बचने पर ७२ वर्ष की आयु पाता है।

(१८२८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। धनी परिवार में जन्म लेने के कारण इसे भविष्य में भी किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। यह सुन्दर, गुणवान, अपने व्यक्तित्व से सब को आकर्षित करने वाला, गौरवर्ण तथा मध्यम कद का होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर सरकारी-सेवा में नियुक्त होता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ३७ वर्ष की आयु तक पूर्ण सुखी धनी तथा यशस्वी हो जाता है। ३८ वर्ष की आयु में इसे किसी आकस्मिक कारण से कष्ट होता है, जिससे एक वर्ष में छुटकारा मिल जाता है। इसका विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी तथा सौभाग्यवती होती है। इसके पुत्र भी सुयोग्य होते हैं और बड़े होकर सुख देते हैं। ५२ वर्ष की आयु में यह धार्मिक कृत्यों में अधिक मन लगाता है। जीवन के ३८, ४५, ४८ तथा ५३ वें वर्ष में संकट आते हैं। इनसे निकलता हुआ ७१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१८१९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मधुर भाषी, संगीत-काव्य आदि कलाओं का ज्ञाता, साहित्य-सर्जक तथा उच्चकोटि का विद्वान होता है। यह २४ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त कर राजकीय अथवा किसी अन्य सेवा कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा जल्दी-जल्दी पदोन्नति करता हुआ उच्च शिखर पर जा पहुँचता है। इसके पास धन की कमी नहीं रहती, क्योंकि इसकी आय के साधन अनेक होते हैं। २८ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक धन का लाभ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वह पति को स्नेह करती है तथा आज्ञानुसार चलती है। इसके सन्तानें विलम्ब से होती हैं। सन्तानें सुन्दर तथा माता-पिता को सुखदायक सिद्ध होती हैं। इसे कभी धन की कमी नहीं रहती तथा शारीरिक-कष्ट भी नहीं होता। पूर्णायु ७१ वर्ष की होती है।

(१८२०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति शरीर से बलिष्ठ, व्यवहार से खरा, स्व-केन्द्रित तथा स्वार्थ-पीड़ित होता है। स्वार्थी होने के कारण यह अपने परिवारीजनों में भी लोकप्रिय नहीं होता। यह राजकीय-सेवा द्वारा सुखों का उपभोग करने वाला तथा स्वार्थ-सिद्धि के उपरान्त किसी की भी परवाह न करने वाला होता है। यह अपना धन किसी को नहीं देता। पैतृक-धन को भी प्राप्त करता है तथा सब लोगों को अपना आज्ञानुवर्ती देखना चाहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी आयु में कई वर्ष छोटी, चंचल चित्त की, मधुर भाषिणी, व्यवहार कुशल तथा अपने शौक-शृंगार पर अधिक धन खर्च करने वाली होती है। जातक का अपनी पत्नी से मतैक्य नहीं हो पाता, तथापि वह जातक को अपने वश में ही बनाये रखती है। पुत्र उत्तम तथा सुयोग्य होते हैं। परमायु ७२ वर्ष की होती है।

(१८२१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बलिष्ठ, कुशलवक्ता, मधुरभाषी तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। यह पिता का भक्त, पैतृक-व्यवसाय की वृद्धि करने वाला, उदारहृदय तथा स्वभाव से उदार दानी होता है। २५ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त करके यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर तथा परदेश में रहकर विशेष उन्नति प्राप्त करने वाला भी हो सकता है। इसका विवाह भी २५-२६ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी बुद्धिमान, सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली निकलते हैं। यह अपने प्रभाव तथा पराक्रम से राज्य से भी सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अपने बच्चों के विवाह आदि कार्य भी यह परदेश से ही करता है। इसके जीवन में रोग भी बहुत आते हैं और यह उनसे जूझने में आनन्द लेता है। परिवारी जन सम्मान तो करते हैं, परन्तु सहायता नहीं करते। पूर्णायु ६५ अथवा ७१ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१८२२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, हठी, क्रोधी, अपने ही मन की करने वाला तथा अपनी ग़लती को दूसरों के सिर थोपने का आदी होता है। यह बड़ी कठिनाई से ही कभी किसी पर प्रसन्न हो पाता है। २५ वर्ष की आयु में यह राज्य के किसी अनुशासनात्मक पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके धन में वृद्धि होती रहती है। इसके सुख के साधन भी बढ़ते ही चले जाते हैं। इसे बन्धु-बान्धवों के लिए कोई नवीन कार्य करने का सुयश भी प्राप्त होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, क्रियाशील तथा ऐश्वर्योपभोग में रुचि रखने वाली होती है। वह चंचल स्वभाव की तथा मनस्विनी होती है। सन्तानें श्रेष्ठ, सुन्दर तथा सद्गुणी होती हैं। यह जातक अपने परिवारीजनों की आर्थिक उन्नति के लिए भी बहुत प्रयत्न करता है तथा सुखी जीवन बिताता हुआ ६० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(९८२३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल शरीर, कुछ लम्बे कद का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। यह व्यवहार-कुशल, मधुरभाषी, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा बड़ा विद्वान् होता है। इसकी विद्वत्ता के समक्ष बड़े-बड़े लोग नतमस्तक होते हैं। यह राजकीय-सेवा में बहुत ऊँचा पद प्राप्त करता है। यह सुवक्ता, शिक्षक, कठोर-अनुशासन-प्रिय तथा अवज्ञा करने पर अपने अत्यन्त समीपी व्यक्ति को भी क्षमा न करने वाला होता है। इसे सुन्दर, क्रीड़ामय, विलास पूर्ण एवं सुरम्य कार्यों तथा स्थानों से विशेष आमदनी होती है। इसे राजकीय सेवा में भी पर्यटन, होटल, वन-विभाग आदि किसी ऐसे ही विभाग में नियुक्ति मिलती है। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी होनहार होते हैं। ४८ वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होता है। परमायु ६८ वर्ष।

(९८२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कुछ स्थूल शरीर का, मध्यम कद वाला, गौर वर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह बाल्यावस्था से ही अनेक विषयों की जानकारी में रुचि रखने वाला, ग्रन्थ-लेखक तथा बड़ा होकर अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित करने वाला होता है। यह दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला, सच्चरित्र एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला तथा परोपकारी होता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त यह आजीवन आनन्दोपभोग करता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा आकर्षक होती है। जातक उससे बहुत प्रेम करता है, परन्तु अन्य स्त्रियाँ भी इसकी ओर आकर्षित होती हैं और यह उनसे भी प्रेम-सम्बन्ध बनाये रखता है। इसके पुत्र होनहार होते हैं तथा वृद्धावस्था में सेवा करते हैं। इसकी परमायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

भु० सं० ८३२५

कु० र०

(१८२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, धैर्यवान, सद्गुणी, विद्वान, किसी विषय का विशेषज्ञ तथा अत्यन्त तेजस्वी होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता तथा आंशिक जीवन में कष्ट पाने वाला होता है। इसे माता का सुख प्राप्त नहीं होता। अध्ययनोपरान्त २५ वर्ष की आयु में यह किसी अनुशासन संबंधी सरकारी विभाग अथवा शिक्षालय आदि में प्रविष्ट होकर धनोपार्जन आरंभ देता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में सुन्दरी, स्नेहशीला तथा वास्तु कला के साथ होता है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध रहते हैं, क्योंकि स्त्री-वर्ग के प्रति यह विशेष दुर्बलता लिए रहता है। अपने कार्यों की हानि करके भी यह भोग-विलास में लिप्त होता है। इसे शत्रुओं का भय नहीं होता। यह जिस प्रकार खूब कमाता है, उसी प्रकार खूब खर्च भी करता है। इसको ७३ अथवा ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(१८२६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, कुछ स्थूल शरीर का, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह सामान्य-स्थिति के परिवार में जन्म लेकर भी अपने अध्यवसाय, परिश्रम तथा बुद्धिमत्ता के बल पर बहुत उच्च स्थान प्राप्त कर लेता है। ३० वर्ष की आयु में यह अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर, अपने कुल में मुखिया का पद पा लेता है। यह २० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे मित्र श्रेणी के लोगों से धन प्राप्त होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कार्यकुशल, सुन्दर, मधुरभाषिणी तथा धन की तृष्णा रखने वाली होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। साथ ही इस जातक के अन्य स्त्रियों से भी प्रेम-संबंध रहते हैं। संतानें योग्य तथा सुन्दर होती हैं। सम्पूर्ण जीवन सुखी, धनी तथा स्वस्थ रहते हुए बीतता है। पूर्णायु ६५ वर्ष की होती है।

(१८२७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गंभीर, अत्यन्त साहसी, कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से भी संघर्ष करने वाला तथा स्वपराक्रम से भाग्योन्नति करने वाला होता है। इसे किसी बड़े कारखाने आदि से बहुत आमदनी होती है। यह विशाल धन का स्वामी होता है। २५ वर्ष की आयु में यह देशान्तर में भ्रमण कर धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। यह संगीत-प्रेमी तथा संगीतज्ञ के रूप में भी सम्मानित होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह विशेष धन तथा सम्मान आदि अर्जित करता है। इसका विवाह विलम्ब से होता है तथा पत्नी का पूर्ण सुख भी इसके भाग्य में नहीं होता। यह काफी समय तक पत्नी से अलग रहता है, किन्तु उसे किसी भी रूप में खो देता है। इसे अन्य स्त्रियों के कारण से लाभ होता है। इसको बहुत विलम्ब से केवल एक पुत्र अथवा पुत्री की उपलब्धि होती है। यह केवल ६० वर्ष की ही परमायु प्राप्त करता है।

(१८२८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, साँवले रंग का, कुछ अहंकारी, बाल्यावस्था से ही माता से अलग रह कर शिक्षा प्राप्त करने वाला, ईश्वर-भक्त, तीर्थाटन से प्रसन्न होने वाला, तेजस्वी, उच्च पद प्राप्त करने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, लोकप्रिय तथा अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करने वाला, आर्थिक-दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होता है। ३० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन तथा यश अर्जित कर लेता है, साथ ही किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा आत्म-विश्वास के बल पर पैतृक-सम्पत्ति को अपने भाइयों के हित में त्याग देता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, स्वस्थ, धार्मिक, परन्तु क्रोधी होती है। वह जातक को सुख नहीं दे पाती, अतः दाम्पत्य-सुख का अभाव बना रहता है। इसकी पुत्रियाँ सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। परमायु ६० वर्ष की होती है। मृत्यु आकस्मिक रूप से होती है।

भु० सं० १३३८

कु० २०

(१८२९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, यशस्वी, धार्मिक, ईश्वर भक्त, तीर्थाटन का प्रेमी तथा धार्मिक एवं सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार चलते हुए अत्यधिक यश एवं सम्मान पाने वाला होता है। इसे राज्य, चोर अथवा अग्नि से भय रहता है। यह शरीर से स्वस्थ, इकहरा, साहसी, परिश्रमी, बलवान तथा विपुल भूमि, भवन एवं विविध सम्पत्ति का स्वामी होता है। यह दुःखों की सहायता में तत्पर रहने वाला, परोपकारी, दानी तथा उदार स्वभाव का भी होता है। यह बाल्यावस्था में ही माता से अलग रहता है तथा बाद में अपने अध्यवसाय से उन्नति करता हुआ उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। यह राज्य के किसी कार्य में संलग्न होकर अथवा वाणिज्य द्वारा अन्य प्रकार से आजीविका प्राप्त करता है। ३२ वर्ष की आयु तक यह विशेष उन्नति कर धन एवं मर्यादा से सम्पन्न हो जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ६२ वर्ष।

(१८३०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धनी, गुणी, सुन्दर, स्थिर चित्त वाला, परिश्रम करने वाला, स्वभाव से जिज्ञासु एवं कष्ट-सहिष्णु होता है। यह अपने शत्रुओं के प्रति भाईचारे की भावना नहीं रखता। विद्याध्ययन में भी इसे अनेक बाधायें आती हैं। २३ वर्ष की आयु में यह अर्थोपार्जन करने लगता है। इसे राज्य की ओर से भी बहुत सम्मान प्राप्त होता है। यह यदि कहीं नौकरी करता है तो अपने अधिकारियों एवं अधीनस्थ कर्मचारियों में विशेष लोकप्रिय बना रहता है। यह शत्रुओं से पीड़ित होने के बाद अन्त में उन्हें पराजित भी कर देता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्विनी होती है। पुत्र-पुत्रियाँ सुयोग्य होते हैं। ३९ वर्ष की आयु में यह कोई व्यवसाय आरम्भ करता तथा उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। इसकी आयु ६२ अथवा ६९ वर्ष होती है।

(१८३१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, बहुत धनी तथा अनेक प्रकार के कार्यों, व्यवसायों एवं व्यक्तियों से लाभ उठाने वाला होता है। यह जहाँ भी रहता है, वहीं का प्रभाव बन जाता है। बाल्यावस्था में रोगादि से कष्ट पाता है। इस कारण अध्ययन में भी बाधा पड़ती है। किसी बन्धु-बान्धव अथवा परिवारीजन के कारण कष्ट उठाता है। किसी प्रकार अच्छी शिक्षा पाकर यह देशान्तर में प्रवास करता है और वहीं रहकर धनी तथा सम्मानित भी बनता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी तथा सुखी हो जाता है। परन्तु सन्तान के लिए दुःखी रहता है। धन की तृष्णा से भी यह सदैव पीड़ित रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मितव्ययी तथा पति को अपने वश में रखने वाली होती है। इसके पास धन बहुत एकत्र हो जाता है। परन्तु संतान का अभाव दुःखी बनाये रखता है। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है।

(१८३२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ा धैर्यवान, युक्ति से कार्य लेने वाला, अपने विचारों का दृढ़ रहने वाला, कर्म-विश्वासी, ईश्वर आदि पर आस्था रखने वाला तथा चिन्तन-विचारक होता है। २२ वर्ष तक विद्याध्ययन करने पर भी शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति नहीं कर पाता। अपने अध्यवसाय एवं उद्योग से यह ३० वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। पैतृक-सम्पत्ति का भी इसे लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी योग्य एवं बुद्धिमती होती है। वह जातक को उचित सलाह देती तथा अपने वश में भी रखती है। इसे शत्रुओं से भय होता है तथा रोग कष्ट भी सताते हैं। संतानें सुयोग्य तथा आज्ञापालक होती हैं। कुल मिलाकर यह सुखी तथा सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करता है। शारीरिक-दृष्टि से कभी-कभी कमजोर हो जाता है। यह ६३ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१८३३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान्, बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञाता, विद्वान् तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। यह सदैव उच्चावस्था की स्थिति में रहता है। जहाँ इसके सम्मान में कमी की सम्भावना हो, वहाँ यह कभी नहीं जाता। ईश्वरीय कृपा के प्रभाव, धन तथा ऐश्वर्यों की उपलब्धियाँ बनी रहती हैं। यह अपने व्यवसाय द्वारा व्यापार एवं राजकीय सेवा - दोनों के द्वारा पर्याप्त धन तथा यश का उपार्जन करता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आयु में ५-६ वर्ष छोटी, सुन्दरी, खर्चीली, चंचल स्वभाव की तथा धन का अपव्यय करने वाली मिलती है, परन्तु जातक के पास धन की आमदनी बहुत रहती है, अतः पत्नी के खर्चीले स्वभाव का कोई असर नहीं पड़ता। यह व्यवसाय द्वारा बहुत सम्पत्ति एकत्र करता है। पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं तथा उनसे सुख कम ही मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१८३४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थिर विचारों का, विशाल-हृदय का तथा परोपकारी होता है। यह दयालु, वाक्पटु तथा अपने पाण्डित्य द्वारा सबको प्रभावित करने वाला होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं में निपुण तथा परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली मिलती है। वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। सुन्दर पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है, जो आगे चल कर आज्ञाकारी होते हैं। इस जातक को राज्य द्वारा भी धन का लाभ होता है। सामान्यतः यह अपने व्यवसाय से अधिक धन कमाता है। सन्तानों में पुत्र उतने योग्य नहीं होते, जितनी कि एक पुत्री होती है। इसे ३५, ४०, ४८ तथा ५३ वर्ष की आयु में बहुत धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। इसे कभी अरिष्ट नहीं होता। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है।

भु० सं० ८६००

कु० र०

(१८३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद, स्थूल शरीर तथा विशाल नेत्रों वाला होता है। यह अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, काव्य - साहित्य का रसिक तथा पूर्ण शिक्षित होता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी ऐसे संस्थान के उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है, जहाँ बहुत से लोग काम करते हों। यह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों, उच्चअधिकारियों तथा जनता में समान रूप से लोकप्रिय होता है। यह अपनी कार्य - प्रणाली में किसी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं कर पाता तथा बाधा उपस्थित करने वाले बंधुओं की भी उपेक्षा करके उन्हें अपना अनुगत बना लेता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी बहुत आकर्षक तथा स्वतन्त्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह आमोद के सहायिका बनती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१८३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उच्च शिक्षित, अनेक कलाओं का ज्ञाता, अपने मतानुसार परिवारजनों को चलाने वाला, अपना प्रभावशाली तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह २५ वर्ष की आयु से राजकीय सेवा में संलग्न हो जाता है तथा शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे राज्य द्वारा निवास, वाहन, भवन आदि सब प्रकार की सुख-सुविधायें उपलब्ध कराई जाती हैं। यह वैभवशाली - जीवन व्यतीत करने वाला, लोक - सम्मानित, यशस्वी तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्न होता है। इसके यश तथा पराक्रम का लाभ परिवारजनों को भी मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुखदायिनी होती है। विवाह के बाद ही भाग्योदय होता है तथा धन की कोई कमी नहीं रहती। पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा यशस्वी होते हैं। परमायु ७९ वर्ष की प्राप्त होती है।

भु० सं० १८०३८

कु० र०

(१८०३७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का जानकार, किसी महान लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील, अत्यन्त प्रभावशाली तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। इसे साहित्य आदि कलाओं में विशेष रुचि होती है। यह २४ वर्ष की आयु में ही किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है तथा अपने उत्तरदायित्वों का भली भाँति निर्वाह करता हुआ देश-विदेश में आधिक सम्मान प्राप्त करता है। ३८ वर्ष की आयु में यह बड़ा धनी हो जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत-नृत्य निपुणा, महत्वाकांक्षिणी तथा हर प्रकार से प्रेम-सहयोग देने वाली ~~मिलती~~ है। यह जातक के संगी-साथियों में भी प्रिय होती है तथा जातक भी उससे बहुत प्रभावित रहता है। पुत्र भी होनहार तथा तेजस्वी होते हैं। जीवन के २६, २८, ३२, ३८, ४२, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१८०३८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था में रोगी रहता है, परन्तु बाद में आजीवन रोग-मुक्त बना रहता है। यह सुन्दर, गुणवान, उच्च शिक्षित, किसी विषय का विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली होता है। यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर विपुल धन ~~तथा~~ सम्मान अर्जित करता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यह देश-देशान्तरों में भ्रमण करता है तथा मान-सम्मान एवं धन-सम्पत्ति अर्जित करता है। यह बन्धु-विहीन होता है तथा मित्रों से भी कम ही सम्बन्ध रखता है। यह भोग-विलास में विशेष रुचि लेता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उसकी महत्वाकांक्षाएँ भिन्न प्रकृति की होती हैं, अतः जातक का उससे मतैक्य नहीं हो पाता। यह अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसको पुत्र सुख की उपलब्धि भी कठिनाई से ही होती है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१८३९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कलाकार, संगीतज्ञ, कवि, सुशील, बन्धु-बान्धवों से युक्त, परन्तु उनसे विघ्न-बाधायें पाने वाला, माता-पिता का प्रिय, कुल में श्रेष्ठ, वंश की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला, पिता के व्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाने वाला तथा २४ वर्ष की आयु में ही पैतृक-व्यवसाय को सम्हाल लेने वाला होता है। इसका विवाह भी २३-२४ वर्ष की आयु में ही होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, परम सौभाग्यशालिनी तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली, गुणवती एवं बुद्धिमती होती है। यह राज्य की सेवा में भी नियुक्त हो सकता है परन्तु २६ वर्ष तक कहीं स्थिर नहीं हो पाता। तत्पश्चात यह अपने पराक्रम एवं योग्यता के आधार पर देश-विदेश में सम्मान तथा धन अर्जित करता है। यह भोग-विलास युक्त जीवन का आदी होता है तथा परस्त्रियों में भी आसक्त रहता है। सन्तानें उत्तम होती हैं। पूर्णायु ७९ वर्ष की होती है।

(१८४०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उच्च पद को प्राप्त करने वाला, गुणवान तथा सम्पन्न परिवार में जन्म लेने वाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २१ से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बड़ी सुशील तथा सुन्दर होती है। वह जातक की आज्ञाओं का पालन करती हुई सदैव सुखी बनाये रखती है। सन्तान के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता रहती है। किन्तु विलम्ब से दो पुत्र प्राप्त होते हैं। यह राज्य द्वारा उच्च पद देकर सम्मानित किया जाता है। ४५ वर्ष की आयु में यह उन्नति, धन तथा प्रतिष्ठा के चरम शिखर पर पहुँच जाता है। अपने सद्गुणों से यह सबका मन मुग्ध कर लेता है। इसे जीवन में कभी कठिनाइयों का शिकार नहीं होना पड़ता। इस प्रकार सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ८९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१८४१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी काव्य-साहित्य आदि अनेक कलाओं का ज्ञाता, सुन्दर, सुशील, बलिष्ठ, धनवान तथा गुणवान होता है। २५ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन समाप्त करने के उपरान्त यह किसी भी कृषिक संस्था अथवा विभाग में कार्यरत होकर अधिकाधिक आय कर लेता है। फिर इसका भाग्योदय होता है। विवाह लगभग २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त कुछ समय तक आर्थिक-तंगी का शिकार भी होना पड़ता है। बाद में आमदनी की स्थिति अच्छी हो जाती है। यह अपनी योग्यता के बल पर सर्वत्र सम्मानित होता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह अपनी पत्नी से अत्यधिक स्नेह करता है तथा उसका अनुगत बना रहता है। पुत्र भी बहुत होनहार होते हैं। सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा सुखों का उपभोग करता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८४२) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गुणवान, विद्वान, बुद्धिमान, चतुर, सुन्दर तथा विलक्षण होता है। यह कुसंग के कारण दुःख भोगता है तथा कभी-कभी निकृष्टतर के कार्य करके तिरस्कृत भी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती, सरल मन की, दीन-दुःखियों को शरण देने वाली तथा अपने पति को उच्चपद पर प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नशील बनी रहने वाली होती है। पत्नी की प्रेरणा के फलस्वरूप जातक कुसंगति से छुटकारा पाकर शुभ कार्य करता है तथा निरन्तर उच्चपदों को प्राप्त करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में राजमान्य व्यक्तियों की स्थिति को पा लेता है। यह जुए का शौकीन तथा पर-स्त्रीगामी भी होता है तथा ऐसा करना मनबहलाव के लिए उचित भी मानता है। यह श्रेष्ठ स्थिति में पहुँचकर अपने बन्धु-बान्धवों की भी सहायता करता है। इसके पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। पूर्णायु ७३ वर्ष की होती है।

सं० ३०४८ भु०   कु० २०

(१८४३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही सुखी, नीरोग, धनी, सुन्दर तथा प्रभावशाली हो जाता है। यह चित्रकला, संगीत, काव्य-साहित्य आदि का प्रेमी एवं इनका ज्ञाता तथा सद्गुणी होता है। इसके माता-पिता भी सुसम्पन्न होते हैं। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोऽनुकूला मिलती है। विवाह होते ही यह राजकीय-सेवा में पहुँच कर धनोपार्जन करता है। भाग्योदय में पत्नी का सौभाग्य भी सम्मिलित रहता है। यह राज्य में एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में सम्मान पाता है। ३१ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे तथा उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर पहुँच कर यशस्वी बनता है। विदेशों में भी इसे जाना पड़ता है तथा वहाँ भी बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यह किसी सुविख्यात व्यवसाय अथवा अधिकारी का प्रधान पदाधिकारी भी हो सकता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। जीवन में कभी दुःख नहीं भोगता। पूर्णायु ७९ वर्ष की होती है।

(१८४४)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य चंचल स्वभाव का, परन्तु निर्णय लेने में शीघ्रता करने वाला, पूर्ण शिक्षित, विद्वान्, प्रियवक्ता एवं विदेश में जाकर भाग्योदय प्राप्त करने वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से सम्बद्ध हो जाता है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी धीर-गंभीर स्वभाव की, सौम्य, ऊँच-नीच को समझने वाली, पतले शरीर की तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। वह परिवार का नेतृत्व करती है तथा जातक भी उसी की इच्छानुसार चलता है। यह धनोपार्जन एवं धन सफलता में भी पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त करता है। पत्नी सुन्दर तथा सुयोग्य पुत्रों को जन्म देती है जो बड़े होकर कुल-पालक सिद्ध होते हैं। प्रारम्भ में कुसंग-दोष के कारण जातक बदनाम भी होता है, परन्तु बाद में सँभल जाता है तथा शुभ कार्यों से सर्वत्र प्रशंसित होता है। सुखी जीवन बिताता हुआ यह ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१८४५) - इस जन्मकुंडली का स्वामी सुन्दर, गुणवान्, अपना मनस्वी, अथक परिश्रमी तथा सब कामों को शीघ्रता पूर्वक निपटाने का आदी होता है। यह बड़ी मेहनत से धनोपार्जन करता है तथा इसकी आमदनी के साधन भी अनेक होते हैं। यह एक ओर तो व्यवसाय करता है, दूसरी ओर किसी कार्य से अनुबन्धित भी बना रहता है। २५ वर्ष की आयु तक ही यह बहुत धनी हो जाता है। इसे अपनी माता आदि से विशेष प्रेम नहीं होता। यह परिवारीजनों से अलग रहता हुआ ही काम करता है। भोग-विलास एवं स्त्रियों से सम्बन्धित कार्यों द्वारा इसे विशेष धन प्राप्त होता है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय की भी बहुत उन्नति करता है तथा उसके पर्याप्त लाभ उठाता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, परन्तु आकर्षक स्वरूप वाली, तीव्र बुद्धि एवं जातक पर नियंत्रण रखने वाली होती है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ८१ या ८६ वर्ष होती है।

(१८४६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, गुणी, अनेक कलाओं तथा विषयों का पंडित, उच्चशिक्षा प्राप्त, अपने बन्धु-बांधवों तथा सहयोगियों का सहायक, परिजनों का प्रेमी, ईश्वर-भक्त, धर्म-कर्म में धन खर्च करने वाला तथा २८ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देने वाला होता है। यह प्रिय एवं मधुर वचन बोलने वाला, विदेश में जाकर धनी होने वाला तथा निरन्तर उन्नति करने वाला भी होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, परन्तु सुन्दरी, शीलवती तथा जातक को अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली होती है। यह परिवार का पालन करने वाले सुयोग्य पुत्रों को जन्म देती है। यह जातक सब प्रकार से सुखी तथा सम्पन्नता का जीवन बिताता हुआ ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है, परन्तु इस अवधि को पार कर जाय तो ८९ वर्ष तक जीवित बना रहता है।

(१८४७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, रूप से रूखा जान पड़ने वाला, परन्तु यथार्थ में बड़े सरल तथा सहृदय स्वभाव का, संगीत आदि का ज्ञाता, माता से विद्वेष रखने वाला, अत्यन्त साहसी तथा अपने अध्यवसाय द्वारा उच्च स्थान पाने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, तथापि राजकर्मचारी होने में सफल हो जाता है। फिर यह अपनी योग्यता के बल पर उच्च स्थिति प्राप्त करता चला जाता है। ३० वर्ष की आयु में यह महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होकर धन-सम्पन्न हो जाता है। यह अपने माता-पिता से अलग रहता है तथा अपने पराक्रम एवं पुरुषार्थ पर ही भरोसा रखता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सामान्य मतभेद बना रहता है। यह भोग-विलास में रुचि रखता है, अतः अनेक स्त्रियों से इसके संबंध बने रहते हैं। इसके पुत्र इससे अलग रहते हैं। परमायु ७१ वर्ष की होती है।

(१८४८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुखी, कला-प्रेमी, अपने कुल में श्रेष्ठ, मातृ-प्रेमी, विद्वान, गुणवान तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। यह अपने अध्यवसाय से ही उन्नति कर पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित करता है तथा अपने परिवारी जनों एवं मित्रों को सहयोग एवं सहायता भी देता है। इसको २४ वर्ष की आयु से जीवनान्त तक आर्थिक लाभ होता रहता है। इसके अनेक व्यवसाय तथा उद्योग होते हैं। यह राजमान्य तथा लोक प्रतिष्ठित होता है। इसका विवाह भी २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वच्छन्द होते हुए भी जातक की प्रत्येक बात को गंभीरता से नहीं लेती, अतः दुःख देते हुए भी जातक से मत-भिन्नता रखती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं, जो बड़े होकर जातक को सुख पहुँचाते हैं एवं धन की वृद्धि भी करते हैं। सामान्यतः कष्ट-रहित सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह जातक ७३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८४९) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति विद्या-बुद्धि से सम्पन्न, परन्तु कुछ तेज मिजाज का, स्पष्टवक्ता, निर्भीक, दूसरों की सहायता के लिए सदैव उद्यत, परोपकारी, दानी तथा कुल रूप वाला होता है। अपने माता-पिता से इसका मत नहीं मिलता। अतः यह उनसे अलग रहता है। उनसे इसे जो धन प्राप्त होता है, उसी के सहारे यह कोई व्यवसाय आरम्भ करके, अपने परिश्रम द्वारा उसमें निरन्तर तरक्की करता चला जाता है। इसे अपने परिजनों तथा बन्धु-बान्धवों से सहयोग प्राप्त होता है। ४९ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा विपुल सम्पत्ति का स्वामी बनता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा हठी स्वभाव की होती है। वह जातक से मतभेद रखती हुई भी उसे सुख देने का प्रयत्नशील बनी रहती है। ६० वर्ष की आयु में जातक को राजसम्मान मिलता है। परमायु ६९ या ७६ वर्ष होती है।

(१८५०) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, अत्यन्त उदार, अपने कार्य को निपटाने में आलसी, परन्तु दूसरों के काम को पूर्ण करने वाला होता है। यह भोगी तथा विलासी प्रवृत्ति का होने के कारण अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है तथा इसी कारण अपने अनेक कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। यह जातक माता के प्रति विरक्ति-भाव रखता है। यह अपने अध्यवसाय से व्यवसाय अथवा राज-कीय सेवा द्वारा – अथवा दोनों कार्य करते हुए – अपने भाग्य का निर्माण करता है तथा २३ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर आजीवन धन कमाता रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर तथा समझदार होती है। वह जातक से मतभेद रखते हुए भी पारिवा-रिक उत्तरदायित्वों का यथोचित पालन करती है। सन्तानें सुन्दर तथा होनहार होती हैं। यह जातक विदेश-यात्रा, जलीय-वस्तुओं तथा राजाधिकारियों से लाभ उठाता है। पूर्णायु ६९ वर्ष होती है।

(१८५१)- इस जन्म कुंडली का स्वामी शुक्र, मधुरभाषी, साहित्य-संगीत-कला का प्रेमी, कोमल हृदय का, दूसरे के दुःख-दर्द का सहयोगी तथा सबका भला चाहने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राज्य की सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ करता है तथा निरन्तर उन्नति करते हुए ३२ वर्ष की आयु तक उच्च पद पर पहुँच जाता है। इसे माता-पिता का सहयोग प्राप्त रहता है। यह मित्रों तथा परिजनों से सहयोग पाने वाला तथा बन्धु-बान्धवों की सहायता करने वाला होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दर, सुसंस्कृत, सुरुचिपूर्ण, मधुरभाषिणी तथा विदुषी कन्या के साथ होता है। वह बड़ी भाग्यशालिनी तथा पति के कार्यों में सहयोग देने वाली होती है। इसे सुन्दर, भाग्यवान तथा होनहार पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है। स्थिर प्रभाव तथा सम्पत्ति का स्वामी बने रहकर यह ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८५२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति शुक्र, स्वस्थ तथा उच्चशिक्षित होते हुए भी सदैव चिन्ताओं से घिरा रहता है तथा धन के अभाव से पीड़ित होकर सदैव दुःख भोगता है। इसे अपने लोग ही हानि पहुँचाते हैं तथा अपनी ही विपरीत-बुद्धि के प्रभाव से भी यह विशेष प्रभावित होता है। २७ वर्ष की आयु में यह सेवा-संलग्न होकर सुख प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करता है तथा धन कमाने के लिए अनुचित कार्यों में भी हाथ डालता है। भोगी तथा विलासी प्रवृत्ति का होने तथा जुआ खेलने का शौकीन होने के कारण भी इसे हानि उठानी पड़ती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती, सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है। वह जातक तथा परिवार को संकट एवं समस्या से बचाती है। तदुपरान्त जातक उन्नति करने लगता है तथा पर्याप्त धन भी कमाता है। पत्नी धन का संचय करती है। पुत्र सद्गुणी होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

३०२८ सं० भु०

कु० र०

(१८५३)- इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, धीर-गम्भीर, बहुत पराक्रमी, धनी, विद्वान, साहित्य-मर्मज्ञ, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा गुणवान होता है। यह अपने सद्गुणों से सबको मोहित करता है, परन्तु अपने बन्धु-बान्धवों से विरोध रखता है। यह स्त्रियों से व्यवहार करने में कुशल तथा किसी संस्था के कार्यों का दायित्व वहन करने वाला भी होता है। यह २५ से ४८ वर्ष की आयु तक बहुत लाभ कमाता है। राजकीय सेवा से भी इसे पर्याप्त आर्थिक लाभ होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। वह प्रत्येक कार्य में पति को सहयोग करती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा गुणवान होते हैं। उनमें एक पुत्र तथा एक पुत्री अत्यधिक भाग्यवान तथा होनहार होते हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन व्यवसाय स्थापित कर उससे विशेष लाभ अर्जित करता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(१८५४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कार्य-कुशल, सद्व्यवहार करने वाला, सुशिक्षित गुणवान, धनवान तथा नाट्यकला आदि में विशेष रुचि रखने वाला होता है। यह अनेक कार्यों द्वारा सुख तथा धन का उपार्जन करता है। २७ से ५६ वर्ष की आयु तक इसका भाग्य प्रबल रहता है। राजकीय-सेवा में भी यह उच्च पद प्राप्त कर सकता है। इसके पास सम्पत्ति स्वयमेव एकत्र होती रहती है। यह माता-पिता से दूर रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली, सौभाग्यवती होती है। इसके पुत्र-पुत्री भी होनहार होते हैं। यह जातक अपने सम्पूर्ण जीवन में कोई विशेष कष्ट नहीं पाता तथा सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा एवं धन प्राप्त करता रहता है। वाहन, भवन आदि सभी सुख उपलब्ध रहते हैं। पूर्णायु ८८ या ९३ वर्ष की होती है।

(१८५५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, ललित-कलाओं में रुचि रखने वाला तथा बहुत धनी होता है। इसके पास भूमि, भवन, वाहन, आभूषण, धन आदि किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। इसे राज्य, शिक्षा-विभाग तथा जन-समुदाय द्वारा बहुत लाभ होता है। यह २३ वर्ष की आयु में व्यवसाय से सम्बन्धित होकर अर्थोपार्जन करने लगता है। इसे अपना पूरा जीवन ही परदेश में बिताना पड़ता है और वहीं इसे धन तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह बड़ा धनी हो जाता है। इसका विवाह ~~२४~~ ३१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा आज्ञाकारिणी होती है, परन्तु उसे धन की तृष्णा अधिक रहती है। वह पर्याप्त धन संचित भी कर लेती है। इस जातक को जीवन में कभी कोई कष्ट नहीं होता। संतानें भी सुयो-ग्य होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१८५६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, विद्वान, बुद्धिमान, [illegible] तथा अनेक विषयों एवं कलाओं का पंडित होता है। यह २४ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करता है, तदुपरान्त राज्य की सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह शीघ्र ही उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। राज्य द्वारा इसे मान-सम्मान प्राप्त होता है तथा राजपुरुषों से इसके काफी सम्बन्ध होते हैं। इसके माता-पिता बहुत स्नेह करने वाले होते हैं। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल धन अर्जित करता है। अपने शत्रुओं को परास्त करता है तथा सुखी एवं यशस्वी जीवन बिताता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौभाग्यशाली एवं अनुगता होती है। संतानें भी उत्तम होती हैं। यह जातक विदेश या परदेश में रहकर ३४ से ४६ वर्ष की आयु में बहुत उन्नति करता है। कुछ [illegible] भी इसकी भाग्योन्नति में सहायक बनते हैं। यह विलासी भी होता है। परमायु ६८ या ७३ वर्ष होती है।

(१८५७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सुःस्वामी, गुणवान, धनवान तथा २५ वर्ष की आयु से राज्य की सेवा में संलग्न होकर उन्नति करने वाला होता है। इसे २७, ३०, ३२, ३६ तथा ४५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद तथा उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। राजकीय सेवा के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी इसे धन का लाभ होता रहता है। यह परदेश में अपने जीवन का लम्बा समय व्यतीत करता है। यह मधुरभाषी, नीतिज्ञ तथा लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला होता है। यह धन का लालची होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से विशेष सुख नहीं मिलता। वह प्रायः अलग ही रहती है। जातक अन्य अनेक स्त्रियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता है। उनके लिए यह अपने आवश्यक कार्यों को भी पीछे छोड़ देता है। पुत्र तेजस्वी होते हैं। परमायु ७८ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१८५८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, कठोर अनुशासन प्रिय, विद्या बुद्धि एवं कला-कौशल सम्पन्न, अनेक विषयों में पारंगत तथा आक्रोशपूर्ण मुद्रा वाला होता है। यह कभी चिकित्सक, कभी ज्योतिषी और कभी प्रशासक बनना चाहता है। अन्त में यह किसी अनुशासन संबंधी कार्य में ही लगता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी उच्च राजकीय पद पर नियुक्त होता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवनान्त तक यह अनेक उच्च पदों को सुशोभित करता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील, अनेक कलाओं में दक्ष तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली मिलती है। इसे भाई-बन्धु तथा श्रेष्ठ मित्रों का सहयोग प्राप्त होता है। यह भी सब की सहायता तथा पालन करता है। इसके पुत्र योग्य तथा सद्गुणी होते हैं। परमायु ८० वर्ष की होती है।

(१८५९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी रूखे स्वभाव का, पुष्ट शरीर वाला, दूरदर्शी, परन्तु क्रोध पर नियंत्रण न कर पाने वाला होता है। यह भूमि, भवन, वाहन तथा धन-सम्पत्ति से सम्पन्न तथा प्रभावशाली होता है। यह अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय, मित्रों एवं भाइयों के माध्यम से उन्नति करता है। यह २४ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा आदि से संलग्न होकर धनोपार्जन करने लगता है। इसके पास राजकीय वाहन, अधिकार तथा सेवक, आवास आदि भी होते हैं। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुरुचि पूर्ण, सुयोग्य तथा चित्त को प्रसन्न करने वाली होती है। यह अपनी पत्नी को बहुत स्नेह करता है। इसके पुत्र भी होनहार होते हैं। अन्य स्त्रियों से भी इसके सम्बन्ध रहते हैं। यह सम्पूर्ण जीवन सुख से बिताता है तथा कभी किसी विशेष संकट का सामना नहीं करता। इसकी परमायु ८१ वर्ष होती है।

(१८६०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सबल, दूरदर्शी तथा रूखे स्वभाव का होता है। कभी-कभी यह इतना क्रुद्ध हो जाता है कि स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख पाता, परन्तु फिर एकदम शान्त भी हो जाता है। इसमें धन कमाने तथा उसका संचय करने की विशेष प्रवृत्ति पाई जाती है। इसके पास अनेक स्रोतों से धन का आगमन होता है। यह राजकार्य से संलग्न रह कर भी धन प्राप्त करता है तथा जन-साधारण के माध्यम से भी धनोपार्जन करता है। इसे राज्य से भय भी हो सकता है तथा राज द्वारा मृत्यु-दण्ड भी प्राप्त कर सकता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, सुरुचि पूर्ण तथा पति से प्रेम करने वाली होती है। वह गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है, तथापि जातक का अन्य स्त्रियों से भी संबंध रहता है। इसके पुत्र सौभाग्यशाली होते हैं। इसकी परमायु ५८ वर्ष होती है। बचने पर ७८ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(१८६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रियवादी, मधुर व्यवहार करने वाला, गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत मस्तक तथा बड़ी आँखों वाला होता है। यह बहुत लोभी होता है। इसे अनेक शास्त्रों का ज्ञान होता है। यह परम्परागत कार्यों में रुचिवान तथा तीर्थप्रेमी होता है। २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करके यह किसी सेवा-कार्य में संलग्न हो धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। थोड़े ही समय में उच्च पद प्राप्त करके धनी तथा सुखी जीवन बिताता है। यह सुसंस्कृत तथा श्रेष्ठ आचार-विचार वाले लोगों से सम्पर्क रखता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा पति की आज्ञा-पालक होती है। वह सुन्दर तथा सौभाग्यशाली पुत्रों को जन्म देती है, जो जातक के जीवन-काल में ही ऊँचे पद पर जा पहुँचते हैं। यह जातक ८० वर्ष से अधिक की परमायु प्राप्त करता है।

(१८६२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखी, सम्पन्न, अनेक कलाओं का ज्ञाता, अनेक विषयों का पंडित, शास्त्रानुसार जीवन बिताने वाला तथा गृहस्थी का परम्परागत संचालन करनेवाला होता है। इसे अपने माता-पिता से धन प्राप्त होता है। भाई अनेक होते हैं और यह उनसे प्रेमभाव रखता है। यह राज्य के उच्चाधिकारियों का प्रिय होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुसंस्कृत, विदुषी तथा गुणवती होती है। इस जातक को ३०, ३३, ३५, ३८, ४६ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ६३ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। इसके पुत्र भी सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं। इसे भोग-विलास में विशेष रुचि होती है, एतदर्थ यह धन भी खर्च करता है तथा स्त्रियों से संबंध भी रखता है। यह बहुत धनी होता है तथा सुखी-जीवन बिताते हुए ८३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८६३)- इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणवान, आस्तिक, कला-निपुण, साहित्य-सर्जक, अत्यन्त प्रभावशाली तथा माता-पिता का भक्त और उनसे धन प्राप्त करने वाला होता है। यह अधिकारियों, मंत्रियों, राजनीतिक-नेताओं आदि का प्रिय तथा सरकारी-विभाग अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्यरत होकर उच्च पद, यश एवं धन अर्जित करने वाला होता है। इसे धन की कमी कभी अनुभव नहीं होती। इसका विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, उच्चाकांक्षाओं से युक्त, चित्रकला एवं साहित्य-सृजन में रुचि रखने वाली तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। इसके पुत्र भी धनी, योग्य तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाले होते हैं। यह मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है तथा उनकी सहायता भी करता है। इसकी परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१८६४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति धनी, ज्ञानी, पराक्रमी, कुछ कठोर स्वभाव का, पितृभक्त, परन्तु अन्य कुटुम्बियों से अलग रहने वाला होता है। यह परदेश में रह कर धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह अपने कुल में प्रसिद्ध, उच्च शिक्षित तथा व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। यह आरोग्य-वस्तुओं के व्यवसाय से संलग्न होता है। इसके जीवन में विघ्न-बाधाएं भी खूब आती हैं। २५ से ४८ वर्ष की आयु तक इसे बहुत लाभ होता है। ५० वर्ष की आयु में कुछ समय तक इसे आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है, परन्तु बाद में पुनः पूर्व स्थिति को प्राप्त कर लेता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। २३ तथा ३५ वर्ष की आयु में दुर्घटना का योग रहता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। यह अपने पुत्रों तथा मित्रों का बहुत हित करता है। पूर्णायु ६८ वर्ष की प्राप्त होती है।

भु० सं० १४८२

कु० १०

<u>(१८६५)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, तेजस्वी, सुन्दर तथा साहसी होता है। यह अपने पराक्रम तथा बुद्धिमत्ता से बहुत धन कमाता है। यह सबलोगों को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इसे अपने पिता से बहुत सहायता प्राप्त होती है। यह पैतृक-व्यवसाय में रहते हुए भी २६ वर्ष की आयु में कोई अन्य व्यवसाय भी आरंभ करता है। इसे जीवन में कभी धन का अभाव नहीं होता। यह अपने बन्धु-बान्धव तथा मित्रों की बहुत सहायता करता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत सम्पन्नता की स्थिति प्राप्त कर लेता है। यात्राओं द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सात्विक स्वभाव की मिलती है। सन्तानें सुयोग्य तथा सद्गुणी होती हैं। पुत्र बड़े होकर सुख प्रदान करते हैं। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

<u>(१८६६)</u>- इस जन्म कुण्डली का अधिपति धीर-गंभीर, नीतिज्ञ, बलवान तथा सब कार्यों में सबसे आगे रहने वाला होता है। यह सच्ची बात कहने में कोई संकोच नहीं करता। इसकी निर्भीकता से लोग भयभीत भी रहते हैं। यह बन्धु-बान्धव तथा मित्रों का पालक एवं उच्च स्तरीय लोगों से मित्रता रखनेवाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु से विशेष धन कमाने लगता है। इसके बन्धु बान्धव तथा बाद में पुत्रगण इसके व्यवसाय को आगे बढ़ाने में सचेष्ट बने रहते हैं। यह राजमान्य, अधिकारियों से सम्मानित तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सच्चरित्रा तथा प्रभावशालिनी होती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहायक सिद्ध होती है। इसके पुत्र भी सुयोग्य, उत्तरदायित्व को सम्हालने वाले तथा सुख देने वाले होते हैं। पूर्णायु ७३ वर्ष की होती है।

भृ० सं० ३८४४८

(१८६७) - इस जन्मकुंडली का स्वामी बुद्धिमान, परन्तु शीघ्र ही क्रुद्ध हो जाने वाला, प्रतिशोधात्मक-
-क स्वभाव का, प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने के लिए सब प्रकार के उपाय करने वाला,
विरोधी से अत्यधिक घृणा करने वाला तथा झूठी शान के लिए न्याय की बात को भी ठुकरा-
रा, अपने व्यक्तित्व को ही सर्वोपरि मानने वाला होता है। यह राजाओं की तरह ठाठ-बाट से रहता
है तथा उसी प्रकार का व्यवहार भी प्रदर्शित करता है। बाल्यावस्था से जीवनान्त तक इसके पास
धन की कमी नहीं रहती। भाई-बन्धु, मित्र तथा अन्य सब लोग भी इसे सम्मान देते हैं। यह
अपने भाई-बंधु तथा आश्रितों का पालन भी करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता
है। पत्नी से यह बहुत संतुष्ट रहता है। वह भी इसे नियन्त्रित करने में सफल होती है। इसके
पुत्र भी सद्गुणी होते हैं। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१८६८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य क्रूरतावान, कुटिल कर्मों को करने से न हिच-
-कने वाला, क्रोधी स्वभाव का तथा विवेकहीन होता है। यह माता से द्वेषभाव रखता है तथा
अन्य परिजनों से सद्भाव रखता है। २४ वर्ष की आयु में यह पुलिस, सेना आदि रक्षा-
विभागों की सेवा में संलग्न होकर प्रगति करता है तथा उच्चपद प्राप्त करता चला जाता है।
यह कार्य-संचालन में कुशल होता है, क्योंकि लोग इससे डरते हैं और इसके आदेशों का मजबूरन
पालन करते हैं। यह कुछ दार्शनिक प्रवृत्ति का भी होता है तथा स्वयं में केन्द्रित रहते हुए भी पत्नी
के प्रति समर्पित होता है। पत्नी २६-२८ वर्ष की आयु में प्राप्त होती है। वह इस पर अपना पूर्ण
नियन्त्रण रखती है। पुत्रों से कष्ट प्राप्त होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा
लेता है। फिर भी कभी धन की कमी नहीं रहती। इसकी परमायु ८० वर्ष होती है।

कु० र०

(१८६९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, विद्वान, सुन्दर, अनेक विषयों का ज्ञाता, अपनी योग्यता से सबको प्रभावित करने वाला, परन्तु स्वभाव का कठोर, अहंकारी तथा अपने तेज एवं आतंक से दूसरों को भयभीत कर देने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त तेजस्विनी होती है और वह इसे अपने प्रभाव में रखती है। उसकी इच्छा के बिना यह कुछ भी नहीं कर सकता। फिर भी अपने जिद्दी स्वभाव के कारण यह उससे मतभेद भी रखता है। यह भाग्य का धनी तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है। इसकी आजीविका राज्य की सेवा से संयुक्त होकर चलती है। इसे पैतृक-संपत्ति का लाभ भी होता है। यह विदेश में रहकर अपने जीवन का बड़ा भाग बिताता है तथा ४० वर्ष की आयु में पूर्ण उत्कर्ष प्राप्त कर लेता है। पुत्र योग्य होते हैं। (पूर्णायु ८०-८२ वर्ष होती है।)

(१८७०)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणी, विद्वान, शास्त्रज्ञ, अपने पाण्डित्य से सबको प्रभावित करने वाला, लम्बे कद तथा स्थूल शरीर का, अनुशासन-प्रिय, धनवान एवं कुछ कठोर स्वभाव का होता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी अच्छी सेवा से संलग्न होकर उन्नति करना आरम्भ करता है। राज्यद्वारा इसे विशेष लाभ होता है। ४५ से ४६ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मधुर व्यवहार वाली एवं परिवार को सुख देने वाली मिलती है। यह काफी समय तक जातक के साथ विदेश में भी रहती है। यह जातक भोग-विलास प्रिय होने के कारण अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा होनहार होते हैं तथा उनसे सुख भी मिलता है। पूर्णायु ८५-८६ वर्ष की होती है।

भु० सं० २४४४

कु० २०

(१८७१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बे कद का, क्रोधी तथा कठोर स्वभाव का होते हुए भी उदार-हृदय वाला होता है। यह बड़ा परिश्रमी, लगनशील तथा गुणवान होने के कारण अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु तथा अपने व्यवहार से सब को प्रसन्न रखने वाली मिलती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर बहुत उन्नति करता है तथा ३६ वर्ष की आयु में अपना कोई निजी व्यवसाय भी आरंभ करता है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों के प्रति भी इसका आकर्षण होता है। इसे विदेश अथवा परदेश से लाभ होता है और कुछ समय तक यह परदेश में रहता भी है। इसे अपनी छोटी बहिन से विशेष स्नेह होता है, वह इसकी प्रत्येक कार्य में सहायता करती है। इसके पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(१८७२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुयोग्य, प्रभावशाली, अनेक विषयों तथा कलाओं का ज्ञाता, बड़ा पंडित तथा परम यशस्वी होता है। यह अपनी अनेक चिन्ताओं में व्यस्त रहते हुए भी दूसरों का काम करने के लिए सदैव तत्पर बना रहता है। विद्याध्ययन द्वारा यह बड़ी-बड़ी उपाधियों को प्राप्त करता है तथा बाद में किसी उच्च पद पर आसीन होकर ५० वर्ष की आयु तक अत्यधिक धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। यह देश-परदेश में सर्वत्र भ्रमण करता है तथा सम्मान और सम्पत्ति प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु के आसपास होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, मनोनुकूला तथा धन-संचय करने में कुशल होती है। वह अपने पति की उन्नति में महत्वपूर्ण सहयोग देती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, गुणवान तथा भाग्यशाली होते हैं। पूर्णायु ८४ वर्ष होना सम्भव है।

(१८७३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बे कद का, स्वस्थ, अनेक कलाओं का जानकार, ज्ञानी, अनुशासन-प्रिय तथा सहज ही किसी से प्रभावित न होने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर, कला-साहित्य-संगीत-कुशला तथा गुणवती कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त जातक किसी नवीन कार्य को आरंभ करता है। उसमें इसे प्रचुर धन-लाभ होता है। यह पर-स्त्री के प्रति अनुरक्त होता है तथा उसके द्वारा पर्याप्त लाभ भी उठाता है। ५० वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी-मानी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। इसे धन का लाभ अनेक साधनों से होता है। इसका पुरुषार्थ ही इसे निरन्तर आगे बढ़ाता रहता है। इसे सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। सब सुख उपलब्ध रहते हुए भी सन्तान की चिन्ता मन को दुःखी बनाये रखती है। पूर्णायु ७२ वर्ष की होती है।

(१८७४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मिष्टभाषी, सुन्दर, कलह-कुशल, किसी को कष्ट न देने वाला एवं सर्वप्रिय होता है। यह साफ बुद्धि का, ऊपर से कठोर दिखाई देने वाला, परन्तु यथार्थ में बड़े कोमल स्वभाव का होता है। इसे अपने कार्य-व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। परदेश में जाकर यह बहुत धन कमाता है। यह कई प्रकार के कार्य करता है, अन्त में अपने से सम्बन्धित किसी उद्योग को स्थापित कर उसी को आगे बढ़ाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी अपने मनोनुकूल चलने वाली तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। यह जातक अपनी कार्यकुशलता तथा क्षमताओं का सफल होता है। सन्तान के लिए जातक को कष्ट होता है, इसके अतिरिक्त सुख के सभी साधन इसे जीवन में उपलब्ध रहते हैं। धन की इसके पास कभी कोई कमी नहीं रहती। पूर्णायु ७६ वर्ष की होती है।

(१८७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौरवर्ण, सुन्दर, चंचल, अत्यन्त सुचतुर तथा भूमि-भवन आदि का स्वामी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। वह अपने मधुर-व्यवहार से जातक को सुखी रखती है। पत्नी के व्यक्तित्व तथा प्रभाव का जातक को बड़ा लाभ मिलता है। वह धनोपार्जन में सहायक होती है। विवाहोपरान्त जातक परदेश में जाकर अपना कार्य आरम्भ करता है तथा दीर्घकाल तक वहीं रह कर प्रचुर सम्पत्ति अर्जित करता है। यह कई साधनों से धन कमाता है। सन्तान के लिए यह बहुत चिन्तित रहता, विलम्ब से सन्तान का लाभ भी होता है। यह अपनी सन्तान की प्रसन्नता के लिए अनेक सुख-साधन जुटाता है, परन्तु समर्थ हो जाने पर वह पिता को सुख नहीं देती। जातक की परमायु ७९ वर्ष होती है।

(१८७६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, गुणवान, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा अपना मनचाहा होता है, फिर भी इसे अपनी योग्यता का समुचित लाभ नहीं मिलता। यह प्रायः परदेश में रहता है। आमदनी अच्छी होते हुए भी यह खुले हाथों से खर्च करता है, जिसके कारण सदैव कर्जदार बना रहता है। परदेश में रहते हुए ही इसका भाग्योदय होता है। इस का विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा जातक पर अपना प्रभाव रखने वाली होती है। जातक का भाग्योदय भी विवाहोपरान्त ही होता है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा होनहार होते हैं। ४२ वर्ष की आयु में इस जातक को कष्ट होता है। जीवन में धन की कभी कमी नहीं रहती। सब प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। यह ६८ वर्ष की परमा-यु प्राप्त करता है। यदि इस अवधि के बाद भी जीवित रहे तो ७८ वर्ष की परमायु पाता है।

(१८७७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कला-संगीत आदि में कुशल, राजमान्य, प्रभावशाली व्यक्ति एवं सम्पन्न, राज्याधिकारियों का मित्र एवं स्वयं भी राज्याधिकारी होता है। २३ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय सेवा में संलग्न हो जाता है। यह स्वतन्त्र विचारों का अद्भुत व्यक्ति अपने पुरुषार्थ, ज्ञान एवं चातुर्य पर ही सर्वाधिक विश्वास करता है एवं कर्मठ होने के अहंभाव से युक्त भी होता है। इसे ईश्वर के अस्तित्व पर भरोसा नहीं होता तथा यह ईश्वर-विश्वासी एवं भाग्यवादियों की हँसी भी उड़ाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। इसे पत्नी की ओर से अधिक सुख नहीं मिलता तथा पत्नी भी इसकी ओर से दुःखी रहती है। पुत्र होकर नष्ट होते हैं। यह जातक ४२ वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त कर लेता है, परन्तु ४५ वर्ष की आयु में इसे तिरस्कृत भी होना पड़ता है। इसे परदेश में एक से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित किया जाता रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

(१८७८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, स्वस्थ, विद्वान्, रुचि-सम्पन्न, आदि से युक्त तथा सम्पत्तिशाली होता है। यह परदेश से आमोद प्राप्त करता है। यह उन कार्यों से, जो स्त्रियों से सम्बन्धित हों अथवा जिनमें स्त्रियों का भी योगदान रहता हो; अग्नि, सौन्दर्य-प्रसाधक एवं उज्ज्वल वस्तुओं द्वारा लाभ उठाता है। यह बन्धु-बान्धवों का साथी, परिजनों का पोषक तथा उन्हें अपने साथ रखने वाला भी होता है। यह ३५ वर्ष की आयु में उत्कर्ष के चरम शिखर पर जा पहुँचता है तथा सुखी होता है। यह पैतृक-व्यवसाय को भी आगे बढ़ाता है तथा ५४ वर्ष की आयु तक दो-तीन नये व्यवसायों को भी स्थापित करता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी होती है। पुत्र भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। यह ७८ वर्ष की पापायु प्राप्त करता है। इससे बच जाने पर ७ वर्ष तक और जीवित रहता है।

(१८७९) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर का, बलवान, आकर्षक, अपने प्रभाव से सबको प्रभावित करने वाला, प्रतिष्ठित, अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर सर्वत्र सम्मान पानेवाला तथा धन-सम्पन्न होता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है। इसी आयु में विवाह भी होता है। पत्नी स्वतन्त्र व्यक्तित्व की धनी, अपने व्यक्तित्व से घर-बाहर सर्वत्र सभी को प्रभावित करने वाली, सुन्दरी तथा सुन्दर पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। यह जातक अपने पैतृक-व्यवसाय में संलग्न होकर ४५ वर्ष की आयु तक अत्यधिक धनी हो जाता है। यह माता-पिता का भक्त और उन्हें सुख देने वाला होता है। चर्बी सम्बन्धित व्याधि से ग्रस्त होता है। यह उदार तथा दानी प्रवृत्ति का होता है एवं दीन-दुखियों की सहायता करके तथा सार्वजनिक संस्थाओं को धन आदि देकर आनन्दित होता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१८८०) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सद्गुणी, बहुत शीघ्रता से निर्णय लेने वाला, ललित-कलाओं का प्रेमी, काव्य-साहित्य का मर्मज्ञ, गुणीजनों का सम्मान करने वाला एवं प्रत्येक कार्य को शीघ्रातिशीघ्र निपटा देने की कोशिश करने वाला होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुसंस्कृत, सुरुचिपूर्ण, धैर्यशालिनी एवं मधुरभाषिणी होती है तथा जातक को सुख देने हेतु प्रयत्नशील बनी रहती है। इसका भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में होता है। उस समय यह अपने पैतृक-व्यवसाय के अतिरिक्त कोई अन्य उद्योग भी स्थापित करता है। पैतृक-व्यवसाय की निरन्तर वृद्धि करता है। विवाह के बाद एक लम्बे समय तक इसकी पत्नी रुग्ण बनी रहती है, उसके कारण जातक दुःखी भी रहता है। पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। पुत्रों के सहयोग से यह अपनी आर्थिक-स्थिति को अधिक सुदृढ़ बनाता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(१८८१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, साहसी, पराक्रमी, सत्कर्म करने वाला, ईश्वर-भक्त, धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेने वाला तथा अपने गुणों द्वारा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। बचपन में ही यह माता से अलग रहता है, बाद में परदेश में जाकर जीविकोपार्जन करता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी धीर-गंभीर, आत्म केन्द्रित स्वभाव की, अपना कष्ट किसी से न कहने वाली, धन-संग्रही तथा पति से कभी सन्तुष्ट एवं कभी असंतुष्ट रहने वाली होती है। यह जातक अपने व्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाता है। इसे राज्य द्वारा भी धन-लाभ होता है। यह कोई राज्याश्रित कार्य भी करता है। ३६ से ४२ वर्ष की आयु तक परदेश में रहता है तथा इसे धन कमाने से कभी अवकाश ही नहीं मिलता। सन्तान-पक्ष से इसे सदैव कष्ट रहता है। स्त्री भी प्रायः दुःखी ही रहती है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(१८८२)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, कोमल हृदय का, मधुरभाषी, पराये दुःख को देखकर स्वयं दुःखी होने वाला तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतली-दुबली, साँवले रंग की, परन्तु आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह पति को प्रसन्न बनाये रखने हेतु प्रयत्नशील रहती है। यह जातक अपने माता-पिता का भक्त तथा आज्ञा-पालक होता है। 23 वर्ष की आयु से लेकर मृत्यु पर्यन्त यह निरन्तर धन तथा सम्मान अर्जित करता रहता है। अपनी स्त्री के कारण यह कुछ दुःखी रहता है तथा सन्तान के लिए भी कष्ट पाता है। सन्तान विलम्ब से प्राप्त होती है। यह स्वयं कभी शारीरिक कष्ट नहीं पाता। कभी आकस्मिक चोट लगना सम्भव होता है। यह भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० १८८४

कु० २०

(१८८३) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार हृदय का, तीव्र गति से कार्य करने वाला, अपने विचारों पर स्थिर रहने वाला तथा धन-लाभ के उपायों पर प्रायः ध्यान देने वाला होता है। यह २३-२४ वर्ष की आयु में ही सब प्रकार की सफलता प्राप्त कर लेता है। इसके पास न तो कभी धन का अभाव होता है और न मान-प्रतिष्ठा की ही कमी रहती है। अपनी युवावस्था में ही यह बड़ी उन्नत-स्थिति को प्राप्त कर लेता है। अपने परिजनों तथा मित्रों की यह सहायता तथा पालन करता है। राज्याधिकारियों से इसकी मित्रता रहती है तथा यह ऐश्वर्यशाली राजमान्य होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी तेजस्विनी, अपने पिता के यहाँ से धन प्राप्त करने वाली तथा पति को सुख देने वाली होती है। संतान के लिए कुछ समय तक चिन्तित रहना पड़ता है। बाद में सुंदर पुत्र होता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(१८८४) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उदार हृदय का, सुन्दर, अपने दुःख को प्रकट न करने वाला, पराये दुःख से दुःखी होने वाला, परोपकारी तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह काव्य-साहित्य का प्रेमी, राजनीतिक-कार्यों में कुशल तथा यशस्वी होता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी साँवले रंग की, पतली-दुबली, सुन्दरी, मध्यम कद की, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह पति की मान-प्रतिष्ठा वृद्धि में सहायक बनती है, परन्तु उसे स्वयं अनेक बार बीमारियों का शिकार बनना पड़ता है। उसके कारण जातक भी दुःखी होता है। सन्तान देर से प्राप्त होती है, परन्तु वह सुन्दर तथा तेजस्वी होती है। यह जातक परदेश में बहुत सम्मान अर्जित करता है। ४१ वर्ष की आयु में इसे राज्य से सम्मान मिलता है। परमायु ८० वर्ष की होती है।

भु० सं० १४४८

कु० २०

(१८८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दुश्चिन्ताओं से निमग्न रहने वाला, परन्तु अधिक निराशोह प्राप्त करलेने के बाद स्वयं को चिन्ता मुक्त करलेने वाला तथा एकदम निश्चिन्त-सा दिखाई देने वाला, साथ ही अपने भाई-बन्धु, मित्र तथा परिजनों का पालन करने वाला होता है। यह अपने भाई तथा मित्रों के सहयोग से सफलताएं भी प्राप्त करता है, परन्तु धन के इसे मोह नहीं होता। यह राज्याधिकारियों में मान्य होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। तभी से इसके भाग्य में विशेष परिवर्तन भी आता है। यह किसी राजकाज में संलग्न होकर अत्यधिक यश तथा धन अर्जित करता है। २५-२६ वर्ष तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसकी पत्नी सुशीला एवं सद्गुणी होती है। पुत्रों की ओर से चिन्ता रहती है। यह जातक ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है तथा सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता है।

(१८८६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, प्रभावशाली तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, कुछ भारी शरीर की, परन्तु आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह जातक को सदैव सुख प्रदान करती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन करता है तथा उच्च पदों पर उन्नति करता हुआ, देशान्तर में बहुत मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ४५ वर्ष की आयु में ही यह अत्यधिक सम्मानित व्यक्तियों की श्रेणी में आ जाता है। इसे धन की कमी कभी नहीं रहती। यह भोग-विलास में बहुत धन खर्च करता है तथा अनेक स्त्रियों के साथ संबंध रखते हुए उनसे लाभ भी उठाता है। पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। वे जातक को सन्तुष्ट नहीं रख पाते। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१८८७) – इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान्, गुणवान, स्व-पराक्रम से भाग्योन्नति करने वाला, विदेश-वासी, माता-पिता का प्रिय तथा पैतृक-सम्पत्ति से युक्त होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा विपुल धनोपार्जन करने वाला भी होता है। यह २० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। यह मद्यपायी, कामी तथा निम्न स्तर के लोगों के संपर्क में रहकर दोष का भागी बनने वाला भी होता है। कभी-कभी अच्छे लोगों से शत्रुता भी कर लेता है। ४६ वर्ष की आयु तक यह विदेश में रह कर बहुत धन कमाता है। खर्च भी बहुत करता है तथा भोग-विलास में अपना समय भी अधिक बर्बाद करता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुख देने वाली होती है। इसे दो पुत्र पुत्रतथा पुत्री प्राप्त होते हैं। इसे संतानों से सुख भी मिलता है। परमायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

(१८८८) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा धनी होता है। इसे आकस्मिक धन का लाभ भी होता है, परन्तु यह अपने धन को परस्त्री-गमन आदि अनेक कार्यों में व्यर्थ बर्बाद करता रहता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वह जातक को अपने अनुकूल बनाये रखती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। इसे धन-प्राप्ति की बड़ी लालसा रहती है। इस निमित्त यह जुआ आदि भी खेलता है और उसमें भी इसे बहुत लाभ होता है। ३६ से ५० वर्ष की आयु तक इसे धन की कोई कमी नहीं रहती, फिर भी यह अपने व्यसनों को नहीं त्यागता है। यात्राएं बहुत करनी पड़ती हैं तथा उनसे लाभ भी होता है। इसके पुत्र सद्गुणी, सुखी तथा सम्पन्न होते हैं। आजीवन सुखी रहते हुए यह जातक लगभग ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१८८९) इस जन्म कुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में नेत्र-पीड़ा आदि रोगों से ग्रस्त रहता है किन्तु स्वस्थ होकर सुखी जीवन बिताता है। यह ज्योतिष आदि अनेक विषयों का ज्ञाता, विद्वान, जन-सामान्य के लिए निरन्तर कार्य करने वाला, परोपकारी, सहृदय तथा किसी से द्वेष न रखने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वह जातक को बहुत सुखी रखती है। ससुराल से धन भी मिलता है। पत्नी अपने स्वतन्त्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण घर-बाहर सर्वत्र सम्मानित होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से निरन्तर धन-सम्मान में वृद्धि करता चला जाता है। ३२, २५, ३९, ४२, ४८ तथा ५० वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक यश तथा धन प्राप्त होता है। इसके पुत्र भी होनहार होते हैं। यह ६९ वर्ष की आयु में परलोकवासी होता है। इससे बचने पर ७६ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१८९०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, शक्तिशाली, राजयोग से अलंकृत उच्च राजकीय पद पर प्रतिष्ठित होने वाला तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कौशल की ज्ञाता एवं साहित्य तथा काव्य की रसिका होती है। वह सुन्दर तथा होनहार पुत्रों को जन्म देती है। इसके पुत्र मान-सम्मान की वृद्धि करने वाले तथा सुख देने वाले होते हैं। यह जातक अनेक विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। यह सब कठिनाइयों पर विजय पा लेता है। अपने परिवारीजनों से भी इसे बहुत सुख प्राप्त होता है। सम्पूर्ण जीवन सुख, समृद्धि तथा मान-प्रतिष्ठा में व्यतीत करते हुए यह परदेश की यात्राएँ करता है। २४, २८, ३१, ३९ तथा ४८ वें वर्ष इसके लिए विशेष लाभ एवं सम्मान प्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७१ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(१८६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बड़ा शौकीन, क्रोधी स्वभाव तथा कठोर व्यक्तित्व का, परन्तु हृदय से उदार होता है। यह अपनी उदारता का कभी प्रदर्शन नहीं करता, परन्तु यथासमय उसका उपयोग अवश्य करता है। यह राजयोग सम्पन्न होता है तथा 25 वर्ष की आयु तक किसी बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो कर अपने व्यक्तित्व एवं प्रभाव के बल पर सब लोगों का श्रद्धापात्र बन जाता है। इसके तेज एवं यश का सूर्य आजीवन प्रकाशित रहता है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुर भाषिणी, विनम्र स्वभाव की तथा अपने आकर्षक व्यक्तित्व के द्वारा सर्वत्र यश-सम्मान प्राप्त करने वाली मिलती है। वह प्रतिष्ठा वृद्धि अनेक कार्यों को करती है तथा जातक को सुखी रखती है। संतान का कष्ट होता है। संतान होने पर विरुद्ध स्वभाव की निकलती है तथा जातक के धन को नष्ट करती है। यह 68 वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८६२) - इस कुण्डली में उत्पन्न जातक तेज स्वभाव का, क्रोधी, अहंकारी तथा सर्वत्र झगड़ा करने वाला होता है। परन्तु यह मन का बड़ा उदार भी होता है और जब कभी इसकी उदारता प्रकट होती है, उस समय लोग इसे सम्मान भी बहुत देते हैं। इसके कटु-वचन भी लोगों को प्रिय लगते हैं, क्योंकि उनके मूल में अच्छी भावना रहती है। यह राजयोग प्राप्त होता है तथा इसके पास धनागम के अनेक स्रोत होते हैं। यह धन का संग्रह करने वाला होने के कारण अल्प समय में ही विपुल धन एकत्र कर लेता है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुयोग्य, गुणवती तथा प्रत्येक कार्य में इसे सहायता पहुँचाने वाली होती है। अन्य स्त्रियाँ भी इसे प्रभावित करती हैं, परन्तु अपने नीरस स्वभाव के कारण इसका किसी से विशेष संबंध नहीं जुड़ पाता। इसकी संतानें सुयोग्य होती हैं। सब प्रकार से सुखी-जीवन बिताता हुआ यह 68 वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनुशासन-प्रिय, राजकीय कार्यों में संलग्न, बाल्यावस्था से ही जनहितकारी कार्यों में रुचि लेने वाला तथा 20-21 वर्ष की आयु में ही किसी उच्च राजकीय-पद को प्राप्त करने वाला होता है। इसे अत्यधिक लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वास्तुतः यह बलवान-पुरुष प्रकृति का होता है. अतः नौकरी भी कोई समय के लिए ही करता है। फिर स्वतन्त्र व्यवसाय अथवा उद्योगों द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नत स्थिति को प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दरी, व्यवहार-कुशल, मधुरभाषिणी तथा कलाप्रिय होती है। वह अपने व्यक्तित्व से सभी लोगों को प्रभावित करती तथा जातक को अपने अधीन बनाये रखती है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। यह जातक देश-विदेश की यात्राएं करता है। परमायु ६३ अथवा ७५ वर्ष होती है।

(१८६४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल, सुन्दर, अपने कार्यों के प्रति उपेक्षाभाव रखने वाला, परन्तु परोपकारी, अपने सद्व्यवहार से परिवार, बन्धु-बान्धव, मित्र तथा अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला एवं राजयोग से अलंकृत होता है। यह राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है। इसका रहन-सहन भी बड़ा ऐश्वर्यशाली होता है। इसको ३५ वर्ष की आयु तक अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी उच्चकुल की सुन्दरी, पति के प्रति पूर्णतः समर्पित, भोग-विलास में रुचि रखने वाली तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। यह जातक अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम रखते हुए भी अन्य स्त्रियों से भी संबंधित बना रहता है। इसकी संतान कुपात्र होती है और वे जातक के धन को नष्ट करती हैं। यदि यह ५६ वर्ष की आयु में किसी दुर्घटना का शिकार न हो तो ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१८८९५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अपनी विद्या, बुद्धि, ज्ञान तथा शारीरिक-शक्ति के लिए भी सर्वत्र प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यह प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी तथा बड़ा गुणवान होता है। यह बड़ा न्यायप्रिय होता है तथा अपराध के लिए स्वयं को भी क्षमा नहीं करता। यह दार्शनिक-विषयों का, कला तथा साहित्य से विशेष प्रेम रखने वाला एवं राजकीय-सेवा द्वारा धन तथा सम्मान पाने वाला होता है। २३ से ४८ वर्ष की आयु तक यह राजकीय-सेवा में रह कर निरन्तर पदोन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह भी २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु तथा मन को प्रसन्न रखने वाली होती है। वह अस्थिर चित्त की तथा किंचित् क्रोधयुक्ता भी होती है, किन्तु पति से अत्यधिक प्रेम रखती है। पुत्र सौभाग्यशाली, सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। यह जातक धार्मिक तथा तीर्थाटन में विशेष रुचि रखता है। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है।

(१८८९६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्थिर-चित्त, अनेक विषयों का ज्ञाता, शान्तप्रिय, तथा उदार स्वभाव का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत-काव्य आदि की मर्मज्ञा तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। यह जातक राजकर्मचारी होता है तथा देश-विदेश की यात्राएँ करता हुआ पर्याप्त धनोपार्जन करता है। यह निम्नकोटि के लोगों को भी अपने साथ रखता है तथा उनसे सुख-सहयोग प्राप्त करता है। २६ वर्ष की आयु से ही यह धन से निरन्तर भरा रहने लगता है। जीवन के ३२, ३६, ३९ तथा ४३ वें वर्ष इसे आकस्मिक रूप से दुर्घटनाग्रस्त करने वाले होते हैं, परन्तु जीवन सुरक्षित बना रहता है। ५६ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक प्रभावशाली स्थिति को प्राप्त कर लेता है। इसके पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा भाग्यशाली होते हैं। इसे जल से बचना चाहिए। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१८९७) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान, बुद्धिमान, दानी, परोपकारी, ईश्वरभक्त तथा दीन-दुःखियों का सहायक होता है। यह अपने परिश्रम तथा उद्योग से धनोपार्जन करता है। यह बाल्यावस्था में माता से अलग रहता है तथा २९ वर्ष की आयु तक विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। राज्य-कर्मचारी के रूप में यह विशेष सम्मानित होता है। यह परदेश में नियुक्त पाता है तथा वहीं (इक) पर्याप्त धन कमाता है। यह चित्रकारी, नाटक, काव्य आदि कलाओं का प्रेमी, अत्यन्त भोगी-विलासी तथा ५० वर्ष की आयु में अत्यधिक उन्नति करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सुख देने वाली होने के साथ ही अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाली भी होती है। यह स्त्री से सुखी रहते हुए भी असन्तुष्ट भी रहता है। ४४ वर्ष की आयु में यह किसी बीमारी से बचता है। पुत्र उपयोगी होते हैं। परमायु ६५ वर्ष की होती है।

(१८९८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, गुणवान तथा धनवान होता है। यह २५ वर्ष की आयु में अध्यापन व्यवसाय का सेवा-कार्य में संलग्न हो, धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। ३३ वर्ष की आयु में यह उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय भी तभी होता है। यह परदेश में जाकर धन तथा सम्मान कमाता है। २८ वर्ष की आयु से उन्नति करना आरम्भ करके ५० वर्ष की आयु तक निरन्तर प्रगति करता चला जाता है। अपने मधुर व्यवहार एवं स्नेह पूर्ण स्वभाव से यह सम्पर्क में आने वाले लोगों का हृदय जीत लेता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला, मधुरभाषिणी तथा सेवाभावी होती है। वह उत्तम पुत्रों को जन्म देती है, जो जातक के जीवन काल में ही बड़े होकर उच्चपदों पर प्रतिष्ठित हो जाते हैं। ५५ वर्ष की आयु में यह अपना मकान बनवाता है। पूर्णायु ६९ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(१८९९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, विद्यावान्, चतुर, स्वस्थ, सुन्दर व्यक्तित्व, कुशाग्र बुद्धि वाला, राजकीय-सेवा में किसी अच्छे पद पर नियुक्ति पाने वाला, पुरुषार्थ को भी बड़ा मानने के कारण ईश्वर पर एक प्रकार से आस्था रखने वाला, अनेक विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ आगे बढ़ने वाला तथा दृढ़ आत्मविश्वासी होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु, मनस्वी सौभाग्यशालिनी, जातक के सभी कार्यों में रुचि लेने वाली तथा सहयोग देने वाली एवं घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। इस जातक की आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, अतः धन की कभी कोई कमी नहीं रहती। इसे राजकीय-सेवा द्वारा धन प्राप्त होता है। बाद में इसकी आमदनी के स्रोत बढ़ते हैं। गूढ़ कार्यों तथा विदेशों से धन का लाभ होता है। ४९ वर्ष की आयु में यह ईश्वर विश्वासी बन जाता है तथा दान-धर्म में रुचि लेने लगता है। संतान के लिए चिन्तित रहता है। पूर्णायु ७९ वर्ष।

(१९००) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, साहसी, वीर, अपने पराक्रम को आवश्यकता के समय ही प्रकट करने वाला, सबसे आदर तथा सम्मान पाने वाला, १४ से २० वर्ष की आयु तक पिता से अलग रहने वाला, परन्तु उसके बाद पिता के अनुकूल रह कर ३४ वर्ष की आयु में अत्यधिक धनोपार्जन करने वाला होता है। यह राज्य की सेवा में संलग्न होकर परदेश में रहता है। अपने कृपण स्वभाव के कारण यह अत्यधिक धन कमाता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह अनेक उच्च तथा उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर कार्य करता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, मनस्विनी तथा सुख देने वाली मिलती है। पुत्र उत्तम तथा सुयोग्य होते हैं, परन्तु कार्यक्षेत्र में उनसे कष्ट मिलता है। पत्नी कला कौशलप्रिय, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा विदुषी होती है। जातक सामान्यतः सुखी-जीवन बीतते हुए ७१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१९०१) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, धैर्यवान, साहसी, पराक्रमी, वीर, उदार, परोपकारी तथा नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न होता है। यह प्रत्येक कठिनाई को बड़े धैर्य के साथ सुलझाता है तथा उलझन इस तरह से सुलझाता है कि लोग आश्चर्य-चकित रह जाते हैं। इसकी पदाधिक पहुँच पाना सबके वश की बात नहीं होती। २४ वर्ष की आयु में यह जीवन के कार्य-क्षेत्र में कूद पड़ जाता है तथा देशान्तर में रहकर भाग्योदय प्राप्त करता है। यह जनहित के लिए आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाता है। न्याय हेतु अपने प्राणों की आहुति देने के लिए भी सदैव प्रस्तुत बना रहता है। २९ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक सम्मानी बनता है। ३१ वर्ष की आयु में किसी स्त्री के सहयोग से यह बहुत ऊँचे पद पर पहुँचता है और वहाँ से आर्थिक भाग्यशाली बनने का गौरव प्राप्त करता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। संतान का दुःख रहता है। पूर्णायु ५६ या ७८ वर्ष।

(१९०२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बलवान, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, ओजस्वी, लंबे कद तथा गौर वर्ण वाला, शास्त्रों में तथा मल्ल-विद्या के रुचि रखने वाला एवं विद्वान होता है। यह २५ वर्ष की आयु में दूर देश में जाकर रहता तथा वहीं पर आर्थिक धन तथा सम्मान अर्जित करता है। अपनी ३४ वर्ष की आयु में यह अपना योग्य अधिकारी के रूप में जाना जाता है। यह पापों अपराध करता है अथवा अपराधियों से लोगों को बचाता है। यह अपने बुद्धि-बल से बड़ी-से-बड़ी समस्याओं को सुलझाता है तथा बड़े साहस के काम कर दिखाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षाओं से युक्त, जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। सन्तानें सुन्दर तथा होनहार होती हैं। ४८ वर्ष की आयु में किसी संकट में पड़ता, परन्तु बाद में उससे छुटकारा भी पा लेता है। पूर्णायु ६९ वर्ष होती है।

(१९०३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मुखर, चिड़चिड़ा, कठोर स्वभाव का, अपने आप में ही मग्न रहने वाला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होता है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी बड़े तेज स्वभाव की, परन्तु धर्मप्रिय एवं जातक को सदैव उचित राय देने वाली, बड़ी बुद्धिमती होती है। जातक उससे बहुत सन्तुष्ट रहता है। पत्नी घर के सम्मान को बढ़ाने वाली, अपने पति को सर्वत्र प्रतिष्ठा दिलाने वाली तथा स्वयं अनेक कलाओं की ज्ञाता होती है। यह जातक २८ वर्ष की आयु में राजनैतिक सम्मान प्राप्त करता है तथा निरन्तर पदोन्नति पाता चला जाता है। ६० वर्ष की आयु में इसे बहुत धन-सम्मान तथा उच्चपद प्राप्त होता है। इसके पुत्र सुयोग्य तथा यशस्वी होते हैं। यह ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९०४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बहुत तीखा व्यवहार करने वाला, मध्यम कद का, अत्यधिक प्रभावशाली, किसी तकनीकी विषय का पंडित, संगीत-वाद्य का अधिकारी विद्वान, सुसंस्कृत रुचि का तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु से राजकीय सेवा अथवा किसी अन्य कार्य के द्वारा धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। तत्पश्चात् निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुसंस्कृत, सुलक्षणा तथा बुद्धिमती प्राप्त होती है, जो जातक के जीवन में बहुत उत्साह भर देती है। यह अच्छे तथा सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों का पिता बनता है। इसकी सन्तानें बड़ी होकर बड़ी सम्मानित, सम्पत्तिशालिनी तथा यशस्वी बनती हैं। जातक के जीवन के ३५, ३९, ४८ तथा ५५ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। पूर्णायु ७१ अथवा ७९ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१९०५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, कल्पनाशील, दार्शनिक तथा अनेक प्रकार के व्यसनों से मुक्त होता है। यह २५ वर्ष की आयु में किसी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होकर आजीविकोपार्जन आरम्भ करता है। २६-२८ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त ही इसे कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन करना पड़ता है तथा परदेश अथवा विदेश जाना पड़ता है। यह अत्यन्त स्वेच्छाचारी, उच्छृंखल, परिश्रमी तथा निर्भीक होता है, परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता से यथेष्ट धनोपार्जन भी करता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। यह अधिक समय तक किसी के अधीन नहीं रहता तथा स्वयं का उद्योग स्थापित कर विपुल सम्पत्ति उपार्जित करता है। संतानें सुयोग्य नहीं होतीं। ३९ वर्ष की आयु में किसी संकट का सामना करना पड़ता है, परन्तु उससे बचा जाता है। ५४ वर्ष में दुर्घटना सम्भव। परमायु ६२ वर्ष।

(१९०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, पराक्रमी तथा अपने उद्यम से ही उन्नति करने वाला होता है। यह न्याय-प्रिय, ज्ञानी तथा बुद्धिजीवी भी होता है। इसे लेखन कार्य आदि के सहारे आजीविका प्राप्त हो सकती है। २५ से ४५ वर्ष की आयु तक यह अथक परिश्रम करता है। अपने परिश्रम द्वारा यह छोटी स्थिति से बहुत ऊँचा उठ जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी, वाक्पटु, चतुर तथा मधुर व्यवहार करनेवाली कन्या के साथ होता है। पत्नी प्रत्येक कार्य में जातक की सहयोगिनी बनी रहती है। इसे मित्रों तथा विरोधियों से सदैव लाभ होता है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुयोग्य निकलते हैं और वे जातक के जीवन काल में ही चरित्री, यशस्वी तथा सुखी बन जाते हैं। यह जातक अपने जीवन में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा सुखी जीवन बिताता हुआ ५८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१९०७) – इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, काव्य-संगीत का प्रेमी तथा कोमल हृदय का होता है। इसे संगीत तथा नाटक से बहुत लगाव होता है। इसे दूसरों की सेवा करके आजीविका उपार्जित करनी पड़ती है। अपने माता-पिता से इसे कोई सहयोग नहीं मिलता। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाहोपरान्त कुछ समय तक तो यह अपने घर पर ही रहता है, तत्पश्चात बाहर जाकर धनोपार्जन करता है। यह अपने परिश्रम से बहुत धन कमाता है। इसके भाई-बन्धु तथा मित्र अच्छे होते हैं। बड़ा होकर यह अपने माता-पिता की सेवा भी करता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्र-पुत्री भी होते हैं, परन्तु बड़े होकर धन का नाश करते हैं तथा दुःख देते हैं। इस जातक के जीवनकाल में अनेक उत्थान-पतन आते हैं। बाद में सब कुछ ठीक हो जाता है। पूर्णायु 67 वर्ष की होती है।

(१९०८) – इस जन्म-कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, शान्त, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा जन्मकाल से ही सुख-सम्पन्नता के वातावरण में पलने वाला होता है। यह 25 वर्ष की आयु तक परिश्रम पूर्वक विद्याध्ययन करता है, फिर कुछ समय तक किसी अच्छे प्रतिष्ठान में सेवा करता है। इसी अवधि में इसका विवाह सुन्दरी, कला-कुशल, पढ़ी तथा गुणवती कन्या के साथ होता है, जो इसे सुख देने वाली तथा अपने आकर्षक व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाली होती है। यह कुछ समय तक परदेश में रहकर भी धनोपार्जन करता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। इसे अपने विरोधियों द्वारा अप्रत्याशित रूप में धन की उपलब्धि होती है। अपने पुत्रों से कुछ समय के लिए दुःखी होता है परन्तु अन्ततः उन्हें किसी काम में लगाने में सफलता प्राप्त कर लेता है। इसकी परमायु 72 अथवा 79 वर्ष होती है।

(१८०८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मानी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, काव्य-साहित्य आदि में रुचिवान, रसिक प्रकृति का तथा अनेक मित्रों वाला होता है। लोग इसके चारों ओर घिरे रहते हैं। यह सब लोगों का सम्मान करता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा प्राप्त होती है तथा अपने गुणों एवं अध्यवसाय के बल पर यह पदोन्नति प्राप्त करता चला जाता है। २८, ३५ तथा ४० वर्ष की आयु में इसकी मित्रता अनेक अच्छे लोगों से होती है तथा धन-लाभ के अवसर भी उपस्थित होते हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह अपना निजी व्यवसाय स्थापित कर, राजकीय-सेवा से अलग हो जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा राजसी-प्रकृति की होती है। गर्भस्रावों के कारण इसे सन्तान की ओर से कष्ट होता है। प्रयत्न से ही एक पुत्र प्राप्त होता है। पूर्णायु ८७ वर्ष होती है।

(१९२०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, कलाओं से युक्त, अनेक विषयों का ज्ञाता, सुशिक्षित तथा विद्वान होता है। यह अपने उद्योग, साहस तथा परिश्रम से धनोपार्जन करता है तथा निरन्तर अधिक धनी होता चला जाता है। यह पढ़ने-लिखने अथवा वाक्पटुता से संबंधित कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। राज्य द्वारा भी धन-लाभ होता है। यह किसी विशेष चतुराई के कार्य द्वारा भी अपना महत्व प्रतिपादित करता है। यह या तो राजकीय-सेवा करता है अथवा राजकीय-कार्यों में सहयोग देता है। ३० वर्ष की आयु में यह विशेष लाभ उठाता है तथा ५० वर्ष की आयु तक अत्यधिक धन तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा धन-संचय करने में निपुण होती है। अपने राजसी-स्वभाव के कारण जातक को कुछ कष्ट भी देती है। संतान-सुख मिलता है। परमायु ८८ वर्ष होती है।

भु० सं० २३४४

कु० २०

(१६११)- इस कुण्डली का स्वामी पुरुष, कला तथा साहित्य का प्रेमी, नाटक-संगीत आदि में विशेष रुचि रखने वाला, धर्मशास्त्र तथा अन्य अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी पत्नी प्राप्त करता है विवाहोपरान्त ही इसकी भाग्योन्नति होती है। यह किसी अच्छे सेवा-कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ अल्पसमय में ही पर्याप्त धन तथा यश अर्जित कर लेता है। इसे धन की बड़ी तृष्णा रहती है, अतः यह व्यय करने में कृपण होता है तथा संचय करने में कुशल होता है। इसे ज्येष्ठ पुत्र का सुख नहीं मिलता। विवाह यदि २३ वर्ष की आयु में न हो, तो २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत समय तक पिता के यहाँ रहने को विवश होती है। पुत्र से भी बहुत कष्ट मिलता है। ३७, ४१ एवं ४६ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है। वृद्धावस्था में भी कुछ कष्ट होता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१६१२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, सद्गुणी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है २३ वर्ष की आयु से यह अपने पैतृक-व्यवसाय में संलग्न होकर ४० वर्ष की आयु तक बहुत धनी बन जाता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रत्येक कार्य में सहयोग देने वाली मिलती है, परन्तु वह प्रायः बीमार बनी रहती है। ५६ वर्ष की आयु में जातक बहुत उच्चपद प्राप्त कर लेता है। यह बहुत धन इकट्ठा करता है। अपने मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों से इसे बहुत सहयोग मिलता है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। पत्नी यदि जीवित न रहे तो इसे दूसरी (उप-पत्नी) स्त्री से पुत्र का लाभ होता है। पत्नी से भी पुत्र होना सम्भव है। इसे धन की कभी कमी नहीं होती। दुर्घटना से मृत्यु सम्भव है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१६१३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बलवान, सुखी तथा सुशिक्षित होता है यह अध्ययन समाप्त करके शासन अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न हो, अपने कार्य तथा परिश्रम से उन्नति करता चला जाता है। २३ से २८ वर्ष की आयु तक परदेश में रहता है। फिर मनोनुकूल स्थान पर रहते हुए कार्य करता है। ५० वर्ष की आयु के बाद पुनः परदेश में चला जाता है। इसकी पदोन्नति होती चली जाती है। उच्च अधिकारी इससे बहुत सन्तुष्ट रहते हैं। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु इसे पत्नी से सुख नहीं मिलता। पत्नी सुशिक्षित तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। जातक के साथ उसके मतभेद रहते हैं। वह जातक पर अपना प्रभाव रखती है। एक पुत्र सुन्दर तथा होनहार होता है। सामान्यतः जातक यथेष्ट सुखी तथा धनी जीवन व्यतीत करता है। इसकी परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१६१४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद का, रक्तिम आभायुक्त, सुन्दर, विद्वान, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, पण्डित, विख्यात तथा अपनी योग्यता एवं पुरुषार्थ के बल पर आशातीत उन्नति करने वाला होता है। २५ से ४० वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। देश-परदेश में घूमकर अपने किसी व्यवसाय की वृद्धि करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह अपनी पत्नी के नाम से व्यवसाय प्रारम्भ करता है। उसमें बहुत लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं गुणवती होती है। वह जातक को सुख देती है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर, सुयोग्य तथा भाग्यशाली होते हैं। यह किसी की साझेदारी में काम करके भी लाभ उठा सकता है। जीवन खूब सुख-सम्पन्नता में व्यतीत होता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१९१५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, निर्मल हृदय, शान्ति प्रिय तथा सद्गुणी होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है तथा बाल्या-वस्था से ही सुख-चैन मिलता है। यह राजसी-उपकरण के रूप में प्रसिद्ध वस्तुओं का व्यापार करता है। २६ वर्ष की आयु में किसी राजकीय-सेवा से भी सम्बद्ध हो सकता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बड़ी कर्मठ तथा जातक की आज्ञानुवर्तिनी होती है। २० वर्ष तक निरन्तर परिश्रम करने के उपरान्त इसकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो जाती है। ५० वर्ष की आयु में यह बड़ा धनी तथा सम्मानित व्यक्ति बन जाता है। इसके पुत्र भी सुन्दर तथा होनहार होते हैं। ३५, ३९ तथा ४३ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट प्राप्त होता है। सामान्य रूप से सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९१६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, यशस्वी, सत्कर्म करने वाला, कीर्तिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह अनेक विषयों का जानकार होता है। इसे २२ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा प्राप्त हो जाती है। यह मधुरभाषी तथा सर्वप्रिय होने के कारण निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। अपने पारिवारिक दायित्वों को भी यह कुशलता पूर्वक पालन करता है। यह विपुल धन अर्जित करता है तथा अपने माता-पिता को सुख देता है। इसका विवाह बड़ी कठिनाई से होता है। पत्नी सुन्दरी, अच्छे स्वभाव की तथा गुणवती तो होती है, परन्तु वह प्रायः रुग्णा बनी रहती है, इस कारण जातक सदैव चिन्तित बना रहता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं। वे जातक के जीवनकाल में ही धनी तथा यशस्वी बन जाते हैं। इस जातक की परमायु ७३ वर्ष की होती है।

(१६१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल चित्त, अत्यन्त गुणवान्, अनेक विषयों का ज्ञाता, शास्त्रों में रुचि रखने वाला, गौरवर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसे विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी इकहरे शरीर की, गुणवती एवं प्रभावशालिनी होती है। वह भी किसी व्यवसाय अथवा आर्थिक-लाभ के कार्य में संलग्न होकर जातक को सुख एवं सहयोग देती है, परन्तु कभी-कभी पत्नी के कारण जातक को इसलिए कष्ट का अनुभव होता है, क्योंकि वह स्वयं बीमारी का दीर्घकालीन कष्ट भोगती है। यह जातक राजकीय-सेवा तथा निजी-व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। यह परदेश में रहकर धन तथा सम्मान अर्जित करता है। सन्तानों से सुख मिलता है और वे जातक के जीवन-काल में ही सुस्थापित हो जाती हैं। परिवारी जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ६० वर्ष से कुछ अधिक की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६१८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सद्गुणी, परोपकारी, सहानुभूतिपूर्ण, अनेक कलाओं का ज्ञाता, अनेक विषयों का पण्डित, अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा सब लोगों की अनुकूलता प्राप्त करने वाला तथा अपना काम छोड़कर भी दूसरों के काम आने वाला होता है। यह स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों को लाभ पहुँचाने की सोचता है। यह अपने माता-पिता से असन्तुष्ट तथा अलग रहता है। यह धन का लोभी भी होता है, परन्तु धन के लिए उस समय लोभी नहीं रहता, जब किसी को कष्ट में पड़ा देखता है। ऐसे अवसरों पर यह खूब खर्च करता है। २६ वर्ष की आयु से यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उन्नति प्राप्त करता चला जाता है। इसे कभी भी शारीरिक अथवा आर्थिक-कष्ट नहीं होता। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, साँवली, सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। कई गर्भ नष्ट होते हैं, परन्तु सौभाग्यशाली पुत्रों का जन्म भी होता है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१९१९) इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुगठित शरीर वाला, प्रभावशाली, गम्भीर, उदार, अनेक विषयों तथा कलाओं का ज्ञाता तथा अपने निजी गुणों के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु से पूर्व ही अपने क्षेत्र में अत्यधिक मान्य हो जाता है। २६ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में संलग्न होता है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत उच्च पद पर जा पहुँचता है तथा आजीवन निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २७ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी कुछ समय तक रुग्ण रहती है, परन्तु पति पर अपना पूर्ण प्रभाव बनाये रखती है। वह सुयोग्य तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। इसके कई सन्तानें होती हैं और वे सब भाग्यशाली होती हैं। ३२, ३८ तथा ४१ वर्ष की आयु में इसे कुछ तथा ५१ वर्ष की आयु में अधिक कष्ट होता है। इसकी परमायु ६९ अथवा ८१ वर्ष होती है।

(१९२०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली, परोपकारी, उदार स्वभाव का तथा अपने गुणों के कारण मित्रों, बन्धु-बान्धवों तथा परिवारीजनों में लोकप्रिय होता है। यह अनेक कलाओं तथा विषयों का ज्ञाता और उन पर भाषण देने में कुशल होता है। यह २३-२४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर निरन्तर उन्नति करता हुआ, आजीवन सुख भोगता है। इसे कभी भी आर्थिक अथवा शारीरिक-कष्ट नहीं होता। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। पौत्रों का सुख भी उपलब्ध होता है। यह राज्य में उच्च-पद तथा सम्मान प्राप्त करता है। मित्रों तथा परिवारीजनों में लोकप्रिय होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३७, ४१, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८२ वर्ष की होती है। इस अवस्था के बाद भी कुछ समय और जीवित रह सकता है।

भ० सं० ९९४४३

कु० १०

(१९२१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मीठा बोलने वाला, परन्तु स्वभाव से रूखा तथा क्रोधी होता है। इसी कारण यह अपने कामों को भी बिगाड़ लेता है। इसे अपने-पराये की पहिचान नहीं होती। इसे श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त होती है, तथापि यह अपने गुणों को स्वयं प्रकट नहीं करता। लोग स्वयं जानलें, यही चाहता है। २४ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर अर्थोपार्जन करता है, परन्तु निरभिमानी होते हुए भी लोगों से बुराई पाता है। यह किसी का काम करके भी यश नहीं पाता। बाल्यावस्था में यह माता से अलग रहता है, बाद में राजकीय-सेवा कार्यवश विदेशवास करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा मृदुल स्वभाववाली कन्या के साथ होता है। वह गंभीर स्वभाव की, आज्ञानुगामी तथा अपने कार्यों से जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली होती है। ३५,३८, ४१ तथा ४५ वें वर्ष उन्नति दायक होते हैं। ५१ वें वर्ष में अधिक कौटुम्बिक संतान कोकष्ट होता है। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(१९२२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक सुन्दर, प्रभावशाली, काव्य-नाटक आदि में रुचि लेने वाला, साहित्य एवं कलाओं का ज्ञाता तथा कलाकारों को प्रोत्साहन देने वाला होता है। यह धन-ऐश्वर्य से परिपूर्ण होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त एवं श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न यह जातक उच्च राजपद पर प्रतिष्ठित होकर २४ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता हुआ निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २६-२७ वर्ष की आयु में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों का निर्वहन करता है। ४८ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होता है। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती, विद्वान् तथा जातक के मान-सम्मान को बढ़ाने वाली सिद्ध होती है। वह जातक को प्रसन्न रखती है। गर्भ नष्ट होते हैं, सन्तान कठिनाई से होती है तथा सन्तान के लिए चिन्ता बनी रहती है। कभी किसी दुर्घटना का योग भी बनता है। पूर्णायु ६८ वर्ष से अधिक होती है।

भु० सं० ११११

कु० र०

<u>(१९२३)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, प्रियदर्शन, सबको मोहित करने वाला, साहित्य काव्य तथा ललित- कलाओं का प्रेमी तथा अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से आकर्षित करने वाला होता है। इसे सम्पूर्ण-शिक्षा प्राप्त होती है। यह युवावस्था के आरम्भ से ही माता- पिता से अलग परदेश में रहने लगता है। बन्धुजनों से स्नेह रखता है। विवाह २१ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होने के साथ ही स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। पुत्र एवं सन्तान के प्रति चिन्ता रहती है। यह स्वपरिश्रम से राज्य में उच्चपद प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। राज- योग सम्पन्न होने के कारण यह ऐश्वर्यशाली, धन-सम्पन्न, सम्मानित तथा सुखी- जीवन व्यतीत करता है। इसे कभी कष्ट नहीं भोगना पड़ता। यह सामान्यजन तथा अपने परिवारी लोगों का पोषक होता है। इसकी पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

<u>(१९२४)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौर वर्ण, सुन्दर, साहित्य- कला - काव्य का ज्ञाता, उदार, गुणवान, विद्वान् तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व का धनी होता है। यह पैतृक- सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, भूमि, भवन, वाहनादि के सुख से सम्पन्न तथा बहुत धनी होता है। इसे अपने जीवन में धन का कोई कष्ट नहीं होता। इसे स्वतन्त्र रहने में आनन्द का अनुभव होता है। अपने भाव- साम से यह सन्तुष्ट रहता है। इसका विवाह लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी होने के साथ ही स्वतन्त्र व्यक्तित्व की होती है। वह पति को अपने वश में रखती है तथा बड़ी गुणवान, ज्ञानवान् एवं पंडिता होती है। वह जातक को बड़े-बड़े काम करने के लिए प्रेरित करती है एवं यश दिलाती है। इसके सन्तान कठिनाई से होती है। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। वृद्धावस्था में पति- पत्नी तीर्थयात्रा एवं धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेते हैं। परमायु ६८ वर्ष की होती है।

(१९२५)- इस जन्मांग चक्र का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बलिष्ठ शरीर, परन्तु कोमल स्वभाव का, उग्र प्रभावशाली; ऊपर से कोमल दिखाई देने वाला, परन्तु भीतर से उबल साहसी होता है। क्रोध आने पर यह विकराल स्वरूप ग्रहण कर लेता है। उस समय यह बुद्धि-विवेक को तिलांजलि दे देता है। यह धनवान, पैतृक-सम्पत्ति का लाभ पाने वाला, सब की सहायता करने वाला तथा अत्यधिक भावुक भी होता है। यह २६ वर्ष की आयु में किसी राजकीय-सेवा में नियुक्त होता है। नम्रता आदि चरित्रगत होना इसके विशिष्ट गुण होते हैं। इसका विवाह कुछ विलम्ब से होता है। पत्नी सुन्दरी परन्तु कुछ तेज स्वभाव की होती है। इसे पत्नी का अधिक सुख नहीं मिलता। सन्तान भी एक कन्या ही होती है, पुत्र का योग नहीं बनता। ३३ वर्ष की आयु में अरिष्ट तथा ४० वर्ष की आयु में कष्ट होता है। पूर्णायु ६० वर्ष से अधिक होती है।

(१९२६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह दयालु, भावुक तथा क्रोधी भी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है, परन्तु उसका सुख अधिक समय तक नहीं मिलता, क्योंकि वह या तो रुग्ण रहती है अथवा परिस्थिति वशात् अलग रहती है। इस जातक को धन की तृष्णा कुछ अधिक ही होती है। खूब धनी होकर भी इसका मन नहीं भरता। इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। इसके एक पुत्री होती है, जो सुन्दरी, रूपवती, गुणवती, धैर्यशीला एवं धनी होती है। पुत्र भी सुन्दर तथा यशस्वी होता है। इसे ६५ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३६, ३९, ४२, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह ७९ वर्ष की परमायु पाता है। इससे बचे तो ८७ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१९२७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कठोर स्वभाव का तथा अपने तेज से चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करने वाला होता है। इसे उच्च-शिक्षा प्राप्त होती है तथा यह राजयोगधारी भी होता है। २४ वर्ष की आयु में ही इसे राज्य में कोई सम्मानजनक पद प्राप्त हो जाता है। कालान्तर में यह और भी ऊँचे पद पर जा पहुँचता है। २७ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, राजसी-स्वभाव की तथा अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान रखने वाली होती है। यह जातक अपनी पत्नी के निर्देशानुसार चलता है, तथापि इसके चारों ओर अन्य स्त्रियाँ भी चक्कर काटती रहती हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह राजकीय कार्य से विदेश यात्रा करता है। सन्तान की ओर से आरम्भ में चिन्ता रहती है, परन्तु बाद में पुत्र-पौत्रों से घर भर जाता है। इसे आजीवन धन तथा सुख की कमी नहीं रहती। परमायु ६९ वर्ष की होती है।

(१९२८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, साहसी, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला तथा अपने पुरुषार्थ से ही धनोपार्जन में विश्वास रखने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था में तेज-ज्वर होता है तथा सिर में चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। अनेक विषयों में रुचि रखते हुए भी यह चिकित्सा में विशेष रुचि लेता है। यह अपने उद्योग को प्रकट नहीं करता, कार्य के सफल हो जाने पर ही लोगों को उसकी जानकारी मिलती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं की ज्ञाता तथा जातक को अपने वश में रखने वाली होती है। यह जातक पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करता है। राजकीय-सेवा से भी इसे बहुत धन मिलता है। भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख उपलब्ध होते हैं। इसे सन्तान का कष्ट होता है। ३०, ३३, ३८ तथा ४८ वर्ष की आयु में विशेष उन्नति करता है। पूर्णायु ६९ अथवा ८० वर्ष होती है।

(१९२९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, स्वस्थ, गुणवान तथा विद्वान् होता है। यह ऊपर से रूखा तथा शुष्क दिखाई देता है, परन्तु यथार्थ में बहुत सहृदय होता है। २५ वर्ष की आयु में यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह माता-पिता से अलग रहता है। इसका कार्य क्षेत्र परदेश होता है तथा घर से बहुत दूर रह कर यह यथेष्ट धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह ईश्वर-भक्त भी होता है। इसका विवाह २४-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती एवं अनुरागवती होती है। वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी, मनस्विनी तथा स्वयं के आर्थिक-साधनों से युक्त भी होती है। इसे सन्तान विलम्ब से प्राप्त होती है, परन्तु वे होनहार होती हैं। इसका जीवन सुख-सम्पन्नता में व्यतीत होता है। ४६ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१९३०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, विद्वान, पंडित, धनी-मानी तथा अपने गुण, वैभव एवं ऐश्वर्य के कारण सर्वत्र पूजित होता है। यह अपने साहस तथा पराक्रम से धनोपार्जन करता है। यह २३ वर्ष की आयु में ही राज्य की महत्वपूर्ण सेवा में संलग्न होता है तथा शीघ्र ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। इसे आजीवन धन-सम्पत्ति का सुख उपलब्ध बना रहता है। अपने व्यवसाय तथा अन्य साधनों द्वारा भी यह धन कमाता है। ५० वर्ष की आयु में इसे बहुत ही महत्वपूर्ण पद एवं सम्मान प्राप्त होता है। इसे सन्तान कुछ विलम्ब से ~~परन्तु श्रेष्ठ~~ प्राप्त होती है। विवाह २८ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा एवं आज्ञाकारिणी मिलती है। आरम्भ में कुछ गर्भ नष्ट भी होते हैं। समाज में सम्मान प्राप्त करते हुए इस जातक को ६८ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(१६३१) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ज्ञानी, बुद्धिमान तथा कई विषयों का ज्ञाता होता है। यह अपनी किसी तकनीकी-योग्यता के कारण राजकीय-सेवा में नियुक्ति पाकर, निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २४ वर्ष की आयु में यह राज्य की सेवा में नियुक्ति पा लेता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक बरा-बर प्रगति करता रहता है। फिर दो वर्ष के लिए कुछ परेशानियाँ आती हैं। इसका कोई निजी व्यव-साय भी होता है, अतः ३६ वर्ष की आयु से यह अपने निजी व्यवसाय पर ध्यान देता है और उससे बहुत लाभ उठाता है। ४८ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से अलग हो जाता है। अपने नौकरों द्वारा ही इसे अपने व्यवसाय में कुछ विघ्न उठाने पड़ते हैं, परन्तु अन्ततः सब कुछ ठीक हो जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल मिलती है। विलंब से केवल एक पुत्र होता है। जीवन सुख से बीतता है। परमायु ६९ अथवा ७३ वर्ष होती है।

(१६३२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, हृष्ट शरीर का, राजयोग युक्त तथा राज्य में उच्च पद पाने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दर, शान्त स्वभाव की तथा महत्वाकांक्षिणी है। २१ वर्ष की आयु से अर्थोपार्जन करने लगता है। ३३, ३८ तथा ४८ वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। ४३ वाँ वर्ष भी लाभप्रद सिद्ध होता है। यह ३४ वर्ष की आयु में कोई निजी व्यवसाय आरम्भ करता है, जिससे इसे विशेष लाभ होता है। इसे देशान्तर में लाभ तथा यश-दोनों की प्राप्ति होती है। विवाहोपरान्त इसके सेवा-कार्य में परिवर्तन आता है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है, परन्तु पत्नी की ओर से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसको परिवारजनों से कोई सहयोग नहीं मिलता, तथापि यह उनकी सहायता करता रहता है। इसके मित्रों की संख्या भी अधिक होती है। यह ६९ अथवा ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९३३) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता, संगीतज्ञ, कवि, उदार-हृदय तथा परोपकारी होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। २५ वर्ष की आयु में यह उन्नति करना आरंभ करके शीघ्र ही उच्चस्थिति प्राप्त कर लेता है। इसे कभी असफलता प्राप्त नहीं होती। ५० वर्ष की आयु में यह अत्यधिक धनी हो जाता है। ५२ वर्ष की आयु इसे सर्वोच्च शिखर पर ले जाती है। यह अपनी अचल-सम्पत्ति के माध्यम से भी विपुल धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, मनोनुकूल तथा किसी प्रतिष्ठापूर्ण सेवा में नियुक्ति पाने वाली होती है। यह सन्तान की ओर से दुःखी होता है। कई सन्तानें नष्ट हो जाती हैं, अंत में एक जीवित रहती है। आजीवन यश, धन तथा सुख प्राप्त करता हुआ यह जातक ७१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१९३४) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धनी, मानी, ऐश्वर्यशाली, अपूर्व गुणी तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में जाता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। इसे विदेश में रहकर बहुत मान-सम्मान प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। यह विपुल सम्पत्ति, भूमि, भवन, वाहनादि का स्वामी होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। वह स्नेहमयी, जातक को सन्तुष्ट रखने वाली, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा स्वयं भी सर्वत्र सम्मान अर्जित करने वाली होती है। वह भी जातक की भाँति किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होती है। यह जातक अनेक स्त्रियों का भोगी तथा उनके माध्यम से धनोपार्जन करने वाला होता है। सन्तानें अनेक तथा सुन्दर, सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ७१ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१६३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धनी, मानी, बुद्धिमान, सुन्दर तथा अनेक विषयों का ज्ञाता है। यह किसी तकनीकी-योग्यता के कारण राजकीय-सेवा अथवा व्यावसायिक-प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर आजीविका प्राप्त करता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल धन कमाता है। इसकी विद्यालयीन शिक्षा उतनी नहीं होती, जितनी कि इसे अध्यवसाय के बल पर प्राप्त होती है। ३४ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी जातक के प्रत्येक कार्य में सहयोग करने वाली तथा जातक पर अपना प्रभाव रखने वाली होती है। पुत्र-पुत्री भी बहुत होते हैं। यह जातक भोगी प्रवृत्ति का होने के कारण अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। इसे परदेश में सब प्रकार के सुख तथा वैभव उपलब्ध होते हैं। इसे जीवन में कभी कोई खास कष्ट नहीं उठाना पड़ता। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(१६३६) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, संयत स्वभाव का, समझदार, परोपकारी दानी, धर्मात्मा, अपने परिश्रम से बहुत धन कमाने वाला; व्यवसाय, राज्य तथा अन्य प्रतिष्ठानों से लाभ उठाने वाला तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर धन, सम्मान एवं सुख अर्जित करने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु से ही यह उन्नति करना आरंभ कर देता है। इसके माता-पिता की आयु लम्बी होती है और वे अपने जीवन-काल में ही इसे ऊँची स्थिति में देखते हैं तथा इसके द्वारा प्रदत्त सुख का उपभोग भी करते हैं। इसके कई भाई-बहिन होते हैं। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती, सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। वह जातक को सदैव अच्छी सलाह देती है, वह वाक्पटु तथा सभी कार्यों को बड़ी समझदारी से करने वाली होती है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। जीवन के ३०, ३३, ३८, ४५ तथा ५१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१९३७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चिन्तक, भावुक, न्यायी तथा किसी का अहित न चाहने वाला होता है। यह दूसरों के दुःख को अपना दुःख मानता है तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखते हुए सहायता करने के लिए तत्पर रहता है। इसे माता-पिता का धन प्राप्त होता है। यह उनकी सेवा भी करता है। इसका विवाह २४-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मधुरभाषिणी तथा सुन्दरी होती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती है। २६-२७ वर्ष की आयु में ही जातक राजकीय-सेवा आदि के माध्यम से धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे अपनी छोटी तथा बड़ी बहनों से प्रेम मिलता है। श्वेत वस्तुओं तथा लोहा आदि धातुओं से इसे विशेष लगाव होता है। २९ वर्ष की आयु में यह इन वस्तुओं के व्यव-साय द्वारा भी धनोपार्जन करता है। यह ऐश्वर्यशाली एवं सुखी-जीवन बिताता है। पुत्री का सुख होता है। पुत्र के लिए चिन्तित रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है।

(१९३८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका मन अध्ययन अथवा अध्यवसाय में अधिक नहीं लगता, फिर भी यह सुशि-क्षित तथा बुद्धिमान होता है। व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों में यह विशेष सफल रहता है। यह किसी सेवा-कार्य में व्यवस्थापक के रूप में ही नियुक्त होता है। इसकी बुद्धि व्यावसायिक भी होती है। २५ वर्ष तक नियमित सेवा-कार्य करके यह अपना निजी व्यवसाय आरंभ करता है और उसमें बहुत धन कमाता है। यों, इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, अतः इसे धन की कमी कभी नहीं रहती। इसकी मान-प्रतिष्ठा में भी नित्य वृद्धि होती रहती है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, स्वस्थ तथा मनस्विनी होती है। संतानें कम ही होती हैं। सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक बिताते हुए यह ६० वर्ष से अधिक की परमायु प्राप्त करता है।

(१९३९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी रक्त-गौर-वर्ण, मध्यम कद, छरहरे शरीर का, स्वस्थ, रूखे स्वभाव का तथा अन्य लोगों के सम्पर्क से दूर रहने वाला होता है। यह छोटे लोगों की सहायता करने को सदैव प्रस्तुत रहता है। स्वभाव से उदार होने के कारण इसमें परोपकार की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। यह अपने परिश्रम तथा उद्योग से धनोपार्जन करता है। २० वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरंभ कर देता है। किसी की नौकरी न करके स्वतन्त्र जीवन बिताता है। ५० वर्ष की आयु में यह विपुल सम्पत्ति का स्वामी हो जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसकी पत्नी बड़ी मनस्विनी एवं जातक को धनोपार्जन में सहायता देने वाली होती है। विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९४०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, उच्च-आकांक्षा सम्पन्न, अपने पुरुषार्थ को ही सर्वोपरि समझने वाला तथा स्व-पराक्रम से उपार्जित धन द्वारा सुखोपभोग करने वाला होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से कोई सहायता नहीं मिलती। यह दूर देश में रह कर व्यवसाय द्वारा धन कमाता है। २५-२६ वर्ष की आयु में ही यह परदेस में चला जाता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी राजसी-स्वभाव की, मनस्विनी तथा स्वतंत्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। जातक उसके व्यक्तित्व से स्वयं भी प्रभावित बना रहता है। कुछ विपरीत-स्वभाव के होने के कारण कभी-कभी पति-पत्नी में खटपट भी हो जाया करती है, किन्तु ये एक दूसरे के सहयोगी तथा स्नेही बने रहते हैं। संतानें थोड़ी ही होती हैं। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

भू० सं० २९४४

कु० २०

(१९४१) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सहृदय, परोपकारी तथा दूसरों के दुःख को देखकर द्रवित होने वाला होता है। यह प्रारंभ से ही माता-पिता से अलग रहता है। यह प्रारंभ से ही महत्वाकांक्षी होता है। अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए यह कठोर परिश्रम भी करता है। इसका विवाह कुछ बड़ी आयु में होता है अथवा इसके दो विवाह होते हैं। पहला विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में तथा दूसरा २७-२८ वर्ष की आयु में होना संभव होता है। यह अपने अध्यवसाय से देशान्तर में रहकर या देशान्तर से सम्बन्ध रखते हुए धनोपार्जन करता है। यह किसी भी काम में अधिक दिनों तक नहीं लगा रहता है। इसका पूर्ण भाग्योदय ३८-३९ वर्ष की आयु में होता है। यह अपनी आर्थिक-सम्पन्नता के कारण समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इसके पास धन का कभी अभाव नहीं रहता। यह भोग-विलास में रत रहकर पर-स्त्री गमन भी करता है। संतानें कम होती हैं। पूर्णायु ७८ या ८३ वर्ष।

(१९४२) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। यह सुन्दर, स्वस्थ तथा पुरुषार्थी होता है। २५ वर्ष की आयु में ही यह सेवा-कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है तथा ३५ वर्ष की आयु में उच्च पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी तेजस्वी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व की धनी होती है। वह महत्वाकांक्षिणी स्वयं भी धनोपार्जन करती है। अपने सौन्दर्य एवं तेज से वह पति सहित सभी लोगों को प्रभावित करती है। २३ तथा २९ वर्ष की आयु में यह संकट-ग्रस्त होता है। बीमारी के कारण ही कष्ट पाता है। इसे ४५ वर्ष की आयु में धन का विपुल लाभ होता है। कुछ समय बाद यह परदेश में रहना आरंभ करता है तथा वहाँ अपने व्यवसाय की वृद्धि करता है। यह दूसरों के साथ साझेदारी का व्यवसाय भी कर सकता है। संतान की ओर से दुःखी रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

(१९४३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी परिश्रमी, पुरुषार्थी, मध्यम कद वाला, कुछ स्थूल शरीर का, शक्तिशाली तथा स्वरूपवान् होता है। यह २५ वर्ष की आयु में ही किसी सेवा-कार्य में नियुक्त होकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ४५ वर्ष की आयु में बहुत महत्वपूर्ण स्थिति पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी का सुख अधिक प्राप्त नहीं होता। पत्नी कभी साथ तो कभी अलग रहती है। जातक उसके प्रति हीनभावना से युक्त होता है। यह अपना निजी व्यवसाय भी करता है और उसके कारण भी पत्नी से अलग रहता है। ५०-५२ वर्ष की आयु में यह अत्यन्त उन्नत स्थिति प्राप्त कर, विदेश-यात्रा करता है। पुत्र-पुत्री युक्त होते हैं। अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध होते हैं। भूमि, भवन, वाहन आदि के सुख से सम्पन्न यह सुखी-जीवन बिताता हुआ लगभग ८९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९४४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कला-प्रेमी, संगीत-वाद्य का ज्ञाता तथा साहित्य-लेखन से भी सम्बन्ध रखने वाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु में ही किसी सेवा-कार्य में नियुक्त होकर उन्नति करना आरम्भ कर देता है तथा अपनी बुद्धिमत्ता, योग्यता एवं कार्य-क्षमता द्वारा शीघ्र ही उच्च पद पर पहुँच जाता है। इसकी आय के साधन अनेक होते हैं। भूमिगत-द्रव्य लाभ कराने इसे सुअवसर प्राप्त होता है। इसका विवाह २८-२९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी परिश्रमी, रूप-गुण-सम्पन्ना तथा स्वतन्त्र विचारों के अनुसार चलने वाली होती है। यह जातक विलासी प्रकृति का होने के कारण अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। बाद में यह सबसे विरक्त भी हो जाता है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। वे इसके जीवन काल में ही समस्त उत्तरदायित्वों को सँभाल लेती हैं। यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त कर परलोक-गमन करता है।

(१९४५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्य रूप, स्वप्रचारक का, अपने गुणों को विज्ञापित करने में प्रयत्नशील रहने वाला, अहंकारी तथा अन्य लोगों की दृष्टि में उपेक्षा का पात्र होता है। यह राजकीय-सेवा में उच्चपद प्राप्त कर लेता है। यह किसी प्रशासनिक अथवा रक्षा-विभाग से संबंधित कार्य में नियुक्त रहता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह उन्नति करने लगता है तथा शीघ्र ही महत्वपूर्ण स्थान पर जा पहुँचता है। राजकीय-सेवा के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य से भी यह सम्बद्ध रहता है। अपनी पत्नी के नाम से किसी कारोबार करके भी यह लाभ उठाता है। इसका विवाह १९ अथवा २६ या २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तानें भी सुन्दर होती हैं। ७६ वर्ष की आयु में इसे कुछ भारी कष्ट होता है। परमायु ९० वर्ष से अधिक होती है।

(१९४६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कलाओं का ज्ञाता, प्रत्येक कार्य को लगन एवं कौशल से करने वाला। अपने पाण्डित्य तथा व्यक्तित्व से सभी को प्रभावित करने वाला। विपुल सम्पत्ति, भूमि, भवन, वाहनादि का स्वामी, तथा अपने कार्य को जब तक पूरा न करले, तब तक उसके विषय में किसी को कुछ न बताने वाला होता है। इसे २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा का अवसर मिलता है। अपने गुणों तथा अध्यवसाय के बल पर यह उच्चपद पर शीघ्र ही पहुँच जाता है। ३२ वर्ष की आयु में किसी बाहरी व्यक्ति के सम्पर्क से इसे विपुल धन का लाभ होता है। ५२ वर्ष की आयु में इसे कुछ विघ्न-बाधाओं तथा कष्टों की उपलब्धि होती है। इसका विवाह २३-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा किसी उच्चपद पर कार्य करने वाली होती है। जातक के कई सुन्दर पुत्र होते हैं। यह ८८-८९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६४७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, ज्ञानी, अत्यधिक महत्वाकांक्षी तथा बहुत धनी होता है। कला तथा साहित्य में इसे विशेष रुचि होती है। यह ग्रन्थ-लेखक भी हो सकता है। यह स्वपराक्रम से एवं स्वतन्त्र कार्यों के द्वारा धनोपार्जन का आकांक्षी होता है। अपनी सामाजिक स्थिति के कारण यह राज्य में भी प्रतिष्ठित होता है। बड़े-बड़े राजपुरुषों से इसके मैत्री-सम्बन्ध बने रहते हैं। देशान्तर की यात्राओं से इसे बहुत सम्मान मिलता है। धन-सम्पत्ति का लाभ निरन्तर होता रहता है। जीवन के २८, ३५, ४६, ५१ तथा ५८ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह सुन्दरी, गुणवान् तथा मनोनुकूला पत्नी लगभग २६ वर्ष की आयु में प्राप्त करता है। वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाली होती है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। यह भूमि, भवन, वाहन, सेवकादि का पूर्ण सुख प्राप्त करते हुए ७०-७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१६४८) - इस जातक को जन्म से ही संघर्ष करना पड़ता है। यह बुद्धिमान, धनी, ज्ञानी तथा पंडित होता है और अपने कार्यों को बड़ी लगन से करता है। जब तक सफलता प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक अपने मन का भेद किसी को नहीं देता। यह कुछ समय तक राजकीय सेवा में रहता है, तत्पश्चात् सेवा-मुक्त होकर लगभग ३५ वर्ष की आयु में अपना स्वतन्त्र कार्य करता है। ४८ वर्ष की आयु में यह राज्य द्वारा पुनः किसी उच्च पद पर नियुक्त किया जाता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कार्यशीला तथा जातक को अपने प्रभाव में रखने वाली मिलती है। यह जातक धन का लोभी होता है तथा अत्यधिक धन का संचय करता है। ६१ वर्ष की आयु में इसे कष्ट होता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर होते हैं। परमायु ७८ वर्ष की होती है। इस अवधि को पार कर जाने पर यह ८३ वर्ष तक जीवित रहता है।

१९४९ सं० भू०

(१९४९)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, चंचल प्रकृति का, अपने कार्यों के सम्बन्ध में तुरन्त निर्णय लेने वाला तथा सम्पर्क में आने वाले लोगों को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह विद्याध्ययन में रुचिवान्, उच्च शिक्षा पाने वाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही अपनी माता से अलग, नाना-नानी के पास रहता है। यह निजी व्यवसाय अथवा किसी की नौकरी में काम करके धन कमाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसे यात्राओं द्वारा धन-लाभ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर वाली, स्वाभिमानी तथा अव्यवसायी होती है। वह जातक के भाग्य की श्रीवृद्धि करती है। इसे सन्तान के बारे में कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९५०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, काव्य-संगीत का प्रेमी, निरन्तर कुछ-न-कुछ करता रहने वाला तथा बाल्यावस्था से ही परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं होती। यह अपने माता-पिता का सेवक तथा उन्हें सुख पहुँचाने वाला होता है। २० वर्ष की आयु से ही यह घर से बाहर रह कर धन कमाता है। २५-२६ वर्ष की आयु में यह अपनी आजीविका के स्थायी-साधन बना लेता है। इसे अपना व्यवसाय आरंभ करने में कोई कठिनाई नहीं होती। यह अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप अग्रसर होता हुआ सफलताएँ प्राप्त करता रहता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आकर्षक होती है। वह जातक को सुख प्रदान करती है, तथापि विवाहोपरान्त जातक को कुछ समय तक कष्ट भोगना पड़ता है। ४५ वर्ष के बाद इसे बहुत सुख मिलता है। परमायु ६८ वर्ष की होती है।

र० कु०

(१६५१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, आत्मबल, पंडित, ज्ञानी तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा सब को प्रभावित करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में ही माता से अलग रहता है तथा इसका पालन-पोषण अन्यत्र होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर, किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है। २२ वर्ष की आयु में ही इसका भाग्योदय हो जाता है। परदेश में रहकर यह बहुत धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह सदैव शुभ कर्मों को करता है। ४० वर्ष की आयु में यह विशेष उन्नति करता है। यह परदेश में ही अपना स्थायी निवास बनाता है। वहीं इसका विवाह भी २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी रोग के कारण कुछ समय तक कष्ट भोगती है, बाद में स्वस्थ हो जाती है। वह कई सुन्दर पुत्रों को जन्म देती है। वृद्धावस्था में जातक को बहुत सुख मिलता है। ५८ वर्ष की आयु में थोड़ा कष्ट होता है। परमायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(१६५२) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उदार-हृदय तथा दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से स्नेह नहीं मिलता। बाल्यावस्था में ही इसे माता द्वारा त्याग दिया जाता है। इसका जन्म पिता के परोक्ष में होता है। यह पिता का मुँह भी नहीं देखता। इसका पालन-पोषण घर से दूर किन्हीं अन्य लोगों के द्वारा होता है। १२ वर्ष की आयु से ही यह बहुत श्रम करता है तथा कालान्तर में विद्या-बुद्धि से युक्त होकर कोई नौकरी करता है, उसके छोटे स्तर से कार्य आरम्भ करके यह उन्नति के लिए बहुत परिश्रम करता है, तथापि विशेष सफलता नहीं मिलती। इसका विवाह भी नहीं होता। जातक स्वयं भी विवाह के लिए कोई प्रयत्न नहीं करता। ५५ वर्ष की आयु के बाद यह उस स्थान को भी छोड़कर परदेश में जा बसता है तथा साधु जैसा जीवन बिताते हुए लगभग ८२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९५३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं तथा अनेक विषयों का ज्ञाता, प्रबुद्ध, सबसे सहानुभूति रखने वाला, प्रत्येक के दुःख में दुःखी होने वाला तथा यथासम्भव सहायता करने वाला भी होता है। यह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं करता, तथापि इसके पास ज्ञान एवं योग्यता की कोई कमी नहीं होती। यह बाल्यावस्था से माता-पिता से अलग किसी सम्बन्धी के पास रहता है। २३ वर्ष की आयु तक यह इधर-उधर सेवा-कार्य करके अथवा स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। यह भाई-बन्धुओं से दूर रहता है। इसके मित्रों की संख्या भी कम ही होती है। यह परदेश में रहकर अपने कौशल द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है परन्तु प्रयत्न करने के बाद भी इसका विवाह नहीं हो पाता। ३५ वर्ष की आयु में एक स्त्री इसके सम्पर्क में आती है, परन्तु वह भी अधिक समय तक साथ नहीं दे पाती। यह स्वयं ६२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१९५४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, बुद्धिमान, संगीत-कला-प्रेमी, गुणियों का आदर करने वाला तथा प्रारम्भ से ही पैतृक-व्यवसाय में संलग्न रहने वाला होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। यह अपने पैतृक-व्यवसाय में रहते हुए ही ३५ वर्ष की आयु में कोई अन्य व्यवसाय भी आरम्भ कर देता है। इसका जन्म पिता के परदेश में होता है, परन्तु पिता इसी के पास रहता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे किसी राजकीय-कार्य द्वारा लाभ होने लगता है, थोड़े ही दिनों में यह समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर की तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है परन्तु वह रुग्ण रहती है, अतः जातक उसके कारण दुःखी रहता है तथा उसकी चिकित्सा पर भी बहुत धन खर्च करता है। सन्तान के हेतु यह दुःखी रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

९३२९ सं. भु०

(१६५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, गौरवर्ण, मध्यम कद तथा इकहरे शरीर वाला होता है। यह विद्या, बुद्धि में तीव्र, अनेक विषयों का ज्ञानकार, वाद-विवाद में अपने ज्ञान के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, अध्ययन में लगनशील तथा अपनी ख्याति को बढ़ाने वाला होता है। यह मुख्यतः लिखा-पढ़ी से ही सम्बन्धित कार्यों से आजीविकोपार्जन करता है। २५-२६ वर्ष की आयु में ही इसे किसी शिक्षण-संस्थान में अथवा ऐसे ही विभाग में नौकरी मिल जाती है, जो ज्ञान-वृद्धि में सहायक हो। यह सामान्यतः २० वर्ष की आयु से ही धन कमाना आरंभ कर देता है तथा अपने धन की निरन्तर वृद्धि करता रहता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है तथा उसकी ओर से सुख प्राप्त होता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता। संतानें भी सुयोग्य तथा होनहार होती हैं। यह ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१६५६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, मध्यम कद का, ज्ञानी, कलाकार, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अध्ययनशील प्रकृति का होता है। इसकी ज्ञान की प्यास कभी नहीं बुझती। यह राजकीय मान्यता प्राप्त किसी उच्च प्रतिष्ठान में अथवा राजकीय-संस्थान से संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है। २४-२५ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाने लगता है। ३२ वर्ष की आयु तक इसे बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी हो जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा मनोनुकूल मिलती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। संतानें भी सुन्दर तथा होनहार होती हैं। यह जीवनभर धन, यश तथा सुख प्राप्त करता हुआ प्रगति करता रहता है। इसकी पूर्णायु ७५ अथवा ८६ वर्ष की होती है।

कु० २०

(१९५७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुभाषी, व्यवहार-कुशल, धन का लोभी तथा कृपण स्वभाव का होता है। यह जन्म से ही धनी होता है। ऐश्वर्यशाली परिवार में जन्म लेने के कारण इसका पालन-पोषण बहुत अच्छे रूप में होता है। यह किसी नौकरी में जाने का विचार ही नहीं करता। स्वतन्त्र-कार्य करके ही यह अपने धन की वृद्धि करता है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तानें भी कम, परन्तु सुन्दर एवं होनहार होती हैं। सन्तानों के प्रारम्भ के कुछ गर्भ नष्ट भी हो सकते हैं तथा शल्य-क्रिया द्वारा भी सन्तति का जन्म संभव है। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय होता है। जीवन के २३, २६, २९, ३२, ३५, ३८, ४२, ४६, ४९, ५२ तथा ५५ वें वर्ष विशेष लाभ-प्रद सिद्ध होते हैं। शारीरिक-कष्ट प्रायः नहीं होते। परमायु ६८ वर्ष की होती है।

(१९५८)- इस जातक को बुद्धिमान, संगीतज्ञ, कला-प्रेमी, प्रत्येक कार्य में चतुर तथा सम्पत्तिशाली होना चाहिए। यह सामान्यतः धार्मिक वृत्ति का होता है। धर्म-पुण्य तथा व्रत-दानादि में इसे विशेष रुचि रहती है, साथ ही भोग-विलास में भी अधिक प्रवृत्ति होती है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होता है तथा कोई अच्छा प्रशासनिक-पद प्राप्त करता है। यह किसी शिक्षण-संस्था अथवा शिक्षा से संबंधित किसी अन्य कार्य से भी संबंधित हो सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी, तेजस्विनी तथा गुणवती कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। यह जातक अपनी पत्नी के अनुकूल बना रहता है। अपने कार्य-क्षेत्र में निरन्तर उन्नति करता हुआ उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है। सन्तान हेतु चिन्ता रहती है। संतान या तो होती ही नहीं अथवा होकर नष्ट हो जाती है। परमायु ६७ वर्ष की होती है।

(१९५९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कोमल स्वभाव का, संगीत-नाट्य का प्रेमी, प्रत्येक परिस्थिति से समझौता करलेने वाला, सफल, सुखी, गौरवर्ण, मध्यम कद का, छोटे मस्तक तथा तीखी आँखों वाला एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, प्रभावशालिनी, वाक्पटु एवं व्यवहार-कुशल होती है। यह जातक किसी उच्च प्रशासनिक सेवा में नियुक्त होकर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। २८, ३०, ३१ तथा ४० वें वर्ष में इसकी पदोन्नतियाँ होती हैं। इसे धन की तृष्णा भी रहती है। यह यथेष्ट धन का संचय करता है तथा उसे अपने प्राणों की भाँति सँभाल कर रखता है। सब प्रकार के सुख प्राप्त करते हुए भी यह संतान के लिए दुःखी रहता है। इसकी परमायु ६८ वर्ष होती है।

(१९६०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, प्रभावशाली, गुणवान, ज्ञानी, धनी, मानी एवं साहित्य-कला आदि में रुचि रखने वाला होता है। इसे संगीत के प्रति विशेष लगाव होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोमोहक तथा अनुकूल स्वभाव वाली होती है। वह जातक पर अपना स्नेह पूर्ण प्रभाव बनाये रखती है। जातक के प्रति पूर्ण अनुरागिनी रहती हुई वह जातक को भी अपना अनुरागी बना लेती है। विवाह के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है। यह अपने स्थान के अतिरिक्त परदेस में भी अपना कार्य फैलाता है तथा दोनों स्थानों से धनोपार्जन करता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। यह निरन्तर उन्नति, लाभ तथा यश सम्मान प्राप्त करता चला जाता है। ५१ वें वर्ष में कुछ हानि भी होती है। सन्तान हेतु कष्ट होता है। अनेक गर्भ नष्ट होते हैं। शल्य क्रिया के कारण पत्नी को भी प्रसव के समय कष्ट होता है। पूर्णायु ६२ वर्ष होती है।

भू० सं० १८६३

कु० र०

(१९६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी क्रोधी, रूखे स्वभाव का, अध्ययन-प्रिय, संगीत, कला एवं साहित्य की साधना के संलग्न रहने वाला तथा किसी आघात को सहन न करने वाला होता है। यह राजयोग प्राप्त होता है। २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के पश्चात् यह किसी प्रशासनिक, पुलिस अथवा सेना के अधिकारी पद को प्राप्त करता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे राज्य द्वारा बहुत सम्मान प्राप्त हो जाता है। इसका विवाह २०-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत एवं कला की जानकार तथा जातक को सुख पहुँचाने वाली होती है। जातक उसके प्रति अत्यधिक अनुरक्त बना रहता है। इसके पुत्र-पुत्री तथा होनहार होते हैं। इस जातक की आयु अधिक नहीं होती। ५०-५२ वर्ष की आयु में यह किसी दुर्घटना का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त करता है।

(१९६२) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गुणी, साहसी, पराक्रमी, विद्वान्, बुद्धिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह शल्य-क्रिया में दक्ष हो सकता है तथा औषध-विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र में विशेष रुचि रखता है। यह भोग-विलास में भी विशेष रुचि लेता है, अतः इसके अनेक स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुलक्षणा तथा मनोनुकूला कन्या के साथ होता है। पत्नी से यह अत्यधिक संतुष्ट रहता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा अथवा किसी व्यवसाय द्वारा बहुत लाभ कमाता है। ३६ वर्ष की आयु तक इसे विपुल धन तथा यश की प्राप्ति हो जाती है। इसके पुत्र-पुत्री, तेजस्वी तथा होनहार होते हैं। वे जातक के जीवनकाल में ही अपना भाग्योदय प्राप्त कर लेते हैं। इसकी परमायु ७२ वर्ष होती है।

(१९६३)- इस जन्मांग चक्र का स्वामी माता-पिता का अत्यन्त प्रिय होता है। इसके माता-पिता बड़े गुणवान तथा तेजस्वी होते हैं। वे अपने पुत्र को शिक्षित तथा सुयोग्य बनाने में कोई कमी नहीं रखते। जातक भी उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी कमनीय, सुन्दरी, गुणवती तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। इसे अपनी पत्नी के सहयोग से भी विपुल धन तथा यश की प्राप्ति होती है। विवाहोपरान्त ही यह अप्रत्याशित आय करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। धन के प्रति इसका विशेष लगाव होता है। यह बहुत धन संचित कर लेता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। प्रारम्भ में कुछ गर्भ नष्ट भी हो सकते हैं। इसकी परमायु ७१ अथवा ७९ वर्ष होती है।

(१९६४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति माता-पिता का अत्यन्त प्रिय, बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि, भाग्य का धनी तथा जन्म लेते ही पारिवारिक-सम्पत्ति की वृद्धि करने वाला होता है। यह ईश्वरभक्त, प्रियवादी, संगीत-प्रेमी तथा अनेक शिल्पों में अभिरुचि रखने वाला होता है। यह २८ से ३० वर्ष की आयु तक राजकीय-सेवा में रह कर सम्मान प्राप्त करता है, तदुपरान्त अपना व्यवसाय आरम्भ करके पर्याप्त धनोपार्जन करता है। यह धन की बहुत लालसा रखता है। ४५वें वर्ष तक यह बहुत धनी हो जाता है। इसका विवाह २४-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा जातक को अपने प्रेमपाश में आबद्ध कर लेने वाली होती है। वह धनोपार्जन हेतु स्वयं भी किसी प्रतिष्ठान में कार्य-रत रहती है। इसकी सन्तानें सुयोग्य, सुन्दर तथा सुखदायक होती हैं। यह ६८ अथवा ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, भाग्य का धनी, जन्म से ही माता-पिता के प्रभाव में वृद्धि करने वाला तथा उन्हें किसी ऋण से छुटकारा दिलाने वाला होता है। पिता कहीं परदेश से पर्याप्त धन कमा कर लाता है। इसे बाल्यावस्था से ही अध्ययन में विशेष रुचि रहती है। २४ वर्ष की आयु तक यह विद्याध्ययन करता है। २५ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा से संलग्न होकर परदेशवास करता है। वहाँ इसे निरन्तर उन्नति प्राप्त होती है। इसका विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला तथा साहित्य की अनुरागिनी एवं जातक को अत्यधिक प्रेम देने वाली होती है। यह जातक देश-विदेश की यात्राएँ निरन्तर करता रहता है तथा सर्वत्र सम्मान पाता है। यह बड़ा पुत्रभागी होता है। २८, ३५ तथा ४४ वें वर्ष में कष्ट होता है। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। सन्तानें भी होनहार होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१९६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, योग्य, गुणी, न्यायप्रिय, बुद्धिमान तथा उच्च शिक्षित होता है। यह साहित्य तथा कलाओं से विशेष प्रेम रखता है। २४ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह किसी तकनीकी ज्ञान में निष्णात होकर अपनी योग्यता के बल पर सबको प्रभावित करता है तथा २५ वर्ष की आयु में किसी उच्च प्रतिष्ठान में सेवारत होकर अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ३२ वर्ष की आयु में किसी अन्य प्रतिष्ठान में और अधिक उच्च पद पर चला जाता है तथा पर्याप्त धन अर्जित करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा स्वयं भी राजकीय-सेवा से सम्बद्ध होती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। ५१ वर्ष की आयु में अनिष्ट, ५३ वर्ष की आयु में वाहन दुर्घटना में अप्रत्याशित आघात तथा ६८ वर्ष की आयु में मरण होता है।

३३४७ सं० भु०

कु० र०

(१९६७) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त उदार, गुणवान, सर्वप्रिय, सुन्दर, अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य तथा काव्य का प्रेमी, चित्रकला में रुचि रखने वाला तथा कलाकारों का सत्कार करने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के बाद यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है। यह सब का भला करता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन तथा यश अर्जित कर लेता है। इसका विवाह २१ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी साहित्य एवं कला से प्रेम रखने वाली, राजकीय-सेवा में नियुक्त तथा पति को अपने अनुकूल बनाये रखने वाली होती है। पति-पत्नी दोनों मिलकर खूब धन कमाते तथा सुखी-जीवन बिताते हैं। इसे एक सुन्दर पुत्र प्राप्त होता है, जो बड़ा होनहार निकलता है। अधिक संतानें नहीं होतीं। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(१९६८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, धैर्यवान, नीतिज्ञ, भावुकता-रहित, परन्तु बहुत उदार, विशाल-हृदय, साहित्य एवं कला का जानकार, संगीत-प्रेमी, पुरुषार्थी तथा क्रियात्मक बुद्धि वाला होता है। यह यथार्थ का उपासक तथा काल्पनिक बातों से दूर रहने वाला, और यदि किसी की सहायता न कर सके तो उसे झूठी दिलासा न देने वाला होता है। यह पूर्ण राजयोग सम्पन्न होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसकी पत्नी किसी शिक्षा-संस्थान में कार्य करती है तथा बहुत उन्नति करती हुई धन कमाती है। २८, ३२, ३८ तथा ४६वें वर्ष में इसे पदवृद्धि तथा अन्य लाभ मिलते हैं। ५८वें वर्ष में विशेष सम्मान मिलता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। पुत्र-पुत्रियाँ सुयोग्य तथा होनहार होती हैं। परमायु ७८ वर्ष की प्राप्त करता है।

(१९६९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, नैतिक, बुद्धिमान, सभी समस्याओं को सुलझाने वाला, गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के पश्चात् यह किसी राजकीय अथवा अन्य प्रतिष्ठित संस्थान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करने लगता है। इसकी महत्वाकांक्षाएं विपुल होती हैं। २५ से ४२ वें वर्ष तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ४२ वें वर्ष में इसे कुछ कष्ट होता है, परन्तु बाद में उससे छुटकारा पाकर यह फिर आगे बढ़ जाता है। ५२ वें वर्ष में इसे पदोन्नति प्राप्त हो जाती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्वी तथा गुणवती होती है, वह गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। पुत्र-पुत्री भी सुयोग्य होते हैं। पत्नी कहीं सेवा-रत होकर धनोपार्जन भी करती है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(१९७०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में दुःखी तथा रोग-पीड़ित रहता है। किशोरावस्था से आरोग्य लाभ कर सुखी होता है। इसकी सीधी आँख में कष्ट होता है। यह राजकीय विभागों तथा अन्य साधनों द्वारा धनोपार्जन करता है। किसी व्यवसाय से भी इसे सफलता प्राप्त होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर वाली मनस्विनी एवं सुख देने वाली होती है। पत्नी स्वयं भी किसी प्रतिष्ठान में सेवा-रत रह कर धनोपार्जन करती है। उसका व्यक्तित्व सर्वथा स्वतन्त्र होता है। जातक स्वयं भी पत्नी के नाम से व्यवसाय करके पर्याप्त धन कमाता है। जातक को कभी शारीरिक कष्ट नहीं होता। आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। पुत्र-पुत्री तेजस्वी तथा सुयोग्य होते हैं। इसकी आयु ७१ वर्ष अथवा ८६ वर्ष होती है।

२३९८ सं० भु०

(२९६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर, गंभीर, सुन्दर तथा प्रतिरोधात्मक प्रवृत्ति वाला होता है। यह मितव्ययी तथा विश्वासपात्र होता है। अपनी बात का इसे बहुत ध्यान रहता है तथा अपने वचन पर दृढ़ बना रहता है। २६ वर्ष की आयु तक अध्ययन-रत रहने पर भी यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। इसे व्यवसाय में रुचि होती है, अतः यह अपना व्यवसाय आरंभ करता है। ३६ वर्ष की आयु में यह अपने व्यापार को बहुत अधिक बढ़ा लेता है तथा उससे पर्याप्त अर्थोपार्जन भी करता है। यह भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकों के सुख से युक्त होता है। धन-सम्पत्ति की इसके पास कोई कमी नहीं होती। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। वह जातक को अपने नियंत्रण में रखती है। पुत्र-पुत्रियों से सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है। पूर्णायु ६८ अथवा ८१ वर्ष होती है।

(२९६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, इकहरे शरीर का, गौरवर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने गुणों से सब को प्रभावित करता है तथा धैर्य एवं संयम से कठिन कार्यों में भी सफलता पाता है। २५ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त कर यह राजकीय-सेवा से संयुक्त होता है तथा शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है, परन्तु यह अधिक समय तक सेवा कार्य नहीं करता और अपना व्यवसाय आरंभ कर देता है अथवा किसी अन्य के व्यवसाय में भागीदार बन जाता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह खूब धन कमा लेता है तथा सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अनुरागवती मिलती है। वह व्यवसाय में भी सहयोग करती है। सन्तानें होकर हानि होती है। ३२, ४१ तथा ४७ वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

सं० कु०

(१९०३)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असफल रहता है। इसे बाल्यावस्था में भी सुख नहीं मिलता। माता-पिता के पारस्परिक-मतभेद के कारण इसे कष्ट उठाना पड़ता है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा अपने मधुर स्वभाव तथा शिष्ट व्यवहार के कारण सभी साथी कर्मचारियों तथा अधिकारियों में लोकप्रियता प्राप्त कर लेता है। यह अपने कार्यक्षेत्र में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३६ वर्ष की आयु में यह बहुत प्रसिद्ध हो जाता है। यह दीन-हीनों का हितैषी, उनके काम आने वाला तथा उन्हें सुख देने वाला होता है। इसके यहाँ धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। २३ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी तथा पुत्रों से सुख-सन्तोष मिलता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(१९०४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी महत्वाकांक्षी, अनुशासन का कड़ाई से पालन करने वाला, क्रोधी परन्तु आन्तरिक रूप से सहृदय तथा सुन्दर होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। बचपन से इसे विशेष रुचि होती है। अपनी शिक्षा के बल पर ही यह उच्च पद प्राप्त करता है। राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर इसे उन्नति के अनेक सुअवसर प्राप्त होते हैं, जिनका यह पूरा-पूरा लाभ उठाता है। ४८ वर्ष की आयु तक यह बहुत ऊँची स्थिति पर जा पहुँचता है। बीच में कभी कोई व्यवधान भी नहीं आता। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी को यह बहुत प्रेम करता है तथा वह भी आज्ञाकारिणी बनी रहती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। विदेशों के व्यापार से जातक को बहुत लाभ होता है। परमायु ७४ वर्ष होती है।

भू० सं० ३३९८

कु० २०

(१९६५)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति बहुत उदार, महत्वाकांक्षी, सबका सहायक तथा दयालु स्वभाव का होते हुए भी कभी-कभी अति उग्र रूप धारण कर लेता है, परन्तु इसका वह क्रोध क्षणिक ही होता है। इसकी शिक्षा तथा सद्गुण इसे सर्वत्र सम्मान दिलाते हैं। यह न्याय-प्रिय होता है। भाग्य के कारण पड़कर यह २२, ३८ तथा ४६ वर्ष की आयु में बहुत दुःख उठाता है। माता-पिता की ओर से भी इसे कष्ट होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा सुख देने वाली मिलती है। इस जातक को अपनी पत्नी के माध्यम द्वारा ससुराल से भी बहुत धन मिलता है। यह राजमान्य स्थिति को प्राप्त होकर, उच्च पद पर पहुँचता है। जीवन में इसे कोई भौतिक-कष्ट नहीं होता, पुत्र भी सुन्दर तथा होनहार होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१९६६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल, आकर्षक, महत्वाकांक्षी, तथा निश्चित विचारों वाला होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता, पिता का लाड़ला, पैतृक-व्यवसाय को आगे बढ़ाने वाला, उच्च शिक्षित तथा अपनी योग्यता के बल पर उच्च स्थिति प्राप्त करने वाला होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों का प्रिय होता है। २३ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से संयुक्त हो सकता है। ३१ वर्ष की आयु में यह परदेश चला जाता है और वहीं रहकर अत्यन्त धन, यश तथा सम्मान का उपार्जन करता है। यह उच्च पदों पर रहता है तथा उच्चाधिकारियों से इसकी मित्रता रहती है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी, गुणवती, सुन्दरी तथा स्नेहशीला होती है। संतानें भी सुयोग्य मिलती हैं। इसे सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

भु० सं० १०७३०

कु० २०

(१६७७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साहित्य एवं कला का प्रेमी तथा सर्जक, काव्य एवं संगीत में रुचि रखने वाला तथा भूमि, भवन आदि सम्पत्तियों से युक्त होता है। यह व्यवसायी तथा व्यवसाय की उन्नति करते हुए स्वयं यथेष्ट आर्थिक-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न भी हो सकता है तथा वहाँ निरन्तर उन्नति करता हुआ उच्च पदों पर जा पहुँचता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। जीवन के ३४, ३५, ४० तथा ४६वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। इस अवधि में यह नवीन उद्योग स्थापित करता है अथवा किसी भी उद्योग में साझेदारी करता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, नेक स्वभाव की तथा सुख देने वाली होती है। परन्तु किन्हीं कारणों वश दीर्घ काल तक पति-पत्नी को एक दूसरे से अलग रहना पड़ता है। सन्तान विलम्ब से तथा कम होती हैं। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१६७८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, शक्तिशाली, मध्यम कद का, गौर वर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अपने परिश्रम द्वारा ही उन्नति करता है। इसे मध्यमान्तर की शिक्षा का लाभ होता है, परन्तु आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति बहुत उच्च स्तर की होती है। २१ वर्ष की आयु में यह किसी सेवा-कार्य में नियुक्त होता है। वहाँ यह निरन्तर उन्नति करता हुआ उच्च पद पर जा पहुँचता है। इसे अपने जीवन में कभी आर्थिक-कष्ट नहीं होता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर एवं तीव्र स्वभाव वाली स्त्री के साथ होता है। उसके क्रोधी स्वभाव के कारण इसे दुःख-सुख दोनों ही मिलते रहते हैं। जातक अपनी पत्नी की मर्जी के खिलाफ कुछ नहीं करता। इस स्त्री का भाग्य अच्छा होता है और वह अपने माता-पिता से भी बहुत कुछ लाभ उठाती रहती है। इस जातक के पुत्र होनहार होते हैं। परमायु ७३ वर्ष की होती है।

(१९७९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, अपने सद्व्यवहार के कारण लोकप्रिय तथा सर्वत्र सम्मानित, साहित्य एवं काव्य-सर्जक एवं अनेक कलाओं का जानकार होता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही आजीविकोपार्जन करता है। यह व्यावसायिक कार्यों में दक्ष तथा कुशल-व्यवस्थापक होता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३५ वर्ष की आयु में यह विशिष्ट स्थिति में जा पहुँचता है। उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में यह पटु होता है, अतः किसी भी विभाग की जिम्मेदारी को सफलता पूर्वक निभाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कला-कौशल में रुचि रखने वाली, विभिन्न विषयों की जानकार, बुद्धिमती होती है। वह धन का संचय करने तथा घर की शान-शौकत बढ़ाने में पटु होती है। इसके पुत्र भी होनहार होते हैं। यह ७८ अथवा ८९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९८०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान, वक्तृत्व-कला में अत्यन्त कुशल एवं सबके मन को मोहित करने वाला होता है। यह संगीत का ज्ञाता तथा धनी होने के कारण गायन-वादन कला की उन्नति में सहयोग देने वाला होता है। यह राजमान्य तथा विविध प्रकार के सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। व्यक्तिगत रूप में यह बहुत उन्नति करता है तथा अपने यश-मान को फैलाता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं तथा पत्नी विद्वान्, गुणवती, बुद्धिमती एवं स्वयं भी किसी कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करने वाली होती है। इसके जीवन में ४३, ४६ तथा ५४वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। यह ७० वर्ष से पूर्व कोई विशेष शारीरिक-कष्ट भी नहीं होता। सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। धन, सम्पत्ति की कोई कमी नहीं रहती। पूर्णायु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

(१६८१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वस्थ तथा अत्यधिक चंचल स्वभाव का होता है। यह सब कुछ बहुत जल्दी कर डालना चाहता है। इसे माता-पिता से सुख मिलता है तथा यह पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। इसकी शिक्षा पूरी नहीं हो पाती, परन्तु यह व्यवसाय-कुशल होता है तथा अपनी पैतृक-सम्पत्ति में वृद्धि करता है। इसे बन्धु-बान्धवों से प्रेम नहीं होता। वे भी इससे प्रेम नहीं करते। अपने जीवन के २५ से २८ वें वर्ष की अवधि में यह विशेष उन्नति करता है तथा कोई नया व्यवसाय स्थापित करके अत्यन्त सफल होता है। ४० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। पत्नाज्ञों से इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर की एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। दो-तीन पुत्रों का यह पिता होता है। इसकी गणना धनी लोगों में होती है। परमायु ६२ वर्ष होती है।

(१६८२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह बेहद उतावला, चंचल प्रकृति का भी होता है। अपनी माता से असन्तुष्ट रहता है तथा पिता से प्रेम रखता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुशीला तथा भाग्यशालिनी होती है। विवाह के कुछ समय बाद ही इसे अप्रत्याशित लाभ होता है। तभी यह कोई नया कारोबार आरंभ करता है। राज्य के उच्च अधिकारियों तथा प्रशासकों से इसके घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। इसे व्यावसायिक-लाभ खूब होता है। यह परदेश में जाकर भी यश प्राप्त करता है। ३२, ३६, ३९ तथा ४२ वें वर्ष और इसके बाद ५२ तथा ५८ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें कुछ लाभप्रद और कुछ हानिप्रद रहते हैं। इसके एक या दो सुयोग्य पुत्र होते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

भु० सं० ४४०३

कु० २०

(१९८३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सहृदय, उदार, सहानुभूति पूर्ण, दीनजनों का हितैषी तथा अपनी उदारता के कारण कभी-कभी अपना काम बिगाड़ लेने वाला भी होता है। इसे २३ वर्ष की आयु में सुन्दर पत्नी प्राप्त होती है। वह धैर्यशालिनी, उदार स्वभाव की, मनस्विनी तथा जातक के हित सम्पादन हेतु सचेष्ट रहने वाली होती है, परन्तु उसकी बीमारी के कारण जातक को बहुत कष्ट भी होता है। वह स्त्री धन का विशेष संचय करती है। जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा बहुत धन कमाता है। यह अपने पराक्रम तथा परिश्रम को ही सर्वोपरि मानता है। ४० वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। ४१.४५ तथा ५१ वे वर्ष में हानि भी होती है। ३८ तथा ४७ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उत्तम सिद्ध होते हैं। इसे सन्तान की ओर से कष्ट होता है। सब प्रकार के भौतिक-सुखों को भोगता हुआ यह लगभग ७४ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१९८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त उदार, परोपकारी, दयालु स्वभाव का होता है, तथापि ऊपर से देखने में निर्दय एवं कठोर प्रतीत होता है। इसे कला तथा साहित्य के प्रति विशेष रुचि होती है। स्वयं भी कलाकार एवं साहित्यकार होने के कारण इसे चारों ओर के लोग जानते हैं। इसका विवाह २६-२९ अथवा इससे भी बड़ी आयु में होता है, परन्तु विवाहोपरान्त इसे बहुत लाभ भी होता है। यह २५ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। योजनानुसार कार्य करने में यह अत्यधिक कुशल होता है। अपने जीवन के २८, ३५ तथा ४२ वे वर्ष में यह विशेष उन्नति करता है। इसकी पत्नी कुछ समय तक विशेष बीमार भी रहती है। वैसे वह मनस्विनी तथा मनोनुकूला होती है। पुत्र भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। २५, ४२, ५१, ५५ तथा ५९ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(१६८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी उग्र प्रकृति का, मनमानी करने वाला, अपने विरोध को सहन न करने वाला, उदार तथा सबकी सहायता करने वाला भी होता है। यह साहित्य, संगीत तथा ललित कलाओं के प्रति विशेष रुचिवान, भ्रमण का प्रेमी, माता-पिता के साथ रहकर उनका प्रबन्ध करने वाला तथा उनकी सेवा करने वाला एवं २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने वाला होता है। यह अपने उद्योग तथा परिश्रम से बहुत धन कमाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसका भाग्योदय विशेष रूप से ३२ वर्ष की आयु से होता है। यह कम-से-कम तीन प्रकार के व्यवसायों द्वारा धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु से होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, कुछ श्याम वर्ण, परन्तु सुन्दरी होती है। विवाह के बाद कुछ समय तक कष्ट पाता है, पत्नी भी कष्ट पाती है। ४२ से ४६ वें वर्ष तक परदेश से बहुत लाभ। पूर्णायु ६३ वर्ष।

(१६८६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, पुष्ट शरीर का, निरोग तथा अपने पौरुष एवं पराक्रम के कारण सर्वत्र मान्य होता है। घर तथा बाहर के सब लोग इसके अनुकूल कार्य करने को प्रस्तुत बने रहते हैं। २४ वर्ष की आयु में यह किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्यरत होता है अथवा स्वतन्त्र रूप से कोई निजी व्यवसाय आरंभ करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल नहीं मिलती, अतः यह उसके कारण दुःखी रहता है। वह जातक को आर्थिक हानि भी पहुँचाती है तथा कुछ उग्र स्वभाव की भी होती है। यह जातक अनेक मार्गों से धन कमाता है। सेवा-कार्य करते हुए निजी व्यवसाय भी करता है। ३२, ३८, एवं ४६ वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। ५२ तथा ६२-६३ वें वर्ष भी लाभप्रद रहते हैं। पुत्र अच्छे होते हैं। पूर्णायु ६७ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(१९८७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी उदार, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, शान्त स्वभाव का, परन्तु क्रोध के समय विकराल रूप धारण कर लेने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य को बड़ी लगन से पूरा करता है। यह परोपकारी, साहसी, उद्यमी, अपना काम बिगाड़ कर भी दूसरों की सहायता करने वाला, बड़ा परिश्रमी तथा २३-२४ वर्ष की आयु में बहुत उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने वाला होता है। अध्ययनोपरान्त राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर शीघ्र ही उन्नति करता हुआ उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। यह माता-पिता का प्रिय, पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर की, मनोनुकूला, तेज मिजाज तथा कुशल होते हुए भी पूर्ण सुख नहीं दे पाती। सन्तानें उत्पन्न होती हैं। २१ तथा २५ वें वर्ष में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७५ से ८० वर्ष।

(१९८८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बुद्धिमान, दृढ़ निश्चयी, अपने क्रोधी स्वभाव को नियमित रखने वाला, न्याय-प्रिय तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह स्वयं यदि भूलवश किसी के साथ अन्याय कर बैठे तो बाद में दुःखी होता है। २४-२५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह देशान्तर में रह कर नौकरी अथवा व्यापार द्वारा अर्थ लाभ करता है तथा ३०-३२ वर्ष की आयु तक अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में कुछ स्थूल शरीर वाली सुन्दरी कन्या के साथ होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, तथापि उससे पूर्ण सुख नहीं मिल पाता। यह अपने मानसिक सन्तोष के लिए कुछ ऐसे कार्य भी करता है, जो लोक-दृष्टि में अच्छे नहीं होते। जुआ, मद्यपान, पर-स्त्री-गमन में आसक्ति रखता है। परमायु ५६ से ६१ वर्ष होती है।

भृ० सं०

कु० २०

(१९८९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुदृढ़ शरीर का, उग्र प्रकृति का तथा अपने आप में मगन रहने वाला होता है। इसे एकान्त तथा अपनी कार्य-व्यस्तता ही अच्छी लगती है। यह धनवान होता है तथा अपने धन को परोपकार तथा दुःखियों का दुःख दूर करने वाले कार्यों में खर्च करता है। इसकी शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। यह नौकरी नहीं करता, अपितु अपने व्यवसाय द्वारा अथवा किसी कला में दक्षता प्राप्त करके स्वतन्त्र रूप से आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। देशाटन भी यात्राओं से इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में या फिर २६वें वर्ष में होता है। पत्नी का विशेष सुख नहीं मिलता। पत्नी भी इससे कुछ खिन्न-सी रहती है। यह अधिकतर पत्नी अथवा घर से दूर ही रहता है। पत्नी स्वयं भी धनोपार्जन करती है। पुत्र सुयोग होते हैं। ५३ तथा ६७वें वर्ष में कष्ट होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष होती है।

(१९९०)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, उदार-हृदय, संगीत-वाद्य आदि कलाओं का जानकार, अत्यन्त भावुक, पराये दुःख में दुःखी होने वाला तथा पढ़ने-लिखने का शौकीन होता है। यह २३ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करके अनायास ही राजकीय-सेवा प्राप्त कर लेता है। सेवा में रहते हुए भी अपना व्यवसाय भी रखता है। ३० तथा ३५वें वर्ष में बहुत सफलता मिलती है तथा ३८, ४५ एवं ५१वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इस अवधि में यह देशान्तर की यात्राएं करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तीव्र स्वभाव की होती है और वह अपने पैतृक-कुल के लोगों के प्रति विशेष झुकाव रखती है, फलतः जातक का उसके साथ मतभेद भी बना रहता है। परन्तु सन्तान से सुखी होता है। यह यथोचित धन एवं सुख प्राप्त करता हुआ लगभग ७२ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१९९१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, श्रेष्ठ स्वभाव का तथा सबको प्रभावित करने वाला होता है। यह अपने व्यक्तिगत गुणों के कारण सर्वत्र लोकप्रियता प्राप्त करता है तथा धन भी कमाता है। अपने किसी विशिष्ट गुण के कारण यह लोक तथा राज्य में प्रसिद्धि एवं सम्मान पाता है। २३ वर्ष की आयु से ही इसका यश फैलने लगता है। २१ वर्ष की आयु के बाद इसका विवाह होता है तथा विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसे धन की निरन्तर प्राप्ति होती रहती है। यह परदेश की यात्राओं का भी लाभ उठाता है। ३२, ३८, ४६, ५२ तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे कुछ हानि उठानी पड़ती है, परन्तु हर बार हानि उठाने के बाद सम्मान-वृद्धि भी होती है। इसकी पत्नी सुन्दरी, आकर्षक, बड़े तेज स्वभाव की तथा सब पर अपना हुक्म चलाने वाली होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। ६३ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१९९२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त पराक्रमी, शान्त आवेश में आ जाने वाला, क्रोधी, अनुचित बात को सहन न करने वाला, प्रतापी, ज्ञानी तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह २३ वर्ष की आयु से अर्थोपार्जन करने लगता है। २५, २९ तथा ३५ वें वर्ष में इसकी पदोन्नतियाँ होती हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं को जानने वाली तथा सौभाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय भी होता है। यह जातक नीच लोगों की संगति तथा पर-स्त्री-गमन भी करता है। ३० वर्ष की आयु में यह बीमार पड़ता है तथा ७३ वर्ष तक इसे रोग-कष्ट भोगना पड़ता है। नौकरी के अतिरिक्त व्यापार आदि से भी यह धन कमाता है। इसकी सन्तानें सुयोग्य तथा आज्ञा-पालक होती हैं। ५७ वर्ष की आयु में अरिष्ट तथा ६८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन होता है।

(१९९३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पराक्रमी, लम्बे कद वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी तथा बड़ा पुरुषार्थी होता है। यह स्व-परिश्रम से ही धनोपार्जन करता है। अपना साहसी होने के कारण साहस का कभी-कभी दुरुपयोग भी करता है। दुस्साहस से इसे आर्थिक-लाभ भी मिलता है। यह अपने कुटुम्ब का मुखिया तथा कुटुम्बियों के कार्यों को करने वाला होता है। इसे अपने बंधु-बांधवों का अधिकांश कार्यों में पूर्ण सहयोग मिलता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करता है। ग्राम से ही इसे विशेष आर्थिक-लाभ होता है। पिता, भूमि एवं कृषि तथा कृषि से संबंधित वस्तुओं एवं ग्रामीणों द्वारा इसे बहुत लाभ होता रहता है। ३५ तथा ४८ वर्ष की आयु में इसे कुछ कष्ट प्राप्त होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्र भी भाग्यशाली होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१९९४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बड़ा पराक्रमी, अपने शारीरिक-बल के आधार पर अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता, लेखक तथा गूढ़ कार्यों में रुचि लेने वाला तथा किसी अच्छे राजकीय-पद पर कार्य करने वाला होता है। इसे २४, २८, ३१ तथा ३६ वर्ष की आयु में विशेष लाभ तथा पदोन्नति प्राप्त होती है। इसे धन की बड़ी ललक रहती है तथा यह पर्याप्त धन संचित भी कर लेता है। इसे स्त्रियों से विशेष लगाव होता है। अनेक स्त्रियाँ इसकी मित्र होती हैं। ५१ वर्ष की आयु में यह किसी भारी कष्ट में पड़ता है, शत्रु इसके विरुद्ध घात लगाते हैं, परन्तु यह सबको पराजित कर विजयश्री का वरण करता है। ५६ वर्ष की आयु में इसे बहुत धन प्राप्त होता है तथा आकस्मिक रूप से सम्मान भी मिलता है। विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी धन कमाने वाली मिलती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

भु० सं० ४१२०

कु० २०

(१९९५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक सुन्दर, स्वस्थ, लोकप्रिय तथा दूसरों के कार्यों पर अपना धन तथा समय व्यय करने को तत्पर होता है। यह जातक अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, परम्परा के अनुसार चलने का अभ्यासी, धर्म का पालक तथा सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। यह राजकीय-सेवा, शिक्षण-संस्था अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान के माध्यम द्वारा २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह अपने दायित्वों का सुचारु रूप से पालन करते हुए अन्य लोगों का भला भी करता रहता है। अध्ययन के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में अपना खाली समय नहीं लगाता। किन्हीं कारणों से यह भौतिक सुखों को अस्वीकृत करता रहता है। विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सदैव साथ देने वाली मिलती है। बच्चे तीन-चार होते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है। ५६ वाँ वर्ष भाग्योत्कर्ष का होता है।

(१९९६)- इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, मध्यम कद का, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, विशाल नेत्र तथा भारी शरीर वाला होता है। अपनी विद्या-बुद्धि के प्रभाव से यह सर्वत्र आदर प्राप्त करता है। 20-21 वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होती है। इसे धन का लाभ निरन्तर होता रहता है। पैतृक-व्यवसाय, पराक्रम तथा राजकीय-सेवा -इन सब से धन की प्राप्ति होती है। भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख उपलब्ध रहते हैं। यह बहु-आयामी होता है तथा छोटे-बड़े सब लोग इसे पूर्ण सम्मान देते हैं। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। १९ वर्ष की आयु में ही विवाह हो जाना भी सम्भव है। पत्नी विदुषी, सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें तीन-चार होती हैं। विलासी प्रकृति का होते हुए भी इसे कभी विशेष आर्थिक-कष्ट नहीं होता। परमायु ७८ वर्ष होती है।

भु० सं० १२९८

कु० र०

(१९९७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, गौरवर्ण तथा अपने अध्ययन के बल पर उच्चशिक्षा तथा उपाधियाँ प्राप्त करने वाला होता है। २४ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह राजकीय सेवा में संलग्न हो जाता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से दूर रहना अच्छा लगता है। मित्रों की संख्या भी कम ही होती है। अपने किसी मित्र अथवा परिवारीजन से भावनात्मक-लगाव नहीं रखता। यह २६ वर्ष की आयु में शिक्षा-विभाग से संबंधित किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३४ वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नति कर चुका होता है। यह विलासी-प्रकृति का भी होता है, अतः युवतियों से भी संबंध रखता है। निम्नजातीय लोगों की संगति भी करता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुयोग्य तथा स्वयं भी किसी सेवा-कार्य में संलग्न होती है। पुत्र होनहार होते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष की होती है।

(१९९८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर का, तेजस्वी, चेष्टावान्, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा परिवारजनों से सुख प्राप्त करने वाला होता है। इसका जन्म समृद्ध-परिवार में होता है। इसे उच्चशिक्षा प्राप्त होती है। अध्ययनोपरान्त यह किसी उत्तम सेवा-कार्य में संलग्न होता है तथा व्यवस्था संबंधी पद का कुशलतापूर्वक निर्वाह करता है। यह भोगी-विलासी प्रवृत्ति का भी होता है। यह अपना धन पर-स्त्रियों पर खर्च कर आनन्द का अनुभव करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला एवं सुख देने वाली मिलती है। जातक उस पर पूरा अनुराग रखता है, परन्तु जातक के प्रेम संबंधों तथा गुप्त बातों की पत्नी को कभी जानकारी नहीं हो पाती। यह जातक पर्याप्त धन तथा सुख अर्जित करता है। २० वर्ष की आयु में ही बहुत धनी हो जाता है। पुत्र सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

भु० सं० १९९८

कु० र०

(१९९९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, मितभाषी, मधुर बोलने वाला, मृदु-व्यवहार वाला, संयत तथा अत्यधिक धैर्यवान होता है। यह स्व-पराक्रम से ही अपने जीवन में उन्नति करता है। इसे धन की भी कमी कभी नहीं रहती। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चंचलस्वभाव की, हर काम में जल्दबाजी करने वाली तथा सुख-साधन-प्रिय होती है। वह जातक को सुख प्रदान करती रहती है। सन्तानों में पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। पुत्र दो-तीन होते हैं। यह जातक अपने व्यवसाय तथा कार्यों द्वारा एवं राजकीय-संबंधों द्वारा निरन्तर धन कमाता रहता है। इसे ३१, ३८ तथा ४२ वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। यह पर्याप्त धन का संचय कर लेता है। इसे जीवन में कभी शारीरिक-कष्ट नहीं होता। धनी-मानी जनों से भी संबंध उत्तम बने रहते हैं। यह केवल ६२ वर्ष की परमायु ही प्राप्त करता है। धर्म-कर्मवशात् अधिक आयु भी हो सकती है।

(२०००)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, धैर्यशील तथा अपने कामों को बड़ी लगन से करने वाला होता है। इसे उच्च-शिक्षा प्राप्त नहीं होती, परन्तु इसे जितनी भी शिक्षा प्राप्त होती है, उसी के बल पर यह अपने भाग्य का निर्माण करता है। यह अपने घर से बाहर रह कर नौकरी करता है तथा जीवन परदेश में ही बिताता है। ३५, ३९, ४० तथा ४६ वें वर्ष में यह बहुत उन्नति करता है। पदोन्नति के साथ ही इसके धन की वृद्धि भी होती चली जाती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है और वह भी इसकी अनुगता बनी रहती है। यह सन्तान के लिए दुःखी रहता है। यदि हुआ तो एक पुत्र बड़ी आयु में प्राप्त होता है। पत्नी को अनेक बार गर्भस्राव होते हैं। इसके बच्चे मर भी जाते हैं। सामान्यतः यह जातक सुखी-जीवन बिताता है। माता-पिता को सुख देता है। अंत में विलासी रहता है, परन्तु ५० वर्ष की आयु से रोग-ग्रस्त हो जाता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(2001) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुद्ध, धैर्यवान, स्वयं को सबके ऊपर अधिष्ठित करना चाहता है। अपनी इच्छा के प्रतिकूल चलने वालों से यह अप्रसन्न रहता है। यह अपने परिश्रम तथा उद्योग के बल पर ही जीवन को चलाता है। यह अधिक विद्या प्राप्त नहीं कर पाता, परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता एवं पुरुषार्थ के बल पर पर्याप्त धन अर्जित करने में सफल रहता है। 24 से 31 वर्ष की आयु तक यह अपने ही स्थान में रहकर परिश्रम करता है, तत्पश्चात् परदेश में जाकर रहता और सफलता प्राप्त करता है। यह परदेश में रहकर धन कमाता, मकान बनवाता तथा स्थायी निवास करता है। इसका विवाह 28 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह सदैव सुख देती है। सन्तानें भी अच्छी होती हैं। जीवन के 38, 46, 53 तथा 57 वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। परमायु 71 वर्ष होती है।

(2002) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी क्रोधी, जिद्दी तथा आगा-पीछा न सोचने वाला, स्वेच्छा-ज का तथा अपना काम स्वयं ही बिगाड़ लेने वाला होता है। इसे अपने जीवन में स्थायित्व लाने के लिए जोखिम काम करना पड़े। उसमें धन अधिक खर्च होता है। 20-22 वर्ष की आयु से पहले तो कोई छोटा-मोटा काम करता है। फिर स्वयं का ही कोई व्यवसाय करके धन कमाता है। यह वासना-प्रेमी भी होता है, परन्तु निम्न श्रेणी की स्त्रियों से सम्बन्ध नहीं रखता। विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी जीवन में अधिकतर अलग ही रहती है, अतः यथार्थ दाम्पत्य-सुख की उपलब्धि नहीं होती। कुछ समय बाद देशान्तर में रहकर यह अपना अच्छा व्यवसाय स्थापित करता है, जिससे जीवन भर आय होती रहती है। पुत्र होनहार होते हैं। सर्वाधिक उन्नति 56 वर्ष की आयु में होती है। परमायु 65 से 68 के बीच होती है।

(2003)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, सद्‌गुण सम्पन्न, धैर्यवान तथा सबको प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है। यह धनी, बात का धनी, उदात्त हृदय का तथा परोपकारी होता है। यह न तो किसी के रहस्य को प्रकट करता है और न स्वयं अपने मन की बात किसी को बताता है। यह २३ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य हेतु परदेश में जाकर रहने लगता है तथा वहाँ रहकर यश, धन तथा प्रतिष्ठा अर्जित करता है। यह दीर्घकाल तक बाहर रहता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम होता है तथा मित्रों के प्रति विशेष लगाव रहता है। यह स्त्री की सहायता भी करता है। यह किसी स्त्री के कार्य की देखभाल भी कर सकता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। कई बार गर्भस्राव के बाद सुन्दर एवं स्वस्थ, होनहार पुत्र का जन्म होता है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२००४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, सुन्दर तथा अपने कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा करने वाला होता है। यह माता-पिता से अलग होकर कहीं बाहर रहता है और वहीं इसका भाग्योदय भी होता है। यह विद्या-बुद्धि का धनी होता है तथा २० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह अपनी लगन तथा परिश्रम के बल पर अपने भाग्य का निर्माण करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की उम्र में अथवा इससे भी पहले हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा स्नेह करने वाली मिलती है। वह परिश्रम भी खूब करती है। इसके जीवन के २५, २८, ३२, ४२ ४६ तथा ५० वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह जातक आरम्भ में सन्तान के लिए दुःखी रहता है, क्योंकि सन्तान देर से होती है। सामान्यतः यह सुखी तथा स्वस्थ जीवन बिताता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। परमायु ६८ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२००५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, मध्यम कद का, गम्भीर स्वभाव वाला, बुद्धिमान तथा सुशिक्षित होता है। यह अपने अथक परिश्रम द्वारा भाग्य का निर्माण करता है तथा पुरुषार्थ का धनी होता है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरम्भ कर देता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों से दूर परदेश में रहता और वहीं उन्नति करता है। इसे अपने शत्रुओं से विशेष भय रहता है, तथापि वे कुछ बिगाड़ नहीं पाते। इसे ४२, ४६ तथा ५१ वें वर्ष में बहुत लाभ होता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है, परन्तु कुछ समय के लिए दोनों को अलग भी रहना पड़ता है। इस जातक को किसी अन्य स्त्री के माध्यम से भी बहुत लाभ होता है। इसे सन्तान हेतु चिन्ता रहती है। परमायु ६८ अथवा ७३ वर्ष होती है।

(२००६) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गंभीर स्वभाव का, आत्मकेन्द्रित, एकान्तप्रिय तथा अपने काम से ही काम रखने वाला होता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे धन-संग्रह की बड़ी लालसा होती है तथा यह प्रचुर धन एकत्रित कर लेता है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक यह बड़ा धनी हो जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा जातक के प्रत्येक कार्य में सहयोग देने वाली होती है। वह बड़ी मनस्वी, आकांक्षाओं के अनुरूप प्रेरणा-दायक एवं सुन्दर तथा सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों को जन्म देने वाली होती है। इस जातक को सामान्यतः सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हैं तथा यह मध्यम श्रेणी का जीवन व्यतीत करता है। इसे ७८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२००७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, साहसी, पराक्रमी, अपने आगे किसी को न चलने देने वाला, अपने परिश्रम से ही प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला तथा माता-पिता से अलग परदेश में रहने वाला होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है और उसके बल पर यह २४ से २८ वर्ष की आयु तक राजनीति-क्षेत्र में भी संलग्न रह सकता है। तत्पश्चात् अपना कार्यक्षेत्र बदल देता है। इसको नौकरी में पहुँचकर यह विशेष उन्नति करता है। इसे भूमि, भवन, वाहन, निजक आदि के अतिरिक्त भोग-विलास के सभी साधन उपलब्ध होते हैं। ३५, ३८, ४३, ४६ तथा ५१ वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसे कभी शारीरिक-कष्ट नहीं होता। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी बुद्धिमती, सुन्दर तथा विशिष्ट व्यक्तित्व वाली होती है। वह जातक को अपने अनुगत रखती है। सन्तान के लिए कष्ट होता है। परमायु ७८ अथवा ८५-८६ वर्ष होती है।

(२००८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान्, बुद्धिमान तथा लोकविख्यात होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है एवं साहित्य तथा कला में इसकी गहरी पैठ होती है। यह भूमि, भवन, वाहन आदि से सम्पन्न होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कलाविद् तथा संगीत में निपुण होती है। वह घर से कम तथा बाहर से अधिक सम्पर्क रखती है एवं अपने साधनों द्वारा धनोपार्जन भी करती है। यह जातक बहुत परिश्रमी भी होता है। ३२, ३६, ३८, ४६, ५२ तथा ६१ वें वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। यह २५-२६ वर्ष की आयु से ही किसी सेवा-कार्य में संलग्न हो जाता है तथा प्रायः घर से बाहर ही बना रहता है। इसकी सन्तानें सुयोग्य होती हैं। धन की कोई कमी नहीं होती। जीवन सुख से बीतता है। इसकी परमायु ७६ अथवा ८५ वर्ष होती है।

सं. भु०

(२००९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मनस्वी, विद्वान् तथा अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध होता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा अपने परिश्रम द्वारा यह अत्यधिक धनोपार्जन करता है। यह राजकीय अथवा किसी ऐसे प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होता है, जिसके कारण इसे बहुत धन तथा मान-सम्मान मिलता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। अपने अध्यवसाय का इसे पग-पग लाभ मिलता है। जीवन के ४२, ४९ तथा ५३ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कलाओं की जानकार तथा स्वयं भी किसी सेवा-कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करने वाली होती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धन कमाना आरम्भ करके अन्त तक अर्थोपार्जन करता रहता है। पूर्णायु ८८-८९ वर्ष होती है।

(२०१०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मनस्वी तथा गुणवान होते हुए भी धन के लिए सदैव चिन्तित बना रहता है। इसके पास बहुत कम मात्रा में धन आता है, तथा भाग्योदय बहुत विलम्ब से अर्थात् ४५, ४६ अथवा ५३ वें वर्ष में होता है। यह न तो किसी की सेवा करता है और न व्यवसाय ही। यह स्वतन्त्र तथा फुटकर कार्यों से ही आजीविकोपार्जन करता है। इसके जीवन में ५६ वाँ वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुखदायक मिलती है। संतानें भी सुन्दर तथा यथेष्ट सुख देने वाली होती हैं। ५६ वर्ष की आयु के बाद इसे कोई आर्थिक-कष्ट नहीं रहता। प्रारंभिक-जीवन कष्ट में बीतने पर भी वृद्धावस्था सुखदायक रहती है। परमायु ७९ अथवा ८३ वर्ष होती है।

कु० र०

सं० भु० २२७८

कु० २०

(२०११) - इस जन्मकुण्डली में जन्म मनुष्य सुन्दर, अत्यधिक आकर्षक, कला-प्रिय, व्यावहारिक बुद्धि वाला तथा अपने पक्ष को भलीभाँति प्रस्तुत करने की कला में कुशल होता है। यह बड़ा परिश्रमी, अपने कार्य को बड़ी लगन से करने वाला तथा धनी माता-पिता की सन्तान होने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करने वाला होता है। २१ वर्ष की आयु तक यह उच्चशिक्षा प्राप्त करता है, तत्पश्चात अपनी योग्यता के बल पर श्रेष्ठ राजकीय पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा उग्र प्रकृति की होती है। फिर भी वह जातक की अवहेलना नहीं करती अपितु घर-बाहर के सभी कार्यों में जातक की सहयोगिनी बनी रहती है। इसके कई पुत्र होते हैं, जो सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। परमायु ७८ वर्ष की होना सम्भव है।

(२०१२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, अनेक विषयों का ज्ञाता, विशेष रूप से चिकित्सा शास्त्र का पंडित हो सकता है। इसे अल्प काल में ही विपुल यश प्राप्त होता है। अपनी आयु के २८वें वर्ष में यह पूर्ण रूप से स्थापित हो जाता है। इसे अपने घर-परिवार से तथा माता-पिता से बहुत प्रेम मिलता है, जो इसके जीवन को उच्च शिखर पर पहुँचाने में सहायक सिद्ध होते हैं। यह जातक बड़ा पुरुषार्थी होता है तथा अपने परिश्रम से बहुत धन कमाता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। यह निरंतर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी जातक के लिए वरदान सिद्ध होती है। इस जातक को शत्रुओं से बहुत भय रहता है तथा उनकी संख्या भी अधिक होती है। इसे राज्य से सम्मान भी मिलता है। सन्तान हेतु चिन्ता रहती है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२०२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बड़ा तेजस्वी एवं कुशाग्र-बुद्धि होता है। यह चारों ओर से सतर्क बना रहता है। उच्च शिक्षा प्राप्त यह मनुष्य अनेक कलाओं तथा विषयों का ज्ञाता एवं बुद्धि का धनी होता है। विद्युत, भवन-निर्माण आदि कार्यों में इसकी गहरी पैठ होती है। यह २३ वर्ष की आयु में ही परदेश में जाकर रहना आरंभ करता है तथा कार्य करता हुआ वहीं काफी समय तक रहता है। इसके पास सम्पत्ति भी बहुत होती है। यह धन का लोभी तथा संग्रही होता है। २६ वर्ष की आयु तक काफी धन इकट्ठा कर लेता है। यह किसी व्यवसाय को आरंभ करता है तथा २८ वर्ष की आयु तक उसे भली भाँति जमा लेता है। इसकी पत्नी सुशिक्षिता, गुणवती तथा सन्तानवान होती है। वह भाग्यवती, धार्मिकप्रवृत्ति की तथा कुशलता पूर्वक गृहस्थी का संचालन करने वाली होती है। सन्तानें होनहार होती हैं। परमायु ८० वर्ष होना सम्भव है।

(२०२४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, विवेकी तथा अध्ययनशील होता है। इसे विद्याध्ययन में विशेष रुचि होती है। काव्य, संगीत का भी प्रेमी होता है। कला, तकनीकी-क्षेत्र के कार्य एवं चिकित्सा-विज्ञान से सम्बन्धित कार्य इसे विशेष प्रिय लगते हैं। यह राजयोग प्राप्त जातक २५ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न होकर जीविकोपार्जन आरंभ करता है, परन्तु वहाँ इसे इतनी विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है कि लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है, जिसके कारण इसका चित्त खिन्न हो जाता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुशिक्षिता एवं विदुषी होते हुए भी इसे सुख नहीं दे पाती। वह जातक के कतिपय अवगुणों के कारण खिन्न बनी रहती है। इस जातक का भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में होता है, तब यह बहुत धन कमाता है। ५६ वें वर्ष में अरिष्ट तथा ६८ वें वर्ष में परलोक गमन सम्भव।

(२०२५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, भावुक, कुशल, बुद्धिमान, मर्मज्ञ तथा अल्प शिक्षित होते हुए भी बड़ा ज्ञानी एवं समझदार होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा सच्चरित्रा मिलती है। विवाहोपरान्त इसका उद्योग, पराक्रम तथा साहस लगातार वृद्धि हो जाते हैं। तब यह निरन्तर उन्नति करने लगता है तथा किसी प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर अपने परिश्रम तथा सूझबूझ से उच्चपद पर जा पहुँचता है तथा उस व्यवसाय में अपनी स्थिति को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना लेता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे सम्मानजनक पद प्राप्त हो जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं, जिनसे यह प्रचुर धन उपार्जित करता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा होनहार होते हैं, तथापि जातक को उनसे कोई विशेष सुख नहीं मिलता। २९, ३६ तथा ४६ वें वर्ष में कुछ संकट आते हैं। (परमायु ७२ वर्ष होती है)

(२०२६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, कुशल वक्ता, अपने मधुर व्यवहार से सबको प्रसन्न रखने वाला एवं अपने प्रत्येक कार्य को गुप्त रखने वाला होता है, जब तक कि उसे सफलता प्राप्त न हो जाए। यह धार्मिक, दृढ़निश्चयी तथा विदेश से धन प्राप्त करने वाला होता है। यह किसी ऐसे व्यवसाय से सम्बन्ध रखता है, जो विदेश में चलता है। मशीन, लोहा आदि धातुओं तथा खनिज वस्तुओं के अतिरिक्त पशु-धन से भी इसे धन-लाभ होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। २५, २६, २९ तथा ३५ वें वर्ष में यह बहुत धन कमाता है। ५६ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी तथा भूमि, भवन, वाहनादि का स्वामी हो जाता है। पत्नी अनुगता रहती है तथा संतानें दो या तीन ही होती हैं। सामान्यतः इसका सम्पूर्ण जीवन बड़े सुख में बीतता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

भृ० सं० २३९८

कु० र०

(२०९७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, चंचल-चित्त वाला, व्यवसाय द्वारा धन कमाने वाला तथा पैतृक-व्यवसाय को अपनाने वाला होता है। इसे व्यापार द्वारा बहुत आर्थिक-लाभ होता है। अधिक शिक्षित न होते हुए भी यह व्यापार करने में बड़ा चतुर होता है। २३ वर्ष की आयु में इसे किसी स्त्री द्वारा लाभ होता है। बाद में भी यह उस स्त्री के साथ अथवा उसके लिए कार्य-रत बना रहता है। इसे परदेश से बहुत लाभ होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा स्थिर धन एवं अचल सम्पत्ति सदैव उपलब्ध रहती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, समझदार तथा बहुत गंभीर स्वभाव की होती है। वह जातक के कार्यक्षेत्र को भी प्रभावित करती है। इस जातक को ससुराल तथा अपने विरोधियों से भी बहुत धन मिलता है। सन्तान से कष्ट होता है तथा उससे अलग भी रहना पड़ता है। ३३ एवं ५१ वें वर्ष में अरिष्ट। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२०९८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य तीव्र बुद्धि वाला, विचारवान, चतुर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह किसी प्रतिष्ठान की सेवा अथवा व्यवसाय अथवा दोनों साधनों से धनोपार्जन करता है। यह २५ वर्ष की आयु से आजीविका कमाने लगता है एवं अपनी दक्षता तथा चतुरता से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। यह किसी गूढ़ कार्य तथा परदेश द्वारा भी धन प्राप्त करता है। परदेश में रहता भी है। इसके विवाह में व्यवधान आता है। एक बार सगाई छूट कर, दूसरी बार में विवाह होता है। पत्नी से सुख भी कम मिलता है। यह धन कमाने में इतना व्यस्त रहता है कि पत्नी की ओर ध्यान ही नहीं देता। इसके पुत्र सुन्दर तथा कार्य में सहयोगी होते हैं। ३९ वें वर्ष में मकान बनवाता है। ४२, ६२, ५१ तथा ५६ वें वर्ष में कष्ट तथा ५९ एवं ६६ वें वर्ष में अरिष्ट होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२०१९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली, कला-प्रेमी तथा अपने पौरुष द्वारा विपुल धन अर्जित करने वाला होता है। यह साहित्य-संगीत आदि ललित कलाओं का उपासक तथा कलाकारों को प्रोत्साहन देने वाला होता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, इसके शरीर की तथा जातक को सुख देने वाली होती है। वह अपने प्रभाव से घर-गृहस्थी को नियन्त्रित कर, उसका कुशल-संचालन करती है। २५ वर्ष की आयु में इस जातक को व्यवसाय से विशेष लाभ होता है। अपने पैतृक-व्यवसाय से इसे सुख मिलता है। भाई-बन्धुओं के कारण यह अपना अलग व्यवसाय भी करता है। इसे २३, ३२, ३६ एवं ४०वें वर्ष में कष्ट होता है। ५२वाँ वर्ष भी कष्टप्रद रहता है। ३१ से ३६ वर्ष की अवधि में परिश्रम बहुत करनी पड़ती है, जिससे धन भी खूब कमाता है। पुत्र एक ही होता है। पूर्णायु ७६ अथवा ७९ वर्ष होती है।

(२०२०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, मधुभाषी, मिलनसार, अनेक कलाओं में रुचि रखने वाला, कई विषयों का पंडित तथा ज्ञान-पिपासु होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों के सहयोग से तथा उनके साथ रहते हुए बहुत धन कमाता है। मुख्यरूप से यह व्यवसाय ही करता है, जिससे इसे निरन्तर लाभ होता रहता है। २४ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। इसे राज्य द्वारा भी लाभ होता है। ३५, ३९, ४३ तथा ४६ वर्ष की आयु में यह कुछ विशिष्ट कार्य करके अप्रत्याशित लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में किसी राज्याधिकारी की कन्या के साथ होता है। पत्नी से इसे बहुत सुख मिलता है। वह इसके कार्यों की देख-रेख भी रखती है। २८ वर्ष की आयु में किसी विवाद के कारण इसे कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(2021)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, तीव्र-बुद्धि वाला, मध्यम-श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने वाला, परन्तु जीवन में अपेक्षित सफलता न पाने वाला होता है। अथक परिश्रम द्वारा यह व्यवसाय को बढ़ाता है। इसकी व्यावसायिक-बुद्धि का सब लोग लोहा मानते हैं। इसे देशान्तर की यात्राओं से लाभ होता है, जिससे यह नये उद्योग की स्थापना करता है। 33 वर्ष की आयु में यह किसी व्यक्ति की साझेदारी में तथा व्यवसाय प्रारंभ करता है। 36 से 46 वर्ष की आयु तक इसे विशेष लाभ होता है। यह अपने निजी भवन का निर्माण कराता है तथा वाहन भी खरीदता है। इसका विवाह 29 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत धैर्यवान सुशीला तथा जातक के सौभाग्य की वृद्धि करने वाली होती है। इसके कई पुत्र होते हैं और वे सब जातक के जीवनकाल में ही धनोपार्जन करते हैं तथा माता-पिता को सुख पहुँचाते हैं। जातक स्वयं भी आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। पूर्णायु 71 वर्ष होती है।

(2022)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, ऊँचे कद का, तेजस्वी, उदार-हृदय, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह एक ओर जहाँ आलसी होता है, वहीं दूसरी ओर किसी काम में जुट जाने पर परिश्रम भी खूब करता है। 24 वर्ष की आयु में ही यह घर से बाहर चला जाता है तथा परदेश में रह कर जीविकोपार्जन करता तथा भाग्य की वृद्धि करता है। इसका विवाह 28 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आरम्भ में इकहरे शरीर की होती है, परन्तु बाद में स्थूलकाय हो जाने वाली तथा सुन्दर होती है। यह जातक के लिए सौभाग्यशालिनी सिद्ध होती है। 36 वर्ष की आयु में जातक के व्यवसाय में कुछ बाधाएँ आती हैं, जिन्हें दो वर्ष में दूर कर पाता है। 40 वर्ष की आयु में यह जातक किसी स्त्री की सहायता से अथवा साझेदारी में दूसरा व्यवसाय भी आरंभ करता है। तत्पश्चात इसे कभी कोई कष्ट नहीं होता। इसके दो पुत्र गुणी तथा भाग्यशाली होते हैं। परमायु 75 वर्ष होती है।

(2023)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ा बुद्धिमान, दूरदर्शी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, राजमान्य तथा समयानुकूल चलने वाला होता है। यह मध्यम कद का, उदात्त, उदार स्वभाव का, राजकीय-सेवा में कार्य-रत तथा सेवा के दो-तीन वर्ष के भीतर ही उच्चपद प्राप्त कर लेने वाला होता है। २७-२८ वर्ष की आयु में यह विशेष उन्नति करता है। इसे धन की कमी कभी नहीं रहती। इसकी मान-प्रतिष्ठा में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान तथा जातक को निरन्तर आनन्द प्रदान करने वाली होती है। यह जातक अपनी पत्नी के कार्यों से भी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पुत्र भी तेजस्वी तथा यशस्वी होते हैं। इसके जीवन में २७, २९, ३२, ३८, ४३, ४८, ५२ तथा ५८वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ५३ वर्ष की आयु में यह बहुत उच्च-स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(2024)- इस जन्म-कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, युक्तियुक्त बातें करने वाला, मधुरभाषी एवं अपने व्यवहार द्वारा सबको प्रसन्न एवं प्रभावित करने वाला होता है। यह अचल-सम्पत्ति का स्वामी, धनवान तथा यशस्वी होता है, तथापि वैराग्य-प्रकृति का होने के कारण धन-सम्पत्ति के प्रति विशेष मोह नहीं रखता। यह बहुत समय तक अपने बन्धु-बान्धवों से अलग रहता है। इसके मित्र भी कम ही होते हैं। अपने व्यक्तिगत गुणों के माध्यम से ही यह अपने भाग्य की वृद्धि करता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में सद्‌गुणी, सुन्दरी तथा गम्भीर प्रकृति की कन्या के साथ होता है। यह जातक अपने कार्यवश अधिकांश समय घर से बाहर परदेश में व्यतीत करता है, अतः पत्नी का सुख अधिक नहीं मिल पाता। सन्तान भाग्यशाली तथा पिता के अनुकूल रहने वाली होती है। ४६वें वर्ष में अरिष्ट, ५१वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट तथा ७३वें वर्ष में परलोक-गमन होता है।

भृ० सं० ८३-१८१

कु० २०

(२०२५) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बुद्धिमान, मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल, स्वस्थ, सुन्दर तथा बुद्धिमान होता है। चतुर होते हुए भी इसकी चतुराई निष्फल सिद्ध होती है, क्योंकि लोग इस पर विश्वास नहीं करता। इसे मध्यम श्रेणी की शिक्षा प्राप्त होती है। अपने पुरुषार्थ के बल पर ही यह धन कमाता है। २५ वर्ष की आयु में यह व्यवसाय द्वारा अपनी उन्नति करना आरंभ कर देता है तथा इसके घर में धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। यह लोभी प्रकृति का होता है, अतः धन का विपुल मात्रा में संचय कर लेता है। भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख इसे प्राप्त होते हैं। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा कुछ स्थूल-शरीर वाली होती है। वह जातक के भाग्य की वृद्धि करती है। विवाह होजाने पर ही जातक की आमदनी में वृद्धि होने लगती है। इसके पुत्र भी समझदार तथा होशियार होते हैं। परमायु ७० वर्ष की होती है।

(२०२६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, उदार तथा सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव का होता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। परन्तु यह धन को खर्च करना नहीं चाहता। यह अपनी निजी परिश्रम, सम्पत्ति तथा अन्य उपायों द्वारा बहुत धन कमाता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी इसी की भाँति कृपण स्वभाव की होती है। यह जातक अपने अध्यवसाय के बल पर परदेश में रहते हुए विपुल धन अर्जित करता है, परन्तु तृष्णाधिक्य के कारण सुख का अनुभव नहीं कर पाता। यह अपने माता-पिता को कष्ट देता है। वे इसके कारण बहुत दुःखी तथा अलग रहते हैं। यह अपनी सम्पत्ति को बहुत सँभाल कर रखता है तथा पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी पर विश्वास नहीं करता। इसे सन्तान का कष्ट होता है। सन्तान विलम्ब से होती है या होती ही नहीं है। धन होते हुए भी यह दरिद्रतुल्य जीवन व्यतीत करता है। परमायु ९० वर्ष होती है।

(२०२७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, पतले - दुबले शरीर का तथा बहुत धनी होता है। यह समान लाभ तथा समान हानि के बीच चलता है, फिर भी इसके पास धन की कमी नहीं रहती। यह कृपण तथा धन-संचयी होता है। इसे राजकीय-सेवा प्राप्त होती है। यह घर छोड़कर बाहर रहता तथा अपने भाग्य का निर्माण करता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह परदेश में रहने लगता है तथा वहाँ बहुत धन कमाता है। निरन्तर परिश्रम द्वारा इसे पदोन्नति प्राप्त होती है। इसका विवाह २७ से ३० वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में जातक की सहायिका बनी रहती है। सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। सन्तान या तो होती ही नहीं है अथवा होकर सुख नहीं देती। यह जातक सब प्रकार के भौतिक सुखों से सम्पन्न रहता है। इसकी परमायु ९० वर्ष अथवा इससे भी अधिक होती है।

(२०२८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, नीरोग, अत्यधिक कार्य-कुशल तथा धन के प्रति विशेष लगाव रखने वाला होता है। यह धन-सम्पत्ति की रक्षा करता हुआ उसकी निरन्तर वृद्धि करता रहता है। इसे घर से बाहर, पैतृक-आवास से अलग स्थान में कार्यक्षेत्र प्राप्त होता है। यह राजकीय राजकीय-सेवा अथवा अन्य प्रतिष्ठान से आजीविका प्राप्त करता है। २५-२६ वर्ष की आयु में पदोन्न-ति प्राप्त करता है। इसे २८, ३५, ४८ तथा ५६ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसका विवाह ३०-३२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। जातक को उसके समक्ष दब कर रहना पड़ता है। यह सन्तान-सुख से वंचित रहता है, अतः इसे मानसिक-कष्ट बना रहता है। समाज एवं परिवारीजनों से सम्मान प्राप्त करता हुआ यह जातक सुखी जीवन बिताते हुए ८५ अथवा ८८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(२०२९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य विद्वान, कला-मर्मज्ञ, कलाकार, तेजस्वी तथा उग्र-स्वभाव का होता है। फलतः यह अपनी योग्यता के अनुरूप शुभ फल प्राप्त नहीं कर पाता। यह ईश्वर-भक्त, धार्मिक तथा दान-पुण्यादि में धन व्यय करने वाला होता है। यह आलोचक एवं चित्रकारी आदि कार्यों से धनोपार्जन करता है। यह साधारण लोगों के साथ रहता है। यह अपने माता-पिता से अलग रहते हुए जीवन बिताता है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुख देने वाली तथा धन-संग्रह करने वाली होती है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर होते हैं और होनहार निकलते हैं। वृद्धावस्था में इसे अपनी सन्तानों द्वारा सुख प्राप्त होता है। इसके जीवन में ४८, ५३ तथा ६१ वें वर्ष आकस्मिक-दुर्घटना कारक सिद्ध होते हैं, परन्तु उनसे प्राणरक्षा हो जाती है। सब प्रकार से सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०३०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद का, गौर वर्ण तथा धन के लिए सदैव चिन्तित बना रहने वाला होता है। अनेक प्रकार के अवगुणों से सम्पन्न यह जातक कृपण होता है तथा अपने धन को सुरक्षित रखते हुए पराये धन से आनन्द-मौज मनाने में कुशल होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा कला-मर्मज्ञा होती है। वह जातक को सदैव सुख देती है। यह जातक अपने बन्धु-बान्धवों का हितैषी होता है तथा उन्हें लाभ पहुँचाता रहता है। इसे २४ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन के अवसर प्राप्त होते हैं। यह राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में भी जा सकता है। इसे २८, ३१, ३६, ४१ तथा ४७ वर्ष की आयु में बहुत सुख प्राप्त होता है। ६१ वाँ वर्ष ठीक नहीं रहता है। सन्तानें सुयोग्य तथा सुख देने वाली होती हैं। यह सुखी-जीवन बिताते हुए ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १३४४

कु० २०

(२०३१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी वीर, साहसी, राजयोगवान तथा अपने बुद्धि-चातुर्य से अत्यधिक यश प्राप्त करने वाला होता है। यह २१-२२ वर्ष की आयु से ही अर्थोपार्जन करने लगता है। अपनी आयु के २८वें वर्ष में यह किसी महत्वपूर्ण पद पर आसीन होता है। यह निरन्तर प्रगति करता चला जाता है तथा इसके धन में भी लगातार वृद्धि होती रहती है। ३२, ३७, ४० तथा ४८वें वर्ष में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसे व्यवसाय, वाणी-विलास, प्रभाव तथा युक्तिपूर्ण चातुर्य से भी धन का लाभ होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी सुन्दर, भाग्यशालिनी, मनस्वी, तथा चंचल स्वभाव की होती है। वह जातक के साथ ही उसके मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों को प्रभावित करती है। वह स्वयं भी कहीं कार्य करके धन कमाती है। सन्तानें भी सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२०३२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बड़ा मनस्वी, उग्र स्वभाव का तथा क्रोधी होता है। यह बाल्यावस्था में रुग्ण रहता है। बाद में स्वस्थ जीवन बिताता है। २४ वर्ष की आयु तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा अथवा व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन आरम्भ करता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसके पास जीवनभर कभी धन की कमी नहीं रहती। ३६, ४५, ५१ तथा ५६वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। वह मनस्विनी, चतुर तथा महत्वाकांक्षाओं वाली होती है। धन की उसके पास भी कोई कमी नहीं रहती। पति-पत्नी दोनों ही अर्थोपार्जन करते हैं। इसकी सन्तानें भी बड़ी होनहार तथा भाग्यशालिनी होती हैं। २७, ४५ तथा ४८ वर्ष की आयु में कष्ट होता है एवं पूर्णायु ७२ वर्ष की होती है।

भु० सं० ३३९०

कु० र०

(२०३३)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न मनुष्य धीर-गंभीर, बुद्धिमान तथा विद्वान होता है। यह अपने पाण्डित्य से लोगों को चमत्कृत करता है। परम बुद्धिमान तथा योग्य होने के कारण इसे सर्वत्र यश प्राप्त होता है। राजकीय-सेवा में यह उच्च पद पर आसीन होता है। यह भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकादि से युक्त होकर ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। इसकी ससुराल बहुत धनवान होती है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली होने के साथ ही महत्वाकांक्षिणी भी होती है। इस जातक का कार्य-क्षेत्र घर से बाहर ही अधिक रहता है। इसकी आमदनी के साधन भी अनेक होते हैं। इसकी पत्नी किसी शिक्षण-संस्थान में कार्य-रत हो सकती है। जातक को २८, ३६ तथा ४८ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसे माता पिता का दीर्घकालीन-सुख मिलता है। सन्तानों में एक पुत्र यशस्वी होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२०३४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी युवक, अत्यधिक महत्वाकांक्षी, प्रभावशाली, परन्तु अत्यधिक क्रोधी होता है। यह अपने समक्ष किसी छोटे आदमी को ऊँचा उठता भी नहीं देख सकता। यह अत्यधिक अनुशासन-प्रिय होता है। अपनी बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता, योग्यता तथा चातुर्य पर इसे प्रायः गर्व होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसे अपनी सम्पत्ति, वैभव, बन्धु-बान्धव तथा मित्रों की सहायता एवं बुद्धिबल से बहुत धन प्राप्त होता है। २४ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होता है तथा अपने अध्यवसाय द्वारा उन्नति करता हुआ उच्च पद पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरमा होती है। ३६, ६८ तथा २६ वें वर्ष में इसे बहुत सम्मान तथा अप्रत्याशित धन का लाभ होता है। सन्तानें भाग्यवान होती हैं। परमायु ७२-७३ वर्ष होती है।

(२०३५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धैर्यवान, क्रोधी होते हुए भी मन से शान्त बना रहने वाला, समय की गति को पहिचानने में कुशल, स्वस्थ तथा मनस्वी होता है। यह तकनीकी-ज्ञान से संबंधित कार्यों को करता है। साहित्य-सर्जक भी हो सकता है। यह निजी व्यवसाय तथा राजकीय-सेवा द्वारा धन कमाता है। २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होता सम्भव है। यह ४५ वर्ष की आयु में बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। यह अपना भवन बनवाता है तथा वाहन, सेवक आदि का सुख भी प्राप्त करता है। ४५ वर्ष की आयु में ही यह बहुत धनी भी हो जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा चंचल स्वभाव की होने के साथ ही कला-मर्मज्ञ तथा मृदुल-व्यवहार करने वाली होती है। इसके पुत्र भी सुयोग्य, धनवान तथा सुखी होते हैं। इसकी परमायु ७८ वर्ष होती है तथा मृत्यु परदेश में होना सम्भव है।

(२०३६) - इस जातक को सुन्दर, स्वस्थ, धैर्यवान, ऊँच-नीच का ज्ञान रखने वाला तथा चतुर होना चाहिए। यह बड़ा व्यवहार-कुशल तथा वाक्चातुर्य से ही सुख पाने वाला होता है। यह धनी परिवार में जन्म लेता है। बड़ा होकर यह देश-विदेश में भ्रमण करता है। अध्ययन तथा शास्त्रानुकूल-व्यवहार इसके प्रिय विषय होते हैं। ३२ वर्ष की आयु में यह बहुत प्रतिष्ठित होकर राज्यपद प्राप्त कर लेता है। सामान्यतः राजकीय-सेवा २४ वर्ष की आयु से ही करता है। यह प्रत्येक कार्य निष्पक्ष तथा न्यायपूर्ण ढंग से करता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। भूमि, भवन, वाहन, सम्पत्ति का इसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सरल, पति-परायण तथा पारिवारिक-दायित्वों का निर्वहन करने वाली होती है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२०३७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गंभीर प्रकृति का, अपनी योजनाओं को गुप्त रखने वाला, क्रोधी स्वभाव का, परन्तु समय की पहिचान का काम करने वाला होता है। २२ वर्ष की आयु में यह किसी गूढ़ कार्य में संलग्न होता है। यह बाल्यावस्था से ही सम्पत्तिशाली होता है तथा युवावस्था में संपत्ति की वृद्धि करता है। परदेश में रह कर यह बहुत लाभ उठाता है। यह किसी की सेवा नहीं करता, अपितु स्वतन्त्र व्यवसाय अथवा कार्य द्वारा २६ वर्ष की आयु में ही बहुत ऐश्वर्यशाली बन जाता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्वी, सुन्दरी, धीर-गंभीर, उदार तथा अत्यन्त गुणवती होती है। वह गृहस्थी का सुचारु ढँग से संचालन करती है। सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। प्रथम तो संतान होती ही नहीं है और यदि हो तो वह विरुद्ध आचरण करने वाली होती है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२०३८)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति शान्त स्वभाव का होते हुए भी उपद्रवी होता है। यह सुनियोजित ढँग से ऐसे कार्य करता है कि अन्य लोगों को उनके विषय में कुछ पता ही नहीं चल पाता। इसकी आमदनी भी गुप्त एवं रहस्यमय साधनों द्वारा होती है। यह किसी राजकीय विभाग के कार्य-सम्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। राज्याधिकारी इसका सम्मान करते हैं। यह उच्च-~~शिक्षा~~-प्राप्त न होते हुए भी उच्च प्रभाव वाला होता है। ३० वर्ष की आयु से ही यह ख्याति प्राप्त कर लेता है। इसका परदेश में आवागमन बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी मनस्विनी, प्रभावशालिनी तथा सर्वत्र आदर प्राप्त करने वाली होने के साथ ही स्वयं धनोपार्जन करने वाली भी होती है। इसे संतान हेतु कष्ट होता है। गर्भ या तो रहता ही नहीं, या गिर जाता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२०३९)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य धीर, गंभीर, समय को पहिचानने वाला, कला-प्रेमी, कलाकार, कवि, साहित्य-सर्जक तथा उदार स्वभाव का होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं होती, तथापि उच्च पद प्राप्त हो जाता है। सेना, पुलिस अथवा अनुशासन-प्रधान किसी अन्य राजकीय विभाग में यह सेवा-कार्य करता है तथा ३० वें वर्ष में पदोन्नति प्राप्त कर किसी टुकड़ी का मुखिया बन जाता है। २२, २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में प्रवेश करता है। ३६, ४२, ५१ तथा ५८ वें वर्ष बहुत शुभ सिद्ध होते हैं। इसका विवाह भी २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुयोग्य, सुन्दरी, प्रभावशालिनी तथा धनार्जन करने वाली होती है। यह जातक धन की बहुत इच्छा रखता है तथा यथाशक्ति धन-संचय भी करता है। इसके पुत्र होनहार होते हैं। दो-तीन गर्भ गिर भी जाते हैं। ६१, ४९ तथा ५३ वें वर्ष में शारीरिक कष्ट। पूर्णायु ७१ या ७६ होगी।

(२०४०)- इस जन्मांग चक्र का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञाता, साहित्य-काव्य-सर्जक, आत्मरत, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अपने अध्यवसाय द्वारा २६ वर्ष की आयु में प्रतिष्ठाजनक पद की प्राप्ति कर लेने वाला होता है। यह अधिकतर घर से बाहर रहता है तथा परदेश से ही इसका भरणपोषण भी होता है, तथापि इसका मुख्य कार्य-क्षेत्र अपने घर के आस-पास ही बना रहता है। यह किसी स्त्री के कार्य सम्बन्धी दायित्वों को सँभालता तथा उसे लाभ पहुँचाता है। इसे किस कार्य से इतना धन प्राप्त हो रहा है, इसका पता आज तक किसी को नहीं चल पाता। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा व्यवहार-कुशल होते हुए भी पति तथा सास, श्वसुर की उपेक्षा करती है। अतः जातक को उससे सुख नहीं मिलता। सन्तान हेतु चिन्ता तथा कष्ट की प्राप्ति होती है। पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

(२०४१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, न्याय-प्रिय; सबकी बात सुनने, समझ-
-ने तथा मानने वाला, शान्त-चित्त, कला-मर्मज्ञ, विद्वान तथा अपने गुणों के कारण सर्वत्र आदर प्राप्त
करने वाला होता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। यह अपनी योग्यता के आधार पर
किसी उच्च पद पर जा पहुँचता है तथा यथेष्ट मात्रा में धनोपार्जन करता है। इसे उद्योग
द्वारा भी बहुत लाभ होता है। यह २१ वर्ष की आयु से धन कमाना आरम्भ करता है तथा २८
वर्ष की आयु तक किसी प्रतिष्ठित-पद को प्राप्त कर लेता है। ३१, ३२, ३८ तथा ४६वें वर्ष
बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसका विवाह २१ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
अत्यधिक प्रेम करने वाली, सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। इसके अनेक पुत्र-पुत्री होते
होते हैं। यह सदैव स्वस्थ रहता हुआ ७९ अथवा ८६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२०४२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुबुद्धि-सम्पन्न, अनेक विषयों का ज्ञाता,
अपने पाण्डित्य तथा पौरुष से सब लोगों को चमत्कृत करने वाला तथा अपने गुणों के
कारण सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। इसकी आय के साधन अनेक होते हैं।
यह लोक-हित सम्बन्धी कार्यों तथा राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है। इसका विवाह
२१ वर्ष की आयु तक ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा पति की उन्नति के लिए
सचेष्ट बनी रहने वाली होती है। ३६ वर्ष की आयु में जातक बहुत ऊँचे पद पर पहुँच जाता
है। ४१, ४३, ४८, ५३ तथा ५६वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह जातक पैतृक-
सम्पत्ति को प्राप्त करता है तथा माता-पिता को सुख भी देता है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुन्दर
तथा सुयोग्य होते हैं। वे जातक को सुख देते हैं। पूर्णायु ८० या ८८ वर्ष होती है।

(2043)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत भाल, विशाल नेत्र, गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, सुन्दर, तेजस्वी तथा अपने गुणों से अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसका भाग्योदय 25 वर्ष की आयु में होता है। यह राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होता है तथा अपनी योग्यता, गुण, पौरुष तथा अध्यवसाय द्वारा शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका भाग्योदय जन्मभूमि से बाहर ही होता है। यह देश-विदेश के कई स्थानों पर कार्य करता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। धन की तृष्णा भी अधिक रहती है तथा धन-संचय भी खूब करता है। जीवन के 33, 38, 43, 48, 51, 56, 58, 60 तथा 65वें वर्ष भाग्यवर्द्धक होते हैं। विवाह 21-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतति-सुख उत्तम रहता है। परमायु 81 वर्ष होती है।

(2044)- इस जन्मकुंडली का स्वामी तेजस्वी, क्रूर तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह नीतिज्ञ, अपने कार्य को युक्तिपूर्वक करने वाला तथा प्रतिपक्ष को अपनी योजनाओं की हवा तक न लगने देने वाला होता है। यह अपने शत्रु को कभी क्षमा नहीं करता। यह अपने गुण तथा पौरुष के द्वारा ही धनोपार्जन करता है। कभी धनोपार्जन हेतु सेवा-कार्य भी कर लेता है अथवा स्वतन्त्र रूप से निजी कार्य करता है। विवाह 21-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पति के अनुकूल चलने वाली, सहयोगिनी तथा स्वतन्त्र स्वभाव वाली होती है। वह भी अपने कार्य द्वारा धनोपार्जन करती है। जातक को 31, 38, 45, 56, 61 तथा 65वें वर्ष बड़े महत्त्वपूर्ण रहते हैं। यह जातक विपुल धन-ऐश्वर्य का स्वामी होता है। संतानें कम होती हैं, परन्तु सुख देने वाली होती हैं। परमायु 89 वर्ष होती है।

(२०४५) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा अपने गुणों द्वारा सभी को चमत्कृत कर देने वाला होता है। यह काव्य तथा संगीत का विशेष प्रेमी होता है। बाल्यावस्था से ही घर से बाहर रहकर धनोपार्जन करता है। इसके पास उपाधियाँ नहीं होती। इसे विद्यालयीन-शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाती, तथापि विद्या बुद्धि में अद्वितीय होता है। यह बाल्यावस्था से ही धन कमाता है। इसका अपना व्यवसाय होता है। ४२ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी तथा प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुयोग्य तथा जातक को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है। इसके संतानें कम होती हैं, परन्तु वे सुयोग्य तथा भाग्यशाली होती हैं। जीवन में सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ यह जातक ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कोमल हृदय का, उदार, कल्पनाओं में खोया रहने वाला, कलाकार, अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी तथा सब लोगों से आत्मीयता का भाव रखकर उन पर सहज ही विश्वास कर लेने वाला होता है। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण यह धोखा भी उठाता है, परन्तु किसी से बदला लेने की भावना इसके हृदय में उत्पन्न नहीं होती। यह अपने घोर शत्रु को भी क्षमा कर देता है। इसकी शिक्षा मध्यम होती है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में घर से बाहर होता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ४०-४५ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुख देने वाली मिलती है। संतानें कम होती हैं तथा बड़ी होकर सुख देती हैं। पर-स्त्रियों से भी यह जातक संबंध रखता है। परमायु ७८ वर्ष की होती है।

(२०४७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ तथा सुन्दर होने के साथ ही सदैव चिन्ताओं से घिरा रहने वाला होता है। यह अपने तथा अपने परिवार के लिए चिन्तित रहता है। कभी तो यह बहुत धनी हो जाता है और कभी इसका हाथ तंग हो जाता है। अनेक बार इसे ऋण भी लेना पड़ता है। यह अपने पौरुष तथा अध्यवसाय से एवं युक्ति के बल पर धनोपार्जन करता है। इसकी शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। इसके कार्य निजी परिश्रम से अधिक संबंध रखते हैं। यह धीरे-धीरे उन्नति करता है। २५ से ४३ वर्ष की आयु तक कठोर परिश्रम करके अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। माता-पिता द्वारा इसका विवाह १८-१९ वर्ष की आयु में ही कर दिया जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है। सन्तानें भी सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। ४५ वर्ष की आयु में अरिष्ट तथा ७१ वें वर्ष में परलोक-गमन होता है।

(२०४८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, कला-मर्मज्ञ, ज्ञानी एवं अध्यात्म में विशेष रुचि रखने वाला होता है। इसे अपने माता-पिता, परिवारीजनों, उच्चाधिकारियों तथा मित्रों से सदैव सहायता प्राप्त होती रहती है। इसे बाल्यावस्था से ही धन की कमी नहीं रहती। धनी परिवार में जन्म लेने वाला यह जातक राजयोग प्राप्त होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा २५, २८ एवं ३१ वें वर्ष में विशेष उन्नति करता है। इसके बाद आजीवन ऐश्वर्य-वृद्धि होती रहती है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह जातक के भाग्य को उन्नत बनाती तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। संतानें कम होती हैं, और वे बड़ी होकर जातक को सुख भी नहीं देतीं। परमायु ७१ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(२०४६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तुरन्त निर्णय लेने वाला तथा अपनी धुन का पक्का होता है। यह स्वभाव से गंभीर तथा शान्त होता है। इसके मन में बड़ी उथल-पुथल रहती है, परन्तु वह बाहर से दिखाई नहीं देती। यह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता चला जाता है। सफलता इसके साथ-साथ चलती है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। २१ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा अथवा किसी शिक्षा-संस्थान के अथवा किसी व्यावसायिक-संगठन के उच्च अधिकारी बन जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, कुछ साँवली तथा अपने गुण, पाण्डित्य एवं बुद्धिमत्ता से जातक को वशीभूत रखने वाली होती है। इसके पुत्र तेजस्वी तथा भाग्यवान होते हैं। वे भी उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करते होते हैं। ५६वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है तथा पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२०५०) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, स्व-कार्य में पटु, यात्रा-प्रेमी तथा देशान्तर के आवागमन द्वारा प्रचुर धन प्राप्त करने वाला होता है। इसे अपने पिता से अधिक लाभ नहीं मिलता और न यह अधिक शिक्षा ही प्राप्त कर पाता है, तथापि अपने कौशल तथा अध्यवसाय के बल पर यह २६ वर्ष की आयु में निजी व्यवसाय स्थापित कर, निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी बहुत सुन्दर तथा सुख देने वाली मिलती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। इसके जीवन में ४२, ४८ तथा ५६वें वर्ष बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अवधि में यह विशेष मान-प्रतिष्ठा तथा धन अर्जित करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा भाग्यशाली होते हैं। वे इसके जीवनकाल में ही उच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं। इसकी परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२०५१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चपल, स्वयं को बुद्धिमान समझने वाला, पुष्ट शरीर का, लम्बे कद का, गौर वर्ण तथा गोल मुँह वाला होता है। यह प्रारब्धवादी होता है। इसके कार्य अचानक सिद्ध होते रहते हैं। अतः यह भाग्यवाद को ही सर्वोपरि मानने लगता है। यह घर से बाहर रहकर उच्च स्थिति को प्राप्त करता है तथा देशान्तर की यात्राएं करता रहता है। इसे राजकीय-सेवा भी प्राप्त होती है, परन्तु वह स्थायी नहीं रहती। यह स्वयं ही उसे त्याग देता है। २४ से २८ वर्ष की आयु तक राजकीय-सेवा करता है, फिर स्वतन्त्र रूप से कार्य आरम्भ करता है, परन्तु इसे लाभ राजकीय-कार्यों द्वारा ही होता है। ३६ वर्ष की आयु में कोई नवीन कार्य भी करता है। २१ वर्ष की आयु तक इसका विवाह हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी होनहार होते हैं। परमायु ६८-६९ वर्ष होती है।

(२०५२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बड़ा संयमी, सूझ-बूझ वाला, अपने व्यक्तित्व से दूसरों को प्रभावित करने वाला तथा अपने मन के अनुसार चलने वाला होता है। इसे शिक्षाक्षेत्र तथा वैभव की अधिक प्राप्ति होती है। यह अपने पराक्रम से नये-नये कार्यों को करता है तथा धनोपार्जन के अनेक स्रोतों का निर्माण कर लेता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। २२, ३२ तथा ४२वें वर्ष में बहुत उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा स्वयं भी धनोपार्जन करने वाली होती है। सन्तानें पुत्र तथा भाग्यवान होती हैं। ३१, ३८, ४५ तथा ५६वें वर्ष में शारीरिक कष्ट होता है। इसकी पत्नी का देहावसान इसके परलोक-गमन से ७, ८ अथवा १२ वर्ष पूर्व ही हो जाता है। जातक की परमायु ७८ वर्ष होती है।

भु० सं० ३०४८

(२०५३) - इस जन्मांग चक्र वाला जातक सुन्दर, सबको प्रभावित करने वाला, उदार, संयमी, कला तथा साहित्य का प्रेमी एवं अपने प्रभाव से उच्चपद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह उच्च-शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, परन्तु अत्यधिक धनोपार्जन करने में कुशल होता है तथा ऐश्वर्य शाली-जीवन व्यतीत करता है। इसे अपने माता-पिता से स्नेह, सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है। २१ वर्ष की आयु में ही ~~इसे~~ मनोनुकूल पत्नी भी प्राप्त हो जाती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय भी होता है। यह जातक बाल्यावस्था में अपनी माता तथा बन्धु-बान्धवों से अलग होकर कहीं अन्यत्र जाकर जीवन-यापन करता है तथा बड़े होकर वहीं अपना कार्य भी स्थापित कर लेता है। जीवन के ११, १३, २१, २५, २८, ३२ तथा ३८ वें वर्ष महत्वपूर्ण तथा परिवर्तन लाने वाले सिद्ध होते हैं। पुत्र सुन्दर तथा धनी होते हैं। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२०५४) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, योग्य, धनी, अपने धर्मों के लोगों की सहायता करने वाला तथा बाल्यावस्था से ही घर से दूर रहने वाला होता है। यह बड़ा बुद्धिमान तथा परिश्रमी होता है। ~~सब~~ लोग इसकी बात मानते हैं। परिस्थिति वशात् यह व्यापार से ही उन्नति करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्य-शालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही भाग्य में परिवर्तन आता है। इसे देशान्तर के आवागमन से लाभ होता है। इसकी आमदनी के स्रोत भी बाहर के ही होते हैं। ३६ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य करता है अथवा किसी के व्यवसाय में साझीदार बनता है। इसके लिए ४२, ४८, ५१, ५४ तथा ५६ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसे कभी बड़ा शारीरिक-कष्ट नहीं होता। पर्याप्त धन कमाता हुआ, सुयोग्य पुत्रों के साथ यह सुखी-जीवन व्यतीत करता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

कु० र०

(२०५५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धी-गंभीर, सद्गुण-सम्पन्न, विभिन्न विषयों का ज्ञाता, दार्शनिक तथा अपनी बुद्धि-विवेक पर पूरा विश्वास एवं भरोसा रखने वाला होता है। यह जिस काम में भी हाथ डालता है, उसी में सफलता प्राप्त करता है। यह कोई उच्च उपाधि प्राप्त नहीं कर पाता। शिक्षा साधारण ही रहती है, तथापि यह बड़ा ज्ञानी होता है तथा स्वाध्याय के बल पर उच्च कोटि का विद्वान् माना जाता है। यह अपने स्थान से बाहर, परदेस में रह कर सेवा कार्य (नौकरी) करता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। जीवन भर इसकी आय के स्रोत खुले रहते हैं तथा इसे विभिन्न कार्यों से पर्याप्त धन का लाभ होता रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है। पुत्र बुद्धिमान होते हुए भी चिन्ता देने वाले होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२०५६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, अपने पुरुषार्थ द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, बड़ा यशस्वी, चित्रकार, संगीतज्ञ अथवा कवि होता है। यह श्रेष्ठ व्यवस्थापक होता है। २०-२१ वर्ष की आयु से ही यह सेवा-कार्य में रत होकर धन कमाने लगता है। ४० वर्ष की आयु तक यह अपनी उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेता है। यह जीवन भर सुखी रहता है तथा इसे गूढ़ कार्यों से भी लाभ होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा अपनी योग्यता एवं शीलता से जातक को वशीभूत रखने वाली होती है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं। ४८ वर्ष की आयु में यह जातक अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लेता है। ५१ तथा ५६ वें वर्ष में कुछ शारीरिक कष्ट होता है, परन्तु उससे शीघ्र ही छुटकारा भी पा लेता है। पूर्णायु ७० अथवा ८१ वर्ष होती है।

(२०५७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी कला-मर्मज्ञ, उदार-हृदय, चाहे जिसकी बातों में आ जाने वाला, भावना:के वशीभूत होकर विवेक को भुला देने वाला, अत्यधिक भावुक, सहृदय, उदार तथा दूसरों के कारण अपनी हानि कर लेने वाला होता है। यह नित्य देश-विदेश की यात्रायें करता रहता है। अपने घर नियमित रूप से कुछ दिनों तक रहने का अवसर नहीं मिलता। मीनता परिश्रम करके ही यह आजीविका प्राप्ति कर पाता है। पुरुषार्थ ही इसका सहारा होता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होते हुए भी उच्छृंखल स्वभाव की होती है। वह जातक को अपने वशीभूत रखने में भी सफल हो जाती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा भाग्यशाली होते हैं। वे अपनी माता से अधिक प्रेम रखते हैं। यह जातक सामान्यत: सुखी-जीवन बिताते हुए ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०५८)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त सहृदय, सुन्दर वस्तुओं को पसंद तथा संगृहीत करने वाला, स्त्रियों के प्रति विशेष अनुरागी और उनके सान्निध्य में रहकर सुख प्राप्त करने वाला, सुन्दर भवन, क्रीड़ालय, दर्शनीय तथा रस-साहित्य का उपासक एवं धन की विशेष इच्छा रखने वाला होता है। यह स्वभाव से अपव्ययी भी होता है, परन्तु साथ ही अधिकाधिक धन कमाने के लिए प्रयत्नशील भी रहता है। यह विभिन्न स्रोतों से धन पैदा करता है। देशान्तर में आवागमन भी लगा रहता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पूर्ण सुख देने वाली एवं सास-श्वसुर को अत्यधिक प्रिय होती है। पत्नी की बुद्धिमत्ता एवं कार्य-क्षमता के आधार पर किसी की भागीदारी में व्यवसाय करके बहुत आर्थिक-लाभ होता है। इसकी सन्तानें सुन्दर तथा भाग्यशाली होती हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२०५९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी आदर्श प्रधान, रचनात्मक-कार्य करने के लिए सदैव प्रस्तुत तथा अपने व्यवहार से दूसरों को मित्र बना लेने की कला में दक्ष होता है। यह गौरवर्ण, मध्यम कद का, बड़ा विद्वान्, कला-प्रेमी तथा कई विषयों का ज्ञाता होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला, सुख देने वाली तथा अपने व्यक्तित्व से जातक को प्रभावित बनाये रखने वाली होती है। वह जातक के लिए आर्थिक रूप से भी भाग्यशालिनी सिद्ध होती है। २८ वर्ष की आयु में जातक सेवा-कार्य में नियुक्त होता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर परदेश में जाकर रहता है और वहीं अपना मकान भी बना लेता है। इसके जीवन में २६, २९, ३२, ४१, ४८ तथा ५६ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसके पुत्र सुयोग्य होते हैं। उनसे इसे सुख मिलता है। इसकी परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२०६०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य दृढ़निश्चयी, बलवान, सुन्दर, अपनी अवहेलना सहन न कर पाने वाला, अस्थिर-प्रकृति का तथा दूसरों पर अपने मान-सम्मान, प्रभाव ऐश्वर्य आदि का आतंक जमाने वाला होता है। इसकी ओर अनेक स्त्रियाँ सहज रूप से आकर्षित होती हैं। यह अपने साहस तथा पराक्रम से धनोपार्जन करता है तथा राजकीय-सेवा में बहुत उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। यह बड़ा साहसी तथा शत्रुओं पर हमेशा भारी पड़ने वाला होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आकर्षण एवं प्रेरणा का केन्द्र बनती है। यह अपने जीवन-काल में बहुत धन कमाता है तथा अपने माता-पिता को सुख देता है। इसकी सन्तानें भी इसे सुख देती हैं। जीवन के ४१, ४७, ५६ तथा ६० वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२०६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बलवान, क्रोधी, चतुर, पुष्ट शरीर का, कला-सम्पन्न तथा ज्ञानी होता है। इसकी विद्यालयीन शिक्षा सामान्य होती है, परन्तु अपने स्वानुभव एवं स्वाध्याय के बल पर यह अनेक कलाओं तथा विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करता है। यह किसी राजकीय अथवा व्यावसायिक-संस्थान की सेवा में संलग्न रह कर धनोपार्जन करता है। यह पुरुषार्थी, सात्विक तथा परिश्रम जनित कार्यों द्वारा धन प्राप्त करता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कलाओं में रुचि रखने वाली, मनस्वी तथा मनोनुकूल मिलती है, परन्तु वह जीवन भर साथ नहीं दे पाती। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। सन्तान या तो होती ही नहीं है, अथवा नष्ट हो जाती है, अतः उसके सम्बन्ध में चिन्ता रहती है। ५६ वीं वर्ष में अरिष्ट की सम्भावना रहती है। पूर्णायु ७६ वर्ष के लगभग होती है।

(२०६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी ऊपर से देखने में कठोर लगता है, परन्तु मन से बड़ा कोमल होता है। इसकी प्रकृति स्वच्छन्द तथा अधिकार लिए रहती है। कद मध्यम, शरीर सुगठित, उन्नत ललाट तथा व्यक्तित्व आकर्षक होता है। यह सहज विश्वासी तथा अपने स्वार्थ-साधन में भी चतुर होता है। जीवन के २१, २६, २८, ३४ तथा ४२ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ४२ तथा ५८ वें वर्ष भी श्रेष्ठ रहते हैं। विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आकर्षक तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। यह जातक मुख्य रूप से व्यवसाय करता है। यदि राजकीय सेवा करे तो भी मन व्यापार में ही लगा रहता है। इसके पुत्र सुयोग्य होते हैं। इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। बाहर रह कर भी यह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ४६ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु लगभग ७५ वर्ष होती है।

भु० सं० १११८

कु० र०

(२०६३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, उन्नत ललाट, गोल मुँह, गौरवर्ण तथा धीर-गंभीर प्रकृति का होता है। यह पूर्ण विद्वान् होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर यह अनेक विषयों का जानकार बन जाता है। इसके अध्ययन-काल में कोई बाधा नहीं आती। २०-२१ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। मित्र-चित्त से जीवन की व्यावहारिक-भूमिका पर आगे बढ़ता है। यह दानी, परोपकारी, सहानुभूतिपूर्ण तथा सम्मान-प्राप्ति की इच्छा रखने वाला होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा अपने परिश्रम एवं योग्यता के बल पर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे धन का लाभ अनेक प्रकार से होता है। २६, २८, ३५, ४० तथा ४५ वर्ष की आयु में सम्पत्ति की अधिक वृद्धि होती है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु ६० वर्ष होती है।

(२०६४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, विद्वान्, प्रियदर्शी, मध्यम कद तथा कुछ दबे हुए रंग का होता है। यह बिना किसी विघ्न के उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशिक्षिता होती है। इसी आयु से यह जातक धनोपार्जन भी करने लगता है। सरकारी-सेवा अथवा किसी अन्य कार्य से यह आजीविका चलाता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। ३५ वर्ष की आयु में यह उच्च-स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसी आयु में यह अपना कोई निजी व्यवसाय भी आरम्भ करता है। ४२, ४३, ४६, ५०, ५५ तथा ५८ के वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। पत्नी के सक्रिय-सहयोग से धन की वृद्धि होती है। आकस्मिक-लाभ भी होते हैं। पुत्र-पुत्री सौभाग्यशाली होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२०६५)- इस कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, पतली देह, श्यामवर्ण का, धैर्यवान, नीतिज्ञ तथा समयानुसार चलने वाला होता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा परिश्रम से लाभ अर्जित करता है। यह माता-पिता से द्वेष रखता है और इसे उनका अधिक सुख नहीं मिलता। शिक्षा प्राप्त करके यह अनेक विषयों का पंडित तथा तकनीकी-कार्य में दक्ष बनता है। इसे परदेश में कार्य करने का अवसर भी मिलता है। इसकी व्यावसायिक-बुद्धि इसे लाभ पहुँचाती है। २२, २५ तथा २८वें वर्ष शुभ होते हैं। २८ वर्ष की आयु में ही विवाह होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानों में पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। ३२, ४०, ४६, ४८ तथा ५५वें वर्ष में धन तथा प्रतिष्ठा की अत्यधिक वृद्धि होती है। जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२०६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, मध्यम कद तथा पतले शरीर का, कुछ श्याम वर्ण, तेजस्वी तथा माता-पिता का यथेष्ट सुख पाने वाला होता है परन्तु यह स्वयं माता-पिता को सुख नहीं दे पाता। इसकी शिक्षा पूर्ण होती है। यह कला तथा तकनीकी-ज्ञान - दोनों का पंडित होता है। वाद्य-संगीत का प्रेमी होने के साथ ही यह कला-कारों का पोषक भी होता है। इसे २४-२५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा प्राप्त हो जाती है तथा उसके द्वारा यह प्रचुर मात्रा में धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सरल स्वभाव की होती है। वह जातक को सुख देती है। प्रारम्भ में कन्याओं तथा बाद में पुत्र का जन्म होता है। ३८ वर्ष की आयु में जातक विशेष धनी होजाता है। ५१ वर्ष में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७२ वर्ष होती है।

(२०६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे, पतले शरीर का; श्याम वर्ण, कार्यकुशल, कुलीन, धन-सम्पन्न परिवार में जन्म लेने वाला, बाल्यावस्था से ही सुख भोगने वाला तथा बड़े होकर अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने वाला होता है। यह अपने पराक्रम से धन की वृद्धि करता है। इसकी शिक्षा सामान्य होती है तथा अपनी शिक्षा के अनुरूप ही यह राजकीय-सेवा भी प्राप्त करता है, परन्तु ३० वर्ष की आयु में नौकरी करते हुए ही यह अपना कोई स्वतन्त्र व्यवसाय भी स्थापित करता है और उसके द्वारा ३५ वर्ष की आयु तक बहुत धन कमा लेता है। इसका भाग्योदय किसी पर-स्त्री के साथ अथवा सहयोग से होता है। राज्य में यह रक्षा संबंधी कार्यों में नियुक्त होता है। ४०, ४२, ४८ तथा ५१ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल होती है। संतान के लिए बहुत कष्ट उठाता है। परमायु ६० वर्ष होती है।

(२०६८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, विज्ञान एवं तकनीक संबंधी कार्यों में कुशल तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा राजकीय-सेवा में उच्च पद पर प्रति-ष्ठित होने वाला होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में ही नौकरी तथा पारिवारिक-दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह करने वाली पत्नी प्राप्त कर लेता है। संतान हेतु औषधि के चिकित्सा लेता है। बड़ी आयु में सन्तान का लाभ भी होता है। ३५ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ करके राज्य-सम्पर्क द्वारा प्रचुर सम्पत्ति एकत्र कर लेता है। पत्नी भी भाग्यशालिनी होती है और वह पति के साथ प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। सन्तान होने पर भी उसके सुख प्राप्त नहीं होता। ४८, ४९ तथा ५६ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ७२ वर्ष होती है, परन्तु पाइल्स से होना सम्भावित है।

(२०६९) इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले वर्ण का, इकहरे शरीर का, उग्रस्वभावी तथा अत्यन्त चतुर होता है। यह बाहर से विशाल-हृदय का प्रतीत होता है, परन्तु यथार्थ में स्वार्थ-साधक होता है। दूसरे का काम बिगाड़कर भी अपना मतलब सिद्ध करने में इसे कोई संकोच नहीं होता। यह प्रतिशोधात्मक प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है तथा मित्र बन कर बदला लेने में भी पटु होता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। कुछ समय तक यह राज्य की सेवा में भी रहता है और वहाँ से पर्याप्त धन कमाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। २६, ३२, ४१, ४४, ५२ तथा ५८वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। पुत्र-पुत्री सौभाग्यशाली भी होते हैं। ४३ वर्ष की आयु में आकस्मिक-चोट लगती है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२०७०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बे शरीर का, विनोदी स्वभाव का, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न तथा कर्तव्य-पालक होता है। यह सबको प्रसन्न रखता है। अपनी उदारता के कारण यह कष्ट भी उठाता है। अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से कमाये हुए धन को यह व्यर्थ ही खर्च कर डालता है। दूसरों के कारण इसे सदैव ही हानि उठानी पड़ती है। इसकी शिक्षा सामान्य होती है। यह व्यवसाय द्वारा प्रचुर धन कमाता है। इसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा कोई-न-कोई बीमारी बनी ही रहती है। ३१ वर्ष की आयु में इसे चोट लगने की भी सम्भावना रहती है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी वाचाल तथा अपने आचरण से सब को प्रसन्न रखने वाली होती है, पर उसके कारण जातक दुःखी भी रहता है। इस जातक की पुत्र-संतान भी कष्टदेती है। परमायु ६० वर्ष होती है।

(२०८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, समय की गति को पहिचानने वाला, नीतिज्ञ तथा अपने वाक्चातुर्य द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित एवं प्रसन्न रखने की चेष्टा वाला होता है। यह अपनी उन्नति के लिए बहुत परिश्रम करता है। २३ वर्ष की आयु में यह किसी स्त्री के प्रेम-जाल में पड़कर उसके सभी कार्यों का दायित्व वहन करता है। वह स्त्री सुन्दरी तथा मनस्वी होती है। वह किसी दूसरी स्थान की रहने वाली होती है तथा जातक के भाग्योदय का कारण बनती है। लगभग इसी आयु में जातक का विवाह भी हो जाता है। पत्नी भी बहुत सुन्दरी तथा भाग्यशालिनी होती है। पत्नी के कारण जातक को सुख भी मिलता है। यह जातक पैतृक-व्यवसाय को उन्नत बनाता है तथा चल-अचल सम्पत्ति का स्वामी होता है। जीवन के ३०, ३३, ३८, ४० एवं ४६ वें वर्ष प्रभावक सिद्ध होते हैं। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ६२ वर्ष के लगभग ही रहती है।

(२०८२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वभाव से, क्रूर, विद्वान् होते हुए भी निम्न कोटि के कार्य करने वाला, भोग-विलास में अत्यधिक रुचि रखने वाला, हृष्ट-पुष्ट, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व वाला तथा अपने बन्धु-बान्धव एवं मित्रों के बीच अपनी स्थिति को उन्नत बनाये रखने वाला होता है। यह उदार दिखाई देने पर भी अनुदारता का व्यवहार करता है। धन कमाने पर बहुत ध्यान देता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, धन की विशेष तृष्णा वाली तथा पति को वश में रखने वाली होती है। यह पैतृक-व्यवसाय में ही रुचि लेकर उसे आगे बढ़ाता है। इसके पुत्र-पुत्री सुयोग्य होते हैं, परन्तु पहली सन्तान विवाह के कई वर्ष बाद ही होती है। यह अनुचित कार्यों द्वारा भी अपने धन की वृद्धि करता है। परमायु ६० वर्ष के लगभग ही होती है।

(2063)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पतले-दुबले शरीर का, परन्तु सुन्दर; मध्यम कद का, शुद्ध गौर वर्ण, मीठी वाणी बोलने वाला तथा संगीत-प्रिय होता है। यह अन्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होता है, फिर भी इसके महत्व को सब लोग स्वीकार करते हैं। यह राजकीय-सेवा में किसी अनुशासनात्मक पद पर कार्य करने वाला, उच्च अधिकारी होता है। 35 वर्ष की आयु में यह विशेष सम्मान जनक स्थिति प्राप्त कर लेता है। यह निरन्तर उन्नति करता रहता है। राजकीय-सेवा के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। यह किसी व्यवसाय द्वारा भी धन कमाता है। 40, 45, 48, 50 तथा 56वें वर्ष में यह अधिक महत्वपूर्ण कार्यों को करता है। विवाह 18-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। पूर्णायु 75 वर्ष होती है।

(2064)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति दुर्बल शरीर, मध्यम कद, गोल मुँह, तीक्ष्ण दृष्टि वाला, उग्र स्वभाव, बुद्धिमान तथा नीतिज्ञ होता है। इसकी वाणी अनाकर्षक होती है। फिर भी यह अन्य लोगों को अपनी ओर प्रभावित करता है। इसकी शिक्षा अपूर्ण रहती है, परन्तु यह राजकीय-सेवा में नियुक्ति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह 24-26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कलाकार तथा स्वयं भी धनोपार्जन करने वाली होती है। यह अपनी पत्नी के आकर्षण में सदैव बँधा रहता है और उसकी राय के बिना कोई काम नहीं करता। इसके पुत्र, पुत्री भी सुन्दर, स्वस्थ तथा सौभाग्यशाली होते हैं। इसके जीवन के 25, 28, 35, 38, 43, 45, 48, 51 तथा 61वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। संतानें होनहार तथा सुख देने वाली होती हैं। परमायु 66 वर्ष होती है।

(२०७५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर वाला, पैतृक-व्यवसाय की उन्नति करने वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह स्वभाव से उग्र होते हुए भी बहुत समझदार तथा सहृदय होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार तथा अपने कुल में सम्माननीय होती है, परन्तु जातक को अधिक दिनों तक उसका सुख प्राप्त नहीं होता। इसका व्यवसाय विभिन्न स्रोतों में फैला रहता है, अतः इसे नित्य दौड़-धूप करनी पड़ती है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नति कर लेता है। परदेश से इसे बहुत धन प्राप्त होता है। इसे बड़ी आयु में कन्याएँ प्राप्त होती हैं। यदि वे भी न हों तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि सन्तान का योग अच्छा नहीं होता। शत्रु इसकी उन्नति में बाधा डालते हैं; परन्तु यह उन्हें पराजित कर देता है। पूर्णायु ६० वर्ष होती है।

(२०७६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, कला तथा संगीत का प्रेमी, उग्र स्वभाव का एवं मातृ-भक्त होता है। यह पिता से वैमनस्य रखता है और उससे अलग रहता है। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह २० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। धन-प्राप्ति में इसे बहुत अड़चनें आती हैं। यह धन-लाभ हेतु बाहर भी जाता है, परन्तु धन की अधिक प्राप्ति नहीं होती। राज्य में कुछ समय तक यह सेवा-कार्य भी करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल होती है। यह पत्नी के अनुकूल होता हुआ भी पर-स्त्री-प्रेमी होता है। इसे सन्तान-कष्ट भी होता है। प्रथम तो गर्भ रहता ही नहीं। यदि रहे भी तो गर्भ नष्ट हो जाता है, फिर भी सन्तान जीवित रहे तो वह दुःख देती है और इसके धन का नाश करती है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२०७७) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर, प्रियदर्शी, मध्यम कद वाला, गौर वर्ण तथा कुछ भारी शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह साहित्य तथा संगीत का प्रेमी होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी किसी धनी पिता की पुत्री होती है, अतः जातक को ससुराल से आर्थिक-लाभ होता रहता है। पत्नी के कारण जातक के परिवार का सम्मान बढ़ता है तथा आर्थिक-स्थिति भी सुदृढ़ होती है। यह जातक अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते हुए भी अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसे अपने माता-पिता से अधिक सुख प्राप्त नहीं होता। २६ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन आरंभ करता है। इसका अपना व्यवसाय होता है। २७ वर्ष की आयु में यह परदेश में जाकर अपना कार्य जमाता है और वहीं किसी अन्य का काम भी करता है। इसकी सन्तान सुयोग्य तथा सुख देने वाली होती है। जीवन के २५, २८, ३३, ३८, ४१, ४५, ४९ तथा ५६ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसकी परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२०७८) इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौर वर्ण, सुन्दर, अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभा-वित करने वाला, बुद्धिमान तथा स्व-कार्यदक्ष होता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा सद्व्यवहार से सर्वत्र सफलताएँ प्राप्त करके ख्याति अर्जित करता रहता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा जीवन को सफल बनाने वाली मिलती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय भी होता है। यह स्वयं के तथा अपनी पत्नी के पुरुषार्थ एवं परिश्रम से बहुत धन कमाता है। यह धर्मात्मा, दानी तथा ज्ञानी होता है। दूसरों के दुःख में दुःखी होता तथा यथासाध्य उनकी सहायता करने का प्रयत्न करता है। इसे स्वतंत्र व्यवसाय द्वारा धन लाभ होता है। इसकी आय के स्रोत भी अनेक होते हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह उच्चतम पद प्राप्त करता है। पुत्र सौभाग्यशाली होते हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२०७९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, विद्याध्ययन एवं ज्ञान-प्राप्ति हेतु सदैव तत्पर रहने वाला, अपनी विद्या के बल पर ही पुरुषार्थ को सफल करने वाला, उच्चशिक्षित तथा पुरुषार्थ द्वारा बहुत धन कमाने वाला होता है। इसे पैतृक-धन का लाभ भी होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, अनेक कलाओं में दक्ष, अनेक विषयों की जानकार तथा लोक-व्यवहार में पटु होती है। यह जातक २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है तथा पदोन्नतियाँ प्राप्त करता हुआ ४५-४६ वर्ष की आयु में अत्यन्त ऊँचे पद पर जा पहुँचता है। ३० वर्ष की आयु में इसे कुछ कष्ट होता है, परन्तु दो वर्ष बाद उससे मुक्ति पा लेता है। इसे धर्म में भी बहुत रुचि हो जाती है। इसके पुत्र सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं। ५६ वर्ष की आयु में पुनः कुछ कष्ट होता है। परमायु ६८ वर्ष।

(२०८०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विशाल नेत्र, उन्नत ललाट, सुन्दर नासिका वाला, उदार-हृदय, सहानुभूति पूर्ण स्वभाव का, अच्छे कामों के लिए सदैव तत्पर रहने वाला, माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला, उच्च शिक्षाप्राप्त तथा २३-२४ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाने वाला होता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। देश-विदेश की यात्राएँ भी करता है। अपने व्यवहार से यह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों तथा उच्च अधिकारियों को प्रसन्न तथा अपना अनुगत बनाये रखता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनुगता तथा उत्साह बढ़ाने वाली होती है। इसे सौभाग्यशाली पुत्रों की प्राप्ति होती है। इसे धन की इच्छाएँ बहुत होती हैं। सुखी तथा धनी जीवन बिताता हुआ यह ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, इकहरे तथा दृढ़ शरीर का एवं अपने कार्य में दक्ष होता है। यह अपने साहस तथा पुरुषार्थ के बल पर अपने व्यवसाय को जमाने वाला तथा प्रचुर धन कमाने वाला होता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह परदेश में जाकर रहने लगता है तथा वहीं पर उन्नति करता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह ध्यानी तथा उदार स्वभाव का होता है। इसकी उदारता से परिवारीजन लाभान्वित होते हैं। इसे माता-पिता का सुख प्राप्त होता है तथा इसे पैतृक-सम्पत्ति की भी उपलब्धि होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा विद्वान कन्या के साथ होता है। इसकी पत्नी बड़ी समझदार तथा सुख देने वाली होती है। इसे कई सुन्दर पुत्र प्राप्त होते हैं, वे सभी माता के अनुगत रहकर धन-धान्य की वृद्धि करते हैं। इस जातक के जीवन में कभी कोई दुःख नहीं होता। यह ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, ऊँचे कद का, प्रियदर्शी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। उन्नत ललाट, गोल चेहरा, विशाल नेत्र तथा गौरवर्ण वाला यह जातक २५ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धन कमाना आरम्भ कर देता है तथा निरन्तर उच्चपद प्राप्त करता चला जाता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी इकहरे शरीर की, सुन्दरी तथा जातक की अनुगता होती है। राजकीय-सेवा के अतिरिक्त अन्य कार्यों से भी जातक को धन का लाभ होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। वे जातक के जीवनकाल में ही बहुत उन्नति कर लेते हैं। ५१ अथवा ५२ वर्ष की आयु में इस जातक को पत्नी-वियोग होना सम्भव है। पत्नी की मृत्यु के १५ वर्ष बाद तक जातक और जीवित रहता है। परमायु ६७ वर्ष के लगभग होती है।

भृ० सं० १२५४

कु० २०

(२०८३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौर वर्ण, इकहरे शरीर वाला, सुन्दर तथा फुर्तीला होता है। यह अपने साहस तथा अध्यवसाय के बलपर जीवन में बहुत उन्नति करता है। इसके अनेक कार्य होते हैं। यह अपने व्यवसाय के अतिरिक्त सहृदयता आदि गुणों के कारण भी लोक-प्रसिद्ध होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती तथा अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाली होती है। जातक सभी कार्य उसके परामर्श से ही करता है। यह जातक २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से भी संलग्न हो सकता है। साथ ही अन्य कार्यों द्वारा भी धनोपार्जन करता है। इसके जीवन में २८, ३५, ४२, ४६ तथा ५६ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ५२ वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग की सम्भावना रहती है। ६१ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। पुत्र-पुत्री सुयोग्य होते हैं। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२०८४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौर वर्ण, सुन्दर, उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, कृष्ण वर्ण केश तथा लम्बे मुख वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होता है तथा इसका विवाह भी इसी वर्ष होना निश्चित है। पत्नी मनोनुकूल तथा सुन्दरी मिलती है। यह अपने अथवा अपने पैतृक व्यवसाय का स्वामी भी बनता है। किसी स्त्री के सहयोग से इसे प्रचुर धन प्राप्त होता है। २४ से ५५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा होनहार होते हैं और वे इसके जीवन-काल में ही उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। ३५ तथा ४६ वर्ष की आयु में इसे अचल-सम्पत्ति प्राप्त होती है। धन भी खूब कमाता है। ४६ वर्ष की आयु में इसके विधुर अर्थात् पत्नी से वियोग होने की सम्भावना है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(२०८५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद का, गौरवर्ण, सुन्दर, उग्रस्वभाव का, साहसी अत्यन्त उत्साही तथा किसी से न डरने वाला होता है। यह अपने कार्यों को बड़े धीरज तथा लगन से साथ करता है। बाल्यावस्था से ही इसके पास धन का कोई अभाव नहीं रहता। सम्पन्न-परिवार में जन्म लेने के कारण यह आरंभ से ही सुख भोगता है। २३ वर्ष की आयु से यह राज्य की सेवा अथवा अन्य कार्य द्वारा धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। यह बहुत विशाल हृदय तथा उदार स्वभाव का भी होता है तथा अपना काम बिगाड़ कर भी दूसरों की सहायता करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी योग्य, बुद्धिमती, सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तानें सुन्दर तथा भाग्यशाली होती हैं। ५२ वर्ष की आयु में पत्नी की मृत्यु सम्भव है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(२०८६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उन्नतललाट, गौरवर्ण, बुद्धिमती तथा माता-पिता का पूरा-पूरा सुख पाने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर २५ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी इकहरे शरीर वाली तथा सुन्दरी होती है। यह बहुत समझदार तथा सभी कार्यों में पूर्ण सहयोग देने वाली होती है। सन्तानें भी सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। यह जातक निरन्तर उन्नति करता हुआ ४५ वर्ष की आयु तक बहुत उन्नति कर लेता है। ३६ वर्ष की आयु में यह अचल-सम्पत्ति क्रय करता है, तत्पश्चात् भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सुखों को प्राप्त करता हुआ ऐश्वर्यशाली-जीवन बिताता है। ५६ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। ५१ वर्ष की आयु विधुर (पत्नी-वियोग) होना सम्भव है। परमायु ७१ वर्ष की होती है।

(२०८७)— इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, दृढ़ शरीर वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा बुद्धिमान होता है। सम्पन्न-परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। इसे उच्च शिक्षा मिलती है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा २८ वर्ष की आयु में ही उन्नति करके उच्चपद प्राप्त कर लेता है। इसके सद्गुणों, योग्यता एवं सद्व्यवहार की सभी लोग प्रशंसा करते हैं। ३६ वर्ष की आयु में यह विदेश-यात्रा पर जाता है। राजकीय-कार्यों से इसको बहुत समय तक विदेश में रहना पड़ता है। पैतृक-सम्पत्ति का इसे लाभ होता है तथा अपने उद्योग से भी यह प्रचुर सम्पत्ति का अर्जन करता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, भाग्यशालिनी तथा स्वयं भी राजकीय-सेवा में संलग्न होती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। ५६ वर्ष की आयु में बहुत सुख मिलता है। परमायु ६८ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(२०८८)— इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बा, गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही कष्ट पाता है। कभी माता से अलग रहना पड़ता है तो कभी पिता से। माता से दूर रहते हुए ही इसका पालन-पोषण होता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी व्यवसाय को आरंभ करता है तथा उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। बहुत धन कमाते हुए भी इसे धन की चिन्ता रहती है, क्योंकि इसका अधिकांश व्यर्थ ही खर्च हो जाता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर की तथा मनोनुकूल होती है। यह जातक पर-स्त्री से भी रत रहता है। इसे संतान का कष्ट होता है तथा ५१ वर्ष की आयु में विधुर हो जाने की संभावना भी रहती है। संतान-सुख से वंचित यह जातक लगभग ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०८९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सुशिक्षित, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला एवं प्रत्येक व्यक्ति पर अपने पाण्डित्य की छाप छोड़ने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय सेवा में संलग्न हो जाता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ४० वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह भी २५-२६ वर्ष की आयु में ही हो जाता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुयोग्य तथा सुख देने वाली मिलती है। इसे सन्तान का कष्ट होता है। सन्तान या तो होती ही नहीं, अथवा उससे सुख प्राप्त नहीं होता। यह जातक पैतृक-सम्पत्ति तथा किसी अन्य व्यवसाय से भी धन-लाभ प्राप्त करता है। इसकी पत्नी को बहुत कष्ट भोगना पड़ता है तथा उसकी मृत्यु भी पति से पहले ही हो जाती है। आर्थिक-दृष्टि से सुखी जीवन बिताता हुआ, परन्तु मानसिक रूप से दुःखी यह जातक ६९-७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०९०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बहुत साहसी, निर्भय, वीर, हृदय का उदार, दुःखियों की सहायता करने वाला तथा उच्च शिक्षित होने के कारण अपने पाण्डित्य द्वारा सबको प्रभावित करने वाला होता है। यह लम्बे कद का, स्वस्थ, प्रियदर्शी तथा अपने प्रभाव से सबको चमत्कृत करने वाला, लोकपूज्य एवं यशस्वी होता है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में संलग्न हो जाता है तथा अपने अध्यवसाय द्वारा निरन्तर उन्नति करता हुआ ४५ वर्ष की आयु में उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। पत्नी भी पति के साथ किसी कार्य में सहयोग कर, अर्थोपार्जन करती है। इसे सन्तान का कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताते हुए यह ६९ अथवा ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०६१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद, पुष्ट शरीर का तथा दूरदर्शी होता है। यह अपने व्यक्तित्व तथा पुरुषार्थ के बल पर सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। २३ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह देशान्तर में जाकर कार्य-संलग्न होता है तथा वहीं पर व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। २६ वर्ष की आयु से ४५ वर्ष की आयु के बीच यह पर्याप्त धन कमाकर महाधनी हो जाता है। इसका विवाह २६-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु वह जातक के प्रतिकूल ही चलती है तथा इसके धन को भी व्यर्थ नष्ट करती रहती है। सन्तानें भी अपनी माता के अनुकूल तथा पिता के प्रतिकूल चलने वाली होती हैं, अतः जातक का दाम्पत्य एवं पारिवारिक-जीवन सुखमय नहीं रहता। इतने पर भी जातक धन कमाने में निरन्तर संलग्न बना रहता है तथा ६१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बे कद तथा पतले शरीर वाला, गोल मुँह का, बुद्धिमान, उच्चशिक्षा प्राप्त, संगीत आदि कलाओं का प्रेमी तथा ज्ञाता एवं अपने व्यक्तित्व तथा गुणों के प्रभाव से स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा अत्यधिक धनोपार्जन करने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में ही किसी शिक्षा-संस्थान अथवा प्रशासनिक-पद पर नियुक्त होकर आजीविका अर्जित करने लगता है। यह लिखा-पढ़ी का तथा व्यवस्था संबंधी कार्य भी करता है। ४० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उन्नति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु प्रतिकूल स्वभाव की होने के कारण पति को कष्टदायक बनी रहती है। वह अहंकारिणी भी होती है। पुत्र उसी के अनुगत रहते हैं। वे भी जातक को सुख नहीं देते। यह जातक ६१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२०९३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति ऊँचे कद का, गौरवर्ण, कुछ भारी शरीर वाला, गोल मुँह का, संगीत-वादन - काव्य आदि कलाओं में निपुण अथवा इनका प्रेमी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने गुणों के प्रकाश को चारों ओर फैलाता है। इसका विकास 22-23 वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल प्राप्त होती है। २८ वर्ष की आयु तक दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। अनेक पुत्र-पुत्री भी होते हैं। २८ वर्ष की आयु के बाद पत्नी से कष्ट मिलता है तथा 40-41 वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग हो जाता है। इसे अपने पुत्रों से भी सुख नहीं मिल-ता, वे अपनी माँ को सुख देते हैं। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय होता है तथा २८ वर्ष की आयु तक यह प्रचुर धन कमा लेता है। राजकीय - सेवा, व्यवसाय तथा अन्य उपायों से भी यह धन कमाता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२०९४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बे कद का, स्वस्थ शरीर वाला, काव्य-साहित्य का प्रेमी तथा अन्य अनेक विषयों में रुचि रखने वाला होता है। इसे अपने माता-पिता से विशेष सुख नहीं मिलता, तथापि यह अपने भाग्य से एवं परिश्रम से सुखी होता है। इसे निजी व्यवसाय, साझेदारी तथा आकस्मिक रूप से धन का लाभ होता है। देशान्तर में काफी समय तक रहकर भी यह धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा चेतन्य व्यक्तित्व वाली होती है। इस जातक को पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है, परन्तु पत्नी से अधिक सुख नहीं मिलता, क्योंकि वह अपनी इच्छानुसार चलने वाली होती है। इस जातक को धन की बड़ी आवश्यकता रहती है तथा यह धन संचित भी रखता है। जीवन के २७, २९, ३५, ४६ तथा ५६ वें वर्ष अशुभ सिद्ध होते हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२०९५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर तथा उग्र स्वभाव का होता है। इसे अकारण ही क्रोध आता रहता है, तथापि अपनी ग़लती का अनुभव करके स्वयं ही शान्त भी हो जाता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा जिस विषय से यह आजीविकोपार्जन करता है, उसी का विशेष अध्ययन करता है। अन्य विषयों में अधिक रुचि नहीं लेता। यह २३ वर्ष की आयु में ही सेवा-कार्य में संलग्न हो जाता है तथा २८ वर्ष की आयु में प्रोन्नति पाकर निरन्तर प्रगति करता चला जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी नृत्य-संगीत में रुचि रखने वाली, सुन्दर, सामाजिक-क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली तथा स्वयं भी धनोपार्जन करने वाली होती है। इसे सन्तान का कष्ट होता है। धन बहुत होता है। जीवन के ४०, ४२, ४८, ५१ तथा ६१ वें वर्ष इसके महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२०९६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, पतले शरीर का, तीक्ष्ण दृष्टि वाला, उग्र स्वभाव का तथा सदैव जागरूक बना रहने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करता है तथा अध्ययन-काल में ही अनेक मित्रों से सम्बन्ध भी स्थापित कर लेता है। २६-२७ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होती है। इस जातक को अपनी पत्नी के कारण भी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यह २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा आदि में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। २८, ३२, ३८, ४१ तथा ४५ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। ५८ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। इसे सन्तान की ओर से कष्ट होता है। ६१ वर्ष की आयु में इसे परदेश में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पत्नी भी बहुत यश अर्जित करती है। परमायु ७६ अथवा ८८ वर्ष होती है।

(२०९७)- इस जन्मांग चक्र के जातक मनुष्य सुन्दर, दृढ़ शरीर का, उग्र स्वभाव का तथा शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाली प्रकृति का होता है। यह सब को अपने अधीन तथा अनुकूल रखकर चलाना चाहता है। इसे तकनीकी विषयों का विशिष्ट ज्ञान होता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। यह पत्नी से बहुत प्रेम रखता है तथा उसके अनुकूल ही चलता है। स्वयं राजकीय-सेवा में संलग्न होता है तथा पदोन्नति भी प्राप्त करता है, तथापि सदैव चिंतित भी बना रहता है, क्योंकि अपने पुरुषार्थ के अनुकूल कुछ प्राप्त नहीं कर पाता। इसे धन का अभाव नहीं रहता। जीवन के ३२, ३८, ४२ तथा ४७ वें वर्ष बहुत अच्छे रहते हैं। इसकी संतानें बुद्धिमान तथा विद्वान होती हैं। पुत्रों से सुख भी मिलता है। मुकदमा, लोहा तथा भूमि के कारोबार द्वारा इसे लाभ होता है। परमायु ७६ अथवा ८८ वर्ष होती है।

(२०९८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गम्भीर, विद्वान, साहित्य तथा कलाओं का प्रेमी एवं अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है तथा अपना जीवन एक निस्पृह साधु जैसा बिताता है। इसे धन-सम्पत्ति अथवा सम्बन्धियों से कोई मोह नहीं होता। यह गृहस्थी का सम्पूर्ण दायित्व अपनी पत्नी के ऊपर छोड़ देता है। वह कुशलता पूर्वक घर का संचालन करता है। यह जातक २३ वर्ष की आयु तक अपने माता-पिता के अधीन रहता है, तदुपरान्त विवाह हो जाने पर अपनी पत्नी के अधीन हो जाता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा तथा आकस्मिक-लाभ के रूप में धनोपार्जित करता है। इसके पुत्र तेजस्वी तथा धनी होते हैं। जीवन के २७, २९, ३५, ३९ तथा ४६ वें वर्ष बहुत लाभप्रद रहते हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है। इसके बाद भी बचा रहे तो ५ वर्ष और जीता है।

(२०९९) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी दुःसाहसी, मध्यम कदवाला तथा बुद्धिमान होता है। यह साहित्य तथा शास्त्रों का प्रेमी होता, अपने घर से बाहर सम्मान प्राप्त करने वाला, विनम्र स्वभाव के कारण लोक-प्रिय, तथापि कुछ उग्र प्रकृति का भी होता है, जिसके कारण यह कभी-कभी अपनी बात दूसरों को ठीक से नहीं समझा पाता, फलस्वरूप लोग इसकी सदाशयता पर संदेह करने लगते हैं। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में सुन्दरी, मधुर भाषिणी तथा सुशिक्षिता कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर उच्चपद प्राप्त करता है तथा 28 वर्ष की आयु से निरन्तर पदोन्नतियाँ भी प्राप्त करता चला जाता है। इसे छोटे-स्तर के लोगों की संगति सुख तथा लाभ देती है। कुलीन स्त्रियों से भी इसे लाभ होता है। सन्तान से सुख मिलता है। परमायु 73 वर्ष होती है।

(२१००) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गम्भीर प्रकृति का, बाहर से कुछ और दिखाई देने वाला, परन्तु यथार्थ में दूसरे ही प्रकार के व्यक्तित्व वाला होता है। यह धर्म के प्रति विशेष आस्थावान होता है। अच्छे कार्यों को करने में रुचि रखता है। तीर्थाटन-प्रेमी भी होता है। व्यवसाय तथा परदेश की यात्राओं से इसे लाभ होता है। विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। वह घर-गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करती तथा पति को सफलता प्रदान करती रहती है। जातक को पैतृक सम्पत्ति के कारण अनेक विवाद में विजय प्राप्त होती है। यह किसी व्यवसाय तथा निर्माण कार्य की ओर झुकाव बना रहता है। धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। यह आजीवन सुखी रहते हुए 76 वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भू० सं० ८४३३

कु० र०

(२२०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, पतले परन्तु दृढ़ शरीर का, गौर वर्ण, रक्तिम आभायुक्त, उग्र स्वभाव का होते हुए भी समयानुसार शान्त रहने वाला, माता-पिता का भक्त तथा पिता से धन प्राप्त करने वाला, मध्यम शिक्षा-दीक्षा प्राप्त होते हुए भी अत्यधिक गुणी तथा ज्ञानी एवं परदेश की यात्राओं से धन कमाने वाला होता है। यह २२ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य में लग जाता है तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम के बल पर उन्नति करता चला जाता है। यह बहुत धनी होता है तथा ३५ वर्ष की आयु में राजा के समान ऐश्वर्यों का उपभोग करने लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली तथा रूपवती होती है। सुखमय दाम्पत्य-जीवन बिताते हुए यह अनेक पुत्र-पुत्रियों को प्राप्त करता है। इसे कभी कोई कष्ट नहीं होता। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२२०२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, चतुर, स्व-केन्द्रित; उदारता एवं सहानुभूति का प्रदर्शन करते हुए भी सच्ची उदारता से दूर रहने वाला, मध्यम कद का, गौर वर्ण, तीखी दृष्टि, भारी नाक तथा होठों वाला, पतले-दुबले शरीर का तथा कृपण स्वभाव का होता है। इसका विवाह २३ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा बुद्धिमती होती है। यह जातक राजकीय सेवा तथा सम्पत्ति के कारण धनोपार्जन करता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है तथा अपने पराक्रम से भी यह विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३५ तथा ४८ वें वर्ष श्रेष्ठ एवं भाग्योदय सिद्ध होते हैं। इसके जीवन में भोग तथा ऐश्वर्यों की कोई कमी नहीं रहती। इसके अनेक पुत्र-पुत्री होते हैं और वे सुयोग्य तथा सुख दायक भी रहते हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

भु० सं०

कु० र०

(2203)- यह जातक गंभीर विचारक, बुद्धिमान, स्वकेन्द्रित रहने वाला, जिसका अपने ही स्वार्थ-साधन की चिन्ता करने वाला तथा अपने कार्य-साधन हेतु दूसरों को हानि पहुँचाने में भी न चूकने वाला होता है। यह अपने श्रम द्वारा स्वयं के स्थापित व्यवसाय द्वारा ही विशेष धन कमाता है। इसे भूमि, काष्ठ तथा धातुओं से लाभ प्राप्त होता है। राज्य में भी कोई उच्च पद प्राप्त कर सकता है। किसी धन सम्बन्धी व्यवस्था कार्य के उत्तरदायित्वपूर्ण पद का भार भी वहन करता है। इसे सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अपूर्व सुन्दरी मिलती है। भाग्योदय 25 वर्ष की आयु में होता है। 28 वर्ष की आयु में यह बहुत धन कमाता है। यह अपने निवास हेतु सुन्दर भवन का निर्माण करता है। सन्तान हेतु कष्ट होता है। परमायु 68 वर्ष होती है।

(2204)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त चतुर, कूटनीतिज्ञ, स्वच्छन्द स्वभाव का, अपने मन की करने वाला तथा आकर्षक रूप वाला होता है। 20 वर्ष की आयु में ही यह राजकीय सेवा से संलग्न हो जाता है। यह रक्षण अथवा शान्ति-व्यवस्था सम्बन्धी (पुलिस, सेना आदि) पद से सम्बन्धित होता है। अनेक उच्च दायित्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए यह 60 वर्ष की आयु तक अत्यधिक धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। इसका विवाह 27 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सहयोगिनी होती है। विवाह के तुरन्त बाद ही भाग्योदय होता है, जिससे उन्नति करते हुए यह भूमि, भवन, वाहन आदि सभी सुखों को प्राप्त करता है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर, सुयोग्य तथा सुखदायक होते हैं। इसे जीवन में कभी कोई विशेष कष्ट नहीं होता। इसकी परमायु 69 वर्ष होती है।

(२१०५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, इकहरे परन्तु दृढ़ शरीर का, कुछ साँवलापन लिए उज्ज्वल रंग का, आत्मधिक धैर्यवान तथा व्यक्तिगत स्वार्थ पर विशेष ध्यान देने वाला होता है। यह उदारता का ढोंग प्रदर्शित करने वाला, मायावी प्रकृति का होता है। इसके मन के भेद को पाना कठिन रहता है। इसका जन्म पिता के परोक्ष में होता है तथा इसे पिता का सुख भी कुछ समय बाद मिलता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। परन्तु सन्तान बहुत विलम्ब से एवं उपचारादि के बाद प्राप्त होती है। इसे व्यवसाय द्वारा, राज्य से तथा अपनी पैतृक सम्पत्ति द्वारा लाभ प्राप्त होता है। २१ वर्ष की आयु के बाद यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन के ३०, ३८ तथा ४५वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(२१०६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गम्भीर, उदार स्वभाव का, सबको आदर देने वाला तथा स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों की सहायता करने वाला होता है। यह ललित कलाओं में रुचि रखने वाला तथा ज्ञान-वृद्धि हेतु सचेष्ट रहने वाला होता है। इसका विवाह २०, २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान्, कलाओं की जानकार तथा सहयोग करने वाली होती है। यह जातक २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उन्नति करना आरम्भ करता है। इसे राज्य द्वारा धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। इसकी पत्नी भी किसी कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करती है। इसके कन्याएँ अधिक होती हैं। यदि चन्द्रमा केन्द्रस्थ होतो बड़ी आयु में पुत्र भी हो सकता है। यात्राओं तथा विदेश-भ्रमण से इसे विशेष लाभ होता है। २५, २८, ३१, ३४, ३८ तथा ४५वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ८० वर्ष होना सम्भव है।

(२१०७) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, लम्बे कद का, कुछ स्थूल शरीर, गोल मुँह वाला, उन्नत ललाट तथा मधुर वाणी बोलने वाला, विद्वान होता है। यह २१-२२ वर्ष की आयु में ही अध्यापन आरम्भ कर देता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। इसे ज्ञान एवं विद्या प्राप्ति की निरंतर लालसा बनी रहती है। २२ वर्ष की आयु में यह राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन आरम्भ करता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ ३५ वर्ष की आयु में उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति का तथा दानशील होता है। यह अनेक दीन-दुःखियों को लाभ पहुँचाता है। इसे देशाटन के अवसर भी प्राप्त होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। कन्या-लाभ होता है। पुत्र-लाभ प्रायः नहीं होता। अन्य विषयों में भी इसकी रुचि रहती है। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(२१०८) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी क्रोधी स्वभाव का, साधारण सी बात पर भी उग्र रूप धारण कर लेने वाला, मध्यम कद, इकहरे शरीर, साँवले रंग का तथा परिश्रमी होता है। यह बाल्यावस्था में ही अपना घर छोड़कर बाहर चला जाता है तथा वहीं रहते हुए परिश्रम पूर्वक आजीविकोपार्जन करता है। राजकीय-सेवा का अवसर भी मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, [illegible] तथा बड़ी भाग्यवान् होती है। विवाहोपरान्त इसके कार्य की दिशा बदल जाती है और यह किसी एक ही स्थान पर रहते हुए जम कर काम करता है। इसके जीवन में ३५, ३९ तथा ४६ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह अचल सम्पत्ति को क्रय करता है। पुत्र पुत्री तथा होनहार होते हैं। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर सम्पूर्ण जीवन सुखी बना रहता है तथा धन भी खूब कमाता है। पूर्णायु ७४ वर्ष होती है।

(२१०९) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, अपनी विद्या, बुद्धि एवं ज्ञान द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, दृढ़ निश्चयी तथा परिश्रम का मीठा फल पाने वाला होता है। यह स्वभाव से कुछ उग्र होता है तथा जरा सी बात पर ही क्रोध में आ जाता है, तथापि समयानुकूल आचरण करने में कुशल होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। यह परदेश में जाकर कार्यरत होता है तथा वहीं आजीविकोपार्जन करता हुआ धनी तथा यशस्वी बनता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। यह भले-बुरे – दोनों प्रकार के लोगों से सम्बन्ध रखता है। ३०, ३३ तथा ४८ वें वर्ष में इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। जातक का धन दान-पुण्य तथा भोग-विलास – दोनों में खर्च होता है। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(२११०) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पुरुषार्थी, धुन का धनी, लम्बे कद का, गौरवर्ण, मध्यम ललाट वाला, धैर्यशील, उदार स्वभाव का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह उच्चशिक्षा प्राप्त करता है तथा २४ वर्ष की आयु में राजकीय अथवा किसी अन्य सेवा से संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है। यह किसी के अपराध को क्षमा नहीं करता तथा अवसर मिलते ही उससे बदला चुकाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सदैव सुख मिलता है। इसी आयु से यह अधिक धन कमाने लगता है। ४०, ४३, ४८, ५६ तथा ५९ वें वर्ष इसे विशेष उन्नति देने वाले सिद्ध होते हैं। इस जातक की धन की इच्छा अधिक होती है, अतः उसका विपुल मात्रा में संचय करता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ६८ वर्ष की होती है।

(२१११) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उग्र स्वभाव का होते हुए भी उदार तथा अपनी बात का धनी होता है। यह मध्यम कद का, गौर वर्ण, गोल मुँह, उन्नत ललाट तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह बड़ा पुरुषार्थी, उद्यमी, पराक्रमी तथा अपने अध्यवसाय के बल पर बहुत धन कमाता है। इसे माता का सुख कम तथा पिता का अधिक प्राप्त होता है। यह निम्न स्तर के कार्यों द्वारा सम्पत्ति अर्जित करके सम्मान प्राप्त करता है। यह राज्य के माध्यम से भी धन कमाता है। नीचों की संगति करते हुए भी धन-सम्पन्न होने के कारण इसे हेय नहीं समझा जाता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, कला-मर्मज्ञा तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व की धनी होती है। वह स्वयं भी धन कमाती है। ३५ तथा ५० वें वर्ष में जातक को बहुत लाभ होता है। पुत्र सुयोग्य तथा सुख देने वाले होते हैं। परमायु ६९ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(२११२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, सहृदय तथा दूसरों की सहायता करने वाला होता है। इसे मध्यम कोटि की शिक्षा प्राप्त होती है। यह २४ वर्ष की आयु में विवाहोपरान्त राजकीय-सेवा में संलग्न होकर आजीविका अर्जित करता है। यह नियमानुसार कार्य करता हुआ निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्र भी सुन्दर तथा होनहार होते हैं, जो इसके जीवन-काल में ही धन-धान्य से सम्पन्न ऐश्वर्यशाली-जीवन बिताना आरंभ कर देते हैं। यह जातक धार्मिक कार्यों तथा तीर्थाटन आदि में धन का व्यय करता है। इसमें त्याग की प्रवृत्ति अधिक होती है। जीवन के ३५, ३८, ४५, ५१ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी एवं सम्पन्नता का जीवन बिताते हुए यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सरल, सबको प्रभावित करनेवाला, कुछ उग्र स्वभाव का, क्रोधी होते हुए भी समझदार, चतुर-कुशलता का परिचय देने वाला तथा अपने अध्यव-साय से ही अनेक कलाओं का ज्ञान प्राप्त करने वाला होता है। इसके पास आर्थिक-आमदनी के साधनों में से एक कला का भी होता है। यह २० वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। 22 वर्ष की आयु में इसे राजकीय-सेवा प्राप्त हो जाती है। इसे अपने जीवन में न तो कभी शारीरिक-कष्ट होता है और न मानसिक-कष्ट ही। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अनुकूल स्वभाव की तथा धार्मिक प्रवृत्ति की होती है। इस जातक का अधिकांश धन धार्मिक-कृत्यों में ही व्यय होता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। ४५ तथा ५९ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२२२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हठधर्मी का, परिश्रमी, कुकर्मी, कुछ क्रोधी स्वभाव का, तथा स्वतन्त्र कार्यों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह कुछ समय के लिए नौकरी भी करता है तथा अपनी ईमानदारी एवं विश्वसनीयता के आधार पर मालिक के हृदय में उच्चस्थान बना लेता है। इसे बाल्यावस्था में माँ का सुख प्राप्त नहीं होता। इसका पालन-पोषण घर से दूर किसी अन्य स्थान पर होता है। इसे आजीवन संघर्ष-रत रहना पड़ता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु पत्नी भी मनोनुकूल नहीं मिल पाती। यह व्यक्ति अनु-चित कार्यों में भी संलग्न होता है। समाज में इसे कोई सम्माननीय स्थान नहीं मिल पाता तथा आर्थिक-स्थिति भी सामान्य ही रहती है। ५८ तथा ६२ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है तथा पूर्णायु ८१ वर्ष की होती है।

(२११५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, योग्य, प्रभावशाली, व्यवहार-कुशल, पराक्रमी, कलाओं का जानकार, तेजस्वी तथा धनोपार्जन करने में सक्षम होता है। यह प्रायः रोगी बना रहता है तथा श्रेष्ठजनों के प्रति सद्भाव भी नहीं रखता। इसकी बुद्धि विद्रोहात्मक होती है। इसे देशान्तर से लाभ मिलता है। दूर देशों की यात्राएं करके यह यथेष्ट धनोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। यह काफी समय तक दूसरों की सेवा करता है तथा अपने मालिक का विश्वास भी अर्जित कर लेता है। ४५ वर्ष की आयु के बाद ही इसका भाग्योदय भी होता है। थोड़ी सी अचल-सम्पत्ति भी पैदा कर लेता है। विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। अन्य-स्त्री से बहुत सुख मिलता है। पत्नी से मन नहीं मिलता संतान के लिए दुःखी रहता है। पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

(२११६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का जानकार तथा अपने सद्व्यवहार से सब को प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है। इसे अपने पराक्रम पर भरोसा होता है। यह पैतृक-व्यवसाय तथा सम्पत्ति की वृद्धि करता है। इसे घर से दूर जाकर सफलता एवं निश्चिन्तता प्राप्त होती है। इसकी कलाओं का सम्मान भी नहीं मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने की चेष्टा वाली रहते हुए भी मनमानी करने वाली होती है। वह जातक से अप्रसन्न भी रहती है। समयानुकूल सन्तान प्राप्त होते हुए भी पत्नी से इच्छित सुख नहीं मिल पाता। ४५ वर्ष की आयु के बाद वह जातक को विधुर बनाकर सदैव के लिए जा भी सकती है। ५० वर्ष की आयु में जातक को बहुत धन प्राप्त होता है। इसका धन पीड़ा तथा सन्तान के लिए खर्च होता रहता है। पूर्णायु ६८ अथवा ७५ वर्ष होती है।

(२२१७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी तीव्र तथा चंचल बुद्धि वाला, प्रत्येक कार्य को शीघ्र पूरा कर देने के लिए तत्पर, अनेक कलाओं का ज्ञाता, तथा अपने गुणों द्वारा सभी को प्रभावित करने वाला होता है। यह २४ वर्ष की आयु में ही सेवा-कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे अपने काम में निरन्तर सफलताएं प्राप्त होती रहती हैं। ४० वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्वतन्त्र तथा प्रत्येक काम में सहयोग देने वाली होती है। यह अपने व्यक्तित्व से सभी को प्रभावित करती है तथा सावधानतापूर्वक कार्य करती हुई जातक को अपने अनुकूल बनाये रखती है। पत्नी की इच्छा के बिना जातक कोई कार्य नहीं करता। पुत्रों से विशेष सुख नहीं मिलता। जीवन के ३२, ४१, ४६ तथा ५६वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। ५८वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ६५ वर्ष होती है।

(२२१८)- इस जातक को अपने सभी कार्यों में सफलताएं प्राप्त होती रहती हैं, क्योंकि यह अनेक कलाओं में कुशल होता है। यह सुन्दर, बुद्धिमान, ज्ञानी, हठी तथा उदार हृदय का होता है। अपनी उदारता के कारण यह हानि भी उठाता है। इसका चित्त स्त्रियों की ओर विशेष रूप से आकर्षित होता है। २३ वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त करके यह सेवा-कार्य में संलग्न हो जाता है तथा उन्नति करता हुआ ६० वर्ष की आयु में बहुत ऊंचे पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाली तथा महत्वाकांक्षाओं से युक्त, जातक को अपनी इच्छाओं के अनुरूप चलाने वाली होती है। यह पत्नी के माध्यम से भी अपनी सम्पत्ति को बढ़ाता है। ४८वें वर्ष में बहुत धन मिलता है। पुत्र योग्य होते हैं। जीवन में सब प्रकार से सुखी रहता हुआ ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२११९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर, गंभीर, उदार, प्रसन्न चित्त वाला, लम्बे कद का तथा बहुत प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय की वृद्धि करता है। शिक्षित होकर भी किसी सेवा-कार्य में संलग्न नहीं होता। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह अपने ही व्यवसाय में अनेक लोगों को नौकरी देता है। इसके धन की वृद्धि २५ वर्ष की आयु से आरम्भ होती है। इसका विवाह भी २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह जातक को प्रत्येक कार्य में सहयोग देती है। इस जातक को राज्य से भी लाभ होता है। इसे श्रेष्ठ मित्रों तथा सहयोगियों का अभाव नहीं रहता। ३१ वर्ष की आयु में इसके सौभाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है। इसे राज्य द्वारा भी सम्मान मिलता है। इसके दो पुत्र बड़े सौभाग्यशाली होते हैं। परमायु ७३ वर्ष की होती है।

(२१२०)- इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य उदार तथा सहिष्णु प्रकृति का, मध्यम कद, कसे हुए शरीर का, अत्यन्त बलवान तथा प्रभावशाली होता है। यह २३ वर्ष की आयु में ही अपना कोई व्यवसाय आरम्भ करता है। उससे धन की पर्याप्त वृद्धि होती है। राज्य तथा अन्य स्रोतों से भी इसे धन का लाभ होता है। विवाह भी 23-24 वर्ष की आयु में ही होता है। २५ वर्ष की आयु में कोई नवीन कार्य आरम्भ करके बहुत धन कमाता है। पत्नी विदुषी तथा जातक को सहयोग देने वाली होती है। वह स्वतन्त्र रूप से कार्य करके भी धनोपार्जन करती है। जातक अपनी पत्नी के साथ देशान्तर में रहकर धन, सम्मान तथा यश की वृद्धि करता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सौभाग्यशाली तथा धन-मान को बढ़ाने वाले होते हैं। इसे जीवन में सम्भवतः कभी भी कष्ट नहीं भोगना पड़ता। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२१२१) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी उदार-हृदय, सब के दुःख में सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला, दुःखी लोगों की सहायता करने वाला, अनेक विषयों का ज्ञाता; साहित्य, काव्य, चित्रकारी आदि में विशेष रुचि रखने वाला तथा २३-२४ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन समाप्त कर उत्तम राजकीय-सेवा प्राप्त करने वाला होता है। इसे पैतृक धन-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। सेवा-काल में यह निरन्तर तरक्की प्राप्त करता चला जाता है। २५ से ३२ वर्ष की आयु तक यह कई स्थानों पर कार्य करता है तथा तरक्की पाता है। ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे पद पर जा पहुँचता है। इसे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों, सहयोगियों तथा अधिकारियों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी होती है। वह स्वतंत्र रूप से भी धनोपार्जन करती है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२१२२) – इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, श्रेष्ठ स्वभाव का, परन्तु किंचित् उग्र प्रकृति का होता है। इसका भाग्योदय २४ वर्ष की आयु में होता है। यह अपनी माता से अलग रह कर पालन-पोषण प्राप्त करता है तथा अपने पुरुषार्थ से ही अपने जीवन का निर्माण करता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के भाग्य का भी इसे लाभ मिलता है। विवाहोपरान्त यह कोई नवीन कार्य आरंभ करता है, जिससे इसे बहुत लाभ होता है। इसके सेवक भी इसे सहयोग करते हैं। इसके पुत्र सुन्दर तथा प्रभावशाली होते हैं। वे जातक को सुख भी देते हैं। यह जातक ५१ वर्ष की आयु में जीवन-संघर्षों से मुक्ति प्राप्त कर, अपना मन धार्मिक कृत्यों में अधिक लगाता है। पत्नी भी आजीवन सभी कार्यों में सहयोगिनी बनी रहती है। इसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। परमायु ६६ वर्ष होती है।

(२१२३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नत कद का, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं मधुर वाणी वाला, बुद्धिमान, गुणवान, विद्वान; लेखन, काव्य-सृजन, छायांकन, चित्रांकन आदि में रुचि रखने वाला, प्रियदर्शी तथा २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह भी २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा इसका दाम्पत्य-जीवन भी स्नेह एवं सुखपूर्ण बना रहता है, तथापि अन्य अनेक स्त्रियाँ भी इसकी ओर आकर्षित होती हैं तथा उनसे भी इसके संबंध रहते हैं। इसे माता-पिता से भी सुख प्राप्त होता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में प्रवेश करता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३० वर्ष की आयु में महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त कर लेता है। स्त्री, सन्तान तथा शरीर से सुखी बना रहता है। धन का कभी अभाव नहीं होता। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(२१२४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत कद का, गौर वर्ण, अत्यन्त उदार, सहानुभूतिपूर्ण तथा पराये दुःख में काम आने वाला होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का सुख प्राप्त होता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरंभ कर देता है। २३-२४ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर उच्चपद प्राप्त करता है। २३-२५ वर्ष की आयु में ही इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, गौरांगी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। जातक की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में उसका विशिष्ट योगदान रहता है। ३१, ३५ तथा ४८ वर्ष की आयु में जातक के धन तथा मान-सम्मान की विशेष वृद्धि होती है। इसे कई पुत्र प्राप्त होते हैं। वे सभी होनहार तथा जातक के जीवन-काल में ही उन्नति कर लेने वाले होते हैं। ५६ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लगना संभव है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

भु० सं० २२२५

(२२२५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बे कद का, कुछ श्याम वर्ण, आकर्षक मुख मण्डल तथा सरल प्रकृति का होता है। यह संगीत-प्रेमी तथा संगीतज्ञ होता है। इसे सब प्रकार के सुख-सम्मान की उपलब्धि होती है। २० वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा में लग जाता है। ३० वर्ष की आयु में इसे पद-वृद्धि प्राप्त होती है। यह अनेक वैभवों का उपभोग करते हुए विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। यह पत्नी की इच्छानुसार ही सब कार्य करता है। इसकी पत्नी ही धन का संचय भी करती है। पुत्र भी सुयोग्य होते हैं तथा भाग्यवृद्धि में सहायक बनते हैं। यह ३६ वर्ष की आयु में बहुत धनी हो जाता है। अचल-सम्पत्ति भी पर्याप्त होती है। इसे कभी रोग अथवा शत्रु सम्बन्धी दुःख नहीं होता। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२२२६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति उदारचित्त, मनस्वी, महत्वाकांक्षी तथा सबके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार रखने वाला होता है, तथापि यह कृपण स्वभाव का एवं धन-संचयी भी होता है। इसे माता से कष्ट प्राप्त होता है। यह माता से विद्वेष भी रखता है। यह २२ वर्ष की आयु में राज्य अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ करता है तथा ३६-३७ वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे प्रचुर धन तथा मान-सम्मान की उपलब्धि होती है। राज्य द्वारा भी इसे धन तथा सम्मान मिलता है। ४६ वर्ष की आयु में इसे कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मन को प्रसन्नता प्रदान करने वाली मिलती है। सन्तानें भी सुन्दर तथा होनहार होती हैं। यह स्वस्थ तथा सुखी जीवन बिताता हुआ ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

कु० २०

३४८४ सं. ० भु. ०

कु. ० २ ०

(२१२७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, लम्बा कद, स्वस्थ तथा प्रिय-दर्शी होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने गुणों एवं योग्यताओं के कारण यशस्वी बनता है। २५ वर्ष की आयु से यह सेवा-कार्य में नियुक्त होकर ऊँचे-से-ऊँचा पद प्राप्त करता चला जाता है। इसका सम्पूर्ण जीवन राजकीय-सेवा करते हुए ही बीतता है। धन, मान तथा अधिकारों की इसके पास कभी कोई कमी नहीं रहती। यह सेना, पुलिस अथवा अनुशासन से संबंधित किसी सरकारी-विभाग में नौकरी करता है। इसे धन की बहुत तृष्णा होती है; फिर भी खर्च करने में इसका हाथ खुला रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा प्रियवादिनी होती है। पुत्र भी होनहार होते हैं। यह ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त कर, परलोक-गमन करता है।

(२१२८)- इस जन्मकुण्डचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, प्रियदर्शी, दृढ़ शरीर का, उन्नत कद वाला, गौर वर्ण तथा माता-पिता से सुख एवं धन प्राप्त करने वाला होता है। यह दुःसाहसिक-कार्यों को करने का इच्छुक रहता है। जोखिमपूर्ण काम करने में इसे आनन्द आता है। २३-२४ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा प्राप्त कर किसी उच्च प्रशासनिक पद पर प्रतिष्ठित होता है अथवा गुप्तचर-विभाग से संबंध रखता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसके पास धन की कभी कमी नहीं रहती। राजकीय-सेवा के अतिरिक्त व्यवसाय आदि अन्य स्रोतों से भी इसे धन का लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुखदायक मिलती है। पुत्र-पुत्रियों का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। जीवन में सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ यह ७६ अथवा ८५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२९२९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, बड़ी आँखों वाला तथा स्वभाव से कुछ उग्र होते हुए भी उदार-प्रकृति का एवं दूसरों के दुःख-दर्द में सहयोगी बनने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है। पुलिस, सेना अथवा प्रशासनिक-विभाग में कार्यरत होकर यह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी तथा श्रेष्ठ स्वभाव की होती है। वह बहुत ही समझदार, अन्तर्मुखी तथा पति को सुख देने वाली होती है एवं स्वयं भी किसी उच्च राजकीय-पद पर कार्य करती है। वह जातक की भाँति ही महत्वाकांक्षिणी तथा ऊँचे वातावरण में रहने वाली होती है। ३५, ४१, ४८ तथा ५१वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। कुछ समय के लिए पति-पत्नी को अलग भी रहना पड़ता है। पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं, जो जातक का सम्मान बढ़ाते हैं। परमायु ७५ अथवा ८६ वर्ष होती है।

(२९३०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सब प्रकार से सुखी तथा माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त करने वाला होता है, तथापि माता से यह स्नेह नहीं रखता। बाल्यावस्था में कुछ समय तक रोग-कष्ट भी होता है, परन्तु बाद में आजीवन कोई शारीरिक-कष्ट नहीं होता। यह विद्वान तथा गुणवान होने के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। धन की भी इसके पास कोई अभाव नहीं होता, २५ वर्ष की आयु से यह आजीविकोपार्जन करता है। ३६ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। अपने व्यक्तिगत गुणों द्वारा अथवा व्यवसाय या सम्पत्ति के माध्यम से यह धन-वृद्धि प्राप्त करता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत धनी परिवार की होती है। वह सुन्दरी, गुणवती तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखने वाली होती है। पुत्र गुणवान तथा भाग्यशाली होते हैं। परमायु ७३ वर्ष की प्राप्त होती है।

(२१३१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ एवं दृढ़ शरीर का, कुछ उग्र स्वभाव का होते हुए भी अपना सन्तुलन न खोने वाला, सत्कर्म में सुख का अनुभव करने वाला तथा धार्मिक कृत्यों में धन खर्च करने वाला होता है। इसे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त नहीं होती, तथापि इसका प्रयत्न रहता है कि उच्च स्थान प्राप्त हो। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अधिक शिक्षित नहीं होती, तो भी वह अपने व्यवहार तथा परिश्रम से जातक को बहुत कुछ सहारा देती रहती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में, देशान्तर में कार्य प्राप्त करके वहीं रहना आरंभ कर देता है। ३६ वर्ष की आयु तक घोर परिश्रम करके यह अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। ४१, ४६ तथा ४८वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसे परिश्रमी तथा धन-यश की वृद्धि करने वाले पुत्र की उपलब्धि होती है। ५० वर्ष की आयु के बाद स्त्री-सुख नहीं रहता। परमायु ७१ वर्ष की होती है।

(२१३२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, परिश्रमी, सद्गुणी, बुद्धिमान, मध्यम कद का, स्थूल शरीर, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, उन्नत ललाट तथा गौर वर्ण का होता है। इसे पूर्ण शिक्षा प्राप्त होती है। २३ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य से संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। २५, २८, ३५ तथा ४० वर्ष की आयु में पदोन्नति तथा मान-सम्मान प्राप्त करता है। ५१ वर्ष की आयु में सर्वोच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। यह अपना स्वतन्त्र व्यवसाय भी करता है तथा उससे भी धन का लाभ होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती तथा घर की उन्नति करने वाली होती है। वह स्वयं भी सम्मान प्राप्त करती है। इसके कई पुत्र होते हैं और वे सभी मनस्वी, कार्यकुशल तथा जातक के यश की वृद्धि करने वाले होते हैं। इस जातक के पास चल-अचल सम्पत्ति की कोई कमी नहीं होती। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२२३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गोरा, वीर, उदार, लम्बे कद तथा इकहरे शरीर का एवं तन तथा मन-मस्तिष्क से पूर्ण स्वस्थ होता है। यह कूटनीतिज्ञ होता है तथा राजनीतिक-क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। यह २४ वर्ष की आयु से ही देशसेवा-व्रती होकर अपने यश तथा धन की वृद्धि करता है। इसका भाग्योदय अपने परिजनों से दूरवर्ती स्थान में होता है। इसे मित्रों का विशेष सहयोग प्राप्त होता है तथा किसी स्त्री की सहायता से ही इसका भाग्योदय होता है। इसका विवाह २८-२९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला मिलती है। कई पुत्र होते हैं। वे भाग्यशाली होते हैं। इसे आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है। ५० वर्ष की आयु तक यह खूब समृद्ध हो जाता है। ४६. ४८ वर्ष की आयु तक परिश्रम करने के बाद शेष जीवन सुख से बिताता है। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२२३४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे शरीर का, अनेक विषयों का जानकार, सबसे सहानुभूति रखने वाला, किंचित् कृपण स्वभाव का, तथापि किसी के वास्तविक संकट के समय अपना धन खर्च करके उसकी सहायता करने वाला होता है। यह पुरुषार्थ पर विश्वास करने वाला तथा नास्तिकता का समर्थक होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। तत्पश्चात् राजकीय-सेवा में संलग्न होता है। इसे जुआ अथवा किसी व्यवसाय आदि द्वारा आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी होता है। इसे माता-पिता का सुख दीर्घकाल तक प्राप्त होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। ३२ वर्ष की आयु में यह अचल सम्पत्ति प्राप्त करता है। इसके जीवन में मित्रों का विशेष सहयोग होता है तथा भाग्योदय भी किसी स्त्री के माध्यम से ही होता है। २३, २८, २९, ३५ तथा ३८ वें वर्ष बहुत लाभप्रद होते हैं। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(2235) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति श्रेष्ठ कर्म करने वाला, सुन्दर, उत्साही, अत्यन्त बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा कूटनीतिज्ञ होता है। यह अपने पुरुषार्थ से बहुत सुख तथा सम्पत्ति प्राप्त करता है। यह अपनी विद्या तथा योग्यता के बल पर राजकीय-सेवा में उच्चपद पर नियुक्ति प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय अपने घर की जगह तथा बाहर - दोनों स्थानों पर होता है। इसे अपने माता-पिता से पूर्ण सुख मिलता है तथा पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि भी होती है। अचल-सम्पत्ति बहुत मिलती है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, परन्तु वह प्रायः रुग्णा बनी रहती है, अतः जातक को उसकी ओर से दुःख भी बना रहता है। बाद में पत्नी सुख भी देती है तथा अनेक श्रेष्ठ पुत्रों को जन्म भी देती है। ४६ वर्ष की आयु तक यह जातक बहुत ऐश्वर्यशाली हो जाता है। विद्वानों से नास्तिक यह मनुष्य सुखी-जीवन बिताता हुआ ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(2236) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, अनेक भाइयों वाला, माता-पिता से सुखी तथा उनका भक्त होता है। यह राजकीय-सेवा में रह कर विशिष्ट सम्मान प्राप्त करता है। यह बड़ा साहसी, ऊँचे काम करने वाला, परोपकारी तथा अनेक कार्यों से धनोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुख देने वाली मिलती है। इसे यात्राओं में प्रायः सुख न मिल कर कष्ट की प्राप्ति होती है। ४२ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी तथा प्रतिष्ठित हो जाता है। इसे अपने सेवा-काल में पदोन्नतियाँ प्राप्त होती रहती हैं। लोक में भी बहुत यशस्वी होता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति का होता है तथा तीर्थयात्राओं में बहुत धन खर्च करता है। इसके सन्तानें कम, परन्तु सुपात्र होती हैं। प्रथम पुत्र का सुख होता है। ४८ वर्ष की आयु में कष्ट होता है तथा परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२१३७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, श्यामवर्ण, चतुर तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है। यह गंभीर स्वभाव का होते हुए भी उग्र प्रकृति का तथा मन-ही-मन अति अशान्त रहने वाला भी होता है। सन्तुष्ट होना इसके स्वभाव में नहीं रहता। यह धन का अत्यधिक लोभी होता है तथा उसे निरन्तर बढ़ाने की चेष्टा में संलग्न बना रहता है। इसे माता-पिता से अधिक सुख प्राप्त नहीं होता। अपने पौरुष तथा साहस के बल पर ही इसे सब कुछ प्राप्त होता है। पिता द्वारा इसे थोड़ा सहयोग मिलता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में सुंदरी, तेजस्विनी, परन्तु उग्र स्वभाव वाली कन्या से होता है। वह अपने पति के ऊपर अपना प्रभाव बनाये रखती है। यह जातक अपने व्यवसाय द्वारा ही धनोपार्जन करता है तथा अपने जीवन में अनेक स्त्रि-यों का सहयोग भी प्राप्त करता है। ३०, ३८ तथा ४६ वें वर्ष शुभ होते हैं। पूर्णायु ७७ वर्ष होती है।

(२१३८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद, गोलमुख तथा स्थूलशरीर वाला, गुणवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य तथा काव्य की रचना करने वाला, साहसी तथा अपने पौरुष के बल पर ही धनोपार्जन करने वाला होता है। इसे राजकीय-सेवा में उच्चपद प्राप्त होता है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है तथा इसी आयु में भाग्योदय भी हो जाता है। इसके पास आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। शत्रुओं से, स्वदेश से तथा परदेश से इसे धन का लाभ होता है। स्त्रियाँ भी इसे लाभ पहुँचाती हैं। यह स्त्रियों में विशेष रुचि लेता तथा उनके कार्य को करता है। इसे गृहकार्यों तथा व्यक्तियों से भी लाभ होता है। राजकीय-सेवा कई बार बदलता है। पत्नी तथा पुत्रों से सुख-सहयोग मिलता है। सन्तान कुछ कष्ट से प्राप्त होती है। इसको जीवन का सुख तथा शान्ति की उपलब्धि होती है। परमायु ८५ वर्ष होती है।

(२१३९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुछ स्थूल शरीर का, मध्यम कद, गोल मुँह, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, सुन्दर, मधुरभाषी तथा सौम्य-स्वभाव का होता है। यह स्वभाव से उग्र होते हुए भी शान्त भाव से सब कुछ सहन करने की व्यावहारिक-बुद्धि रखता है। यह अपने कार्यों द्वारा परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला तथा धन का संचय करने वाला होता है। यह राज्य से उच्च पद प्राप्त करता है तथा अपने ऐश्वर्य से प्रकाशित होता है। इसका भाग्योदय जन्म से ही होता है। विद्याध्ययन समाप्त करके २३ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरंभ कर देता है। ४० वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। यह स्वदेश में ही भाग्योदय प्राप्त करता है। विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी तथा सहयोगिनी प्राप्त होती है। सन्तानें भी योग्य तथा अनुकूल रहने वाली होती हैं। परमायु ७६ अथवा ८० वर्ष होती है।

(२१४०) - इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी मध्यम कद वाला, सुन्दर, मधुरभाषी, विद्वान, हृष्ट-पुष्ट, अनेक विषयों का जानकार, अपने गुणों के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला तथा राज्य के उच्च पद पाने वाला होता है। यह ३०-३२ वर्ष की आयु में उच्च वर्ग में सम्मान प्राप्त कर लेता है। इस का विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। उसके कारण जातक को भी सम्मान प्राप्त होता है। सन्तानें कम, परन्तु सुयोग्य तथा माता-पिता को सुख देने वाली होती हैं। ४५ वर्ष की आयु से इस जातक को कई स्रोतों से धन का लाभ होता है एवं राज्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसके जीवन में ३८, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भू० सं० १४५२

कु० र०

भु० सं० ००
३३४४

कु० १०

(२१४१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त तेजस्वी, पराक्रमी, मध्यम क़द का, गौर वर्ण, अनुशासन-प्रिय तथा उदार स्वभाव का होता है। यह बाल्यावस्था से ही व्यावसायिक-बुद्धि का होता है तथा अपने उद्योग से तथा पैतृक-व्यवसाय द्वारा अर्थोपार्जन करता है। यह दूसरे स्थान पर भी अपना व्यवसाय स्थापित करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है तथा विवाहोपरान्त बहुत धन कमाता है। पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से भी इस जातक का सम्बन्ध रहता है। उसे यह अपनी सहयोगिनी के रूप में साथ रखता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। दान-पुण्य में इसकी रुचि होती है तथा धार्मिक कार्यों में यह अपना धन खर्च करता है। इसे श्रेष्ठ पुत्रों की प्राप्ति होती है। ४५ से ५१ वर्ष की आयु तक इसे राज्य से भी लाभ होता है। व्यापारिक-विवादों से इसे लाभ होता है। पत्नी को भी अचानक धन की प्राप्ति होती है। पूर्णायु ७६ अथवा ८० वर्ष होती है।

(२१४२) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम क़द का, सुन्दर, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा नीरस वाणी वाला होता है। यह हृदय का निर्मल होता है तथा किसी के साथ छल-कपट नहीं करता। यह व्यावसायिक रुचि वाला होता है तथा अपने पैतृक-व्यवसाय की वृद्धि करता है। राज्य के संसर्ग से भी इसे लाभ होता है। यह छोटी आयु में ही किसी नवीन कार्य को आरंभ करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के द्वारा इसे अपने कार्य-व्यवसाय में सहयोग प्राप्त होता है। सन्तानें कम, परन्तु सुन्दर तथा श्रेष्ठ होती हैं। इसका भाग्योदय अपनी जन्मभूमि से दूरवर्ती स्थान में होता है। यह अनेक यात्राएँ करता है तथा ३५ वर्ष की आयु में किसी अन्य कार्य में संलग्न होकर बहुत धन कमाता है। इसकी वृद्धावस्था सुख से बीतती है। आजीवन धन सम्पन्न बना रहता है। परमायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

(२१४३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौर वर्ण, उग्र स्वभाव का होते हुए भी समय को पहिचान कर क्रोध पर नियन्त्रण कर लेने वाला, दूसरों को हानि न पहुँचाने वाला तथा गुणी सज्जन एवं विद्वान होता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। तभी इसका भाग्योदय भी होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी होती है। यह माता से द्वेष मानने वाला तथा उनसे अलग रहने वाला होता है। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह बहुत धन पैदा करता है। यह २४ वर्ष की आयु से आजीविकोपार्जन करने लगता है तथा राजकीय-सेवा के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी धनोपार्जन करता है। इसकी पत्नी मनस्वी तथा भाग्यशालिनी होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। पुत्र-पुत्री भी अनेक तथा सुन्दर होते हैं। ४२, ५३ तथा ६१ वें वर्ष शुभप्रद होते हैं। ३८, ४६ तथा ६३ वें वर्ष में कष्ट होना निश्चित है। शस्त्राघात की सम्भावना भी रहती है। पूर्णायु ६८ वर्ष।

(२१४४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, ललित कलाओं का मर्मज्ञ, अनेक विषयों का ज्ञाता, चतुर तथा स्वार्थ-साधन में निपुण होता है। इसे राज्य-सेवा में कोई अच्छा पद प्राप्त होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु हठीले स्वभाव की होती है। यह आत्मकेन्द्रित, कृपण तथा धन का संचय करने वाली भी होती है। यह जातक २८ वर्ष की आयु में परदेश में जाकर रहने लगता है तथा ३५ वर्ष की आयु में पुनः घर लौट आता है। इसे अन्य स्थानों से भी लाभ होता है। ४१ वर्ष की आयु में यह अत्युच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसे अपने परिवारीजनों से कष्ट मिलता है और यह उनसे दूर भी रहता है। सन्तान का सुख या तो होता ही नहीं है अथवा कम होता है। कई गर्भ नष्ट हो जाते हैं। फलस्वरूप एक कन्या प्राप्त होती है। इसे जल-भय होता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२१४५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हृष्ट-पुष्ट, गोल मुँह का, गौर वर्ण, मध्यम कद, बड़ी-बड़ी आँखों वाला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह साहित्य तथा कला का मर्मज्ञ एवं तकनीकी-ज्ञान वाला भी होता है। घर में सम्पूर्ण सुख होते हुए भी इसे बाल्यावस्था से ही बाहर रहना पड़ता है। यह बहुत यात्राएँ करता है। बड़ी आयु तक इसका विवाह नहीं होता है। विवाह हो भी जाय तो पत्नी से अलग रहता है। इसे शासन में उच्च पद प्राप्त होता है। सबके कार्य तथा अपने समाज से यह बहुत उन्नति करता है। इसे गुप्त कार्यों द्वारा तथा आकस्मिक रूप से भी प्रचुर धन लाभ होता है। इसका अनेक स्त्रियों से संबंध रहता है। विवाह ३५-३८ वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी योग्य, पुष्टशरीरी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। सन्तान-सुख प्रायः नहीं होता। गर्भपात होने के योग होते हैं। ५६ तथा ६२ वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२१४६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति शुक्र, अनेक विषयों का ज्ञाता, व्यावसायिक-बुद्धि सम्पन्न तथा अनेक प्रकार के कार्यों को करने वाला होता है। इसकी रुचियाँ विभिन्न प्रकार की होती हैं। इसे राज्य से बहुत लाभ होता है। विवाह २१ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी मिलती है। भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। २४ वर्ष की आयु में यह घर से बाहर किसी अन्य स्थान पर रहता है तथा यात्राएँ भी करता है। इसे धन कमाने की बहुत इच्छा रहती है तथा कमाता भी बहुत है। धार्मिक कार्यों में खर्च करने में इसे बहुत सुख मिलता है। यह परोपकारी प्रवृत्ति का भी होता है। इसे पुत्र सन्तानें प्राप्त होती हैं तथा ये भी जातक की भाँति ही भाग्यशालिनी होती हैं। जीवन के २८, ३१, ३५, ४१ तथा ४८ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ६८ वर्ष की होती है। इससे बचे तो ज्यादह वर्षों तक और जीवित बना रहता है।

(२१४७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपाति मध्यम कद का, कुछ स्थूल शरीर वाला, गंभीर प्रकृति का, साहित्य तथा कलाओं का मर्मज्ञ, गंभीर प्रकृति का तथा पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, कुछ स्थूल शरीर वाली तथा आज्ञाकारिणी होती है। इसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। अपने घर से बाहर रहकर इसको उन्नति मिलती है। इसे भूमि तथा धातुओं के व्यवसाय से लाभ होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा स्वतंत्र व्यवसाय करता है। २८ तथा ३१ वर्ष की आयु में इसे बहुत लाभ होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों का पालक होता है। ४५ वर्ष की आयु में किसी नवीन कार्य द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा सौभाग्यशाली होते हैं। ४८, ५८ तथा ६१ वर्ष की आयु में इसे कष्ट होता है। पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

(२१४८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, गौर वर्ण, विशाल नेत्र, तीक्ष्ण दृष्टि, विद्वान् तथा अनेक विषयों का जानकार होता है। यह अत्यन्त प्रभावशाली, व्यवहार-कुशल तथा विनम्र स्वभाव का होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं, जो इसके जीवन-काल में ही ऐश्वर्यशाली बन जाते हैं। इस जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् ही होता है। यह राज्य से, दूसरों के कार्य से तथा परदेश-गमन द्वारा धनोपार्जन करता है। यह जिस सेवा में होता है, वहीं पदोन्नति प्राप्त करता है। ५१ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है तथा ५६ वर्ष की आयु में सम्पत्ति का लाभ होता है। इसे अपने कुटुम्बियों तथा परिजनों से स्नेह होता है तथा उनका पालन-पोषण भी करता है। परमायु ७६ वर्ष की होती है।

(२२४९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी तेजस्वी, कला-मर्मज्ञ, अपने गुणों के कारण सर्वत्र आदर पाने वाला, बाल्यावस्था में सुख पाने वाला, परिवार का स्नेहपात्र तथा सम्पन्न-परिवार में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही भाग्यशाली होता है। इसे सामान्य शिक्षा प्राप्त होती है। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करले तो भी उसका कोई उपयोग नहीं होता, क्योंकि अपने पैतृक-व्यवसाय में संलग्न हो जाने से वह निरुपयोगी हो जाती है। यह किसी की सेवा न करके अपने व्यापार में स्वयं अनेक सेवकों की नियुक्ति करता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, बुद्धिमती तथा भाग्यशालिनी मिलती है। वह अपने व्यवहार से जातक को सुख पहुँचाती रहती है। यह स्त्री अत्यन्त उदार तथा विशाल हृदय की होती है, तथापि कुछ समय के लिए पति से मनमुटाव हो जाने के कारण अलगाव-सा भी बना रहता है। सन्तान का दुःख होता है। पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

(२२५०)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक, अधिक बातूनी, किसी विषय पर तुरन्त निर्णय लेने में अक्षम तथा व्यवसाय-प्रेमी होता है। इसे धन की तृष्णा अधिक होती है और यह उसे बढ़ाने के लिए निरन्तर सचेष्ट बना रहता है। विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। यह अपनी पत्नी से प्रभावित बना रहता है। पत्नी पढ़ी-लिखी, सुलक्षणा, सद्गुणी तथा पति को अनुकूल बनाये रखने वाली होती है। यह जातक बहुत धन कमाता है तथा अपने स्थान के प्रमुख धनपतियों में गिना जाता है। पुत्र-संतान की ओर से चिन्ता होती है। सन्तान का प्रायः अभाव ही रहता है। बहुत कुछ उपाय करने के बाद ही संतति-पक्ष में कोई सफलता प्राप्त हो पाती है। जीवन के ४२, ४८, ४९, ५६ तथा ५९ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। सामान्यतः सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करते हुए यह २३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२५१) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, अभिनय-प्रिय वाला, दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की कला में कुशल, किसी भी कार्य को शीघ्र कर डालने की इच्छा रखने वाला तथा अपनी बात न मानने वाले के प्रति दुःखी अथवा रुष्ट हो जाने वाला भी होता है। इसे माता-पिता से सुख प्राप्त होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति से पर्याप्त लाभ कमाता है। इसका विवाह २१ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुयोग्य, सुन्दरी, ऊँच-नीच को समझने वाली तथा पति के कार्य-व्यवसाय में हाथ बँटाने वाली होती है। यह जातक शत्रु-पक्ष अथवा प्रतिपक्ष पर विजय प्राप्त करके यशस्वी बनता है तथा उसी से इसका भाग्योदय भी होता है। इसके जीवन के ३४ तथा ४१ वें वर्ष बहुत सुख तथा उन्नति देने वाले होते हैं। इसे ऐश्वर्य तथा विलास संबंधी वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ होता है। धन खूब कमाता है। पुत्र तेजस्वी तथा आज्ञा-पालक होते हैं। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२२५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, वाक्पटु, मधुरभाषी, गुणवान तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह अपने गुणों द्वारा सर्वत्र लोकप्रियता एवं सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, नीतिज्ञ तथा धर्म-कर्मी होती है। वह जातक को अपने गुणों तथा सेवाभाव से आकर्षित करती है, तथापि इसके संबंध अन्य अनेक स्त्रियों से भी बने रहते हैं। ३६ वर्ष की आयु में यह जातक सर्वोच्च-स्थिति को प्राप्त कर लेता है। यह बाल्यावस्था में माता-पिता से अलग रहता है, परन्तु समर्थ हो जाने पर उनकी धन आदि से सेवा-सहायता करता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे भूमि, भवन, वाहन आदि सुख के सभी साधन प्राप्त हो जाते हैं। मान-सम्मान भी खूब बढ़ जाता है। ५६ वर्ष की आयु में कष्ट होता है तथा पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

(२१५३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, पतले-दुबले शरीर परन्तु दृढ़ कांधा वाला, सौम्य प्रकृति, सुन्दर एवं विभिन्न प्रकार के उपायों द्वारा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने की कला में दक्ष होता है। इसका हृदय स्वच्छ तथा उदार होता है। यह अनैतिक कार्यों से दूर भागता है। भोग-विलास इसकी कमजोरी होती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार, नीतिज्ञ तथा कार्य-व्यवसाय में सहायिका होती है। इसे सन्तान का कष्ट होता है तथा बड़ी कठिनाई से एक कन्या जीवित रहती है। कन्या के बाद पुत्र भी जीवित रहता है। यह जातक मातृ-द्वेषी, कृपण तथा धन का लोभी होता है। इसका भाग्य विवाद तथा विरोधों के बीच उदित होता है। इसे देशान्तर में यश, सुख तथा धन की प्राप्ति होती है। ४५, ५६ तथा ६१वर्ष की आयु में इसे बहुत लाभ होता है। ६३ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२१५४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, वीर, साहसी तथा दुःखियों के दुःख को दूर करने हेतु सदैव तत्पर बना रहने वाला, उदार स्वभाव का होता है। यह विरोधियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। २१ वर्ष की आयु में इसे प्रशासकीय-सेवा में कोई पद प्राप्त होता है, अपने शत्रुओं को नीचा दिखाने में यह पटु होता है। इसका विवाह २०-२३ वर्ष की आयु में धनी, सुन्दर तथा नेक सलाह देने वाली स्त्री के साथ होता है। २५ वर्ष की आयु तक यह उच्चपद प्राप्त कर लेता है। अपनी योग्यता के कारण यह राजमान्य होता है। इसके पुत्र ज्ञानी, गुणी तथा सुख देने वाले होते हैं। २६ से ३१ वें वर्ष तक तथा ३५ से ३९ वें वर्ष की अवधि में इसे बहुत लाभ होते हैं। ४६ वर्ष की आयु में धन के साथ-साथ सम्मान की प्राप्ति भी होती है। ६१ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ८१ वर्ष होती है।

(२१४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, क्रूर-धीर, उदार-हृदय, साहसी तथा तीव्र स्वभाव का होता है। यह अपने शत्रुओं को आसानी से पराजित कर देता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त होता है। माता-पिता का भरपूर प्यार मिलता है। यह पैतृक-धन का उपभोग करने वाला, सम्पत्तिवान तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, सद्गुणी, परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली तथा पति को सुखी रखने वाली होती है। यह जातक राजयोग प्राप्त होता है। यह राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है। ४० तथा ४८ वें वर्ष इसके लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इस कालावधि में जीवन में आश्चर्यजनक एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। इसके पुत्र सुयोग्य तथा भाग्यशाली होते हैं और वे वृद्धावस्था में जातक को सुख पहुँचाते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(२१४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ा बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार-कुशल, अत्यन्त सुन्दर तथा मीठी वाणी बोलकर सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेने वाला होता है। यह कुशल वक्ता, सुमधुर गायक तथा राजकाज में कुशल होने के कारण अत्यधिक लोकप्रियता अर्जित करता है। यह देश-देशान्तरों में जाकर यश तथा धन कमाता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी बुद्धिमती, पंडिता तथा गुणवती होती है तथा अपनी प्रतिभा के कारण स्वतन्त्र रूप से ख्याति अर्जित करती है। इस जातक को ४५ वर्ष की आयु में अत्यधिक सम्मान तथा उच्च पद की प्राप्ति होती है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। अपने मित्रों से भी इसे बहुत सुख-सहयोग मिलता है। इसके पुत्र अपनी योग्यता के कारण इसके जीवन-काल में भी उच्च पद प्राप्त कर लेते हैं। यह जातक दान-धर्म में भी बहुत खर्च करता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

सं० भु० १५४२

कु० १०

(२२५७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी बलिष्ठ शरीर का, उग्रस्वभाव, साहसी तथा सुन्दर होता है। यह बाल्यावस्था से ही मधुर सुख तथा लाड़-प्यार प्राप्त करता है। इसे माता-पिता का भरपूर स्नेह मिलता है। पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। २१ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। विवाहोपरान्त यह कोई नवीन कार्य स्थापित करके धनोपार्जन करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक सुख-समृद्धि की उपलब्धि होती है। यह दान-धर्म-पुण्य में बहुत रुचि लेता तथा धन खर्च करता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यशालिनी होने के साथ ही मनोनुकूला होती है। ५५ वर्ष की आयु में ही यह जातक अपने पुत्रों पर सब कार्य-भार छोड़कर स्वयं तीर्थाटन आदि में रुचि लेता है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। वृद्धावस्था में इसे छोटे-मोटे रोग होते हैं। अपने जीवन में यह सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२५८) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वभाव से नम्र, मिलनसार, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में माता-पिता की ओर से कष्ट पाता है। यह प्रारंभ से ही धनोपार्जन करता है तथा एक जगह स्थिर होकर कार्य नहीं कर पाता। इसे अपने बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी जातक को अपने अनुकूल रखने में सक्षम होती है तथा स्वभाव से जिद्दी होती है। जातक के सभी कार्यों में पत्नी का पूरा-पूरा सहयोग रहता है और वह प्रायः राज्य करती है। यह जातक ४० से लेकर ५० वर्ष की आयु तक बहुत धन प्राप्त करता है। यह स्वभाव से न तो कृपण होता है और न अपव्ययी ही। इसे सन्तान से कष्ट होता है। अपने व्यवसाय द्वारा यह अत्यधिक धनोपार्जन करता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२१५९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यमकद का, सुन्दर, अस्थिर स्वभाव तथा उग्र प्रकृति वाला होता है। अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर इसे बहुत क्रोध आता है। यह भोग-विलास में विशेष रुचि लेता है तथा मानसिक रूप से स्त्रियों के प्रति बहुत दूषित बना रहता है। यह अपने जीवन में अनेक स्त्रियों का उपभोग करता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। यह अपनी स्त्री के प्रति भी बहुत अनुरक्त होता है तथा उसके प्रभाव में रहता है। इसकी पत्नी बड़ी मनस्विनी तथा सर्वत्र अपने व्यक्तित्व का प्रभाव प्रदर्शित करने वाली होती है। यह २९ वर्ष की आयु में अपने किसी स्वतन्त्र उद्योग द्वारा बहुत धन कमाता है। इसकी संतानें पिता के धन का उपभोग करती हैं, परन्तु पिता को अधिक सुख नहीं देतीं; जबकि जातक उन्हें अत्यधिक प्रेम करता है। इसे पैतृक रूप से भी धन का लाभ होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२२६०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बलिष्ठ शरीर का, अपने कार्यों में शीघ्रता करने वाला, उग्र स्वभाव का तथा जल्दबाजी के कारण हानि उठाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है। बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों से इसे सहयोग प्राप्त होता है। इसे अपने किसी परिजन अथवा छोटे भाई से बहुत लाभ होता है तथा किसी स्वामिभक्त सेवक के कारण भी उद्योग में बहुत लाभ होता है। इसकी पत्नी भी भाग्योदय का कारण बनती है। विवाह के बाद इसे सभी कार्यों में सफलता मिलती है तथा रुके हुए काम पूरे होते हैं। यह जातक उद्योग-व्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाता है। ३९ से ६५ वर्ष की आयु के बीच बहुत धनी हो जाता है। इसका अन्य स्त्रियों के प्रति भी आकर्षण होता है। सन्तानें अनुकूल नहीं होतीं तथा उनसे सुख नहीं मिलता। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२१६१)- इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य उग्र स्वभाव का, क्रोधी, सबको अपने निर्देशानुसार चलाने का प्रयत्न करने वाला, बन्धु-बान्धवों तथा पर-बाहर के लोगों पर अपना बहुत प्रभाव रखने वाला, परन्तु विशाल हृदय का एक अपव्ययी होता है। यह प्रत्येक दुःखी व्यक्ति की सहायता करने का इच्छुक रहता है तथा जरूरतमन्दों की आर्थिक-सहायता भी करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, कला-कौशल की ज्ञाता तथा ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली, सौभाग्यशालिनी होती है। इस जातक के पास पैतृक-सम्पत्ति बहुत होती है, यह उसे सुरक्षित रखते हुए स्वपराक्रम द्वारा भी बहुत धन अर्जित करता है तथा उसी से सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। यह देश-विदेश की यात्राएँ करके लाभ उठाता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। इसे सर्प से भय होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२१६२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर का, आत्मसम्मानी, सुन्दर, स्वभाव से कुछ उग्र तथा शीघ्र आवेश में आ जाने वाला होता है। यह अपव्ययी भी होता है। अपनी उदारता के कारण यह अपने से द्वेष मानने वाले लोगों की भी सहायता करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अत्यन्त कुशल, कला-निपुण तथा प्रभावशालिनी होती है। जातक को उससे बहुत सुख प्राप्त होता है। स्त्री धन का संचय करने वाली होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में राजकीय कार्यों से संलग्न होकर धन कमाता है तथा उच्चपद भी प्राप्त करता है। घर की ओर से इसे कोई चिन्ता नहीं होती। यह अपने प्रभाव से अनैतिक कार्य करने वाले लोगों की भी मदद करता है। वे इसे नुकसान भी पहुँचाते हैं। इसके पुत्र धनी तथा यशस्वी होते हैं। आजीवन स्वस्थ रहता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर का, शक्तिशाली, प्रभावशाली तथा अपने विरोधियों को विद्या, बुद्धि तथा बल से परास्त करने वाला होता है। यह शिक्षित, कार्य-कुशल, आत्मकेन्द्रित, अपने ऊपर खर्च करने वाला तथा दान-धर्म में भी भाग लेने वाला होता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सम्मान दिलाने वाली तथा गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करने वाली होती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है तथा ४६ वर्ष की आयु में विशेष प्रतिष्ठा, धन तथा उच्च पद प्राप्त करता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति से भी बहुत लाभ होता है। अपने गुणों द्वारा भी यह धनोपार्जन करता है। इसकी पत्नी इसके जीवन में प्रभावी भूमिका अदा करती है। इसके पुत्र सुयोग्य तथा धनी होते हैं। यह वृद्धावस्था में विशेष सुख भोगता है। ६१ तथा ६५ वें वर्ष में वायु-पीड़ा होती है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२२६४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सद्गुणी, कुछ स्थूल शरीर का, प्रभावशाली, विद्वान तथा उच्च कोटि का प्रशासक होता है। अपनी उदारता से यह दीन जनों को लाभ पहुँचाता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत मधुरभाषिणी, वाक्पटु होती है वह घर-बाहर सर्वत्र सम्मान पाती है। जातक के परिचय-क्षेत्र में भी चर्चा का विषय बनी रहती है। जीवन के २८ वें वर्ष में परदेश-यात्रा द्वारा जातक को विशेष लाभ होता है। अपने उद्यम, पुरुषार्थ तथा अध्यवसाय द्वारा यह बहुत धन कमाता है तथा पत्नी के कारण भी आर्थिक उन्नति करता है। ३५ से ५३ वर्ष की आयु तक बहुत लाभ होता है। इसके कई सन्तानें होती हैं तथा उनसे सुख भी मिलता है। वृद्धावस्था में दार्शनिक बन जाता है तथा लोगों में रहते हुए भी उनसे हो जाता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

भू० सं० ९५३५

कु० २०

(२९६५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, परम तेजस्वी, राजाओं जैसे स्वभाव वाला, भूमि, भवन आदि विपुल सम्पत्ति का स्वामी, अधिकार तथा वैभव सम्पन्न होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख मिलता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। २१ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा में प्रविष्ट होकर उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे निरन्तर पदोन्नति प्राप्त होती रहती है। ३६ वर्ष की आयु में इसका कार्यक्षेत्र बदल जाता है, तब यह किसी अन्य कार्य को करता और प्रचुर धन कमाता है। निर्लोभ होते हुए भी इसके पास धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दर, मनोनुकूला तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखते हुए भी जातक की सेवा करने वाली तथा प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली होती है। इस जातक को अनेक बार शस्त्र-अस्त्रादि से चोट लगने के अवसर आते हैं। २३, ३९, ४४ तथा ५६ वीं वर्ष में। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२९६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धनी, धैर्य, बुद्धिमान, शीघ्रता पूर्वक निर्णय लेने वाला, प्रत्येक कार्य को सोच-समझ कर करने वाला तथा बाल्यावस्था से ही परदेश में रहने वाला होता है। इसे माता का अल्प सुख प्राप्त होता है, जन्मस्थान का सुख भी अधिक नहीं मिलता। यह परदेश में रहकर, अपने गुणों द्वारा आजीविका उपार्जित करता है तथा ३५ वर्ष की आयु में बहुत उन्नति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा सुख देने वाली होती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं तथा इसके जीवन-काल में ही उच्च पदों पर पहुँच जाती हैं। इसके दो पुत्र तथा तीन-चार पुत्री होने का योग बनता है। पुत्र वृद्धावस्था में सुख देते हैं। यह जातक जीवन में संघर्ष करते हुए ६० वर्ष की आयु में समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। परमायु ६९ अथवा ७५ वर्ष होती है।

(२१६७)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति तीव्र बुद्धि, गंभीर परन्तु चंचल प्रकृति का होता है। यह लम्बे मुख वाला, स्थूल शरीर का, सुन्दर तथा विद्वान होता है। विवाह २१ वर्ष की आयु में होना संभव है। २२-२३ वर्ष की आयु में किसी प्रतिष्ठान में अथवा अनुशासन संबंधी किसी राजकीय विभाग में कार्य-रत होकर जीविकोपार्जन करता है। यह अपने घर से बाहर कहीं दूर देश में रहते हुए काम करता तथा धन कमाता है। ३५ वर्ष की आयु तक पद वृद्धि होती है पर अपने पुरुषार्थ द्वारा आय के अतिरिक्त साधन भी जुटाता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु कफादि रोगों से पीड़ित होती है। वह समझदार तथा संतुलित बुद्धि की होती है एवं जातक को सदैव प्रसन्न रखने की चेष्टा करती है। जीवन के ४२, ४८ तथा ५३वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ३६ एवं ४८वीं वर्ष में कष्ट होता है। संतान विलम्ब से होती है। परमायु ७१ वर्ष के लगभग होती है।

(२१६८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी तीव्र बुद्धि, उदार, त्यागी, शिक्षित, शान्तिप्रिय, साहित्य-प्रेमी तथा किसी विशेष तकनीक में दक्ष होता है। यह राजकीय-सेवा में प्रवृत्त होकर उच्चपद प्राप्त करता है। इसे लिखने पढ़ने का बहुत शौक होता है। ३०, ३५, ३८ तथा ४५वीं वर्ष में यह पदोन्नति एवं सुयश प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में धीर, गम्भीर, विभिन्न कलाओं में रुचि रखने वाली तथा मनोनुकूल कन्या के साथ होता है। वह इसे बहुत सुख पहुँचाती है। इस जातक की आमदनी के अनेक साधन होते हैं। पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। पारिवारिक भवन में ही इसका निवास रहता है। इसका भाग्योदय घर से बाहर किसी दूरस्थ स्थान में होता है। इसके दो पुत्र तथा तीन कन्याएं होना संभव है। सन्तान से सुख मिलता है। वृद्धावस्था आनन्द में बीतती है। परमायु ७९ से ८६ वर्ष के बीच होती है।

भृ० सं० ०३४४८

कु० र०

(२१६९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, मधुर भाषी, व्यवहार-कुशल तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २१ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा यशस्विनी मिलती है। वह सदैव सुझाव देती तथा घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर उन्नति करना आरम्भ कर देता है तथा ५० वर्ष की आयु तक बड़ा धनी तथा यशस्वी बन जाता है। बाहर से भी इसकी आमदनी के अनेक मार्ग खुले रहते हैं। यह बन्धु-बान्धवों का सहयोग भी प्राप्त करता है, तथापि बाल्यावस्था से ही इसे किसी अन्य स्थान पर रहना पड़ता है और वहीं इसकी शिक्षा दीक्षा भी सम्पन्न होती है। अपने सद्गुणों के कारण इसे सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य तथा सुखी होती हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२१७०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गम्भीर स्वभाव का, उदार-हृदय, दूसरों के कारण कष्ट पाने वाला, लम्बे कद का, गौरवर्ण, स्वस्थ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौभाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय भी होता है। यह जातक मध्यम तथा छोटे वर्ग के लोगों के बीच रहता है तथा उन्हीं के माध्यम से धन भी कमाता है। यह अपने घर से दूर अधिक रहता है, जबकि पत्नी घर पर ही रहती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होती है। कई गर्भ नष्ट भी होते हैं। इसे राज्य, भूमि तथा भवन आदि से पर्याप्त आय होती है। परदेश की यात्रायें भी धन कमाकर कराती हैं। इसकी जिन्दगी में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। परन्तु प्रत्येक परिवर्तन के बाद यह सफलता प्राप्त करता है। ५१ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। पूर्णायु ७१ वर्ष होती है।

(२९७१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, दूरदर्शी तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पति को अपने वशीभूत रखने वाली मिलती है। इसे अपने गुणों, यात्राओं तथा राज्य के द्वारा धन का लाभ होता रहता है। यह ऐसे कार्य से सम्बद्ध रहता है, जिससे यात्राएं अधिक करनी पड़ती हैं। ३१, ३७, ३९, ४५, ५१ तथा ५६ वें वर्ष में यह बहुत धन कमाता है। यह अपनी पत्नी के अनुगत बना रहता है और वह इसे पारिवारिक-चिन्ताओं से मुक्त बनाये रखती है। इसे दो पुत्र विलम्ब से प्राप्त होते हैं। वे दोनों सुन्दर तथा सुखदायक होते हैं। इस जातक को व्यवसाय में सदैव लाभ होता है। ४५ वर्ष की आयु में थोड़ा कष्ट होता है। ६१ वर्ष की आयु में कोई पारिवारिक सम्पत्ति प्राप्त होती है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२९७२) - यह जातक सुन्दर, धीर, गम्भीर तथा प्रत्येक कार्य को चतुराई से करने वाला होता है। इसे बाल्यकाल में सुख तथा अन्य लोगों की सेवा प्राप्त होती है। इस की आय के साधन भी बाहरी लोग ही होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा पति को अनुगत बनाये रखने की कला में दक्ष होती है। पत्नी की योग्यता, गुणों तथा कार्यों द्वारा जातक को भी सत्कार प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इस जातक को एक सा स्थिर प्रभाव वाला जीवन प्राप्त होता है। इसका जीवन राजकीय-सेवा में ही व्यतीत होता है। बन्धु-बान्धवों तथा सेवकों द्वारा किये जाने वाले कार्यों से भी इसे धन का लाभ होता है। ४५ वर्ष से लेकर जीवन के अन्त तक यह सुख भोगता है। पुत्र एक ही होता है। वह बड़ा यशस्वी तथा सुयोग्य होता है। इसे बीच-बीच में छोटी-मोटी बीमारियाँ होती रहती हैं। परमायु ८० वर्ष के लगभग प्राप्त होती है।

(2163)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील एवं उदार होते हुए भी अकारण ही उग्र तथा क्रूरता प्रदर्शित करने वाला होता है। इसे नैतिक भी प्रतिरोध सहन नहीं होता। यह विद्वान, बुद्धिमान तथा राजकीय कार्यों को कुशलता पूर्वक करने वाला होता है। यह 23 वर्ष की आयु में सेवा-कार्य प्रारंभ करता है तथा सेवा एवं निजी व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन कर 35 वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु, कला-मर्मज्ञा तथा चतुर होती है, तथापि बन्धु-बान्धव एवं परिवारजनों के षड्यन्त्र के कारण वह जातक से दीर्घकाल तक अलग रहती है तथा दोनों के बीच मनमुटाव भी बना रहता है। 38 से 61 वर्ष की आयु तक यह जातक अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है। इसके एक कन्या मात्र होती है, जो माता के पास ही रहती है। परमायु 75 वर्ष के लगभग होती है।

(2164)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुन्दर वस्तुओं का संग्रह तथा उपभोग करने वाला, राजसी-स्वभाव युक्त, महत्वाकांक्षी तथा अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। इसका विवाह 28 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कम आयु की, सुन्दरी, अनेक कलाओं का ज्ञान रखने वाली, चतुर, तेजस्विनी तथा परिवार पर नियन्त्रण रखने वाली होती है। वह आत्मकेन्द्रित भी होती है, पति की इच्छाओं का आदर भी करती है, परन्तु वे पूरी हों ही, यह आवश्यक नहीं समझती। यह जातक काफी समय तक परदेश में रहता है। पत्नी [illegible] रहती है। 45 वर्ष की आयु में जातक को धन का बहुत लाभ होता है। एक पुत्र युवावस्था के आरंभ में तथा दूसरा पर्याप्त अन्तराल से होता है। जातक को पुत्रों से सुख मिलता है। 32 वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट संभव है। पूर्णायु 58 अथवा 77 वर्ष होती है।

(२१७५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर का, दूसरों के हित का ध्यान रखने वाला, ज्ञान-पिपासु तथा अन्य लोगों को अपने अनुकूल बनाये रखने की चेष्टा वाला होता है। इस की महत्वाकांक्षाएँ प्रबल होती हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती, कला कुशल, गुणवती तथा यशस्विनी होती है। इसी आयु में जातक राजकीय-सेवा प्राप्त करता है। २९ तथा ३६ वें वर्ष में पदोन्नतियाँ होती हैं। इसे बाहर की यात्राएँ अधिक करनी पड़ती हैं। ४९ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। ५६ वें वर्ष में राज्य से विशेष सम्मान प्राप्त होता है। इसकी पत्नी स्वयं भी किसी कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करती है। पुत्र दो होते हैं और वे बुद्धिमान, यशस्वी तथा होनहार निकलते हैं। ६१ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२१७६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण, आकर्षक, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह व्यवसाय द्वारा विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। बाल्यावस्था में माता-पिता का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, कला-कौशल की जानकार तथा संगीत आदि में पटु होती है। यह जातक राजयोग सम्पन्न होता है। ३६ वर्ष की आयु में बहुत उन्नत स्थिति में पहुँच जाता है। व्यवसाय तथा अन्य अनेक साधनों से इसे धन का लाभ होता है। ४१ वर्ष की आयु में ही यह घर से दूर किसी स्थान पर लगभग सात वर्षों तक निवास करके तथा व्यवसाय आरंभ करता है। इसे अपनी पत्नी तथा पुत्रों के साथ रहने का सुख दीर्घ अन्तराल के बाद प्राप्त होता है। पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा होनहार होते हैं। इस जातक की परमायु ८१ वर्ष होती है।

भृ० सं०

कु० १०

(२१७७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, विद्वान्, गुणवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, मनीषी, सुन्दर, गौर वर्ण तथा स्वभाव में कुछ रूखापन लिए होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कुशल, संगीत-निपुण तथा धन का संग्रह करने वाली होती है। जातक को पत्नी के नाम से व्यवसाय आदि करके भी धन का लाभ होता है। पत्नी अपने कार्यों पर पूर्ण प्रभुत्व रखती है तथा पति को घर-परिवार की चिन्ताओं से मुक्त बनाये रखती है। इसके पुत्र एक या दो ही होते हैं और वे परिश्रमी तथा कार्य-कुशल भी होते हैं। किन्तु वे घर-गृहस्थी के कार्यों को भलीभाँति न करके माता-पिता को कष्ट देते हैं। यह जातक अपरिचित लोगों की भी सहायता करता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसे यश तथा धन की पर्याप्त उपलब्धि हो जाती है। ३३, ३६, ३८, ४२, ४५ तथा ४८ वें वर्ष हितकर रहते हैं। पूर्णायु ७२ वर्ष होती है।

(२१७८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, अनेक विषयों का ज्ञाता, विद्वान, कला तथा काव्य के प्रति गहरी अभिरुचि रखने वाला, धीर-गंभीर तथा गुणी जनों को सम्मान देने वाला होता है। यह व्यवसाय द्वारा धन कमाता है। पैतृक-व्यवसाय की वृद्धि करके परिवार का पालन-पोषण करता है तथा अन्य लोगों की सहायता भी करता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, साहसी, पति की महत्वाकांक्षाओं को प्रश्रय देने वाली तथा स्वयं भी किसी कार्य द्वारा धनोपार्जन करने वाली होती है। यह जातक राजयोग सम्पन्न होता है। यह शासन के कार्य से भी किसी रूप से सम्बद्ध होता है। गुप्त कार्यों से भी इसे लाभ होता है। २७ वर्ष की आयु से यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा श्रेष्ठ स्वभाव के होते हैं। यह ८६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२७९) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, कोमल हृदय वाला, उदार, स्थिर चित्त का, तथा श्रेष्ठ मित्रों वाला होता है, तथापि कुछ ऐसे स्वार्थी व्यक्ति भी इससे संबंधित होजाते हैं, जो केवल मतलब की दोस्ती ही रखते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, गुणवती, महत्वाकांक्षिणी एवं स्वयं भी किसी कार्य द्वारा यश प्राप्त करने वाली होती है। इसे २५-२६ वर्ष की आयु में राज्य से आय होना आरंभ होजाती है। यह सेना, पुलिस अथवा किसी यान्त्रिक विभाग में कार्य-रत होता है तथा ३१ वर्ष की आयु में किसी महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होजाता है। यह कई स्रोतों से धनोपार्जन करता है। इसे धन के साथ-साथ ही मान-प्रतिष्ठा की भी उपलब्धि होती है। इसके दो पुत्र विद्वान् तथा सत्कर्म करने वाले होते हैं। ६१ वर्ष की आयु में आकस्मिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२२८०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का ज्ञाता, यशस्वी, सुन्दर, स्वस्थ, चतुर, बुद्धिमान तथा अपने पाण्डित्य के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के आगमन के साथ ही इसे कष्ट मिलते हैं। यश तथा धन की हानि होती है। अनेक वर्षों तक स्वयं दुःख भोगता है तथा पत्नी भी कष्ट-पीड़िता दुःखी बनी रहती है। ३१ वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है। तत्पश्चात ४४ वर्ष की आयु तक कोई कष्ट नहीं होता। ४१ वर्ष की आयु में पुनः शारीरिक-कष्ट होता है। कुछ समय बाद फिर सुख के दिन लौट आते हैं। इसकी सन्तानें सुयोग्य होती हैं और उनके द्वारा इसे सुख प्राप्त होता है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखने के बाद वृद्धावस्था में सुख मिलता है तथा मान-प्रतिष्ठा भी उपलब्ध होती है। पूर्णायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

भू० सं० २८७८

कु० २०

भु० सं० ८०४४३

कु० र०

(२१८१)- इस जल कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, पण्डित, अपने विनम्र स्वभाव द्वारा सब लोगों में लोकप्रिय तथा सम्मानित स्थान पाने वाला, सुशिक्षित तथा धनवान होता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा ससुराल से धन भी मिलता है। पत्नी पक्ष से इसे निरन्तर आर्थिक-सहायताएं मिलती रहती हैं। यह अपने कारोबार द्वारा भी धन कमाता है तथा राजकार्यों से भी विशेष लाभ होता है। इसके जीवन के २९, ३२, ३८, ४१, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे सन्तान के लिए चिन्तित रहना पड़ता है। कुछ अधिक आयु में दो लड़कियों के बाद एक पुत्र होता है। वह कुछ विलम्ब से शिक्षा प्राप्त करता है तथा संगीत में विशेष रुचि रखता है। अपनी कला-प्रतिभा द्वारा वह स्वयं तो यशस्वी बनता ही है, जातक की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२१८२)- इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, उदार, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा बहुत साहसी होता है। यह स्वस्थ, बलवान तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की निरन्तर वृद्धि करने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, सुख देने वाली तथा गंभीर स्वभाव की होती है। यह जातक राज्य से तथा ठेके कार्यों से जो जातीय, वैयक्तिक अथवा पुरुषार्थ से सम्बन्धित हों, धनोपार्जन करता है तथा घर से बाहर देशाटन द्वारा भी लाभ उठाता है। यह ३२, ३८, ४५ तथा ५६ वें वर्ष में बहुत लाभ उठाता है। इसके पास ६१ वर्ष की आयु तक विपुल परिमाण में अचल-सम्पत्ति एकत्र हो जाती है। इसे दो पुत्र तथा तीन कन्याओं की उपलब्धि होती है। सभी सन्तानें गुणवान तथा श्रेष्ठ स्वभाव की होती ही होती हैं। परमायु ७८ अथवा ८३-८४ वर्ष होती है।

(२१८३)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुगठित शरीर का, सत्यप्रेमी, अन्याय से चिढ़नेवाला, कार्य-कुशल, गुणवान तथा सर्वत्र आदर पाने वाला होता है। यह शान्त स्वभाव का, बड़े कुटुम्ब वाला तथा पैतृक-परम्परा द्वारा सम्मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धीर-गंभीर, चतुर तथा शान्त स्वभाव की होती है। विलंब होने पर २८ वर्ष की आयु में विवाह होना भी संभव होता है। परन्तु इसे पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वह प्रायः बीमार बनी रहती है। उसके कारण धन तथा समय की बहुत बर्बादी होती है। इसके संतानें भी कम होती हैं। एक पुत्र बहुत यशस्वी होता है, उसके कारण जातक को बहुत सुख प्राप्त होता है। जातक अपने अध्यवसाय द्वारा जीविका अर्जित करता है। ४८ वर्ष में आकस्मिक-चोट संभव है। परमायु ६० वर्ष होती है।

(२१८४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी उदार, दानी, साहित्य तथा शास्त्रों के अध्ययन में रुचि रखने वाला, अनेक विषयों का ज्ञाता, गुणग्राही तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतले शरीर की, सुन्दरी तथा व्यवहार-कुशल होती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है। इसे व्यवसाय तथा अन्य अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। जीवन के ५१ वें वर्ष से यह बहुत धनी तथा यशस्वी बन जाता है। भूमि, मकान वाहनादि के सभी सुख उपलब्ध होते हैं। इसे संतान का कष्ट होता है। यदि हो तो एक संतान बड़ी कठिनाई से होती है। यह जातक धार्मिक-कृत्यों तथा यात्राओं में विशेष रुचि रखता है। जीवन के २५, २९, ३२, ३८, ४२, ४५, ४८, ५१ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करता हुआ यह ८२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२१८५)- इस जन्माङ्ग-चक्र का अधिपति बलिष्ठ शरीर का, स्वभाव से कुछ उग्र, शीघ्र ही विवेक-शून्य हो जाने वाला, परन्तु मन में अपनी गलती का अनुभव भी करने वाला, क्रोध को पी जाने वाला, तथा उदार एवं दानी प्रकृति का होता है। यह स्त्रियों के लिए लालायित बना रहता है तथा इसके अनेक स्त्रियों से संबंध भी रहते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धि चतुर तथा व्यवहार-कुशल होती है। वह जातक को न केवल सुखी बनाये रखती है, अपितु अपने सहयोग द्वारा जातक की कार्यकुशलता में भी वृद्धि करती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में किसी व्यवसाय में प्रवेश करता है तथा कृषि अथवा भूमिगत वस्तुओं के क्रय-विक्रय द्वारा धन अर्जित करता है। ३५ वर्ष की आयु के पश्चात् अत्यधिक सम्पन्न हो जाता है। इसे संतान के हेतु कष्ट होता है। परमायु ७२ वर्ष की प्राप्त होती है।

(२१८६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ा धैर्यवान, संयमी, दूसरों के दुःख को देख कर स्वयं दुःखी होने वाला तथा यथासाध्य परोपकार करने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुन्दरी, कल्याणकारी कार्यों में सहयोग देने वाली तथा बुद्धिमती कन्या के साथ होता है। पत्नी गृह कार्य में दक्ष, धन के प्रति विशेष तृष्णा रखने वाली तथा सन्तान के प्रति लालायित होती है। वह धन का संचय भी करती है और दान-पुण्य आदि में व्यय भी करती है। यह जातक अपने व्यक्तिगत गुणों तथा कलाओं के माध्यम से धनोपार्जन करता है। आकस्मिक रूप से तथा किसी की साझेदारी के कार्य से भी इसे धन-लाभ होता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। २८ वर्ष की आयु में इसे कुछ समय तक कष्ट प्राप्त होता है। ३३ वर्ष की आयु में किसी बाहरी स्थान से संबंधित होता है तथा ६९ अथवा ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२९८७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का जानकार, गुप्त-लेखक, कवि तथा सुमधुर वक्ता होता है। यह शुष्क स्वभाव के व्यक्ति को भी अपनी बातों से प्रभावित करने की क्षमता रखता है। इसके अनेक कार्य लच्छेदार बातों के कारण ही पूरे हो जाते हैं। इसका विवाह १९-२१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला, गुणवती तथा धन-संचय करने वाली होती है। व्यवहार-कुशल होने के कारण इसे सब लोगों का स्नेह-सम्मान प्राप्त होता है। वह आयु में जातक से अधिक छोटी होती है। जातक किसी सेवा-कार्य द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। ५२-५३ वर्ष की आयु में यह बहुत उच्चपद प्राप्त कर लेता है। ५९ वर्ष की आयु में इसके पास अचल-सम्पत्ति भी पर्याप्त हो जाती है। धन की कोई कमी नहीं रहती। इसे आकस्मिक रूप से सम्मान की प्राप्ति भी होती है। पुत्र यशस्वी होते हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२९८८)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति मध्यम कद वाला, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न अपने गुणों द्वारा दूसरों को प्रभावित करने वाला तथा अपने धन-सम्पत्ति के प्रति अहंकारी होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर की, सुन्दरी, गोरी, तेजस्वी तथा स्वाभिमानिनी होती है। वह पति को मनोनुकूल कार्यों द्वारा सदैव प्रसन्न बनाये रखती है तथा जातक के सम्मान को बढ़ाती है। इस जातक को राज्य द्वारा लाभ होता है। यह स्वतन्त्र कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। अपने घर से दूर प्रदेश में रहकर यह बहुत धन तथा यश कमाता है। ३९-४० वर्ष की आयु तक यह बहुत सम्पन्न हो जाता है। इसको एक पुत्र तथा एक पुत्री की प्राप्ति होती है, जो भाग्यशाली तथा सम्पत्तिवान होते हैं। प्रायः सम्पूर्ण जीवन सुख से बिताते हुए यह जातक ७८ अथवा ८८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भृ० सं०

कु० २०

(२१८९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी वाक्पटु, कवि, लेखक, सुवक्ता, सुन्दर, सबको प्रभावित करने वाला तथा चतुराई से धन कमाने वाला होता है। जो कार्य सामाजिक-दृष्टि से निम्नश्रेणी के होते हैं, उन्हें करके भी यह धन कमाता है। यह स्वभाव से दयालु, उदार, धार्मिक प्रवृत्ति का तथा दानी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली तथा सौभाग्य शालिनी होती है। वह स्वयं भी धनोपार्जन करती हुई जातक के धन में वृद्धि करती है। यह जातक बहुत सी सम्पत्ति अपनी पत्नी के नाम से भी क्रय करता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है तथा युवावस्था में धन-सम्पत्ति की पर्याप्त वृद्धि कर ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। यह तीर्थ यात्राएं करता है। संतानें या तो होती ही नहीं, अथवा कम होती हैं। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२१९०) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न मनुष्य संगीत-नृत्य का ज्ञाता, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मधुर भाषी तथा अपनी सहृदयता द्वारा सबको प्रिय होता है। इसे बाल्यावस्था से ही धन की कमी नहीं रहती। इसे राज्य द्वारा भी लाभ होता है। यात्राएं करना इसे बहुत अच्छा लगता है अतः विभिन्न स्थानों का भ्रमण भी करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भोग-विलास की प्रेमिन, ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने की इच्छुक तथा जातक के मनोनुकूल कार्य करने वाली मनस्वी तथा कार्य-कुशल होती है। वह जातक के कार्य-व्यवसाय में भी सहयोग देती है। जातक के कार्यों का संचालन करने में उसे बहुत सुख-संतोष मिलता है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। जातक पत्नी तथा पुत्रों के साथ विदेश-यात्राएं भी करता है। यह जीवन भर प्रतिष्ठा तथा धन प्राप्त करता रहता है। परमायु ८८ वर्ष होना सम्भव है।

(२१९१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद तथा शरीर का, गौर वर्ण तथा अपनी धुन का पक्का होता है। यह उदार-हृदय, कलाओं में रुचि लेने वाला, धार्मिक कार्यों में मन लगाने वाला, साथ ही भोगी-प्रवृत्ति का भी होता है। इसके अनेक मित्रों से सम्बन्ध रहते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में अत्यन्त तेजस्वी, सुन्दरी तथा सबको प्रभावित करने वाली गुणवती कन्या के साथ होता है। वह जातक की धनवृद्धि में भी सहायक होती है तथा स्वयं भी धनोपार्जन करती है। इस जातक के पुत्र कम तथा पुत्रियाँ अधिक होती हैं। इसके सभी पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा भाग्यवान होते हैं। वे जातक के जीवन-काल में ही उन्नति कर लेते हैं। वृद्धावस्था में पिता को सुख भी देते हैं। इस जातक को २७, ३२, ३८, ४६, ५१, ५६, ५८ तथा ६७ वें वर्ष में बहुत सुख तथा लाभ मिलता है। इसे राजा, अग्नि तथा चोरों से भय होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२१९२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सिंह के समान पराक्रमी, शूर-वीर, धर्मात्मा, शरीर से हृष्ट-पुष्ट, अत्यन्त उदार, धार्मिक प्रवृत्ति का, दानी तथा परोपकारी होता है। इसके मित्र तथा बन्धु श्रेष्ठ स्वभाव वाले तथा विश्वस्त व्यक्ति होते हैं। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली, मनस्वी एवं धनी परिवार की होती है। वह जातक को बहुत सुख देती है, तथापि जातक के अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध होते हैं। इसके पुत्र-पुत्री श्रेष्ठ स्वभाव वाले, सुन्दर तथा होनहार होते हैं। इसको धन की कमी नहीं रहती। राज्य से भी लाभ होता है। पत्नी का स्वर्गवास पहले ही हो जाता है। पुत्र वृद्धावस्था में सेवा करते हैं। ५६ वर्ष की आयु में वात रोग होता है, जो जीवनान्त तक पीड़ित करता रहता है। इसकी परमायु ९० वर्ष होती है।

(२९६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य का पंडित, व्यवसाय में रुचिवान तथा परदेश में रहकर धन तथा यश प्राप्त करने वाला होता है। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तेजस्वी तथा अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाली होती है। वह स्वयं भी अपने परिश्रम तथा उद्योग से धनोपार्जन करती है। वह जातक को सदैव प्रसन्न रखती है। २२ वर्ष की आयु से जातक धन कमाना आरंभ करता है तथा प्रतिदिन उन्नति करता हुआ थोड़े ही समय में धनी तथा यशस्वी बन जाता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। यह समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करता तथा सुखी-जीवन बिताता है। ५३ वर्ष की आयु में कष्ट होता है, परन्तु एक वर्ष बाद उसके मुक्ति-लाभ का, ८४ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२९६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे तथा पतले शरीर का, स्वस्थ, तीक्ष्ण दृष्टि वाला दृढ़निश्चयी, उग्रस्वभाव का तथा प्रतिशोधात्मक प्रवृत्ति का होता है। यह अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करता है तथा अपने अध्यवसाय द्वारा लोक में प्रतिष्ठित होता है। इसे नीचों की संगति से धन-लाभ होता है। इसके बन्धु-बान्धव कष्ट देते हैं तथा यह अपने माता-पिता का सुख भी प्राप्त नहीं कर पाता। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह उसमें विशेष अनुरक्त बना रहता है। दीर्घसूत्री होने के कारण यह कभी-कभी अपने कार्यों को बिगाड़ भी लेता है। इसकी पत्नी धन का संचय करती रहती है। पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा स्वतन्त्र-प्रकृति के होते हैं। जीवन के ४५, ४८, ५२ तथा ६१वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

(२९६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलिष्ठ, अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करनेवाला, यशस्वी, कर्मठ तथा उद्योगी होता है। इसे अपने माता-पिता तथा परिवारजनों से लाभ के स्थान पर कष्ट ही मिलता है। यह देशान्तरों में भ्रमण करके धन कमाता है तथा इसे आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कुशला, नृत्य-संगीत-निपुणा, मधुरभाषिणी तथा अपने जातक को आत्यधिक सुख देने वाली मिलती है। इसके कई पुत्र-पुत्रियाँ होते हैं। वे सब अपने अध्यवसाय द्वारा जातक के जीवन में ही उन्नति करके समृद्ध बन जाते हैं तथा जातक को वृद्धावस्था में सुख भी देती हैं। पत्नी धन का पर्याप्त संचय करती है, अतः कभी आर्थिक-कष्ट नहीं होता। २८, ३१, ३७, ३९, ५६ तथा ६१ वें वर्ष में बहुत लाभ होता है। २५, ३५ तथा ४१ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२९६६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, मृदुल स्वभाव का, कला-मर्मज्ञ, काव्य तथा साहित्य से स्नेह रखने वाला तथा विभिन्न प्रकार की रुचियों वाला होता है। यह राजकीय-सेवा में रह कर धन प्राप्त करता है एवं व्यवसाय तथा अन्य उद्योगों से भी आर्थिक लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा सरल स्वभाववाली कन्या के साथ होता है। यह पत्नी से अत्यन्त सन्तुष्ट रहता है तथा सुख प्राप्त करता है। इसे बाल्यावस्था में दुःख तथा युवा-वस्था में सुख प्राप्त होता है। २८ वर्ष की आयु से इसे यश तथा धन का पर्याप्त लाभ होता है। इसे धन की तृष्णा भी अधिक होती है तथा यह धन का उपार्जन एवं संचय भी खूब करता है। पुत्र, पुत्री सुन्दर तथा उदारमातापिता का निर्वाह करने वाले होते हैं। पिता की सेवा करते हैं तथा सुख देते हैं। जातक की परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२१६७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद तथा कुछ स्थूल शरीर का, दृढ़ काया से युक्त, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं राजाओं जैसा व्यवहार करने वाला होता है। यह अनेक विद्याओं का ज्ञाता अपने ज्ञान से लोक में प्रसिद्धि पाने वाला, साहसी तथा उद्यमशील होता है। इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, व्यवहार-कुशल, अनेक कलाओं की जानकार तथा अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाली होती है। कार्य-कारण वशात यह बहुत समय तक जातक से अलग भी रहती है तथा स्वयं द्रव्योपार्जन करती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा जीविकोपार्जन करता है, तथा उन्नति करता हुआ उच्च पद पर आसीन हो जाता है। इसके पुत्र सुन्दर, यशस्वी तथा सौभाग्यशाली होते हैं। २६, ३२, ३५, ४१ तथा ४७वें वर्ष विशेष सुखप्रद रहते हैं। ५६वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। ५७वें वर्ष में परदेश में रहना पड़ता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२१६८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, स्थूलकाय, लम्बे कद का तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से सम्बद्ध हो जाता है तथा २८ वर्ष की आयु में किसी दूसरे सरकारी विभाग में चला जाता है। वहाँ इसे पदोन्नति प्राप्त होती है। यह साहित्य तथा कलाओं का प्रेमी और उनका जानकार होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनुगामिनी, सुख देने वाली तथा गुणवती होती है। जातक उसमें अनुरक्त रहता है। यह अपने माता-पिता का भक्त भी होता है। यह घर से बाहर किसी दूरवर्ती स्थान में रहकर ४६ वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त करता है तथा बड़ा धनी एवं यशस्वी होता है। इसे कुछ समय तक पत्नी से अलग भी रहना पड़ता है। पुत्र कई होते हैं। वे सभी सुन्दर, गुणवान, धनी तथा यशस्वी होते हैं। यह जातक ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

सं० भु०

कु० र०

भु० सं० [illegible]

कु० र०

(२१९९) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, समय की गति को पहिचानने वाला, नीतिज्ञ, सुन्दर, गोल मुँह तथा उन्नत ललाट वाला, गौरवर्ण एवं सहृदय होता है। इसके पास पैतृक-सम्पत्ति की कमी नहीं होती। यह पैतृक-व्यवसाय द्वारा ही अपनी सम्पत्ति को बढ़ाता है। भूमि तथा खनिज-उत्पादनों के क्रय-विक्रय से विशेष लाभ होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी, सरलचित्त वाली होती है। इसके ऊपर दुष्ट लोग अनेक बार आक्रमण करते हैं, परन्तु यह अपनी सुरक्षा करने में समर्थ रहती है। ३० वर्ष की आयु में यह जातक बहुत धनी हो जाता है। कालान्तर में राज्य द्वारा भी लाभ प्राप्त करता है। इसको कई पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है। सभी सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। जीवन के ३५, ४१, ४९ तथा ५६ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२२००) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, विद्वान्, अनेक विषयों का ज्ञाता, रसिक स्वभाव का तथा स्वयं के लिए सुख-साधन जुटाने वाला स्वार्थी होता है। यह अपने बुद्धि-कौशल से बड़े-बड़े धूर्तों को पराजित कर देता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, सरल स्वभाव की तथा गृहस्थी का कुशल-संचालन करने वाली होती है। यह जातक अपनी पैतृक-सम्पत्ति तथा व्यवसाय का पूर्ण सुख प्राप्त करता है। इसकी भोग-लिप्सा अधिक बढ़ी हुई रहती है। यह अनेक मित्रों से सम्पर्क रखता है। यह वर्षों तक परदेश में भी रहता है। इसकी वाणी में बड़ा आकर्षण होता है, अतः यह नेतृत्व करने में विशेष सफल होता है। जीवन में विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करते हुए यश भी प्राप्त करता है। इसके पुत्र धन का नाश करते हैं। परमायु ८० वर्ष की होती है।

(2201) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, पुष्ट शरीर, लम्बे कद का तथा अपने प्रभाव से सब लोगों को मोहित करने वाला होता है। यह विद्वान, गुणवान तथा किसी विशिष्ट व्यवसाय का ज्ञाता होता है। यह अपनी बौद्धिक-क्षमता से देश-देशान्तर में बहुत सम्मान प्राप्त करता है तथा धन भी कमाता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, मनस्वी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। इसके पुत्र कम होते हैं, परन्तु वे सभी सुन्दर, उपयोगी तथा धनी होते हैं एवं अपने पिता के जीवन काल में ही बहुत उन्नति कर लेते हैं। यह जातक कुछ नास्तिक विचारों का होता है तथा अपने उद्यम से सदैव दुःखी बना रहता है। इसे 33 तथा 42 वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। राज्य से भी लाभ मिलता है, पर-स्त्रियों से प्रेम भी करता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(2202) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, हृष्ट तथा स्थूल शरीर का तथा सफल व्यापारी होता है। इसका जन्म पिता के परोक्ष में होता है। यह काफी समय तक माता-पिता से अलग भी रहता है। राज्य द्वारा इसे आजीविका तथा सुख की प्राप्ति होती है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उससे मन नहीं मिलता। वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहती। बड़ी हुई आयु में यह दूसरा विवाह करता है, परन्तु वह स्त्री भी अन्य पुरुष में अनुरक्त हो जाती है। इसके पुत्र भी इससे द्वेष मानते तथा कष्ट देते हैं। इसका पारिवारिक-जीवन बहुत बिखरा रहता है। यह स्वयं किसी पर-स्त्री से धन प्राप्त करता है तथा उसी के साथ रहता भी है। इसका भाग्योदय अपने ही स्थान में होता है। 51 वर्ष की आयु में बहुत कष्ट होता है। परमायु ६८ वर्ष की होती है तथा मृत्यु भी पुत्र के कारण होना सम्भव है।

(2203) - इस जन्मकुण्डली स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, कला तथा संगीत का ज्ञाता, साहित्य एवं कला प्रेमी तथा सर्जक तथा अपने प्रबल पुरुषार्थ द्वारा धन कमाने वाला होता है। इसे दीर्घकाल तक शारीरिक आर्थिक भोगनी पड़ती है। राज्य की सेवा द्वारा इसे धन प्राप्त होता है। विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के साथ थोड़ा ही समय सुख से बीतता है, फिर दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। अन्य सब सुखों को प्राप्त करते हुए भी यह दाम्पत्य सुख से वंचित रहता है, तत्पश्चात् सब को त्याग कर बन्धु-बान्धवों से अलग रहना आरंभ कर देता है। इसके जीवन में कभी भी स्थिरता नहीं रहती। कुछ समय शान्ति से बीतता है, बाद में पुनः अशान्ति आ जाती है। सन्तान का अभाव रहता है। यदि होगी तो उससे कोई सुख नहीं मिलता। 46 वर्ष की आयु में यह देशान्तर में गमन करता है। अन्य स्त्री से सुख प्राप्त करता है। परमायु 62 वर्ष होती है।

(2204) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, आवेशपूर्ण स्वभाव वाला, अपने ज्ञान तथा गुणों से सब को प्रभावित करने वाला तथा बाल्यावस्था में माता से अलग रहने वाला होता है। यह 25 वर्ष की आयु से धन कमाना आरंभ करता है। अपने भुजबल पर ही इसे अधिक भोग होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि यह जातक पर-स्त्री द्वारा सुख प्राप्त करता है तथा उसी का अभिमान भी रखता है। यह उदार विचार का होता है तथा अपने बन्धु-बान्धव तथा मित्रों को सुख देता है। इसका बहुत सा धन जुए में भी नष्ट होता है। 35, 39, 43 तथा 48 वर्ष की आयु में विशेष उन्नति होती है। 28, 44 तथा 51 वें वर्ष में कष्ट होता है। 62 वें वर्ष में लम्बी बीमारी होती है। पुत्रों से सुख नहीं मिलता। वे दुःख ही देते हैं। यह तीर्थयात्रा एवं धार्मिक कृत्यों में भी धन खर्च करता है। परमायु 63 अथवा 80 वर्ष होती है।

(२२०५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, हठधर्मी का, अत्यन्त बलवान, स्वतन्त्र प्रकृति का तथा उग्र वाणी बोलने वाला होता है। इसके क्रिया-कलाप बन्धु-बान्धवों को त्रास देने वाले होते हैं। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुलक्षणा तथा स्वतन्त्र अस्तित्व वाली होती है। वह पति के साथ अधिक समय तक नहीं रह पाती तथा अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करती हुई स्वतन्त्र-जीवन बिताती है। इस जातक को बाल्यावस्था में माता का सुख नहीं मिलता। यह दूसरी स्त्री द्वारा पाला जाता है। ३० वर्ष की आयु से इसे बहुत धन प्राप्त होता है। परन्तु जुए के व्यसन में यह उसे नष्ट कर देता है। इसे ७२, ४८ तथा ५१ वें वर्ष में लाभ होता है। यह दूसरों के साथ रहकर उन्हीं को अपनी कमाई खिलाता है। इसकी प्रवृत्ति धन-संचय की भी होती है। धर्म-कर्म से विरत तथा सन्तान से दुःखी यह जातक ७८ वर्ष की परमायु वाला है।

(२२०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, उग्र स्वभाव का, दृढ़ निश्चयी, मध्यम कद वाला, रक्त वर्ण तथा सबको अपने अनुकूल चलाने की इच्छा वाला होता है। मतभेद रखने वाले के प्रति यह रुष्ट बना रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है। यह अपने अध्यवसाय द्वारा राज्य से भी धन प्राप्त करता है। ३२ वर्ष की आयु में इसे बहुत सुख मिलता है। इसे नीच लोगों से भी धन का लाभ होता है। इसके जीवन में ३५, ३९, ७१, ४६, ५६, ५९ तथा ६२ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ४३ वें वर्ष में कष्ट होता है। ५६ वें वर्ष में चोट लगने की संभावना रहती है। इसकी सन्तानें सुयोग्य तथा सुख देने वाली होती हैं। यह जातक अपने जीवन में अत्यधिक धन संचय करता है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२२०७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उदार, सहानुभूति पूर्ण, दीन-दुःखियों की सहायता करने वाला, परन्तु शीघ्र ही आवेश में आजाने वाला उग्र स्वभाव का होता है। यह परोपकार में सुख का अनुभव करता है। इसे पैतृक-धन की उपलब्धि होती है। बाल्यावस्था सुख में बीतती है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-मर्मज्ञा, मधुर भाषिणी तथा यशस्विनी होती है। इसके पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा दीर्घायु होते हैं। प्रथम सन्तान के लिए कष्ट होता है। इसे अपने पुरुषार्थ से विपुल धन की उपलब्धि होती है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। इसे शारीरिक-कष्ट प्रायः नहीं होता। यह अपने व्यवसाय, उद्यम तथा राजकीय-सेवा से लाभ उठाता है। इसके पास भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकों की कोई कमी नहीं रहती। ४३ तथा ५१ वें वर्ष में आकस्मिक-चोट लगने का भय होता है। परमायु ६५ वर्ष होती है।

(२२०८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौर वर्ण, मध्यम कद वाला, स्वस्थ, सुन्दर नेत्रों वाला तथा कुछ लम्बे मुँह का आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता, गुणी तथा उदार स्वभाव का होते हुए भी कुछ उग्र प्रकृति का होता है। इसे बाल्यावस्था में कुछ कुछ समय तक कष्ट प्राप्त होता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोहारिणी, मनस्विनी, प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी, स्वयं धनी, सेवकों का सुख पाने वाली तथा जातक को वश में रखने वाली होती है। इस जातक के पास अनेक स्रोतों से धन आता है। यह कई स्त्रियों से संबंध रखता है। इसके जीवन में २१, २७, २९, ३२, ३८, ४३, ४६ तथा ५१ वें वर्ष भाग्यशाली सिद्ध होते हैं। सन्तानें सुन्दर तथा सुख देने वाली होती हैं। परमायु ६८ वर्ष के लगभग होती है। आकस्मिक-चोट से मृत्यु होना सम्भव है।

(२२०६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, महत्वाकांक्षी, उग्र स्वभाव का, तेजस्वी तथा राजाओं के समान आदेशात्मक व्यवहार वाला होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है तथा उनका पालन करता है। यह अस्त्र-शस्त्र के रूप में लोहे को अपने पास रखता है। लोहा तथा सूखी लकड़ी के व्यवसाय से ही इसे लाभ भी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं की जानकार, सुख देने वाली तथा अपने व्यक्तित्व से सब को प्रभावित करने वाली होती है। यह जातक से भी अधिक महत्वाकांक्षिणी होती है। यह गूढ़ कार्यों द्वारा धन प्राप्त करती है तथा कार्य-साधन में निपुण होती है। जातक को २८ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा द्वारा धन-लाभ होता है। ३५, ४५ तथा ५१ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। इसका धन भोग-विलास में अधिक खर्च होता है। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(२२१०) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, कलात्मक अभिरुचि का, भोग-विलास का प्रेमी, साहित्य-संगीत आदि का ज्ञाता तथा व्यवसाय में रुचि रखने वाला होता है। यह विलास-सामग्री एवं संगीत-उपकरणों आदि के व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ हठी स्वभाव की, अत्यधिक मानिनी, अपने व्यक्तित्व से जातक को प्रभावित कर, अपनी इच्छानुकूल चलाने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। इसे २८ वें वर्ष में बहुत लाभ होता है तथा सुन्दर पुत्र की प्राप्ति भी होती है। यह व्यवसाय में अत्यधिक रुचि लेकर यथेष्ट धन अर्जित करता है। जीवन के ३०, ३६, ४०, ४६, ४८ तथा ५१ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। राज्य से भी लाभ होता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। चोट का भय होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२२११)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा दूसरों का भला करने के लिए अपना काम बिगाड़ लेने वाला होता है। यह दूसरों पर विश्वास करके धोखा खाता है तथा हानि उठाता है। इसे बाहर से धन का लाभ होता है तथा व्यवसाय द्वारा भी बहुत लाभ मिलता है। यह पैतृक-कार्य को आगे बढ़ाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर तथा सुख देने वाली मिलती है। यह उसके वशीभूत रहते हुए भी भोग-लिप्सा के कारण अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। २८, ३५, ३६ तथा ४३ वर्ष की आयु में इसे बहुत धन मिलता है। ५० वर्ष की आयु में यह सब तरह से सुखी तथा सम्पन्न बन जाता है। राज्य से भी लाभ होता है। पुत्र आज्ञाकारी तथा परिवार के प्रति दायित्वों का पालन करने वाले होते हैं। परमायु ७० वर्ष से कुछ अधिक ही होती है।

(२२१२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, सुशील, उदार, साहित्य एवं कलाओं का ज्ञाता, संगीतज्ञ, कवि, परन्तु अपनी उदारता एवं मूर्खता के कारण धन-हानि पाने वाला होता है। यह बहुत समय तक परदेश में भी निवास करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आकर्षक, लम्बे कद की, कुछ स्थूल शरीर वाली तथा सुख देने वाली होती है। यह उसके अनुगत रहता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है। राजकीय-सेवा में पदोन्नति प्राप्त होती है तथा अन्य स्रोतों से भी धनागम होता है। इसे निजी भवन तथा वाहन का सुख भी मिलता है। ४१ से ४८ वर्ष की आयु तक अचल-सम्पत्ति की वृद्धि होती है। अचल-सम्पत्ति इसकी पत्नी के नाम होती है। पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा व्यवसाय को बढ़ाने वाले होते हैं। पूर्णायु ७२ वर्ष होती है। ४६वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट सम्भव है।

भु० सं० २२१३ | कु० २०

(२२१३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, अनेक विषयों का ज्ञाता, बुद्धिमान तथा अपने गुणों से सबको प्रभावित करने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त होता है। इसका बचपन राजकुमारों की तरह बीतता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। वह भी राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन करती है। जातक भी राज्य की सेवा में उच्च पद पर आरूढ़ होकर धन तथा यश अर्जित करता है। विद्या, ज्ञान तथा चातुर्य के बल पर यह उच्च पद प्राप्त करता चला जाता है। ४० वर्ष की आयु में बहुत उन्नति कर लेता है। इसके पुत्रियाँ अधिक तथा पुत्र कम होते हैं। इसे मुकद्दमे, विवाद तथा शत्रुओं से भी धन प्राप्त होता है। अचल-संपत्ति तो अनायास ही मिलती है। कार्य-वश देश-प्रदेश में भ्रमण करता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२२१४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्या-बुद्धि में श्रेष्ठ, गौरवर्ण तथा बहुत आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका बाल्यकाल किसी बाहरी स्थान में व्यतीत होता है। यह २१ वर्ष की आयु में गंभीर स्वभाव की सुन्दर पत्नी प्राप्त करता है। वह अपने व्यक्तित्व तथा सद्गुणों से सबकी प्रशंसा पात्र बनी रहती है। इस जातक को अनेक गूढ़ कार्यों से, पृथ्वी से तथा भवनादि के क्रय-विक्रय द्वारा धन का लाभ होता है। राजकीय-सेवा से भी विपुल धन प्राप्त होता है। ३० वर्ष की आयु में यह पदोन्नति प्राप्त करता है। निजी भवन तथा वाहन का स्वामी होता है। ३२, ३८, ४१ तथा ४४ वें वर्ष विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। पत्नी कुछ समय तक अस्वस्थ भी रहती है। पत्नी धन का यथेष्ट संचय करती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। पारिवारिक-सुख में वृद्धि होती रहती है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२२१५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक, उदार तथा सद्गुणी होता है। यह बाल्यावस्था में माता से अलग रहता है तथा पिता का सुख भी प्राप्त नहीं कर पाता। दूसरे स्थान पर रह कर यह अपने ही अध्यवसाय से उन्नति प्राप्त करता है। इसकी व्यवसाय में विशेष रुचि होती है। एतदर्थ यह देशान्तर की यात्रायें भी करता है। परदेश में इसे अत्यधिक मान-सम्मान तथा धन की उपलब्धि होती है। ३० तथा ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत धन प्राप्त करता है। राज्य के सम्पर्क से भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। इसका भाग्योदय किसी स्त्री के माध्यम से होता है। वह इसे सदैव सुख देती है तथा इसके सम्मान को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील बनी रहती है। इसका विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। ४५ वर्ष की आयु में यह नवीन कार्य आरम्भ करता है, जिसे इसके सुयोग्य पुत्र सँभालते हैं। परमायु ७७ वर्ष होती है।

(२२१६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ निश्चयी, उदार, सुन्दर, स्वस्थ तथा गुणवान होता है। इसे बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख उपलब्ध होता है। माता का अधिक तथा पिता का सुख कुछ कम मिलता है। यह आरम्भ से ही भोग-विलास प्रेमी होता है, अतः अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, सुन्दरी तथा गुणवती होती है, परन्तु वह पर-पुरुष में अनुरक्त रहती है अतः पति के साथ अधिक समय तक निर्वाह नहीं होता। वह स्वतन्त्र कार्य द्वारा आजीविकोपार्जन भी करती है। सामान्यतः इस स्त्री का स्वभाव अच्छा होता है तथा यह किसी को कष्ट भी नहीं देती। इसका धन पुत्र द्वारा नष्ट किया जाता है। यह जातक अपने उद्यम, व्यवसाय तथा योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मानित होता है। इसे किसी प्रकार की कमी नहीं रहती तथा यह सुख पूर्वक ८५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं०

कु० र०

(२२१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उदार, चौर्यवान, मितभाषी तथा उग्र स्वभाव का होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा सुयश प्राप्त करता है तथा राजकीय-सेवा में रहकर यश तथा धन उपलब्ध करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु वह लंबे समय तक बीमार रहती है, अतः जातक को दाम्पत्य-सुख की सम्यक् उपलब्धि नहीं होती, तथापि यह उसकी सेवा में लगा रहता है। २६-२८ वर्ष की आयु में ही इसे पत्नी-वियोग का दुःख उठाना पड़ता है। फिर यह दूसरा विवाह करता है तथा उससे भी विशेष सुख नहीं मिलता, परन्तु सन्तान होती है, जो आगे चलकर जातक को कष्ट ही देती है। इस जातक को देशान्तर में सम्मान प्राप्त होता है तथा वहीं रहकर यह पर्याप्त यश तथा धन अर्जित करता है। ४१ वर्ष की आयु में छः मास तक यह कष्ट भोगता है। परमायु ६३ वर्ष होती है तथा मृत्यु कहीं मार्ग में ही होती है।

(२२१८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर, वीर, ज्ञानी, साहसी तथा लोक-पूज्य होता है। यह उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर कार्य करता है तथा अपने प्रताप से शत्रुओं को पराजित कर देता है। इसे अपने माता-पिता से सुख प्राप्त होता है। इसकी उन्नति में वे बहुत योग देते हैं। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत महत्वाकांक्षिणी होती है तथा अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्र रूप से प्रतिष्ठित करती है। वह जातक के साथ थोड़े ही समय तक रहती है, फिर वह परिस्थिति वशात् अलग रहना आरंभ कर देती है। इस जातक को सन्तान भी बड़े कष्ट से प्राप्त होती है, जो संभवतः कन्या होती है। इस जातक को राजकीय-सेवा द्वारा धन का लाभ होता है तथा दीर्घकालीन सेवा में यह उन्नति करता हुआ उच्च पद पर जा पहुँचता है। सामान्यतः सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताते हुए यह ८१ वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(२२१९) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, मधुरभाषी, युक्तियुक्त-वचन बोलने में सिद्धहस्त, मध्यमकद, कुछ स्थूल शरीर, गोल मुँह, बड़ी आँखें, उन्नत ललाट तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर, सरल, परन्तु मूर्खा होती है। वह आत्मकेन्द्रित तथा स्वार्थपरता के लिप्त होने के कारण स्वयं भी बहुत दुःख उठाती है तथा जातक की चिन्ता का कारण भी बनती है। यह जातक २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है तथा शीघ्र ही उन्नति करता चला जाता है। ३५, ३९, ४२, ४४, ४८, ५१ तथा ५६ वें वर्ष विशेष फलदायक होते हैं। प्रथम पदोन्नति २८ वर्ष की आयु में होती है। इसे कार्यवशात् बाहर भी रहना पड़ता है तथा यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। यात्राओं से धन-लाभ होता है। यह धर्म तथा लोक-कल्याण संबन्धी कार्यों के लिए धन का दान भी करता है। इसके पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ६५ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२२२०) – इस जन्माङ्ग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, साहित्य-संगीत का मर्मज्ञ, कवि तथा बाल्यावस्था में कष्ट पाने वाला होता है। इसे बड़ी आयु में सुख मिलता है। यह राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में २४ वर्ष की आयु से सम्बद्ध होता है और सम्मानित किया जाता है। २९ वर्ष की आयु में ही पदोन्नति हो जाती है। ३५, ४० तथा ४६ वें वर्ष बहुत सुखकर रहते हैं। इस आयु तक धन की कोई कमी नहीं रहती। यह बाहरी स्थानों से भी संबन्ध रखता है तथा वहाँ से भी धन कमाता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी, सुन्दरी, विदुषी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली तथा अपनी धुन की पक्की होती है। उसके कारण जातक को धन का बहुत नाश होता है, क्योंकि वह प्रायः रुग्ण बनी रहती है। २६ तथा ४८ वें वर्ष में स्वयं भी कष्ट पाता है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

भु० सं० ४५३३

(२२२१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सहृदय, उदार, शौकीन स्वभाव का, लम्बे कद तथा कुछ स्थूल शरीर वाला, साहसी, दृढ़निश्चयी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अच्छे मकान में रहने तथा सुन्दर वस्त्र पहनने का शौकीन होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, अभिमानिनी तथा सदैव सन्तुष्ट रखने वाली होती है। वह अत्यंत महत्वाकांक्षिणी होती है। धन की उसके पास भी कोई कमी नहीं रहती। वह सुन्दर पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है तथा परिवारीजनों को सन्तुष्ट बनाये रखती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा आजीविका अर्जित करता है तथा २६ वर्ष की आयु से ही धन कमाता है। ४०, ४२ वर्ष की आयु तक यह एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के रूप में प्रसिद्धि पा लेता है। ५६ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। यशस्वी जीवन बिताता हुआ ६५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२२२२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर का, उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, प्रफुल्लित आकृति वाला, उदार, दूसरों के दुःख में दुःखी तथा पराये कामों में सुख का अनुभव करने वाला होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं की जानकार, राजसी स्वभाव वाली, उदार, कुटुम्ब-परिवार के दायित्वों का निर्वाह करने वाली तथा जातक को सुख देने वाली होती है। यह जातक अपने मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों से सहयोग एवं सुख प्राप्त करता रहता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का भी लाभ होता है। राजकीय-सेवा, व्यवसाय तथा अपने अन्य गुणों के द्वारा इसे धन का लाभ होता रहता है। ४२ वर्ष की आयु में यह उच्चपद प्राप्त करता है। सन्तानें कम होती हैं। जीवन के ३६, ४२, ४८, ५६, ५९ तथा ६५वें वर्ष बहुत अच्छे सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

कु० १०

(2223)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वभाव से उग्र, सहज क्रोधी, तथापि मन के उदार, विपत्ति में पड़े लोगों की सहायता करने वाला, अपने साथियों के लिए चिन्तित रहने वाला, दूसरों के लिए कमाने वाला तथा धन के लिए तनिक भी लोभ न रखने वाला होता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा जातक के मनोनुकूल आचरण वाली होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। इसे सन्तान से कष्ट होता है। वह मनमाना आचरण करने वाली तथा जातक को सुख न देने वाली होती है। इस जातक को राज्य से लाभ होता है तथा परदेश में भ्रमण करके यह ख्याति तथा धन अर्जित करता है। देशान्तर में नीच व्यक्तियों के संसर्ग से भी इसे धन-लाभ होता है। यह अपने धन को धार्मिक कार्यों तथा लोकहित आदि में भी खर्च करता है। परमायु 76 वर्ष होती है।

(2224)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अपना सुन्दर, अपने व्यवहार एवं गुणों द्वारा सबको प्रसन्न करने वाला, लोक विख्यात, दूसरों का कार्य करके आनन्दित होने वाला तथा सेवाकार्यों द्वारा आत्म सन्तुष्टि का अनुभव करने वाला होता है। परन्तु इसे हमेशा ग़लत समझा जाता है। धनहीन-योग होने पर भी यह धन-हीन नहीं होता। यह बहुत धनी होता है, परन्तु धन के प्रति इसका कोई लगाव नहीं होता। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से से सुख मिलता है, परन्तु 60 वर्ष की आयु तक उससे वियोग भी हो जाता है। सन्तान से भी अपेक्षित सुख नहीं मिलता। यह राजकीय-सेवा कर सकता है तथा इसे राज्य से लाभ भी होता है। 26 से 28 तथा 48 से 50 वें वर्ष तक यह धन-हीन रहता है। तथापि इसके रहन-सहन में कोई अन्तर नहीं आता। परमायु 75 वर्ष होती है।

सं० भु० १२-१४

कु० २०

(२२२५)- इस जातक का स्वभाव कुछ उग्र तथा क्रोधी होता है। यह अधिकार पूर्वक कार्य करने का अभ्यस्त सा होता है। जो व्यक्ति इसकी बात नहीं मानता, उससे असंतुष्ट हो जाता है, किन्तु मन में उसके प्रति कोई द्वेष नहीं रखता। इसको २१-२२ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा से सम्बद्ध होने का अवसर मिलता है। यह पुलिस, सेना अथवा अनुशासन से संबंधित किसी अन्य विभाग में उच्च पद प्राप्त करता है। इसे देशान्तर में रहकर उन्नति प्राप्त होती है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सुख तथा सन्तोष की प्राप्ति होती है। पत्नी संगीत-कला आदि में निपुण, सर्वत्र सम्मान पाने वाली तथा जातक के भाग्य की वृद्धि करने वाली होती है। यह जातक ३५ वर्ष की आयु में बहुत उच्च पद पर पहुँच जाता है। सन्तान से अपेक्षित सुख नहीं मिलता। पूर्णायु ८६ वर्ष होती है।

(२२२६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, दृढ़ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सम्पत्तिशाली, धन-संचयी तथा सब प्रकार के सुख पाने वाला होता है। यह राजाओं के समान ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करने वाला, भोगी, विलासी, सुन्दर तथा उदार हृदय वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी उदार, सुन्दर, धन का संचय करने वाली तथा पति को सुख देने वाली होती है। इस जातक को २३ वर्ष की आयु में राज्य से लाभ होता है तथा यह राजकीय-सेवा में रहकर उन्नति प्राप्त करता है। इसे राज्य से, पिता से तथा भूमि से निरन्तर लाभ होता है। इसके पास भू-सम्पत्ति बहुत होती है। यह अपने कार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करता है। ४२ वर्ष की आयु में बहुत धनी तथा सम्मानित हो जाता है। ५६वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है तथा परमायु ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

सं. भू०

कु० १०

(२२२७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गंभीर स्वभाव का, परोपकारी, उदार, श्रेष्ठ मित्रों वाला तथा अपने सद्व्यवहार के कारण लोकप्रिय होता है। इसकी वाणी में बड़ा आकर्षण होता है। यह जन-सेवा के कार्यों से सुखी होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है तथा २३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा प्राप्त होती है। यह साहित्य का सर्जक एवं ग्रंथ-लेखक भी होता है। इसकी पत्नी संगीतज्ञा एवं कुशल वक्ता होती है। अपने मधुर व्यवहार द्वारा यह जातक को प्रसन्न बनाये रखती है। यह स्त्री धन को विशेष महत्व देने वाली तथा उसका संचय करने वाली भी होती है। यह जातक अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। देश-प्रदेश में सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जीवन के ३१, ३८, ४२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष हितकर रहते हैं। सन्तान संबंधी कष्ट होता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(२२२८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, लोक-प्रसिद्ध, अपने पौरुष से धन तथा ख्याति अर्जित करने वाला, पुरुषार्थ को ही भाग्य समझने वाला, स्वभाव से कोमल, तथापि जरा सी बात पर ही क्रुद्ध हो जाने वाला एवं अपने कार्यों को तुरंत निपटा देने की प्रवृत्ति वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा से संलग्न हो जाता है। निरन्तर उन्नति करता हुआ ४० वर्ष की आयु में बहुत धन तथा यश प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। यह अपनी स्त्री के माध्यम से भी अब-साय करके धन कमाता है। व्यवसाय ३२ वर्ष की आयु में करता है। सेवा में पदोन्नति ४६ वर्ष की आयु में होती है। पत्नी बड़ी मनस्वी होती है, परन्तु सन्तान के कारण कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता हुआ यह जातक ७६ वर्ष से अधिक की परमायु प्राप्त करता है।

भू० सं०

कु० र०

(2229) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पुरुषार्थी, अनेक विद्याओं का जानकार, गुणी, पुरुषार्थी, काव्य-साहित्य में रुचि लेने वाला, सुवक्ता तथा अपने परिश्रम द्वारा धन कमाने वाला होता है। अपने गुणों के कारण इसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। यह व्यवसाय द्वारा भी धनोपार्जन करता है। इसका विवाह 25-26 वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय भी होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा तथा अन्य साधनों से भी धन कमाता है। इसे हिसाब-किताब संबंधी किसी विभाग अथवा प्रतिष्ठान में उच्चपद प्राप्त होता है। 40 वर्ष की आयु में इसकी पदोन्नति होती है। पति-पत्नी की रुचियों में भिन्नता पाई जाती है तथापि मतभेद नहीं होता। पत्नी स्वतंत्र स्वभाव वाली तथा अलग से धन कमाने वाली होती है। सन्तान से कष्ट मिलता है। पूर्णायु 80 वर्ष होती है।

(2230) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सिंह के समान पराक्रमी, अपने अध्यवसाय तथा परिश्रम द्वारा विपुल धन एवं यश प्राप्त करने वाला तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी को कफ-सर्दी का रोग कष्ट देता है। जातक 23 वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है। इसे बाल्यावस्था में माता-पिता का सुख नहीं मिलता। पालन-पोषण कहीं अन्यत्र होता है तथा वहीं रह कर यह अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल संपत्ति अर्जित करता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। बाल्यावस्था के बाद इसे कभी कष्ट नहीं होता। यह अपने परिवार का पालन-पोषण भी करता है। धर्म-कर्म में भी धन खर्च करता है। सन्तानें सुखी तथा सुख देने वाली होती हैं। देश-देशान्तर की यात्राओं से लाभ होता है। परमायु 73 वर्ष के लगभग होती है।

(२२३२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, गुणवान, चतुर, पुरुषार्थी, मन की बात को प्रकट न होने देने वाला, निर्भय तथा अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था में पिता का सुख नहीं मिलता, परन्तु बाद में स्वयं समर्थ होकर परिवार का पालन करता है। इसे विवादों में भी पड़ना होता है, उससे इसे धन की आय होती है। यह २३ वर्ष की आयु में राजकीय कार्यों द्वारा धन कमाने लगता है। राजकीय-सेवा के कारण बाहर भी रहना पड़ता है। नीच लोगों की सेवा तथा संगति से भी इसे धन प्राप्त होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी से सुख मिलता है। पत्नी की बीमारी इसे कुछ चिन्तित भी बनाये रखती है। यह जीवन पर्यन्त ऐश्वर्यशाली बना रहता है तथा आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। संतानों से सुख मिलता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२२३२२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, चतुर, अपनी योग्यता से सर्वत्र सम्मान पाने वाला तथा पुरुषार्थी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनचिन्ती तथा मनोनुकूल मिलती है, परन्तु जातक को उसका साथ अथवा सुख अधिक समय तक प्राप्त नहीं होता। इसकी संतानें बहुत पुरुषार्थी होती हैं और वे अपने पारिवारिक दायित्वों का सफलतापूर्वक पालन करती हैं। इस जातक को भाग्य से किसी ऐसी स्त्री का लाभ मिलता है, जो इसे बहुत ऊँचा उठाती है तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती है। ४० वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक सुख, धन तथा ऐश्वर्य की उपलब्धि होती है। ५२ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। ५६ वर्ष की आयु में भूमि आदि के रूप में अचल-सम्पत्ति प्राप्त होती है। परमायु लगभग ८३ वर्ष होती है।

भू० सं० 2278

कु० १०

(2233)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गंभीर, उदार, उच्च भावनाओं वाला तथा बुद्धि-बल में विचक्षण होता है। इसे राज्य, समाज तथा बन्धु-बान्धवों से विशेष सम्मान मिलता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में सुन्दरी, मधुर भाषिणी तथा व्यवहार-कुशला कन्या के साथ होता है। 26 वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से सम्बद्ध होता है। यह प्रदेश की यात्रायें करके भी आजीविकोपार्जन करता है। इसकी उन्नति के द्वार सब ओर खुले रहते हैं। इसकी पत्नी भी स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है तथा अपना अलग कार्य-क्षेत्र बनाती और धनोपार्जन करती है। पुत्र सुयोग्य तथा सुख देने वाले होते हैं। धन तथा सम्मान से युक्त यह जातक सुखी-जीवन बिताता है। आयु के 31, 38, 42, 46, 52 तथा 58वें वर्ष विशेष लाभ प्रद सिद्ध होते हैं। परमायु 76 वर्ष होती है। 58 वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होना सम्भव है।

(2234)- इस जातक का स्वभाव गंभीर होता है। यह मध्यम कद तथा पतले शरीर का, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, नीतिज्ञ तथा सफलता का निश्चय हो जाने पर ही किसी काम में हाथ डालने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में माता द्वारा एक प्रकार से त्याग दिया जाता है। इसका पालन-पोषण किसी अन्य स्थान में होता है। जहाँ पलता है, वहाँ के लिए बहुत भाग्यशाली सिद्ध होता है तथा उस घर को सम्मान भी दिलाता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। धन, सम्मान प्राप्त करता हुआ यह बहुत सुखी जीवन बिताता है। धर्म-कर्म तथा समाज-सेवा संबंधी कार्यों में यह उदारता पूर्वक खर्च करता है तथा इसे स्वर्गीय उपहारादि की प्राप्ति होती रहती है। सन्तान विलम्ब से होती है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(2235) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, लम्बे मुख, बड़ी उ. . वाला, किंचित स्थूल शरीर तथा चौड़े मस्तक वाला होता है। इसका जन्म पिता के परोक्ष में होता है तथा यह काफी समय तक पिता से अलग भी रहता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन, सम्मान अर्जित करता है। इसका विवाह 21-26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुर भाषिणी, सबको प्रसन्न रखने वाली तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा जातक को आय के नये स्रोत देने वाली सिद्ध होती है। इसके कन्याएं अधिक तथा पुत्र कम होते हैं। 25 वर्ष की आयु तक यह जातक बहुत धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। इसे भूमि से बहुत लाभ होता है। अपने घर से दूर रहकर यह यश तथा धन विशेषरूप से उपार्जित करता है। राजकीय - सेवामें जाने पर इसे अच्छे पद की उपलब्धि होती है। परमायु 68 वर्ष होती है।

(2236) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बहुत सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर का, लम्बे कद का, सर्वप्रिय तथा सबको सुख देने वाला होता है। इसका विवाह 22-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, काव्य - संगीत का ज्ञान रखने वाली, रत्नादि में निपुण, अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के कारण सम्मान प्राप्त करने वाली तथा जातक को सुखी रखने वाली होती है। इस जातक को पैतृक - सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती, तथापि माता - पिता का सुख मिलता है। इसका भाग्योदय किसी स्त्री के द्वारा होता है। यह किसी स्त्री के कार्यों को करके अपने जीवन में बहुत उन्नति प्राप्त करता है। इसे राज्य द्वारा भी बहुत लाभ होता है। 28 से 51 वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है, तत्पश्चात् यह तीर्थयात्राएं करता तथा धर्म - कर्म, दान - पुण्य आदि में धन खर्च करता है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(२२३७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी महत्वाकांक्षी, सुन्दर, किंचित् उग्र स्वभाव का तथा अपने इसी स्वभाव के कारण स्वजनों को भी रुष्ट कर लेने वाला होता है। तथापि योग्यता तथा गुणों के कारण यह विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त करता है। घर से बाहर इसे अधिक ख्याति तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह अपने मित्रों तथा परिजनों के लिए धन का व्यय भी खूब करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है। जातक उससे प्रेमपूर्वक रहा करता है. तथापि यह अन्य स्त्रियों में भी अनुरक्त रहता है। पत्नी के प्रभाव से इसे सम्मान भी मिलता है। ३४ वर्ष की आयु में यह विशेष धन तथा ख्याति अर्जित करता है। देशान्तरों में पर्यटन करके लाभ उठाता है। ज्ञान-पिपासु होता है तथा धर्म-कार्य में भी रुचि रखता है। ५६ तथा ६७ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२३८) - इस जातक का स्वभाव गम्भीर होता है। यह सुन्दर, अध्ययनशील तथा उद्यमी होता है। यह अपने उद्योग के बल पर ही आगे बढ़ता है। माता-पिता का सुख प्राप्त करते हुए भी यह उनसे कोई सहायता नहीं लेता। २१-२२ वर्ष की आयु में ही यह अपना स्वतन्त्र कार्य स्थापित कर लेता है तथा उससे पर्याप्त धन कमाता है। बाहरी यात्राओं द्वारा भी इसे बहुत लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, नृत्य-गायनादि में कुशल, पति को सुख देने वाली तथा धन का संचय करने वाली होती है। पुत्र बड़ा यशस्वी, योग्य तथा माता-पिता के यश की वृद्धि करने वाला होता है। ३८ तथा ५६ वें वर्ष में कुछ शारीरिक कष्ट होता है। शेष जीवन स्वस्थ रहते हुए सुख से बीतता है। जीवन के २६, २८, ३४, ४२ तथा ५३ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(2239)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नत ललाट वाला, मनस्वी तथा कुछ उग्र स्वभाव का होता है। यह सब लोगों को अपने अनुशासन में रखने का प्रयत्न करता है, तथापि उच्छृंखल नहीं होता। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं की जानकार, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा अपने व्यवहार से परिवारीजनों से सम्मान पाने वाली होती है। इस जातक को किसी अन्य व्यक्ति का कार्य करने से विशेष लाभ होता है। 30 वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। अपने किसी मित्र अथवा परिजन की सहायता द्वारा इसे आकस्मिक रूप से भी धन का विशेष लाभ होता है। इसमें धन-संचय की प्रवृत्ति पाई जाती है। परन्तु यह खर्च भी खूब करता है। पराई सहायता करना इसे अच्छा लगता है। इसके पुत्र सुयोग्य तथा यशस्वी होते हैं। परमायु 76 वर्ष होती है।

(2240)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नत ललाट वाला, बड़े-बड़े नेत्रों तथा घुँघराले केशों वाला, मध्यम कद का एवं संगीत आदि कलाओं का शौकीन होता है। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। इसकी आय के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। यह कोई व्यवसाय करता है, उसी में सफलता पाता है। इसके व्यवसाय भी कई होते हैं। यह अपने बुद्धि-बल तथा चातुर्य से धन कमाता है। यह चिकित्सा-कार्य भी कर सकता है। 26 से 54 वर्ष की आयु तक इसके पास धन का निरंतर आगमन होता रहता है। बाद में यह स्वयं ही धनोपार्जन से विरक्त-सा हो जाता है, फिर भी धन आता ही रहता है। इसके पुत्र व्यवहार-कुशल, सुखी, सुशील तथा धनी होते हैं। इसकी परमायु 80 वर्ष होती है।

<u>(22481)</u> - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आचार-व्यवहार से युक्त, शान्त स्वभाव का तथा अपने व्यक्तित्व से सबको आकर्षित करने वाला होता है। यह पैतृक-व्यवसाय द्वारा प्रारम्भ से ही धनोपार्जन करता है। मध्यम शिक्षा प्राप्त कर यह अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह प्रतिष्ठित कर लेता है। यह चिकित्सक हो सकता है तथा चिकित्सा-व्यवसाय द्वारा बहुत धन भी कमाता है। इसका विवाह 25-26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वयं भी धनोपार्जन करने वाली, सुन्दरी तथा विदुषी होती है। विवाह होते ही जातक का भी भाग्योदय होता है। इसे अतुलनीय धन की उपलब्धि होती रहती है। अतः यह न तो कभी कोई दुःख पाता है और न इसको कोई कष्ट हो सकता है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। 58 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट होता है। पूर्णायु 73 वर्ष होती है।

<u>(22482)</u> - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद तथा पतले शरीर का एवं स्वभाव से सौम्य होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त होती है। अपने स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा यह बहुत धन कमाता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्वी, मनोनुकूला तथा जातक को अपने अनुगत रखने में सफल होती है। उसकी सम्मति के बिना जातक कोई कार्य नहीं करता। 29 वर्ष की आयु में इसे बहुत धन का लाभ होता है। इसी आयु में यह कोई नवीन कार्य भी करता है। यह स्वभाव से कृपण होता है। इसका धन पत्नी के हाथ में रहता है। इसके पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा पिता की सेवा और सहयोग करने वाले होते हैं। यह जातक 45 से 56 वर्ष की आयु तक बहुत धन कमाता तथा प्लॉट, मकान, वाहन आदि की उपलब्धि करता है। परमायु 79 वर्ष से अधिक होती है।

(2243) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, लम्बे मुख, बड़ी-बड़ी आँखों तथा कुंचित ललाट वाला, पतले शरीर का होते हुए भी स्वस्थ एवं अधिक बोलने वाला होता है। यह एक प्रकार से वाणी का अपव्यय करता है। इसका विवाह 20-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी प्रभावशालिनी, सुन्दरी तथा अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाली होती है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है तथा पत्नी भी किसी प्रतिष्ठान में सेवा-रत होकर धन कमाती है। 55 वर्ष की आयु में यह जातक विपुल सम्पत्ति का स्वामी हो जाता है तथा पति-पत्नी दोनों ही अत्यधिक ख्याति भी अर्जित करते हैं। इसके पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा उच्च स्थिति पाने वाले होते हैं। वे वृद्धावस्था में पिता को सुख भी देते हैं। जातक की परमायु 71 वर्ष होती है।

(2244) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर व्यक्तित्व वाला, आत्मकेन्द्रित, अपने पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन करने वाला, राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त करने वाला एवं उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर समाज में यश-सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। इसी आयु से यह धनोपार्जन भी आरम्भ करता है। 28 वर्ष की आयु में इसकी पदोन्नति होती है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर की, सदैव साथ देने वाली, अनेक कार्यों का स्वयं संचालन करने वाली, विद्वान्, समाज में सम्मानित तथा धनोपार्जन करने वाली होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सुयोग्य तथा अनुकूल होते हैं। 31, 42 तथा 46 वें वर्ष में जातक को शारीरिक-कष्ट होता है। 28, 32, 35, 41, 46, 51 तथा 58वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। पूर्णायु 79 वर्ष की होती है।

(२२४५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, पतले शरीर तथा मध्यम कद वाला होता है। इसकी वाणी बहुत प्रबल होती है, परन्तु यह अपनी वाणी द्वारा सब लोगों को प्रभावित करता है। अपने पाण्डित्य तथा सद्गुणों के कारण सर्वत्र आदर भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर की तथा अपने व्यवहार द्वारा सबको प्रभावित करने वाली होती है। यह जातक भी अपनी पत्नी के व्यक्तित्व से प्रभावित बना रहता है। इस जातक को राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह उच्चपद प्राप्त कर लेता है तथा ५६ वर्ष की आयु तक सुख तथा ऐश्वर्य के सम्पूर्ण साधन युक्त होता है। ४८ से लेकर ५६ वर्ष का समय बहुत अच्छा रहता है। ५८ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। सन्तानें दो से प्राप्त होती हैं, परन्तु सुयोग्य होती हैं। परमायु ६७ अथवा ७० वर्ष होती है।

(२२४६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अपनी वाणी तथा सफलता से सबको प्रसन्न रखने वाला एवं सर्वत्र सम्मान पाने वाला, मध्यम कद का, उन्नत ललाट तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला होता है। इसका विवाह २१-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक विषयों की जानकार, कवियित्री तथा गुणवती होती है। वह जातक को सदैव सुख देती है। अपने व्यक्तित्व के कारण सर्वत्र सम्मान तथा सुयश प्राप्त करने वाली वह महिला अपने परिवारीजनों में भी सर्वप्रिय बनी रहती है। यह जातक राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ आजीवन सुखी बना रहता है। यह दूसरों का उपकार भी करता है। गुप्तदानी भी होता है। इसे भूमि तथा भूमिगत वस्तुओं से विशेष लाभ होता है। पुत्र धनी, मानी तथा प्रभावशाली होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२४७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, श्रेष्ठ स्वभाव का, उदार, कोमल हृदय वाला, नियमोचित व्यवहारकर्त्ता तथा दृढ़निश्चयी होता है। यह अनुशासन-प्रिय तथा बड़े कार्यों को करने में रुचि रखने वाला होता है। यह अपने गुणों तथा कार्यों द्वारा लोक-हितकर्त्ता तथा भावुक स्वभाव का होता है। २२ वर्ष की आयु में ही यह किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर, उन्नति करना आरम्भ कर देता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर, परन्तु बड़े बोल बोलने वाली कुछ अहंकारिणी स्वभाव की होती है। वह जातक को अपने बन्धु-बान्धवों से अलग कर देती है अथवा स्वयं अलग रहती है। इस जातक की आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं, अतः इसे कभी धन का अभाव नहीं होता। दिन-प्रतिदिन सुख तथा धन की वृद्धि होती रहती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं और वे जातक को सुख भी पहुँचाती हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२२४८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सहिष्णु, मित्रों तथा परिजनों की सलाह मानने वाला उन्नत ललाट, विशाल नेत्र तथा आकर्षक मुखाकृति वाला होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं अतः धन की कभी कमी नहीं रहती। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी योग्य, गृहकार्य-कुशल तथा अपने गुणों से जातक को सदैव अपने अनुकूल बनाये रखने वाली होती है। पत्नी के कारण जातक पर-जीविका के विषय में निश्चिन्त बना रहता है। यह व्यवसाय में रुचि रखने वाला, राज्य से लाभ पाने वाला तथा राजकीय-सेवा में उच्चपद अथवा राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त करने वाला होता है। यह अपने परिजनों का पोषणकर्त्ता, पत्नी, जीविका तथा सन्तानों से सुख पाने वाला तथा सम्मानित-जीवन बिताने वाला होता है। ३८ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। पूर्णायु ७८ अथवा ८६ वर्ष होती है।

(२२४६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति मनस्वी, चतुर, लोकप्रिय, मध्यम कद का, गेहुँए रंग वाला तथा पतले शरीर का होता है। इसका ललाट कुछ छोटा, तथापि आकर्षक होता है। आरंभ से ही इसकी रुचि व्यवसाय में होती है और यह उसमें सफल भी रहता है, तथापि व्यवसाय के साथ ही यह २४ वर्ष की आयु में राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होता है। अनुशासन-प्रिय होने के कारण यह किसी शिक्षा संबंधी कार्य में भी संलग्न हो सकता है। यह अपने स्वभाव के कारण सर्वप्रिय होता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वतन्त्रप्रकृति की तथा अपने व्यवहार से जातक को वशीभूत करने वाली होती है। यह जातक परदेश में रहकर भाग्योन्नति प्राप्त करता है। पुत्रों से भी मान-प्रतिष्ठा तथा सुख की उपलब्धि होती है। ५६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(२२५०)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बड़ी-बड़ी आँखों वाला, उन्नत ललाट वाला, मध्यम कद, गौरवर्ण तथा सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह बहुत उदार होता है तथा प्रत्येक दीन व्यक्ति की सहायता हेतु उद्यत बना रहता है। इसे राजकीय-सेवा से संलग्न हो, अपने घर से बाहर, परदेश में रहना पड़ता है। अपने जीवन के मध्यभाग तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसे धन का लाभ निरन्तर होता रहता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। इसकी मुख्य आमदनी निजी कार्यों से ही होती है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु बहुत समय तक पत्नी से अलग रहना पड़ता है। पत्नी बड़ी मनचिन्ती, स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली तथा जातक को सुख देने वाली होती है। पूर्णभाग्योदय ४८ वर्ष की आयु में होता है। बहुत सुखी तथा धनी जीवन बिताते हुए ७३ वर्ष से अधिक की परमायु प्राप्त करता है।

(२२५१) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सबको अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता वाला, दीन-दुःखियों का पालक तथा परोपकारी होता है। स्त्रियाँ इसके स्वरूप पर स्वतः मोहित होती हैं। यह भूमि, भवन आदि अचल-सम्पत्ति का स्वामी, अपने अधीनस्थ लोगों से काम लेने वाला उच्च पदाधिकारी होता है। यह बाल्यावस्था से ही लाड़-प्यार तथा सुख में पलता है। इसे किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। यह राज्य में उच्च स्थिति प्राप्त करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक अत्यधिक ख्याति पा लेता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी कुछ भिन्न विचारों की होती है, तथापि पारिवारिक-दायित्वों का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। सन्तान-सुख भी विलम्ब से प्राप्त होता है। सन्तानें सुयोग्य, आज्ञा-पालक तथा सुख देनेवाली होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, परोपकारी, अनेक कलाओं का ज्ञाता एवं साहित्य-काव्य का प्रेमी होता है। अपने सरल स्वभाव के कारण यह लोगों द्वारा ठगा जाता है। फिर भी यह किसी के प्रति न तो दुर्भावना रखता है और न अपने स्वभाव से ही परिवर्तन लाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार तथा कुछ अहंभावी होती है। वह अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करती है तथा पति के क्रिया-कलापों को अच्छा नहीं समझती। इस जातक का भाग्योदय ४८ वर्ष की आयु में होता है। यह राज्य में तथा अन्यत्र सभी स्थानों पर उच्च सम्मान प्राप्त करता है। ६८ वर्ष की आयु में यह हर प्रकार की सफलता प्राप्त कर लेता है। इसे गुप्त कार्यों तथा आकस्मिक स्रोतों से भी आमदनी होती है। संतान हेतु कष्ट रहता है। ६४ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

भु० सं० ३०७८

कु० र०

(२२५३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य एवं काव्य-सर्जक तथा सबको प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला होता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा ऐश्वर्य की वृद्धि हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। यह मधुर भाषी होने के साथ ही अपने पाण्डित्य, शील तथा शारीरिक-क्षमता से सबका मन मोहित कर लेता है। यह बाल्यावस्था में कष्ट भोगता है, परन्तु युवावस्था से वृद्धावस्था तक सुखी बना रहता है। यह राजकीय-सेवा से संलग्न होकर परदेश-गमन करता है तथा वहाँ यथेष्ट सम्मान प्राप्त करता है। ३३ तथा ४८ वर्ष की आयु में यह अपने नये कार्य आरंभ करता है तथा पर्याप्त धन कमाता है। इसे भूमि संबंधी कार्य, नौकर एवं सेवकों द्वारा लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। ५२ वर्ष की आयु में कुछ बीमारी होती है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२२५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा कष्ट-सहिष्णु होता है। यह बड़े-से-बड़े संकट के समय भी धैर्य धारण किए रहता है। यह बाल्यावस्था में कष्ट भोगता है तथा अपने परिश्रम का पूर्ण लाभ नहीं पाता। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। विवाह के बाद ही भाग्योदय भी होता है। राजकार्य द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानें भी सुयोग्य तथा सुखदायक होती हैं। धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं रहती। ४१ से ४८ वर्ष की आयु तक का समय बहुत अच्छा रहता है। इस अवधि में धन-धान्य की खूब वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में इसका मन धर्म-कर्म में बहुत लगता है। यह तीर्थयात्राएँ करता तथा धार्मिक कार्यों में धन खर्च करता है। ५५ वर्ष की आयु में कुछ हानि होती है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२२५५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल, बुद्धिमान, उदार तथा लोक में अपने श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह खूब धन कमाता है तथा खर्च की भी अधिकता बनी रहती है। इसे भोग-विलास तथा ऐश्वर्य में बड़ी रुचि होती है तथा इसके लिए धन बहुत खर्च होता है। इसे ब्याज तथा किराये आदि से बहुत आमदनी होती है। यह अचल-सम्पत्ति का स्वामी भी होता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्योदय करने वाली होती है। विवाहोपरान्त बहुत लाभ मिलता है। यह राजकीय-सेवा में रह कर देशान्तर की यात्राएं करता है। यात्राओं में ही इसका समय अधिक बीतता है। ३४ वर्ष की आयु में यह पहले काम को छोड़कर दूसरा काम आरम्भ करता है। उसमें बहुत उन्नति भी करता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। संतानें अति सुयोग्य होती हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२२५६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, अपने कार्यों को बड़ी लगन से करने वाला तथा उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। यह अपने वैभव तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि करता रहता है। बाल्यावस्था में भी यह अनेक यात्राएं करता है तथा बड़े होकर कार्यवश यात्राएं करता ही रहता है। यह ईश्वर भक्त होता है तथा धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेता है। साधारणतः यह पुलिस अथवा सेना विभाग में कार्य करने वाला शासनधारी अधिकारी होता है। ३८ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान मिलता है तथा ४५ वर्ष की आयु में कोई विशेष उत्तरदायित्व पूर्ण पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत योग्य तथा सुन्दरी होती है। वह अपनी योग्यता से अतिरिक्त सम्मान प्राप्त करती है। यह जातक सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ ७३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भू० सं०

(२२५७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, धन का संचय करने वाला, कृपण, मितव्ययी तथा अपने व्यवसाय की वृद्धि में निरन्तर प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। यह काव्य, कला तथा संगीत का शौकीन भी होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है तथा अपने परिश्रम, सद्गुण एवं कार्यों द्वारा उन्नति एवं पदोन्नति प्राप्त करता है। इसके जीवन का अधिकांश भाग राजकीय-सेवा में व्यतीत होता है। विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी सुन्दरी तथा अपने गुणों के कारण लोक में यश पाने वाली होती है। वह लोक-कल्याण संबंधी कार्यों में बहुत समय लगाती है। पुत्र-पुत्रियाँ भी सुयोग्य होती हैं। वृद्धावस्था में वास्तविक सुख मिलता है। ४६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। वात-विकार होना संभव है। सफलता पूर्ण जीवन बिताते हुए यह ८५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२५८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, ज्ञानी, बुद्धिमान तथा भाग्यशाली होता है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है। इसे उच्चशिक्षा प्राप्त होती है तथा २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से संयुक्त हो, निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। अपने गुणों तथा योग्यता के कारण इसे सर्वत्र सफलता एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। ५१ वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नत स्थिति प्राप्त कर लेता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाह के बाद ही भाग्योदय भी होता है। यह जातक घर के कामों की ओर बहुत कम ध्यान दे पाता है। पत्नी ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करती है। इसकी दो कन्याएँ बहुत योग्य होती हैं। प्रौढ़ावस्था में एक पुत्र भी होता है, वह भी सुयोग्य तथा होनहार होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

कु० र०

भू० सं० ४०३३

कु० २०

(२२५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, कार्यकुशल, कलाओं का ज्ञाता एवं साहित्य तथा काव्य में रुचि रखने वाला होता है। यह एक ओर तो भोग-विलास में विशेष रुचि रखता है, दूसरी ओर दार्शनिक वृत्ति का भी होता है। यह शीघ्र ही दुनियाँ के माया-मोह से मुक्त होकर धर्म-कर्म में रुचि लेना आरंभ कर देता है। यह धन-सम्पन्न होता है। इसकी आमदनी खूब होती है तथा खर्च भी खूब होता है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से भी संलग्न होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। ४० वर्ष की आयु में यह स्थान-परिवर्तन करता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे धन, मान-प्रतिष्ठा का विशेष लाभ होता है। धनागम होते हुए भी इसके पास धन का संचय नहीं हो पाता। यह पैतृक-सम्पत्ति में भी बहुत कम वृद्धि कर पाता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। संतानें श्रेष्ठ होती हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२२६०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अनुशासन-प्रिय, सुन्दर, क्रूर-कर्म करने वाला, साथ ही उदार भी होता है। यह राजकीय सेवा में २३ वर्ष की आयु में संलग्न होता है। पुलिस-विभाग में काम करना अधिक संभव है। यह अपने व्यवसाय से बहुत उन्नति करता है। इसके कार्यों की सर्वत्र सराहना की जाती है। परन्तु यह धन के प्रति बहुत लालसा रखता है तथा भोग-विलास में संलग्न बना रहता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी मनोनुकूल मिलती है। उसके प्रति अत्यधिक प्रेम रखते हुए भी यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। ४८ वर्ष से ५० वर्ष की आयु तक इसे शारीरिक-कष्ट का शिकार रहना पड़ता है। पुत्र धनी-मानी तथा सुयोग्य होते हैं। वे इसे सुख भी देते हैं। सफल जीवन बिताते हुए यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० २२६१

कु० २०

(२२६१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, अनेक विषयों का ज्ञाता, मनस्वी, परन्तु उग्र स्वभाव का एवं अत्यधिक क्रोधी होता है। यह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अनैतिक कार्य करने में भी नहीं हिचकिचाता। यह अनुशासन-प्रिय होता है तथा राजकीय-सेवा में उच्चपद पर कार्यरत हो, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को नियन्त्रण में रखने में सक्षम होता है। इसे बाहरी लोगों से लाभ होता है। धन की आमदनी निरन्तर बनी रहती है। यह वैसे तो कृपण स्वभाव का होता है, परन्तु पत्नी द्वारा किए जाने वाले अनावश्यक खर्चों को भी सहन करलेता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर तथा व्यवहार-कुशल होती है। वह जातक को सुख देती है। पुत्र भी यशस्वी तथा बुद्धिमान होते हैं। वे जातक के जीवन-काल में ही धनी-मानी बन जाते हैं। वृद्धावस्था सुख से बीतती है। परमायु ८२ वर्ष होती है।

(२२६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल, उन्नत कद वाला, गौरवर्ण, विशालमस्तक तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला होता है। यह सभी कार्य नीति एवं लोक-मर्यादा के विरुद्ध करता है। माता-पिता से द्वेषभाव रखता है तथा स्वच्छन्द प्रकृति का होने के कारण किसी की बात नहीं मानता। यह अपने साहस द्वारा ही अपने भाग्य का निर्माण करता है। विवाह या तो होता ही नहीं है, अथवा फिर विलम्ब से होता है। विवाह होने पर पत्नी सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं की जानकार तथा विलासी-प्रकृति की होती है। वह जातक से मतभेद रखती है तथा जातक के समान ही स्वच्छन्द-जीवन वाली होती है। पुत्र सुन्दर, सुयोग्य तथा यशस्वी होते हैं। वे वृद्धावस्था में जातक को सुख देते हैं। ५१ वर्ष की आयु में यह जातक बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ५८ वर्ष की आयु में बहुत धनी होता है। परमायु ६८ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(२२६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी इकहरा तथा लम्बे शरीर का, सुन्दर गोल मुख वाला, बड़े नेत्र तथा मस्तक वाला, पैनी दृष्टि वाला एवं दूसरों के मन की थाह लेने की क्षमता रखने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपूर्व साहसी होता है। इसे माता का सुख नहीं मिलता। यह अपने अध्यवसाय एवं परिश्रम से उन्नति करता हुआ अपनी तथा अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बहुत ऊँचा उठाता है। यह २३ वें वर्ष में राजकीय अथवा किसी अन्य उच्च प्रतिष्ठान की सेवा में नियुक्त होकर अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है तथा शीघ्र ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। २३-२४ वर्ष की आयु में ही इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्वी स्वभाव की होती है परन्तु सन्तान के कारण दुःखी रहता है। इसके पुत्र फिजूलखर्च तथा निकम्मे होते हैं। यह जातक ६८ अथवा ७३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२६४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर तथा मध्यम कद का, पढ़ने-लिखने में चतुर, सर्वदा शास्त्रादि का अध्ययन करने वाला, ज्ञान-पिपासु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न तथा सभी स्थानों पर सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी तथा व्यवहार-कुशल होती है। वह जातक की प्रतिष्ठा को बढ़ाती है तथा स्वयं भी सर्वत्र सम्मानित होती है। यह जातक ४० वर्ष की आयु में राज द्वारा सम्मान प्राप्त करता है तथा किसी उच्च राजपद पर प्रतिष्ठित होकर अपने प्रभाव से अनेक लोगों को लाभ पहुँचाता है। इसके पुत्र योग्य नहीं होते, जातक अपनी वृद्धावस्था में उनके द्वारा स्वोपार्जित धन का नाश देखता है। जातक स्वयं आजीवन धनोपार्जन करता हुआ सुखी रहता है तथा ८३ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२६५) - इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य कुछ स्थूल काय, लम्बे कद का, गौरवर्ण, तेजस्वी, बुद्धिमान, गुणवान, दार्शनिक प्रकृति का, आत्मबल तथा अपने सद्गुणों के कारण सर्वत्र आदर पाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत आदि कलाओं की ज्ञाता, कविता रचने वाली एवं बुद्धिमती होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में अर्थोपार्जन आरम्भ करता है। राजकीय-सेवा में उच्चपद प्राप्त कर अपने अधीनस्थ अनेक लोगों से काम लेता है। यह निम्न स्थिति के लोगों के कल्याण के लिए बहुत काम करता है तथा उनके द्वारा सम्मान भी पाता है। इसे निरन्तर धन का लाभ होता रहता है। यह उसे अपने तथा दूसरों के भोग-विलास में भी खर्च करता रहता है। ३० से ६२ वर्ष की आयु तक इसे पदप्राप्ति होता रहता है। पुत्रगण प्रतिष्ठा की हानि करते हैं। पूर्णायु ७२ वर्ष होती है।

(२२६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, ज्ञानी तथा अपने पाण्डित्य का अहंकार रखने वाला होता है। यह किसी संस्था में शिक्षक अथवा उपदेशक के पद पर कार्य करता है। २५ से ६७ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर धनोपार्जन करता रहता है। इसके बाद भी आमदनी में कमी नहीं आती। यह सब लोगों से प्रेम रखता है, तथापि अपने से कम सम्पत्ति वालों के बीच अपने धन का अहंकार भी रखता है। इसकी पत्नी सुन्दर तथा आकर्षक होती है। वह भी अपने रूप तथा धन का बहुत अभिमान रखती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। जातक अपनी स्त्री से प्रेम रखते हुए भी अन्य स्त्रियों से संबंधित रहता है। इसे पुत्रों से अलग रहना पड़ता है। पुत्र परदेश में रह कर धनोपार्जन करते हैं। इस जातक का जीवन सुख से बीतता है। शारीरिक-कष्ट भी कभी नहीं होता। परमायु ७४.७५ वर्ष होती है।

(२२६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्य... ..., पतले परन्तु दृढ़ शरीर वाला, लम्बे मुख का, बड़ी-बड़ी आँखों तथा छोटे मस्तक वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह कला एवं साहित्य के अतिरिक्त अन्य अनेक विषयों का ज्ञाता तथा प्रेमी तथा सब लोगों को अपने मृदु व्यवहार एवं मधुर वचनों द्वारा प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला, सुख देने वाली तथा अपने सद्गुणों के कारण घर-बाहर सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है। उसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। जातक की चल तथा अचल सम्पत्ति की वही स्वामिनी होती है। इसे दो पुत्र तथा दो पुत्रियों की प्राप्ति होती है। सन्तानों से इसे पूर्ण सुख मिलता है। वे इसके जीवन-काल में ही उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाती हैं। सुखी तथा धनी जीवन बिताता हुआ यह ७९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२२६८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ निश्चयी तथा बुद्धिमान होता है। इसका घर-बाहर सर्वत्र सम्मान होता है। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली तथा सर्वत्र आदर पाने वाली होती है। यह जातक देशाटन-प्रेमी होता है तथा इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। बाल्यावस्था में इसे बहुत समय तक माता-पिता से अलग रहना पड़ता है। वहीं रहकर यह शिक्षा तथा सम्मान भी प्राप्त करता है। युवावस्था में यह किसी उच्च प्रतिष्ठान की सेवा अथवा स्वतन्त्र कार्य द्वारा विपुल धनोपार्जन करता है। २५ से ३१ वर्ष की आयु तक सेवा-कार्य करके बाद में स्वतन्त्र व्यवसाय करता है। इसे राज्य द्वारा भी लाभ होता है। ३४, ४०, ४६, ४९ तथा ५६ वें वर्ष बहुत लाभ एवं सुख दायक सिद्ध होते हैं। पुत्र-पुत्रियां योग्य होते हैं। पूर्णायु ७९ वर्ष।

(२२६९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पतले-दुबले इकहरे परन्तु दृढ़ शरीर का, चंचल तथा आकर्षक स्वभाव वाला, सुन्दर, बुद्धिमान तथा बाल्यावस्था से ही पुरुषार्थी होता है। यह बड़ा परिश्रमी होता है। बाल्यावस्था में इसका पालन-पोषण घर से बाहर कहीं अन्यत्र होता है वहीं रहकर यह शिक्षा तथा भाग्योदय प्राप्त करता है। यह १८ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है। यह दूसरों के लिए प्रारम्भ में कार्य करता है, परन्तु फिर ३० वर्ष की आयु में स्वतन्त्र व्यवसाय स्थापित करके धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे नियमित धन-लाभ होता रहता है। ४६ वर्ष की आयु के बाद इसके पास किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती। विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुखदायक मिलती है, ४५ वर्ष की आयु के बाद एक या दो पुत्र होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२२७०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, सुवक्ता एवं अपने व्यवहार से सभी को सुखी करने वाला होता है। यह मध्यम कद, पतले परन्तु दृढ़ शरीर का, बड़ा परिश्रमी तथा व्यवहार-कुशल होता है। इसका विवाह २० या २७ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। यह जातक बचपन में अपनी माता से दूर अथवा अलग रहता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है परन्तु बन्धु-बान्धवों का सहयोग इसे मिलता है। २५ वर्ष की आयु तक यह अपना कोई उद्योग अथवा व्यवसाय स्थापित कर, उसके द्वारा धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे राज्य द्वारा भी धन-लाभ होता है। यह प्रबल भाग्यशाली होता है। ४८ वर्ष की आयु तक बहुत धन तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। ६० वर्ष की आयु तक गृहस्थी में मन लगाकर, फिर विरक्त सा हो जाता है। परमायु ७६ वर्ष से अधिक होती है।

(२२७१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदृढ़ शरीर, उग्रस्वभाव का तथा ज़रा-ज़रा सी बात पर क्रोध करने वाला होता है। यह सदैव मनमानी करता है तथा अपने पुरुषार्थ पर अत्यधिक भरोसा रखता है। इसका जन्म पिता के परोक्ष में होता है। यह अपना बचपन अपने पैतृक-निवास से अलग किसी पराये स्थान में व्यतीत करता है। वहीं अध्ययन आदि समाप्त कर २२ वर्ष की आयु में सेवा-संलग्न हो जाता है तथा २८ वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त कर विशेष प्रतिष्ठित होता है। ३५ वर्ष की आयु में पुनः पदोन्नत हो, एक से दूसरे विभाग में जाता है। स्थान-परिवर्तन भी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा इकहरे शरीर की होती है। उससे दो पुत्र तथा एक पुत्री का लाभ होता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। ६१ वर्ष की आयु में यह सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है। परमायु ७१ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२२७२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे क़द का, पतला, गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, मितभाषी तथा अपने को सदैव सुव्यवस्थिति में बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील स्वभाव वाला होता है। यह अपने उद्यम, अध्यवसाय तथा परिश्रम द्वारा बहुत धन कमाता है। यह २३ वर्ष की आयु में किसी कार्य से संलग्न हो कर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। २२-२५ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। पत्नी मनस्वी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह पति को अपने अनुकूल तथा प्रभाव में रखती है। धन-वाहन सर्वत्र और सम्मान प्राप्त होता है। इसके दो पुत्र होते हैं, परन्तु उनका सुख नहीं मिलता। सन्तान के संबंध में प्रायः कष्ट ही रहता है। ५१ वर्ष तथा ५२ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। धन की कमी कभी नहीं रहती। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२७३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक विषयों का ज्ञाता, नीतिज्ञ, चतुर, आत्मज्ञ तथा प्रतिशोधात्मक प्रकृति का होता है। यह उम्र से ज्यादा दिखाई देता है, परन्तु मित्रों से बहुत उग्र होता है। इससे दुश्मनी लेना लोग अच्छा नहीं समझते। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा घर-गृहस्थी के दायित्वों का सम्यक् निर्वाह करने वाली होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ करता है। राजकीय-सेवा में दो-तीन बार नियुक्ति प्राप्त करता है, अन्त में अपने ही उद्योग से विपुल धन कमाता है। ३८ वर्ष की आयु से ५०-५२ वर्ष की आयु तक निरन्तर धन तथा यश प्राप्त करता रहता है। इसे घर में सुख नहीं मिलता। निरंतर यात्रायें करता रहता है। यात्राओं से लाभ होता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२७४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ स्थूल-शरीर एवं लम्बे कद का, सुशिक्षित, ज्ञानी, उदार, सबका भला चाहने वाला, सरल हृदय तथा दूसरों की बातों में आ जाने वाला होता है। इसे अपनी पैतृक-सम्पत्ति से लाभ होता है। राज्य से भी लाभ उठाता है। यह कृषि सम्बन्धी कार्यों से भी धन कमाता है। यह अपने माता-पिता का पालक तथा उन्हें सुख देने वाला होता है। ३६ से ५८ वर्ष की आयु में यह बहुत धन कमा लेता है। इसका विवाह २१-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्वी होते हुए भी जातक की अवहेलना करने वाली होती है। वह बहुत साहसी तथा पति से अलग रहने में सुख का अनुभव करने वाली होती है। इसकी कन्या-सन्तान अपनी मां के साथ रहना ही पसन्द करती है। यह जातक सामाजिक दृष्टि से अच्छे न समझे जाने वाले कार्यों को करता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२२७५) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य कुछ स्थूलकाय, सुन्दर, अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाला, विद्या-बुद्धि प्रवीण तथा विद्या-सम्पत्ति का भोग करने वाला होता है। इसे अपने माता के ऊपर बहुत खर्च करना पड़ता है। यह मातृ-भक्त होने के कारण उसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति करता रहता है। इसे राज्य द्वारा आर्थिक-लाभ होता रहता है। यह धर्म-कर्म में रुचि रखने वाला तथा धार्मिक-कार्यों में खर्च करने वाला भी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल तथा स्वामी की आज्ञाओं का पालन करने वाली होती है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। यह जातक ४५ वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। पत्नी के नाम से अचल सम्पत्ति खरीदता है। पुत्र-पुत्री भी सुयोग्य तथा सम्पन्न होते हैं। सब प्रकार से सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२७६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गोल मुँह, उन्नत ललाट, बड़ी आँखों वाला, बाल्यावस्था से ही सुखभोगी, पैतृक-सम्पत्ति पाने वाला तथा माता-पिता का पूर्ण स्नेह पाने वाला होता है। इसकी माता स्वाभिमानिनी तथा गृहस्थी का संचालन अपनी इच्छानुसार करने वाली होती है। वह बड़ी व्यवहार-कुशल तथा सर्वप्रिय होती है। जातक का विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी तेजस्वी, व्यवहार-कुशल तथा घर को सँभालने वाली होती है। यह जातक २८ वर्ष की आयु में किसी खनिज-स्थान के किनारे लोहा आदि धातुओं के व्यापार से संयुक्त होकर बहुत धन कमाता है। ४८ वर्ष की आयु में यह बड़ा धनवान बन जाता है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य, सुखी तथा सम्पन्न होती हैं। ५८ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक कष्ट होता है। परमायु ६८ अथवा ७५ वर्ष की प्राप्त होती है।

(२२७७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अनेक विषयों का ज्ञाता, सुन्दर, स्वस्थ, अपने जीवन में अनेक प्रकार के काम करने वाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल धन अर्जित करने वाला होता है। इसके विचार नास्तिकता पूर्ण होते हैं। लोगों को पीड़ा पहुँचाने में इसे बाल्यावस्था से ही आनन्द आता है। अपना स्वार्थ सिद्ध करने हेतु यह किसी को कष्ट देने में तनिक भी विलम्ब नहीं करता। यह उग्र स्वभाव का, क्रोधी तथा धन-तृष्णा से युक्त होता है। दुष्ट लोग इसके गुणों का उपयोग अपने काम के लिए करते हैं। यह राजकीय-सेवा अथवा राजकीय कार्यों से भी धन कमाता है। ३० से ५८ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर धन कमाता रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसके विपरीत-विचारों वाली होती है तथा कुछ समय तक अलगाव भी रहती है। इसके कई पुत्र-पुत्रियाँ होती हैं। यह आत्मकेन्द्रित जीवन बिताते हुए ७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२७८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चालाक, बहुत साहसी, उद्यमी तथा प्रारब्ध के स्थान पर पौरुष को ही सब कुछ मानने वाला होता है। इसे मातृ-सुख बहुत ही कम मिलता है। इसकी आमदनी के साधनों में भी व्यवधान पड़ते हैं, किन्तु भाग्य का धनी होने के कारण यह सब विघ्न-बाधाओं को पार कर, आगे बढ़ता चला जाता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होता है तथा आजीवन उसी को करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के विचार जातक से नहीं मिलते, तथापि वह पति की आज्ञा-पालिका बनी रहती है एवं अपने रूप तथा गुणों से जातक को अपने प्रति आकर्षित भी बनाये रखती है। इसके केवल एक ही पुत्र होता है, जो जातक को सुख देता है। जातक के जीवन में कभी कोई शारीरिक अथवा भौतिक कष्ट नहीं होता। यह सुखी जीवन बिताते हुए ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२७९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, भोगी, विलासी तथा भौतिक एवं आत्मिक दोनों सुखों की ओर ध्यान देने वाला होता है। यह दार्शनिक बातें अधिक करता है, परन्तु भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। यह दान-पुण्य तथा भोग-विलास- दोनों में अपना धन समान रूप से खर्च करता है। इसके जीवन में अनेक स्त्रियाँ आती हैं। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली, मधुरभाषिणी तथा अनेक कलाओं की ज्ञाता होती है। इसे चल तथा अचल सम्पत्ति का प्रचुर लाभ होता है। ४८ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। २४ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा से भी संलग्न हो सकता है। यह उच्चपद प्राप्त करता है तथा पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग भी करता है। सन्तानों में एक पुत्र होता है। वह सुयोग्य होता है। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२२८०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक, ललित कलाओं का ज्ञाता तथा सुन्दरी स्त्रियों के बीच रहने का सदैव उत्सुक तथा उनका प्रेम पाने वाला होता है। यह मनोविनोद के कार्यक्रमों- संगीत, नाटक आदि में विशेष रुचि रखता है। यह बहुत अपव्ययी होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति को भी नष्ट कर देता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी मनस्विनी तथा परिवार का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। यह जातक को बहुत सुख देती है, जबकि जातक उसे उतना सुख नहीं दे पाता। पत्नी के प्रयत्न से ही जातक के घर का खर्च चलता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा समझदार होते हैं तथा वे बड़े होकर धनी तथा यशस्वी बनते हैं। जातक उनका अनुगत बना रहता है। सामान्यतः संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए यह जातक ७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, साहसी, बुद्धिमान, कला मर्मज्ञ तथा अपने ज्ञान द्वारा सबको चमत्कृत करने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय की वृद्धि करता है। २३ वर्ष की आयु में ही यह अपना नवीन व्यवसाय आरंभ करता है तथा इसके यहाँ कई लोग नौकरी करते हैं। इसे बाहरी क्षेत्रों से बहुत आमदनी होती है। यह अपने धन की वृद्धि करने में सदैव तत्पर रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी बड़ी मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षाओं वाली होती है। इसे माता से धन प्राप्त होता है, परन्तु पिता अथवा राज्य से कोई विशेष लाभ नहीं होता। इसकी संतानें सुयोग्य हैं। पत्नी से तथा सन्तान से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। जीवन के २७, ३२, ३८, ४२, ४७ तथा ५२ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२२८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, कला-संगीत का प्रेमी, मनमौजी तथा कला के प्रति पूर्ण समर्पित होता है। यह कला द्वारा ही जीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गृहस्थी का कुशल-संचालन करने वाली होती है। जातक का भाग्योदय भी विवाहोपरान्त होता है। यह पत्नी के ऊपर घर-गृहस्थी को छोड़ कर निश्चिन्त हो जाता है। इसे राज्य द्वारा धन तथा सम्मान की उपलब्धियाँ होती हैं। यह अपने बन्धु-बान्धवों का पालन भी करता है तथा उनकी विभिन्न रूपों में सहायता करता है। यह प्रायः लापरवाही का जीवन बिताता है। ४४, ४८ तथा ५६ वर्ष की आयु में इसे राज्य द्वारा विशिष्ट सम्मान प्राप्त होता है। इसके पुत्र-पुत्री सुयोग्य तथा सुख देने वाले होते हैं। इसकी वृद्धावस्था सुख से बीतती है। परमायु ७३ अथवा ७९ वर्ष होती है।

(२२८३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सरल, स्पष्टवादी, मधुर-भाषी तथा विनम्र स्वभाव का होता है। यह अपने मित्रों, परिजनों तथा बड़ों का सम्मान करता है एवं अपने व्यक्तित्व से सबको आकर्षित भी करता है। इसे २५ वर्ष की आयु में गुणवती पत्नी प्राप्त होती है। वह बहुत समझदार, गुणवती तथा पति को सुख देने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। किसी नवीन कार्य द्वारा धन का अधिक आगमन होता है। पत्नी घर-गृहस्थी के दायित्वों का समुचित निर्वाह करती है तथा जातक उनके ऊपर आश्रित सा हो जाता है। धन की निरन्तर अच्छी आमदनी होते हुए भी जातक अपने ऊपर कुछ खर्च नहीं करता। घर-गृहस्थी के कार्यों में ही उसका सब धन व्यय होता है। इसके पुत्र कम तथा पुत्रियाँ अधिक होती हैं। संतानों से सुख मिलता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी कला तथा साहित्य का मर्मज्ञ, व्यवहार-कुशल, विनम्र, मनस्वी, सुन्दर, आकर्षक-व्यक्तित्व वाला तथा सर्वत्र आदर प्राप्त करने वाला होता है। यह अपनी हानि उठाकर भी परोपकार के कार्य करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली, पूर्ण सहयोगिनी तथा घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। इस जातक को ४५ वर्ष की आयु में बहुत धन प्राप्त होता है। इसे बाहरी स्थानों से निरन्तर आमदनी होती रहती है। ५६ वर्ष की आयु में यह चल तथा अचल सम्पत्ति को प्राप्त करता है। इसकी सन्तानें योग्य तथा सम्मान बढ़ाने वाली होती हैं। उनके द्वारा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। इसकी पत्नी धन-संचय करने में कुशल होती है। सुखी तथा सम्मानित जीवन बिताता हुआ यह ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२८५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, शक्तिशाली, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, साहसी, दृढ़निश्चयी तथा शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है। यह दुःखियों की सहायता करने वाला तथा अपने धन का अधिकांश परोपकार में खर्च करने वाला होता है। इसका पिता परदेशवासी तथा भ्रमण करने वाला होता है। वह इसके ऊपर बहुत स्नेह रखता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। २५ वर्ष की आयु में यह अपने गुण, ज्ञान तथा व्यावसायिक-बुद्धि के आधार पर धनोपार्जन आरम्भ करता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक बहुत धनी हो जाता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा आज्ञा-पालिका होती है। तथापि जातक उसे सुख नहीं दे पाता, फलत: वह इसके प्रति कुछ विमुख-सी हो जाती है। संतानें विलम्ब से होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२८६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तीव्र बुद्धि युक्त, शीघ्र निर्णय लेनेवाला, लोक-कल्याण के कार्यों में रुचिवान, सरल हृदय तथा बहुत चतुर होता है। इसकी योग्यता के विषय में किसी को पूरा पता नहीं चल पाता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर की, स्वस्थ, अत्यन्त चतुर तथा जातक को अपने अनुकूल रखने वाली होती है। इस जातक को जलमार्ग द्वारा धन का लाभ होता है। इसके यहाँ अनेक लोग नौकरी करते हैं। ३५ वर्ष की आयु में यह अपने व्यापार की बहुत उन्नति कर लेता है। इसे राज्य से भी आमदनी होती है। २४-२५ वर्ष की आयु से ही यह राज्य के सहयोग से धनोपार्जन करने लगता है। इसके तीन पुत्र होते हैं। पुत्री प्राय: नहीं होती। इसके पुत्र इसके जीवन-काल में ही उच्चपद पर पहुँच जाते हैं। परमायु ७८ या ८६ वर्ष होती है।

(२२८७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति स्वार्थी, मध्यम कद का, लम्बे मुखवाला, क्रोधी, उग्र स्वभाव का तथा आवेश में आकर क्रूर कर्म करने वाला होता है। इसे बौद्धिक-कार्यों में विशेष रुचि नहीं होती। यह शारीरिक-श्रम करने वाला, साहसी, वीर तथा किसी भी कठिनाई में न घबराने वाला होता है। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी बुद्धिमती होती है और वह बड़ी चतुराई से पति तथा अन्य परिवारीजनों को अपने अनुकूल बनाये रखती है। यह जातक व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। इसे शस्त्र, भूमि, काष्ठ तथा धातु द्वारा धन-लाभ होता है। यह इन वस्तुओं से संबंधित व्यवसाय द्वारा ही धनोपार्जन करता है। ३१ से ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। तीन पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म होता है। पुत्र सुयोग्य तथा धनी होते हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२२८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, अत्यन्त उदार, स्व-कार्यदक्ष, साहित्य तथा काव्य मर्मज्ञ, कलाप्रिय, संगीत एवं नाटक में रुचि रखने वाला तथा गुणवान होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य, मोटे शरीर वाली, परन्तु पतली, स्वार्थी स्वभाव की तथा धन-संचयी होती है। वह पति के साथ रह कर उसका अनुसरण नहीं करती। यह जातक राजकीय-सेवा में उच्चपद प्राप्त करता है तथा व्यवसाय द्वारा भी धन कमाता है। भाई-बन्धु इसके अनुकूल रहते हैं। ३५ से ५८ वर्ष की आयु तक यह अपनी पत्नी तथा संतान की ओर से दुःखी रहता है तथा सन्तान या तो होती ही नहीं है अथवा बड़े कष्ट से होती है। संतान होने पर वह कष्टदायी होती है। दाम्पत्य-भाव के अतिरिक्त इसे अन्य सभी व्यवस्था रहते हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है। मृत्यु आकस्मिक रूप से होती है।

भु० सं० ७२३४

कु० २०

(२२८९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी उदार, साहसी, परोपकारी, वीर, सुन्दर, पर-दुःख-कातर तथा दीन दुःखियों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहने वाला होता है। इसका बचपन सुख में बीतता है। माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति तो मिलती ही है, अन्य सम्बन्धियों की सम्पत्ति का भी लाभ होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी चतुर, सुन्दर, आत्मकेन्द्रित, तीखे तथा क्षुद्र स्वभाव की होती है। परन्तु देखने में ऐसा लगता है, जैसे वह उच्च भावनाओं वाली बड़े विशाल हृदय की हो। यह स्त्री जातक तथा उसके अनुजों को अपने अधीन रखती है तथा स्वयं भी धनोपार्जन करती है। इसे बहुत से लोग घेरे रहते हैं तथा अपने आकर्षण से यह स्त्री को मूर्ख बनाती है। सन्तान विलम्ब से होती है। यह जातक धन-सम्पन्न होते हुए भी मात्र ६० वर्ष के लगभग की ही आयु प्राप्त करता है।

(२२९०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद का, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुरभाषी तथा अपने सद्व्यवहार से सब को सुख पहुँचाने वाला होता है। इसे साहित्य तथा काव्य से विशेष लगाव होता है। यह स्वयं भी देश-सेवक तथा असहायों का सम्मान करने वाला होता है। इसकी सौम्यता तथा उदारता प्रशंसनीय होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी, सौम्य स्वभाव की तथा सम्पर्कवर्ती जनों का मन मोहित कर लेने वाली होती है। इसे सुन्दर तथा धनी पुत्रों का लाभ होता है। इस जातक को माता-पिता का सुख लम्बी आयु तक मिलता है तथा पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि भी होती है। ३६ से ४० वर्ष की आयु में यह बहुत धन कमाता है। इसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। ५४ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। परमायु ८९ वर्ष होती है।

(२२८९१) - इस जल कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विनम्र, मध्यम कद का, पतले शरीर वाला तथा व्यवहार-कुशल होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण स्नेह मिलता है तथा पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती, मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली तथा व्यवहार-कुशल होती है। यह जातक बहुत विलासी होता है। इसका अनेक स्त्रियों से सम्पर्क रहता है। यह भोग-विलास में बहुत धन खर्च करता है, साथ ही धार्मिक-कार्यों में भी विशेष रुचि लेता है। इसे राजकीय-कार्य द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। यह उच्च पद पाता है। ३० वर्ष से ४८ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे दो पुत्र तथा एक पुत्री प्राप्त होते हैं। सभी सन्तानें सुयोग्य तथा सम्पन्न होती हैं। नीरोग जीवन बिताता हुआ यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२८९२) - इस जल कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कुशाग्र बुद्धि, व्यवहार-कुशल, अनेक प्रकार के कार्यों में दक्ष, बुद्धिमान तथा विनम्रता द्वारा अपने कार्य को सिद्ध करने में दक्ष होता है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि में बाधा पड़ती देखकर यह क्रुद्ध तथा उग्र हो जाता है। इसे धन की तृष्णा अधिक होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, आकर्षक, तेज बुद्धिमान एवं कोमल स्वभाव वाली होती है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। यह जातक देश-विदेश की यात्राओं द्वारा धन तथा यश प्राप्त करता है। यह ३० वर्ष की आयु से निरन्तर अपने तथा दूसरों के लिए व्यावसायिक यात्रायें करता रहता है। इसे कभी निर्धन अथवा दुःखी होने का अवसर नहीं मिलता। अन्यों के लिए हानिकारक सिद्ध होने वाले कार्यों से भी इसे लाभ ही मिलता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

३८३८ सं. भु०

कु० २०

(२२६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही सुखी, माता-पिता का प्रिय, दुबला, पतले परन्तु स्वस्थ शरीर वाला एवं अपने गुणों तथा व्यक्तित्व के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह २३ वें वर्ष में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है। इसका भाग्योदय भी परदेश में ही होता है। इसी आयु के लगभग इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी, परन्तु पति की ही भाँति विनम्र स्वभाव की होती है। वह जातक को सदैव सुखी रखती है तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग भी करती है। यह जातक ३५ से ५६ वर्ष की आयु तक विभिन्न स्थानों पर रहता है और परदेश में रहते हुए सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसके आर्थिक-लाभ के स्रोत अनेक होते हैं। इसे अपने अधिकारी तथा अधीनस्थ - दोनों से कष्ट प्राप्त होता है, फिर भी अपने पुरुषार्थ से सफलता पाता है। पुत्र एक ही होता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२२६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, दयालु, धार्मिक प्रकृति का, वाक्पटु, सद्गुणी तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा स्वजन, परिचित, मित्र, बन्धु-बान्धव आदि सभी को प्रभावित करने वाला तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह लम्बे शरीर का, लम्बी तथा आकर्षक मुखाकृति वाला, बाल्यावस्था में अत्यधिक सुखी तथा माता-पिता का पूर्ण स्नेह पाने वाला होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी उग्र स्वभाव की, परन्तु क्षणिक उत्तेजना वाली मिलती है। सामान्यतः वह कोमल हृदयवती, विवेकशील तथा दूसरों का कार्य करने वाली होती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। २२ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन आरम्भ करता है तथा जीवनभर उन्नति करता चला जाता है। दो पुत्र तथा दो पुत्री होती हैं। सुखी तथा नीरोग जीवन बिताते हुए यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी इकहरे शरीर का, सुन्दर, चोखा, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह अचल-सम्पत्ति, भू-सम्पत्ति एवं पैतृक-सम्पत्ति का स्वामी होता है तथा अपने उद्यम द्वारा भी अत्यधिक धन कमाता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरंभ कर देता है। परन्तु स्त्रियों के साथ भोग-विलास में यह धन को खर्च भी खूब करता है। २५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-कार्य से संलग्न होकर निरन्तर उन्नति करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक विशेष उन्नत स्थिति में पहुँच जाता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। भूमि, आग्नेय वस्तुओं आदि के व्यवसाय से इसे बहुत लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। दो पुत्र तथा एक पुत्री का योग बनता है। सन्तानें माता की विशेष अनुरागिनी होती हैं। परमायु ८० वर्ष होना सम्भव है।

(२२६६)- इस जन्म कुण्डली में अपना मनुष्य सुन्दर, उदार, संदेहशील स्वभाव का तथा उग्र कार्यों में अभिरुचि रखने वाला होता है। यह पुलिस अथवा सेना विभाग में कार्यरत होकर उन्नति करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। एक पुत्र भी बड़ा सुयोग्य होता है, तथापि अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके शारीरिक-सम्बन्ध बने रहते हैं। राजकीय-सेवा में इसे उच्चपद की प्राप्ति होती है। इसे जीवन में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा परदेश में रहता हुआ यह धन भी खूब अर्जित करता है। अपनी पत्नी से बहुत समय तक अलग रहता है। वह अपने पुत्र के पास रहती है। ५८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है, परन्तु उससे बचने के बाद यह ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२९७)-इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, वाक्पटु, उदार, अनेक कलाओं तथा विषयों का ज्ञाता तथा विभिन्न कार्य करने में रुचि रखने वाला होता है। यह विनोद-प्रिय तथा अपनी उपस्थिति मात्र से सब लोगों का ध्यान आकर्षित करने वाला होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आकर्षक व्यक्ति-त्व वाली होती है। वह जातक के भाग्योदय का कारण बनती है। २५ वर्ष की आयु तक जातक दो पुत्रों का पिता बन जाता है। फिर सन्तान नहीं होती। यह राजकीय-सेवा में उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर उन्नति करना आरम्भ करता है। २९ से ५८ वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करता हुआ विपुल धन तथा यश अर्जित करता है। वृद्धावस्था में पुत्रों से सुख प्राप्त होता है। यह नीरोग जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२२९८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी कुछ स्थूल शरीर का, विनम्र, ज्ञानी, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, अपनी विद्वत्ता के कारण सर्वत्र आदर पाने वाला तथा नेतृत्व-गुण-सम्पन्न होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। ३४ वर्ष की आयु में यह अत्य-धिक उन्नति कर लेता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह अपना गृह-स्थान छोड़ कर परदेश में रहता है तथा वहीं पर अपनी आजीविका उपार्जित करता है। इसे समाज तथा राज्य में श्रेष्ठ सम्मान प्राप्त होता है। ख्याति की सम्भावना वाले कार्यों से भी इसे लाभ होता है। ४१ वर्ष की आयु में यह किसी प्रतिष्ठित शिक्षा-संस्थान में उच्चपद प्राप्त करता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी तथा भाग्यवृद्धि करने वाली होती है। ससुराल से भी धन मिलता है। तीन पुत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। परमायु लगभग ८० वर्ष होती है।

मु० सं० २३३८

कु० २०

(२२९९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूलकाय, साहसी, उद्योगशील तथा प्रभावशाली व्यक्ति धनवान होता है। इसे बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसे पैतृक अथवा किसी सम्बन्धी की सम्पत्ति प्राप्त होती है। यह बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय-विक्रय द्वारा भी पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर, परन्तु आकर्षक व्यक्तित्व वाली, मधुर भाषिणी तथा बहुत समझदार होती है। घर में सब लोग उसकी बात मानते तथा आदर देते हैं। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। ससुराल से भी जातक को बहुत लाभ होता है। यह २३ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य से संलग्न हो धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा घर से बाहर रहते हुए जीवन में अत्यधिक उन्नति करता है। परमायु ७६ वर्ष से अधिक होती है।

(२३००) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, उन्नत कद तथा छोटे शरीर का, प्रभावशाली एवं अपनी विद्या तथा गुणों के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में माता से अलग रहता है। २३ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य से संलग्न होकर, परदेश में रहता तथा उन्नति करना आरम्भ कर देता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा गुणवती होती है। जीवन के ३६, ४२, ५१ तथा ५६ वें वर्ष में इसे बहुत धन प्राप्त होता है। इसकी पत्नी भी घर के भीतर ही न रहकर, बाहर भी कार्य करती तथा सम्मान पाती है। संतानें कम होती हैं, परन्तु जो होती हैं, वे सुख देती हैं। जीवन भर धन तथा यश का अर्जन करता हुआ एवं स्वस्थ तथा सुखी जीवन बिताता हुआ यह जातक लगभग ७५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२२३०१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुवक्ता, मध्यम कद का, गौरवर्ण कुछ लाली लिए हुए, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, विवेकी तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में सौन्दर्यशील, गुणवती स्त्री के साथ होता है। वह इसके भाग्य की वृद्धि करती है। ३१ वर्ष की आयु तक इसे तीन पुत्र एवं एक पुत्री की उपलब्धि हो जाती है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। वहीं पर यह अपना मकान आदि भी बनवाता है। यह अपने उद्योग, व्यवसाय तथा यात्राओं द्वारा पर्याप्त धन कमाता है। अपनी आयु के ४८वें वर्ष में यह कोई नया काम आरम्भ करता है और उससे बड़ा धनी हो जाता है। इसे अपने मृदु व्यवहार के कारण लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तानें भी सुयोग्य तथा सुख देने वाली होती हैं। परमायु ७० वर्ष से अधिक होती है।

(२२३०२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर, प्रभावशाली, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, हंसमुख, मितव्ययी, वाणी में कुछ तीखापन लिए, लम्बे शरीर, तीक्ष्ण दृष्टि, बड़ी-बड़ी आँखों वाला तथा तपे हुए सोने जैसे रंग का होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी चंचल स्वभाव की, विवेकशील तथा धैर्य धारण करने वाली होती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। जातक का भाग्योदय परदेश में होता है। यह २९ वर्ष की आयु में ही अपना घर छोड़कर परदेश में जा बसता है। यह बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय-विक्रय तथा आयात-निर्यात के माध्यम से अर्थोपार्जन करता है। इसकी धन वृद्धि निरन्तर होती चली जाती है। अचल सम्पत्ति भी उपलब्ध करता है। ४१ से ५३ वर्ष की आयु का समय सर्वोत्तम व्यतीत होता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

कु०
२०

(2303)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौर वर्ण, पुष्ट शरीर, मुस्कराता हुआ मुँह, बड़ी-बड़ी आँखें, उन्नत भाल तथा दृढ़ निश्चय वाला होता है। इसका बचपन बड़े सुख से बीतता है। शिक्षा भी बहुत प्राप्त करता है। इसका विवाह 21-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार, उच्च शिक्षित, मृदु स्वभाव की तथा श्रेष्ठ कार्य करके सर्वत्र सम्मान पाने वाली होती है। यह जातक 25 वर्ष की आयु से ही सेवा-कार्य में संलग्न हो, 28 वर्ष की आयु तक उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे राज्य द्वारा बहुत सम्मान प्राप्त होता है। धन तथा सम्मान की इसके पास कमी नहीं रहती। इसकी सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं और वे जातक के जीवन-काल में ही उच्च पद प्राप्त कर लेती हैं। सब प्रकार से स्वस्थ तथा सुखी जीवन बिताते हुए यह जातक 78 वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(2304)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति पुरुषार्थी, साहसी, उद्यमी तथा अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में काफी समय तक माता-पिता से अलग रहता है। 21 वर्ष की आयु में घर से बाहर जाता है। इसकी यात्राएं व्यावसायिक होती हैं। परदेश में यह अत्यधिक मान-सम्मान प्राप्त करता है। 25 वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में संलग्न भी हो सकता है। अपने गुण तथा कार्यकुशलता के बल पर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। अपने परिवारजनों के कारण इसे बहुत त्याग भी करना पड़ता है। विवाह 22-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पुरुषार्थिनी तथा विशाल हृदय की होती है। संतानें सम्बन्धी कष्ट होता है। पत्नी का साथ भी 55 वर्ष की आयु तक ही रहता है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(२३०५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, बुद्धिमान, दृढ़ निश्चयी, अत्यन्त साहसी, मध्यम कद का, गेहुंए रंग का तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह बाल्यावस्था में ही घर से बाहर रहता है। कुछ समय तक माता से भी दूर रहता है। इसे परदेश आने-जाने से बहुत लाभ होता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी भाग्य-शालिनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। जातक उससे बहुत स्नेह करता है, तथापि अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध बनाये रखता है। संतानें या तो होती ही नहीं हैं और यदि होती भी हैं तो कष्ट देती हैं। यह अपनी आयु के ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५१ वें वर्ष में बहुत उन्नति करता है। राजकीय-सेवा में भी इसे धन का लाभ होता है। व्यवसाय द्वारा भी यह अर्थोपार्जन करता है। ५८ वर्ष की आयु में शत्रु-भय होता है। पूर्णायु ८८ वर्ष होती है।

(२३०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ स्थूल तथा लम्बे शरीर का, पुरुषार्थी, विचारक, अनेक विषयों का ज्ञाता, शान्त तथा अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करने वाला होता है। इसका जीवन संघर्षमय होता है, तथापि यह अपने विरोधियों को परास्त करता हुआ, जीवन को उन्नति की दिशा में अग्रसर करता रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी, विनम्र तथा जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली होती है। वह परिवार के सम्मान की वृद्धि करती है। संतानों में एक पुत्र अथवा एक पुत्री ही होते हैं। इसे ४५ वर्ष की आयु में राज्य द्वारा बहुत लाभ होता है। देशान्तर की यात्रायें भी लाभप्रद रहती हैं। जीवन के १५, २१, २५, ३८, ४२, ५१ तथा ५८ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। संतान से सुख मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२३०७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी चौड़े मस्तक, गोल मुँह, बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बे कद तथा गौरवर्ण वाला सुन्दर, धैर्यवान्, गंभीर स्वभाव होते हुए भी विनोद-प्रिय तथा अवसर-कुशल होता है। यह भोग-विलास तथा सांसारिक सुखों का प्रेमी एवं अपने गुणों तथा विद्वत्ता के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी सुन्दरी, गुणवती, कला-मर्मज्ञा तथा जातक को अपने प्रभाव में रखने वाली अवसर-कुशला होती है। इस जातक को देशान्तरों में रहने का अवसर प्राप्त होता है। अपनी शिक्षा एवं योग्यता के कारण यह २३ वर्ष की आयु में किसी बड़े प्रतिष्ठान अथवा राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। जीवन के ३५, ३९, ४३, ४९, ५६, ५७ तथा ६५वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२३०८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गंभीर स्वभाव का, धैर्यवान, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला होता है। इसकी वाणी बड़ी आकर्षक होती है। यह अपनी मोहक वाणी से विपुल-धन प्राप्ति के साधन बना लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी एवं धन के प्रति विशेष मोह रखने वाली, धन-संचयी होती है। वह बहुत ही संशयात्मक प्रवृत्ति की भी होती है। इसके पुत्र भी सुन्दर, सज्जन, सुयोग्य तथा सम्मान की वृद्धि करने वाले होते हैं। इसके जीवन में ४८, ५३ तथा ५९वें वर्ष कष्टकारक होते हैं। सामान्यतः यह स्वस्थ बना रहता है। इसमें देश-विदेश का भ्रमण करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। अपने मित्रों तथा सेवकों को यह बहुत प्रेम करता है तथा उनकी सहायता भी करता रहता है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२३०९)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पतले शरीर का, परन्तु हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, नेतृत्व करने में सक्षम, साहित्य तथा कलाओं में रुचिवान् तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने गुणों तथा योग्यताओं के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त होने के कारण यह शासन में उच्च पद पर कार्य करता है तथा अपनी कार्यकुशलता से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २३ वर्ष से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा आजीवन कमाता रहता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूल मिलती है। यह अपने सद्‌व्यवहार एवं कार्य-कुशलता से सम्पूर्ण परिवार का मन मोहित किए रहता है। इस जातक के सन्तानें अधिक नहीं होतीं प्रायः एक या दो पुत्र ही होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२३१०)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वस्थ, सुन्दर, कुछ तेज मिजाज वाला, अपनी योग्यता एवं गुणों के प्रति निस्पृह, लम्बे कद का तथा जातक/जन्म में अपने घर से दूर किसी सम्बन्धी के यहाँ पलने वाला होता है। यह संगीत-नाटक आदि का प्रेमी, रसिक स्वभाव का तथा साहित्य-सर्जक भी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है। वह चतुर तथा वाक्‌-निपुण अपने गुणों के कारण पूजी जाती है तथा स्वयं भी अर्थोपार्जन करती है। इस जातक को राजकीय सेवा में उच्च प्रशासनिक पद प्राप्त होता है। धन की खूब आमदनी बनी रहती है और वह पारिवारिक खर्च, धार्मिक कार्य तथा भोग-विलासादि में व्यय होता रहता है। संचित नहीं हो पाता। सिपर्द एवं विवादों द्वारा अचल-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(२३११)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदृढ़ शरीरवाला, दीर्घायु, साहित्य आदि अनेक कला तथा विषयों का ज्ञाता एवं विद्वान तथा गुणवान होता है। बाल्यावस्था में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा पति को सुख देनेवाली होती है। कभी-कभी उनमें मतभेद होते हुए भी जातक उसकी सुख-सुविधा का पूर्ण ध्यान रखता है। यह जातक विलासी प्रकृति का होता है, अतः अन्य अनेक स्त्रियों से भी इसके संबंध रहते हैं। यह धन का खूब अपव्यय करता है, फिर भी धन की कोई कमी नहीं रहती। इसे २३ तथा ३८ वर्ष की आयु में अपने काम बदलने पड़ते हैं। इसे चल-अचल सम्पत्ति का भी पर्याप्त लाभ होता है। ४६ वर्ष की आयु में इसे शारीरिक-कष्ट होता है, जिसमें धन भी अधिक खर्च होता है। एक पुत्र होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३१२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार स्वभाव का तथा दीन-दुःखियों के प्रति शीघ्र ही दयार्द्र हो जाने वाला होता है। यह परोपकार हेतु सदैव तत्पर बना रहता है। यह ज्ञानी तथा विद्वानों को दान देने में तथा परिवार का खर्च चलाने में अपना धन खर्च करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। दो पुत्र तथा एक पुत्री का योग होता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा प्रचुर सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। किसी अन्य व्यक्ति के साथ काम करके भी इसे धन का लाभ होता है। ५८ वर्ष की आयु में इसके पास धन-सम्मान की कोई कमी नहीं रहती। २८ वर्ष की आयु में कुछ समय तक शारीरिक-कष्ट रहता है। संतानें योग्य तथा सुख देने वाली होती हैं। वृद्धावस्था सुख से बीतती है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

भु० सं०

कु० र०

(2323) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थिर चित्त वाला, अपने अध्यवसाय द्वारा उन्नत होकर मान-प्रतिष्ठा पाने वाला, स्वस्थ, तेजस्वी, मध्यम कद का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बहुत मनस्विनी, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा जातक को सुख देने वाली होती है। वह जातक की भाँति सौम्य स्वभाव की न होकर कुछ उग्र स्वभाव की होती है तथापि सहानुभूति पूर्ण एवं उदार हृदय की भी होती है। इसे सन्तान का या तो अभाव रहता है अथवा विलम्ब से प्राप्त होती है। 24 वर्ष की आयु से यह धन कमाना आरम्भ करता है। अपनी पत्नी से प्रेम रखते हुए भी यह अन्य अनेक स्त्रियों की ओर आकर्षित होता है तथा उन पर बहुत धन खर्च करता है। जीवन के 31, 35, 36 तथा 46वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु 78 वर्ष होती है। 56 वर्ष की आयु में कष्ट होता है।

(2324) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गोल मुखमण्डल, विशाल नेत्रों वाला, स्वस्थ, आकर्षक, विद्यावान तथा गुणवान होता है। यह स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षित होता है तथा अनेक स्त्रियों के साथ भोग-विलास के सम्बन्ध भी रखता है। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है और वह जातक के ऊपर अपना प्रभाव बनाये रखती है। यह जातक 21 वर्ष की आयु में ही परदेश जाता है तथा वहीं आजीविकोपार्जन प्रारम्भ करता है। 26 वर्ष की आयु में यह पुनः अपने घर लौट आता है तथा दूसरे व्यवसाय द्वारा अर्थोपार्जन करता है। इसे सन्तान का अभाव होता है। 42 से 42 वर्ष की आयु तक यह देशान्तर की यात्राएँ करता है। 56वें वर्ष में इसे आकस्मिक लाभ भी होता है। वृद्धावस्था में इसे अपने परिजनों द्वारा सुख प्राप्त होता है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(२३९५)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, महत्वपूर्ण, अनेक विषयों का ज्ञाता, अपने परिवार का पोषक तथा बन्धु-बान्धवों को सम्मिलित एवं संगठित बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील होता है। परिवारीजन इसका अत्यधिक आदर करते हैं, परन्तु कुछ संबंधी इसके शत्रु भी मानते हैं, क्योंकि वे लोग इसे प्राप्त होने वाली प्रतिष्ठा से ईर्ष्या रखते हैं। इसका विवाह २० अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। यह विदेश में रहकर धन तथा सम्मान अर्जित करता है। ३६ से ४२ वर्ष की आयु तक यह अनेक यात्राएं करता है तथा देश-देशान्तरों में जाकर धन कमाता है। २५ तथा ५३ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लगना सम्भव है। मकान २८ वर्ष की आयु में मिलता है, जो किसी अन्य का होता है। राजकीय-सेवा में उन्नति करता है। पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है। ६८ वर्ष की परमायु होती है।

(२३९६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, शान्तचित्त वाला तथा सौम्य विचार होता है। इसे आवेश बहुत कम आता है। यह काव्य तथा ललित कलाओं का प्रेमी, अध्ययनशील, साहसी तथा परिश्रमी होता है। इसकी महत्वाकांक्षाएं बड़ी होती हैं। यह अपने उद्योग से बहुत धन कमाता है। विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, नाटे कद की तथा कुछ स्थूल शरीर वाली होती है। जातक के व्यक्तित्व से उसका मेल नहीं खाता, तथापि दोनों में प्रेम बना रहता है। इसे अपने माता-पिता से भी धन-सम्पत्ति का लाभ होता है एवं पृथ्वी में गड़ा हुआ धन मिलने की सम्भावना भी रहती है। यह राजकीय-सेवा में रहकर जीविकोपार्जन करता है तथा अनेक स्रोतों से धन कमाता है। दो पुत्र बड़े यशस्वी होते हैं। एक कन्या भी होती है। परमायु ५८ वर्ष होती है।

(२३२७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, राजा के समान ऐश्वर्यशाली, भू-स्वामी तथा प्रतापी होता है। यह घर-बाहर सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि यह अन्य अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। यह अपने धन का खर्च मित्रों, परिजनों अथवा भोग-विलास के लिए खर्च करता है। सन्तान-प्राप्ति के लिए बहुत प्रयत्न करता है, तब बड़ी आयु में सन्तान का लाभ होता है। पत्नी से अलग रहने का योग भी बनता है। यह २३ वर्ष की आयु में देशान्तर-गमन करता है। बाद में भी निरन्तर यात्राओं का आवागमन लगा रहता है। यह राज्य अथवा राजकीय मान्यता प्राप्त किसी प्रतिष्ठान से संबंधित होकर विपुल धनोपार्जन करता है। धातु आदि का व्यापार भी कर सकता है। इसे भूमि से लाभ होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३२८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धनी, मानी, सम्पत्तिशाली, दूरदर्शी, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अपने अध्यवसाय से बहुत धन कमाता है एवं सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २८-२९ वर्ष की आयु में, कुछ विलम्ब से होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कुशला, सुशिक्षिता एवं संगीत-निपुणा होती है। इसे सन्तान का कष्ट होता है। यह २३ वर्ष की आयु में ही सेवा-कार्य (नौकरी) द्वारा धनोपार्जन आरंभ कर देता है। देशान्तर में रहने तथा यात्राओं से इसे अत्यधिक धन तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह आकस्मिक रूप से तथा अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह खूब धन खर्च करता है। भोग-विलास में इसकी विशेष प्रवृत्ति रहती है। वृद्धा-वस्था में धर्म-कर्म की ओर विशेष ध्यान देता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२३१९)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, चंचल स्वभाव, इकहरे शरीर का स्वस्थ एवं अनेक प्रकार के कला-कौशल का ज्ञानकार होता है। यह व्यवसाय में विशेष रुचि रखता है। भूमि, रत्न तथा बहुमूल्य वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा यह धन कमाता है। व्यवसाय के संबंध में इसे देश-देशान्तर की यात्राएँ भी करनी पड़ती हैं। ४८ वर्ष की आयु तक यह बड़ा समृद्ध व्यवसायी बन जाता है। ५१ वर्ष की आयु में इसे राज्य से भी बहुत सम्मान प्राप्त होता है। यह अपने ऐश्वर्य तथा गुणों के कारण आजीवन प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। यह जातक अपनी पत्नी की बात मानता है तथा उसके नाम बहुत सी अचल-सम्पत्ति भी खरीदता है। इसके कई पुत्र होते हैं। वे सभी सुयोग्य, धनी तथा तेजस्वी होते हैं। परमायु ७६ वर्ष के लगभग होती है।

(२३२०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रत्युत्पन्नमति, कुशाग्रबुद्धि, ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकी विषयों का ज्ञाता एवं सर्वत्र मान-सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विवेकशीला तथा मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली मिलती है। पुत्र सुन्दर तथा तेजस्वी होते हैं और वे वृद्धावस्था में सुख भी देते हैं। २३ वर्ष की आयु में यह जातक परदेश में जाता तथा वहाँ रहकर धन-सम्मान प्राप्त करता है। इसे राज्य से बहुत लाभ होता है। २८ से ३५ वर्ष की आयु तक इसे विवादों के चक्कर में रहना पड़ता है। ४१, ४८, ५९ तथा ६५ वर्ष की आयु में इसे चल-अचल सम्पत्ति का विशेष लाभ होता है। पैतृक-धन का लाभ कुछ कष्ट तथा मुकद्दमों में विजय पाने के बाद होता है। सुखी जीवन बिताते हुए यह ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चेहरे पर भोलापन दिखाई देते हुए भी अत्यन्त चतुर शान्त स्वभाव का, परन्तु उत्तेजना आ जाने पर बड़ी देर में शान्त होने वाला एवं आवेश के कारण अपना अहित भी कर लेने वाला होता है। इसका जन्म पिता के पोष में होता है। इसे पिता का अधिक सुख भी प्राप्त नहीं होता। यह सत्कर्म करने वाला, धनी तथा विख्यात होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, सामान्य रूप वाली, हठी तथा जिद्दी स्वभाव की होती है। वह जातक को अपने प्रभाव में रखती है। यह जातक अपने घर से बाहर किसी स्थान में सेवा-कार्य अथवा व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। इसके एक या दो सुन्दर पुत्र होते हैं, जो जातक के जीवन-काल में ही अच्छी ख्याति प्राप्त कर लेते हैं। ४५, २३ तथा ५६वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२३२२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, दृढ़ शरीर वाला, परिश्रमी तथा उग्र स्वभाव का होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता, विद्वान् तथा साहित्यिक-रुचि सम्पन्न होता है। यह कृपण तथा धन-संग्रही भी होता है। इसके पास धन की कमी नहीं होती। उचित अवसर पर यह खूब खर्च भी करता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु कुछ समय के लिए उससे अलग भी रहना पड़ता है। पुत्र-पुत्री सुयोग्य होते हैं। पत्नी से अलगाव की स्थिति समाप्त हो जाने के बाद दाम्पत्य-जीवन सुख से बीतता है। २५ वर्ष की आयु में व्यापारिक-कार्यों से बहुत धन कमाता है। ३२ वर्ष की आयु में कुछ समय तक शारीरिक-कष्ट होता है। अपने उद्यम से यह प्रचुर सम्पत्ति तथा सम्मान अर्जित करता है। ६८ वर्ष की आयु में अनिष्ट होता है। परमायु ७३ अथवा ७४ वर्ष होती है।

भ० सं० २८३८

कु० र०

(२३२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार, प्रियदर्शी, सबसे सहानुभूति रखने वाला तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। यह उच्चशिक्षित, बुद्धिमान् एवं सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। इसका विवाह २३, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। जातक को दीर्घकाल तक परदेश में रहने के कारण पत्नी से अलग रहना पड़ता है। यह जातक परदेश में रह कर धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसके जीवन में २५, ३८, ४१ तथा ४२ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसे दो पुत्र तथा पुत्रियों का लाभ होता है। सभी सन्तानें प्रियो-गम, सुखदेने वाली तथा सम्मान अर्जित करने वाली होती हैं। ६३ वें वर्ष में यह कोई विशिष्ट कार्य करता है। इसे राज्य द्वारा भी सम्मान प्राप्त होता है। ५१ वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२३२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, स्वस्थ, बुद्धिमान, प्रियदर्शी, विद्वान् तथा उच्च शिक्षित होता है। इसे व्यापार में विशेष रुचि होती है। यह राजकीय-सेवा में रत रहते हुए भी अपना निजी व्यवसाय करता है तथा प्रचुर मात्रा में धन कमाता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी चतुर तथा सुख देने वाली होती है। वह किसी कार्य द्वारा स्वयं भी धनोपार्जन करती है। यह जातक सब लोगों का भला करता है, फिर भी इसे विश्वासघात का शिकार होना पड़ता है। २७, ३२, ४१, ४८ तथा ५० वीं वर्ष में विशेष लाभ होता है। इन्हीं आयुवर्षों में इसे परदेश में भी रहना पड़ता है। इस जातक के कई पुत्र तथा पुत्री होते हैं। यह सब का पालन-पोषण करता हुआ सुखी तथा सम्मानित-जीवन व्यतीत करता है। पूर्णायु ७१ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२३२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी युवक, बुद्धिमान, उदार तथा अपने कार्यों को दूसरों के भरोसे छोड़ देने की प्रकृति वाला होता है, भले ही वह बिगड़ क्यों न जाये। यह कुछ उग्र स्वभाव का तथा अपनी बात मनवाने के लिए सचेष्ट रहने वाला होता है। यह अनेक योजनाओं पर कार्य करने वाला, दीर्घसूत्री तथा एक कार्य को अधूरा छोड़कर दूसरे में लग जाने वाली प्रकृति का होता है। यह किसी बड़े प्रतिष्ठान से संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है। २३ वर्ष की आयु में ही परदेश चला जाता है तथा वहीं पर जीवन का मार्ग बनाता है। ४२ से ५६ वर्ष की आयु के बीच यह अपने व्यवसाय अथवा कार्यों द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अनुगता मिलती है। वह अपने बुद्धि-चातुर्य से इसे प्रभावित करती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२३२६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति युवक, स्वस्थ, बुद्धिमान, विद्वान्, लम्बे कद का तथा अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करने वाला, अपने कुल का दीपक होता है। इसे बचपन से ही सुख प्राप्त होता है। यह माता-पिता का पूर्ण प्रेम प्राप्त करता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर किसी उच्च राजकीय-पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २०-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अनेक कलाओं की जानकार, बुद्धिमती तथा विद्वान् होती है। वह अपनी योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है। इस जातक को कुछ समय तक किसी कारणवश अपयश का भागी भी बनना पड़ता है। ऐसा अवसर ३६ वर्ष की आयु में आता है, तब इसे कुछ समय तक घर से बाहर भी रहना पड़ता है। सन्तान के कारण दुःख होता है। बड़ी आयु में एक पुत्र प्राप्त होता है। परमायु ७६ वर्ष अथवा इससे भी अधिक होती है।

(२३२७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चमकीली आँखों तथा तीव्र दृष्टि वाला होता है। यह उग्र स्वभाव का, परोपकारी होते हुए भी धन के प्रति लोभी एवं कृपण होता है, तथापि व्यक्तिगत सुख के लिए अपव्यय भी खूब करता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी तेजस्वी तथा दृढ़ निश्चयी होती है। यह राज्य से लाभ पाने वाला राजकर्मचारी होता है। २४ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ करता है। ३२ वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त करता है तथा ४६ वर्ष की आयु तक उन्नति के शिखर पर जा पहुँचता है। यह अपने परिश्रम, अध्यवसाय तथा योग्यता से अत्यधिक धन तथा प्रतिष्ठा अर्जित करता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। २८ तथा ४१ वें वर्ष में कष्ट होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३६, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२३२८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखभोगी, रसिक-प्रवृत्ति का, सुदर्शन एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपनी मधुर वाणी तथा विनम्र स्वभाव द्वारा अपने प्रत्येक कार्य में सफलता पा लेता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, प्रभावशालिनी तथा जातक को अपने वश में रखने वाली होती है। यह राजकीय-सेवा में २३-२४ वर्ष की आयु में प्रविष्ट होकर किसी ऐसे प्रशासनिक-विभाग में कार्य करता है, जिसमें इसका मन प्रसन्न बना रहता है। यह ३२, ३६, ३९, ४५, ५१, ५३ तथा ५६ वें वर्ष में विशेष रूप से धन एवं सम्मान प्राप्त करता है। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। प्रारम्भ में अनेक गर्भ नष्ट भी होते हैं। इसे आजीवन सुख तथा सम्मान की उपलब्धि होती रहती है। परिवारीजनों से भी सहयोग मिलता है। यह ६९ अथवा ८१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३२९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद, दृढ़ शरीर, बड़ी आँखों वाला, सुन्दर, उदार स्वभाव का तथा परोपकारी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर २० वर्ष की आयु से ही अर्थोपार्जन के क्षेत्र में उतर आता है तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील हो, सफलता प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, गुणवती एवं कला-मर्मज्ञा स्त्री के साथ होता है। इसकी पत्नी स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाली महत्वाकांक्षिणी तथा स्वयं धनोपार्जन करने वाली होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में सरकारी-सेवा में संलग्न होता है तथा उन्नति करता हुआ ३३ वर्ष की आयु में किसी अन्य विभाग में स्थानान्तरित होता है वहाँ जाकर यह निरन्तर प्रगति करता है तथा मान यश तथा धन कमाता है। यह अपने पुरुषार्थ को भी सर्वोपरि सफलता तथा विलासी-जीवन व्यतीत करता है। सन्तान विलम्ब से प्राप्त होती है। वृद्धावस्था में सुखी रहता है। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२३३०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ चित्त का, कुछ उग्र स्वभाव का तथा थोड़ी सी बात पर ही उत्तेजित हो जाने वाला होता है। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं की जानकार तथा स्नेहमयी होती है। विवाहोपरान्त इसके जीवन में परिवर्तन आता है। ३१ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में पदोन्नति प्राप्त करता है। इसके २ पुत्र तथा ३ पुत्रियाँ होती हैं। पुत्र भाग्यशाली तथा सम्पत्तिशाली होते हैं। इस जातक को अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। ४१ तथा ४६ वाँ वर्ष शरीर के लिए कुछ कष्टकारक होता है। ५३ वाँ वर्ष विशेष लाभ प्रदायक होता है। इसकी आय के अनेक स्रोत होते हैं। यह घर-बाहर सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता हुआ सुखी जीवन व्यतीत करता है। सन्तानों से वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। परमायु ७३ वर्ष से अधिक होती है।

(२३३१) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल शरीर, मध्यम कद, गौर वर्ण, कलह-कुशल, उन्नतप्र उदार हृदय वाला होता है। यह दान-धर्म में रुचि लेता है। अपने से निम्न स्तर वाले लोगों के साथ रह कर इसे सुख का अनुभव होता है। ऐसे लोगों से आर्थिक लाभ भी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा विदुषी होती है। वह भी धर्म-कर्म में रुचि रखनेवाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में जातक के साथ सहयोग करने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का कार्यक्षेत्र निश्चित हो जाता है। यह सरकारी-सेवा में संलग्न होकर शीघ्रतापूर्वक पदोन्नति पाता चला जाता है। जीवन के ३९, ४६, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। इसे सन्तान हेतु कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है। इससे बचने पर सात वर्ष और जीवित रहता है।

(२३३२) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बा, सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर वाला, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, धैर्यवान तथा पराक्रमी होता है। यह जहाँ भी रहता है, नेतृत्व करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्नेहमयी तथा सुख देने वाली होती है। वह जातक की प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है। किन्तु कुछ कारणों वश उसे काफी समय तक पति से अलग रहना पड़ता है। सन्तान के लिए कष्ट होता है तथा बड़ी आयु में एक सन्तान होती है। यह २३-२४ वर्ष की आयु में ही विद्या-कार्य में निपुण हो जाता है तथा देश-देशान्तरों में भ्रमण करता हुआ धन एवं सम्मान अर्जित करता है। इसके जीवन में २५, २८, ३२, ३८, ४१, ४६, ५१ तथा ५७ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ४९, ५४ तथा ६४ वें वर्ष भी सुखप्रद सिद्ध होते हैं। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता हुआ ७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं तथा विषयों का जानकार, कुछ स्थूल शरीर का, मृदुल-स्वभाव, उदार-हृदय तथा सबका हित-चिन्तक होता है। यह बाल्यावस्था में माता-पिता का यथेष्ट स्नेह प्राप्त करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में सुन्दर, सुरुचि पूर्ण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली कन्या के साथ होता है। इस जातक को २३ वर्ष की आयु से ही सेवा-कार्य आदि के द्वारा धन-लाभ होता है। इसे उन स्थानों से भी धन की प्राप्ति होती है, जो महत्वहीन प्रतीत होते हैं। यह निरन्तर उन्नति करता हुआ धन तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि करता चला जाता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे सन्तति-लाभ होता है। अपने जीवन-काल में ही यह पौत्र-सुख भी पा लेता है। ४५, ४८ तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२३३४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी तीक्ष्ण, निपुण, सहृदय, उदार, कार्यकुशल तथा भावावेश रहित होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गुणवान तथा अपने परिश्रम द्वारा उन्नति के शिखर को छूने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। बाल्यावस्था में माता-पिता का यथेष्ट स्नेह भी पाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी विवेकशीला एवं मनोनुकूला होती है। इसे देशान्तर में जाकर धन, यश तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। इसके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं। इसका जितना विरोध होता है, उतनी ही विजय भी मिलती है। राजकीय-सेवा में इसे बहुत उन्नति एवं प्रतिष्ठा मिलती है। इसके सन्तानें कम होती हैं। पत्नी से जीवन-काल में ही वियोग हो जाता है, अतः वृद्धावस्था एकाकी ही बीतती है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

भू० सं०

कु० र०

(२३३५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुक्र, इकहरे लम्बे शरीर तथा पैनी आँखों वाला, दूसरों के मनोभावों को तुरन्त समझ लेने वाला, बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण स्नेह-सुख पाने वाला तथा महत्वपूर्ण कार्य करने में सक्षम एवं निश्चयी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में गुणवती, रूपवती, गृहकार्य-कुशल, कला-कुशल, सुन्दरी कन्या के साथ होता है। इसे अपनी पत्नी के कारण भी मान-सम्मान प्राप्त होता है। यह जातक स्वयं भी गूढ़ विषयों का ज्ञाता तथा गुप्त-धन को प्राप्त करने वाला होता है। ३२ से ३८ वर्ष की आयु तक इसे किसी अनपेक्षित स्रोत द्वारा धन प्राप्त होता रहता है। वैसे भी इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। यह निरन्तर प्रगति करता चला जाता है। कार्यकुशलता के कारण इसे राज्य से भी मान्यता प्राप्त होती है। संतानें अधिक नहीं होतीं। परमायु ७६ से ८१ वर्ष के बीच रहती है।

(२३३६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी शरीर से स्वस्थ, मिजाज से उग्र, हृदय का उदार, अनेक विषयों का ज्ञाता तथा ज्ञान-वृद्धि हेतु निरन्तर प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। इसका विवाह १९ से २४ वर्ष की आयु के बीच हो जाता है। इस अवधि में विवाह न हो तो फिर २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुसंस्कृत, सभ्य तथा गृहकार्य-कुशल होती है। वह जातक को बहुत सुख देती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। इसे राजकीय-सेवा द्वारा २५ वर्ष की आयु से आमदनी होने लगती है तथा अन्य स्रोतों से भी धन-लाभ होता है। गुप्त मार्गों द्वारा भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन संचित कर लेता है। किसी जन-संगठन से भी इसे धन मिलता है। पुत्र भी धनी तथा सम्पन्न होते हैं। परमायु ६९ अथवा ८० वर्ष होती है।

(२३३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी इकहरे शरीर, तीक्ष्ण दृष्टि, कुंचित मस्तक वाला, स्वस्थ, बुद्धिमान, विद्वान् तथा पराक्रमी होता है। यह अपने अध्यवसाय से उन्नति करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, धीर-गंभीर स्वभाव की तथा चतुर होती है। २४-२५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर आजीविकोपार्जन आरंभ करता है, परन्तु अपनी उच्छृंखलता के कारण वहाँ लोकप्रिय नहीं हो पाता। बहुत समय बाद ही इसमें अच्छे गुणों का विकास होता है, तब विभिन्न अवरोध-विरोधों को पार करते हुए अत्यधिक उन्नति करता है। ४५ वर्ष की आयु में इसका पूर्ण भाग्योदय होता है। इसके संतानें कम होती हैं, परन्तु वे इसके जीवन-काल में ही उन्नति कर लेती हैं तथा वृद्धावस्था में इसे सुख भी देते हैं। सुखी तथा धनी जीवन बिताते हुए यह ६७ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३३८)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति गंभीर चिन्तक, धैर्यवान्, अनेक विषयों का ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, स्वतंत्र-विचारक तथा किसी के आधिपत्य में न रहने की प्रवृत्ति वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। यह जातक राजकीय-सेवा में संलग्न होकर जीविकोपार्जन करता है। शीघ्र ही उच्च पद पर पहुँचकर धनी तथा यशस्वी भी बन जाता है। इसकी आमदनी के और भी अनेक स्रोत होते हैं। यह ३८ वर्ष की आयु से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा चल-अचल सम्पत्ति का संग्रह करता है। इसे सन्तान हेतु कष्ट रहता है। सन्तान बड़ी आयु में प्राप्त होती है, परन्तु वह बड़ी होकर सुयोग्य सिद्ध होती है। यह ७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३३९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कठोर चित्त का, क्रुद्ध उग्र स्वभाव का तथा दृढ़ निश्चयी होता है। इसे अपने ऊपर किसी का आधिपत्य स्वीकार नहीं होता। यह पौरुष, उत्साह तथा पराक्रम द्वारा सम्पन्न होने वाले कार्यों में सदैव सफलता प्राप्त करता है। इस का विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी स्वाभिमानिनी होती है तथा जातक को अपने अनुकूल रखने में सचेष्ट रहती है। यह २५ वर्ष की आयु में किसी नौकरी से संलग्न होकर, धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। पैतृक-व्यवसाय द्वारा भी इसे आर्थिक-लाभ होता रहता है। यह अपनी योग्यता द्वारा पदाधिकार तथा प्रतिष्ठा अर्जित करता है। इसके पुत्र, सद्गुणी तथा सब प्रकार से सम्पन्न होते हैं। इसकी परमायु ६९ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२३४०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, धीर-गंभीर, महत्त्वाकांक्षी तथा व्यवहार-कुशल होता है। यह २२ वर्ष की आयु में सद्गुण-सम्पन्ना सुन्दरी पत्नी प्राप्त करता है। वह सदैव सुख प्रदान करती है। २५ वर्ष की आयु तक यह जातक उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो, धनोपार्जन आरंभ कर देता है। फिर निरंतर उन्नति करता हुआ ३० वर्ष की आयु में ही बहुत धनी बन जाता है। अपनी प्रतिभा तथा योग्यता के कारण इसकी गणना विशिष्ट व्यक्तियों में होती है। सभ्य-समाज में इसे बहुत प्रतिष्ठा दी जाती है। यह कई पुत्रों का पिता होता है और वे सब इसके जीवन-काल में ही उच्चपद प्राप्त कर लेते हैं। जीवन के २६, २८, ३०, ३५, ३८, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे वृद्धावस्था में बहुत सुख मिलता है। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(२३४१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, स्वस्थ, श्रद्धालु, ईश्वर भक्त तथा सामाजिक रीतियों का आदर करने वाला होता है। यह वाक्पटु, गौरवर्ण, मध्यम कद, घुंघराले केश तथा उन्नत नासिका वाला होता है। इसके दाँत छोटे-छोटे होते हैं। आँखें मध्यम आकार की तथा पैनी दृष्टि वाली होती हैं। यह उदार तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, परन्तु कुछ रूखे स्वभाव की होती है। इसे सन्तान की इच्छा अधिक रहती है तथा धन के प्रति भी बड़ा लोभ होता है। इस जातक को २२ से ४६ वर्ष तक राजकीय-सेवा से (हक) एक सा आर्थिक-लाभ होता है। बाद में यह किसी अन्य बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होता है। अन्त में निजी व्यवसाय भी करता है। सन्तान के लिए कष्ट होता है। परमायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२३४२) - इस जन्म कुण्डली के उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, कुछ उग्र तथा क्रोधी स्वभाव का निडर तथा थोड़े भाइयों वाला होता है। यह कुटुम्ब से दूर रहता और वहीं उन्नति करता है। इसे डर-धमका कर अनुकूल नहीं किया जा सकता। प्रेम से ही वश में आता है। इसे बचपन में सुख नहीं मिलता। विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-मर्मज्ञा, मधुर भाषिणी तथा व्यवहार-कुशला होती है। वह जातक से बहुत प्रेम करती है, परन्तु ४६ वर्ष की आयु में वह जातक का साथ छोड़ कर परलोक चली जाती है। तब जातक दूसरा विवाह करता है। दोनों पत्नियों से सन्तानें होती हैं। वे सुन्दर, चतुर तथा सुयोग्य निकलती हैं। इस जातक को राजकीय-सेवा से लाभ होता है। आमदनी के और भी अनेक स्रोत होने के कारण यह सदैव धन-सम्पन्न बना रहता है। परमायु ७४-७५ वर्ष होती है।

१८३८ सं० भु०

कु० र०

(२३४३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, रक्ताभ गौर वर्ण, चंचल नेत्रों वाला, तीक्ष्ण - दृष्टि, पराये मन की थाह पाने में कुशल, कुछ लम्बे मुख का, मोटी तथा दृढ़ जाँघों एवं चौड़ी छाती वाला, अत्यन्त चतुर, तुरन्त निर्णय लेने वाला तथा स्वतन्त्र विचारक होता है। यह दृढ़ निश्चयी होता है तथा २३-२४ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसके पास धन का कभी अभाव नहीं रहता। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी यथार्थ - स्थिति को न समझ कर केवल धन - संचय में संलग्न रहने वाली होती है। वह अपने सुख में भी कोई कमी नहीं आने देती है। इस जातक के जीवन के २८, ३२ तथा ३८वें वर्ष उन्नति दायक होते हैं। ४५, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ वें वर्ष भी विशेष महत्वपूर्ण रहते हैं। पुत्र दो तथा पुत्री एक होती है। संतानें सुख देती हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२३४४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, रक्ताभ गौर वर्ण, गोल मुँह तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला, उन्नत ललाट, विशाल वक्ष:स्थल तथा पुष्ट शरीर वाला होता है। इसकी जाँघें मोटी तथा सुडौल होती हैं। इसे अनेक शास्त्र तथा विषयों का ज्ञान होता है। यह अपने गुणों के कारण सर्वत्र सम्मान पाता है। इसे २३ वर्ष की आयु से ही आर्थिक - लाभ हो जाता है। यह अपने परिश्रम द्वारा उन्नति करता है। ४५ वर्ष की आयु में उच्च पद पा लेता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसे अपने जीवन में कभी आर्थिक - कष्ट नहीं होता। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। परन्तु पत्नी से पूरा सुख नहीं मिलता। संतानें कम होती हैं, परन्तु वे जातक को सुख देती हैं। ५४-५५ वर्ष की आयु में यह किसी व्यवसाय से जुड़ कर जीवन पर्यन्त सुखी रहता है। परमायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(२३४५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर, उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, चौड़ीछाती पुष्ट कंधे तथा सुदृढ़ जाँघों वाला होता है। इसकी कल्पनाशक्ति बहुत उर्वर होती है। यह विभिन्न विषयों में रुचि लेता है तथा अपने पारिवारिक-व्यवसाय की उन्नति करता है। २०-२२ वर्ष की आयु में इसे पत्नी प्राप्त होती है। वह सुन्दरी, गौरवर्णा, मनमोहिनी तथा जातक को अपने अनुकूल बनाये रखने में सफल होती है। यह जातक अपने व्यवसाय द्वारा ३५ वर्ष की आयु में बहुत धनी हो जाता है। इसे सन्तान का कष्ट होता है। सन्तान कुछ विलम्ब से होती है या फिर होती ही नहीं है। ३५ वर्ष की आयु के बाद अचल-सम्पत्ति लाभ का योग भी बनता है। ३९ वर्ष की आयु में थोड़ा शारीरिक-कष्ट होता है। पूर्णायु ७६ वर्ष के लगभग होती है। इस आयु को पार कर लेने पर ८२ वर्ष तक जीवित रहना सम्भव होता है।

(२३४६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, गौरवर्ण, सुन्दर, स्वस्थ, सुन्दर नेत्रों वाला, आकर्षक मुखमण्डल वाला तथा गुणवान होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। चल-अचल सम्पत्ति का सुख भोगता हुआ यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। सम्पन्न-परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है। इसका विवाह 22-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा उदार स्वभाव की होती है। इसे ससुराल से भी धन प्राप्त होता है। पत्नी स्वयं भी किसी संस्थान से संबद्ध होकर अर्थोपार्जन करती है। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह राज्य द्वारा भी सम्मान प्राप्त करता है। इसका जीवन राजकीय-सेवा में भी बीत सकता है। सेवा-निवृत्ति के पश्चात् तीर्थाटन करता एवं धर्म कार्य में मन लगाता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ८६ वर्ष होती है।

(२३४७)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा मनुष्य सुन्दर, मध्यम कद, गौर वर्ण, बड़ी-बड़ी आँखें, कुछ स्थूलकाय उदार, बुद्धिमान, विशाल हृदय तथा हृष्ट-पुष्ट होता है। यह अपने खान-पीना का शौकीन होता है। इसके सहारे अनेक लोग जीविकोपार्जन करते हैं। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी, प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। विवाहोपरान्त जातक के जीवन में परिवर्तन आता है। यह राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर, निरन्तर उन्नति करता हुआ, उच्च पद प्राप्त करता चला जाता है। इसे धन का लाभ अनेक स्रोतों से होता है। यह अपने व्यवसाय, गुण तथा उद्यम द्वारा धन तथा यश प्राप्त करता है। ४७ तथा ५१ वर्ष की आयु में आकस्मिक आघात लगने का भय होता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७६ भी प्राप्त होती है।

(२३४८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, स्थूलकाय तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। बाल्यावस्था सुख पूर्वक बीतती है। माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सौभाग्यवती होती है। यह अपने व्यवसाय से धन तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय ३८ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु २१ वर्ष की आयु से ही यह अर्थोपार्जन आरंभ कर देता है। यह दुस्साहसिक कार्यों में रुचि रखने वाला, खतरों से खेलने वाला तथा उन्हीं के माध्यम से धन कमाने वाला होता है। इसका यश भी इसी कारण फैलता है। ५६ वर्ष की आयु तक यह बड़ा यशस्वी हो जाता है। इसके पास अचल-सम्पत्ति की भी कमी नहीं होती। आकस्मिक-चोट लगने वाले कार्यों से यह संबद्ध रहता है। सन्तान अच्छी होती है। परमायु ७८ वर्ष की होती है।

३५३८ सं. भू. ० ०

कु. ० २ ०

सं० भु० ७९४३८

कु० र०

(2349)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुष्ट, स्वस्थ, बलिष्ठ, गुणवान तथा साहसी होता है। यह अपने पराक्रम तथा उद्यम व्यवसाय द्वारा 27 वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त करके भाग्यशाली बनता है। इसका विवाह 20-24 वर्ष की आयु में होता है। इस की पत्नी सुन्दरी, आकर्षक तथा कुछ स्थूल शरीर की होती है। यह किसी की सेवा नहीं करता, अपितु स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा धन कमाता है। 29 वर्ष की आयु में इसे विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यह किसी राजकीय कार्य से संबंधित हो सकता है। 31 वर्ष की आयु के बाद स्थिति में परिवर्तन आता है और यह विशेष धनी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। यह अपने पुत्रों के माध्यम से व्यवसाय की विशेष उन्नति करता है। 40 वर्ष की आयु में किसी आकस्मिक दुर्घटना के कारण चोट लगती है। परमायु 69 वर्ष से अधिक होती है।

(2350)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पुष्ट, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, गौर वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा शान्त स्वभाव का होता है। परन्तु इसके मन की उथल-पुथल का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। थोड़ी सी बात से ही यह अत्यधिक चिन्तित हो जाता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से असन्तुष्ट रहता है, क्योंकि इसे पत्नी में अनेक दोष दिखाई देते हैं। पत्नी धन का संचय करने वाली, कृपण स्वभाव की होती है। वह जातक के धन तथा जीवन की रक्षिका होती है। यह जातक बहुमूल्य पदार्थों के व्यापार से धनोपार्जन करता है। जमीन, शस्त्र तथा धातु आदि के व्यवसाय से इसे विशेष लाभ होता है। पुत्र एक ही होता है अथवा एक पुत्री भी होती है। 45 वर्ष की आयु के बाद यह बहुत धनी हो जाता है। परमायु 79 वर्ष होती है।

(२३५१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी चंचल-चित्त, परन्तु दृढ़ विचारों वाला, सुन्दर, स्वास्थ्य एवं अपने उद्यम द्वारा ही जीवन को उन्नत बनाने वाला होता है। यह अनेक विरोधों तथा असहमतियों का सामना करते हुए भी निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। इसका विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इकहरे शरीर की, चतुर तथा संकुचित विचारों वाली होती है। उससे प्रायः असंतोष ही मिलता है, फिर भी दोनों आजीवन साथ बने रहते हैं। जातक की बातों को पत्नी नहीं मानती, परन्तु जातक पत्नी की बात को नहीं टाल पाता। यह अपने घर से बाहर परदेश में कोई अच्छी नौकरी करके २४ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ करता है। इसे जीवन में अनेक कार्य करने पड़ते हैं। ५१ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता है। इसके एक पुत्र तथा एक-दो कन्याएं होती हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२३५२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर वाला तथा प्रत्येक कार्य को बड़ी लगन एवं कुशलता से करने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य में शीघ्रता करता है तथा अपने वर्जिश का लाभ भी उठाना चाहता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सहयोगिनी मिलती है। वह जातक को अपने अनुकूल बनाये रखती है तथा व्यवसाय आदि प्रत्येक क्षेत्र में जातक को पूरी-पूरी सहायता देती है। यह जातक व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। ४९ वर्ष की आयु में यह अचल-सम्पत्ति खरीदता है। इसके सन्तानें कम होती हैं। पुत्र इसके जीवन-काल में ही निजी व्यवसाय स्थापित कर प्रतिष्ठित हो जाते हैं तथा जातक के सहायक एवं आज्ञा-पालक बने रहते हैं। इसका धन पत्नी द्वारा संचित तथा संरक्षित होता है। जीवन के ३८, ४२, ४७, ५५ तथा ५९ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२२५३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, तीव्र बुद्धि वाला, व्यवहार-कुशल तथा सद्गुणी होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन करता, परिवार का पालन-पोषण करता तथा सम्मान प्राप्त करता है। किसी स्त्री के लिए इसे बहुत परिश्रम करना पड़ता है। आयु के २३वें वर्ष में किसी स्त्री के द्वारा ही इसे सफलता भी मिलती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर तथा बुद्धिमती होती है। उसका सर्वत्र सम्मान होता है। यह जातक चिकित्सक अथवा शिक्षा-संस्थान से संबंधित होता है। ३५, ४१ तथा ४८ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके पुत्र कम तथा कन्याएं अधिक होती हैं, जो भी कुछ अधिक आयु में ही होती हैं। ६१ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होना संभव है। शेष जीवन स्वस्थ एवं सुखी बीतता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२३५४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर, गंभीर, उदार, साहसी तथा शक्तिशाली होता है। यह अच्छे कुल में जन्म लेकर श्रेष्ठ कार्यों को करता है। यह जीवन के प्रारंभ से ही उन्नतिशील होता है। ३० वर्ष की आयु में इसकी गणना सम्मानित एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों में की जाती है। इसे अपने घर की अपेक्षा बाहरी लोगों से विशेष लाभ प्राप्त होता है। इसकी विद्वता या गुणों की सर्वत्र सराहना की जाती है। यह अपना अधिकांश जीवन परदेश में ही बिताता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशिक्षिता, गुणवती, सुन्दर तथा सम्पन्न कुलीन परिवार की कन्या होती है। वह अपनी योग्यता से सम्पूर्ण परिवार तथा जातक को प्रभावित करती है। वह लोक-कल्याण के कार्यों में भाग लेकर स्वयं बहुत यश प्राप्त करती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। ६२वें वर्ष में जातक को बहुत प्रतिष्ठा मिलती है। परमायु ६८ या ७८ वर्ष होती है।

(२३५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी उदार, सहृदय, मध्यम कद वाला, इकहरे से शरीर का, सुन्दर चेहरे तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा गुणवती होती है। जातक उसे साथ लेकर अनेक स्थानों की यात्रा करता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा में अपने घर से दूर रहता हुआ निरन्तर उन्नति करता हुआ धनी तथा यशस्वी बनता है। यह अपने धन को दान, परोपकार तथा धार्मिक कृत्यों में खर्च करता है। तीर्थाटन का शौकीन भी होता है। यह अपने स्वतन्त्र अथवा साझेदारी के व्यवसाय से भी बहुत धन प्राप्त करता है। अपने जीवन के ५५ वें से ६६ वें वर्ष तक केवल निजी व्यवसाय ही करता है। इसके सन्तानें कम होती हैं। पुत्री नहीं होती। दो पुत्र ही होते हैं। पूर्ण स्वस्थ तथा सुखी रहते हुए यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३५६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान्, कलाओं का ज्ञाता, अनेक विषयों का पण्डित तथा किसी विशेष योग्यता का स्वामी होता है। वाद्य-संगीत आदि में भी यह रुचि रखता है। अपने जीवन के २१ वें वर्ष में इसे पत्नी प्राप्त होती है। वह गुणवती, सुन्दर तथा संगीतज्ञा होती है। यह जातक परदेश में रहकर बहुत धन तथा यश कमाता है। इसके पुत्र सुयोग्य होते हैं। बड़े होकर वे भी घर से दूर किसी अन्य स्थान पर अपना व्यवसाय करते हैं। पुत्रों के कारण जातक को भी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इस जातक की आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, अतः धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। ५० वर्ष की आयु तक यह किसी ऐसे प्रतिष्ठान से संलग्न रहता है, जिसके कारण इसे बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ६२ वें वर्ष में विशेष कष्ट होता है। परमायु ७१ अथवा ७५ वर्ष होती है।

(२३५७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, धर्मात्मा, अनेक विषयों का ज्ञाता, देशाटन प्रेमी तथा अपने अध्यवसाय द्वारा राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करने में सफल होता है। धर्म-कर्म में इसकी विशेष प्रवृत्ति रहती है, परन्तु उसे यह कभी प्रकट नहीं करता। यह नेतृत्व-गुण से सम्पन्न, लम्बे कद, बलिष्ठ शरीर, तीक्ष्ण दृष्टि एवं धुन का पक्का होता है। इसका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, इकहरे शरीर की, कुछ दबे हुए रंग वाली तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। यह जातक के ऊपर अपना विशेष प्रभाव रखती है, तथापि जातक अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसे आगे बढ़ाने में मित्रों का बहुत योगदान रहता है। ४३ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक प्रतिष्ठित हो जाता है। धन-ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं रहती। ६१ वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७४ वर्ष होती है। संतानें सुयोग्य होती हैं।

(२३५८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा सुशिक्षित होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सद्गुणी होती है, तथापि यह जातक अन्य अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। यह २३-२४ वर्ष की आयु में परदेश में जाकर जीविकोपार्जन करता है तथा वहाँ इसे प्रचुर यश एवं धन का लाभ होता है। प्रारम्भ में इसे माता-पिता से अलग रहना पड़ता है तथा आर्थिक-स्थिति भी उत्तम नहीं होती। धीरे-धीरे उन्नति करता है। ५० वर्ष की आयु में यह यथेष्ट धनी हो जाता है। बाद में इसके पास कभी धन का अभाव नहीं रहता। यह प्राईवेट-सेवा अथवा स्वतन्त्र व्यवसाय - कोई कार्य कर सकता है। यह दूसरों को भी जीविका देता है। ४५-४६ वर्ष की आयु तक इसे संघर्ष करना पड़ता है। फिर पूर्ण सुख प्राप्त होता है। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२३५९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशिक्षित, गुणवान, साहित्य-सर्जक तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। यह गणित तथा हिसाब-किताब में विशेष दक्ष होता है। अपने विनम्र व्यवहार तथा योग्यता के कारण यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त इसके कार्य में परिवर्तन आता है। यह राजकीय-सेवा भी कर सकता है। २५-२६ वर्ष की आयु से यह उन्नति करना आरंभ करता है। ३५ से ४८ वर्ष की आयु में बहुत धन कमाता है तथा किसी विशिष्ट कार्य का सम्पादन कर प्रभावी बनता है। शान-शौकत की मूल्यवान वस्तुएँ एकत्र करने का इसे बहुत शौक होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है एवं पुत्रादि सुयोग्य तथा आज्ञाकारी होते हैं। यह ऐसा व्यवसाय स्थापित करता है, जिससे आजीवन आमदनी होती रहती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३६०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक सौम्य, सौजन्यतापूर्ण, लज्जालु, विनम्र, तीव्र बुद्धि, वक्तृता-कुशल, सुन्दर तथा अयोग्य व्यक्ति के समक्ष अपनी योग्यता को प्रकट न करनेवाला होता है। इसे उच्चपद प्राप्त होता है। यह अपने गुण, योग्यता तथा वक्तृता-कुशलता से अपने विभाग का उच्चाधिकारी बनने में सफल होता है। इसे किसी पद अथवा धन से विशेष लगाव नहीं होता। परन्तु इसकी पत्नी धन का संचय करने वाली होती है, साथ ही वह उदार तथा परोपकारी स्वभाव की भी होती है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनानुकूला मिलती है। सन्तान के लिए कष्ट होता है। वर्ष ४१, ४६ तथा ५३वें वर्ष परिवर्तन कारक होते हैं। परन्तु यह जातक प्रत्येक परिस्थिति में सन्तुष्ट रहता है। सुखी जीवन बिताते हुए यह ७१ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२३६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर का, रसिक स्वभाव का, अनेक विषयों का ज्ञाता, संगीत-कला निपुण, बुद्धिमान, भाग्यवान तथा उच्च शिक्षा प्राप्त होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख मिलता है। माता-पिता का इसे बड़ा स्नेह प्राप्त होता है। २४-२५ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है। ३० वर्ष की आयु में यह उच्च पद पर पहुँच जाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी कुल-परिवार में सबसे अलग, भाग्यशाली, पवित्र की स्वामिनी होती है। जीवन के ३५, ३८, ४० तथा ५६वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। यह घर से दूर देशान्तर में धनोपार्जन करता तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसके अनेक पुत्र-पुत्री होते हैं। वे सभी योग्य निकलते हैं तथा वृद्धावस्था में जातक को सुख देते हैं। यह ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२३६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, संगीत तथा कलाओं का प्रेमी एवं स्वयं भी उच्च कोटि का कलाकार होता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्य करके उच्च पद पाता है तथा यथेष्ट धनोपार्जन करता है। इसे जीवन में कभी धन की कमी नहीं रहती। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धन-संचय करने में संलग्न रहती है। वह सुन्दर, सुयोग्य तथा जातक की सम्पत्ति की स्वामिनी होती है। उसके द्वारा सम्पूर्ण जीवन को सुख प्राप्त होता है। २८, ३५, ३८, ४५ तथा ५७वें वर्ष में अत्यधिक समृद्धि एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसे योग्य पुत्र-पुत्री प्राप्त होते हैं तथा उनके लिए कभी कोई कष्ट नहीं होता। ५५वें वर्ष में इसे किसी दूसरे व्यवसाय द्वारा बहुत लाभ होता है। अपने जीवन में यथेष्ट धन तथा मान प्राप्त करता हुआ यह जातक ८३ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(२३६३) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक विषयों का जानकार तथा गुणवान होता है। इसे संगीत तथा ललित-कलाओं से प्रेम होता है। यह अत्यन्त उदार तथा रसिक स्वभाव का होता है। स्त्रियाँ इसकी कमज़ोरी होती हैं। इसे २३ वर्ष की आयु में ही आजीविकोपार्जन का कोई सम्मान-प्रद कार्य प्राप्त हो जाता है। इसके जीवन में कभी कोई अभावग्रस्त काल नहीं होता। यह बहुत शीघ्र ही पदोन्नति करता हुआ प्रचुर धन तथा यश अर्जित करता है। ३५ वर्ष की आयु में यह उन्नति के चरमशिखर पर पहुँचता है। ४१ से ४८ वर्ष की आयु के बीच यह चल तथा अचल सम्पत्ति का विशेष लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा घर-गृहस्थी का सफलतापूर्वक संचालन करने वाली होती है। पुत्र-पुत्री सुयोग्य होते हैं। पत्नी साथ देती हुई भी कुछ दुःखी बनी रहती है। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२३६४) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे शरीर का स्वामी, उग्र स्वभाव का होते हुए भी समझदार, उदार, परोपकारी तथा पराये हित के लिए स्वयं हानि एवं कष्ट उठाने वाला होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विशिष्ट व्यक्तित्व वाली, स्वयं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली, अपने गुण एवं योग्यता द्वारा धनोपार्जन कर, विशेष धनी होने वाली तथा जातक के साथ प्रत्येक कार्य में सहयोग करने वाली होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। कुछ ही वर्षों में यह उन्नति करता हुआ पर्याप्त यश तथा सम्मान अर्जित कर लेता है और धनी हो जाता है। जीवन के ४८, ५३, ५६ तथा ६७ वें वर्ष बड़े भाग्यवर्धक सिद्ध होते हैं। पुत्र-पुत्री योग्य, सम्पन्न तथा सेवाभावी होते हैं। परमायु ८२ वर्ष होती है।

(२३६५) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, बाल्यावस्था से ही नेतृत्व-गुण प्रधान, अध्यवसायी तथा अपने कुल-परिवार का मुखिया होता है। इसे संगीत तथा अन्य कलाओं से प्रेम होता है। इन्हीं कलाओं का जानकार होने के कारण यह अत्यधिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सरल स्वभाव की तथा विलक्षण व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह अपने अध्यवसाय एवं परिश्रम द्वारा जातक को भी अर्थोपार्जन तथा अन्य क्षेत्रों में सहयोग देती है। यह जातक सेवा-कार्य में २३-२४ वर्ष की आयु से संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। निरन्तर उन्नति करता हुआ यह बहुत यश तथा धन प्राप्त कर लेता है। जीवन के ३१, ३८, ४५ तथा ५५वें वर्ष समृद्धिकारक सिद्ध होते हैं। इसे पुत्र तथा विचार पुत्रों की उपलब्धि होती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३६६) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी, मध्यम कद, लम्बे मुख वाला, बड़ी-बड़ी आँखें तथा विशाल मस्तक वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी संगीत-वाद्य की ज्ञाता, कलाप्रिय तथा मधुरभाषिणी होती है। वह जातक से प्रायः अलग ही रहती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ यथेष्ट धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह कई सुयोग्य पुत्रों का पिता बनता है और इसके पुत्र भी राज्याधिकारी, सद्गुणी तथा यश-मान पाने वाले होते हैं। ५८ वर्ष की आयु में कुछ समय के लिए कष्ट होता है। कभी आकस्मिक चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। इसे विवाद (मुकदमे) द्वारा वृद्धावस्था में अचल-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। परमायु ७८ वर्ष से अधिक होती है।

(२३६७) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार, तथापि स्वभाव से कुछ उग्र भी होता है। यह अपने स्वभाव के कारण दुःखी पाता है। इसका मुँह गोल, आँखें बड़ी-बड़ी तथा मस्तक चौड़ा होता है। इसका बचपन सामान्य-स्थिति में बीतता है। विवाह 20-22 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, स्वस्थ तथा अपने पति से विशेष प्रेम करने वाली होती है। वह जातक की प्रतिष्ठा को बढ़ाती है। यह जातक २३ से २८ वर्ष की आयु तक स्वतन्त्र रूप से कार्य करता है, जिसमें अधिक सफलता नहीं मिलती। फिर यह किसी उच्च प्रतिष्ठान की सेवा में नियुक्त हो जाता है, परन्तु वहाँ भी ३ वर्ष से अधिक नहीं टिक पाता। तदुपरान्त यह कहीं परदेश में जाकर नौकरी अथवा निजी काम करता है। उसमें धन का लाभ तथा सुख प्राप्त होता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। जीवन के ३१, ३८, ४२, ४८, ५२ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२३६८) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ शरीर, लम्बे कद, तीक्ष्ण दृष्टि वाला चतुर व्यक्ति होता है। इसमें अहंभावना अधिक पाई जाती है। यह अपनी मर्जी के मुताबिक ही काम करता है तथा दूसरों के कामों में मीन-मेख निकालता रहता है। व्यर्थ के विवाद खड़े करने में इसे कोई संकोच नहीं होता। अपने ऊट-पटाँग व्यवहार के कारण इसे कभी प्रतिष्ठा भी प्राप्त नहीं होती। इसका विवाह २१ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसे सुख देती है, परन्तु यह उसे कष्ट देता रहता है। २४ वर्ष की आयु में ही यह कोई ऐसा व्यवसाय करता है, जिसमें घूमना-फिरना अधिक पड़ता है। उससे इसे आमदनी भी अच्छी होती है। ३८ वर्ष की आयु में यह अपने काम में परिवर्तन करता है तथा ४५ वर्ष की आयु में पुनः परिवर्तन करता है तथा अपने परिजनों की साझेदारी में काम करके धन कमाता है। संतान हेतु कष्ट पाता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२३६९) - इस जलकुण्डली का अधिपति स्वस्थ, सद्गुणी, भाग्यवान, साहित्य तथा कला का रचयिता, कुछ उग्र स्वभाव का, तथापि अत्यधिक सहनशील भी होता है। इसे बाल्यावस्था से ही किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा जातक से भी अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होती है। तथापि यह जातक व स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। फिर भी घर में इसकी पत्नी की हुकूमत ही चलती है। ५५-५६ वर्ष की आयु में ही पत्नी परलोक-गमन भी कर जाती है। इस जातक के कई पुत्र तथा एक पुत्री होती है। यह किसी बौद्धिक कार्य द्वारा स्वतन्त्र रह कर आजीविकोपार्जन करता है। जीवन भर कोई नौकरी नहीं करता। इसकी आमदनी निरन्तर बनी रहती है। ५१वें वर्ष से इसको जीवनान्त तक विशेष सुख प्राप्त होता है। परमायु ७३ वर्ष होती है। जीवन के २४, २८, ३२, ३५, ३८, ४२, ४६, ४८, ५२, ५८ तथा ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(२३७०) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, प्रभावशाली तथा सर्वप्रिय होता है। यह २१-२२ वर्ष की आयु में सुन्दर, गौरवर्ण तथा सुशिक्षित पत्नी प्राप्त करता है। वह अपने चातुर्य तथा योग्यता के आधार पर जातक के ऊपर हुकूमत ही करती है। यह जातक पैतृक-व्यवसाय के अति-रिक्त स्वतन्त्र रूप से भी कोई व्यवसाय करता है। इसे उससे बहुत लाभ भी होता है। ३८ वर्ष की आयु के बाद यह अचल-सम्पत्ति क्रय करता है। ४६ वर्ष की आयु में कोई नवीन कार्य करने के कारण इसे घाटा भी होता है। ५५ वर्ष की आयु में यह अपने दो पुत्रों के लिए कोई नवीन उद्योग अथवा व्यवसाय स्थापित करता है और उसमें अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। इसके पुत्र-पुत्री सुयोग्य, सफल तथा सुख देने वाले होते हैं। पत्नी की मृत्यु इसकी मृत्यु से तीन-चार वर्ष पूर्व हो जाती है। स्वयं ७८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(2361) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक युवक, मधुर वाणी वाला तथा विनम्र स्वभाव का धनी होता है। यह अपने सद्गुणों के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सद्गुणी होती है। विवाहोपरान्त दो वर्ष के भीतर ही यह एक पुत्री का पिता बन जाता है। बाद में दो पुत्र भी होते हैं। यह 28 वर्ष की आयु में अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय आरम्भ करके यथेष्ट धनोपार्जन करता है। व्यवसाय लोहे से संबंधित हो सकता है। 35 वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी हो जाता है। 40 वर्ष की आयु में यह दूसरा व्यवसाय आरम्भ करता है उसमें भी इसे बहुत लाभ होता है। राजसेवा से भी आमदनी होती है। 48 वर्ष की आयु तक कोई कष्ट नहीं होता। 49 वर्ष की आयु में राजकीय-कोप का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय में भी घाटा होता है। परमायु 63 अथवा 76 वर्ष होती है।

(2362) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त बुद्धिमान, सुन्दर तथा छोटी आयु में ही प्रसिद्धि पाने वाला होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में ही सुन्दर, स्वस्थ तथा बुद्धिमान स्त्री के साथ होता है। इसके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। 23 वर्ष की आयु में यह जातक किसी सेवा-कार्य के सिलसिले से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा 35 वर्ष की आयु में बहुत उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसकी आय के अनेक स्रोत होते हैं। मृत्यु पर्यन्त इसे धन का कोई अभाव नहीं होता। यह जातक 48 वर्ष की आयु में किसी अन्य के व्यवसाय द्वारा लाभ उठाता है। 55 वर्ष की आयु में धर्म-कर्म तथा तीर्थाटन में विशेष रुचि लेने लगता है। 66 वृद्धावस्था में किसी परिजन द्वारा आकस्मिक-लाभ होता है, जिससे इसकी आर्थिक-सम्पन्नता और बढ़ जाती है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(2363)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, स्वस्थ, बलिष्ठ, उग्र स्वभाव का, कुंचित बालों, विशाल नेत्र तथा उभरे हुए कपोलों वाला होता है। यह अपना विरोध सहन नहीं कर पाता। गुरु गंभीर वाणी बोलने वाला यह व्यक्ति अपने पौरुष द्वारा धनी होता है, तथापि धन के प्रति इसे कोई विशेष मोह नहीं होता है। यह सदैव दूसरों की भलाई की बात सोचता रहता है। यह शीघ्र निर्णय लेता है। पुलिस अथवा फौज में भर्ती होने पर यह शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी उग्र स्वभाव की तथा रुग्ण बनी रहने वाली होती है। दोनों की विचारधाराएं अलग-अलग होने के कारण पति-पत्नी में सामंजस्य नहीं बैठ पाता। यह जातक राजकीय-सेवा में उच्चपद पर लगभग 20 वर्षों तक रहता है। संतानें कम होती हैं। संतान से कोई सुख-दुःख नहीं मिलता। परमायु 62 वर्ष होती है।

(2364)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, स्वस्थ, किसी से न दबने वाला, पत्नी के प्रेममय अधिपत्य को भी सहन न करने वाला, अपने कार्यों को बड़ी चतुराई से निकालने वाला तथा परदेश में रहकर यश, सम्मान तथा धन अर्जित करने वाला होता है। यह 20-22 वर्ष की आयु से ही सेवा-कार्य में संलग्न होकर उन्नति करना आरंभ कर देता है। कुछ ही समय में यह अपने पद-प्रतिष्ठा को उन्नत बना लेता है तथा धनी भी हो जाता है। इसके कई पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर धनी तथा सुखी बनते हैं। उनके कारण जातक की मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है। इस जातक को शत्रुओं के कारण परेशानी होती है, परन्तु अन्ततः सभी विवादों से लाभ ही होता है। मुकदमे आदि के कारण इसे परेशान भी बहुत रहना पड़ता है। परमायु 60 वर्ष से अधिक होती है।

(२३०५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ स्थूल शरीर वाला, मध्यम कद का, उग्र स्वभाव का होते हुए भी अपने चित्त को संयमित बनाये रखने में कुशल तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त करने वाला होता है। यह केवल उपदेशक, व्याख्याता अथवा सुवक्ता होता है। इसके तर्क अकाट्य तथा सुनने वालों को प्रभावित करने वाले होते हैं। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करके विदेश में ही अथवा परदेश में किसी उच्च प्रतिष्ठान की व्यावसायिक-सेवा में संलग्न होकर, शीघ्र उन्नति करता हुआ ३० वर्ष की आयु में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। जीवन के ४०, ४५ तथा ४८ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। बाहरी स्थानों से इसे आकस्मिक रूप से बहुत लाभ होता है। जीवन में अनेक बाधाएं आती हैं तथा धन की आवश्यकता की भी सम्यक् पूर्ति नहीं हो पाती। इसके कई पुत्र होते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२३०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, शान्तिप्रिय तथा सुशिक्षित होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, संगीत-गायन में चतुर, व्यवहार-कुशल तथा घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही व्यवसाय में परिवर्तन होता है तथा अर्थोपार्जन सरलता पूर्वक होने लगता है। यह अपने प्रत्येक प्रयत्न एवं पुरुषार्थ में सफल होता है। राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है तथा ३९ वर्ष की आयु में बहुत धनी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है। जीवन के ४४, ४८, ५३, ५८ तथा ६५ वें वर्ष बड़े सुखद तथा सम्मानदायक सिद्ध होते हैं। सन्तानें कम होती हैं। यह धार्मिक कार्यों में भी धन को खर्च करता है तथा वृद्धावस्था में तीर्थयात्राएं भी करता है। पत्नी प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। परमायु ६३ वर्ष होती है।

(२३७७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बा-कद वाला, दूसरों के दुःख-दर्द को समझने तथा उनकी सहायता करने वाला एवं सद्गुणी होता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर आजीविकोपार्जन करता है। २१-२२ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा मधुरभाषिणी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। अपने व्यक्तिगत गुणों, लेखन तथा व्यावसायिक दक्षता से भी जातक धन कमाता तथा यश प्राप्त करता है। २५ वर्ष की आयु के बाद इसे जीवन में धन आदि किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। इसके अनेक पुत्र होते हैं। वे सभी बड़े होकर सुयोग्य, तेजस्वी, धनी तथा यशस्वी बनते हैं। इस जातक के जीवन के २३, २८, २९, ३५, ३९, ४२, ४६, ४९, ५३, ५८ तथा ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह प्रायः स्वदेश में ही रहकर जीविकोपार्जन करता है। परमायु ७४ वर्ष के लगभग होती है।

(२३७८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद, चौड़े मस्तक, बड़ी-बड़ी आँखों तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह लेखन-कार्य में रुचि रखता है। अपने साहस तथा पुरुषार्थ से परोपकार के कार्य करता रहता है। इसे अपने परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलता, अतः धन के लिए यह सदैव चिन्तित बना रहता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कला-संगीत की जानकार तथा अपने परिवार में प्रमुख स्थान पाने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही इस जातक का भाग्योदय होता है तथा अपने कार्यों में सफलतायें मिलने लगती हैं। परन्तु पत्नी के साथ इसका संग अधिक दिनों तक नहीं चलता। एक या दो सन्तानों के जन्म के बाद ही पत्नी की मृत्यु हो जाती। पत्नी की मृत्यु के बाद जातक परदेश में रहने लगता है। ४५ से ५६ वर्ष तक विरक्त जैसा जीवन बिताता है। ५८वें वर्ष अचल-सम्पत्ति मिलती है। परमायु ७५ वर्ष होगी।

(२३७९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, मध्यम कद का, गौर वर्ण, विशाल-हृदय, अपनी उदारता के कारण सर्वत्र लोकप्रिय तथा महत्त्वाकांक्षी होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है, परन्तु यह उससे जैसे कोई मतलब ही नहीं रखता। इसका विवाह 22 अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, काव्य-कलाओं की ज्ञाता एवं स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। पत्नी हृदय से प्रेम करती है, तथापि जातक की निःसंगता के कारण दुःखी भी रहती है। यह जातक न तो कोई नौकरी करता है और न किसी के दबाव में रहता है। इसका अधिकांश समय दूसरों के कार्यों में व्यय होता है। इसकी पत्नी बहुत धन कमाती है। वह अपनी कला एवं अध्यवसाय के बल पर प्रसिद्धि तथा धन प्राप्त करती है तथा जातक की ओर से निश्चिन्त बनी रहती है। इसके अधिक सन्तानें नहीं होतीं। कन्याएँ अधिक होती हैं। परमायु ७१ अथवा ८६ वर्ष होती है।

(२३८०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त तेजस्वी, हृष्ट शरीर का, सुन्दर, लोगों को प्रभावित करने वाला तथा बचपन से सुख पाने वाला होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा जातक के प्रति कुछ उदासीनता रखने वाली होती है। यह जातक कुछ विलासी स्वभाव का होता है तथा अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। इसे राज्य से बहुत लाभ होता है। राजकीय सेवा में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होने की इच्छा बनाये रखता है। यह अपनी योग्यता तथा गुणों के कारण राज्य के अतिरिक्त समाज में भी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसके पुत्रियाँ अधिक होती हैं, पुत्र कम होते हैं। इसकी स्त्री सन्तानें सुयोग्य बन जाती हैं तथा इसके सम्मान की वृद्धि करती हैं। इसे आर्थिक-कष्ट प्रायः नहीं होता। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १०३२[?]

कु० ए०

(2381)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वाभिमानी, पुष्ट, मध्यम कद का, गौरवर्ण, वाक्चातुर्य में ही निर्भीक तथा स्पष्टवादी होता है। यह बहुत मर्मस्पर्शी एवं विचारशीलता पूर्ण बात कहने वाला, कुल के पूर्व कर्ता [?], तथा आर्थिक रूप से दयालु स्वभाव का होता है। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा स्नेहशीला होती है। यह जातक जहाँ बड़ा पराक्रमी होता है, वहीं इसकी पत्नी भी अपने मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा के प्रति अहंभावना रखने वाली होती है। यह जातक 24 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा 42 वर्ष की आयु में अत्यन्त उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसके पास चल तथा अचल सम्पत्ति का अभाव नहीं रहता। इसकी पत्नी भी अनेक स्रोतों से धनोपार्जन करती है। इसे संतान हेतु कष्ट होता है। परमायु 83 वर्ष होती है।

(2382)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद वाला, पुष्ट, आकर्षक, गौरवर्ण तथा शान्तिपूर्ण [?] वातावरण में रहना पसन्द करने वाला होता है। यह अपने वचन का बड़ा पक्का होता है तथा असत्य-भाषण से बड़ी घृणा करता है। स्त्रियों के प्रति यह विशेष आकर्षित होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तेजस्वी, बहुत उग्र, काम करने में अग्रणी तथा अपनी योग्यता से स्वयं भी धनोपार्जन करने में सफल होती है। पति-पत्नी दोनों ही धन कमाकर यथेष्ट चल, अचल सम्पत्ति अर्जित करते हैं। 28 वर्ष की आयु से यह जातक मित्रों से लाभ उठाता रहता है। दीर्घकाल तक राजकीय-सेवा में भी रह सकता है। इसे राज्य के अतिरिक्त अन्य अनेक स्रोतों से भी आर्थिक-लाभ होता है। संतानें कम तथा सुयोग्य होती हैं। परमायु 88 वर्ष होती है।

(२३८३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त विनम्र, उदार स्वभाव का, मधुरभाषी तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला होता है। इसे विपुल मात्रा में पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त होती है। यह स्वयं बहुत गुणी होता है। इसका विवाह 21 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह इसके विचारों की तथा पति को खुश देते हुए उसे अपने वश में रखने वाली होती है। वह जातक को घर-गृहस्थी की चिन्ता से पूर्ण मुक्त कर देती है। यह जातक राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला तथा 25 वर्ष की आयु से निरन्तर धनोपार्जन एवं प्रगति करने वाला होता है। यह राज्य में उच्च पद एवं अधिकार प्राप्त करता है। काव्य तथा संगीत की ओर इसकी विशेष रुचि होती है। इसके कई पुत्र, पुत्री होते हैं। इसकी परमायु 75 वर्ष के लगभग होती है।

(२३८४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अनेक विषयों का ज्ञाता, वाक्पटु, अपनी मीठी वाणी तथा मनोहर व्यक्तित्व से सबको प्रभावित एवं आकर्षित करने वाला होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी प्रत्येक क्षेत्र में साथ देने वाली, सुन्दरी, परिवार के प्रति उत्तरदायी तथा जातक को बहुत सुख देने वाली होती है। इसे विवाहोपरांत प्रचुर धन की उपलब्धि होती है। इसे व्यवसाय तथा सरकारी-सेवा से लाभ होता है। यह 23 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है। 30 वर्ष की आयु में बहुत धनी हो जाता है। इसे पत्नी के द्वारा भी आर्थिक-सम्पन्नता प्राप्त होती है। इसे द्विभार्या योग होता है तथा यह एकाएक अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। इसके खानपान की कमी कभी नहीं रहती। संतान विलम्ब से होती है। परमायु 73 वर्ष की प्राप्त होती है।

(२३८५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद वाला, अत्यन्त साहसी तथा [illegible] वाला होता है। यह अपने अध्यवसाय तथा परिश्रम से जीवन में कुछ प्राप्त करता है। इसे माता-पिता से प्रेम मिलता है, परन्तु यह उससे संतुष्ट नहीं होता। यह अत्यन्त महत्वाकांक्षी होता है तथा अपनी योग्यता से सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य की इतनी अधिक वृद्धि कर लेता है कि बहुत धनी लोगों में इसकी गणना हो जाती है। यह विचित्र स्वभाव का होता है। यह छोटे तथा गरीब लोगों को अपने गले लगाता तथा उनका साथ देता है। वे लोग इसे देवता की भाँति मानते हैं। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है और यह इसे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग करती है। यह कोई नौकरी आदि न करके व्यवसाय द्वारा ही धनोपार्जन करता है। जीवन के ३२वें वर्ष में इसे संतान प्राप्त होती है। परमायु ५० वर्ष के लगभग होती है।

(२३८६) - इस जातक का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली होता है। यह कला-साहित्य का प्रेमी तथा गुण-लेखक होता है। संगीत-वाद्य का भी इसे ज्ञान होता है। इसका विवाह 23-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा गुणवती होती है। यह जातक के साथ प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है तथा जातक उसे साथ लेकर देशान्तरों में भ्रमण भी करता है। यह जातक स्वोपार्जित-सम्पत्ति के अतिरिक्त पैतृक-धन का उपभोग भी करता है। इसके पास धन की कमी कभी नहीं रहती। यह ३० वर्ष की आयु तक बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है। जीविकोपार्जन हेतु यह व्यापार करता है। अपने गुणों से ही विपुल सम्पदा अर्जित करता है। इसे राज्य द्वारा भी सम्मान मिलता है। यह [illegible] जीवनभर सुखी रहता है। पुत्र-पुत्रियों का सुख भी प्राप्त होता है। ४५ से ५८ वर्ष की आयु के मध्य पत्नी से वियोग होता है। परमायु ७० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(२३८७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, आत्मविश्वासी, शिक्षित, कुलीन तथा पैतृक - सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने गुणों द्वारा धनोपार्जन करता है। किसी की नौकरी नहीं करता। अनेक लोग इसकी सेवा करने के लिए लालायित बने रहते हैं। यह उनसे धन भी प्राप्त करता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है। वैयक्तिक गुणों के अतिरिक्त व्यापार द्वारा भी धन कमाता है। इसे राज्य से भी धन का लाभ होता है। २८ वर्ष की आयु से इसके आर्थिक साधनों में वृद्धि हो जाती है। आकस्मिक - लाभ के भी अवसर मिलते हैं। इस प्रकार जीवन पर्यन्त यह सम्पत्तिवान बना रहता है। इसके ऐश्वर्य, कीर्ति एवं धन में उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। दो पुत्र होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३८८) - इस जन्मांग-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चंचल, कोमल चित्त का, मधुर वचन बोलने वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह बाल्यावस्था से ही माता-पिता का भक्त तथा उनका आज्ञाकारी होता है। इसका विवाह २१-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी [illegible] भी होती है। वह स्वस्थ होते हुए भी अनावश्यक रूप से चिन्तित बनी रहती है। घरेलू समस्याएं भी उसे परेशान रखती हैं, तथापि वह धीरता पूर्वक समय को निकालती तथा धन की रक्षा करती है। यह जातक जमीन, पशु अथवा धातु से सम्बन्धित व्यवसाय द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। इसे जीवनभर धन का अभाव नहीं रहता। यह अत्यन्त साहसी तथा नेतृत्व के गुणों से युक्त होता है। सन्तान से सुयोग तथा सहायता होती है। इसे ६१ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है तथा परमायु ८० वर्ष के लगभग प्राप्त होती है।

(२३८९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुक्र, स्वस्थ, स्थूल शरीर का, उदार, सहृदय तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। यह अपना काम बिगाड़ कर भी दूसरों की सहायता करता है। इसे सभी लोगों से प्रेम होता है। अपने-पराये पन की भावना इसमें नहीं पाई जाती। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गोरे रूप शरीर की तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह धन के प्रति विशेष लगाव रखती है। अपनी कृपण मनोवृत्ति के कारण वह पर्याप्त धन संचित कर लेती है तथा आवश्यकता के समय उसका उपयोग भी करती है। यह जातक २८ वर्ष की आयु से देशान्तर को गमन करता है और यात्राओं से ही धन तथा यश अर्जित करता है। इसे स्वतन्त्र व्यवसाय, अध्यापन तथा अपने विशिष्ट गुणों से एवं राज्य द्वारा धन की आमदनी होती है। पृथ्वी से भी लाभ होता है। इसके दो पुत्र होते हैं। परमायु ८० वर्ष की होती है।

(२३९०)- इस जन्मांग चक्र का अधिपति शुक्र, स्वस्थ, साहसी, अत्यन्त उत्साह से काम करने वाला तथा दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर बना रहने वाला होता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, समझदार तथा शीतल होती है। वह अपनी बुद्धि तथा गुणों से घर-परिवार को प्रभावित करती है। यह जातक काव्य-साहित्य का रचयिता, ग्रन्थ-लेखक तथा बड़ा विद्वान होता है। २७ वर्ष की आयु में इसे विशेष ख्याति उपलब्ध होती है। यह अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह अपने घर से दूर की यात्रायें करता है तथा देशान्तर में इसे बहुत सम्मान मिलता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है तथा वृद्धावस्था में धर्मोपदेशक का रूप ग्रहण कर लेता है। लोग इसके शिष्य बन जाते हैं। इसे राज्य से भी सम्मान मिलता है। संतानें कम होती हैं या होती ही नहीं हैं। धन निर्वाहलायक पास बना रहता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार, निश्छल हृदय का तथा सभी लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में अपने माता-पिता का बहुत लाड़ला होता है। यह उन्नत नासा भी होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। १८ से २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी तेजस्वी, सुशीला, सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है। वह जातक को सुख देने वाली तथा स्वयं धनोपार्जन करने वाली होती है। वह औषध-विज्ञान तथा चिकित्सा शास्त्र का ज्ञाता होता है। जातक अन्य विषयों का जानकार होता है और राजद्वार धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, परन्तु किसी की नौकरी नहीं करता। यह जातक ३८ वर्ष की आयु में विशिष्ट सम्मान अर्जित करता है। इसे आजीवन सुख तथा ऐश्वर्य उपलब्ध रहता है। सन्तान हेतु कष्ट पाता है। परमायु ७६ अथवा ८८ वर्ष होती है।

(२३६२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति लम्बे कद तथा स्थूल शरीर का, सात्विक, दूरदर्शी, प्रतापी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। यह सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है, अतः बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। बड़े होकर उच्च पद का सम्मान प्राप्त होता है। यह सार्वभौम तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी कुलीन परिवार की, सुन्दरी, प्रियभाषिणी तथा सुख देने वाली मिलती है। वह जातक की अनुगता बनी रहती है। यह जातक अपने जीवन में शासन तथा परोपकार करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता। इसके शत्रु सामने आते ही पराजित हो जाते हैं। जीवन के ५१ वें वर्ष में यह अप्रत्याशित यश प्राप्त करता है। ५३ वर्ष की आयु में आकस्मिक विपत्ति की सम्भावना रहती है। एक पुत्र तथा एक पुत्री का पिता होता है। इसे शत्रुओं से निरन्तर लोहा लेना पड़ता है तथा उनका दमन भी करता है। परमायु ७८ वर्ष से ऊपर होती है।

(२३६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार, दानी, धनी, सच्चरित्र, किन्तु स्वभाव का अत्यधिक क्रोधी तथा विद्वान होता है। इसे प्रायः तो क्रोध आता ही नहीं है और यदि आवे तो शीघ्र ही शान्त भी नहीं होता। इसका विवाह २१ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मधुर स्वभाव की, उदार हृदय तथा सहयोगिनी होती है। वह जातक के लिए बड़ी भाग्यशालिनी सिद्ध होती है। जातक का बचपन सुख में बीतता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने गुणों से सबको प्रभावित करता है। इसकी स्वाभाविक अत्यधिक विनम्रता इसके गुणों को प्रकाश में आने से बहुत कुछ रोकती है। तथापि २४-२५ वर्ष की आयु में ही यह किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है तथा पर्याप्त धन अर्जित करता है। इसके दो पुत्र होते हैं। मान-सम्मान तथा धन की कमी कभी नहीं रहती। परमायु ६९ वर्ष होती है।

(२३६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उन्नत कद वाला, गौरवर्ण, उन्नत ललाट तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला होता है। यह दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होता है। यह बाल्यावस्था में अपनी माता से अलग रहता है। किसी अन्य स्थान में इसका पालन पोषण होता है। वहीं से यह अपनी उन्नति भी आरंभ करता है। यह परदेश में अपना घर बनाता है तथा वहीं पर धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशील होती है। वह शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करती है तथा जातक के प्रति उदासीन सी रहती है। उसका अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है। यह जातक मूल्यवान वस्तुओं का व्यवसाय करता है। इसके संतान या तो होती ही नहीं है अथवा बहुत विलंब से होती है। इसका जीवन बहुत एकाकी जैसा होता है। परमायु ८३ वर्ष होती है।

(२३८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, गोरा, बुद्ध, स्थूल काय, बलिष्ठ, दिव्यदर्शी, उन्नत ललाट वाला तथा शान्त स्वभाव का होता है। इसके पास पैतृक तथा अपनी सम्पत्ति बहुत होती है। यह बाल्यावस्था से ही अपनी माता से अलग रहता है तथा किसी सम्बन्धी के यहाँ रहते हुए शिक्षा प्राप्त करता है, जहाँ से इसका भरण-पोषण होता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर उन्नति करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम - संगीत, नृत्य, नाटक आदि में इसे विशेष रुचि होती है। ३८ वर्ष की आयु में इसे आजीविका हेतु कार्य-क्षेत्र बदलने का अवसर प्राप्त होता है। यह अपने गृहस्थजन से झगड़ा, विवादों के फेरे में पड़कर बहुत समय तक विभिन्न समस्याओं से जूझता है, परन्तु अन्त में इसे सर्वत्र सफलता प्राप्त होती है। इसे सन्तान के सम्बन्ध में कष्ट होता है। परमायु ६६ वर्ष से अधिक होती है।

(२३८६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, प्रभावशाली, शान्त चित्त का, दूसरों के प्रति उदार तथा काव्य-संगीत का प्रेमी होता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा गुणों द्वारा विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। इसे धन के प्रति बहुत लगाव होता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह सेवा-कार्य में संलग्न होकर अर्थोपार्जन करता है। यह अपने पद से अधिक महत्व तथा प्रभाव उत्पन्न करने में सफल होता है। बड़े-बड़े अधिकारीगण इसकी बात मानते हैं। इसे संगीत तथा काव्य के प्रति लगाव होता है। ४० वर्ष की आयु में इसे अचल-सम्पत्ति प्राप्त होती है। इसे किसी नदी तटवर्ती-स्थान में रहने का विशेष लाभ मिलता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें कम, परन्तु सुयोग्य होती हैं। ५६ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३६७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चंचल, संगीत एवं साहित्य का प्रेमी तथा अपने व्यवसाय द्वारा धनोपार्जित करने वाला होता है। यह भूमि, काष्ठ तथा खनिज धातुओं द्वारा धन कमाता है। ३१ वर्ष की आयु में यह उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। फिर जीवनभर कभी धन की कमी नहीं रहती। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी स्वाभिमानिनी तथा आत्मविश्वास से युक्त होती है। यह घर तथा बाहर के सभी उत्तरदायित्वों को कुशलता पूर्वक वहन करती है तथा जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। जातक को अपनी पत्नी के कारण भी सम्मान मिलता है। यह जातक राज्य से धन तथा सम्मान भी प्राप्त करता है। ३५ से ६१ वर्ष की आयु तक इसे राज्य द्वारा धन-मान की निरंतर उपलब्धि होती रहती है। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। वे भी सुख देते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२३६८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, धनी, मानी, कला-मर्मज्ञ एवं राजाओं के समान ऐश्वर्यशाली होता है। यह बलिष्ठ, उन्नत ललाट तथा बड़ी आँखों वाला, कुछ स्थूलकाय किन्तु अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। 22-23 वर्ष की आयु में ही यह उच्चपद प्राप्त कर लेता है। इसकी उन्नति बाहर रहकर होती है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी परमसुन्दरी तथा गुणवती होती है। वह पति को अपने अधीन बनाये रखती है। जातक भी उसे अत्यधिक प्रेम करता है। ४५ वर्ष की आयु में जातक को शासन द्वारा बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। धन तथा ऐश्वर्य की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। यह दूसरों की संपत्ति का निरीक्षक बनकर भी उससे आमदनी प्राप्त करता है। इसे चोर, अग्नि, राज्य तथा सर्प से भय रहता है। दो पुत्र, दो पुत्री होते हैं। परमायु ७८ वर्ष।

(२३९९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, विद्वान, साहित्य तथा संगीत का ज्ञाता, स्वस्थ, सौष्ठ शरीर, लम्बे कद तथा गौर वर्ण वाला होता है। इसकी आँखें बहुत पैनी होती हैं। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। २१-२२ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। अपने गुण तथा अध्यवसाय के बल पर यह किसी स्वतन्त्र व्यवसाय को करता और उससे पर्याप्त लाभ कमाता है। इसे भूमि, धातु तथा पशुओं के व्यवसाय से विशेष लाभ होता है। यह अन्य लोगों की नौकरी में भी धन कमाता है। २९ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक-धन का लाभ होता है। यह अपने व्यवसाय में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होती है। परमायु ७३ वर्ष के लगभग होती है।

(२४००)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुष, बलिष्ठ, स्वाभिमानी तथा क्रुद्ध उग्र स्वभाव का होता है। यह किसी का नियन्त्रण स्वीकार नहीं करता। शान्त स्वभाव से सम्पन्न यह जातक विपुल ऐश्वर्य का स्वामी होता है। धन का आगमन निरन्तर तथा प्रचुर मात्रा में होता रहता है। यह पुलिस अथवा सेना विभाग का उच्चाधिकारी भी हो सकता है। अपने कार्य कौशल से यह सबका प्रिय होता है। सब लोग इसका नेतृत्व प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते हैं। यह जातक २४-२६ वर्ष की आयु में सुन्दरी, काव्य-संगीत की ज्ञाता तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाली पत्नी प्राप्त करता है, वह भी अपने अध्यवसाय से धनार्जन करने वाली होती है। दो पुत्र तथा तीन कन्याएँ भी होते हैं। ५३ वर्ष की आयु तक यह जातक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। सुखी-जीवन बिताता हुआ ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२४०१) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, छोटा, इकहरे परन्तु दृढ़ शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने सभी कार्यों का कुशलता पूर्वक संचालन करता है। यह मितभाषी, संतुलित मस्तिष्क का, अनुशासन-प्रिय तथा अध्ययनशील होता है। इसे माता से पूर्ण सुख नहीं मिल पाता, जबकि पिता से सुख मिलता है। यह शिक्षा प्राप्त कर, किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा कलाओं की जानकार होती है। जातक को पत्नी से बहुत सुख मिलता है। वह पारिवारिक दायित्वों का पूर्ण रूपेण निर्वहन करती है तथा बहुत रहस्यपूर्ण वाली होती है। ३८ वर्ष की आयु के बाद जातक बड़ी सम्मानित स्थिति प्राप्त कर लेता है। जीवन के अन्त तक इसे धन, सुख तथा प्रतिष्ठा का अभाव नहीं होता। परमायु ७६ वर्ष से अधिक होती है।

(२४०२) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, कुछ पतले परन्तु स्वस्थ शरीर का, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, वाणी का धनी तथा अनेक गुणों से सम्पन्न होता है। यह 23 वर्ष की आयु से प्राय: परदेश में रहना आरम्भ करता है तथा २८ वर्ष की आयु तक वहाँ रहकर पर्याप्त धन तथा यश अर्जित करता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सरल स्वभाव की, कृपण तथा पुत्र की इच्छा रखने वाली सुन्दरी होती है। यह जातक ईश्वर भक्त, परिश्रमी, साहसी तथा अपने अध्यवसाय से धनोपार्जन करने वाला होता है। ४८ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। इसके पुत्र या तो होता ही नहीं है अथवा बड़ी अवस्था अर्थात् ४६ वर्ष की आयु में एक पुत्र प्राप्त होता है। ५८ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लग सकती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(2403) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ तथा कुछ स्थूल शरीर का, गौरवर्ण, तेजस्वी एवं साहित्य-प्रेमी होता है। यह अपने गुणों तथा ज्ञान के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह 21-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सद्गुण-सम्पन्ना तथा सुख देने वाली होती है। यह जातक जीविकोपार्जन हेतु देशान्तरों की यात्राएं करता तथा परदेश में पत्नी से अलग रहता है। इसकी पत्नी अपने मौज एवं सुख-साधनों पर बहुत खर्च करती है। जातक 25 वर्ष की आयु में किसी सेवा-कार्य में संलग्न हो, धनोपार्जित आरम्भ कर देता है। इसके कई पुत्र होते हैं। वे सभी तेजस्वी तथा सम्मान-वृद्धि करने वाले होते हैं। इसके जीवन में अनेक अवांछित-सी घटनाएं घटती हैं। 40 से 48 वर्ष की आयु में यह अपने व्यवसाय में परिवर्तन करता है, तत्पश्चात् आजीवन किसी स्वतन्त्र व्यवसाय पर निर्भर रहता है। परमायु 75 वर्ष होती है।

(2404) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सरल, सीधा, ज्ञानी, भाग्यवान्, अनेक विषयों का जानकार, माता-पिता का नम्र तथा उनका आज्ञा-पालक एवं उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वतन्त्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होती है। वह घर-बाहर सर्वत्र अपने लिए सम्मानजनक स्थान बनाती है। इस जातक को 32 वर्ष की आयु में धन का विशेष लाभ होता है। 22 से 32 वर्ष की आयु तक राजकीय-सेवा में रह सकता है, फिर उसे त्याग कर कोई स्वतन्त्र व्यवसाय करता है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री का योग होता है। सभी संतानों से वांछित-सुख प्राप्त होता है और वे सुयोग्य निकलती हैं। इसे 28 वर्ष की आयु में कुछ कष्ट होता है, तदुपरान्त 51 वर्ष की आयु में भी शारीरिक-कष्ट होना सम्भव है। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है। परमायु 75 वर्ष से अधिक होती है।

(२४०५) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, नीतियुक्त वचनों को कहने तथा मानने वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त, सद्गुणी तथा बाल्यावस्था से ही ज्ञान-पिपासु होता है। यह अपने ज्ञान से सबको चकित कर देने की शक्ति रखता है। बाल्यावस्था से ही इसका अभ्युदय दिखाई देता है। यह प्रत्येक कार्य में आगे रहता है। यह राजनीति में प्रवेश प्राप्त तो करता है, परन्तु राजनीति-क्षेत्र से अलग-सा ही रहता है। यह किसी का आधिपत्य पसन्द नहीं करता। २२-२३ वर्ष की आयु से ही यह धन कमाना आरम्भ कर देता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह भी २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी भाग्यशाली तथा पति को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। यह जातक किसी अन्य स्त्री के पुरुषार्थ तथा व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित होता है। वह भी जातक से बहुत स्नेह करती है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२४०६) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, ज्ञानी तथा सबको प्रभावित करने वाला होता है। इसका जीवन बाल्यावस्था से ही कुछ रहस्यपूर्ण सा होता है। यह या तो [illegible] से विरक्त होता है अथवा इसमें भौतिक-समृद्धि हेतु विशेष तृष्णा पाई जाती है। यह पूजा-पाठ, तन्त्र-मन्त्र आदि की साधना में बहुत लगा रहता है। पारलौकिक विषयों का इसे ज्ञान भी होता है। इसके पास खर्च करने के लिए धन की कोई कमी नहीं रहती। यह बहुत समय तक घर से अलग-थलग रहता है। इसे लोक में बहुत सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। परन्तु गृहस्थ-जीवन अधिक समय तक नहीं चलता। कुछ वर्षों बाद ही पत्नी से वियोग हो जाता है। एक कन्या का पिता अवश्य बन जाता है। इसका अधिकांश जीवन घर से अलग रहते हुए ही व्यतीत होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४०७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, परिश्रमी, दृढ़ चित्त वाला, पुरुषार्थी, सुशील तथा निर्बलों का मित्र होता है। यह अपने घर से बाहर रहकर भाग्योदय प्राप्त करता है। इसका विवाह २०-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कोमल विचारों की होती है। कठिनाई से एक संतान होती है, तत्पश्चात् पत्नी से वियोग हो जाता है। इस जातक को पग-पग पर दिक्कतों तथा बाधाओं का सामना करना पड़ता है और वे दूर भी अपने आप ही होती रहती हैं। शत्रु और विरोधी इसे हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु प्रभाव उल्टा ही होता है। इसे उनके कारण लाभ होता है। वे इसकी भाग्यवृद्धि में सहायक ही बनते हैं। इसे अपने जीवन के २४, ३१, ३३, ३८ तथा ४५वें वर्ष में जीविकोपार्जन के स्रोत में परिवर्तन करना पड़ता है। इसके दो पुत्र होते हैं। एक अधिक जीवित नहीं रहता। यह घर से दूर रहकर वृद्धावस्था व्यतीत करता है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२४०८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उदार, परिश्रमी, स्वतन्त्र विचारों का, अपने पुरुषार्थ पर ही भरोसा रखने वाला तथा ईश्वर पर विश्वास न करने वाला होता है। सामान्यतः इसे किसी भी अवस्था से सन्तोष नहीं होता। इसमें जुआ खेलने आदि के व्यसन भी पाये जाते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। उस की विचारधारा जातक से भिन्न होती है अतः पति-पत्नी में विचार-साम्य नहीं हो पाता और दोनों में प्रायः बनती भी नहीं है। २५ वर्ष की आयु में यह जातक राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर जीविकोपार्जन आरंभ करता है, परन्तु कुछ समय बाद ही उसे छोड़कर दूसरा काम करने लगता है। यह कुछ ऐसे कार्य भी करता है, जिनके कारण अपयश मिलता है। ४१ वर्ष की आयु में कष्ट भोगता है। दो पुत्र तथा एक पुत्री का पिता बनता है। ६१ वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के बाद इसकी मृत्यु होती है।

(२४०९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बाल्यावस्था में दुःखी तथा १८ से २४ वर्ष की आयु तक दुःखी रहता है। इसके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं। यह अपना व्यवसाय करना चाहता है, परन्तु उसमें निर्वाह नहीं होता। अतः इसे यादी नौकरी करके ही जीविकोपार्जन करना पड़ता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तीव्रबुद्धि तथा तेजस्विनी होती है, वह जातक से भिन्न विचारों की होती है तथा जातक को अपनी इच्छानुसार ही चलाती है। जातक को घर-गृहस्थी से कोई मतलब नहीं होता। पत्नी उसका यथोचित संचालन करती रहती है। ३२ वर्ष की आयु में यह किसी उच्च स्थान में नियुक्ति प्राप्त करता है। फिर यह उन्नति करता चला जाता है। ४२ तथा ४३ वर्ष की आयु में किसी आकस्मिक आघात से इसे [illegible] प्राप्त होती है। पत्नी का साथ अधिक नहीं रहता (युवावस्था में ही पत्नी वियोग हो जाता है)। दो पुत्र होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२४१०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, उदार, साहसी, दृढ़ तथा जनता आदि का, गौरव एवं दूसरों को प्रभावित करने वाला होता है। इसे मित्रों तथा विरोधियों से सदैव लाभ प्राप्त होता है, शत्रुओं तथा विरोधियों की अधिकता से यह परेशान भी रहता है। यह शत्रुजयी, भूमि-अर्जनकर्ता तथा आजीविकोपार्जन हेतु परिश्रम करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनमानी करने वाली तथा अपने कुल की प्यारी होते हुए भी जातक से अनुराग बनाये रखती है। वह स्वयं भी धनोपार्जन करती है तथा अपने उद्योग में संलग्न बनी रहती है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। सन्तानों से जातक को सुख मिलता है। ४८ वर्ष की आयु में यह कोई बड़ा उद्योग आरम्भ करता है, जो ६० वर्ष की आयु तक बहुत ही उन्नति कर लेता है तथा पर्याप्त धन का लाभ दे जाता है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२४११)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, ऊँचे कद तथा भारी शरीर का एक उग्र स्वभाव वाला होता है। इसका जन्म अपने पिता के परोक्ष में होता है। यह शिक्षा ग्रहण करने हेतु बाल्यावस्था में ही घर से बाहर चला जाता है। अपने अध्यवसाय द्वारा यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सामान्य, साँवली, सरल तथा शान्त स्वभाव की होती है। वह जातक के कार्यों में पूर्ण सहायिका बनी रहती है। यह जातक जीविकोपार्जन हेतु किसी प्रतिष्ठान से संलग्न होता है। ३८ वर्ष की आयु में यह मनोनुकूल पदोन्नति प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात् यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन के ५१ वें वर्ष में यह किसी अन्य स्थान पर चला जाता है और वहाँ भी उच्च पद पर रहते हुए काफी समय तक सेवा करता है। इसके एक पुत्र होता है। वह प्रभाव देता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४१२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हँसमुख, विनोदी, कुछ स्थूल तथा लम्बे शरीर का, गौरवर्ण तथा बुद्धिमान होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, गंभीर तथा कृपण स्वभाव की होती है। जातक बहुत उदार तथा खुले हाथ से खर्च करने वाला होता है। यह पत्नी की इच्छाओं का आदर तथा उसे प्रेम करने वाला भी होता है। यह जातक २४ वर्ष की आयु से अर्थ-जीविकोपार्जन करने लगता है। यह या तो शिक्षक बनता है अथवा प्रचारक का कार्य करता है। इसके जीवन में एकरसता अधिक रहती है। ३२ वर्ष की आयु में यह बहुत धन कमाने लगता है तथा इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक हो जाते हैं। यह अपने परिश्रम से निरन्तर आगे बढ़ता है तथा पर्याप्त धन-संचय भी करता है। इसके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। सन्तान की ओर से सुखी तथा सन्तुष्ट रहता है। परमायु ७२ वर्ष से अधिक होती है।

(२४२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, तेजस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसे अच्छी शिक्षा, बुद्धि तथा साहस का विशेष अहं रहता है। इसका स्वाभिमान बहुत बढ़ा-चढ़ा रहता है। यह अपने अस्तित्व को भलीभाँति प्रतिष्ठित करने के लिए लालायित बना रहता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त यह राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। लगभग २१-२३ वर्ष की आयु में यह धनोपार्जन आरम्भ करता है तथा इसी आयु में इसका विवाह भी हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, संगीत-वाद्य में कुशल तथा स्वयं भी अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करने वाली होती है। पति-पत्नी दोनों मिलकर खूब धन कमाते हैं। इसके दो पुत्र होते हैं। वे दोनों ही सुयोग्य होते हैं। वे जातक के जीवन में भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं। इस जातक को जीवन के २३, २८, ३२, ३७, ३९, ४३, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४२४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, विद्वान तथा स्वस्थ शरीर वाला होता है। इसका बचपन सुख में बीतता है। इसे पिता का सुख अधिक नहीं मिलता। २३ वर्ष की आयु में यह अपना उद्योग आरम्भ करता है और लाभ कमाता है। कुछ ही दिनों में यह उसे बहुत उन्नत स्थिति में ले जाता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, रूपवती तथा भाग्यशालिनी होती है। वह कला तथा संगीत की जानकार तथा जातक को सदैव सुख देने वाली होती है। उस स्त्री को घर-बाहर सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। जातक के जीवन में ३२, ३९ तथा ४८ वर्ष की आयु में परिवर्तन आते हैं। इसके पुत्र सुन्दर तथा सुप्रसिद्ध होते हैं। कन्या भी योग्य तथा सुन्दरी होती है। ५४ वर्ष की आयु में इसे राज्य के कारण लाभ होता है। सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

भु० सं० ०३३८

कु० १०

(२४१५) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा बाल्यावस्था से ही धन-ऐश्वर्य का स्वामी होता है। यह मूल्यवान वस्तुओं का प्रेमी, सुसज्जित भवन का स्वामी व विलास तथा ऐश्वर्य प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं का उपभोगी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, परन्तु उसका सुख ५-६ वर्ष से अधिक समय तक नहीं मिलता, दो पुत्रों को जन्म देने के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। पुत्र दीर्घायु, सुन्दर तथा सम्पत्तिशाली होते हैं। इस जातक को व्यवसाय से तो धन-लाभ होता ही है, राज्य से भी आमदनी होती है। इसे ३२, ३८, ४१ तथा ४५ वें वर्ष में परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। ये परिवर्तन लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने भाई-बहिनों के लिए बहुत कुछ करता है, परन्तु इसे कोई यश नहीं देता। ४५ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक रूप से चोट लगती है। ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(२४१६) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति कुछ स्थूल-शरीर का, सुन्दर, आकर्षक, बाल्यावस्था से सुखी, माता-पिता से स्नेह पाने वाला तथा उच्च शिक्षित होता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, शीलवान, चतुर तथा घर की उन्नति करने वाली होती है। वह जातक को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित रखती है तथा हितों के अनुकूल कार्य करती रहती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। २२ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ करके निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है। २८ वर्ष की आयु में किसी दूसरे विभाग में प्रोन्नत होकर जाता है। वहाँ भी अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से प्रमुख स्थान प्राप्त कर लेता है। इस जातक के पुत्र इससे प्रेम मानते हैं तथा पिताजी सन्तुष्ट नहीं रहता, अतः यह उनसे अलग अपना घर बनाता है। ५६वें वर्ष से बहुत सुख मिलता है। यह किसी व्यक्ति के साझेदारी में व्यापार करके भी बहुत धन कमाता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२४२७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, भोग-विलास तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन को पसन्द करने वाला, सुरुचिपूर्ण तथा संगीत-नृत्य आदि का शौकीन होता है। इसे स्त्रियों की निकटता विशेष प्रिय होती है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। स्त्री सामान्य रूप-रंग की, मिलनसार तथा कार्यकुशल होती है। इसे पत्नी की ओर से सदैव सुख प्राप्त होता है। यह उससे प्रेम भी बहुत करता है। ५२-५३ वर्ष की आयु में पत्नी से वियोग हो जाता है। यह धन-धान्य से सम्पन्न होते हुए भी सन्तान की ओर से दुःखी रहता है। सन्तान अवज्ञा करने वाली होती है। इस जातक को पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा स्वयं भी यह बहुत धन कमाता है। व्यापार तथा ब्याज आदि से इसे बहुत आमदनी होती है। ६१ वर्ष की आयु में किसी युवती स्त्री की साझेदारी में कारोबार करके यह बहुत लाभ उठाता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२४२८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, व्यवहारकुशल तथा अपने विनम्र स्वभाव से सबको मोहित कर लेने वाला होता है। यह अपने अध्यवसाय तथा परिश्रम द्वारा ही उन्नति करता है। इसे प्रचुर धन तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह अपनी योग्यता द्वारा एक साथ एक से अधिक कार्यों को करने में समर्थ होता है। इसे माता-पिता से कोई सहायता नहीं मिलती। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ विचित्र स्वभाव की होती है तथा जातक से मेल नहीं रखती। फिर भी यह जातक के लिए भाग्यशाली सिद्ध होती है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। जातक अपनी सन्तानों को बहुत प्यार करता है। बड़ी होकर वे सुयोग्य तथा धनी बनती हैं। यह जातक ५१ वर्ष की आयु में विधुर हो जाता है। जीवन के २४, २८, ३२, ३६, ३९, ४२, ४८ तथा ५४ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(2419) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वभाव का, हँसमुख, मधुरभाषी, सुन्दर, कुछ मोटे तथा लम्बे शरीर का एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने परिश्रम से बहुत धन कमाता है। यह नाटकीय ढंग से व्यवहारकुशलता का प्रदर्शन कर, अपना महत्व प्रतिपादित करने की चेष्टा भी करता है। यह पिता का भक्त तथा बन्धु-बान्धवों को सहारा देने वाला होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह कहीं शिक्षिका भी हो सकती है। वह गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। परन्तु जातक अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। यह तीन पुत्रों का पिता होता है। 45 वर्ष की आयु के बाद एक पुत्री भी उत्पन्न होती है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है तथा 50 वर्ष की आयु तक बहुत धनवान बन जाता है। परमायु 73-74 वर्ष होती है।

(2420) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अधिक बोलने वाला, गोल मुँह का, गौरवर्ण तथा निरन्तर धन कमाने में संलग्न रहने वाला होता है। यह 16 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है तथा बड़े कृपण स्वभाव का होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सरल, गुणवती, मितभाषी तथा जातक से भिन्न स्वभाव व्यक्तित्व वाली होती है। इसे पिता अथवा राज्य से कोई लाभ नहीं मिलता। इसकी सन्तानें साहसी तथा परिश्रमी होती हैं। यह अपने व्यापार द्वारा ही प्रचुर धनोपार्जन करता है। 26 से 33 वर्ष की आयु तक यह घर से बाहर परदेश में रहता है। किसी सम्बन्धी के साथ व्यापार करने में इसे घाटा होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा लाभ होता है। यह 50 वर्ष की आयु में विधुर हो सकता है, परन्तु इसके जीवन में अन्य स्त्रियाँ भी रहती हैं। इसकी परमायु 75-76 वर्ष होती है।

भृ० सं० ६३३८

कु० र०

(२४२१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उत्साही, महत्वाकांक्षी, साहित्य का ज्ञाता, सहृदय तथा काव्य-सर्जक होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता तथा ग्रंथ-लेखक भी होता है। यह माता-पिता का प्रिय तथा उनका भक्त भी होता है। यह अपने ही घर में अपने शत्रुओं द्वारा २४ वर्ष की आयु से विरोध पाना आरम्भ करता है। परन्तु अपने सहयोग द्वारा प्रकट किये जाने के कारण यह उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। इसे भूमि, [illegible] धातु, अग्नि तथा वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है। विवाद (मुकदमे) द्वारा भी धन की प्राप्ति होती है। इसे अपनी पत्नी से सम्पूर्ण सुख मिलता है। पत्नी सुन्दर, सुशील, नम्र विनीत तथा स्वतन्त्र रूप से आजीविकोपार्जन करने वाली होती है। इसके दो पुत्र बड़ी आयु में होते हैं। उनसे जातक को वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२४२२) इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, चतुर, धैर्यशाली, सुन्दर तथा विनम्र स्वभाव का होता है। इसे अपने पिता से सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता से सुख नहीं मिलता। यह विवाद तथा प्रतियोगिताओं द्वारा धन कमाता है। इसे चुनौती स्वीकार करना अच्छा लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर परन्तु कुछ विचित्र स्वभाव की पत्नी प्राप्त होती है। अपने शान्त स्वभाव के कारण वह सभी से आदर-सम्मान पाती है। यह जातक २५ से ४१ वर्ष की आयु तक बहुत धन कमाता है। बहुमूल्य वस्तुओं के व्यवसाय से इसे बहुत लाभ होता है। इसकी पत्नी अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए किसी भी सीमा तक बढ़ जाने वाली होती है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्री होते हैं। जीवन के २३, २५, २८, ३२, ३७, ४२, ४६, ४८, ५३ तथा ५७ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७६ वर्ष की प्राप्त करता है।

भु० सं० 8338

कु० १०

(२४२३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर, मध्यम कद वाला, कुछ छोटे मस्तक तथा घुँघराले बालों वाला होता है। इसके शरीर पर रोएँ अधिक होते हैं। मुखमण्डल साधारण होता है। यह अपनी धुन का पक्का होता है। प्रत्येक कार्य बड़े परिश्रम से करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा स्वस्थ होती है। यह जातक अनेक प्रकार के काम करता है तथा कभी भी लगकर कोई काम नहीं करता। यह विभिन्न स्थानों में नौकरी करता है। लगभग ३५ वर्ष की आयु के बाद यह किसी अच्छे प्रतिष्ठान में कार्य करता है। लगभग ६० वर्ष की आयु तक उसी से बहुत धन कमाता है। १८ से ३५ वर्ष की आयु तक अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होती है। सामान्यतः उतार-चढ़ाव का जीवन बना रहता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२४२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, लम्बे कद का, स्थूल शरीर वाला, सुन्दर, आकर्षक तथा बहुत चतुर होता है। यह उदारता का प्रदर्शन सिर्फ दिखावे के लिए ही करता है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए इसे झूठ बोलने में भी कोई संकोच नहीं होता। अपने हित-साधन हेतु यह दूसरों का अहित भी कर सकता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के विचार पति से भिन्न होते हैं, अतः दोनों में मतैक्य नहीं रहता। यह जातक २४ वर्ष की आयु से नौकरी करना आरम्भ करता है। इसे धन की बहुत तृष्णा होती है। ४५ वर्ष की आयु तक यह धन कमाने में ही जुटा रहता है तथा प्रचुर चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। इसके दो पुत्र होते हैं। दोनों ही होनहार होते हैं। वे दोनों सुशिक्षित तथा आज्ञाकारी होते हैं। उन्नति खूब करते हैं। जातक वृद्धावस्था तक कृपण बना रहता है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

भू० सं०

कु० २०

(२०२५) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी चतुर, सभ्य, परिश्रमी, उदार, सहानुभूति पूर्ण तथा बड़ा लगनशील होता है। यह अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। अपनी बुद्धिमत्ता एवं व्यवहार-कुशलता से यह बन्धु-बान्धवों, परिवारजनों तथा बाहर के लोगों से भी बहुत सम्मान प्राप्त करता है। यह दूसरों के दुःख में दुःखी होता तथा उनकी सहायता करता है। इसका विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त इसके कार्य-व्यवहार में परिवर्तन आता है। व्यवसाय द्वारा यह बहुत धन कमाता है। बाहर की यात्राओं द्वारा इसे बहुत लाभ होता है। अपने गृहस्थान से रहते हुए भी यह बहुत उन्नति करता है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। जीवन के ३५, ४१, ४८, ५३ तथा ५६ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होती है। सभी संतानें बड़ी होकर सुयोग्य निकलती हैं। परमायु ७३-७४ वर्ष होती है।

(२४२६) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल शरीर का, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, उच्च शिक्षित तथा अपने सद्गुणों एवं योग्यता के आधार पर उच्च पद पाने वाला होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होती है। यह स्वयं भी बहुत धन कमाता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। यह २८ वर्ष की आयु से कोई व्यवसाय आरंभ करता है तथा शीघ्र ही विपुल सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। यह अनेक प्रकार के मिले-जुले कार्यों से धन प्राप्त करता है। भूमि, व्यापार तथा बुद्धिमत्ता आदि कार्यों से यह लाभ उठाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धन की विशेष तृष्णा रखती है। इसे २६ से ६५ वर्ष की आयु तक बहुत लाभ होता है। किसी उत्तरदायित्व को सँभालने में यह सक्षम होता है। संतानें सुयोग्य तथा आज्ञाकारी होती हैं। परमायु ७८ वर्ष की होती है।

(२४२७) — इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, उदार, दीनजनों की आर्थिक सहायता करनेवाला तथा परदुःखकातर होता है। यह बाल्यावस्था से ही माता से अलग रहता है। किसी अन्य स्थान पर इसका पालन-पोषण होता है। यह बुद्धिमान, गुणवान, ज्ञानी तथा उच्च शिक्षित होता है। अपने कुछ-कार्य द्वारा धनोपार्जन करता है। २५ वर्ष की आयु में ही यह सेवा-कार्य-संलग्न हो जाता है। अपने गुणों तथा पौरुष के बल पर शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बड़ा सम्पत्तिशाली हो जाता है। साहित्य, काव्य तथा संगीत से इसे बड़ा लगाव होता है। इसका विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाहोपरान्त व्यवसाय में बहुत लाभ होता है। यह किसी की साझेदारी में व्यवसाय करता है तथा सरकारी नौकरी भी करता रहता है। कुछ समय तक देशान्तर में भ्रमण भी करता है। तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४२८) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, साहित्य-काव्य आदि का ज्ञाता, कलाओं में रुचि रखने वाला तथा गहन विषयों में गहरी पैठ रखने वाला होता है। २१ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद किसी प्रतिष्ठित संस्थान में अच्छे पद पर नियुक्त होकर सेवा-कार्य करता है। अपने काम से यह सभी को प्रसन्न रखता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आकर्षक तथा बुद्धिमती होती है। यह जातक पैतृक-सम्पत्ति तो प्राप्त करता है, परन्तु इसे पिता का स्नेह नहीं मिलता। पत्नी का व्यक्तित्व जातक के व्यक्तित्व से भिन्न रहता है। दो पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ होती हैं। ४५, ४६ तथा ५६वें वर्ष में कष्ट होता है। ६० वर्ष की आयु के बाद धन तथा सुख की अत्यधिक वृद्धि होती है। इसका जीवन बिना किसी परेशानी के सुख से बीतता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४२९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्थूल काय, परन्तु सुन्दर एवं उदार स्वभाव का होता है। इसके विरोधी बहुत होते हैं, परन्तु अपने पुरुषार्थ से यह उन्हें नीचा दिखा देता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़ी महत्वाकांक्षी तथा उदार स्वभाव की होती है। वह जातक पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखती है। जातक किसी मामले में असहमत होते हुए भी पत्नी का विरोध नहीं करता। पत्नी स्वयं भी धनोपार्जन हेतु किसी पद पर कार्य करती है। जातक नौकरी के स्थान पर कोई व्यवसाय भी कर सकता है। इसके दो पुत्र बड़े सुन्दर तथा गुणवान होते हैं। ४५ से ७८ वर्ष की आयु तक जातक को किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती और न सुख का अभाव ही होता है। जीवन के २६, ३२, ३७, ४२, ४५, ४८, ५२, ५६, ६३, ६८, ७५ वें वर्ष बहुत लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(२४३०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मेधावी, बुद्धिमान, काव्य तथा साहित्य का ज्ञाता, कवि, ग्रन्थ-लेखक तथा अनेक विषयों का जानकार होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ लम्बे कद की, बड़ी-बड़ी आँखों वाली तथा जातक को अपने अनुकूल बनाये रखने की कला में दक्ष होती है। यह अपने जन्मस्थान से दूर, परदेश में जाकर धन कमाता है तथा देशान्तर की यात्राएँ भी करता है। ३७ वर्ष की आयु में यह परदेश में ही अचल-सम्पत्ति क्रय करता है। इसकी पत्नी भी किसी प्रतिष्ठान से संयुक्त होकर धनोपार्जन करती है तथा उच्चपद पर प्रतिष्ठित होती है। इसके एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। इसे ६३ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लगती है। सामान्यतः जीवन सुखी बीतता है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२४३१)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मधुर भाषी, स्वार्थ-साधन में कुशल तथा अपने लक्ष्य का ध्यान रखने वाला बहुत चतुर होता है। यह कुछ लम्बे कद तथा स्थूल शरीर का एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसकी सम्पत्ति का प्रबन्ध करने वाले लोग इसे बहुत लाभ कराते हैं। इसको २०-२१ वर्ष की आयु से ही धन का लाभ होने लगता है। विवाह भी २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वह जातक को सुख पहुँचाती है। इसे राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। धन-लाभ के और भी अनेक स्रोत बने रहते हैं। यह जातक परदेश में रहता है तथा यात्राएं भी बहुत करता है। देशान्तर में इसे सुयश प्राप्त होता है। जीवन के ३०, ३८, ४३, ५१ तथा ५७ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पुत्र सुयोग्य तथा कर्मठ होते हैं। ६३ वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहता है। परमायु ७१ या ७८ वर्ष होती है।

(२४३२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सौम्य, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उदार-हृदय का तथा परोपकार, दान आदि कार्यों में अपना धन खर्च करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में कुछ समय के लिये माता से अलग रहता है। इसे पिता का सुख भी कम ही मिलता है। यह पैतृक सम्पत्ति को प्राप्त करता है। इसका विवाह २१, २२ वर्ष की आयु में होता है। विवाह होते ही भाग्योदय होता है। इसे छोटे भाई तथा बहिनों का सुख प्राप्त होता है। २८ वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त करता है। अपने जीवन के ४५ वें वर्ष में अचल-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। इस आयु में यह स्वतन्त्र उद्योग स्थापित करके बहुत धन कमाता है। पत्नी बड़ी महत्वाकांक्षिणी होती है। वह स्वयं भी बहुत धन कमाती है। इसे तीन पुत्र तथा एक पुत्री की उपलब्धि होती है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२४३३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे शरीर का, गेहुँए रंग का तथा दीन-दुःखियों के प्रति दयाभाव रखने वाला होता है। यह अपने मित्रों पर पूर्ण विश्वास करने वाला तथा दूसरों की प्रशंसा करने वाला होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर, किसी दूसरे स्थान पर जाकर कार्य करता है। इसका विवाह या तो होता ही नहीं है, या अधिक आयु में होता है। विवाह होने पर पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्वी प्राप्त होती है। विवाहोपरान्त जातक को धन का लाभ भी होता है, तथापि सन्तान की उपलब्धि नहीं होती। पत्नी कुछ चिड़चिड़े स्वभाव की होती है। यह जातक अधिक धन कमाने के लिए अत्यधिक परिश्रम करता है। ४३ वर्ष की आयु के बाद यह सौभाग्यशाली बनता है। इसे ५६ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ६८ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२४३४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उग्र-स्वभाव तथा बलिष्ठ शरीर का, निरंकुशतायुक्त, अभिमानी, स्वार्थी, सुन्दर तथा विलासी-जीवन बिताने वाला होता है। इसे व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। यह जिस काम को करता है, उसी में खूब धन कमाता है। इसके जन्म के अवसर पर माता-पिता को सुख प्राप्त होता है। यह बाल्यावस्था में सुखी रहता है तथा युवावस्था में भी सुख प्राप्त करता है। २५ से ४३ वर्ष की आयु तक यह प्रायः राजकीय-सेवा द्वारा ही धनोपार्जन करता है फिर निजी व्यवसाय आरम्भ करके धन कमाता है। ३० वर्ष की आयु में शारीर-कष्ट होता है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी ऐश्वर्य-विलास को पसन्द करने वाली होती है। दो पुत्र तथा एक पुत्री का पिता बनता है। इसे ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(2435) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुक्र, चंचल, उग्रस्वभाव का, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला
तथा अपने हित-साधन के प्रति सतर्क बना रहने वाला होता है। यह अपने छोटे कार्य को
भी बड़ा तथा दूसरों के बड़े कार्य को भी छोटा समझता है। यह अपने धन की निरन्तर वृद्धि
करने हेतु लालायित बना रहता है। इसे अपने लाभ के अतिरिक्त अन्य किसी बात की चिन्ता
ही नहीं रहती। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विपरीत-स्वभाव की
मिलती है। उसे धन की तृष्णा नहीं होती। अतः वह रूप-सज्जा, विलासादि पर बहुत खर्च
करती है। वह उदार-हृदया होने के कारण सब को सहयोग देती है तथा जातक को भी प्रसन्न
बनाये रखती है। जातक की आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। यह दो पुत्रियों तथा एक पुत्र का
पिता होता है। परमायु 71 वर्ष होती है।

(2436) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, इकहरे शरीर तथा तेज स्वभाव का होता
है। इसे बाल्यावस्था में सुख प्राप्त होता है। कुछ समय के लिए यह पैतृक-स्थान से दूर भी
रहता है। किसी लाभ के उद्देश्य से भी इसे घर से बाहर रहना पड़ता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त
करता है, तथापि इसे शिक्षा का उचित लाभ नहीं मिलता। इसे व्यवसाय द्वारा ही विशेष
लाभ होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली
मिलती है। 40 वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है। 46 से 50 वर्ष की आयु में इसे अनेक
यात्राएं करनी पड़ती हैं। 56 वर्ष की आयु में किसी दुर्घटनावश घायल भी होता है। इसके दो पुत्र
तथा एक पुत्री होती है। यह आजीवन सुखी तथा धनी बना रहता है। संतानें भी सुयोग्य होती
हैं। परमायु 68 अथवा 71 वर्ष होती है।

(2437) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, नम्र स्वभाव का होते हुए भी आवेश में आ जाने वाला, अपने विरुद्ध बात देखकर अपना शत्रु बन जाने वाला, वैभव-विलास युक्त धनी व्यक्ति होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी अनुकूल, शील स्वभाव की, सुन्दर, संगीत-इत्यादि में कुशल तथा रसिक-स्वभाव की होती है। घर-बाहर सर्वत्र सम्मानित होती है। वह जातक के जीवन में एक नया परिवर्तन ला देती है तथा स्वयं भी धनोपार्जन करती है। अपने गुणों द्वारा वह सबको सम्मोहित करती है। यह जातक भी किसी उच्च-प्रतिष्ठान में कार्यरत होता है। अपने जीवन के 43 वें वर्ष में अत्यधिक मान-प्रतिष्ठा तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है। 28, 62 तथा 61 के वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। धन-सम्पत्ति की कभी कोई कमी नहीं रहती। इसके कई पुत्र होते हैं। वे सभी सुयोग्य होते हैं। परमायु 72 वर्ष होती है।

(2438) — इस जन्मचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, कुछ स्थूलता युक्त शरीर वाला, प्रियदर्शी, प्रभावशाली तथा विद्वान होता है। यह अपने धन-वैभव तथा विद्वता के कारण सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, प्रभावशालिनी, गुणवती तथा सुख देने वाली होती है। इसे दो पुत्र तथा एक पुत्री का लाभ होता है। यह 35 वर्ष की आयु में किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर प्रचुर धन तथा यश अर्जित करता है। साधारण जीविकोपार्जन तो 24 वर्ष की आयु से ही करने लगता है। यह अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। सेवा के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी इसे आमदनी होती है। व्यावसायिक-प्रतिष्ठान में यह आजीवन उच्चपद पर बना रहता है। इसकी सन्तानों को कुछ समय तक कष्ट मिलता है। बाद में वे बड़ी उन्नति करती हैं। इसकी परमायु 76 वर्ष से अधिक होती है।

<u>(२४३९)</u>- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, सब का हित करने वाला, ज्ञानवान तथा सर्वत्र सम्मानित होता है। इसे बाल्यावस्था से ही पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसे माता पिता से विशेष प्यार तथा संरक्षण प्राप्त होता है। विवाह २० वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा सद्गुण सम्पन्न होती है। सन्तान-पक्ष के जन्म लेने वाला यह जातक निर्वाह पाकर और भी अधिक सम्पन्नता प्राप्त करता है। राजकीय-सेवा में यह उच्च पद पाता है। साथ ही धनागम के और भी कई स्रोत होते हैं, जिनसे लाभ उठाता है। यह कई बार भागीदारी में भी करता है। अपनी योग्यता से यह राजनीतिज्ञों को धन, मान आदि के रूप में प्रतिष्ठित बनाता है। ३९, ४३, ४८, ५६ तथा ६५ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। दो पुत्री तथा तीन पुत्र होते हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

<u>(२४४०)</u>- इस जातक को अनेक विषयों का ज्ञान होता है। यह धनी, मानी, बुद्धिमान, राजाओं के समान ऐश्वर्यशाली तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। इसकी शिक्षा पूर्ण होती है। यह तकनीकी विषयों का जानकार होता है। साहित्य में इसे रुचि होती है, परन्तु तकनीकी-ज्ञान के द्वारा यह आजीविकोपार्जन करता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। राजकीय-सेवा भी कर सकता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा घर-गृहस्थी का कुशल-संचालन करने वाली होती है। यह जातक अपनी सम्मानित पत्नी के अधिकार में ही रहता है तथा उससे विशेष प्रेम भी करता है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होती है। जीवन के ४५, ४८ तथा ५३ वें वर्ष में अचल-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। परमायु ७८-७९ वर्ष होती है।

(2441)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, स्त्रियों को मोहित करने वाला तथा अपनी वाणी के प्रभाव से दूसरों को अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख तथा वैभव में पलता है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण इसे कभी कोई कष्ट नहीं होता है। इसका विवाह 21-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है, तथापि इसका अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध बना रहता है। यह 24 वर्ष की आयु तक राजकीय सेवा में उच्च पद प्राप्त कर स्वयं भी धनोपार्जन अधिक करता है। यह परदेश में रह कर उन्नति करता है तथा वहीं इसे प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। सम्पत्ति की वृद्धि निरन्तर होती रहती है। इसके 3 पुत्र तथा 2 पुत्री होती हैं। 46 वें वर्ष में रोग का कष्ट होता है। 68 वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से मृत्यु को प्राप्त होता है।

(2442)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य धीर-गंभीर प्रकृति का, मन की बात प्रकट न करने वाला, बाल्यावस्था में तेज-तर्रार तथा युवावस्था में खोया रहने वाला होता है। यह शिक्षा प्राप्त कर, अपने गुणों द्वारा सबको प्रभावित करता है। इसे अपने स्तर से हीन व्यक्ति की सेवा में रहना पड़ता है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु तक हो जाता है तथा शीघ्र ही यह एक पुत्र का पिता भी बन जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा मनोनुकूल मिलती है। यह जातक अन्य स्त्रियों के साथ भी सम्बन्ध बनाये रखता है। 30, 35, 38, 43 तथा 48 वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। 43 वें वर्ष में यह बहुत सम्पत्तिशाली बन जाता है। इसे यश तथा सम्मान भी बहुत मिलता है। 38 वें वर्ष में चोट आदि लगने का कष्ट होता है। तीन पुत्र होते हैं। दो गर्भ नष्ट होते हैं। पूर्णायु 78 वर्ष होती है।

भृ० सं० ८०७४

(2443) - इस जन्मकुण्डली के उत्पन्न मनुष्य गौरी, विवेक का, नीति कुशल, किसी एक ही वस्तु के विषय में निरंतर सोचता रहने वाला, परोपकारी तथा अपने स्वार्थ-साधन हेतु भी निरन्तर सचेष्ट रहने वाला होता है। इसको बाल्यावस्था में कुछ समय तक पेट तथा दाँतों का कष्ट रहता है। शरीर पतला तथा वर्ण गेहुँआ होता है। विद्याध्ययनोपरान्त यह भ्रमण करता रहता है। देशान्तर में ही इसे सम्मान प्राप्त होता है। वहीं रहकर यह जीविकोपार्जन भी करता है। यह आजीवन राजकीय-सेवा में भी रह सकता है। इसकी आय के स्रोत अनेक होते हैं। जिनसे इसके पास कमी कभी नहीं रहती। 35 वर्ष की आयु में यह किसी परिवारिजन की मृत्यु से सम्पत्ति प्राप्त करके लाभ उठाता है। विवाह 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। दो पुत्र होते हैं। परमायु 82 वर्ष होती है।

(2444) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में रुग्ण बना रहता है। नेत्र-पीड़ा भी होती है। शरीर कृश होता है। यह अपने परिवार का पोषक तथा परिवारिजनों का हितू होता है। इसे पारिवारिक तथा पैतृक-सम्पत्ति के कारण कष्ट भी बहुत मिलता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा सुख देने वाली होती है। यह जातक को अपने वशीभूत बनाये रखती है। यह जातक 25 वर्ष की आयु से ही परदेश में रहता है तथा वहीं पर 38 वर्ष की आयु में अचल-सम्पत्ति क्रय करके वहीं का स्थायी-निवासी भी बन जाता है। इस आयु के बाद यह किसी अन्य व्यवसाय द्वारा भी विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। यह अपने परिवारीजनों को भी कामों में लगाता है। 27 वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। परमायु 72 वर्ष होती है। जन्मस्थान से बाहर होना निश्चित है।

कु० ०

(२४४५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धी-रुपी, शान्त स्वभाव का तथा माता-पिता का पूर्ण स्नेह एवं सुख पाने वाला होता है। बचपन में बीमारियों के कारण कुछ कष्ट भी होता है। बड़े होने पर यह स्वास्थ्य तथा बलिष्ठ शरीर प्राप्त करता है तथा पुलिस अथवा सैन्य सेवा में उच्चपद प्राप्त करता है। इसका अनेक स्त्रियों के प्रति लगाव रहता है। यह विलासितापूर्ण जीवन बिताता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। यह अपनी पत्नी के अनुकूल रहता है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होती है। यह ४५ वर्ष की आयु में किसी अन्य स्थान पर जाकर सुख प्राप्त करता है जहाँ अचल-सम्पत्ति क्रय करता है। वृद्धावस्था में पुत्रों से सुख मिलता है। इसके पास धन की कमी कोई कमी नहीं रहती। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२४४६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विनम्र, आकर्षक, परन्तु कुछ जिद्दी स्वभाव का होता है। अपनी इस प्रकृति के लिए भी प्रशंसा का पात्र बनता है। अपने गुण तथा रूप पर इसे कुछ अभिमान भी होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु में किसी ठेकाकार्य के सिलसिले में धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। अपने जीवन-काल में यह अनेक स्थानों पर रहता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। कुछ समय तक पत्नी तथा बच्चों से अलग भी रहना पड़ता है। ३० वर्ष की आयु में ऐसी स्थिति आती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। इसे ३२, ३८ तथा ५१वें वर्ष में आर्थिक-कष्ट होता है। जीवन सुख धन-सम्पन्न बना रहता है। पूर्णायु ७३ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२४४७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुदृढ़, स्थूल काय, गौर वर्ण, मध्यम कद का, धीर-गंभीर स्वभाव का तथा आत्म-प्रसन्न होता है। इसे पैतृक धन-सम्पत्ति का विशेष लाभ होता है। यह किसी कार्य को करते समय जिद्दी स्वभाव का परिचय भी देता है। यह कठिन कार्यों को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील होता है और उसमें सफलता भी पाता है। यदि कोई व्यक्ति इसे नीचा दिखाने की कोशिश करे तो उसके प्रति बहुत प्रतिहिंसक हो जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विद्वान् होती है। वह भी स्वतन्त्र रूप से किसी कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन करती है। इसे जातक से अलग भी रहना पड़ता है। जातक भी प्रचुर धन कमाता है। २५, २८, ३६, ४२ तथा ५१ वें वर्ष में बहुत उन्नति करता है। ५८ वें वर्ष में काफी समय तक कष्ट भोगना पड़ता है। दो पुत्रियाँ तथा दो पुत्र होते हैं। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२४४८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, स्वस्थ तथा सबके सहानुभूति रखने वाला होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा अपनी कुल-मर्यादा के अनुरूप परिवार का पालन-पोषण भी करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उदार तथा धार्मिक विचारों की होती है। वह जातक के कन्धे-से-कन्धा मिलाकर कार्य करती है। यह जातक अपने व्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। पत्नी भी किसी कार्य द्वारा धनोपार्जन करती है। २८ से ३० तदुपरान्त ३८ वर्ष की आयु में जातक को घर से बाहर रहना पड़ता है। यह विदेश-यात्रा भी करता है तथा प्रचुर यश-सम्मान अर्जित करता है। संतानें सुयोग्य तथा सेवाभावी होती हैं। इसकी परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२४४९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौर वर्ण, विनम्र, सुन्दर, कोमल परन्तु जिद्दी स्वभाव का होता है। यह अपने बलबूते पर जीवन बिताता है तथा अपने भीतर अनेक गुणों का विकास करता है। यह कई विषयों का ज्ञाता, साहित्य तथा काव्य का प्रेमी तथा ज्योतिष चिन्तक होता है। किसी से असन्तुष्ट होने पर चर्चा को उससे अलग कर लेता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सांसारिक कार्यों में रुचि लेने वाली होती है। यह शौक मिजाज की तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने की इच्छुक (होती है) जातक को सदैव प्रसन्न बनाये रखती है। इसकी सन्तानें भी सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। यह जातक कठोर परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा सामाजिक-धार्मिक अथवा लोक-कल्याण के कार्यों में भी लगा रहता है। २५, २८, ३१, ३८ तथा ४१ वें वर्ष में चोट लगना सम्भव है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२४५०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य राजयोग प्राप्त होता है। यह उदार, राजनैतिक कार्यों में रुचिवान, दीन-दुःखियों का सहायक, सुन्दर, विनम्र तथा धीर, गंभीर स्वभाव का होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली, कला-शिल्प में रुचि रखने वाली, उदारचित्त तथा धार्मिक विचारों की होती है। यह कार्यवश अनेक स्थानों का भ्रमण करता है। अपनी योग्यता से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३० वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नति कर लेता है। यह जातक अपनी पहली सन्तान से दुःखी होता है। इसके तीन पुत्र होते हैं। तीनों ही उच्च शिक्षित तथा सम्मान प्राप्त करते हैं। ४५, ४९, ५१ तथा ५६ वें वर्ष में विदेश-यात्रा का योग होता है। वृद्धावस्था में वात रोग से पीड़ित होता है। ५६वें वर्ष पत्नी से वियोग होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४५१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गुणवान, तेजस्वी, जिद्दी तथा अहंकारी होता है। यह जीवन में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। इसे गुप्त रूप से भी धन प्राप्त होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्थूलकाय, सुन्दर, तेजस्वी तथा कुल की मर्यादा का पालन करने वाली होती है। यह जातक राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर 23 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। फिर उन्नति करता हुआ, अपने गृहस्थान से दूर, कई स्थानों पर कार्य करता है। इसे 35, 38, 43, 46 तथा 51 वें वर्ष में पुत्र एवं धन की विशेष उपलब्धि होती है। 58 वें वर्ष में कोई दुःख का कारण बनता है। पहले पुत्र से कष्ट होता है। दूसरी, तीसरी संतान से भले-न-बुरे संबंध रहते हैं। पिता से विमुखता रहती है। परमायु 62 वर्ष होती है।

(२४५२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, कोमल स्वभाव का, अनेक विषयों का जानकार, कुशाग्रता लिए हुए जिद्दी भी होता है। यह अपने ज्ञान से सब को चमत्कृत कर यशस्वी बनता है। अपने पुरुषार्थ के बल पर यह बहुत उन्नति करता है। अचल-सम्पत्ति भी बहुत होती है। यह विवाद (मुकद्दमा) तथा अन्य अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है। यह 23 वर्ष की आयु से ही धन कमाना आरम्भ कर देता है। 28 एवं 30 वर्ष की आयु में नये व्यवसाय आरंभ करता है। अपनी वाणी के द्वारा भी बहुत सम्मान अर्जित करता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। दो पुत्र होते हैं। इसे अनेक स्थानों की यात्राएँ करनी पड़ती हैं। यात्राओं से लाभ होता है। 45 तथा 53 वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु 85 वर्ष होती है।

(२४५३)- इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, उदार तथा परोपकारी होता है। यह कवि साहित्य-सर्जक तथा शिल्प-रचना में प्रवीण होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, दार्शनिक, अनेक विषयों की जानकार, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली तथा अपनी क्षमताओं के कारण उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर प्रचुर धन तथा सम्मान अर्जित करनेवाली होती है। वह पति को अधिक सान्निध्य-सुख नहीं दे पाती। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है। ३५ वर्ष की आयु में उच्च पद पर जा पहुँचता है। इसके एक पुत्र तथा एक पुत्री होती है। ३८, ४५, ५३ तथा ५८ वें वर्ष में बहुत धन तथा सुख प्राप्त होता है। सन्तान की ओर से कुछ समय तक कष्ट भी होता है। वृद्धावस्था प्रायः अकेले रहकर ही बितानी पड़ती है। ५८, ५९ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४५४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, अनेक कलाओं का जानकार, अनेक विषयों में प्रवीण तथा चतुर होता है। यह स्वस्थ, श्रेष्ठ स्वभाव का, उदार तथा दूसरों के काम आनेवाला होता है। इसके पास चल तथा अचल सम्पत्ति की अधिकता होती है। यह पैतृक-सम्पत्ति के अतिरिक्त स्वयं अपने परिश्रम से भी विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। जीवन के ३५ तथा ४८ वें वर्ष में यह अपने कार्यक्षेत्र को बदलता है अर्थात् एक काम को छोड़ कर दूसरे में प्रवृत्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा सद्गुणी होती है। इस जातक को आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है तथा यात्राओं से भी धनोपार्जन करता है। पत्नी भी बहुत धन कमाती है। पुत्र भी सम्पन्न होते हैं तथा वृद्धावस्था में सुख देते हैं। ४०, ४३, ४८ तथा ५१ वें वर्ष बहुत लाभप्रद होते हैं। परमायु ७९ अथवा ८० वर्ष होती है।

(२४५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल शरीर का, अनेक विद्याओं तथा कलाओं का जानकार, अपने मृदु-व्यवहार तथा कार्य-कुशलता के कारण प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय, धनी होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। यह अपने परिवार में सम्मानित होता है तथा परिवार की प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत कुशल, सुशीला, समझदार, किसी से न दबने वाली तथा पति को वश में रखने वाली होती है। वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा स्वयं भी धनोपार्जन करने वाली होती है। इस जातक को राज्य तथा समाज - दोनों से बहुत लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु में यह एक सुप्रतिष्ठित धनी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है। ३५, ३८, ४८, ५१ तथा ५६ वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। दो पुत्र तथा एक पुत्री का पिता बनता है। परमायु ६० वर्ष होना सम्भव है।

(२४५६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, सुन्दर, स्वस्थ, व्यवसाय-कुशल तथा सदैव लाभ प्राप्त करने वाला होता है। इसे साहित्य एवं ललित कलाओं का भी अच्छा ज्ञान होता है। यह कवि तथा साहित्य-सर्जक भी हो सकता है। संगीत में भी निपुणता प्राप्त होती है। यह स्वभाव से रसिक तथा उदार होता है। स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षित रहता है। इसे राज्य में उच्च पद प्राप्त होता है। २३ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुशीला, सुन्दरी तथा जातक को सदैव सुखी रखने वाली होती है। पत्नी से कुछ समय तक अलग रहने का संयोग भी बनता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। जीवन के २०, २२, ३१, ३६ तथा ४८ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ५८ वें वर्ष में कुछ कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२४५७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न जातक सुन्दर, बुद्धिमान, स्वस्थ तथा सन्तुलित खर्च करने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती, कुछ स्थूल शरीर की तथा पति-परायण होती है। यह जातक २४ वर्ष की आयु से ही घर से बाहर, परदेश में रहने को बाध्य होता है तथा नौकरी द्वारा आजीविकोपार्जन आरम्भ करता है। इसे कार्यवश निरन्तर बाहरी स्थानों की यात्रायें करनी पड़ती हैं। जीवन के २२, २८, ३४, ३८ तथा ४५वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। मान-मर्यादा तथा पद की वृद्धि भी होती है। इस अवधि में जातक को लम्बी यात्रायें भी करनी पड़ती हैं। इसके तीन पुत्रियाँ तथा एक पुत्र होता है। इसका स्वास्थ्य सदैव अच्छा बना रहता है तथा वास्तविक से कम आयु का प्रतीत होता है। परमायु ८७ वर्ष होती है।

(२४५८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सुशिक्षित तथा धनवान होता है। इसके पास धन की कमी नहीं होती, फिर भी इसे उससे सन्तोष नहीं होता। यह धन-वृद्धि के लिए हर सम्भव प्रयत्नशील बना रहता है। यह कृपण प्रकृति का होता है तथा किसी कार्य में बहुत सोच-विचार के बाद ही धन खर्च करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा कुल का पालन करने वाली होती है। वह जातक की मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है तथा सुख पहुँचाती है। इस जातक के पुत्र एक होता है। यात्रायें अधिक होती हैं। २५ वर्ष की आयु से ही यह सेवा-कार्य द्वारा धनोपार्जन करता है। ३५, ४२, ४९ तथा ५८वें वर्ष में बहुत सुख प्राप्त करता है। यह बहुत धनी होता है तथा स्त्रियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित बना रहता है। परमायु ७३ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२४५९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति चंचल-चित्त, अस्थिर-प्रकृति का होता है, तथापि इसमें तुरन्त निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता पाई जाती है। यह विपत्ति का पहले से ही अनुमान लगा लेता है। धन के प्रति बड़ी तृष्णा रखता है तथा स्वभाव से कृपण भी होता है। साधारणतः सत्कर्मों में धन खर्च करता है। नौकरी करना इसे अच्छा लगता है। अपनी योग्यता एवं गुणों के कारण यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। २४ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है तथा इसी समय राज्य से भी लाभ होता है। यह अपने व्यवसाय द्वारा ही धन की विशेष वृद्धि करता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। इसे सन्तान बड़ी आयु में, कठिनाई से प्राप्त होती है। पत्नी सुन्दर तथा शान्त स्वभाव की होती है। इस जातक को ३०, ३२, ३९, ४८ तथा ५३वें वर्ष में बहुत लाभ होता है। परमायु ६० वर्ष होती है।

(२४६०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल स्वभाव का, कौतुक-प्रेमी तथा बड़ा जल्दबाज होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, महत्त्वाकांक्षी ~~उच्चाकांक्षाओं~~ वाली तथा शान-शौकत से रहने वाली होती है। वह बड़ी समझदार भी होती है तथा अपनी सितारों को अनुपोषण बनाती है। जातक को अधिक आयु में पुत्र का सुख भी प्राप्त होता है। कई गर्भ नष्ट हो जाते हैं। यह जातक पैतृक तथा स्वोपार्जित सम्पत्ति द्वारा बहुत धनवान बनता है। अपने व्यवसाय के कारण इसे देश-देशान्तर की यात्राएँ भी करनी पड़ती हैं। यह अपने भाग्य से बहुत उन्नति करता है। इसके जीवन के २५, २९, ३५, ४०, ४३, ४८, ५३ तथा ५७ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह कुटिल नयन, वाहन, सिपकारि का लाभ प्राप्त करते हुए ७३ वर्ष की परमायु पाता है।

(२४६१)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति तेजस्वी, बुद्धिमान, सुन्दर, गुणवान तथा सहृदय होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त होता है। यह पारिवारिक-व्यवसाय की उन्नति करता है तथा खेती तथा व्यवसाय आदि करता है। इसके पास धन तथा अचलसम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती है। यह अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, परन्तु अपनी साधारण शिक्षा के बल पर ही बहुत उन्नति करता है। २० वर्ष की आयु से ही यह उत्तरदायित्वों का निर्वाह करता है। अपनी बहिन तथा माता के कारण इसे कुछ कष्ट भी मिलता है। यह लोककल्याण के लिए कार्य करता है, तथापि इसे समुचित प्रभुता नहीं मिलता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतली-दुबली, साँवली, परन्तु सुन्दरी होती है। वह भी जातक से अधिक सुखी नहीं रहती। इसे पुत्र की प्राप्ति विलम्ब से होती है। पुत्र दो से अधिक नहीं होते। आयु ८० वर्ष होती है।

(२४६२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अपने पराक्रम से सुखी, धनवान तथा तेजस्वी होता है। इसका भाग्योदय ३८ वर्ष की आयु के बाद होता है। इसे कभी बहुत संकटों का सामना भी करना पड़ता है। तथापि यह साहस का धनी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। चूँकि यह एक से अधिक स्त्रियों का स्वामी होता है तथा स्त्री के कारण दुःखी भी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। इसे अपनी पैतृक-सम्पत्ति तथा किसी ऐसे व्यवसाय से धन-लाभ होता है जो निरुपयोगी वस्तुओं से सम्बन्धित हो। २८ से ३४ तथा ४५ से ५५ वें वर्ष तक यह बहुत उन्नति करता है। इसके कई पुत्र होते हैं, परन्तु यह उनकी ओर से सुखी नहीं रह पाता। इसे कभी विदेश तक या घर से बाहर भी रहना पड़ता है। इसकी परमायु ६० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(२४६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, हँसमुख तथा सुन्दर रूप वाला होता है। सम्पन्न-परिवार में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। बड़ा होकर यह अपने परिवार तथा पैतृक-सम्पत्ति का पोषक बनता है। यह जितना बुद्धिमान होता है, उतना ही चालाक भी होता है। यह किसी पर विश्वास नहीं करता। इसे देशान्तर में यश तथा धन की विशेष उपलब्धि होती है। इसको २२-२३ वर्ष की आयु में ही परिवार-प्रमुख का पद प्राप्त हो जाता है। इसका विवाह भी इसी आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है, तथापि यह एक स्त्री से सुखी न होकर अनेक स्त्रियों से संबंधित बना रहता है। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। सन्तान से सुख मिलता है। ४८ वर्ष की आयु में इसके जीवन में एक अप्रत्याशित-परिवर्तन होता है। उसके बाद सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बीतता है। परमायु ७२ या ७४ वर्ष होती है।

(२४६४)- इस जातक का ललाट ऊँचा, शरीर स्वस्थ, वर्ण गौर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। यह अपनी दृढ़ता, विवेक तथा पौरुष से सबको प्रभावित करता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा अपने पराक्रम से भी यह प्रचुर धन अर्जित करता है। लौह तथा अग्नि के संयोग से निर्मित वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। यह भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी बनता है। इसे शत्रु-पक्ष तथा मुकदमेबाजी से भी धन प्राप्त होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पतले शरीर की तथा बुद्धिमती होती है। यह स्त्री सम्पूर्ण परिवार को सुखी रखती है, तथापि जातक उससे पूर्ण सुखी नहीं हो पाता। यह व्यक्ति अपने जन्मस्थान से दूर रहकर यश तथा धन अर्जित करता है। इसके कई पुत्र होते हैं। ४१ वर्ष में बहुत लाभ होता है। परमायु ८१ वर्ष होना सम्भव है।

(२४६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थूल शरीर वाला, बाल्यावस्था में दुखभोगी तथा बड़े होकर और अधिक उन्नति करने वाला, विद्वान्, संगीत-काव्य आदि का प्रेमी, कलाकार तथा जन की मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला होता है। यह अपने परिश्रम से बहुत उन्नति करता है। इसका विवाह २१-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अनुगता, सुन्दरी तथा कुछ स्थूल शरीर वाली होती है। वह बड़ी भाग्यवान् होती है। जातक उसपर गृहस्थी का सम्पूर्ण भार डाल निश्चिन्त हो जाता है तथा सुखी रहता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। तब जातक धन तथा मान अर्जित करता आगे बढ़ता है। पुत्र तथा पुत्रियों की ओर से जातक सुखी तथा संतुष्ट रहता है। बड़े भाई से कुछ कष्ट मिलता है तथा उससे अलग रहता है। ५१वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। ५८ तथा ६५ वें वर्ष भी लाभप्रद रहते हैं। परमायु ६८ अथवा ८३ वर्ष।

(२४६६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति कुछ स्थूल काय, तथापि सुन्दर, मध्यम कद वाला, गेहुँए रंग का तथा उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। यह अपने माता, पिता तथा भाई-बन्धुओं से सुखी रहता है। यह राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। जीवन में अत्यधिक धन, यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। उससे एक पुत्र भी होता है, तथापि संयोग वश जातक को बहुत समय तक पत्नी से अलग रहना पड़ता है। पुत्र का भी विशेष सुख प्राप्त नहीं होता। यह जातक ६५ वर्ष की आयु में बहुत उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसे अपने बड़े भाई का कष्ट होता है। पत्नी भी वातरोग से पीड़ित होती है। जातक को सर्प तथा जल से भय होता है। परमायु ७५ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२४६७)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य स्थूलकाय, स्वस्थ, बुद्धिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह मिश्रित प्रकृति का, अनेक कलाओं का ज्ञाता, गुणी तथा शारीरिक श्रम संबंधी कार्य करके आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। यह धन का संचय करता है, तथापि इसकी महत्वाकांक्षायें सरलता से पूरी नहीं होतीं। यह अपने पुरुषार्थ का पूर्ण फल प्राप्त नहीं कर पाता। यह 20-21 वर्ष की आयु से आजीविकोपार्जन के क्षेत्र में प्रवेश करता है। २८ वर्ष की आयु तक यह देश-परदेश की यात्रायें कर लेता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है। यह जातक अपनी पत्नी से पूर्ण सुखी रहते हुए भी किसी अन्य स्त्री के सम्पर्क से लाभ प्राप्त करता है। उस स्त्री के द्वारा आदर-सम्मान भी पाता है। यह दुस्साहस पूर्ण कार्य भी करता है। पुत्र कम, पुत्रियाँ अधिक होती हैं। ६० से ६८ वर्ष तक चरमोत्कर्ष (पूर्णायु ७६ वर्ष होती है)।

(२४६८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर होता है, परन्तु बचपन अधिक सुख से नहीं बीतता। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा कुछ उग्र स्वभाव की होते हुए भी उदार होती है। इसे राज्य तथा पिता की ओर से सुख तथा धन की उपलब्धियां होती हैं। २५ वर्ष की आयु से यह निरन्तर उन्नति करने लगता है। इसकी पत्नी इसके कार्य-व्यापार तथा परिवार में पूर्ण ध्यान रखती है। इसके दो पुत्र होते हैं, परन्तु वे दीर्घजीवी नहीं होते। कुछ गर्भस्राव भी होते हैं। इस प्रकार जातक को सन्तान-कष्ट बना रहता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे कुछ विशेष उपलब्धियाँ होती हैं। इसे जीवन में किसी कारणवश अपयश भी मिलता है। लोग इसे अधिक विश्वसनीय-व्यक्ति नहीं मानते। ४५वें वर्ष से तीन वर्ष तक तथा ५८ वर्ष की आयु में भी इसे शारीरिक-कष्ट होता है। जन्मायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

सं० भु०

कु० र०

(२४६९) इस जन्मकुण्डली का स्वामी कोमल स्वभाव का, परन्तु आवश्यक जीकमी, तुरन्त का उत्साही होता है। यह कलाकार होता है तथा कला द्वारा धनोपार्जन करता है। इसे शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं होती, तथापि यह बहुत ज्ञानी होता है और इसी के कारण सर्वत्र सम्मान पाता है। २१ वर्ष की आयु में घर से बाहर जाकर आजीविकोपार्जन करता है। इसकी उन्नति के मार्ग में अनेक रोड़े आते हैं, परन्तु यह सभी संघर्षों से निकलकर सफलता प्राप्त करता है। इसके विरोधियों की संख्या अधिक होती है, परन्तु अन्ततः वे स्वयं शान्त हो जाते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहायता देने वाली होती है। वह स्वयं भी धनोपार्जन करती है। इस जातक का सन्तान-प्राप्ति के बाद भाग्योदय होता है। ४८ से ६२ वर्ष की आयु तक बहुत लाभ होता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२४७०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अपने जन्म के साथ ही माता-पिता के भाग्य में एक परिवर्तन लाता है, जिसके कारण उन्हें आकस्मिक-लाभ होता है। इसे अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं होती तथा जीवन भी साधारण ही व्यतीत होता है। यह अपने कार्य-व्यवसाय के सिलसिले में घर से बाहर जाता है और वहाँ से धनार्जन करता है। २५ वर्ष की आयु में, परदेश में इसका भाग्योदय होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा पारिवारिक-दायित्वों का निर्वहन करने वाली मिलती है। वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है। जातक के जीवन में ३०, ३३, ३८, ४५ तथा ५३ वें वर्ष बड़े घटनापूर्ण होते हैं। इसे सन्तान का अभाव रहता है। जीवन में कई प्रकार के संघर्ष भी करने पड़ते हैं। सामान्य सुखी जीवन बिताते हुए यह ६५ या ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२४७१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, कुछ स्थूल तथा दृढ़ शरीर का, मध्यम कद वाला एवं अपनी बातों से सबको लुभाने वाला होता है। यह कलाओं का ज्ञाता, दिलचस्प तथा स्त्रियों की ओर विशेष आकर्षित रहने वाला होता है। इसकी उन्नति भी किसी स्त्री के कारण से ही होती है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ रहता है परन्तु चतुर बहुत होता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। इसे किसी अच्छे स्थान पर रहने का अवसर प्राप्त होता है तथा वहीं रहकर यह उन्नति भी करता है। ४० वर्ष की आयु के बाद यह अचल-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। दूसरे की भूमि तथा भवन इसके लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पत्नी इसे अपने वश में रखती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। जीवन साधारणतः सुखी बना रहता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२४७२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, परन्तु तीक्ष्ण प्रकृति का होता है। इसकी वाणी नीरस होती है। इसे अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है तथा यह अपनी योग्यता के कारण प्रसिद्धि भी पाता है। २५ वर्ष की आयु में यह पुलिस अथवा सेना विभाग में नौकरी करके उन्नति करना आरम्भ करता है तथा कुछ ही समय में उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे देश-देशान्तरों के भ्रमण के अवसर भी मिलते हैं। अपनी पत्नी से भी बहुत समय तक अलग रहना पड़ता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सरल स्वभाव की, शिक्षिता तथा चतुर होती है। यह सबको अपने अनुशासन में रखती है। इसकी पुत्री सुन्दरी तथा धीर-गम्भीर होती है। २८ से ६५ वर्ष की आयु तक जातक अत्यधिक व्यस्तता का जीवन बिताता है। यह लोक में मान्य तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है। परमायु ७०-७२ वर्ष होती है।

(२४७३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति चिकने शरीर, मध्यमकद वाला, वाचाल तथा अपने ऊपर बड़ा अभिमान रखने वाला होता है। यह बुद्धि तथा चातुर्य में भी स्वयं को सबसे अधिक मानता है, क्योंकि अपनी मूर्खतावश यह अनेक बनते हुए कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। इसे शारीरिक-श्रम संबंधी कार्य अच्छे लगते हैं। राजकीय-सेवा का अवसर पाकर यह किसी उच्चपद पर कार्यरत होता है। २५ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य द्वारा धनोपार्जन आरंभ कर देता है। यह सम्पत्ति वाला धनी होता है। इसे घर से दूर, परदेश में रहना पड़ता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अपनी बुद्धि तथा विवेक द्वारा इसे सुख प्रदान करती रहती है। इसके जीवन में अनेक असंभव-सी घटनाएँ घटती हैं। इसे अप्रत्याशित रूप से धन का लाभ भी होता है। संतानें उपचार से ही जीवित रहती हैं तथा संख्या में कम होती हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२४७४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल काय, चपल, तेजस्वी, गोल मुँह तथा लम्बे शरीर का होता है। यह शारीरिक-श्रम सम्बन्धी कार्यों को पसन्द करने वाला तथा किसी व्यवसाय के माध्यम से धनोपार्जन करता है। विद्या, बुद्धि में सामान्य होता है। अग्नि, लौह आदि धातुओं, भूमि-उत्पादन — वस्त्र, अन्न, लकड़ी आदि के व्यवसाय से इसे लाभ होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी व्यावहारिक-ज्ञान सम्पन्न तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। ३१ से ३७ वर्ष की आयु तक यह जातक राजकीय-सेवा में संलग्न होकर भी धनोपार्जन करता है। यह भाई-बन्धुओं से अलग, परदेश में रहता है। संतान विलंब से प्राप्त होती है। ५६ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताते हुए यह ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२४७५)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति रूपवान, बुद्धिमान, स्वस्थ, गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा ख्याती होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। अपने ज्ञान तथा बुद्धि के बल पर इसकी गणना उच्च व्यक्तियों में की जाती है। यह बाल्यावस्था से ही अपने माता-पिता को सुख देता देता है। २०-२१ वर्ष की आयु में यह स्वयं उन्नति करता हुआ आगे बढ़ता है। राजकीय-सेवा में जाने पर इसे सम्मानपूर्ण पद मिलता है। किसी तकनीकी ज्ञान का विशेषज्ञ होने के कारण यह उच्चाधिकारी बनता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में किसी सुन्दरी तथा सम्भ्रान्त कन्या के साथ होता है। वह इसे जीवनपर्यन्त सुख देती है। इसके पुत्र तेजस्वी होते हैं। २५-२६ वर्ष की आयु में यह जातक किसी अन्य स्थान पर जाकर सुख, मान तथा धन प्राप्त करते हुए श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करता है। २३, ३१, ३८, ४२ तथा ६१वें वर्ष में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। परमायु ८० वर्ष।

(२४७६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर, उन्नत कद वाला, बुद्धिमान तथा अपनी वाणी से लोगों को मोहित करने वाला होता है। यह पुलिस अथवा सेना विभाग से संबंध रखता है। अपने बुद्धि-चातुर्य से यह उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। निरन्तर उन्नति करता हुआ आगे बढ़ता तथा विपुल धन-सम्मान अर्जित करता है। इसके पास चल तथा अचल सम्पत्ति बहुत होती है, तथापि इसे उससे कोई मोह नहीं होता। यह अपने किसी संबंधी के नाम वाली सम्पत्ति प्राप्त करता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, चालाक, पतले शरीर वाली तथा जातक के सम्मान की वृद्धि करने वाली होती है। इसे ३५, ४५, ४८, ५३ तथा ६३वें वर्ष में बहुत सम्मान मिलता है। ६५वें वर्ष में इसे कुछ शारीरिक-कष्ट भी होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा गुणवान होते हैं। दो पुत्र तथा एक पुत्री होती है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२४७७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, दृढ़ शरीर, मध्यम कद वाला तथा कुछ अहंकारी स्वभाव का होता है। यह सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखभोगी होता है। माता-पिता का पूर्ण स्नेह तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। यह धातु, मिट्टी, अग्नि अथवा विशेष प्रकार के यन्त्रों से सम्बन्धित कार्य करता है। २३ वर्ष की आयु में सेवा-कार्य (नौकरी) करने की सम्भावना रहती है। २५ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से चोट लगने की सम्भावना रहती है। विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा बुद्धिमती होती है। पत्नी के भाग्य से ही जातक दुर्घटनाओं से बच जाता है। दो पुत्र तथा दो पुत्री होते हैं। वे भी गुणवान तथा सुयोग्य होते हैं। २५, ३१, ३८ तथा ४३ वें वर्ष जातक के लिए कष्टप्रद रहते हैं। ५० वर्ष की आयु से बहुत सुख मिलता है। धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२४७८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-वीर, बुद्धिमान, सुन्दर, लम्बे शरीर का तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला होता है। यह बहुत सौभाग्यशाली होता है तथा अपने अध्यवसाय द्वारा कोई स्वतन्त्र कार्य करके आजीविका प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत भाग्यशाली, धनी तथा अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो जाता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-मर्मज्ञा, सुशिक्षिता एवं जातक को सदैव सुख देने वाली होती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में पग-पग पर सहयोग देती है। ३० वर्ष की आयु से जातक के धन-धान्य में वृद्धि होती है। इसके तीन पुत्र तथा दो पुत्री होते हैं। सन्तानों की ओर से सुखी रहता है। ४५ तथा ५४ वर्ष की आयु में दुर्घटना का भय होता है। परमायु ७५ वर्ष होना सम्भव है।

(२४७९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला, इसका भाग्योदय विलम्ब से होता है। इसे काफी समय तक अपनी माँ से अलग भी रहना पड़ता है। घटनाक्रम से यह व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान या तो होती ही नहीं है, अथवा विलम्ब से होती है। आजीविकोपार्जन के लिए इसे घर से बाहर, परदेश में रहना पड़ता है। यह परदेश में ही अपने रहने के लिए मकान भी बनवाता है। इसका जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहता है। ४५ वर्ष की आयु से यह उन्नति करना आरंभ करता है तथा अपने उच्च व्यवसाय एवं जोखिम द्वारा इच्छित फल प्राप्त करता है। इसके जीवन में दुर्घटनाग्रस्त होने के अवसर भी आते हैं, परन्तु यह उनसे बचता हुआ ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२४८०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चिड़चिड़ा, कुछ रोष स्वभाव का तथा कुछ अहंकारी होता है। यह सदैव मनमानी करता रहता है तथा अपने समक्ष और किसी को कुछ नहीं समझता। इसे बाल्यावस्था में विशेष सुख नहीं मिलता। माता से अलग रहने का कष्ट भी भोगना पड़ता है। परन्तु यह अपने पुरुषार्थ से उन्नति करता है। विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा सहयोग देने वाली मिलती है। विवाहोपरान्त ही कार्य-व्यवसाय की उन्नति होती है। धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। कुमार्ग तथा कुसंगति से भी धन कमाता है। ५० वर्ष की आयु तक प्रचुर सम्पत्ति एकत्र कर लेता है। किसी समय दुर्घटनाग्रस्त होने की सम्भावना भी रहती है। इसे सन्तान विलम्ब से प्राप्त होती है अथवा होती ही नहीं है। परमायु केवल ६५ वर्ष होती है।

(2481)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसे बाल्यावस्था में सुख नहीं मिलता। माता-पिता के कारण ही कष्ट उठाता है। 23 वर्ष की आयु तक यह इधर-उधर भटकता रहता है, तदुपरान्त आजीविकोपार्जन आरंभ करता है। इसका विवाह या तो होता ही नहीं है और यदि होता है तो पत्नी का सुख बहुत कम ही मिलता है। यह अपने शारीरिक-श्रम के बल पर कोई छोटा-मोटा धंधा करता है। धनोपार्जन हेतु इसे विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की विपत्तियों से भी जूझना पड़ता है। बाहरी स्त्रियों से इसके संबंध हो जाते हैं, परन्तु इसे कोई विशेष सुख नहीं मिलता। इसे आजीवन संघर्ष करना पड़ता है। थोड़ा-बहुत धन-संचय करके यह अपनी वृद्धावस्था को सुखी बनाने का प्रयत्न करता है। 50 वर्ष की आयु के बाद स्त्री मिलती है। परमायु 68 वर्ष होती है।

(2482)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, बाल्यावस्था से कुछ समय तक कष्ट पाने वाला तथा माता-पिता के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु यह अधिक शिक्षित नहीं हो पाता। यह परिश्रम तथा बुद्धि बल का सहारा लेकर आगे बढ़ता है। विवाह 22-24 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी इसे सुखी रखती है, तथापि इसका मन अन्य स्त्रियों में लगा रहता है तथा पत्नी के प्रति उदासीनता की भावना रखता है। यह विलास से संबंधित वस्तुओं का व्यवसाय करता है। 30 वर्ष की आयु से इसके धन का निरंतर लाभ होने लगता है। यह पार्टी-सियासी भी हो सकता है। 60 वर्ष की आयु के बाद इसे शारीरिक-कष्ट होता है तथा कई वर्षों तक पीड़ित रहता है। संतानें विलम्ब से होती हैं। जीवन का पूर्ण सुख भी उपलब्ध नहीं होता। परमायु 68 वर्ष के लगभग होती है।

(२४८३)- इस जन्मकुण्डली से उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक तथा बचपन में माता-पिता का अल्प सुख पाने वाला होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा साधारणत: पूर्ण होती है, परन्तु यह व्यवसाय में प्रवृत्त होता है। इसका व्यवसाय सन्देहास्पद स्थितियों वाला होता है, तथापि यह अच्छे लाभ कमाता है। इसे २४ वर्ष की आयु से धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। धन पैदा करने के लिए यह अप्राकृतिक कार्य भी करता है तथा बहुत धन कमाने के कारण विलासी-जीवन की ओर भी उन्मुख होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुख देने की चेष्टा करती है, किन्तु जातक पर-स्त्रीगामी होता है। इसकी सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। सभी सन्तानें सुयोग्य होती हैं। धन प्राप्ति के लिए यह कुछ भी करने को तत्पर रहता है। यद्यपि धन भी कमाता है, परन्तु उसे दुराचरण में व्यय करता है। इसे सम्मान नहीं मिलता। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२४८४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, दृढ़ निश्चयी तथा महत्त्वाकांक्षी होता है। यह बहुत प्रभावशाली तथा सर्वत्र सम्मान अर्जित करने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था में भी सुख प्राप्त होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा उच्च आकांक्षाएँ भी रखता है। २१ वर्ष की आयु से ही यह अपने पुरुषार्थ के बल पर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल होती है। यह राज्य की सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है तथा अपने विरोधियों के लिए आतंक बना रहता है। अपने अपरिमित दुस्साहस के कारण यह कभी-कभी आपत्तिग्रस्त भी हो जाता है, परन्तु जीवन लम्बा होता है। सन्तानें सुयोग्य तथा कम होती हैं। प्राय: एक पुत्र तथा एक पुत्री का पिता ही बन पाता है। ६० वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग हो जाता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२४८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, महत्वाकांक्षी, ~~लोक~~-सम्मानित तथा व्यापार व्यवसाय में सुयश पाने वाला होता है, परन्तु बड़े होने पर इसे जीवन की वास्तविक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तब निःस्वार्थ पूर्ण जीवन आरम्भ होता है। यह पुरुषार्थ तथा परिश्रम के बल पर आगे बढ़ता है। इसे पैतृक-धन सम्बन्धी कोई सहायता नहीं मिलती। अपने अध्यवसाय से ही यह कोई व्यवसाय आरम्भ करता है तथा अपने लिए सुदृढ़ एवं स्थायी आजीविका का साधन बनाने में सफल होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला, सुन्दरी तथा मितव्ययी होती है। एक पुत्र तथा अनेक कन्याओं को जन्म देकर यह विवाह के १५-२० वर्ष बाद ही चिर-विदा ले लेती है। इस जातक को व्यवसाय से ही पर्याप्त धन की उपलब्धि होती है। २६ से ५० वर्ष तक खूब कमाता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२४८६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, दृढ़निश्चयी, स्वस्थ, सुखी तथा माता-पिता का स्नेह पाने वाला होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा में विघ्न पड़ते हैं। २४-२५ वर्ष की आयु में यह कोई व्यवसाय करता है। २५ वर्ष की आयु में ही इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-मर्मज्ञा तथा विलासी-प्रकृति की होती है। जातक भी ऐसा ही होता है। दोनों एक दूसरे को सुखी रखते हैं तथा सुख प्राप्त करते हैं। इसके दो पुत्र तथा पुत्रियाँ होती हैं। इसे अनेक लोगों की सेवा द्वारा भी धन तथा सुख का लाभ होता है। इसका व्यवसाय भी अच्छा चलता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी हो जाता है। इसे सदैव सुख प्राप्त होता है। सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। स्त्री का सुख २०-२२ वर्ष तक ही रहता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे चोट लगती है। परमायु ७० वर्ष से अधिक होती है।

(२४८७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मधुरभाषी, शिल्पज्ञ, चतुर तथा लोगों को प्रभावित करने की कला में दक्ष होता है। इसे सर्वत्र सुख तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। इसे मित्रों का सान्निध्य बहुत प्राप्त होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करके स्वतन्त्र कार्य करता है। इसके व्यवसाय में, बहुत से लोग इसके अधीन रह कर कार्य करते हैं। इसका विवाह पूर्व-परिचित स्त्री के साथ लगभग २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। वह स्त्री बड़ी बुद्धिमती तथा जातक को संतुष्ट रखने वाली होती है। यह जातक अपनी पत्नी की इच्छा के बिना कोई कार्य नहीं करता। वह भी जातक को हर प्रकार से सुखी रखती तथा विपत्ति में भी धनोपार्जन में सहायिका बनती है। यह जातक आजीवन सुखी तथा धनी बना रहता है। संतान के लिए दुःखी रहता है। संतान या तो होती ही नहीं है अथवा अल्पायु होती है। जातक की परमायु ८० वर्ष होना सम्भव है।

(२४८८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विशाल हृदय, कोमल भावनाओं वाला, परोपकारी तथा दूसरों के लिए अपना धन तथा समय खर्च करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी रहता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। यह नौकरी न करके कोई स्वतन्त्र कार्य करता है। बौद्धिक-कार्यों द्वारा इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसके ऊपर शासन करती है तथा सुख पहुँचाती है। यह जातक अप्रत्याशित रूप में धन प्राप्त करता है। छोटी-छोटी यात्राओं द्वारा भी इसे लाभ होता है। यह जातक मित्रों में विशेष रुचि लेता है तथा उनके साथ हास-विलास में प्रसन्न होता है। पत्नी भी सहयोगिनी बनती है। ३५ से ७८ वर्ष की आयु तक सुखी रहता है। ५५ वर्ष की आयु में कोई दुर्घटना सम्भव है। संतानें अल्प होती हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२४८९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुक्र तथा मधुरभाषी होता है। आकर्षक व्यक्तित्व तथा योग्यताओं का धनी होते हुए भी यह अपने इन गुणों का कोई लाभ नहीं उठा पाता है। फिर भी यह साहस पूर्वक अपनी उन्नति के हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। अपने परिश्रम का आंशिक-फल ही इसे मिल पाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी विदुषी, ज्ञानी तथा गुणवती होती है। विवाहोपरान्त इसके जीवन में परिवर्तन आता है। पत्नी के सौभाग्य से ही यह सुख प्राप्त करना आरम्भ करता है। संतानें थोड़ी तथा विलम्ब से होती हैं। यह पत्नी के सहयोग से अप्रत्याशित रूप में धन का लाभ पाता है। इसका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा बना रहता है। ३५, ४१, ४६ तथा ४८ वर्ष की आयु में धन का विशेष लाभ होता है। परमायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२४९०)- इस जन्म कुण्डली-चक्र में उत्पन्न मनुष्य बुद्धिमान, प्रियदर्शी परन्तु हीलेहवा-व का। साथ ही व्यवहार-कुशल भी नहीं होता। इसकी आय का अधिकांश भाग व्यर्थ में व्यय होता है। इसके जन्म के बाद घर में कोई सुख नहीं होता। माता-पिता दुःख पाते हैं। इसे भी मातृ-पितृ-वियोग का दुःख भोगना पड़ता है। यह परिवारीजनों से आश्रित रहता है। बड़े होकर इसकी अभिरुचि कलाओं में होती है। इसकी आकांक्षाएं बहुत ऊँची होती हैं। चित्त सदैव अस्थिर बना रहता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी विदुषी तथा कर्मठ होती है। अतः विवाहोपरान्त जीवन में परिवर्तन आता है। इसका स्वतन्त्र व्यवसाय जम जाता है तथा आर्थिक लाभ होने लगता है। संतानें अधिक नहीं होतीं। कभी अपने ही घर में गिरने से चोट लगती है अथवा आग से जलता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२४९१)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, स्वस्थ तथा चिन्तातुर रहनेवाला होता है। मित्रों के प्रति इसे विशेष कष्ट होता है। इसका मन व्यवसाय में लगता है, परन्तु यह व्यवसाय कर नहीं पाता। यह पुरुषार्थ द्वारा धन प्राप्त करता है इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। यह किसी बड़े संस्थान से संयुक्त होकर भी कार्य करता तथा धन कमाता है। अपने साथियों के सहयोग से भी आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह २१.२४ वर्ष की आयु में होजाता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर की, सुन्दरी, सुभाषिणी तथा अपने अधिकार को समझने वाली होती है। वह अपने कार्यों तथा गुणों से जातक के ऊपर पूर्ण आधिपत्य जमाये रखती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। जीवन के २५,३१,३४, ४०,४५ तथा ५८ वें वर्ष बहुत लाभकर रहते हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२४९२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी व्यक्तित्व वाला, साहसी तथा अपने पुरुषार्थ से सब कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है परन्तु पिता से बहुत समय तक अलग भी रहना पड़ता है। २३ वर्ष की आयु में ही यह परदेश में जाकर जीविकोपार्जन आरंभ करता है वहाँ पर बहुत धन तथा ख्याति कमाता है इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मध्यम शरीर की, स्वस्थ तथा सुन्दर होती है। वह उदार स्वभाव की तथा अपने व्यवहार से सबको प्रभावित करने वाली होती है। इस जातक के पास धन का अभाव नहीं रहता। इसके तीन पुत्र होते हैं, वे सभी वृद्धावस्था में सुख देते हैं। यह जातक किसी बड़े प्रतिष्ठान में उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर कार्य करके ३५ वर्ष की आयु तक बहुत उन्नत स्थिति में पहुँच जाता है। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२४८३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, सहृदय, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मध्यम कद का तथा पग-पग पर बाहरी लोगों से सहयोग प्राप्त करने वाला होता है। इसके कार्य आकस्मिक रूप से सफल होते हैं। इसका भाग्य बहुत साथ देता है। उसी के कारण अनेक असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। इसके पास धन की कमी कभी नहीं रहती। विवाह २१-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पति का साथ देने वाली होती है। वह पति की इच्छाओं का पालन करती हुई भी उसे अपने अधिकार में रखती है। यह जातक राजयोग प्राप्त होता है। यह अपने जीवन में किसी उच्च राजपद पर प्रतिष्ठित होता है। ३५ से ४४ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति करता है। ६५ वर्ष की आयु के बाद तो जैसे एक नये जीवन की शुरुआत होती है। इसके ४ पुत्र तथा १ पुत्री होती है। परमायु ८३-८४ वर्ष होती है।

(२४८४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक उदारहृदय, मनस्वी, महत्वाकांक्षाओं वाला तथा अपने जीवन में कुछ कर दिखाने की लालसा रखने वाला होता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। ३०-३५ वर्ष की आयु में किसी दूसरे कार्य में संलग्न होकर २० वर्ष तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चंचल तथा मनोनुकूला होती है। इसके २ पुत्र तथा २ पुत्रियाँ होती हैं। ४५ वर्ष की आयु में यह जातक किसी अन्य स्त्री द्वारा अत्यधिक सहयोग प्राप्त करता है। अन्य अनेक स्त्रियाँ भी इसे आकर्षित किये रहती हैं। यह जातक अवसरवादी लाभ उठाता है। इसे धर्म-कर्म तथा तीर्थयात्राओं में बहुत रुचि होती है। दान आदि में भी धन व्यय करता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। परमायु ८१ वर्ष से अधिक होती है।

(२४९५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सहृदय, वचन का पक्का, स्वस्थ, गौर वर्ण, उन्नत कद का, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसका बचपन माता-पिता से अलग किसी अन्य स्थान में व्यतीत होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा इसके अर्थोपार्जन तथा अन्य क्षेत्रों में पूर्ण सहयोग देने वाली होती है। यह जातक काव्य-साहित्य का रसिक, महत्वाकांक्षी तथा धनवान होता है। देशान्तर में रहकर यह स्वतन्त्र कार्यों द्वारा धन तथा यश अर्जित करता है। वहीं पर इसका विवाह भी होता है। इसके तीन पुत्र होते हैं। जीवन के २५, २८, ३१, ३६, ३९, ४२, ४६, ४९, ५२, ५८ तथा ६१ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। ६० वर्ष की आयु में बीमार पड़ता है। पूर्णायु ८३ वर्ष होती है।

(२४९६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मनस्वी, चंचल-चित्त वाला, तथापि धैर्यवान्, सुन्दर, स्वस्थ तथा श्याम गौरवर्ण होता है। यह २०-२१ वर्ष की आयु में ही सेवा-कार्य आदि के द्वारा धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। शीघ्र ही उन्नति करता हुआ उच्चपद पर जा पहुँचता है। २८ वर्ष की आयु में उन्नति के शिखर पर जा पहुँचता है। ३५ वर्ष की आयु में देश-देशान्तर का भ्रमण करता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला तथा सुन्दरी होती है। वह स्वयं भी धनोपार्जन करती है तथा प्रत्येक क्षेत्र में जातक को सहयोग देती है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। सभी सुयोग्य, सुन्दर, सुखदायक तथा कुल का नाम ऊँचा करने वाले होते हैं। इसे अचल-सम्पत्ति तथा पारिवारिक-सुख की भी कमी नहीं रहती। यह अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है। इसे कभी हानि नहीं उठानी पड़ती। वर्षायु ८८ वर्ष होती है।

(२४६७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार-हृदय, दयावान तथा अपने गुरुओं एवं पूज्यों का अत्यधिक धन-सम्मान अर्जित करने वाला होता है। इसको बचपन से ही सुख प्राप्त होता है। इसे आकस्मिक लाभ होते रहते हैं तथा किसी इच्छा के पूरे होने में विलम्ब नहीं लगता। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है; परन्तु दो वर्ष बाद ही पत्नी से सम्बन्ध कटु हो जाते हैं, फलत: यह जातक दूसरा विवाह कर लेता है। परन्तु ४ वर्ष बाद पहली पत्नी से पुन: मधुर सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं, तब दोनों पत्नियाँ साथ-साथ प्रेमपूर्वक रहती हैं तथा दोनों ही किसी कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन भी करती हैं। दूसरी पत्नी से दो पुत्र होते हैं। जातक किसी सरकारी विभाग में उच्चपद प्राप्त करता है। २७ से ४९ वर्ष की आयु तक बहुत धन कमाता है। ३५ वर्ष की आयु में देशान्तर भ्रमण करता है। ५८ वें वर्ष में रोगी होता है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२४६८)- इस जन्मकुण्डली में जन्मा मनुष्य बुद्धिमान, तकनीकी ज्ञान वाला, कलाकार एवं प्रमाणित विशेषज्ञ, पूर्ण शिक्षित तथा उच्च पद पर कार्य करने वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। ३८ वर्ष की आयु में बहुत उन्नति कर लेता है। किसी की साझेदारी में किये गए व्यवसाय द्वारा भी इसे बहुत लाभ होता है। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के द्वारा भी बहुत लाभ होता है तथा विवाहोपरान्त धन की विशेष वृद्धि होती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे एक अन्य स्त्री प्राप्त होती है। वह जातक के जीवन में एक बहुत ही अच्छा तथा मोड़ लाती है। उससे मानसिक सुख तथा धन का लाभ भी होता है। इसके दो पुत्रियाँ होती हैं तथा वृद्धावस्था में एक पुत्र होता है। ६० वें वर्ष में जातक ऐश्वर्य वृद्धि करने वाला कोई नया व्यवसाय करता है। पूर्णायु ७१ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(२४९९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद तथा पतले शरीर का, कुछ श्याम वर्ण एवं उदार हृदय वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। साहित्य आदि अनेक विषयों का इसे ज्ञान होता है। यह जनकल्याणकारी कार्यों में अपना समय अधिक लगाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, अनेक विषयों की जानकार तथा किसी उच्च पद पर कार्य करके धनोपार्जन करने वाली होती है। जातक स्वयं भी २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है तथा ५ वर्ष बाद नौकरी छोड़ कर स्वतन्त्र रूप से कोई काम करने लगता है। इसके पास धन-सम्पत्ति की कमी नहीं रहती। पैतृक-सम्पत्ति भी प्रचुर परिमाण में होती है। ४५ से ६३ वर्ष की आयु तक यह बहुत ही अधिक उन्नति कर लेता है। दो पुत्र होते हैं। ५८वें वर्ष में चोट लगती है। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२५००) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य बुद्धिमान, बात का धनी, अपनी वाक्पटुता से सबको मुग्ध कर लेने वाला, इकहरे शरीर का तथा बहुत सुन्दर होता है। स्त्रियाँ इस पर मोहित होती रहती हैं। यह विपुल सम्पत्ति अर्जित कर, अनेक प्रकार के सुख भोगता है तथा उदार हृदय का होने के कारण दूसरों की सहायता करने के लिए भी सदैव तत्पर बना रहता है। इसके छोटे भाई इसकी सेवा में तत्पर रहते हैं। राजकीय-सेवा तथा व्यवसाय द्वारा इसे बहुत धन प्राप्त होता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ भारी शरीर की तथा सुन्दरी होती है, वह एक सच्चे साथी के रूप में ६० वर्ष की आयु तक जातक का साथ देती है। इसके तीन पुत्र तथा तीन पुत्री होते हैं। बड़े पुत्र का सुख प्राप्त नहीं होता। उससे दुःखी रहता है। जीवन के १५, २२, २८, ३१, ३३ तथा ४८ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५०१) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी कोमल हृदय वाला, संगीत तथा सरस साहित्य एवं ऐसे ही कार्यों में रुचि रखने वाला, काव्य आदि कलाओं का ज्ञाता तथा किसी विशिष्ट तकनीकी काम का जानकार होता है। यह किसी बड़े प्रतिष्ठान से संलग्न होकर, उसके तकनीकी-विशेषज्ञ के रूप में कार्य करता तथा विपुल मात्रा में धन अर्जित करता है। अग्नि तथा वायु से संबंधित कार्यों का यह विशेषज्ञ होता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा परिवार का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। इस जातक को ३० वर्ष की आयु में विशेष लाभ होता है। राज्य-स्तर पर भी इसे सम्मान प्राप्त होता है। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। वे सुयोग्य तथा परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले होते हैं। इसे २८, ३०, ३५, ३८ तथा ४२ वें वर्ष में धन का विशेष लाभ होता है। ५३ वें वर्ष में कष्ट। परमायु ८२ वर्ष।

(२५०२)– इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल काय, सुन्दर, कुशलवक्ता, धीर-गंभीर तथा भोगी होता है। यह शास्त्र, कला एवं साहित्य का मर्मज्ञ तथा अपने ज्ञान से सब को चमत्कृत करने वाला होता है। इसे भूमि, भवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह अनेक सुन्दर भवनों का स्वामी होता है तथा राजसी-जीवन व्यतीत करता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा सुख देने वाली होती है। यह कई पुत्र-पुत्रियों का पिता बनता है। यह आजीवन बहुत धन कमाता है तथा उसे धार्मिक एवं परोपकार के कार्यों में व्यय करके विपुल यश-सम्मान का स्वामी भी बनता है। २५ वर्ष की आयु से पूर्व ही यह बहुत धन-सम्पन्न हो जाता है तथा जीवनान्त तक धनी बना रहता है। इसके पुण्य-कार्य लोक-विख्यात होते हैं। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य सिद्ध होती हैं। परमायु ६० वर्ष से अधिक होती है।

(२५०३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, लम्बे कद का, मनमोहक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह उच्च प्रभाव रखने वाला तथा लोकमान्य होता है। यह सरल तथा विनम्र होता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा विपुल धन अर्जित करता है। यह अपने मार्ग के साथ लोकप्रियता प्राप्त करता है। काव्य, साहित्य तथा ललित कलाओं का प्रेमी एवं ज्ञाता होता है। यह २०-२१ वर्ष की आयु से ही उन्नति करता है। अपनी योग्यता तथा गुणों के कारण इसे राज्य द्वारा भी सम्मानित किया जाता है। जीवन के २५, २८, ३६, ४३, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसका विवाह २४ वें वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। दो पुत्र होते हैं। वे दोनों ही सुयोग्य तथा प्रभाव देने वाले होते हैं। परमायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(२५०४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सरल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। धनी कुल में जन्म लेने के कारण यह बाल्यावस्था से ही सुखी रहता है। यह राज्य अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान में उच्च प्रशासकीय-पद पर प्रतिष्ठित होकर यश तथा धन अर्जित करता है। इसकी आमदनी के कई स्रोत होते हैं। यह निजी व्यवसाय भी करता है और उससे यथेष्ट लाभ अर्जित करता है। इसका खर्च विभिन्न प्रकार के कार्यों में होता है। यह अनेक मित्रों में अनुरक्त रहता है तथा भोग-विलास में बहुत खर्च करता है। इसका विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी संगीत-नृत्य तथा अनेक कलाओं की ज्ञाता, सुन्दरी तथा शान-शौकत से रहने वाली होती है। संतान से कष्ट मिलता है। दो पुत्र होते हैं, परन्तु वे सद्गुणी नहीं होते। यह जातक सुखी-जीवन बिताते हुए ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५०५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी उच्च कुल में जन्म लेने के कारण बचपन से ही सुखी रहता है। यह जन्म से ही बुद्धि, बल, चातुर्यादि से सम्पन्न भाग्यशाली होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। २१ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन करने लगता है। राज्य के किसी विभाग में उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए सुयश प्राप्त करता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। २८, ३५ तथा ४४ वें वर्ष में बहुत धन तथा सम्मान पाता है। यह बड़ा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है। इसका सुयश दूर-दूर तक फैलता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सुख देने वाली मिलती है। पत्नी अनेक प्रकार के सम्मान तथा यश अर्जित करती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। कई पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। परमायु ८६-८७ वर्ष होती है।

(२५०६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी कुछ मोटे शरीर का, प्रियदर्शी, लम्बे कद का, साहसी तथा दृढ़निश्चयी होता है। वह अपने सद्गुणों, सद्व्यवहार तथा श्रेष्ठ कार्यों द्वारा लोक-प्रियता प्राप्त करता है। इसका पुरुषार्थ कभी-कभी व्यर्थ भी चला जाता है। इसे दूसरे लोग ठगते हैं तथा इसे आर्थिक-हानि पहुँचाते हैं। यह २५ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा से सम्बद्ध होकर किसी विशेष विभाग के उत्तरदायित्वपूर्ण पद प्राप्त करता है। यह दृढ़ प्रवृत्ति का, निर्भीक, कठिनाइयों का सामना करने के लिए तत्पर रहने वाला तथा पौरुषवान होता है। २७ से ३५ तथा ४१ से ४७ वर्ष की अवधि में यह विपुल धन-सम्मान अर्जित करता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। कई पुत्र तथा एक पुत्री होती है। वृद्धावस्था में स्वास्थ्य गिरता है। परमायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(२५०७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बुद्धिमान, तेजस्वी, सुन्दर तथा गुणवान होता है। इसे राज्य, नाटक, साहित्य, मुद्रण तथा क्रय-विक्रय आदि विषयों से आमदनी होती है। यह धन के प्रति निस्पृह होता है तथा उसे परोपकारी कार्यों पर खर्च करता रहता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती, प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली तथा घर की कुशल-संचालिका होती है। विवाहोपरान्त जातक की आय में वृद्धि होती है। यह दूसरे स्थानों पर अपने व्यापार को बढ़ाता है तथा देश-देशान्तर की यात्राएँ भी करता है। इसे स्वदेश तथा परदेश से सभी प्रकार लाभ होता है। ३१ से ३६ वर्ष तक का समय अच्छा नहीं रहता, तत्पश्चात सब कठिनाइयों को पार कर आगे बढ़ जाता है। इसके कई पुत्र होते हैं। पुत्री नहीं होती। यह विपुल मात्रा में धन तथा अच्छी सम्पत्ति अर्जित करता है। ८७ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

(२५०८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बाल्यावस्था में काफी समय तक माता-पिता से अलग रहता है। यह बाहर रहकर ही शिक्षा प्राप्त करता तथा आजीविकोपार्जन आरंभ करता है। २५ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। यह किसी बहुत बड़े कार्य में सफलता प्राप्त करके आगे बढ़ता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा सुशिक्षिता कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त इसे धन का प्रचुर लाभ होता है। ३० वर्ष की आयु में यह भूमि, भवन, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होकर बहुत धनी बन जाता है। यह किसी शिक्षा आदि के क्षेत्र में भी व्यावसायिक दृष्टि से प्रवृत्त होता है। इसके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। ४५, ५० तथा ५३ वर्ष की आयु में हानि उठाता है। ७५ वर्ष की आयु तक स्वस्थ बना रहता है तत्पश्चात वात-पीड़ा का कष्ट भोगता है। परमायु ८०-८२ वर्ष होती है।

(२५०९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, राज्याश्रित तथा राज्य में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है। यह धन बहुत कमाता है, परन्तु अपने मातृस्थान को सदैव के लिए नहीं छोड़ता। इसके जीवन के २१ वे वर्ष में एक नया मोड़ आता है। उस समय इसे किसी स्त्री द्वारा सहायता मिलती है, जिसे पाकर यह स्थायी उन्नति की ओर अग्रसर होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में किसी कुलीन तथा सुशिक्षित कन्या से होता है। २८ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य स्थापित करता है। इसे सभी जगह से सहयोग प्राप्त होता है। यह सबसे अलग रहने की प्रकृति वाला होता है। घर तथा परिवार के लिए बहुत श्रम करने के बावजूद भी इसे सुयश प्राप्त नहीं होता। इसके यश को दूसरे लोग लेते हैं। इसके पुत्र अच्छे तथा परिवार के पोषक होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५१०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, विचारशील, समय की गति को पहिचानने वाला तथा अपने माता-पिता का इकलौता प्रिय पुत्र होता है। इससे बड़ी एक बहिन होनी चाहिए। वह माता-पिता की भाँति ही जातक का ध्यान रखती है। इस जातक को पैतृक-सम्पत्ति का विशेष लाभ होता है और यह उसे बढ़ाने का श्रेय भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुशिक्षिता कन्या के साथ होता है, वह पारिवारिक-दायित्वों का निर्वहन करती हुई इसे समुचित-सुख देती है। यह जातक दुस्साहसिक कार्यों से भी लाभ प्राप्त करता है। ३१ वर्ष की आयु में इसे राज्य तथा शत्रु से भय होता है। मुकद्दमे के कारण इसे बहुत धन खर्च करना पड़ता है। परन्तु अन्त में लाभ मिलता है। ४८, ५२ तथा ६० वे वर्ष सुखदायक होते हैं। दो पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

भु० सं० २५०७२

कु० २०

(२५११) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गंभीर चिन्तक, अधिक बुद्धिमान, धैर्यवान, प्रत्येक परिस्थिति पर गंभीर विचार करने के उपरान्त ही कार्य करने वाला, पतले तथा लम्बे शरीर का एवं साँवले रंग वाला होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है और यह उसे अधिक बढ़ाता भी देता है। २५ वर्ष की आयु में, यह राज्य में किसी उच्च पद पर नियुक्त होता है। २५ से ४३ वर्ष तक की आयु तक इसे कोई कष्ट नहीं होता। ४८ वें वर्ष शारीरिक-कष्ट होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा धार्मिक विचारों की होती है। वह घर-परिवार में सर्वत्र आदर प्राप्त करती है। उसके भाई भाभी जातक को बहुत चाहते हैं तथा सहायता के लिए तईयार तत्पर बने रहते हैं। इसे तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियों का लाभ होता है। वृद्धावस्था सुख से बीतती है। पूर्णायु ७८ अथवा ८६ वर्ष होती है।

(२५१२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, देश-विदेश की यात्राएं करने वाला, विभिन्न समुदायों अथवा पक्षों से संबंधित कार्यों को करने वाला, पराये काम करके अत्यधिक आमदनी वाला तथा स्वतन्त्र रूप से भी विपुल धनोपार्जित करने वाला होता है। यह किसी-वार्ता से ही धन कमाने लगता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, स्वस्थ, तेजस्विनी तथा जातक को अपने नियन्त्रण में रखने वाली होती है। इसकी सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। इसे राज्य से भी आय होती है। कुछ समय राज्य की सेवा भी करता है, परन्तु उससे विशेष लगाव नहीं रखता। २८, ३५, ३८, ४५ तथा ५५ वें वर्ष में बहुत लाभ उठाता है। इस अवधि में इसके सभी कार्य सफल होते हैं। यह बड़ा स्वार्थी होता है। पराये लाभ-हानि से कोई मतलब नहीं रखता। धनवान तथा सुखी जीवन बिताते हुए ७१ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२५१३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, समदृष्टि युक्त, विनम्र, सुन्दर, पतले शरीर तथा मध्यम कद वाला होता है। इसे राज्य तथा पिता से विशेष लाभ होता है। यह उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा बाल्यावस्था से ही उच्च शिक्षा तथा सुखी-जीवन प्राप्त करता है। इसके माता-पिता सब प्रकार से सम्पन्न होते हैं। वे इसे लड़कपन से योग्य बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह २३-२४ वर्ष की आयु से ही बाहरी स्थानों का भ्रमण आरंभ कर देता है तथा देश-विदेश के लोगों से सम्मानित होता है। यह स्वदेश तथा विदेश - दोनों स्थानों से लाभ प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु तक बड़ी तेजी से उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सहृदय होती है। इस जातक का अन्य स्त्रियों से भी संबंध रहता है। इसके कई पुत्र-पुत्री होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५१४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, भाग्यशाली, उत्साही तथा उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था में विशेष सुख नहीं मिलता, परन्तु किशोरावस्था से इसके भाग्य की वृद्धि होने लगती है। २५ वर्ष की आयु में यह धनोपार्जन आरंभ कर देता है तथा किसी उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर आरूढ़ होकर राज्य से सम्मान पाता है तथा लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तेजस्वी, घर का सफलता पूर्वक संचालन करने वाली एवं जातक को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है। इसे संतान का कष्ट होता है। संतान या तो होती ही नहीं है या विलम्ब से होती हैं अथवा अकाल में ही काल-कवलित हो जाती हैं। यदि कोई संतान जीवित बचे तो वह बड़ी तेजस्वी होती है। इसे ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

भू० सं० १०७०

कु० २०

(२५१५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, सुसंस्कृत, लम्बे कद का, तेजस्वी तर्कशील स्वभाव का होता है। यह बाल्यावस्था से ही मेधावी तथा होनहार जान पड़ता है। किसी भी कार्य को करने में इसे हिचक नहीं होती। यह भाग्य का धनी होता है तथा बड़ा होकर राजकीय सेवा द्वारा बहुत उन्नति करता है। इसे दूसरे स्रोतों से भी धन प्राप्त करने का अवसर मिलता है। ~~यात्राओं~~ द्वारा इसे प्रचुर परिमाण में लाभ होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। यह पत्नी के साथ सुखी रहता है। पत्नी तेजस्वी तथा स्वतन्त्र रूप से कार्य करके धनोपार्जन करने वाली होती है। यह जातक ~~एक से~~ अधिक स्त्रियों से सम्पर्क रखता है परन्तु पत्नी से ही अधिक प्रभावित रहता है। सन्तान का अभाव रहता है। ५२ वर्ष की आयु में राज्य से सम्मान मिलता है। परमायु ७३ या ८१ वर्ष होती है।

(२५१६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वस्थ, सुन्दर, मध्यम कद का, विचारशील तथा गंभीर प्रकृति का होता है। कला एवं साहित्य से इसे विशेष प्रेम होता है। यह प्रत्येक वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। इसकी वाक्पटुता प्रभावशालिनी होती है। यह माता-पिता का भक्त होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति से भी बहुत लाभ होता है। यह अपने जीवन काल में प्रचुर चल तथा अचल-सम्पत्ति का स्वामी बनता है तथा अपनी आर्थिक स्थिति को निरन्तर उन्नत बनाता चला जाता है। २६ वर्ष की आयु में यह या तो राजकीय सेवा में नियुक्त होता है अथवा स्वतन्त्र व्यवसाय करता है। ४६ वर्ष की आयु तक इसे कोई कठिनाई नहीं होती। विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा सुलक्षणा होती है। पुत्रियाँ अधिक तथा पुत्र कम होते हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२५१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बे शरीर का स्थूलकाय तथा अत्यन्त आधिकारीक प्रवृत्ति का होता है। इसे किसी के अधीन रहना स्वीकार नहीं होता। यह अपने मित्रों तथा परिवारीजनों को भी अपने अनुकूल चलते हुए ही देखना चाहता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है और यह देश-प्रदेश का भ्रमण भी करता है। २५ वर्ष की आयु में यह कोई उच्च पद प्राप्त करता है तथा विदेश एवं कूटनीति के जानकारों से लाभान्वित होता है अथवा उनका सहयोगी बनता है। यह युवावस्था में ही अत्यधिक धन एवं सम्मान प्राप्त कर लेता है। जीवन पर्यन्त निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। वह ५७ वर्ष की आयु तक ही पति का साथ देती है। इसके पुत्र एक होता है। कन्याएं अधिक होती। ६८ वर्ष की आयु में संकट प्राप्त होता है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२५१८)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य माता-पिता का भक्त तथा उनका स्नेह पाने वाला, सुन्दर, स्वस्थ एवं उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। इसे ८ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह स्वस्थ, सुशिक्षित, कला-कौशल में निपुण, वाक्पटु तथा अपनी योग्यता द्वारा घर-परिवार में सबको अपने अनुकूल बना लेने में दक्ष होते हैं। यह जातक सेवा-कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों द्वारा भी धनोपार्जन करता है। इसे कृषि तथा शिक्षा संबंधी उपकरणों द्वारा लाभ होता है। यह अपने छोटे भाई-बहिनों का पिता की भाँति पालन-पोषण करता है। परोपकारी भी होता है। ४४ वर्ष की आयु में बहुत उन्नति करता है। इसके पुत्रियाँ अधिकतया पुत्र कम होते हैं। सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ८२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५१९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर एवं धनी माता-पिता का पुत्र होता है। यह माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त करता है। इसे उच्च शिक्षा उपलब्ध होती है। बाल्यावस्था सुख में बीतती है। २२ वर्ष की आयु में ही राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा से संलग्न होकर यह धनोपार्जन आरंभ कर देता है। विदेश-यात्रा भी करता है। देश-देशान्तर में आवागमन तथा नौकरी के कारण इसे काफी समय तक घर से बाहर रहना पड़ता है। यश तथा धन का उपार्जन भी खूब करता है। २४ वर्ष की आयु में पत्नी प्राप्त होती है। वह सुन्दरी, सौन्दर्य एवं कला मर्मज्ञा, ज्ञान-गरिमा युक्ता तथा पति को सदैव सुख देने वाली, गंभीर स्वभाव की होती है। २८ वर्ष की आयु में कोई अन्य कार्य आरंभ करके लाभ उठाता है। ससुराल-पक्ष से भी धन मिलता है। ५३ वर्ष की आयु में बहुत ऐश्वर्यवान हो जाता है। एकाधिक सुयोग होते हैं। पूर्णायु ८३ वर्ष होती है।

(२५२०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सौम्य, गंभीर स्वभाव का, सुन्दर, बुद्धिमान, तेजस्वी अपने पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ करने के उपरान्त एवं जीवन का सुविधा होता है। यह अपनी कार्य-वृद्धि तथा अधिकार-वृद्धि के लिए अनेक लोगों का सहयोग प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा पाकर यह राजकीय-सेवा में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। २४ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। २८ वर्ष की आयु में विदेश-यात्रा करता है तथा कुछ समय तक वहाँ रहता भी है। इसका विवाह 21.22 वर्ष की आयु में होता है। परन्तु दूसरी स्त्री प्राप्त करना भी लिखा है। दूसरी स्त्री से भी सुख नहीं मिलता। यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का बन कर रह जाता है। एक पुत्र होता है, परन्तु उससे भी विशेष सुख नहीं मिलता। धन, सम्मान सब कुछ रहते हुए भी इसे पूर्ण मानसिक-शान्ति नहीं मिलती। पूर्णायु ६८ अथवा ७७ वर्ष होती है।

(२५२१)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद का, गौर वर्ण, सुन्दर तथा तेजस्वी होता है। यह अपने पुरुषार्थ को ही सर्वोपरि मान कर चलता तथा लोक में सम्मान अर्जित करता है। इसका बचपन बड़े आनंद में बीतता है। यह माता-पिता को अत्यन्त प्रिय होता है। इसके जन्म के बाद ही घर में लाभ तथा आनन्द की वृद्धि होती है। यह उच्च कोटि का दार्शनिक तथा भगवद् भक्त होता है। तीर्थाटन करने में इसे सुख मिलता है। यह अपने उद्यम तथा परिश्रम से लोक का उपकार करता है। २५ वर्ष की आयु से धनोपार्जन करता है। व्यवसाय द्वारा बहुत लाभ कमाता है। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। इसे अपनी पत्नी के कारण भी बहुत सम्मान मिलता है। ३२ से ६५ वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ८० वर्ष तक की पूर्णायु प्राप्त कर सकता है।

(२५२२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, लम्बे कद, ऊँची नाक तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला, सुन्दर, तेजस्वी एवं सर्वत्र यश-सम्मान पाने वाला होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा बहुत धन अर्जित करता है। बाल्यावस्था से अंतिम समय तक वैभवशाली बना रहता है। यह अनेक कार्य करता है और सभी से लाभ कमाता है। अपने पुरुषार्थ से यह पैतृक-सम्पत्ति की बहुत वृद्धि करता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी मान-सम्मान की वृद्धि करने वाली, सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। जातक को राज्य से भी मान-सम्मान प्राप्त होता है। ६० वर्ष की आयु में ही यह सब प्रकार से सम्पन्न तथा सभी उत्तरदायित्वों से मुक्त हो जाता है। राज्य द्वारा सम्मानित, उच्चपद प्राप्त तथा प्रशंसित होता है। इसमें आजीवन क्रियाशीलता बनी रहती है। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होना संभव है।

(२४२३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य आस्तिक धनी, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, विद्वान तथा पुरुषार्थी होता है। यह बाल्यावस्था से ही ईश्वर भक्त होता है। अपने गुणों के कारण उच्च स्थान प्राप्त करता है। धन की इसके पास कभी कमी नहीं रहती। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुलक्षणा तथा हित-साधिका मिलती है। यह अपनी योग्यता द्वारा उच्च पद पर पहुँच कर धन कमाता है। किसी अन्य स्त्री के द्वारा भी इसे बहुत लाभ होता है। उसके कारण इसका भाग्य ही बदल जाता है। यह देशान्तरों में प्रसिद्ध होकर अपने स्थान में लोक-पूजित बनता है। २८ वर्ष की आयु के बाद तेजी उन्नति होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह पुनः परिवर्तन पाता है तथा देशान्तर में भी अपना निवास बना लेता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर यह ७६ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२४२४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी पी.सी. साहनी, अत्यन्त चतुर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसे माता का अधिक तथा पिता का कम सुख प्राप्त होता है। पिता से काफी समय तक अलग भी रहना पड़ता है। इसका पिता उच्च अधिकारी होता है। जातक भी उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सच्चरित्रा तथा जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देने वाली होती है। जातक भी उसके प्रभाव में रहता है। इस जातक के जीवन में धन का बहुत महत्व होता है। यह स्वयं कुछ भी खर्च नहीं करना चाहता। राजकीय सेवा में उच्च पद पाकर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। सन्तानें विलम्ब से होती हैं और वे जातक के अनुकूल नहीं होतीं। ज्येष्ठ पुत्र से कष्ट प्राप्त होता है। ३१, ३५, ४१ तथा ४८वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। परमायु ६०-६२ वर्ष होती है।

(२५२५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी, प्रसन्नचित्त, कोमल हृदय का तथा स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षित रहने वाला होता है। इसका बचपन कष्ट में बीतता है तथा बड़ा होकर सुख भोगता है। इसे शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं होती। परन्तु यह अपने व्यावहारिक-ज्ञान के बल पर पर्याप्त उन्नति करता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा बुद्धिमती होती है। जातक से अधिक पढ़ी-लिखी भी हो सकती है। जातक उससे बहुत सुख पाता है। यह व्यक्ति अनेक शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अपने परिवारजनों को सुख देने वाला होता है। इसे अपने शत्रुओं से धन का लाभ होता है। पत्नी इसकी सहायता करती है तथा इसकी उन्नति का कारण भी बनती है। इस जातक के जीवन में अनेक स्त्रियाँ भी आती हैं। ३० से ४६ वर्ष की आयु तक बहुत उन्नति करता है। संतान से कष्ट होता है। पूर्णायु ७३ वर्ष होती है।

(२५२६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, कला-प्रेमी, शान्त-मन, सत्कर्म द्वारा धार्मिक लाभ भी प्राप्त करने वाला, दानी, भोगी प्रवृत्ति का तथा उच्च शिक्षित होता है। यह राजनीति-क्षेत्र में उच्च पद पाता है। ३६ वर्ष की आयु तक इसकी सभी आकांक्षाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह जातक को अपने अनुशासन में रखती है। विवाह के बाद जातक में शारीरिक बदलाव आ जाता है। वह सब जिम्मेदारियाँ पत्नी को सौंप देता है, परन्तु उसका सुख अधिक समय तक नहीं रहता। प्रथम पत्नी की मृत्यु के बाद जातक दूसरा विवाह करता है, परन्तु दूसरी पत्नी से उतना सुख नहीं मिलता। वह भी थोड़े ही समय तक जीवित रहती है। जातक की सन्तानें योग्य होती हैं। ३०, ३३, ३८, ४१ तथा ४७ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। वृद्धावस्था में संतानों से सुख मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

भू० सं० ३४७१

कु० र०

(२५२७) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, भावुक-प्रकृति का, अपने कामों में अधिक चिन्ता न करने वाला तथा भाग्यवादी होता है। यह प्रायः दुःखी बना रहता है। यह अपने सद्व्यवहार तथा परिश्रम से समाज में स्थान तो बना लेता है, परन्तु सुख एवं सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। २४-२५ वर्ष की आयु में इसका विवाह भी हो जाता है, परन्तु पत्नी द्वारा इसे मानसिक-पीड़ा ही अधिक प्राप्त होती है। यद्यपि पत्नी द्वारा हाथ बँटाने के कारण इसे आर्थिक-रूप से सहयोग भी मिलता है। इसका संपूर्ण जीवन निष्क्रिय बना रहता है तथा सदैव परिश्रम करते रहना पड़ता है। इसकी संतानें अवश्य ही कुछ भाग्यशाली होती हैं। प्रथम संतति के जन्म के बाद ही जातक के घर में किंचित् सुख का प्रादुर्भाव हो जाता है। आगे चलकर भी इसे संतानों द्वारा सुख मिलता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२५२८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, सुन्दर, स्वस्थ, देशानुकूल वर्णवाला तथा बाल्यावस्था में कुछ कष्ट पाने वाला होता है। यह माता के और संभवतः पिता के भी अभाव में रहता है, परन्तु इसकी शिक्षा भलीभाँति होती है अतः यह अध्ययन समाप्त करके किसी अच्छी जगह पर नौकरी करने लगता है। २८ वर्ष की आयु में इसे अप्रत्याशित लाभ होता है, तब यह कोई नया कार्य आरंभ करता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है, परन्तु पत्नी के प्रति प्रेम कम रखता है, क्योंकि पत्नी कर्कश स्वभाव की होती है। यह संतान की ओर से भी सुखी नहीं होता, संतानें वह भी अधिक सौभाग्यशाली होती हैं। इसके जीवन में ३०, ३४ तथा ५१ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ३५ वर्ष की आयु से इसके जीवन में परिवर्तन आता है तथा बिगड़े हुए काम अचानक बन जाते हैं। परमायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२५२९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, मध्यम कद का, मधुरभाषी तथा कोमल हृदय का होता है। इसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। बाल्यावस्था में थोड़ा कष्ट होता है और बीमार रहता है। इसे भाइयों का लाभ होता है। यह राजनीतिक कार्यों में मन लगाता है। यह विभिन्न समुदायों में प्रमुख का पद प्राप्त कर लेता है। २० वर्ष की आयु से ही इसमें नेतृत्व के गुण प्रकट होने लगते हैं। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। यह कई बच्चों का पिता बनता है तथा उनसे प्रतिष्ठा भी पाता है, क्योंकि सभी बच्चे गुणवान तथा सुयोग्य होते हैं। पत्नी भी मनोनुकूल होती है। यह धन-संग्रह में चतुर होता है तथा कभी भी अपने पास धन का अभाव नहीं होने देता। यह स्वभावतः कृपण भी होता है। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका भाग्योदय होता है। तब यह मकान आदि भी बनवाता है। यह पेट-रोगी भी होता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(२५३०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, बुद्धिमान तथा पूर्ण शिक्षा पाने वाला होता है। यह कला-साहित्य आदि का ज्ञाता, बचपन से ही अध्यवसायी तथा पुरुषार्थ द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। तत्पश्चात् यह राजकीय सेवा में संलग्न होकर उन्नति करना आरम्भ करता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह ऐसे उच्च पद पर जा पहुँचता है, जहाँ अनेक व्यक्ति इसकी अधीनता में कार्य करते हैं। यह सेवा-काल में भी तीन बार अपना काम बदलता है। ३८, ४३ तथा ५१ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक होते हैं। सन्तानें अधिक नहीं होतीं। जो होती हैं, उनसे सुख प्राप्त करता है। इसके पास धन प्रचुर परिमाण में होता है तथा उसे खर्च भी खूब करता है। इसे नवीन कार्य करने की रुचि बनी रहती है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(२५३१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, चालाक, अपने पुरुषार्थ से धन एकत्र करने वाला तथा किशोरावस्था से ही धनोपार्जन आरंभ कर देने वाला होता है। २०-२२ वर्ष की आयु तक ही यह पर्याप्त सम्पत्ति भी अर्जित कर लेता है। इसे भूमि, भूमि के उत्पादन तथा अन्य भूमि संबंधी अन्य कार्यों द्वारा धन का लाभ होता है। यह व्यवसाय करता है, किसी की नौकरी नहीं करता। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी होती है, तथापि यह अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। पत्नी भी इसके साथ कठिनाई से ही रह पाती है। इसके प्रायः दो ही बच्चे होते हैं। सन्तानों से सुख मिलता है। इसके जीवन में ४५वां वर्ष बहुत प्रतिष्ठा दिलाने वाला होता है। ४८, ५५, ६१, ६३ तथा ६८वें वर्ष में विशेष उपलब्धियाँ होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५३२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, चालाक, मध्यम कद का तथा उच्चशिक्षित होता है। पारिवारिक-जीवन में इसे सुख प्राप्त होता है। २१ वर्ष की आयु में यह सेवा-कार्य सिलसिले से परदेश में चला जाता है तथा एक से दूसरे स्थान पर आना-जाना बना रहता है। इसका विवाह विलम्ब से होता है। नहीं भी हो सकता है। सामान्यतः यह अपने में ही लीन बना रहता है। अपनी माता की ओर इसका विशेष झुकाव होता है। भाइयों को भी बहुत चाहता है। यह कुटुम्ब का पोषक, ईश्वर-भक्त, तीर्थाटन-प्रेमी, मित्रों का सुख प्राप्त करने वाला तथा धनवान होता है। इसे आँखों का कष्ट होना भी सम्भव है। ५० वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। सन्तान यदि कोई हो तो उससे सुख प्राप्त करता है। प्रायः सुखी-जीवन बिताता हुआ ६८ वर्ष की परमायु पाता है।

भृ० सं० ३५०७

(२५३३) - इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद का, हठधारी वाला, सुन्दर तथा बचपन में अपने माता-पिता की छत्रछाया में रहकर सुख पाने वाला होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम प्रकार से होती है। यह माता-पिता का नम्र तथा उनका आज्ञा-पालक होता है। परिवार के प्रति भी यह प्रेम रखता है। इसे धन से विशेष लगाव होता है। अपनी मधुर वाणी द्वारा यह धनोपार्जन में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ३० वर्ष की आयु तक लोक-प्रसिद्ध हो जाता है। संगीतादि में इसकी विशेष रुचि होती है। यह बिना परिश्रम के अनायास ही धन प्राप्त करने में सफल होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अपने गुणों से घर को प्रकाशित करने वाली होती है। इसके संतानें कम होती हैं। एक पुत्र सुख देता है। ३५, ४३, ४८, ५५ तथा ६५ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२५३४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, सुन्दर, प्रियदर्शी, महान कार्यों को करने वाला, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त करने वाला तथा १८ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही नौकरी में संलग्न हो जाने वाला होता है। यह २६ वर्ष की आयु में उच्चाधिकारी बन जाता है। ज्ञान-लाभ हेतु विदेश भी जाता है। इससे अधिक आयु के लोग इसकी अधीनता में काम करते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी समझदार, बुद्धिमती तथा गंभीर स्वभाव की होती है। वह पति से बहुत अनुराग रखती है तथा अपने गुणों के कारण परिवार में प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती है। ३५ से ५१ वर्ष की आयु तक यह जातक विविध प्रकार के सम्मान प्राप्त करता है। पदोन्नति ५५ वर्ष की आयु में होती है। इसके कई पुत्र होते हैं (सुशिक्षित तथा समझदार होते हुए भी वे स्वच्छन्द प्रकृति के होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुक्र, लेखक, पुस्तकों तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर सम्मान पाने वाला होता है। यह काफी समय तक अपनी माता से अलग रहता है। प्रारंभ से ही यह लंबी यात्राएं करता है। पिता से भी इसकी अधिक निकटता नहीं रहती। २०-२१ वर्ष की आयु में ही यह किसी उत्तरदायित्व पूर्ण पद अथवा कार्य में संलग्न हो जाता है। निरन्तर उन्नति करता हुआ यह यथेष्ट धन तथा मान अर्जित करता है। कला तथा वक्तृता से संबंधित कार्यों का यह विशेषज्ञ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतले शरीर की, सुन्दरी, तेजस्वी तथा गंभीर प्रकृति की होती है। वह जातक की सब प्रकार से सेवा करती है, तथापि इसे घर का सुख बहुत कम मिलता है, क्योंकि बाहरी कामों की व्यस्तताओं से अवकाश ही नहीं मिलता। संतानें कम तथा अनुकूल होती हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२५३६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी चतुर, चालाक, विविध कलाओं का ज्ञान रखने वाला, चतुर व्यक्ति होता है, तथापि इसकी वाणी में माधुर्य नहीं होता, अतः इसे अपने गुणों का पूरा लाभ नहीं मिल पाता। इसकी शिक्षा भी अधूरी रहती है। यह २२ वर्ष की आयु में ही प्रयत्न करके आजीविकोपार्जन करने लगता है। इसे अपने व्यवसाय से लाभ होता है। इसका काम करने का ढंग बड़ी सूझबूझ का होता है। इसे देशान्तर में धन तथा सम्मान प्राप्त होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह खूब सम्पन्न हो जाता है। इसका विवाह २५ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है और वह बुद्धिमती इसके प्रत्येक कार्य में सहायक सिद्ध होती है। संतानें कम होती हैं। जीवन के ३५, ३९, ४३, ४९, ५२ तथा ५८ वें वर्ष घटनापूर्ण होते हैं। परमायु ७१ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२५३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, दृढ़ शरीर का, मधुरभाषी तथा सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त करता है तथा शिक्षा समय से पूरी प्राप्त कर लेता है। २५ वर्ष की आयु तक यह राज्य की सेवा आदि से सम्बद्ध होकर धनो-पार्जन आरंभ कर देता है। यह एक अधिकारी के रूप में उन्नति करता हुआ, अनेक स्थानों की यात्राएँ करता है। परदेश में रहते हुए ही यह उन्नति करता है। अपना निवास-स्थान भी परदेश में ही बनाता है। इसका विवाह भी २५-२६ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी बड़ी समझदार तथा इसके लिए बहुत सहायक होती है। वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। इसके सन्तानें अधिक नहीं होतीं। जो होती हैं, वे पारिवारिक दायित्वों का समुचित रूप से पालन करती हैं। यह जातक आजीवन सुखी रहता हुआ ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५३८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति कोमलचित्त वाला, सुन्दर, कला-मर्मज्ञ तथा सरल-प्रकृति का होता है। लोग इसे बहला-फुसला कर भी अपना काम निकालते रहते हैं। इसे बाल्यावस्था में सुख प्राप्त होता है। इसकी प्रवृत्ति अध्ययन की ओर रहती है। यह अपने अध्य-वसाय से उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसकी आकांक्षाएँ ऊँची होती हैं। २५-२६ वर्ष की आयु में ही यह किसी सेवा-कार्य से संलग्न होकर देशान्तरों का भ्रमण करता है। यह जितना धन कमाता है, उतना ही दानी भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध रहते हैं। संतान दो से होती हैं। दो पुत्र तथा दो पुत्रियों का योग बनता है। ३६, ३९, ४३, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष अधिक लाभप्रद रहते हैं। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२५३९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वतन्त्र व्यक्तित्व का धनी, सुबुद्ध, सुन्दर, संगीत तथा ललित कलाओं का प्रेमी, अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने वाला तथा बाल्यावस्था से माता-पिता का सुख पाने वाला होता है। यह किशोरावस्था से ही स्त्रियों के प्रति आकर्षित रहता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तेजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। यह पत्नी से बहुत सुखी रहता है। पत्नी के कारण इसे धन का लाभ भी होता है। वह स्वयं भी धनोपार्जन करती है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्री होती हैं। यह चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करता है। धन, मान, सम्पत्ति का कोई अभाव नहीं रहता। यह अपने जीवन में बहुत उन्नति करता है। भवन, वाहन, सेवक आदि के सुख इसे प्राप्त होते हैं। ४०, ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत सफल हो जाता है। सुखी-जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५४०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, लम्बे कद का, पतला तथा अपने व्यवसाय से उच्च ख्याति प्राप्त करने वाला होता है। यह कई कार्य करता है तथा अपव्यय करने में भी पीछे नहीं रहता। इसे अनेक प्रकार के व्यसन होते हैं। इसका विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से अधिक समय तक नहीं बनती। फिर भी पत्नी का साथ बना रहता है। वह संतान तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों का यथोचित पालन करती है। वह जातक से पहले ही परलोक-गमन कर जाती है। २५ वर्ष की आयु से पहले ही यह धनोपार्जन करता है। इसके जीवन में अनेक परिवर्तन आते रहते हैं। इसे भाग्यवशात् आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता है। यह अपना भवन भी बनवाता है। ५० वर्ष की आयु तक यह बहुत सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। इसे सब प्रकार के सुख-साधन उपलब्ध रहते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२५४१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही तेज-तर्रार स्वभाव का, किसी से न दबने वाला किसी के प्रभाव में न आने वाला, बाल्यावस्था में भी सुखी रहने वाला तथा पूर्ण शिक्षित होता है। यह सुन्दर, अनेक कलाओं का जानकार, शान-विलास में रुचि रखने वाला तथा संगीत, काव्य, साहित्य का प्रेमी भी होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में मनचाही सुन्दरी कन्या के साथ होता है। यह अपनी पत्नी के प्रति बहुत अनुराग रखता है। परन्तु अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके सम्बन्ध बने रहते हैं। इसके तीन कन्याएं तथा दो पुत्र होते हैं। वे सभी सुखदायक सिद्ध होते हैं। यह स्वतन्त्र कलामाध्यम द्वारा धनोपार्जन करता है। इसकी कलाकार पत्नी भी धनोपार्जन में सहायक बनती है। इसे राज-सम्मान भी मिलता है। ४५ से ६३ वर्ष की आयु के बीच इसे भूमि, भवन, वाहन आदि के अतिरिक्त प्रचुर सम्मान की भी उपलब्धि होती है। पूर्णायु ७६ वर्ष होती है।

(२५४२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी तेजस्वी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उन्नत कद का, उदार चित्त वाला, दीन-दुःखियों की सेवा में तत्पर रहने वाला तथा सुन्दर रूप वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में पदाधिकारी के रूप में अथवा व्यवसायी के रूप में धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसका विवाह भी २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। यह व्यक्ति धन के प्रति अनुरागी होते हुए भी विरागी प्रवृत्ति का होता है। यह अपनी सन्तानों के लिए भी धनोपार्जन करता है। अपने नौकरों तथा पड़ोसियों की भी सहायता करता है। ४६ वर्ष की आयु में इसे धन का आकस्मिक-लाभ होता है। राज्य द्वारा सम्मान भी मिलता है। ५०, ५३, ५८ तथा ६५वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे भूमि, भवन, वाहन, परिवार, धन आदि का पूर्ण सुख मिलता है। पूर्णायु ८१ वर्ष होती है।

(2543) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, सरल स्वभाव का तथा दृढ़ निश्चयी होता है। इसे अपने आकर्षक व्यक्तित्व का लाभ मिलता है। 25-26 वर्ष की आयु में ही इसे सब सुख उपलब्ध होते हैं। यह धन-धान्य, भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी बनता है। माता-पिता से अत्यधिक स्नेह तथा शिक्षा प्राप्त करता है। पैतृक-धन को उपलब्ध कर, उसके द्वारा और अधिक धन कमाता है। यह जितनी धर्म-कर्म तथा दान आदि में रुचि रखता है उतना ही सांसारिक सुखोपभोग एवं विलासादि में भी प्रवृत्ति रखता है। यह अनायास प्राप्त होने वाले भोगों का सहजरूप से उपभोग करता है। इसे उच्च राज-सम्मान भी प्राप्त होता है। इसका विवाह 24-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। उससे इसका मतभेद रहता है। सन्तान-सुख प्राप्त होता है। परमायु 75 वर्ष से अधिक होती है।

(2544) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति कुछ स्थूल काय, लम्बा, गौर वर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, धर्म के मर्म को भली भाँति समझने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी तथा उदार स्वभाव का होता है। इसका बचपन सुख तथा सम्पन्नता में व्यतीत होता है। इसके माता-पिता धनी होते हैं। वे राज-सम्मान प्राप्त सर्वमान्य कुलीन होते हैं। यह जातक 23-24 वर्ष की आयु में ही राज्य से सम्बन्धित हो जाता है तथा अनेक प्रकार के मान-सम्मान सहित उच्चपद प्राप्त करता है। यह लोक-कल्याण के लिए भी कार्य करता है। इसका जीवन भोगमय होता है, परन्तु सांसारिक भोग-विलासों से विरक्ति भी नहीं होती। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, स्वस्थ तथा सुखी होती है। वह जातक को अपने अनुकूल बनाये रखती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु 84 वर्ष तक हो सकती है।

(२५४५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति अपने मनमोहक व्यक्तित्व से सब को आकर्षित करनेवाला स्वस्थ, सुन्दर, सुदृढ़ स्थूल काय तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला होता है। इसकी शिक्षा उत्तम होती है। यह बचपन से ही सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। २०-२१ वर्ष की आयु में धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह परिश्रम बहुत करता है तथा उसके लाभ उठाता है। यह अपने धन को परोपकार में खर्च करता है, साथ ही भोग-विलास में भी कोई कमी नहीं रखता, ४५ वर्ष की आयु तक यह चल-अचल सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में एकत्र कर लेता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। पुत्र एक अथवा पाँच होते हैं। जीवन के ५० तथा ६१वें वर्ष बहुत लाभप्रद-सिद्ध होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५४६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य प्रियदर्शी, बुद्धिमान, अपने गुणों के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाला तथा सम्पन्न माता-पिता का पुत्र होने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख भोगने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त, शास्त्रों का अध्येता तथा प्रचुर पैतृक सम्पत्ति का लाभ पाने वाला होता है। इसे कभी कोई क्लेश अथवा कष्ट नहीं होता। यह अपना जीवन खूब सुख से बिताता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उदार, मनोनुकूल सुख देने वाली तथा सब प्रकार से सुयोग्य होती है। विवाहोपरान्त जातक को राज-सम्मान प्राप्त होता है तथा जिम्मेदारी के पद पर नियुक्ति होती है। यह राज्य के अतिरिक्त कृषि तथा व्यवसाय आदि से भी धन प्राप्त करता है। सन्तानें सुपात्र होती हैं। यह जातक खूब धन-सम्पन्नता का सुखी-जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५४७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पतला, मध्यम कद का, सुन्दर तथा गंभीर प्रकृति वाला होता है। यह धर्म में आस्था रखने वाला होते हुए भी कभी-कभी उसका अनादर करता है तथा सौभाग्य शाली होते हुए भी विघ्न-बाधाओं का सामना करता रहता है। यह सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण बचपन से ही सुखोपभोगी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है। जातक उसका अनन्य प्रेमी होते हुए भी कुछ खिन्न सा बना रहता है। विवाहोपरान्त यह राजकीय सेवा से सम्बद्ध हो जाता है अथवा व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। इसे पैतृक-धन तथा पैतृक व्यवसाय की भी उपलब्धि होती है। इसे पिता तथा बड़े भाई का विशेष स्नेह मिलता है। संतान का अभाव रहता है। विलम्ब से होने वाली एक सन्तान का जीवित रहना सम्भव है। ६० वर्ष की आयु तक यह अनेक प्रकार के सुख भोगता है। परमायु ८७ वर्ष होती है।

(२५४८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, पतले शरीर का, गंभीर तथा कुछ रूखे स्वभाव का, परन्तु हृदय से उदार होता है। इसका बचपन माता-पिता की छत्रछाया में सुख से व्यतीत होता है। यह बड़ा ज्ञानी, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है। इसका विवाह 21-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा कोमल स्वभाव की होती है। यह धर्म-कर्म में विशेष रुचि रखता है तथा कुछ खिन्न सा होता है। पत्नी इसकी अनुगता रहती है। उसकी ओर से निरन्तर सुख प्राप्त होता रहता है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा जीविकोपार्जन करता है। यह धार्मिक-ज्ञान रखनेवाला अथवा चिकित्सक भी हो सकता है। अपनी योग्यता एवं ज्ञान के कारण इसे विशिष्ट पद तथा सम्मान प्राप्त होता है। यह धार्मिक कार्यों में धन व्यय करता है तथा धनी होता है। देश-देशान्तरों की यात्राओं से लाभ उठाता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२५४९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था से ही गंभीर, एकान्त-प्रिय, अपने उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु नित्य प्रयत्नशील बना रहने वाला, धर्म प्रेमी तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। इसके माता-पिता नौकरी आदि के कारण स्थानान्तरित होते रहते हैं, अतः इसे कभी-कभी शिक्षा-प्राप्ति के उद्देश्य से, उनसे अलग भी रहना पड़ता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, गंभीर स्वभाव की, दृढ़ निश्चयी तथा सौभाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर घर से बाहर विभिन्न स्थानों पर रहता है। ३८, ४१, ४५, ५१ तथा ६५ वें वर्ष विशेष सुखदायक सिद्ध होते हैं। इसके दो पुत्र होते हैं। दोनों ही सुयोग्य तथा होनहार होते हैं। उनसे जातक को वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। इसे परदेश में रहते हुए ही धन तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५५०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी इकहरे शरीर का, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, सुन्दर, गंभीर तथा बाल्यावस्था में अपनी माँ से अलग रहने वाला होता है। इसका पिता राजकीय-सेवा में उच्च पदाधिकारी होता है। जातक की शिक्षा-दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है, किन्तु उसमें बाधायें आती रहती हैं। २५ वर्ष की आयु में यह जातक स्वयं भी सरकारी नौकरी में लग कर धनोपार्जन करने लगता है। ३० वर्ष की आयु में यह किसी उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर पहुँच जाता है। अपनी योग्यता के बल पर यह बहुत धन कमाता है। यह अनेक शास्त्रों का ज्ञाता तथा धर्म-कर्म में रुचि रखने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला प्राप्त होती है। पुत्र-पौत्रों का भी यथेष्ट सुख मिलता है। समाज तथा राज्य में सम्मान प्राप्त होता है। जीवन सुख एवं सम्पन्नता में बीतता है। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(२५५१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी तेजस्वी, बुद्धिमान, लम्बे कद का, कुछ स्थूलकाय, सुन्दर तथा मन्त्राध्ययन में विशेष रुचि रखने वाला होता है। यह स्वभाव से कोमल तथा हृदय का उदार होता है। यह किसी का बुरा नहीं चाहता। सबको प्रसन्न ही देखना चाहता है। इसका बचपन सुख में बीतता है। यह अपने परिश्रम तथा पुरुषार्थ द्वारा उपार्जित धन से ही सन्तुष्ट रहता है। बेईमानी की कमाई को तनिक भी पसन्द नहीं करता। २५ वर्ष की आयु से ही यह नौकरी आदि करके धनोपार्जन करता है। ३५ वर्ष की आयु तक बहुत सम्पन्न हो जाता है तथा धन, मकान, वाहन आदि सभी सुख-साधन प्राप्त कर लेता है। अन्त में यह किसी उच्च प्रतिष्ठान का अध्यक्ष भी बन जाता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी, उदार तथा सौभाग्यशालिनी होती है। इसे पुत्र तथा कन्या - दोनों का सुख प्राप्त होता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२५५२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, साहसी, दृढ़ निश्चयी, कर्मठ तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होने वाला होता है। यह विद्याध्ययन तथा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ता है तथा राज्य एवं समाज से धन-सम्मान प्राप्त करता है। यह पैतृक-धन का उपभोग करता है तथा पैतृक-व्यवसाय से लाभ उठाता है। यह सरकारी सेवा भी कर सकता है तथा उसमें भी इसे उच्च पद प्राप्त हो सकता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा वाचाल होती है। वह धन-सम्पत्ति के प्रति विशेष लगाव रखती है। इस जातक का भाग्योदय भी किसी स्त्री द्वारा ही होता है। यह मित्रों के प्रति न तो अधिक सहानुभूति रखता है और न उनके किसी काम ही आता है। जीवन के अनेक विषयों के प्रति आकर्षित बना रहता है। आवश्यकतानुसार आय खर्च करता है। एक पुत्र तथा पुत्री होते हैं। सुखी जीवन बिताता हुआ १०२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५५३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, बाल्यावस्था में माता-पिता की छत्रछाया में (लालन) पूर्ण सुख पाने वाला तथा बड़े होकर अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करने वाला होता है। इसकी शिक्षा पूर्ण होती है। शिक्षा काल में बीमारी के कारण कुछ समय के लिए अवरोध भी आता है। बाद में, देशान्तर में जा कर यह अपनी आजीविका उपार्जित करना आरम्भ कर देता है। दृढ़ निश्चयी तथा परिश्रमी होने के कारण यह सरकारी विभाग में शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह चितन्य व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है तथा स्वयं भी बहुत धनोपार्जन करती है। यह पुत्र पुत्र तथा पुत्रियों का पिता होता है। इसका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत होता है। जीवन के २५, ३०, ३८ तथा ६३वें वर्ष विशेष परिवर्तन कारक सिद्ध होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, दीर्घजीवी, हृष्ट-पुष्ट तथा बाल्यावस्था से ही कला-प्रेमी होता है। इसका बचपन बहुत सुख में व्यतीत होता है। इसके लिए सभी सुख-साधन उपलब्ध रहते हैं। यह २५ वर्ष की आयु से ही कार्यक्षेत्र में उतर कर धनोपार्जन करने लगता है। यह ललित कलाओं से सम्बन्धित किसी कार्य को अपने लिए चुनता है तथा किसी ऐसे ही व्यावसायिक प्रतिष्ठान में कार्य करता है। यह अपनी दक्षता के लिए सर्वत्र विख्यात होता है। इसे यात्राएं करने का सुयोग भी मिलता है। यात्राओं से इसे धन का लाभ होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह जातक को अपने अनुरागत रखने में सफल होती है। वह जातक के प्रत्येक कार्य का समर्थन करती है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत प्रतिष्ठित हो जाता है। इसके दो पुत्र होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

भू० सं० ०३०८

कु० र०

(२५५५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कदवाला, बुद्धिमान तथा सुरुचि सम्पन्न होता है। यह साहित्यिक पठन-पाठन में बहुत रुचि लेता है। यह अपने ज्ञान तथा योग्यता के कारण उन्नति करता है। यह किसी तकनीकी विषय में दक्षता प्राप्त होता है। यह शिक्षा विभाग में कोई उच्च स्थान प्राप्त करता है अथवा किसी कार्यालय का प्रमुख होता है। यह धर्म-कर्म में रुचि रखता है तथा तीर्थाटन, दान, परोपकार, धार्मिक कृत्य आदि में अपना धन खर्च करता है। ५५ वर्ष की आयु के बाद यह किसी धार्मिक-संस्थान, आश्रम आदि से संबंधित अथवा प्रवचनकर्ता बन जाता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी पूर्ण सुख देती है तथा घर-गृहस्थी का भली प्रकार से संचालन करती है। इसके एक पुत्र तथा एक पुत्री होती है। संतानें सुयोग्य निकलती हैं। शान्त तथा सुखी जीवन बिताते हुए यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सामान्य सुन्दर, चंचल मति तथा सदैव अपने बारे में ही सोचने वाला होता है। इसे अपनी स्थिति एवं सुरक्षा करने की चिन्ता लगी रहती है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसके जीवन में २१वें वर्ष से परिवर्तन आता है। यह अचानक ही किसी उच्च प्रतिष्ठान की सेवा में नियुक्त हो जाता है। इसे जीवन में सुख तथा समृद्धि के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आजीवन साथ देती है, परन्तु कुछ कारणवश इसे काफी समय तक पत्नी से अलग भी रहना पड़ता है। यह जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह स्त्री के सहयोग से ही धन कमाता है। ३३ वर्ष की आयु तक यह उच्च स्थान प्राप्त कर लेता है। ५५ वर्ष की आयु तक भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख उपलब्ध हो जाते हैं। दो पुत्र बहुत मेधावी होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५५७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, उदार, दूसरों के दुःख में सहायता करनेवाला तथा अनुशासन-प्रिय होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अनेक विषयों का ज्ञानकार होता है। यह दूसरों का सम्मान करता है तथा स्वयं भी दूसरों से सम्मान पाने का इच्छुक रहता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। वह कुछ लम्बे कद की तथा साँवले रंग की होते हुए भी मनोमोहक होती है। यह जातक राज्य से संबंधित किसी प्रतिष्ठान से संबंधित होकर, घर से बाहर रहकर जीविकोपार्जन करता है। यह अपनी समस्त महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर लेता है। भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी बनता है। इसके पुत्र-पौत्र सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। भरे पूरे परिवार के साथ सब प्रकार के सुख आजीवन उपलब्ध रहते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५५८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रियदर्शी, विद्वान तथा अपने धन से विशेष मोह रखने वाला होता है। यह धन-प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। इसे जुआ खेलने का भी शौक होता है तथा भोग-विलास की ओर भी आकर्षित होता है। २५ वर्ष की आयु तक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है, तदुपरान्त नौकरी करके, परदेश में आजीविकोपार्जन करता है। ३० वर्ष की आयु में इसके पास बहुत धन हो जाता है। भूमि, भवन तथा वाहन भी उपलब्ध हो जाते हैं। यह निरन्तर उन्नति करता हुआ ४५ वर्ष की आयु में शिखर पर जा पहुँचता है। सर्वत्र आदर-सम्मान भी पा लेता है। यह अनेक स्थानों की यात्रायें करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री अधिक उदार तथा धार्मिक होती है। पुत्र भी गंभीर स्वभाव के होते हैं। वे पिता को सुख देते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२५५९) - इस जलकुण्डली का अधिपति संयमी, बुद्धिमान, बहुत सोच-समझ कर काम करनेवाला तथा बाल्यावस्था से ही पैतृक-सुख-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है। इसे माता-पिता का स्नेह दीर्घ-काल तक प्राप्त रहता है। यह तकनीकी शिक्षा प्राप्त करता है। कलाओं में भी प्रेम रखता है। इसे अध्ययन करना अच्छा लगता है। २३ वर्ष की आयु में ही यह आजीविकोपार्जन करने लगता है। दो वर्ष बाद ही यह किसी दूसरे काम अथवा विभाग में संलग्न हो जाता है। ३५ वर्ष की आयु में आकस्मिक-धन का लाभ होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति उपलब्ध होती है। सेवकों, राज्य तथा शत्रुओं से विवाद होने पर इसे धन का लाभ होता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी चतुर, मनोनुकूला तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। पुत्रियाँ अधिक होती हैं। पुत्र सुयोग्य होते हैं। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२५६०) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, बाल्यावस्था से सुख सुख पाने वाला, युवावस्था में अनेक स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर, उनका उपभोग करनेवाला तथा आश्रितों का परिपालन करने वाला भी होता है। यह अन्याय अथवा अत्याचार को सहन नहीं कर पाता। स्वयं भी किसी के साथ अनुचित व्यवहार नहीं करता। यह राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। लोग इसके अनुशासन में रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि यह अधीनस्थों के साथ मधुर व्यवहार करता है। इसका भाग्योदय जीवन भर बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी तेजस्वी व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है तथा अपने मधुर-व्यवहार से इसके ऊपर छाई रहती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। यह धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

भृ० सं० १७६३

कु० र०

(२५६१) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौर वर्ण, विशाल हृदय का, तीव्र बुद्धि तथा उच्च आकांक्षाओं वाला होता है। यह बड़ा अध्ययन-प्रेमी होता है। इसकी ज्ञान-पिपासा निरन्तर बढ़ती रहती है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा २८ वर्ष की आयु तक उच्चकोटि के विद्वानों में गिना जाने लगता है। यह ३५ वर्ष की आयु तक उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका दिन दूना, रात चौगुना उत्कर्ष होता है। यह देश-प्रदेश में सर्वत्र सम्मान पाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, कुलीन, गुणवती तथा विदुषी होती है। वह जातक को सदैव प्रसन्न बनाये रखती है तथा स्वयं अनुकूल बनी रहती है। इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। यह अपने पौरुष, विद्वत्ता एवं अध्यवसाय द्वारा उन्नति करता है तथा भूमि एवं भवन का स्वामी बनता है। इसकी सन्तानें विद्वान तथा यश देने वाली होती हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५६२) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी इकहरे शरीर का, चालाक तथा गंभीर प्रकृति वाला होता है। यह गहन अध्ययन, चिन्तन द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है और यह राजकीय-सेवा अथवा व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। यह देश-विदेश में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यात्रायें खूब करता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। अचल सम्पत्ति, भूमि तथा धातु संबंधी वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा इसे बहुत धन मिलता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा स्थूल शरीर वाली कन्या से होता है। वह पति का हित-चिन्तन करने वाली तथा कठिनाई में साथ देने वाली होती है। इनके कन्यायें अधिक होती हैं। ५१ वर्ष की आयु में इसे बहुत धन का लाभ होता है। परमायु ७० अथवा ७२ वर्ष होती है।

भु० सं० ४३०८

कु० २०

(२५६३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पुरुष, साँवले रंग का, स्वस्थ, धैर्यवान तथा बुद्धिमान होता है। इसका बचपन बहुत घटनापूर्ण होता है। इसे माता-पिता के साथ कई स्थानों पर रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। २३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा से संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है। जीवन के २७, ३५, ३७-३९, ४२, ४९ तथा ५३ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। यह सदैव राजकीय-सेवा ही करता है तथा कालान्तर में इसकी गणना बड़े राजपुरुषों में होने लगती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। इसके पास धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं रहती। यह उत्तरोत्तर अधिक धन संचय करता चला जाता है। इसके पुत्र गुणवान तथा बुद्धिमान होते हैं। इसे अपनी सन्तान के द्वारा भी धन-मान प्राप्त होता है। परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२५६४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति बाल्यावस्था से ही अपने माता-पिता के साथ विभिन्न स्थानों पर रहने वाला, कुछ नाटे तथा लम्बे शरीर का, गौर वर्ण, स्वस्थ तथा सब लोगों को अपनी इच्छानुसार चलाने की प्रवृत्ति रखनेवाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर यथेष्ट धनोपार्जन करता है। यह अपने धन का खर्च प्रदर्शन में करता है। धार्मिक-कृत्यों में भी यह खूब खर्च करता है। जीवन के ३०, ३८, ४१, ४६, ४९, ५१ तथा ५८ वें वर्ष बहुत उन्नति तथा सुखदायक होते हैं। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में सुन्दर कन्या के साथ होता है। स्त्री बहुत मितव्ययी तथा धन का संचय करने वाली होती है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। इसे अपनी सन्तान से पूर्ण-सन्तोष मिलता है। इसे आजीवन सुख तथा ऐश्वर्य की उपलब्धि होती रहती है। कभी कोई विशेष कष्ट नहीं होता। परमायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

८३०७ सं० भु०

कु० र०

(२५६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गोरा, गोल, चिकने एवं मध्यम कद वाला तथा अपने अध्यवसाय से उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। यह अपने तेज के कारण बाल्यावस्था से ही मान-सम्मान पाने लगता है। यह खेलकूद, वाद-विवाद तथा नेतृत्व में यह सबसे आगे रहता है। २३ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर पर्याप्त आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। यह बहुत सम्पत्ति अर्जित करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-प्रेमी तथा जातक की उन्नति में सहयोग करने वाली होती है। इसका व्यक्तित्व जातक पर प्रभावी बना रहता है। इसे संतान का अभाव रहता है। यदि विलम्ब से पुत्र का जन्म हो, तो वह दीर्घायु, बुद्धिमान तथा पिता को सुख देने वाला होता है। इसके जीवन के २५, २८, ३६, ४१, ४८ तथा ५६ वें वर्ष बहुत उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२५६६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से बहुत सुख प्राप्त करता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा साहित्य का रचयिता होता है। यह उच्च स्थान प्राप्त करने हेतु लालायित रहता है। यह भोग-विलास तथा ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीना चाहता है। २७ वर्ष की आयु में यह उच्च पद प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु में यह अपने लिए अत्यन्त सुन्दर भवन का निर्माण करता है। इसका विवाह २२-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, बुद्धिमती तथा धन का संचय करने वाली होती है। यह जातक ३८ वर्ष की आयु में विशिष्ट सम्मान तथा पद-वृद्धि प्राप्त करता है। इसे परदेश-गमन से लाभ होता है। ५८ वर्ष की आयु से इसका मन धार्मिक कार्यों में अधिक लगता है। वृद्धावस्था में संतान की ओर से सुख प्राप्त होता है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। जीवन के अन्तिम वर्षों में धर्म की ओर विशेष झुकाव होता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२५६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ तथा स्वस्थ शरीर वाला, सुन्दर तथा लम्बे कद का होता है। इसे अपने माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह बाल्यावस्था से ही अपनी तीव्र बुद्धि का प्रदर्शन करने लगता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने नेतृत्व-गुण के कारण अनेक लोगों को अनुशासन में रखता है। यह 20-22 वर्ष की आयु से ही राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न हो कर धनोपार्जन करने लगता है। किसी तकनीकी-ज्ञान का विशेषज्ञ होने के कारण यह शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। ३६ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी तथा यशस्वी हो जाता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उच्च विचारों वाली तथा बुद्धिमती होती है। वह अपने कार्यों तथा सहयोग से जातक की प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है। इसके दो पुत्र तथा दो ही पुत्रियाँ होती हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५६८) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद का तथा तीव्र वाणी वाला होता है। यह अपनी बात मनवाने का इच्छुक बना रहता है। यह बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक सुखी जीवन बिताता है। 23 वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी बहुत साथ देती है, वह सुन्दरी तथा पति-परायणा होती है। इसके दो पुत्र होते हैं। वे सुन्दर तथा सुख देने वाले होते हैं। २५ वर्ष की आयु में यह जातक राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न हो कर उन्नति करना आरम्भ करता है। यह यात्रा-प्रेमी होता है। इसके जीवन में ५० वर्ष की आयु के बाद बहुत परिवर्तन आता है। ५५ वर्ष की आयु से इसकी रुचि सांसारिक भोगों में नहीं रहती। यह ईश्वर-भक्त बनकर धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेने लगता है तथा सपत्नीक तीर्थ-यात्राएँ करता रहता है। इसकी परमायु ७९ वर्ष होती है।

(२५६९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था से ही माता-पिता की सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा उच्च शिक्षित होता है। यह 23-24 वर्ष की आयु से ही किसी श्रेष्ठ कार्य में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करने लगता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह धन का पर्याप्त संग्रह करता है। 28 वर्ष की आयु तक ही यह प्रचुर सम्पत्ति शाली बन जाता है। अपने पुरुषार्थ द्वारा यह भूमि, भवन का क्रय भी करता है। इसका विवाह 21 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी गुणों की खान, सुन्दरी, अपने सौजन्य से सदैव प्रेम प्राप्त करने तथा देने वाली एवं घर-गृहस्थी के दायित्वों का समुचित रूप से पालन करती हुई धन का संचय करने वाली होती है। जीवन के 30, 38, 45, 51 तथा 56 वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। पुत्र-पौत्री आदि का सुख भोगता हुआ यह 76 वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२५७०)- इस जन्मकुण्डली में जातक अत्यन्त सुन्दर, मधुरभाषी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा दृढ़ निश्चयी होता है। यह बहुत महत्वाकांक्षी होता है। इसे संगीत या शिल्प कला से प्रेम होता है। विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी कलाओं की जानकार होती है। संगीत, नृत्य तथा साहित्य की अनेक विधाओं में वह निष्णात होती है। वह जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है तथा घर-गृहस्थी के दायित्वों का भी यथोचित रूप में पालन करती है। वह जातक को अनेक क्षेत्रों में सहयोग देती है। पुत्र-पुत्री भी कई होते हैं। वे सब सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं। जीवन के 29, 35 तथा 41 वें वर्ष में यह जातक लम्बी यात्रायें करता है। 45 वर्ष की आयु तक उच्चाधिकार प्राप्त कर लेता है। जातक बाहर निर्विघ्न सम्मान पाता है तथा कला एवं व्यवसाय द्वारा प्रचुर धन-सम्पत्ति अर्जित करता है। पूर्णायु 80 वर्ष से अधिक होती है।

(२५७०१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, लम्बे कद का तथा कोमल हृदय वाला होता है। यह बाल्यावस्था में रोग आदि के कारण दुःखी रहता है। माता का पूर्ण संरक्षण प्राप्त होता है. पिता से काफी समय तक अलग रहता है। अपने पुरुषार्थ के बल पर यह २२-२४ वर्ष की आयु में धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। क्योंकि यह डटकर काम करता है २६ वर्ष की आयु से इसे राजकीय-सेवा प्राप्त हो जाती है। यह अपनी उन्नति के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। ३१ तथा ३६ वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी भिन्न मत वाली होती है, तथापि वह जातक की अनुगामी बनी रहती है एवं लम्बे समय तक शारीरिक-कष्ट भी भोगती है। संतानें कम होती हैं। धन सम्पत्ति की कमी नहीं रहती, तथापि जातक को भी शारीरिक-कष्ट भोगना पड़ता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२५७०२)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ निश्चयी तथा स्थिर चित्त वाला होता है। यह विशाल हृदय का, उदार होता है। इसे बाल्यावस्था में कुछ समय तक कष्ट उठाना पड़ता है। इसे पूर्ण शिक्षा प्राप्त होता है। घर से बाहर रहकर किसी अन्य स्थान में भी यह शिक्षा प्राप्त करता है। २३ वर्ष की आयु तक इसका विवाह हो जाता है। पत्नी से सुन्दरी, उच्च विचारों वाली, स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा जीवन में सबको अपने नियन्त्रण में रखने की चेष्टा वाली होती है। जातक कुछ समय तक तो उससे प्रभाव प्राप्त करता है, तत्पश्चात् उनमें मतभेद भी हो जाता है, तथापि वह जातक से कभी विमुख नहीं होती। वह कई संतानों को जन्म देती है तथा उनसे पूर्ण अनुराग रखती है। जीवन के ३६ वें वर्ष में जातक पर्याप्त धनोपार्जन करता है। ३१, ४५, ५३, ५८ तथा ६५ वें वर्ष बहुत शुभ होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५७३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी विनम्र, सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। बाल्यावस्था में रुग्ण रहता है। बड़े होने पर यह अध्ययन में विशेष रुचि लेता है। ललित कलाओं के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। यह अपनी वाणी, गुण, योग्यता तथा मित्रता द्वारा समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। अपने मित्रों तथा परिचितों को भी अपने उदार तथा शिष्ट व्यवहार द्वारा बहुत प्रसन्नता प्रदान करता है। २५ वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन करने लगता है। २८, ३६ तथा ५० वें वर्ष में विशेष उन्नति करता है। यह अपने अधीनस्थों को अनुशासन में बनाये रखने में सक्षम होता है। धर्म-कर्म में भी रुचि रखता है। इसका विवाह २३-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भिन्न विचारों की होते हुए भी इसकी अनुगामी बनी रहती है। इसके दो पुत्र होते हैं, जो अनुकूल चलने वाले होते हैं। परमायु ८८ वर्ष होती है।

(२५७४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी बड़ा बुद्धिमान, सुन्दर, सुयोग्य, कला-मर्मज्ञ, साहित्यप्रेमी तथा पराये दुख-दर्द में सहानुभूति रखने वाला होता है। यह किसी लाभ के विषय में कभी कोई चिन्ता नहीं करता। यह अपनी आजीविका लेखन-कार्य द्वारा अर्जित करता है। २६ वर्ष की आयु में यह किसी अधिकारी का पद प्राप्त कर सकता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। इसे अपनी पत्नी के कारण बहुत सुख मिलता है तथा समाज में प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके कई पुत्र होते हैं। उनके कारण भी जातक को यश-कीर्ति की उपलब्धि होती है। २८ से ५६ वर्ष का समय विशेष आनन्दप्रद रहता है। फिर कुछ समय को कठिनाइयां आती हैं, धन भी नष्ट होता है, परन्तु ६० वर्ष की आयु तक सबसे मुक्ति मिल जाती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५८७५)- इस जन्मकुण्डली का अधिकारी पुरुष, चालाक, प्रभावशाली, वाक्यावक्ता के माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला तथा उच्च शिक्षित होता है। यह वाक्यावक्ता से ही का तथा बाद सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। २३ वर्ष की आयु में अध्यापन व्यवसाय करके धनोपार्जन आदि की उन्नति करने लगता है। यह अनायास ही उच्चपद प्राप्त कर लेता है। २५-२६ वर्ष की आयु में भी यह बहुत सम्पन्न हो जाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। ३० तथा ३५ वर्ष की आयु में इसे बहुत सम्मान प्राप्त होता है। यह लोक-कल्याण का आकांक्षी होता है, अतः निमित्त रूपों में मानव-समाज की सेवा में भी संलग्न बना रहता है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी भी धार्मिक तथा उदार होती है। पुत्र-पुत्री भी सुयोग्य तथा सौभाग्यशाली होते हैं। परमायु ८८ वर्ष होती है।

(२५८७६)- इस जन्मकुण्डली में अपना मनुष्य पुरुष, गौरवर्ण, धनी-मानी तथा बाल्यावस्था से ही पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, चल तथा अचल सम्पत्ति का स्वामी, उदार तथा सहिष्णु प्रकृति का होता है। यह सब लोगों के कल्याण की कामना करता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है तथा इसकी ज्ञान की भूख कभी मन्द नहीं होती। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा श्रेष्ठ विचारों वाली, अत्यन्त उदार महिला होती है। वह पति की अनुगाता बनी रहती है तथा पति-पत्नी दोनों मिलकर अनेक सामाजिक कार्यों को करते हैं। इनके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। राज्य में भी जातक को बहुत सम्मान मिलता है। संतानों से सन्तोष तो रहता है, किन्तु वे सुयोग्य नहीं हो पाते। ६५ वर्ष की आयु में जातक बहुत धन-सम्पन्न हो जाता है। सुखी-जीवन बिताते हुए यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५८७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, चतुर, अपनी वाणी से सर्वत्र प्रतिष्ठा पाने वाला वाला वाक्य से सुखी, सुन्दर, पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, उच्च शिक्षित तथा ज्ञान वृद्धि हेतु नित्य प्रयत्नशील होता है यह अत्यन्त धार्मिक प्रकृति का, शिक्षा तथा अध्ययन को प्रोत्साहित करने वाला तथा लोक-कल्याण सम्बन्धी कार्यों में रुचि लेने वाला होता है यह धन को कमाने तथा उसका संग्रह करने में कुशल तथा धन को उत्तम एवं धार्मिक कार्यों में खर्च करने वाला होता है इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है पत्नी मनोनुकूला, अनुगता तथा सदैव प्रसन्नता प्रदान करने वाली होती है वह भी धार्मिक विचारों की होती है तथा घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। संतानें कम, परन्तु सुयोग्य होती हैं, उनसे सुख भी मिलता है। सम्पूर्ण जीवन सुख से बिताते हुए यह जातक ७८ वर्ष से अधिक आयु प्राप्त करता है।

(२५८८) - इस जन्म कुण्डली के उत्पन्न मनुष्य चंचल बुद्धि वाला, लोक-हितकारी भावनाओं से पूर्ण रहने वाला तथा कुलीन घर में उत्पन्न होने के कारण बचपन से ही सुख पाने वाला होता है इसका पिता बहुत सम्मानित, उच्च-चरित्र वाला होता है यह जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। २५ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा ३६ वें वर्ष तक उच्च स्थान एवं सम्मान प्राप्त कर लेता है इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमान तथा मनोनुकूला मिलती है। २८ वर्ष की आयु में पत्नी को बहुत शारीरिक कष्ट होता है तथा उसके वियोग की संभावना भी हो सकती है। यदि उसके स्वयं के ग्रह प्रबल हुए तो जीवित भी रह सकती है। दो पुत्र होते हैं। दोनों ही सुयोग्य होते हैं मरण तक चतुर्दिक यश प्राप्त करता हुआ ७१ वर्ष की परमायु पाता है

(२५७९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अपने कार्यों में शीघ्र सफलता प्राप्ति का इच्छुक रहते हुए भी दीर्घसूत्री, चिड़चिड़ा, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा १५ एवं २३ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट पाने वाला होता है। इसे अपनी रुचि के अनुकूल शिक्षा प्राप्त होती है। यह माता-पिता की छत्रछाया में रहकर सुखोपभोग करता है। बड़ा होकर राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी, सुन्दरी, सुखदायक तथा सम्मान की वृद्धि करने वाली होती है। जीवन के २८, ३०, ३५ तथा ४८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पत्नी को कभी-कभी शारीरिक-कष्ट होता रहता है। जातक को चौपनवें वर्ष आकस्मिक चोट लगने की संभावना रहती है। दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। वे सभी सुयोग्य होते हैं। यह जातक यथेष्ट धन-सम्मान अर्जित करता हुआ ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५८०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी चंचल चित्त का होते हुए भी धीर-गंभीर, तीव्रबुद्धि, बाल्यावस्था से ही कुशल एवं धनी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर २४, २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणी, जातक का हित-चिन्तन करने वाली तथा गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करने वाली होती है। इसके कई पुत्र होते हैं, जो सामान्यतः अच्छे स्वभाव के तथा आज्ञापालक होते हैं। ५० वर्ष की आयु तक यह जातक पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर लेता है तथा भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी बन जाता है। ५८, ६५ तथा ६८वें वर्ष भी बहुत लाभप्रद रहते हैं। यह बाहरी स्थानों की यात्राएं भी करता है तथा उनसे लाभ भी प्राप्त करता है। परमायु ७८ या ७५ वर्ष होती है।

(२५८१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी चंचल बुद्धि का, किसी पर सहज ही विश्वास न करने वाला
अपने दुःखों को किसी के सामने प्रकट न करने वाला, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखों तथा लम्बे कद
वाला होता है। यह बाल्यावस्था में दुःखी रहता है, परन्तु युवावस्था में स्त्री, पुत्र तथा कुटु-
-म्बियों के कारण चिन्ता से दुःखी भी बना रहता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो
जाता है। पत्नी सुन्दरी, उदार तथा गंभीर एवं शान्त स्वभाव वाली होती है। पुत्र तेजस्वी
होता है तथा कुछ गर्भ नष्ट भी हो जाते हैं। आजीविका प्राप्ति २५ वर्ष की आयु से आरम्भ होता
है तथा उसके लिए परदेश में भी रहना पड़ता है। ३० वर्ष की आयु में पर्यटन भी करता है।
यह बहुत यश, धन तथा सम्मान उपलब्ध करता है। ४५ वर्ष की आयु में बहुत लाभ होता
है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२५८२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, दृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, आकर्षक, उदार,
चतुर, साहित्य, संगीत कलाओं का ज्ञाता तथा सुन्दरी स्त्रियों के साथ विहार करने वाला
होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपनी विद्वत्ता एवं ज्ञान के कारण लोक-प्रसिद्ध
होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सब प्रकार से
सुख देने वाली होती है। इसका एक पुत्र भी बहुत विद्वान् होता है। यह जातक भूमि, मकान
तथा वाहनों का स्वामी होता है। अन्य अनेक लोग इसके द्वारा लाभान्वित होते हैं। यह
लोक कल्याणकारी कार्यों को करता है तथा उदार भाव से परिवारजनों तथा मित्रों की सहा-
-यता करता रहता है। इसका सम्पूर्ण आदर्श तथा सुखमय होता है। यह कला, व्यवसाय तथा
अन्य अनेक स्रोतों से धन कमाता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५८३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उदार तथा विनम्र होता है। यह उच्च शिक्षित तथा लोक में मान्यता प्राप्त होता है। इसे बाल्यकाल में कष्ट होता है तथा कुछ समय तक माता-पिता से अलग भी रहना पड़ता है। १५ वर्ष की आयु के बाद यह आजीवन सुखी एवं समाज में प्रतिष्ठित बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला, सुन्दरी तथा मान-सम्मान की वृद्धि करने वाली होती है। यह किसी बड़े संस्थान का अधिष्ठाता अथवा स्वामी होता है। इसे राज्य से सम्मान, सहयोग तथा धन की उपलब्धि होती रहती है। यह अपनी स्त्री के कार्य तथा व्यक्तित्व के माध्यम से भी धन तथा यश प्राप्त करता है। इसके अनेक पुत्र होते हैं और वे सुख भी देते हैं। इसे अचल-सम्पत्ति का भी बहुत लाभ होता है। परमायु ८५ वर्ष होती है।

(२५८४)- इस जन्मकुण्डली में जातक मधुरभाषी, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, सुन्दर तथा उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त होता है। कला तथा साहित्य में भी इसे विशेष रुचि होती है। २१ वर्ष की आयु से ही यह पर्यटन करने लगता है। इसे राज्य से तथा परदेश से धन का लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु में यह बहुत विख्यात हो जाता है। इसके पास न तो धन-सम्पत्ति की कमी होती है और न यश तथा धन का ही अभाव होता है। भूमि, भवन आदि अचल-स-
-म्पत्ति का स्वामी भी होता है। यह अपने जीवन में एक से अधिक कार्य करता है तथा इसकी आय के स्रोत भी अनेक होते हैं। यह किसी के अधीन नहीं रहता। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। इसके जीवन में दो-तीन वर्षों के अन्तर से परिवर्तन आते रहते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५८५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत ललाट, लम्बे कद का, गौर वर्ण, स्वस्थ, सुन्दर तथा विद्वान होता है। यह विद्वानों की कोटि में अपना सम्मानित स्थान बनाता है तथा साहित्यकार के रूप में भी जाना जाता है। यह अनेक काम करता है तथा सभी से आर्थिक लाभ पाता है। इसे राजकीय-सेवा द्वारा भी आजीविका प्राप्त होती है। २५ से ३५ वर्ष की आयु में इसे पर्याप्त ख्याति एवं मान्यता प्राप्त हो जाती है। यह राज्य के किसी विभाग का उच्च पदाधिकारी भी हो सकता है। ४० वर्ष की आयु में इसका कार्य क्षेत्र बदल जाता है। अपने विशिष्ट ज्ञान के कारण यह और भी उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनचाही, सुख देने वाली तथा सभी क्षेत्रों में सहयोग करने वाली मिलती है। दो पुत्र तथा एक पुत्री होती है। परमायु ८५ वर्ष होती है।

(२५८६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद का, सुन्दर, स्वस्थ तथा उच्च विचार वाला होता है। इसे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त होती है। कला तथा संगीत से प्रेम रखने के अतिरिक्त यह काव्य-सृजन भी करता है। यह गायक तथा नाटककार या अभिनेता भी हो सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में इसकी इच्छानुसार ही होता है। पत्नी सुन्दर तथा सहयोगिनी होती है। इसके दो पुत्र तथा एक कन्या होती है। इसके जीवन में और भी कई खुशियाँ आती हैं। यह उन्नति, धन तथा सम्मान भी प्राप्त करता है। इसके जीवन में नित नये परिवर्तन आते रहते हैं तथा इसका कार्य क्षेत्र विस्तृत होता चला जाता है। इसे भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख उपलब्ध होते हैं। ४०, ४३, ४८, ५१ तथा ५६ वें वर्ष में अनेक सम्मान प्राप्त होते हैं। इसकी ख्याति समान पाती है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५८७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, महत्वाकांक्षी, उच्च विचारों का, धनी, दीर्घजीवी तथा बाल्यावस्था में भी सुख पाने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा ज्ञानी, विद्वान् एवं बुद्धिमान होता है। यह स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाला होता है तथा सब से अलग मार्ग पर चलता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अपना विशिष्ट व्यक्तित्व रखने वाली तथा उच्चकोटि की विद्वान होती है। इसका पहला पुत्र ३० वर्ष की आयु में होता है। ३२ वर्ष की आयु में कन्या तथा ३६ वर्ष की आयु में दूसरा पुत्र होता है। सभी कोई सन्तान होती है. इसके जीवन में परिवर्तन आता है। यह भूमि, भवन आदि अचल सम्पत्ति क्रय करता है तथा पैतृक-सम्पत्ति को बढ़ाता है। ५५-५६ वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग होता है। फिर कई वर्षों तक परेशानियाँ रहती हैं। कुछ समय तक राज्य सेवी संबंधित रहता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५८८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गंभीर स्वभाव का, स्वस्थ, सुन्दर, कला-प्रेमी तथा लोक में सम्मान प्राप्त करने वाला तथा अपने कुटुम्ब की चिन्ता नहीं करते रहने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। अनेक कलाओं तथा शिल्प में इसकी विशेष रुचि होती है। यह यन्त्र आदि के कौशल द्वारा यथेष्ट धन अर्जित करता है। २५ से ४५ वर्ष की आयु में यह बहुत उन्नति करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ जिद्दी स्वभाव की, परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। इसे देश-विदेश का भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। यह राजकीय-सेवा में उच्च पदों पर रहता हुआ उत्तरदायित्वों को सँभालता है। ४३ वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग सम्भव है। पुत्र सुयोग्य तथा होनहार होते हैं। यह ८५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५८९) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बलिष्ठ, दृढ़ चित्त का, अनेक कलाओं का जानकार, बुद्धिमान तथा अपने पौरुष द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। इसे राज्य तथा पिता की ओर से आश्रय प्राप्त होता है। अपनी योग्यता के कारण यह उच्चपद प्राप्त करता है। इसे श्रेष्ठ बन्धु-बान्धवों का सहयोग मिलता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती, संगीत-कला में निपुण तथा सुख देने वाली मिलती है। यह २६ वर्ष की आयु में आजीविकोपार्जन आरंभ कर देता है। शत्रुओं से विवाद करने में इसे आनन्द आता है। मुकद्दमे तथा झगड़ों में यह सदैव विजयी रहता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। विद्या, ज्ञान, साहित्य आदि से इसे सदैव लाभ होता है। किन्तु यह सदैव अशान्त ही बना रहता है, क्योंकि घर में इसे सुख नहीं मिलता। ~~यह धन कमाता है~~ परन्तु उसे जी भर के खर्च नहीं करने देता। इसके दो पुत्र होते हैं। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२५९०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, सुन्दर, चालाक, उच्च विचारों वाला तथा धर्मिष्ठ होता है। यह बाल्यावस्था में दुखी रहते हुए भी माता की ओर से कष्ट पाता है तथा पिता के संरक्षण में रहते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। २५ वर्ष की आयु से उन्नति आरंभ होती है। ३० तथा ३९ वें वर्ष में पदोन्नति प्राप्त करता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आज्ञाकारिणी, कार्य-गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने वाली तथा सुन्दरी होती है। जातक उससे प्रेम रखते हुए भी अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। घर से बाहर इसे बहुत सम्मान प्राप्त होता है तथा धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। ६५ वर्ष की आयु में अप्रत्याशित रूप से लाभ होता है। इसके दो सुयोग्य पुत्र होते हैं। परमायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(२५६१)- इस जन्मकुंडली का स्वामी मिथुनराशि, दृढ़ शरीर का तथा बुद्धिमान होता है। यह बाल्यावस्था से ही कला तथा साहित्य की रचना करने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु तक शिक्षा पूर्ण करने के बाद राजकीय-सेवा में संलग्न होता है। यह उत्तरदायित्व की भावना से काम करता हुआ निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। पैतृक-सम्पत्ति तो इसे मिलती ही है, परन्तु ४०-४५ वर्ष की आयु में यह स्वयं भी पर्याप्त धनोपार्जन कर लेता है। जीवनभर इसे आर्थिक-लाभ होता रहता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। संतानें सुयोग्य निकलती हैं तथा वृद्धावस्था में सुख देती हैं। यह शत्रुओं पर सदैव विजय प्राप्त करता है। जीवन सुख तथा सम्पन्नता पूर्ण व्यतीत होता है। लोक-समाज में प्रतिष्ठा भी बनी रहती है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२५६२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, चालाक, अपने पुरुषार्थ पर पूर्ण विश्वास रखने वाला, अपने पौरुष का अभिमानी तथा मित्रों एवं बन्धु-बान्धवों से भी विरोध रखने वाला होता है। इसकी शिक्षा में व्यवधान पड़ते रहते हैं। यह आजीविका ही परदेश से सम्बन्धित बना रहता है। इसकी उन्नति भी परदेश में ही होती है। २५-२६ वर्ष की आयु से ही यह धन से बचत रखना आरम्भ कर देता है। दूसरे स्थान पर यह अपने भवन आदि का निर्माण भी करता है। ३० से ५० वर्ष की आयु तक इसे अत्यधिक सुख प्राप्त होते हैं तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होती चली जाती है। यह पत्नी से संतुष्ट नहीं रह पाता। वह असंयमित विचारों की होती है तथा किसी समय पति से अन्यगामी हो सकती है। इसके तीन पुत्र होते हैं। पहला पुत्र होनहार होता है। यह जातक धन के प्रति निरन्तर उत्सुक बना रहता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२५६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी चंचल, उग्र, क्रुद्ध, स्थूल शरीर का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसे साहित्य तथा कला का विशिष्ट ज्ञान होता है। इसे बाल्यावस्था में माता का सुख नहीं मिलता। यह विपत्तियों का सामना करता हुआ आगे बढ़ता है। २६ वर्ष की आयु में नौकरी करके धन कमाना आरम्भ करता है। अपने परिश्रम के बल पर यह सभी इच्छित वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। यह अपने कुटुम्ब-परिवार तथा जन्मस्थान से दूर रह कर धन तथा यश का उपार्जन करता है। इसका विवाह २८-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से संतोष प्राप्त नहीं होता। वह जातक के प्रति सहानुभूति नहीं रखती, अतः जातक उसके और से खिन्न बना रहता है तथा मतभेद रहते हैं। ४५ वर्ष की आयु तक स्त्री जातक से अलग ही रह जाती है। ४५, ४८ तथा ५६ वें वर्ष में बहुत सुख तथा धन उपलब्ध होता है। संतानें कम होती हैं। कई वर्ष अकेला भी रह सकता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२५६४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, चंचल, उग्र, लेखक तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा कला-मर्मज्ञा होती है। यह जातक विदेशों से संबंध रखता है। इसके कार्यों का फैलाव दूर-दूर तक होता है। इसे दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ती हैं। इसकी पत्नी ही परिवार की संचालिका होती है। ३७ वर्ष की आयु में इसे आकस्मिक सम्पत्ति का लाभ होता है। इसे परिवार के पोषण तथा अचल सम्पत्ति की खरीद पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इसे कला तथा शिल्पों के माध्यम से एवं भोग-विलास की वस्तुओं के व्यवसाय से बहुत लाभ होता है। इसके दो पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ होती हैं। ४२, ५०, ५३, ५८ तथा ६७ वें वर्ष में विशेष उपलब्धियाँ होती हैं तथा आकस्मिक लाभ भी होते हैं। संतानें योग्य होती हैं। परमायु ६८ वर्ष से अधिक होती है।

(२५९५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी पुरुषार्थी, स्वाभिमानी, बुद्धिमान तथा विद्वान होता है। यह सब युक्तियों द्वारा अपना काम निकालने में पटु होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अध्यवसायता के कारण किसी उच्च कार्य में विजय होकर, व्यवसायिक करता है। यह राजकीय सेवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान में भी नौकरी कर सकता है। यह अभियन्ता/आर्किटेक्ट अथवा अन्य तकनीकी कार्यों में विशेष योग्यता प्राप्त करता है। अपने जीवन के ४३वें वर्ष में उच्च पद प्राप्त करने में सफल होता है। इसे विदेश में विशेष धन तथा सम्मान प्राप्त होता है। यह स्वयं स्थायी रूप से विदेश में स्थायी रूप से रहने लगता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सदैव प्रसन्नता प्रदान करने वाली तथा भाग्यशालिनी होती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। इसे ३६ से ३८ तथा ४० से ५३वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२५९६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, लम्बा, पुरुषत्व अपने पुरुषार्थ के बल पर ही भविष्य का निर्माण करने वाला होता है। यह भाइयों से रहित एवं माता-पिता से अलग रहने वाला तथा उनका द्वेषी होता है। यह राजकीय सेवा अथवा व्यवसाय द्वारा अपनी उन्नति करता है। इसे देश-विदेश की यात्रायें भी करनी पड़ती हैं। यह विपुल परिश्रम से चल तथा अचल सम्पत्ति का उपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी बहुत ही सुयोग्य तथा मनोनुकूल मिलती है। वह पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक कार्यों में भी पति को पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहती है। इसके दो पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर कार्य-व्यवसाय को भलीभाँति सम्भालते हैं तथा वृद्धावस्था में पिता को सुखी रखते हैं। पूर्ण सुखी जीवन बिताते हुए यह जातक ७५ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२५६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बुद्धिमान, नीतिज्ञ, गंभीर, सुन्दर तथा प्रत्येक कार्य को खूब सोच-समझ कर करने वाला होता है। यह साहित्य का ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, काव्य-रसिक तथा ग्रंथ-लेखक भी होता है। अपने जीवन के २५ वें वर्ष तक ही यह बहुत सम्मान प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा प्रेम करने वाली होती है। पत्नी से प्रेम करते हुए भी जातक अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है परन्तु पत्नी सब कुछ जानते हुए भी जातक के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखती। इसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। 30 वर्ष की आयु तक यह भूमि, भवन, वाहनादि के सुख से सम्पन्न हो जाता है। इसकी उन्नति का मार्ग भाग्य से ही प्रशस्त होता है तथा जीवनान्त तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। देश-विदेश की यात्राएँ करके धनोपार्जन करता है। माता-पिता से मतभेद रखते हुए भी उनका सम्मान करता है। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२५६८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चपल, प्रियदर्शी, कुछ स्थूल शरीर का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने ज्ञान तथा पुरुषार्थ से यश तथा धन अर्जित करता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञा-पालिका मिलती है। वह जातक को अपने अनुगत बनाये रखती है। इसके एक पुत्र तथा अनेक पुत्रियाँ होती हैं। 30-३५ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक सम्मानजनक स्थिति में पहुँच जाता है। यह यात्राएँ अधिक करता है। देश-विदेश से इसके संबन्ध बने रहते हैं। यह बहुमूल्य वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ कमाता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में यह भूमि, भवन, वाहन आदि सभी सुख-साधन प्राप्त कर लेता है। अनेक बार राजकीय-सम्मान भी मिलता है। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२५९९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्थूल शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण सुख-स्नेह पाने वाला होता है। यह युवावस्था में अपने पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जित करता है तथा सुखी-जीवन बिताता है। यह उच्च, नीच - दोनों स्तर के लोगों से घनिष्ठ प्रेम-सम्बन्ध रखता है। एक से अधिक स्त्रियों के साथ इसके प्रेम-सम्बन्ध भी रहते हैं। यह अपने परिश्रम द्वारा ३०-३२ वर्ष की आयु तक बहुत धनवान हो जाता है। राज्याश्रय द्वारा यह अपने लिए उच्चपद तथा सम्मान भी पा लेता है। यह देश-परदेश की यात्राएँ करता है तथा नौकरी के संबंध में परदेश में निवास भी करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देने वाली तथा सम्मान को बढ़ाने वाली होती है। संताने भी सुयोग्य सिद्ध होती हैं। परमायु ७६ वर्ष के लगभग होती है।

(२६००) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, स्थिर चित्त वाला, नीतिज्ञ तथा विद्वान होता है। यह पतले शरीर का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इसे अपने पुरुषार्थ तथा ज्ञान का अहंकार भी होता है। यह सम्मान-प्राप्ति के लिए विशेष लालायित रहता है। यह स्वयं को निरभिमानी प्रदर्शित करने के लिए छोटे स्तर के लोगों के प्रति भी प्रेम प्रदर्शित करता रहता है। यह दान करने का ढोंग भी रचता है। इसे राज्य की सेवा करने का अवसर मिलता है। २५ वर्ष की आयु से जीवन पर्यन्त यह सरकारी-सेवा करता हुआ बहुत धन तथा यश प्राप्त करता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी घर तथा समाज में विशिष्ट स्थान पाने वाली होती है। वह सुन्दरी, सुयोग्य तथा गुणवती होती है तथा जातक के साथ प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। इसके दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। इसे वृद्धावस्था तक सभी सुख उपलब्ध रहते हैं। परमायु ७३ वर्ष से अधिक होती है।

(२६०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, लम्बे कद का, धीर-गंभीर स्वभाव का तथा स्त्री, पुत्र एवं कुटुम्बियों के कारण व्यथित रहने वाला होता है। इसे पर्यटन में बहुत रुचि होती है। यह २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। अपनी बुद्धिमत्ता से यह सर्वत्र सम्मान पाता है। २४-२६ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। स्त्री तथा सन्तानों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भी यह उनसे अपेक्षित सन्तोष प्राप्त नहीं कर पाता। ६० वर्ष की आयु में यह धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेने लगता है तथा दार्शनिक विचारों का हो जाता है। इस आयु के बाद वात-पित्त की बीमारियों से आक्रान्त होने की सम्भावना भी रहती है। सामान्यतः सुखी तथा सम्पन्न जीवन बिताते हुए यह ७४ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६०२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, उन्नत कद का, प्रभावशाली, बुद्धिमान, शास्त्र, साहित्य, संगीत तथा अन्य कलाओं का ज्ञाता होता है। इसे अनेकों कलाकार घेरे रहते हैं और यह उन्हें संरक्षण प्रदान करता है। २१ वर्ष की आयु तक ही यह समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लेता है। यह स्वतन्त्र चिन्तन करता है तथा किसी राजकीय अथवा अन्य उच्च प्रतिष्ठान में गुरु पद पर प्रतिष्ठित होकर सन्तोष एवं सुख का अनुभव करता है। इसे धन तथा सम्मान का कभी अभाव नहीं रहता। ३० से ६५ वर्ष की आयु तक यह बहुत सक्रिय बना रहता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसके अनुरूप होती है तथा अपने उदार स्वभाव के कारण सर्वत्र आदर एवं सम्मान प्राप्त करती है। इसके पुत्र भी सम्मानित, सुयोग्य तथा सम्पन्न होते हैं। यह जातक वृद्धावस्था में धर्म-कर्म की ओर विशेष रूप से उन्मुख हो जाता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२६०३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी विद्वान, सुन्दर, दृढ़ शरीर तथा इच्छाशक्ति वाला एवं बाल्यावस्था में माता-पिता का विशेष प्यार-दुलार पाने वाला होता है। पैतृक सम्पत्ति से युक्त यह जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका मन धार्मिक भावनाओं से युक्त बना रहता है। यह विचारशील व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह अर्थोपार्जन करने लगता है। इसे देश-परदेश में रहते हुए अपना कार्य करना पड़ता है। इसका मन अनेक प्रकार के द्वन्द्वों का शिकार होता है। कभी-कभी अचानक हानि के कारण भी बनते हैं अथवा चोरों द्वारा धन नष्ट किया जाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय भी होता है। जीवन के ३५, ३८, ४८ तथा ५१ वें वर्ष में हानि तथा कष्ट उठाने पड़ते हैं। शरीर को चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। इसके दो सन्तानें होती हैं। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२६०४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चंचल, दृढ़ चित्त वाला, अपने भाई-बन्धुओं का सेवक तथा उन्हीं के लिए धन खर्च करने वाला होता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही अपने पुरुषार्थ से धन कमाने लगता है। यह नौकरी में शीघ्रता से उन्नति करता है तथा कुछ ही वर्षों में उच्च पद पर पहुँचता है। ३५ वर्ष की आयु में यह काफी धन कमा लेता है। अपने लिए भूमि, भवन तथा वाहन भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है। यह जातक से मतभेद रखते हुए भी साथ-साथ बनी रहती है। इस जातक को ४५ तथा ४८ वर्ष की आयु में विशेष सुख प्राप्त होता है। कई बार हानि उठाने के अवसर भी आते हैं, जिसमें इसका काफी धन नष्ट हो जाता है। जीवन के २८, ३३, ३८, ४२, ४७, ५२, ५६ तथा ६२ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ६५ अथवा ६८ वर्ष होती है।

(२६०५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखों वाला, गुणी, स्वास्थ तथा अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। यह मधुरभाषी, सत्यवक्ता, न्यायप्रिय तथा सचाई के लिए शत्रुता लेने में भी न चूकने वाला होता है। यह २३-२४ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। अपने पुरुषार्थ एवं लगन से यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। १५ से १८ तथा ३० से ३६ वर्ष की आयु के बीच इसे कभी चोट लगती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी से कुछ मतभेद रहता है, तथापि निर्वाह होता रहता है। इसके दो पुत्र होते हैं तथा कई बार गर्भपात भी हो जाते हैं। यह ३८ वर्ष की आयु में अपना मकान बना लेता है। ४८ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन इकट्ठा कर लेता है। इसको यश तथा बाहर सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। जीवन के २४, २८, ३२, ३८, ४२, ४६, ५२ तथा ६३ वें वर्ष विशेष लाभयुक्त रहते हैं। परमायु ६८ से ७३ वर्ष के बीच होती है।

(२६०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणी, उदार चित्त का, छल-कपट से दूर एवं आकर्षक व्यक्ति-त्व वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही अध्ययनशील होता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। २५ वर्ष की आयु से यह आजीविकोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसी आयु में यह कार्य-व्यवसाय अथवा नौकरी के सिलसिले में, परदेश में रहना आरम्भ कर देता है। इसे धन से बहुत लगाव होता है। कृपण भी बहुत होता है। इसका विवाह बड़ी कठिनाई से होता है। यदि हो भी जाय तो जातक को स्त्री का सुख कम ही रहता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत सम्पत्तिशाली बन जाता है। यदि राजकीय-सेवा में रहे तो ५०-५२ वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसे सन्तान का सुख भी नहीं रहता। यदि हो तो बड़ी आयु में एक पुत्र होता है। यह कुटुम्ब-परिवार से दूर रहता है तथा देश-परदेश की यात्रायें भी खूब करता है। परमायु ६५ वर्ष होती।

(२६०७) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक बाल्यावस्था में दुःखी तथा माता-पिता से अलग रहता है। यह हर-हर का शिक्षा प्राप्त करता है। यह सुन्दर रूप वाला तथा विभिन्न कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। धनोपार्जन तथा बन्धु-बान्धवों से कभी सुख नहीं पाता। ये लोग इसे कष्टदायक ही सिद्ध होते हैं। यह २३ वर्ष की आयु से जीविकोपार्जन आरम्भ करता है। घर से बाहर रहकर यह पर्याप्त यश तथा धन कमाता है। इसके मान-सम्मान में भी निरन्तर वृद्धि होती रहती है। इसे ३० वर्ष की आयु में बहुत सुख मिलता है। इसका विवाह विलम्ब से होता है। पत्नी का सुख भी मनोनुकूल नहीं मिलता। पति-पत्नी के विचारों में भिन्नता रहती है, तथापि किसी प्रकार निर्वाह करते रहते हैं। दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। जीवन के ४०, ४३ तथा ४८वें वर्ष में बड़े परिवर्तन आते हैं। सन्तानों से न सुख मिलता है, न दुःख। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२६०८) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वस्थ, पतले शरीर तथा लम्बे कद वाला होता है। यह कला-प्रेमी तथा साहित्य-सर्जक होता है। इसकी अध्ययन की आकांक्षा निरन्तर बनी रहती है। परन्तु यह उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। यह व्यवसाय द्वारा ही धनोपार्जन करता है। इसे धन-लाभ के लिए कोई भी मार्ग अपनाने में हिचक नहीं होती। ३० वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। इसे स्त्रियों से लगाव होता है। विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु पत्नी से सुख नहीं मिलता, क्योंकि वह अपनी मर्जी के अनुसार चलने वाली तथा पति की परवाह न करने वाली होती है। जातक के कई मित्राएँ होती हैं, उनसे प्रेम भी होता है, परन्तु पत्नी उन्हें जातक से विमुख कर देती है। पूरा जीवन संघर्षमय बना रहता है। ५४ वर्ष की आयु में बहुत हानि होती है। ६५ वर्ष के बाद थोड़ा सुख मिलता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२६०९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य-मर्मज्ञ तथा साहित्य-लेखक होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। बाल्यावस्था में ही दुःखी तथा पैतृक-धन का उपभोग करने वाला होता है। २४-२५ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। ३० वर्ष की आयु में पदोन्नति प्राप्त करता है। २९ वर्ष की आयु में विवाह होता है। स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण दुःखी रहता है। पत्नी की चिकित्सा पर धनराशि बहुत खर्च करना पड़ता है। सन्तान को जन्म देते समय प्राणों पर संकट भी बन आता है। यह जातक पत्नी के प्रति बहुत लगाव रखता है। इसे निरन्तर धन का लाभ भी होता रहता है, परन्तु उसका संग्रह कर पाना सम्भव नहीं होता। उदार हृदय होने के कारण यह अपने मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों पर भी धन खर्च करता रहता है। ६५ वें वर्ष में रोगी होता है। परमायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२६१०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, हृदय का कोमल, मधुरभाषी तथा बन्धु-बान्धव एवं मित्रों से विशेष प्रेम करने वाला होता है। यह अपने परिवार का पोषक होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी रुग्णा बनी रहती है तथा उस पर खर्च भी बहुत होता है, क्योंकि जातक उससे बहुत अनुराग रखता है और उसके कारण ही दुःखी भी रहता है। यह जातक राजाश्रित कार्य द्वारा धन कमाता है। ३८ वर्ष की आयु में इसे उच्च पद प्राप्त होता है। ४० वर्ष की आयु में राज्य द्वारा कष्ट भी मिलता है। ४३ वर्ष की आयु में संकट-मुक्त हो जाता है तथा ४५ से ६५ वर्ष की आयु तक पर्याप्त सुख एवं धन प्राप्त करता है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा सुयोग्य होते हैं, परन्तु वे जातक से प्रायः अलग ही रहते हैं। बहुत सफलतापूर्ण जीवन बिताते हुए यह ६० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० २२७८

कु० र०

(२६११)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, चंचल बुद्धि का तथा किसी को भी अपने जैसा बुद्धिमान न समझने वाला होता है। यह जातक बचपन से ही सौभाग्यशाली होता है। इसके माता-पिता सुसम्पन्न, उच्चाधिकारी तथा बुद्धिमान होते हैं। इसके बन्धु-बान्धव भी उच्च प्रकृति के होते हैं। यह जातक शिक्षा प्राप्त कर विद्वान् बनता है। यह अत्यन्त प्रभावी होता है। शिक्षा समाप्त कर, यह स्वयं भी राजकीय-सेवा में नियुक्त हो, उच्च पद प्राप्त करता है। प्रशासनिक पद पर रहकर यह अनेक लोगों से अनुशासन का पालन कराने में सफल होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुयोग्य तथा पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने में कुशल होती है। इसकी संतानें भी सुयोग्य, सुशिक्षित तथा बड़ी होकर उच्च पद पाने वाली होती हैं। इसको स्त्री, भवन, वाहनादि के सभी सुख प्राप्त होते हैं। परमायु ८० वर्ष होती है।

(२६१२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्या तथा बुद्धि से सबको प्रभावित करने वाला, ज्ञानी तथा विनम्र होता है। यह अपने अहं में डूबा रहने वाला भी होता है। इसकी उदारता भी देख सीमित होती है। तथापि यह सामान्य-व्यवहार में कुशल होता है। अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने हेतु यह अपने धन का व्यय भी खूब करता है। यह राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। इसका रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है। कला तथा शान-शौकत वाले कार्यों से इसे लगाव भी होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमान, विदुषी तथा गंभीर प्रकृति की होती है। वह घर-परिवार का सुन्दर रूप से संचालन करती है। संतानें भी सुयोग्य तथा सुखदायक होती हैं। दो पुत्र ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित होते हैं। राज्य से धन-सम्मान प्राप्त करता हुआ यह जातक ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(2623)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, प्रियदर्शी, प्रभावशाली, धनवान बुद्धिमान तथा उच्च शिक्षा प्राप्त चतुर व्यक्ति होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग करता है तथा नगर एवं समाज में प्रतिष्ठित होता है। यह अपव्ययी न होते हुए भी भोग-विलास में बहुत खर्च करता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है तथा देशाटन करने में भी आनन्दित होता है। आत्मिक-आनन्द तथा ज्ञान-लाभ हेतु यह पर्यटन करता है। यह उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर यथेष्ट धन तथा यश कमाता है। भूमि, भवन, वाहन आदि क्रय करके सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है। यह अपने जन्म स्थान से दूर रहता है। इसका विवाह 24-26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील का मानिनी होती है। अपनी विद्वता के कारण वह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है। तीन सुयोग्य पुत्र होते हैं। पत्नी से पूर्ण प्रेम करते हुए भी जातक अन्य अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। परमायु 80 वर्ष होती है।

(2624)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, दीन-दुःखियों के प्रति हमदर्दी रखने वाला तथा परोपकारी होता है। 24-25 वर्ष की आयु से यह धनोपार्जन करने लगता है। परदेश में रहकर अत्यधिक धन भी पाता है। इसके सामने आकस्मिक कठिनाइयों तथा अकारण शत्रुता के अवसर उपस्थित होते रहते हैं; परन्तु यह उन सब पर सरलता पूर्वक विजय कर लेता है। शत्रु पराजित हो जाते हैं और इसकी क्षमताओं की प्रशंसा फैलती है। 28-29 वर्ष की आयु तक ही यह बहुत धन कमा लेता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सहयोग करने वाली मिलती है। वह शान्त स्वभाव की तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। यह जातक अपनी पत्नी सहित अनेक तीर्थों की यात्राएँ करता है। पुत्र की प्राप्ति कठिनाई से होती है। कन्याएँ अनेक होती हैं। परमायु 75 वर्ष होती है।

(२६१५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, प्रशस्त वक्षःस्थल, लम्बे कद का तथा सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका पिता व्यवसायी तथा राज्य से संबंधित आजीविकोपार्जन करने वाला तथा परदेसवासी होता है। यह जातक पिता से पृथक रहते हुए विद्याध्ययन करता है तथा युवावस्था के आरंभ से ही स्त्रियों की ओर आकर्षित होने लगता है। बड़ा होकर यह स्वयं भी व्यवसाय आदि के द्वारा पर्याप्त धन कमाता है। विवाह भी २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी होती है। वह अपना व्यक्तित्व स्वयं बनाती है। किसी समय जातक से अलग भी रह सकती है। संतानें कम, परन्तु सुयोग्य होती हैं। यह जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होते हुए भी विलासी होता है, तथा अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। इसके दो पुत्र होते हैं। शत्रुओं को पराजित करता है। जल से भय रहता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२६१६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, दृढ़ निश्चयी तथा लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। बाल्यावस्था में ही माता से अलग रहता है तथा बड़े होकर भी परदेस में रह कर आजीविका अर्जित करता है। यह राजकीय-सेवा से भी संलग्न हो सकता है। यह अपनी नौकरी कई प्रतिष्ठानों में बदलता है। इसकी प्रवृत्ति धार्मिक होती है। इसे कला तथा साहित्य दोनों से प्रेम होता है। यह अपने निवास-स्थान तथा रहन-सहन पर काफी खर्च करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है, तथापि वह जातक के व्यक्तित्व से पूरी तरह नहीं जुड़ पाती। उसका व्यक्तित्व ही अलग होता है। वह उच्चस्तरीय रहन-सहन के पीछे अंधी होती है। संतान के लिए दुःखी रहता है। ४५ से ६० वर्ष की आयु में जातक बहुत धन कमाता है। परमायु ७० वर्ष होती है।

भृ० सं० १३०८

कु० १०

(२६२७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, बुद्धिमान, लम्बे कद का, दूसरों को प्रभा-
-वित करने में दक्ष, लेखक तथा साहित्य-प्रेमी होता है। यह दूसरों की भलाई की इच्छा रखने
वाला, उदार तथा 30 वर्ष की आयु में अत्यधिक सम्मान पाने वाला होता है। यह राज्य-अभि-
लेखा में रहकर देख-भाल में गणना करता है। अधिकारी के रूप में सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त
करता है तथा सब लोग इसके निर्देशानुसार ही चलते हैं। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में
होता है। पत्नी सुन्दर, बुद्धिमान तथा नीति से कार्य करने वाली होती है। वह अपना स्वतन्त्र
अस्तित्व रखते हुए भी जातक को प्रसन्न बनाये रखती है। 40 वर्ष की आयु में ही जातक की
प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से धार्मिक हो जाती हैं, तथापि भोग-विलास से मुक्त नहीं हो पाता।
पुत्र-सुख प्रायः नहीं होता। धन खूब कमाता है। परमायु 78 वर्ष होती है।

(२६२८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वस्थ, उदारचित्त का, विनम्र, नाटक तथा काव्य का
रचयिता, बाल्यावस्था से ही अपने माता-पिता के साथ पैतृक-आवास से दूर रहने वाला
तथा उच्च शिक्षा प्राप्त, नीतिज्ञ एवं परोपकारी प्रकृति का होता है। यह छोटे-बड़े में कोई भेद नहीं करता
तथा सब लोगों से प्रेम करता है। इसका विवाह 27-28 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनो-
-नुकूल मिलती है। सन्तान-सुख भी रहता है। इसे देशान्तर में बहुत मान-सम्मान तथा भोग-
विलास की उपलब्धि होती है। यह बहुत विलासी भी होता है। पत्नी के अतिरिक्त अनेक स्त्रियों
से इसके सम्बन्ध होते हैं। 40 वर्ष की आयु तक यह सुख के सभी साधन उपलब्ध कर लेता है।
भोग-विलास में इसका धन भी बहुत खर्च होता है। 40 वर्ष की आयु के बाद इसे कभी किसी वस्तु
का अभाव नहीं रहता। परमायु 75 वर्ष से अधिक होती है।

(२६१९) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, तेजस्वी, उन्नत ललाट, लम्बे क़द तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह बाल्यावस्था में भी सुखी रहता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला होती है, परन्तु सन्तान विलम्ब से होती है। इसके दो पुत्र होते हैं। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। २३ वर्ष की आयु से शिक्षा समाप्त करके जीविकोपार्जन में लग जाता है। नौकरी करना पसन्द नहीं करता। ३० से ३५ वर्ष की आयु में यह पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। ४० वर्ष की आयु में भूमि, भवन, वाहनादि का स्वामी बन जाता है। ४१ वर्ष की आयु में मिथ्यापवाद का शिकार बनता है, परन्तु कीर्ति दबती नहीं है। इसे चोरों से भय होता है तथा उनका सामना भी करता है। वृद्धावस्था में विशेष सुखी रहता है। परमायु ८१-८२ वर्ष होती है।

(२६२०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, पराक्रमी, आकर्षक तथा अपने परिवार एवं बाहर सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। स्वभाव से उग्र तथा धार्मिक होते हुए भी यह कुछ ऐसे कार्य करता है कि लोग इसे ग़लत समझ बैठते हैं। सत्कर्मी होते हुए भी लांछनों का शिकार बनता है। पर-स्त्री के कारण यह अन्य लोगों से शत्रुता प्राप्त करता है। इसे जुए का शौक भी होता है तथा धन-लाभ के लिए यह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा परदेश में रहकर राजकीय-सेवा करते हुए धनोपार्जन करता है। धन की इसके पास कभी कोई कमी नहीं रहती। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। वह सद्गुणी तथा सर्वत्र आदर पाने वाली होती है। इसके पुत्र सुयोग्य तथा संपत्ति को बढ़ाने वाले होते हैं, परन्तु जातक को उनसे सुख नहीं मिलता। परमायु ६० वर्ष होती है।

(२६२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, कलाकार तथा पर्यटनप्रेमी होता है। इसे अपने अनुरूप उचित प्रतिष्ठा एवं सम्मान की उपलब्धि नहीं होती, क्योंकि पर-स्त्रियों के कारण इसे अपवाद सहन करना पड़ता है। यह अकारण ही विद्वेष का शिकार बनता है। यह स्वभाव से भी, गंभीर एवं उदार होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से कोई सहयोग नहीं मिलता, फिर भी यह उनसे प्रेम रखता है तथा उनकी सहायता भी करता रहता है। इसे धन की चिन्ता नहीं रहती। यह उदार-दानी होता है। इसकी आजीविका राज्य की सेवा से चलती है। यह अपने विरोधियों को आसानी से पराजित करता रहता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुयोग्य होती है, तथापि मत-भिन्नता भी रहती है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं, परन्तु बड़े पुत्र से कष्ट होता है। परमायु 71 वर्ष होती है।

(२६२२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सत्पुरुषों का संग करने वाला, अपनी उदारता एवं महान कार्यों द्वारा लोक में प्रतिष्ठित, बाल्यावस्था में सुख भोगने वाला तथा युवावस्था से धनोपार्जन का धनी तथा यशस्वी बनने वाला होता है। इसे अनेक मित्रों का सहयोग-सुख प्राप्त होता है। राज्य द्वारा सम्मान मिलता है। समाज में जहाँ एक ओर प्रतिष्ठा मिलती है, वहीं दूसरी ओर विरोध तथा विद्वेष भी प्राप्त होता है। परन्तु इसके शत्रु स्वयं शान्त हो जाते हैं। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में सुन्दरी, तेजस्विनी तथा उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने वाली कन्या के साथ होता है। वह जातक से मतभेद रखते हुए भी उसे सुख प्रदान करती है तथा स्वयं भी तथा काट्‌य सर्वत्र सम्मान पाती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। 64 वर्ष की आयु में जातक को सब प्रकार के सुख उपलब्ध हो जाते हैं। परमायु 75 वर्ष होती है।

(२६२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, दृढ़ निश्चयी तथा हठी स्वभाव का होता है। इसे अपनी बुद्धिमत्ता तथा साहस पर बहुत भरोसा होता है। इसे सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती रहती है। इसके विरोधी भी स्वयं ही शान्त हो जाते हैं। यह राजकीय - सेवा में उच्चाधिकार प्राप्त करता है। इसे राज्य द्वारा धन का लाभ भी बहुत होता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा कला प्रेमी होती है। वह जातक के सम्मान की वृद्धि तो करती ही है, स्वयं भी अपने सद्गुणों के प्रभाव से सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करती है। यह जातक अपनी पत्नी से बहुत प्रेम रखता है। एक पुत्र होता है, जो सुयोग्य होने के साथ ही माता-पिता को बहुत सुख भी देता है। यह जातक जीवनभर धन तथा सुख से सम्पन्न बना रहता है। इसे ६८ वर्ष से अधिक की परमायु प्राप्त होती है।

(२६२४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुद्धिमान, धनी, उदार, विवेकी, लम्बे कद का, आकर्षक, प्रभावशाली तथा राजसी प्रकृति का होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर राज्य में किसी उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर नियुक्त होता है। अपनी योग्यता से यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह लोक में सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, शास्त्रज्ञ तथा साहित्य-सर्जक भी होता है। २५ से ३० तथा ४२ से ६० वर्ष की आयु तक बहुत सुख प्राप्त करता है। इसकी पत्नी विदुषी तथा अनेक कलाओं की जानकार होती है। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी संगीत-नृत्य में कुशल, उदार तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाली होती है। जातक लोक-कल्याण संबंधी अनेक कार्यों में सम्पन्न बना रहता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। यह जातक सुखी तथा सम्पन्न जीवन बिताता हुआ ८०-८२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ९२७७ कु० २०

(२६२५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत ललाट वाला, गौरवर्ण, चंचल, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, महत्वाकांक्षी, उदार तथा विभिन्न कलाओं का ज्ञाता होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है। काव्य तथा संगीत का जानकार होता है। अनेक गुणों से युक्त होते हुए भी इसमें कुछ अवगुण होते हैं। यथा - यह जुआ खेलने का शौकीन होता है तथा अनेक स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसे अपने लोगों से ही धोखा मिलता है और उनके कारण कष्ट भी पाता है। यह लोक-कल्याणकारी संस्थाओं से सम्बन्धित रहता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली तथा सम्मान बढ़ाने वाली होती है। इसे राज्य से आजीविका प्राप्त होती है। यह परदेश में रहता है तथा देश-देशान्तर में भ्रमण करता है। उससे इसे धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। दो पुत्र होते हैं। वृद्धावस्था में सुख मिलता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२६२६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ी-बड़ी आँखों वाला, चंचल, सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी, सबको अपनी उदारता से सुख पहुँचाने वाला, परन्तु स्वयं अशान्त रहने वाला तथा स्त्री, पुत्र एवं कुटुम्बियों के कारण व्यथित रहने वाला होता है। यह २५-२६ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा प्राप्त कर आजीविकोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा दो-तीन वर्ष के भीतर ही बहुत धनी हो जाता है। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर सुख-साधन प्राप्त करता है तथा लोक में यशस्वी बनता है। यह अनेक अप्रत्याशित कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी परन्तु कटुभाषिणी एवं जातक से मतभेद रखने वाली होती है। फिर भी गृहस्थी की गाड़ी चलती रहती है। ३५ से ४५ वर्ष की आयु का समय बहुत उथल-पुथल का रहता है। इस अवधि में सफलता भी बढ़ती है। लगभग परदेश में ही जीवन व्यतीत करते हुए यह जातक ८० वर्ष की परमायु पाता है।

(२६२७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, लम्बे कद का, अत्यन्त उदार तथा बुद्धिमान होता है। यह सबका भला चाहने वाला तथा परोपकारी होता है। बाल्यावस्था से ही अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। २४-२५ वर्ष की आयु से यह परदेश में जाकर नौकरी करता है। यह अध्ययन तथा अध्यापन में विशेष रुचि रखने वाला, हिसाब-किताब में प्रवीण तथा कार्यालय के अभिलेख आदि लेखे के कार्य में कुशल होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय तथा जीविकोपार्जन होता है। पत्नी स्वस्थ, सुन्दरी परन्तु रूखा बोलने वाली होती है। उस की महत्वाकांक्षायें भिन्न होती हैं। वह जातक को पूर्ण सुख नहीं दे पाती। इसके दो पुत्र होते हैं। वे जातक की आज्ञा का पालन करने वाले तथा सुख देने वाले होते हैं। ५३ वर्ष की आयु में जातक विपुल सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२६२८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदर्शन, प्रभावशाली, स्वस्थ, अत्यन्त लोकप्रिय, पुरुषार्थी तथा सौभाग्यशाली होता है। यह प्रत्येक कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा तथा ज्ञान के बल पर यह उच्चकोटि के विद्वानों में गिना जाता है। २४ वर्ष की आयु में इसे राज्य सेवा का सौभाग्य मिलता है। २५ वर्ष की आयु में सुन्दर पत्नी प्राप्त करता है। अपने भाग्य के बल पर यह सब प्रकार के सुख-ऐश्वर्य, भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि का सुख प्राप्त करता है। इसके पास विपुल सम्पत्ति होती है। यश, मान, प्रतिष्ठा की भी कोई कमी नहीं रहती। भाई-बन्धुओं से इसे क्लेश मिलता है। इसे सबकी सहायता भी करनी पड़ती है, तथापि वे आंतरिक द्वेष रखते हैं। इस की भाग्यवृद्धि देखकर उन्हें ईर्ष्याजन्य कष्ट होता है। इसके कई पुत्र होते हैं। प्रथम पुत्र के कारण कष्ट होता है। ३८ से ५८ वर्ष की आयु तक बहुत सुख मिलता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२६२९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, बाल्यावस्था से ही सुखोपभोगी, माता-पिता का पूर्ण सुख पानेवाला तथा बचपन में रोग के कारण पीड़ा भोगने वाला भी होता है। माता-पिता इसकी बीमारी पर बहुत धन भी खर्च करते हैं। इसे आकस्मिक-दुर्घटना के कारण चोट आदि लगने का भय भी रहता है। अग्नि तथा शस्त्र से भी भय होना सम्भव है। इसकी शिक्षा में भी विघ्न पड़ता है। परन्तु यह अपने सद्व्यवहार तथा पौरुष के बल पर उच्च पद प्राप्त करता है तथा राज्य की सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती और न किसी अन्य वस्तु का ही अभाव रहता है। इसका विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला होती है और वह घर-परिवार की यथोचित सेवा करती है। पुत्र विलम्ब से होता है अथवा नहीं भी होता। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२६30)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा प्रभावशाली होते हुए भी सदैव चिन्तित बना रहता है। इसे बाल्यावस्था में कष्ट होता है तथा बाद में भी व्याधिग्रस्त रहता है। आकस्मिक रूप से चोट लगने की संभावना भी रहती है। यह पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर, स्वयं का व्यवसाय करता है तथा उसी से धन कमाता है। इसकी आमदनी के कई स्रोत होते हैं, अतः धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। यह 20 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। पैतृक-व्यवसाय के अतिरिक्त स्वयं भी नये कार्य आरम्भ करता है। ५५-५६ वर्ष की आयु में यह बहुत धनी हो जाता है। इस आयु तक इसे परिश्रम भी बहुत करना पड़ता है। पत्नी २४ वर्ष की आयु में मिलती है। वह मनोनुकूला तथा धार्मिक विचारों की होती है। सन्तान के लिए पति-पत्नी दुःखी रहते हैं। दान, धर्म तथा लोककल्याणकारी कार्यों में बहुत खर्च करते हैं। परमायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(२६३१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उच्चकुल में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखोपभोग तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। अपनी योग्यता के बल पर यह उच्चाधिकारी बनता तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है। कुटुम्बी, मित्र तथा अन्य सभी लोग इसके प्रति प्रेम रखते हैं। यह धर्म का पालक तथा लोक कल्याणकारी कार्यों में संलग्न बना रहने वाला होता है। यह परोपकार के कार्यों में उदारता पूर्वक धन खर्च करता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा समाज में सम्मान प्राप्त करने वाली होती है। यह दो पुत्रों तथा एक पुत्री को जन्म देती है। इनमें से, एक सन्तान से कष्ट होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ४१, ४८, ५२ तथा ५७ के वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। व्यवसाय तथा नौकरी दोनों से इसे आर्थिक लाभ होता है। सम्मानित जीवन जीते हुए यह ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६३२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनुशासन-प्रिय, बड़ों का सम्मान करने वाला तथा सामाजिक नियमों का पालन करने वाला होता है। यह अपने बुद्धि-बल से बहुत कुछ उपलब्ध करता है। राजकुल ऐश्वर्यशाली परिवार में जन्म लेकर यह आजीवन घर-बार से रहता है। यह सेना अथवा पुलिस अथवा गुप्तचर विभाग के किसी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर भी रह सकता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है तथा आयु में इसे राजकीय-सेवा में संलग्नता भी प्राप्त होती है। इसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा अपनी योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मान पाने वाली होती है। पत्नी से जातक पूर्ण सन्तुष्ट बना रहता है तथा उस पर गर्व भी करता है। दो पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। किसी समय आकस्मिक-चोट लगने की संभावना रहती है। परमायु ७९ वर्ष की होती है।

(२६३३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी धीर, गम्भीर, चतुर, प्रभावशाली, बाल्यावस्था में सुखभोगी तथा उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। बहुत योग्य तथा विद्वान होने के कारण यह २३-२४ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा से संलग्न हो धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ३० वर्ष की आयु तक यह अत्यन्त धनी तथा सम्मानित व्यक्ति बन जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा सब प्रकार से योग्य स्त्री के साथ होता है। इसके दो पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर मेधावी तथा सुयोग्य सिद्ध होते हैं तथा माता-पिता को सुख देते हैं। इसे जीवन में कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं होता। जीवन के २५, २८, ३२, ३७, ४१, ४८ तथा ५१ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। ५५-५६ वर्ष की आयु में अनेक प्रकार के सम्मान मिलते हैं। सुखी जीवन बिताता हुआ यह ७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६३४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी चतुर, साहसी तथा सुख-सम्पत्ति से युक्त होता है। यह २३ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा घर से बाहर परदेश या विदेश में रहकर मान-सम्मान प्राप्त करता है। इसके भाग्योदय में बाहरी मित्रों का विशेष योग रहता है। विशेषतः कोई स्त्री-मित्र इसकी बहुत सहायता करती है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में विदुषी स्त्री के साथ होता है। वह सुयोग्य तथा सुन्दरी होती है तथा बहुत समय पति से अलग, पितृगृह में रहते हुए भी बिताती है। ४० से ५३ वें वर्ष तक जातक को अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण कार्यों को करने का सुयश तथा सम्मान प्राप्त होता है। इसे धन-सम्पत्ति का कभी अभाव नहीं होता। इसका व्यय भी धार्मिक कार्यों में अधिक होता है। इसके दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। ५८ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२६३५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रियदर्शी, अपने परिश्रम को ही प्रमुख मानने वाला तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपने ज्ञान एवं अध्यवसाय का अभिमान भी रखता है। यह संगीत, नाटक आदि कलाओं का अनुरागी होता है। यह अपने घर से दूर रह कर व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। अपने परिश्रम द्वारा यह बहुत उन्नति करता है। यद्यपि इसके सामने पग-पग पर बाधायें आती रहती हैं, तथापि यह उन सब पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता चला जाता है। इसके अपने साथी तथा परिवारीजन भी आन्तरिक रूप से इसके प्रति विरोध रखते हैं, परन्तु उन सबको मुँह की खानी पड़ती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आकर्षक तथा क्रियाशील होती है, तथापि उससे वांछित सुख नहीं मिलता। एक पुत्री तथा एक पुत्र होता है। ३८, ४५, ५१ तथा ५७ वें वर्ष में बहुत लाभ होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२६३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वरूप, सुन्दर, प्रभावशाली, बन्धु-बान्धवों को अपने अनुकूल रखने वाला, उच्चशिक्षित तथा किसी सेवा-कार्य में संलग्न होने के कारण घर से दूर रहने वाला होता है। यह अपनी इच्छानुसार चलता है तथा किसी के परामर्श पर ध्यान नहीं देता। यह देश-देशान्तर में भ्रमण करने वाला, सर्वत्र सम्मान पाने वाला तथा दूसरों का कार्य करने में आनन्द का अनुभव करने वाला होता है। अपने व्यवसाय में उन्नति करता हुआ यह भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी बनता है। यह खर्चीला भी बहुत होता है। इसका विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशीला, खर्चीली तथा पति पर प्रभाव रखने वाली होती है। इसके एक पुत्री तथा दो पुत्र होते हैं। वे सब उच्च शिक्षित तथा सुयोग्य निकलते हैं तथा माता-पिता को सुख भी देते हैं। जीवन के २८, ३२, ३९, ४५ तथा ५४ वें वर्ष विशेष हितकर सिद्ध होते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२६३७) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, जालसाज़ होने से ही दुःख भोगी तथा चिन्ता-ग्रसित रहता है। यह आरम्भ से ही थोड़ी बहुत विद्या प्राप्त कर पाता है। एक-एक कर जो भी शिक्षा प्राप्त करता है, वह कार्य-व्यवसाय को उन्नत बनाने में सफल नहीं हो पाती। माता-पिता का पूर्ण सुख भी नहीं मिलता। इधर-उधर की सहायता तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर यह स्वयं ही उन्नति के लिए प्रयत्नशील होता है। २३ वर्ष की आयु में किसी छोटे स्थान में नौकरी करके आजीविका आरम्भ करता है। २८ वर्ष की आयु तक वहीं रहता है। इसी आयु में विवाह भी होता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय होता है तथा कोई छोटा सा स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ करके उन्नति करना आरम्भ कर देता है। ३५ वर्ष की आयु के बाद पुत्र मिलता है। सन्तानों से सुखी रहता है, परन्तु बन्धु-बान्धव कष्ट देते हैं। ५६ वर्ष की आयु में पूर्ण सुखी होता है। परमायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

(२६३८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी दृढ़ चित्त, बुद्धि, स्वयं पुरुषार्थ से ही तरक्की करने वाला तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर कार्य-व्यवसाय को सम्हालने वाला होता है। चित्त का उदार होते हुए भी स्वार्थ-पूर्ति के लिए यह दूसरों को कष्ट पहुँचाने में नहीं चूकता। इसे अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है तथा उसी के कारण इसे सुख-सम्मान की उपलब्धि भी होती है। उसी के आधार पर उच्चपद भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त बहुत लाभ होता है। अचल-सम्पत्ति भी क्रय करता है तथा आकस्मिक रूप से भी धन की प्राप्ति होती है। पत्नी दयालु, सबकी प्रिय तथा जातक को सुख देने वाली होती है। यद्यपि जातक अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। यह दो पुत्रों का पिता बनता है। उनसे सुख तथा सन्तोष भी मिलता है। इसे सामान्यतः कभी कोई विशेष कष्ट नहीं होता। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२६३९) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अनेक विघ्न-बाधाओं से युक्त संघर्षमय जीवन जीता है। यह विशाल हृदय का तथा उच्च भाग्यवान होते हुए भी अपने व्यावहारिक क्रिया-कलापों के कारण लोक में अपयश प्राप्त करता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन पाकर भी अधिक नहीं रख पाता। इसके व्यय अनाप-शनाप होते हैं, फिर मितव्ययिता के कारण उनमें रोक भी लगाती है, तथापि यह अपने को प्रत्येक स्थिति में सन्तुष्ट एवं सुखी अनुभव करता है। यह शारीरिक-श्रम द्वारा धन कमाता है। अपने व्यवसाय को स्वयं स्थापित करता है। आरम्भ में असफलता मिलती है, परन्तु बाद में स्थिर आय होने लगती है। विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी प्राप्त होने के बाद भाग्योदय में सहायता मिलती है। घर में सुख-शान्ति बनी रहती है। अचल-सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। ५६ वर्ष की आयु तक अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त होता है। परमायु ६७ वर्ष होती है।

(२६४०) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्थिर-चित्त वाला, बाल्यावस्था से ही सुख भोगने वाला, उदार-हृदय, माता-पिता से स्नेह पाने वाला, प्रभावशाली तथा कष्टों से दूर रहने वाला होता है। यह स्वतन्त्र व्यवसाय करता है तथा इसके यहाँ अनेक लोग नौकरी करते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु सदैव रुग्ण बनी रहती है। वह दीर्घायु भी नहीं होती। संतान की दृष्टि से भी जातक सुखी नहीं होता। यह अपने परिवार तथा बन्धु-बान्धवों के लिए ही कमाता है। ५५ वर्ष की आयु में इसके मन में तीव्र वैराग्य-भावना का उदय होता है। उस समय यह तीर्थयात्राएँ करता है तथा अनेक दान-पुण्य के कार्य भी करता है। परन्तु वैसा करते समय यह स्वयं भी नहीं जानता कि क्यों कर रहा है। जीवन में धन खूब कमाता है, परन्तु उसका अपने लिए कोई अधिक उपयोग नहीं कर पाता। परमायु ६८ वर्ष होती है।

भृ० सं० ४०२३

कु० १०

(२६४१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण बचपन से ही सुख भोगता है। इसकी शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, स्वस्थ, सुन्दर, गंभीर तथा शान्त स्वभाव का होता है। परन्तु माता-पिता के बीच पारस्परिक अविश्वास एवं संघर्ष का इसके मन पर बड़ा विपरीत प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण यह पिता का विरोधी बन जाता है तथा मातृ-सुख से भी वंचित रहता है। यह अपनी योग्यता तथा पराक्रम से राजकीय सेवा में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है तथा निरन्तर प्रगति करता हुआ ३० वर्ष की आयु में ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात् इसे सुख के सभी साधन उपलब्ध हो जाते हैं। विवाह २८ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी गुणवती होती है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर होते हैं, परन्तु इसे किसी से मोह नहीं होता। सामान्यतः सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताते हुए यह ७४ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६४२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख भोगने वाला तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा ३१ वर्ष की आयु तक उच्च पद पर जा पहुँचता है। इसका विवाह २३.२८ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु वह पति से मतभेद रखते हुए कष्ट पहुँचाती रहती है। वह अपने पितृ-पक्ष के अनुगत रहकर, पति को महत्व नहीं देती। जातक को अपनी ससुराल की ओर से भी कष्ट मिलता है। सन्तानें सुयोग्य होती हैं। पुत्र-पुत्रियों से सुख प्राप्त होता है। ५६ वर्ष की आयु में किसी अप्रिय घटना के कारण विशेष कष्ट प्राप्त होता है। ६० वर्ष की आयु में पुनः कारोबार आरम्भ करके लाभ उठाता है। परमायु ६२ अथवा ६८ वर्ष होती है।

(२६४३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, निरोग, इकहरे शरीर तथा मध्यम कद का एवं बाल्यकाल में माता-पिता का स्नेह तथा सुख पाने वाला होता है। इसका प्रभाव किशोरावस्था से ही प्रकट होने लगता है। यह उदार-चित्त, दयालु तथा परोपकारी भी होता है। २४ वर्ष की आयु से ही यह किसी सेवा-कार्य में प्रवृत्त होकर धनोपार्जन करने लगता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का अभिमान नहीं होता, परन्तु अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखता है। यह अपने अध्यवसाय द्वारा अत्यधिक सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। ४० वर्ष की आयु में इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। सेवा-कार्य में उन्नति करता हुआ यह ५४ वर्ष की आयु में उच्च पद प्राप्त कर लेता है। ५८ वर्ष की आयु में यह कोई अन्य कार्य करके धनोपार्जन करता रहता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी और मनोनुकूला मिलती है। दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२६४४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, निरोग, उदार-हृदय, परन्तु चंचल-बुद्धि वाला होता है। सब कार्यों को बड़ी शीघ्रता से करता है। जल्दबाजी इसके स्वभाव में होती है। यह काव्य-साहित्य का ज्ञाता तथा रसिक भी होता है। २२ वर्ष की आयु में ही यह किसी अच्छे प्रतिष्ठान में नौकरी कर लेता है तथा पाँच वर्ष के भीतर ही उच्चपद पर पहुँचकर धन तथा यश की वृद्धि कर लेता है। अपने चारों ओर के लोगों में यह प्रभाव स्थापित कर लेता है। इसे एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में भी जाना जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, धीर-गंभीर तथा सुख देने वाली होती है। एक पुत्र तथा दो पुत्रियों की उपलब्धि होती है। यह जातक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रवृत्ति वाला होने के कारण राजकोप का भागी भी बनता है। ४५ वर्ष की आयु से ३-४ वर्ष तक बहुत कष्ट पाता है। फिर सुखी तथा नीरोग होकर ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६४५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष : स्वार्थी, प्रत्येक कार्य में आवश्यकता से अधिक जल्दबाजी करने वाला, तथा मित्रों आदि से अच्छे सम्बन्धों को भी शीघ्र बिगाड़ लेने वाला होता है। यह २३-२४ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसी आयु में इसका विवाह भी हो जाता है। यह जातक विपरीत-स्थिति के अधिक सोचता है तथा अपने संशयालु-स्वभाव के कारण अधिकांश लोगों को अपना विरोधी बना लेता है। इसकी पत्नी मिलनसार स्वभाव की होती है। वह अपने परामर्श द्वारा जातक को संतुलित बनाये रखने का प्रयत्न करती है। यह जातक अपनी योग्यता तथा विद्वता का भी पूरा लाभ नहीं उठा पाता। इसका विरोध तो कोई नहीं करता, परन्तु सहयोग के लिए भी कोई तत्पर नहीं होता है। ३२ से ४५ वर्ष की आयु-अवधि में इसे अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है। इसे संतान के रूप में केवल एक पुत्र होता है। यह जातक हठी स्वभाव का होता है। वृद्धावस्था में कष्ट भोगता है। परमायु ६१-६२ वर्ष होती है।

(२६४६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुरुष, स्वस्थ, उदार हृदय, अत्यन्त सहिष्णु तथा बाह्य कठोरता के आवरण में स्वभाव की वास्तविक कोमलता को छिपाये रखने वाला होता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर जीविकोपार्जन आरम्भ करता है तथा अपनी प्रतिभा के बल पर उन्नति करता चला जाता है। इसे इससे बड़े सामाजिक-स्तर के लोग भी सम्मान देते हैं। इसका भाग्योदय अपने अधिकारी के द्वारा होता है। वह इसे बहुत स्नेह करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती होती है तथा इसके सम्मान को बढ़ाती है। इसके पुत्र भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छे पद पर नियुक्त होते हैं। ३६ वर्ष की आयु में यह जातक अपने लिये मकान का निर्माण करता है। धन, वाहन, मान-प्रतिष्ठा आदि सब प्रकार के सुख इसे उपलब्ध रहते हैं। जीवन में कभी कोई विशेष कष्ट नहीं होता। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२६४७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उन्नतचित्त, ऊँचे कद वाला, नेतृत्व-गुण-सम्पन्न तथा अपने पौरुष पर विश्वास करने वाला होता है। यह २५ वर्ष की आयु में ही किसी ऐसे कार्य से सम्बद्ध हो जाता है, जिसमें परिश्रम की तुलना में आमदनी बहुत अधिक होती है। यह कृपण प्रकृति का होता है तथा धन का संचय करने में लगा रहता है। तथापि आकस्मिक खर्चों के कारण अधिक धन संचित नहीं कर पाता। इसे राज्य से भी आर्थिक-लाभ होता है तथा यह निरन्तर कार्य-रत रह कर उन्नति भी करता चला जाता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा बुद्धिमती होती है। वह सब को अपनत्व देती है, जिससे जातक को मानसिक रूप से कष्ट होता है। सन्तान न होने से पति-पत्नी दोनों दुःखी रहते हैं। ३५-३६ वर्ष की आयु में पुत्र होता है, परन्तु बीमार रहता है। ५५ वें वर्ष में आकस्मिक-लाभ होता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२६४८) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का तथा बाल्यावस्था में पूर्ण सुख पाने वाला होता है। यह बड़ा होकर अपने पैतृक-व्यवसाय में ही संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी विपरीत स्वभाव वाली होती है। वह घर के सभी लोगों से मतभेद रखती है तथा बहुत समय तक अपने पितृ-गृह में ही रहती है। इन परिस्थितियों में जातक को दाम्पत्य-सुख प्राप्त नहीं होता। विवाहित होते हुए भी यह एकाकी जैसा ही जीवन व्यतीत करता है। इसे संतान का भी अभाव होता है। इसे अपनी छोटी बहिन का विशेष स्नेह प्राप्त होता है। २२ वर्ष की आयु से ही यह विभिन्न प्रकार के झगड़ों में उलझता रहता है तथा अन्त में धार्मिक प्रकृति का हो जाता है। वृद्धावस्था में यह तीर्थ-यात्राएँ करता तथा सुखी रहता है। परमायु ७२-७३ वर्ष होती है।

(२६४९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, लम्बे कद वाला, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका बचपन अच्छी तरह व्यतीत होता है, तथापि इसकी शिक्षा में अनेक व्यवधान पड़ते हैं। यह २६ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा से संलग्न हो उन्नति करना आरंभ करता है। परन्तु ३६ वें वर्ष में नौकरी से त्यागपत्र देकर स्वतन्त्र रूप से कार्य आरंभ कर देता है। संगीत-कलाकार के रूप में इसकी विशेष ख्याति होती है। इसका भाग्योदय भी किसी स्त्री के सहयोग से ही होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष आयु में हो जाता है, परन्तु इसे पत्नी से सुख नहीं मिलता। पत्नी के कारण माता-पिता से भी द्वेष हो जाता है। यह अपने ज्येष्ठ पुत्र से भी कष्ट पाता है। परिवार में अशान्ति बनी रहती है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२६५०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी जन्म से ही अपने माता-पिता के लिए कष्टकारक होता है। इसकी शिक्षा-प्राप्ति में भी अवरोध आते हैं। यह २३ वर्ष की आयु से अर्थोपार्जन आरंभ करता है तथा अपने बुद्धि-बल से बहुत उन्नति करता है। ३० वर्ष की आयु में यह बहुत धन तथा सम्मान अर्जित कर लेता है। इसका विवाह भी २८ वर्ष के लगभग होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा धार्मिक प्रवृत्ति की होती है। वह रुग्णा भी बनी रहती है। उसपर जातक को बहुत धन खर्च करना पड़ता है। ३८ वर्ष की आयु में जातक परदेश जाता है। इसे विरोधियों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वे सफल नहीं हो पाते। इसके एक पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संघर्षों में पलते हुए भी वृद्धावस्था तक विपुल संपत्ति का स्वामी बन जाता है। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२६५१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी युवक, मधुर भाषी, सद्बुद्धिमान तथा बाल्यावस्था से ही महत्वाकांक्षी होता है। यह अपने मन में कुछ कर दिखाने की कल्पनाएं संजोये हुए विद्याध्ययन करता है। यह स्वभाव से उदार होता है, तथापि इसे अपनी विद्या-बुद्धि का अहं भी (होता है) बड़ा होकर तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु परदेश में रहने का निर्णय लेता है तथा राजकीय सेवा से संलग्न हो गृह-स्थान से दूर रहना आरम्भ कर देता है। यह माता के धन को नष्ट करता है तथा पिता के विषय में भी छिद्रान्वेषण करता रहता है। धनोपार्जन हेतु अनुचित कार्य करने से भी नहीं हिचकता। २१ वर्ष की आयु से यह धन कमाना आरम्भ करता है। २७, ३८; ४० तथा ४७ वीं वर्ष में विशेष उन्नति करता है। २२ वर्ष की आयु में मतभेद रखने वाली युवती पत्नी प्राप्त करता है। दो पुत्र होते हैं। परमायु ७० वर्ष होती है।

(२६५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धनी माता-पिता का पुत्र होने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। काव्य तथा साहित्य का सृजन करता है। परिवार का पोषक होता है। २०-२१ वर्ष की आयु में पत्नी प्राप्त कर लेता है। वह सुन्दर तथा विचारवान होती है, परन्तु जातक के साथ उसका मतैक्य नहीं हो पाता। इसके दो पुत्र सुन्दर तथा गुणवान होते हैं। यह जातक राजकीय-सेवा तथा अन्य स्रोतों से भी धनोपार्जन करता है। यह निरन्तर अपने कार्य में लगा रहता है। ३०, ३२, ३९, ४६ तथा ५६ वें वर्ष विशेष महत्व पूर्ण होते हैं। ५० वीं वर्ष में बीमारी के कारण कष्ट होता है। पुत्र बड़े होकर बहुत योग्य निकलते हैं तथा कोई नवीन कार्य आरम्भ करके प्रचुर धन कमाते हैं। यह परिवारीजनों के प्रति सद्भावना रखता तथा उनकी सहायता भी करता है। परमायु ६३ वर्ष से अधिक होती है।

(२६५३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, उदार, सरल तथा अपने सद्गुणों के कारण व्यक्ति सम्मान पाने वाला होता है। इसे साहित्य तथा कलाओं में अभिरुचि होती है। यह काव्य-सृजन भी करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाहोपरान्त कुछ समय तक दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है, तत्पश्चात् पत्नी से वैचारिक-मतभेद हो जाते हैं। यह अपने बन्धु-बान्धवों का हित-चिन्तक तथा सहायक होता है। यह परदेश में रह कर आजीविकोपार्जन करता है। राजकीय-सेवा में भी रहता है। पद वृद्धि ३५, ३९, ४६ तथा ५६-५७ वें वर्ष में होती है। इसे धन तथा सम्मान की प्रचुर मात्रा में उपलब्धि होती है। यह अपने कार्य में बड़े मनोयोग से लगा रहता है। इसके दो पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर सुयोग्य सिद्ध होते हैं। ५०-५१ वर्ष की आयु में कुछ शारीरिक-कष्ट होता है। परमायु ६३ वर्ष की लगभग होती है।

(२६५४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मधुरभाषी, सुन्दर, सद्गुणी तथा लोक-सम्मानित होता है। यह साहित्य, काव्य तथा ललित कलाओं में रुचि रखता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी, सद्गुणी तथा सुख-सहयोग देने वाली होती है। वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है तथा गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। यह जातक नौकरी के कारण प्रायः दूर परदेश में रहता है। इसको दो पुत्रों से सुख प्राप्त होता है। ३५ से ३८ वर्ष की आयु में यह भूमि, भवन, वाहन आदि विपुल सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। इसके पुत्र अधिक आयु में होते हैं, अतः वे पिता को मानसिक-सुख के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे पाते। सब प्रकार से सुखी, धनी तथा यशस्वी जीवन बिताता हुआ यह जातक ७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६५५) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, उदार, कला-संगीत तथा विनोदों में विशेष अनुराग रखने वाला होता है। यह सहृदय, परोपकारी तथा उच्च शिक्षित होता है। बाल्यावस्था में सुखी रहता है। शिक्षा समाप्त करके किसी उच्च प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर जीविकोपार्जन करता है। यह प्रियवक्ता होने के कारण लोकप्रिय होता है तथा सर्वत्र सफलता भी प्राप्त करता है। पत्नी २३ वर्ष की आयु में प्राप्त होती है। वह सुन्दरी, विवेकवान तथा आकर्षक होती है। वह जातक तथा घर के अन्य सभी लोगों को सुखी बनाये रखती है। वह घर-परिवार में प्रमुख स्थान प्राप्त करती है, परन्तु जातक से पहले ही परलोकगामिनी भी बन जाती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। जातक के जीवन के ३८, ४२, ४८, ५८ तथा ७१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२६५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गंभीर, विलक्षण स्वभाव का, चंचल तथा चतुर होता है। यह जितना उदार होता है, उतना ही क्रोधी होता है। यह किसी को अभद्र अथवा अनुचित व्यवहार के लिए क्षमा नहीं करता। उससे बदला लिये बिना रहता नहीं है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुयोग्य होती है, तथापि पति-पत्नी के विचारों में भिन्नता होती है। इतने पर भी यह जातक अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है। विवाहोपरान्त ही यह आजीविकोपार्जन भी करता है। ३५ वर्ष की आयु तक बहुत उन्नत स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसे कठिनाई से एक पुत्र की प्राप्ति होती है। वह भी रोगी बना रहता है। यदि जीवित रहे तो दीर्घायु प्राप्त करता है। जातक की स्त्री का निधन भी पति से पहले ही हो जाता है। सामान्यतः सम्पन्न एवं सुखी जीवन बिताते हुए यह जातक ६८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६५७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुद्ध, नेतृत्व-गुण-, उन्नति करने वाला एवं
अपने यौवन पर विश्वास करने वाला होता है। यह अपने के २५ वें वर्ष में किसी
कार्य में संलग्न होकर धनोपार्जन आरम्भ करता है। धन-संग्रह करने में यह विशेष
निपुण होता है तथा खर्च करने में कृपण रहता है। फिर भी आकस्मिक खर्चों के कारण
अधिक धन संचित नहीं कर पाता। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है।
पत्नी सुन्दरी तथा बुद्धिमती होती है परन्तु जातक से उसका मतभेद भी बना रहता है। संतान
के कारण प्रारम्भ में कष्ट होता है। बाद में दो पुत्रों की उपलब्धि होती है इसका अनेक
स्त्रियों से भी संबंध रहता है। यह भोग-विलास में विशेष प्रवृत्ति रखता है। संतानों से वृद्धावस्था
में सुख मिलता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(२६५८)- यह जातक सुन्दर, उदार, बुद्धिमान, लोककल्याणकारी कार्यों को करने वाला, शुभ-
कार्यों की इच्छा एवं भाग्य को प्रबल मानने वाला तथा बाल्यावस्था में माता से अलग रहने वाला
होता है। इसके विद्याध्ययन में बाधाएं आती हैं। बाल्यावस्था में रोगी भी रहता है। २२-२३ वर्ष की
आयु में यह सेना-कार्य में संलग्न होकर परदेश में रहना आरम्भ कर देता है। वहीं रहते हुए यह
बहुत उन्नति करता है। २८ वर्ष की आयु से तरक्की होने लगती है। इसके पास धन खूब आता
है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु पति के साथ
उसके वैचारिक मतभेद रहते हैं। वह दो पुत्र तथा एक पुत्री को जन्म देती है तथा घर-गृहस्थी
का संचालन भी कुशलता पूर्वक करती रहती है। यह जातक आजीवन सम्पत्तिशाली बना रहता
है। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२६५९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कला मर्मज्ञ, बुद्धिमान, आत्मज्ञ तथा लेखक होता है। माता-पिता के संरक्षण में बचपन सुख से बीतता है। शिक्षा भी उच्च कोटि की प्राप्त होती है। यह देश-परदेश में निवास करता हुआ आजीविकोपार्जन करता है। इसे धन का बहुत लोभ होता है तथा यह एकाधिक कार्यों के द्वारा धन कमाता रहता है। ४० वर्ष की आयु में जब यह बहुत धनी हो जाता है, तब थोड़ा सन्तोष होता है। ४१ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य प्रारम्भ करता है और उसमें सफलता पाता है। विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा मधुरभाषिणी होती है। वह जातक की अनुगता बनी रहती है। इसके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ होती हैं। यह ४९ तथा ६१ वर्ष की आयु में कुछ समय के लिए शारीरिक-कष्ट प्राप्त करता है। वृद्धावस्था में धार्मिक यात्राएँ करता है। परमायु ७४ वर्ष होती है।

(२६६०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक सम्पन्न माता-पिता के घर में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुखोपभोग करता है। शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त २२-२३ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। धन-संचय की इच्छा रखते हुए भी यह उसे संचित नहीं कर पाता, क्योंकि आकस्मिक खर्चे निरन्तर लगे रहते हैं। यह राज्य की सेवा भी करता है तथा अपना व्यवसाय भी करता है। यह कुशल प्रशासक होता है। ३६-३७ वर्ष की आयु तक अपने परिश्रम द्वारा यह उन्नत स्थिति को प्राप्त कर लेता है तथा सुख-सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करने लगता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी परम सुशीला, सुन्दरी तथा अनुगता होती है। पर-स्त्रियों के साथ भी इसके सम्बन्ध बने रहते हैं। पत्नी के कारण माता-पिता से विरोध करता है तथा वृद्धावस्था में अपने पुत्रों का भी विरोधी हो जाता है। पत्नी ६६ वें वर्ष में छोड़ जाती है। परमायु ६९ वर्ष।

(२६६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, प्रत्येक कार्य को युक्ति से करनेवाला, शारीरिक रूप से दृढ़, अपने पौरुष से सबको आक्रान्त करने वाला, कूटनीतिज्ञ तथा प्रतिशोधात्मक प्रवृत्ति का होता है। यह अपने शत्रु को कभी क्षमा नहीं करता तथा उससे बदला लेकर ही रहता है। यह उच्च-शिक्षा प्राप्त करता है तथा सेवा-कार्य के अतिरिक्त व्यवसाय द्वारा भी धनोपार्जन करता है। धन कमाने के लिए यह छोटे-से-छोटा काम करने से भी नहीं हिचकिचाता। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, चंचल स्वभाव वाली तथा आज्ञापालिका कन्या के साथ होता है। पत्नी घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। इसके तीन कन्याएँ तथा एक पुत्र होते हैं। यह ३८ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का स्वामी बनता है। ४१ तथा ५६ वें वर्ष में अप्रत्याशित लाभ होता है। ६२ वें वर्ष में कष्ट होता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२६६२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, पराक्रमी तथा अपने व्यक्तित्व का अहंकार रखने वाला होता है। बाल्यावस्था में रोगी रहता है, परन्तु बाद में स्वस्थ होकर बहुत सफलता प्राप्त करता है। इसे राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। यह २३ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। शीघ्र ही भूमि, भवन, वाहन आदि का स्वामी भी बन जाता है। इसकी विशेष उन्नति ३८ से ४८ वर्ष की आयु में होती है। इसे २८ वर्ष की आयु में पत्नी प्राप्त होती है। वह स्वतन्त्र विचारों वाली तथा चंचल स्वभाव की होती है। जातक के घरेलू दायित्वों का समुचित रूप से निर्वाह करती है। इसके दो पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ होते हैं। ६० वर्ष की आयु में यह कोई दूसरा कार्य करके धनोपार्जन करता है। युवावस्था से यह अपने माता-पिता से कुछ ऊपर भी मानने लगता है। परमायु ६८ वर्ष से अधिक होती है।

(२६६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी युवा तथा स्वस्थ होते हुए भी विपरीत-बुद्धि वाला होता है। यह विघ्न-बाधाएँ डालने वाला, व्यर्थ विवाद करने वाला तथा अपनी विद्या-बुद्धि का मिथ्या अहंकार रखने वाला होता है। यह बाल्यावस्था में दुःखी रहता है। माता-पिता द्वारा एक प्रकार से परित्यक्त-सा होकर किसी अन्य स्थान पर जाकर रहता है। वहीं विद्या-लाभ करता, तदुपरान्त व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। इसे परदेश में लाभ होता है। यह १५ वर्ष की आयु से ही धन कमाने लगता है। यह दीर्घकाल तक किसी स्थान पर नहीं टिक पाता। ३० वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २८-२९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चंचल स्वभाव की तथा दुःख-दुःख में साथ देने वाली होती है। दो पुत्रियाँ होती हैं। ३५ से ३८ वर्ष की आयु तक दुःख, फिर संघर्ष रहता है। परमायु ६८ वर्ष होती है।

(२६६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी तथा बाल्यावस्था में माता-पिता का पूर्ण स्नेह पाने वाला होता है। यह स्वतन्त्र प्रकृति का होता है तथा अपने परिश्रम से आगे बढ़ता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा वाचाल होती है। वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है तथा जातक को अपने प्रभाव में बनाये रखती है। यह व्यक्ति ३५ से ४९ वर्ष की आयु तक प्रचुर धन तथा अचल-सम्पत्ति अर्जित करता है। ६९ वर्ष की आयु में यह चरमोत्कर्ष प्राप्त कर लेता है। इसके एक पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ होती हैं। सभी संतानें सुयोग्य होती हैं। पुत्र बड़ा होकर समस्त उत्तरदायित्वों का कुशल-निर्वहन करता है। वृद्धावस्था में जातक तीर्थयात्राएँ करता है तथा धर्म-कर्म में अपना मन लगाता है। परमायु ७३ वर्ष होती है।

(२६६५)-इस जलकुण्डली का अधिपति सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं कल्पनाशक्ति के बाद कर्मठ-जीवन बिताते हुए, अपने पुरुषार्थ के बल पर उन्नति करने वाला होता है। यह नेतृत्व-गुण-सम्पन्न होने के कारण अपने साथियों में प्रमुख बना रहता है। २५ वर्ष की आयु से ही यह धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। यह परदेश में रहता हुआ नौकरी अथवा व्यवसाय के द्वारा धन कमाता है तथा ५२-५३ वर्ष की आयु में उच्चपद पर अथवा उच्चस्थिति में जा पहुँचता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। पत्नी जातक को अपने प्रभाव में रखती है तथा अपनी इच्छानुसार चलाने में दक्ष होती है। वह सम्पूर्ण परिवार पर अपना प्रभुत्व रखती है। इसके एक पुत्र तथा एक पुत्री होते हैं। ५०-५१ वर्ष की आयु में यह जातक अत्यधिक धन तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२६६६)- इस जलकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य विशाल हृदय का, सुन्दर, चिन्तक तथा कल्पनाशक्ति में रुचि रखने वाला होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों, मित्रों तथा परिवारीजनों का हितैषी होता है। धार्मिक भावनाओं से युक्त, परोपकारी तथा दीन-दुःखियों की सहायता करने वाला होता है। राजकीय-सेवा में यह उच्चपद प्राप्त करता है तथा इसके अधीन सैकड़ों कर्मचारी कार्य करते हैं। यह सर्वत्र सम्मान पाता है तथा अपने सद्व्यवहार एवं सद्गुणों के कारण सर्वत्र प्रतिष्ठित होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत यश पाता है तथा ३८ वर्ष की आयु में लोक-पूजित बन जाता है। यह भूमि, भवन, वाहन तथा विपुल सम्पत्ति का स्वामी होता है। पत्नी २६ वर्ष की आयु में मिलती है। अपनी योग्यता से वह इसे वशीभूत बनाये रखती है। दो कन्याएँ तथा दो पुत्र होते हैं। वृद्धावस्था में पत्नी के साथ तीर्थाटन करता है। परमायु ७१ वर्ष होती है।

(२६६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पुरुषार्थी, बुद्धिमान, अपने अध्यवसाय के बलपर उन्नति करने वाला, अत्यधिक लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित होता है। २२ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करने के उपरान्त यह राजकीय सेवा में छोटे पद पर संयुक्त होता है तथा अपनी योग्यता एवं कर्मठता के बलपर निरन्तर उन्नति करता हुआ ४० वर्ष की आयु में उच्चपद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। जब तक सफल नहीं हो जाता, तब तक यह अपने माता-पिता से दूर ही रहता है। वैसे भी, माता-पिता का सुख इसे कम ही मिल पाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी भिन्न विचारों वाली होती है, तथापि जातक उसके प्रति आकर्षित बना रहता है। दो पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर सुयोग्य तथा सुख देने वाले सिद्ध होते हैं। सुखी जीवन बिताते हुए यह ७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६६८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, उन्नत नासिका तथा शान्त मिजाज वाला होता है। इसे अपने कुटुम्बियों की ओर से सम्मान मिलता रहता है। परिवार के सभी लोग इसके अनुगत बने रहते हैं। यह अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद सेवा-कार्य में संलग्न हो धनोपार्जन आरम्भ करता है तथा देश-प्रदेश की यात्राएँ करता है। यात्राओं द्वारा सुख, सम्मान तथा धन की उपलब्धि होती है। यह जातक सत्यवादी होता है तथा अपने सद्-गुणों के कारण ही प्रसिद्धि प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सम्पत्तिशालिनी होती है। वह अपने अधिकार की सम्पत्ति लेकर आती है तथा जातक की श्रीवृद्धि करती है। दो पुत्र होते हैं, जो बड़े होकर उच्चपद प्राप्त करते हैं। ३६ वर्ष की आयु में कोई अप्रतिष्ठा होती है। परन्तु फिर स्थिति सुधर जाती है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

<u>(२६६९)</u>- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखी, साहसी, उद्यमी, धनी-मानी तथा विपुल सम्पत्ति अर्जित करने वाला होता है। यह बचपन से विशेष सुख नहीं पाता, परन्तु युवावस्था के समय में परिवर्तित हो जाता है। २५ वर्ष की आयु में इसे काफी कष्ट मिलता है। यह बुद्धिमत्ता का कार्य करने में संलग्न होता है, जिससे शारीरिक-आघात लगने से कुछ समय के लिए निश्चेष्ट-सा हो जाता है। २८ वर्ष की आयु में यह नवीन व्यवसाय आरम्भ करता है और उसमें शीघ्र ही बहुत उन्नति कर लेता है। इसके पास वाहन तथा भोग-विलास की अन्य वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में संकलित हो जाती हैं। जो लोग इसे धोखा देते हैं, उनसे भली भाँति बदला भी लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सद्गुणी होते हुए भी जातक से मतभेद रखती है, अतः पूर्ण सुख नहीं दे पाती। दो पुत्र होते हैं, जो सुयोग्य निकलते हैं। परमायु ६० वर्ष होती है।

<u>(२६७०)</u>- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुखी, स्वस्थ, पुरुषार्थ को ही सर्वोपरि मानने वाला, तथा बुद्धिमान होता है। २५ वर्ष की आयु में यह आकस्मिक रूप से विपद्ग्रस्त होता है। तब अपने आत्मविश्वास तथा कर्मठता से ही प्राण-रक्षा करने में सफल हो पाता है। इसको २३ वर्ष की आयु में पत्नी उपलब्ध होती है। वह श्रेष्ठ स्वभाव की तथा सुयोग्य होते हुए भी जातक के प्रति विरक्त सी बनी रहती है। वह पारिवारिक-दायित्वों का निर्वहन करती हुई भी आन्तरिक विषाद से पीड़ित बनी रहती है। सन्तान का अभाव भी हो सकता है, और संतान विलम्ब से भी हो सकती है। ३६, ३९, ४२ तथा ४६ वर्ष की आयु में [illegible] अनेक जोखिमपूर्ण यात्राएँ करता है। अपने कुटुम्बियों, बन्धु-बान्धवों तथा स्त्री-पुत्रादि की ओर से वंचित रहते हुए भी यह यथासम्भव उनके प्रति कर्तव्यों का निर्वहन करता है। समृद्धिपूर्ण जीवन बिताते हुए ६२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२६६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, लम्बे शरीर का गौरवर्ण, सुन्दर तथा आत्मतेजस्वी होता है। यह बड़ा साहसी, पराक्रमी तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर उन्नति करने वाला होता है। यह शत्रु तथा विवाद (मुकद्दमा आदि) से लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्विनी होती है। वह अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बनाकर पर, बाहर सर्वत्र सुयश प्राप्त करती है। सन्तानें तेजस्वी तथा हीन हृदय होती हैं। पुत्र वृद्धावस्था में सुख देते हैं। यह जातक आर्थिक-स्थिति से सम्पन्न होते हुए भी कभी-कभी चिन्ताओं में फँस जाता है तथा बड़े उतार-चढ़ाव भी देखता है। बाहर की यात्राएँ अधिक करनी पड़ती हैं। यह विद्वान् होता है तथा सुयश भी प्राप्त करता है। जीवन के २२, २८, ३३, ३७, ४२, ४८, ५३ तथा ६६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। वृद्धावस्था में शारीरिक-कष्ट भी भोगता है। परमायु ७६ वर्ष के लगभग होती है।

(२६६२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, तेजस्वी तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है। इसकी बाँई आँख में कोई कष्ट होना सम्भव है। अपने परिश्रम द्वारा यह उन्नति करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर यह २५-२६ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी कुछ साँवले रंग की, तथापि सुन्दरी प्राप्त होती है। दूसरे विवाह-मिलता भी सम्भव है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा व्यवसाय एवं नौकरी-दोनों के द्वारा धन कमाता है। इसे जीवन में कभी किसी प्रकार की आर्थिक-कठिनाई नहीं आती। अपने परिवार में सर्वाधिक सम्पन्न होने का गौरव भी इसे मिल सकता है। यह यात्राएं भी बहुत करता है। समुद्र पारीय यात्राओं से विशेष लाभ होता है। संतानें सुयोग्य, सुन्दर तथा सुख देने वाली होती हैं। संतानों की संख्या कम ही रहती है। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(२६७३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ा तेजस्वी, गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा यशस्वी होता है। यह युवावस्था के प्रारम्भ से ही धन कमाना आरम्भ करता है तथा अल्पकाल में ही बड़ा धनी बन जाता है। भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख इसे उपलब्ध होते हैं। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा सुन्दरी होती है। उसके कुछ मत-भिन्नता भी रह सकती है। संतानों में कन्याएं अधिक होती हैं। पुत्र या तो होता ही नहीं अथवा केवल एक होता है। संतानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। यह जातक जीवन के २५वें वर्ष से अर्थोपार्जन आरम्भ कर देता है तथा अल्पकाल में ही बहुत धनी हो जाता है। यह भवन आदि अचल सम्पत्ति का स्वामी भी होता है। जीवन के २३, २७, ३२, ४५, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष कष्टप्रद रहते हैं। प्रायः सुखी एवं सम्पन्नतापूर्ण जीवन बिताते हुए यह ७७ वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(२६७४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी रक्त-गौर वर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, सुन्दर तथा सद्गुणी होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता, शिक्षा तथा गुणों के बल पर जीवन में अत्यधिक उन्नति करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, साँवली तथा भिन्न रुचियों वाली होती है, तथापि दाम्पत्य-जीवन सहज बना रहता है। सन्तानें कम होती हैं। कन्या सन्तानें होती हैं। पुत्र की इच्छा क्षीण रहती है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। यह जातक राजकीय-सेवा द्वारा अर्थोपार्जन करता है तथा निरन्तर उन्नति करता हुआ शीघ्र ही उच्चपद पा लेता है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सर्वसुख इसे प्राप्त होते हैं। जीवन के ३१, ३६, ३८, ४७ तथा ४८ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक रहते हैं। यात्राओं से लाभ होता है। परमायु ७५ वर्ष होती है।

(२६७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी रक्ताभ गौर वर्ण, लम्बे कद का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्ति-त्व वाला होता है। यह अपने माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त करता है तथा उनकी सम्पत्ति का भी उपभोग करता है। विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गौरवर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में जातक के साथ सहयोग करती है तथा गृहस्थी का संचालन कुशलता पूर्वक करती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। दो पुत्र तथा एक पुत्री का होना सम्भव है। यह जातक राजकीय-सेवा में संलग्न होकर आजीविकोपार्जन करता है। अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करता चला जाता है तथा ३६ वर्ष की आयु में उच्च पद पर जा पहुँचता है। जीवन के २६, २९, ३५, ३८, ४२, ४७, ५३, ५८ तथा ६२ वें वर्ष विशेष हितकर सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२६७६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, रक्ताभ गौर वर्ण, तथा पराक्रमी होता है। यह बड़ा साहसी तथा निडर भी होता है। माता-पिता से इसका मतभेद रहता है, तथापि इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। यह सात्विक विचारों का, धर्मभीरु तथा ईमानदारी की कमाई करने वाला होता है। इसके शत्रु भी होते हैं, परन्तु वे कोई हानि नहीं पहुँचा पाते। यह २६ वर्ष की आयु से अर्थोपार्जन आरम्भ करता है। भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं तथा राज्य द्वारा धन का अधिक लाभ होता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। पुत्रों से सुख मिलता है। जीवन के २६, २९, ३२, ३८, ४२, ४७, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ७० या ७४ वर्ष होती है।

(२६७७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, लम्बे कद का, गौर वर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूल तथा बुद्धिमती होती है। जातक उसे बहुत स्नेह करता है तथा वह भी जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। संतानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। वृद्धावस्था में सुख देते हैं तथा सुयोग्य होते हैं। यह जातक विवाहोपरान्त अलौकिक आय करता है तथा देश-परदेश की यात्रायें करके लाभ उठाता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। माता-पिता तथा परिवारीजनों से सम्बन्ध सामान्य अथवा कुछ मतभेद पूर्ण रहते हैं। जीवन के २८, ३५, ४२, ४८, ५१, ५६ तथा ६१ के वर्ष महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यात्रायें अधिक होती हैं तथा उनसे लाभ मिलता है। परमायु ६८ अथवा ७७ वर्ष होती है।

(२६७८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौर वर्ण, प्रशस्त ललाट, सुन्दर नेत्रों वाला, गुणवान, बुद्धिमान तथा उच्च कोटि का विद्वान होता है। यह अपनी योग्यता के बल पर सरकारी अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठित संस्थान से सम्बद्ध होकर २४ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। ३२ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। फिर यह अपना निजी व्यवसाय शुरू करके उससे भी पर्याप्त लाभ उठाता है। विवाह २६-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी परम सुन्दरी, बुद्धिमती तथा सुन्दर सन्तानों को जन्म देने वाली होती है। वह स्वयं भी यश तथा धन अर्जित करती है। जातक उसके ऊपर गृहस्थ-संचालन का सम्पूर्ण दायित्व छोड़ कर निश्चिन्त हो जाता है। जीवन के ३५ तथा ५६ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। ३१, ४२, ५७, ५८ तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ६८ अथवा ७९ वर्ष होती है।

(२६७९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलिष्ठ, लम्बे कद का, स्वच्छ गौर वर्ण, परिश्रमी, साहसी तथा तीव्र स्वभाव का होता है। यह विदेशी भाषा का ज्ञाता होता है, परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त करता है तथा उनके प्रति श्रद्धाभाव रखता और उनकी सेवा भी करता है। यह यात्राएँ अधिक करता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। यह शत्रुओं को अपनी बुद्धि से पराजित करता है तथा असम्भव कार्यों को कर दिखाने में सफलता प्राप्त करता है। इसका विवाह २५-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गौधूम वर्ण की सुन्दरी होती है, परन्तु पति के साथ कई मामलों में मतैक्य नहीं रखती। संतानें सुन्दर तथा सुयोग्य होती हैं। आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। ४० वर्ष की आयु तक जातक सब प्रकार के सुख-साधन प्राप्त कर लेता है। परमायु ७६ वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(२६८०) = इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वच्छ गौर वर्ण, हृष्ट-पुष्ट, निर्भीक, शक्तिशाली, साहसी, परिश्रमी तथा परोपकारी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर २५-२६ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे विदेश-यात्रा तथा विदेशों से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यापार से विशेष लाभ होता है। यह माता-पिता का भक्त होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। पैतृक-व्यवसाय को यह उन्नत स्थिति में ले जाता है। विवाह २८-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है तथा संतानें सुयोग्य होते हुए भी इससे कुछ मतभेद रखतीं तथा अलग रहती हैं। भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः ठीक बनी रहती है। राज्य द्वारा भी धन का लाभ होता है। जीवन के २८, ३२, ३९, ४४, ४९ तथा ५८ वें वर्ष विशेष हितकर सिद्ध होते हैं। परमायु ७६ वर्ष होती है।

(२६८८१) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, पुष्ट शरीर का, परिश्रमी, साहसी तथा दृढ़ निश्चयी होता है। यह प्रायः विदेश में रहता है तथा वहीं से पर्याप्त धनोपार्जन भी करता है। यह विदेशी भाषा का जानकार तथा विदेशी वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है। बाहर रहकर यश भी अर्जित करता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि होती है तथा पिता का सुख भी मिलता है। यह स्वयं भी माता-पिता की सेवा करता और उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट बनाये रखता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है, परन्तु कभी-कभी घाटे का सामना भी करना पड़ता है। संतानें कम तथा सुयोग्य होती हैं, परन्तु उनसे जातक को कोई सहारा नहीं मिलता। शत्रु सदैव पराजित होते हैं। जीवन के २४, २८, ३५ तथा ४२ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं। पत्नी २६ वर्ष की आयु में मिलती तथा मनोनुकूल होती है। परमायु ७८ वर्ष होना सम्भव है।

(२६८८२) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वभाव से गौरवर्ण, पुष्ट शरीर का, साहसी, परिश्रमी तथा उदार प्रकृति का होता है। इसे माता का विशेष सुख नहीं मिलता तथा पिता से भी कोई विशेष लाभ नहीं होता है तथापि यह उनके प्रति श्रद्धालु बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा विवाह के बाद ही भाग्योदय होता है। पत्नी गेहुँए रंग की, सुन्दरी, चतुर तथा गुणवती होती है। जातक उसे बहुत स्नेह करता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुछ ही समय में भूमि, भवन, वाहन आदि विपुल सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। इसे समुद्र पारीय यात्रायें भी करनी पड़ती हैं और उनसे यश तथा धन का लाभ भी होता है। जीवन के २८, ३५, ४२, ४९ तथा ५७ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ७९ वर्ष होना सम्भव है।

(२६८३) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, स्वस्थ, साहसी तथा पराक्रमी होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख भोगता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर २६-२७ वर्ष की आयु में राजकीय अथवा किसी अन्य बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर धनोपार्जन आरंभ कर देता है। इसी अवधि में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानें सुयोग्य परन्तु संख्या में कम होती हैं। यह जातक अपनी माता का विरोधी होता है। पिता से स्नेह रखता है। भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है। कुछ ही समय के पश्चात् प्रचुर चल-अचल सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। किसी समय इसे आकस्मिक लाभ होजाते हैं। इसके जीवन में ३६ तथा ६८वें वर्ष शारीरिक-कष्ट के होते हैं तथा २४, २७, ३५, ४२, ४८, ५५, ५८ एवं ६२वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ८० से ८४ वर्ष तक हो सकती है।

(२६८४) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, प्रशस्त ललाट, विशाल नेत्रों वाला, मधुरभाषी, कर्मठ, साहसी तथा पराक्रमी होता है। यह बाल्यावस्था से ही सम्पत्तिशाली होता है। पराक्रम में जब-कभी कमी आ जाती है तो यह धनोपार्जन हेतु अनुचित साधनों का प्रयोग करने से भी नहीं हिचकिचाता। मित्रों से इसे लाभ होता है तथा बड़े लोगों [illegible] यश तथा धन की उपलब्धि होती है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गेहुँए रंग की तथा सुन्दरी होती है, परन्तु जातक के साथ उसका मतभेद भी रहता है। कभी अलगाव की स्थिति भी आ सकती है। विवाहोपरान्त इस जातक का भाग्योदय होता है। संतानें बड़ी होकर अलग रहने लगती हैं। जातक को उनसे कोई विशेष सुख नहीं मिलता। इसे ४४, ५१ तथा ६३वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ८२ वर्ष हो सकती है।

(२६८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, विद्वान, मधुर भाषी, उदार, साहसी तथा दृढ़ प्रतिज्ञ होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह २५ या २७ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे पैतृक-व्यवसाय द्वारा लाभ होता है, तथापि यह उसे करते हुए भी राजकीय-सेवा अथवा राज्य सम्बन्धी कार्यों से भी संलग्न होकर धनोपार्जन करता है। इसे मित्रों तथा परिवारीजनों का सहयोग प्राप्त होता है। पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि होती है तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर भी आते हैं। यह कभी-कभी विरोधी स्वभाव का भी बन जाता है, परन्तु फिर शीघ्र ही स्वयं को सम्हाल भी लेता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। परमायु ६९ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२६८६) - इस जन्मकुण्डली से उत्पन्न मनुष्य गेहुँए रंग का, शक्तिशाली, हठी, क्रोधी तथा निडर स्वभाव का होता है। यह बाल्यावस्था से ही सम्पत्तिशाली होता है तथा सम्पन्न माता-पिता की सन्तान होने के कारण सब प्रकार के सुख-साधन भी उपलब्ध रहते हैं। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गेहुँए रंग की, कुछ कठोर स्वभाव की, परन्तु घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। सन्तानें कम तथा सुयोग्य होती हैं, परन्तु जातक को स्वयं उनसे कोई सुख अथवा लाभ नहीं मिलता। यह २५, २९, ३३, ४२ तथा ४९ वें वर्ष में विशेष लाभ पाता है। धन कमाना २४-२७ वर्ष की आयु से ही कर देता है। कुछ समय तक परदेश में रहने का अवसर भी मिलता है। मान-प्रतिष्ठा तथा धन खूब अर्जित करता है तथा सुखी जीवन बिताते हुए ७९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

३८२८ सं. भु ० कु० १०

(२६८७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, बुद्धिमान, प्रभावशाली, मित्रों को प्रिय तथा प्रियवादी होता है। इसका विवाह २२-२४ की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमती, गुणवती तथा अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह जातक की मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तो करती ही है, अपनी योग्यता के कारण स्वयं भी ख्याति अर्जित करती है। धनोपार्जन में भी सफल होती है। संतानें दो या तीन होती हैं और वे सुयोग्य तथा सुखदायक सिद्ध होती हैं। यह जातक २५-२६ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करता है। विवाद (मुकद्दमे) तथा शत्रुओं द्वारा भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। यह जातक व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ उठाता है, परन्तु कुछ समय के लिए नौकरी भी कर सकता है। जीवन के २६, २९, ३२, ३७, ४१, ४७, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। ४४, ५६ तथा ६२ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट संभव है। परमायु ७४ या ८२ वर्ष होती है।

(२६८८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, बड़े नेत्र तथा लंबे कद वाला एवं बुद्धिमान होता है। यह पाश्चात्य भाषाओं का विद्वान होता है। संतानें सुयोग्य होती हैं। दो पुत्र होना संभव है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी, बुद्धिमती तथा गुणवती होती है। वह गृहस्थी का संचालन कुशलता पूर्वक करती है। प्रत्येक क्षेत्र में पति को सहयोग देती है तथा अपनी व्यवहार-कुशलता से सर्वत्र सम्मान भी पाती है। यह जातक २५-२६ वर्ष की आयु से जीविकोपार्जन आरंभ कर देता है। इसे देश-प्रदेश की यात्रायें करनी पड़ती हैं तथा यश तथा धन भी अर्जित करता है। खनिज वस्तुएं, लाल रंग की वस्तुएं तथा अन्न-धान्य आदि के व्यवसाय से इसे लाभ होता है। जीवन के २८, ३५, ४६, ५८ तथा ६७ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परमायु ७८ वर्ष होना संभव है।

(२९८९) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी, उदार हृदय का, निश्छल, बुद्धिमान तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा कुछ उग्र स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-भाव उत्तम बना रहता है तथा गृहस्थी की गाड़ी सुचारु रूप से चलती रहती है। सन्तानें दो या तीन होती हैं। वे चतुर प्रकृति की होती हैं तथा बड़ी होकर जातक से अलग रहकर आय करा देती हैं। यह जातक २५ वर्ष की आयु से राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन आरम्भ करता है। ३२ वर्ष की आयु में ही यह बहुत धन कमा लेता है तथा ४६ वर्ष की आयु तक भूमि, भवन, वाहन आदि सुखों को उपलब्ध कर लेता है। यह ३०, ३६, ४४, ४९, ५२, ५८ तथा ६३ वें वर्ष में भी बहुत लाभ प्राप्त करता है। इसे बाहरी लोगों तथा स्थानों से भी लाभ होता है। सुखी जीवन बिताते हुए ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२९९०) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति गेहुँआ रंग का, मध्यम कद वाला, चालाक, बुद्धिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका माता-पिता तथा परिवारी जनों के प्रति विशेष स्नेह रहता है। भाई इसके सहयोगी होते हैं। बहनें भी बहुत प्रेम रखती हैं। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। वह जातक के साथ कतिपय मतभेद रखते हुए भी उसकी इच्छानुसार ही चलती है। दो पुत्र तथा एक कन्या का योग बनता है। उनमें एक लड़का बहुत योग्य, बुद्धिमान तथा कुलदीपक होता है, दूसरा भिन्न प्रकृति का होता है। शत्रु पराजित होते हैं। शरीर में त्वचा रोग होने की सम्भावना रहती है। कभी आकस्मिक रूप से चोट भी लग सकती है। अर्थोपार्जन २४ वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है। ३२ वर्ष की आयु में आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाती है। परमायु ६९ अथवा ७४ वर्ष होती है।

(२६९१) — इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँए रंग का, मध्यम कद वाला, मैला-कुचैला रहने वाला, अतिशय चालाक, धोखेबाज तथा दूसरों को अपने विश्वास में लेने में कुशल होता है। यह अनुचित कार्यों से भी धनोपार्जन करता है। अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु औरों को हानि पहुँचाने में इसे कोई संकोच नहीं होता। यह 22-23 वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है तथा इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक तथा विविध प्रकार के होते हैं। यह धनोपार्जन हेतु देश-विदेश की यात्राएं भी करता है। ४० वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमा लेता है। यह विद्वान भी होता है, परन्तु अपनी विद्वता का प्रयोग अच्छे कामों में नहीं कर पाता। विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भिन्न रुचि की होती है, अतः दाम्पत्य-जीवन अधिक सुखमय नहीं रह पाता। संतानें सुयोग्य, श्रेष्ठ तथा सदाचारी होती हैं। परमायु ६८ या ७४ वर्ष होती है।

(२६९२) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुछ साँवले गेहुँए रंग का, मध्यम कद वाला, स्वस्थ, बलिष्ठ, अहंकारी तथा स्वार्थ-साधन में चतुर होता है। यह शिक्षा उच्च कोटि की प्राप्त करता है तथा विदेशी भाषा में भी पारंगत होता है। इसका विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्यतः सुन्दर तथा घर-गृहस्थी को चलाने में निपुण होती है। संतानें सुयोग्य तथा सुन्दर होती होती हैं। वे बड़ी होकर उच्च पद पर पहुँचती तथा जातक को सुख देती हैं। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ कर देता है। आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं, अतः सम्पत्ति की निरन्तर अभिवृद्धि होती चली जाती है। यह जातक यात्रा-प्रेमी होता है तथा विभिन्न स्थानों की यात्राएँ करके धनोपार्जन भी करता है। किसी समय आकस्मिक-चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। जीवन के २८, ३७, ४४ तथा ५७ वें वर्ष बहुत लाभप्रद रहते हैं। परमायु ७८ वर्ष हो सकती है।

(२६६३) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, पतले शरीर तथा गेहुँए रंग का, होशियार तथा स्वार्थी-प्रकृति का होता है। यह २४ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ करता है। नौकरी तथा व्यवसाय - दोनों में इसकी समान गति होती है। यह अपने व्यवसाय को बारम्बार बदल भी सकता है। विलास की वस्तुओं, श्रृंगार की वस्तुओं तथा खनिज वस्तुओं के द्वारा यह धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी तथा बुद्धिमती होती है। जातक से विचार-वैमनस्य रखते हुए भी गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। जातक की शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है, परन्तु पुत्र सन्तानें, जो संख्या में दो होती हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं तथा बड़े होकर पिता के यश की वृद्धि भी करती हैं। यह जातक अपना निजी मकान बनवाता है तथा धन, वाहन, सेवक आदि सभी सुख-साधनों को प्राप्त करता है। परमायु ६६ अथवा ७३ वर्ष होती है।

(२६६४) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गेहुँए रंग का, लम्बे कद का, बुद्धिमान, धनी-उद्यमी तथा विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न होता है। इसके पास धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं होती। यह अपने पुरुषार्थ से भूमि, भवन, वाहन आदि उपलब्ध करता है। २४ वर्ष की आयु से ही यह आजीविकोपार्जन आरम्भ करता है तथा इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती तथा परिवार का भलीभाँति पालन करने वाली होती है। वह स्वयं भी अपनी योग्यता से धनोपार्जन करती है तथा जातक को प्रसन्न बनाये रखती है। इसकी सन्तानें विरुद्ध स्वभाव की होती हैं तथा बड़ी होकर पिता से अलग रहती हैं। इसके पास धन की कोई कमी नहीं होती। यह विभिन्न साधनों द्वारा पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित करता है। जीवन के २७, ३५, ४३, ५४, ६२ तथा ६७ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७१ अथवा ८० वर्ष होती है।

(२६९५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वभाव गौरवर्णी, बुद्धिमान, तेजस्वी, परन्तु मनही मन कुछ चिंतित बना रहने वाला होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के कारण यशस्वी भी बनता है। परिवारी जनों से इसके संबंध सामान्य रहते हैं। यह अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करता है। नौकरी कुछ समय के लिए कर सकता है. परन्तु व्यवसाय में ही इसका मन अधिक लगता है और अन्ततः उसी के द्वारा धन कमा कर सम्पत्तिशाली बनता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। बुद्धिमती होने के कारण वह घर गृहस्थी का संचालन कुशलता पूर्वक करती है। इसके दो पुत्र होते हैं। वे दोनों ही तेजस्वी तथा बुद्धिमान होते हैं एवं वृद्धावस्था में जातक को सुख देते हैं। इसके जीवन के २५, २८, ३२, ३९, ४३, ४९, ५५ तथा ५७ वें वर्ष हितकर होते हैं। परमायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(२६९६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त तेजस्वी, क्रोधी स्वभाव का परन्तु धीर-गंभीर, कर्मठ, परिश्रमी तथा दूरदर्शी होता है। वह बाल्यावस्था में कोई विशेष सुख नहीं पाता, परन्तु युवावस्था से ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। लाल रंग की वस्तुओं से इसे विशेष लाभ होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, साध्वी, प्रियवादिनी तथा सेवाभाविनी मिलती है। वह सुन्दर तथा यशस्वी पुत्रों को जन्म देती है, जो पिता के यश को बढ़ाते हैं। यह जातक विदेशों से सम्बन्ध रखता है तथा यात्राओं द्वारा धन तथा ख्याति अर्जित करता है। सब प्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ वृद्धावस्था में धार्मिक प्रवृत्ति का हो जाता है। परमायु ७६ अथवा ८३ वर्ष होती है।

(२६९७)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, गौरवर्ण, अत्यन्त तेजस्वी, कुछ उग्र स्वभाव का तथा दृढ़ निश्चयी होता है। यह बुद्धिमान, विद्वान तथा धनवान भी होता है। इसे भूमि, भवन, वाहन, सेवक तथा माता-पिता का सुख प्राप्त होता है। पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि भी होती है। इसे भाइयों से सहयोग मिलता है तथा पराक्रम में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। यह शत्रुओं पर विजय पाने वाला, मामले-मुकदमे में प्रतिपक्षी को पराजित करने वाला तथा स्व-पराक्रम द्वारा भाग्य की निरन्तर उन्नति करने वाला होता है। इसका विवाह २१-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गौरवर्णा, तेजस्विनी तथा गृह-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करने वाली होती है। संतानें सुन्दर तथा तेजस्वी होती हैं। वे बड़ी होकर भी पर्याप्त धन-यश कमाती हैं। ३७ तथा ६२वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है।

(२६९८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रतापी, साहसी, निर्भीक, दृढ़ निश्चयी, पराक्रमी तथा कुछ उग्र प्रकृति का होता है। इसे धन की कोई कमी नहीं रहती। यह बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन व्यतीत करता है तथा बड़ा होकर २३ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है। अपने पराक्रम तथा धन से यह मकान बनवाता है तथा वाहन, सेवक आदि के सुख को उपलब्ध करता है। इसके माता-पिता के प्रति बहुत आदर भाव रहता है तथा वे भी इसे बहुत प्रेम करते हैं। पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि भी होती है, जिसे यह निरन्तर बढ़ाता रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। संतानें सुयोग्य होती हैं। जीवन के २७, ३१, ३९, ४२, ४८, ५१ तथा ५६वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु ६९ अथवा ७८ वर्ष होती है।

(२६९९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी तेजस्वी, रक्ताभ गौरवर्ण, मध्यम कद का, गोल चेहरा तथा प्रशस्त ललाट वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह बाल्यावस्था में रोगी रहता है, परन्तु किशोरावस्था के बाद स्वस्थ बना रहता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला तथा तेजस्वी होती है। जातक उसे अत्यधिक स्नेह करता है, तथापि अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। संतानें अनेक होती हैं। गर्भस्राव की संभावना भी रहती है। दो संतानें सुयोग्य सिद्ध होती हैं। वे बड़ी होकर यशस्वी तथा धनी बनती हैं तथा पिता को सुख देती हैं। यह जातक विवाहोपरान्त ही धनोपार्जन करता है। नेतृत्व-गुण प्रधान होने के कारण यह समाज-सेवा के कार्यों को करता तथा सार्वजनिक-क्षेत्र में यशस्वी बनता है। इस प्रकार के सुखों को भोगता हुआ ७२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२७००) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, गोधूम वर्ण का, परिश्रमी, साहसी तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। इसका जीवन संघर्षशील बना रहता है, तथापि अपनी बुद्धिमत्ता एवं परिश्रम द्वारा यह निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। इसकी शिक्षा उत्तम होती है तथा २४-२५ वर्ष की आयु से ही यह आजीविकोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे व्यवसाय द्वारा आर्थिक लाभ होता है। यह देश-विदेश की यात्रायें भी व्यापार के संबंध में करता है तथा यश एवं धन पैदा करता है। इसका विवाह भी २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, गौरवर्णा, तेजस्विनी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानें दो या तीन होती हैं। कुछ गर्भस्राव भी हो सकते हैं। यह भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होकर ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता हुआ ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(२८०१) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गेहुँए रंग का, मध्यम कद वाला, सामान्य सुन्दर, बुद्धिमान तथा अपने मन की बातों को गुप्त रखने में सक्षम होता है। यह मध्यम श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करता है। इसका बाल्यकाल सुख से बीतता है। माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानें दो या तीन होती हैं। गर्भस्राव की सम्भावना भी रहती है। संतानें सुयोग्य सिद्ध होती हैं। यह जातक विवाहोपरान्त ही धनोपार्जन आरंभ कर देता है। यह सेना, पुलिस अथवा अनुसंधान से सम्बन्धित किसी अन्य सरकारी विभाग में नौकरी कर सकता है। इसे यथेष्ट आर्थिक लाभ होता है। जीवन के २९, ३८, ४२, ४९, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष हितकर सिद्ध होते हैं। परमायु ७३ वर्ष या ८४ वर्ष होती है।

(२८०२) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ साँवले रंग का, प्रशस्त ललाट, तीक्ष्ण नेत्रों वाला, साहसी, परिश्रमी, निर्भीक तथा परोपकारी होता है। यह बाल्यावस्था से ही अपने तेजस्वी होने का प्रमाण देना आरंभ कर देता है। विद्याध्ययन सुचारु रूप से चलता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। माता से विलगता रहती है, परन्तु पिता से स्नेह करता है। २४ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरंभ कर देता है। नौकरी भी थोड़े समय के लिए कर सकता है, परन्तु उसकी तुलना में व्यवसाय को प्रमुखता देता है तथा कुछ समय बाद निजी व्यवसाय आरंभ कर उसका सफलतापूर्वक संचालन करता है। इसकी आय के साधन अनेक होते हैं। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। संतानें भी सुयोग्य, सुन्दर तथा परिश्रमी होती हैं। ४२, ४८ तथा ५६ वें वर्ष में विशेष उन्नति होती है। परमायु ७८ वर्ष होना संभव है।

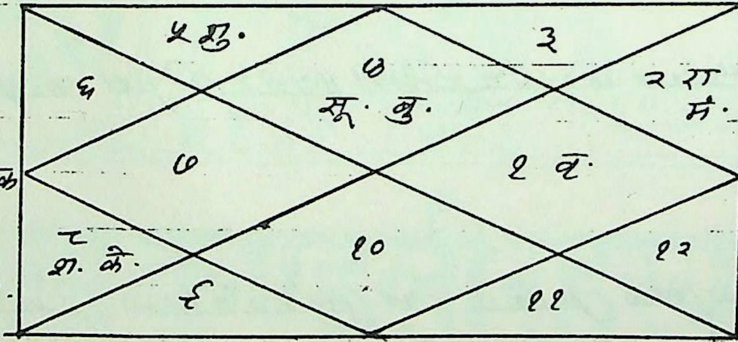
<u>आवश्यक टिप्पणी</u> - विक्रम संवत् १९६७ से विक्रम सम्वत् २०४५ तक, अर्थात् कुल ७८ वर्षों की इस अवधि में जन्मे जातकों की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डलियों का संक्षिप्त एवं सामान्य फलादेश का वर्णन पिछले पृष्ठों में उल्लिखित है। स्मरणीय है कि चन्द्रमा एक राशि पर केवल सवा दो दिन तक ही रहता है, अतः इन कुण्डलियों में उसे सम्मिलित नहीं किया गया है, क्योंकि चन्द्रमा को सम्मिलित करने पर कुण्डलियों की संख्या कई सहस्र हो जाती तथा उतनी अधिक संख्या में कुण्डलियों का फलादेश प्रस्तुत करने से इस पुस्तक का आकार भी दसियों गुना अधिक बढ़ जाता, जिसे छपा पाना सर्वसाधारण के वश की बात नहीं होती। अतः केवल आठ ग्रहों वाली सूर्य-कुण्डली के आधार पर संक्षिप्त-फलादेश की पद्धति को ही इस ग्रन्थ में ग्रहण किया गया है।

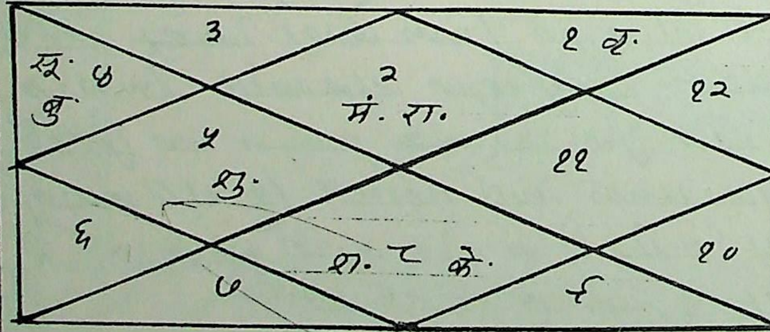
चूंकि चन्द्रमा के बिना यथार्थ-फलादेश सम्भव नहीं हो सकता तथा अन्य ग्रहों की विभिन्न स्थितियाँ भी फलादेश में अन्तर डालती हैं, अतः इस प्रकरण में विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों के फलादेश का उल्लेख किया जा रहा है। यथार्थ फलादेश के आकांक्षियों को उचित है कि वे अपनी जन्मकालीन सूर्य कुण्डली को लग्न कुण्डली में परिवर्तित कर, उसमें संबंधित जन्मकालीन वर्ष के पंचांग के आधार पर चन्द्रमा को यथास्थान स्थापित करें, तदुपरान्त जो कुण्डली तैयार हो उसके विभिन्न भावों की विभिन्न राशियों पर स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश अगले 'ग्रहफलादेश प्रकरण' में वर्णित विवरण के अनुसार समझलें।

<u>सूर्य कुण्डली को लग्न कुण्डली में बदलने की विधि</u> यह है कि मान लो किसी व्यक्ति का जन्म विक्रम संवत् १९९४ के द्वितीय आषाढ़ मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को रात्रि के १० बजे बाद हुआ हो तो उसकी सूर्य-कुण्डली इस ग्रन्थ के कुण्डली खण्ड में पृष्ठ २०० पर उल्लिखित

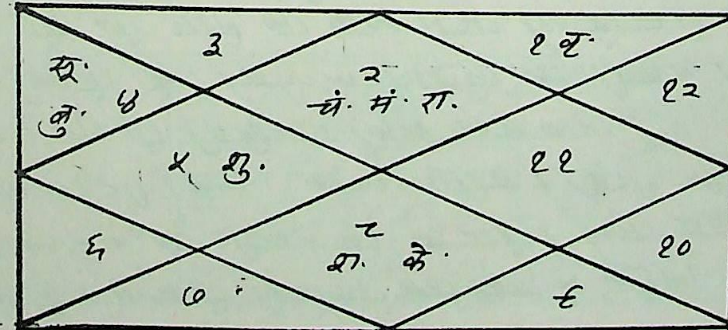
कुण्डली संख्या ६२६ के अनुसार इस प्रकार होगी—

जब संवत १९८४ ई॰ का पंचाङ्ग देखा तो ज्ञात हुआ कि जिस मास की जिस तिथि के जातक का जन्म हुआ। उस समय वृष राशि विद्यमान थी, अतः जातक की जन्म लग्न वृष हुई। जन्म लग्न के आधार पर जब इस सूर्य-कुण्डली को बदला गया तो जन्मकुण्डली का स्वरूप निम्नानुसार निर्धारित हुआ—





जातक के जन्म के समय चन्द्रमा भी वृष राशि में ही था अतः चन्द्रमा को भी मंगल तथा राहु के साथ लग्न में ही स्थापित किया गया तो जन्म कुण्डली का यथार्थ स्वरूप नीचे दिए अनुसार निर्धारित हुआ —

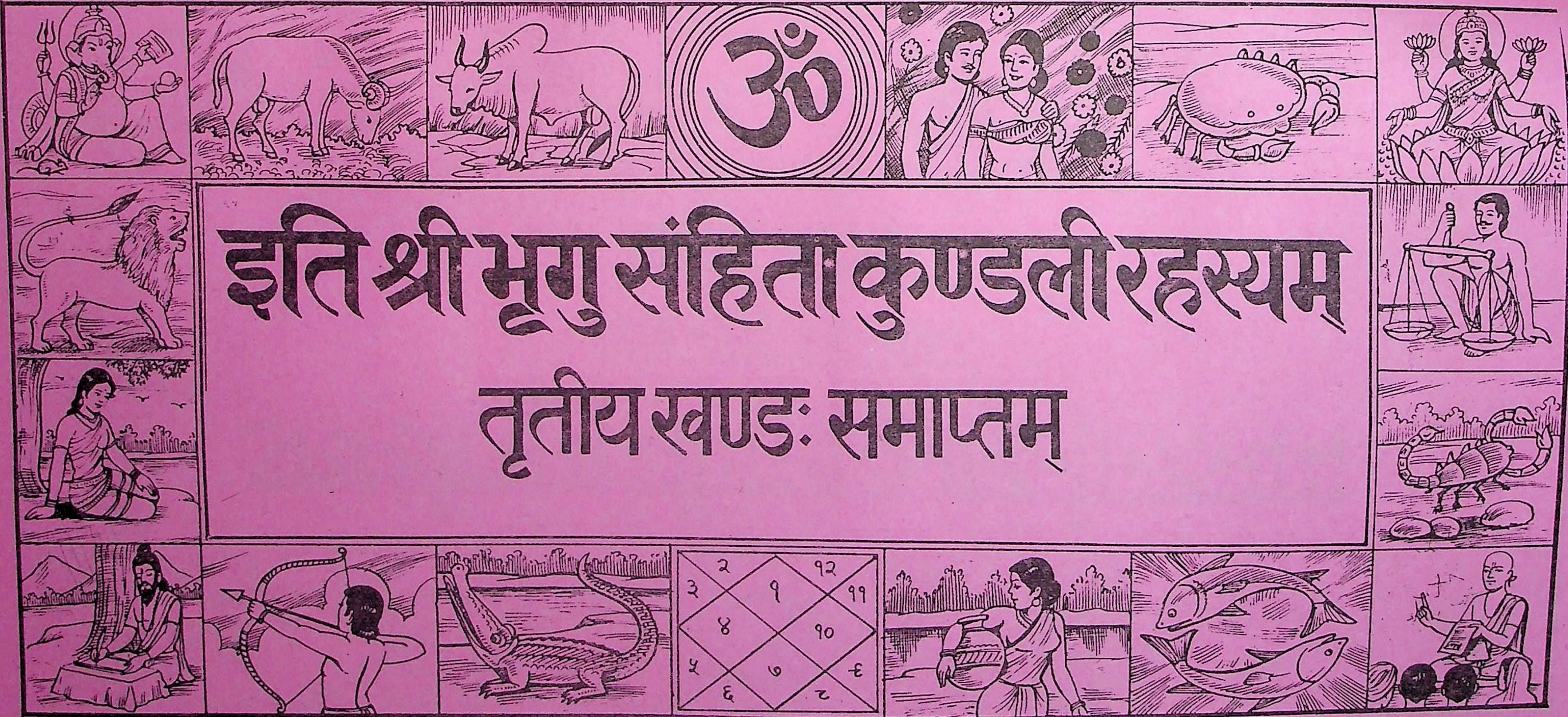


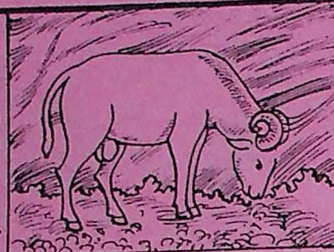
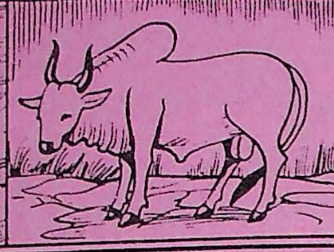
अतः इस कुण्डली के आधार पर ग्रहस्थिति का विस्तृत फलादेश जानने हेतु अगले प्रकरण में वर्णित ग्रह फलादेश के अध्ययन की आवश्यकता होगी।

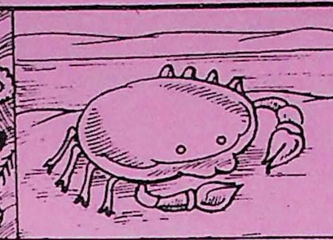
ग्रहों की युति भी फलादेश में अन्तर ले आती है। साथ ही विंशोत्तरी महादशा के अनुसार चलने वाले ग्रहों की अन्तर-प्रत्यन्तर आदि दशाओं का प्रभाव भी जातक के जीवन पर पड़ता है। अतः ग्रह-फल के अतिरिक्त ग्रह-युति-फल तथा दशा-अन्तर्दशा फल पर भी विचार करना चाहिए। किसी भी जन्मकुण्डली का यथार्थ फलादेश इन सबके सम्मिलित आधार पर ही निश्चित किया जा सकता है।

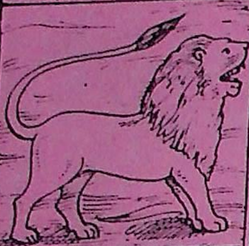
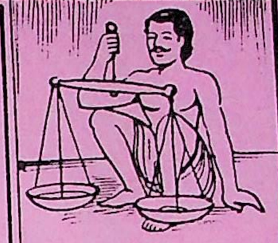
प्रस्तुत प्रकरण के प्रारम्भ में विभिन्न भावों में, विभिन्न राशियों पर स्थित विभिन्न ग्रहों के प्रभाव का वर्णन करने के उपरान्त, विभिन्न ग्रहों की युति का फल तथा विंशोत्तरी दशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा के फलादेश का वर्णन किया गया है। किसी भी सूर्य-कुण्डली का यथार्थ-फलादेश तभी प्राप्त हो सकता है, जबकि उसे जन्मकालीन लग्न कुण्डली में बदल कर, तत्कालीन राशि स्थित चन्द्रमा को यथास्थान स्थापित कर, उसके आधार पर पूर्ण रूपेण विचार किया जाय। इसी कारण यहाँ 'ग्रह फल प्रकरण' के साथ 'ग्रह-युति-फल' तथा विंशोत्तरी मतानुसारेण दशा-अन्तर्दशा फल का भी उल्लेख कर देना आवश्यक समझा गया है। आशा है, विद्वत्-पाठक इन सबके आधार पर जन्मकुण्डली का यथार्थ फलादेश ज्ञात कर सकेंगे।

॥इति श्री भृगुसंहिता कुण्डली रहस्यान्तर्गत जन्मकालिक सूर्य-कुण्डलीनां संक्षिप्त फलादेशं समाप्तम्॥


इति श्री भृगु संहिता कुण्डलीरहस्यम्
तृतीय खण्डः समाप्तम्
२ १२
३ १ ११
४ १०
५ ७ ९
६ ८

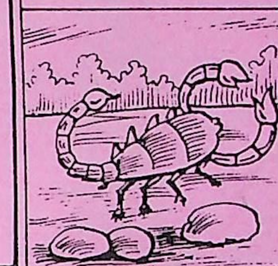



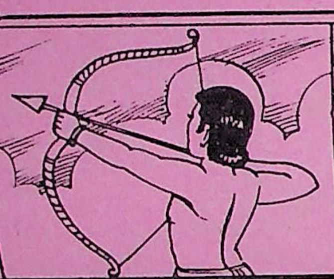
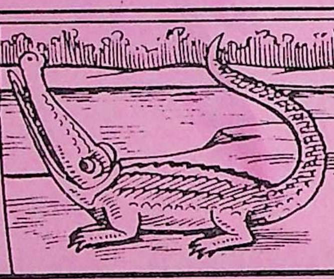
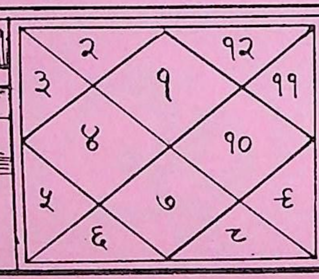



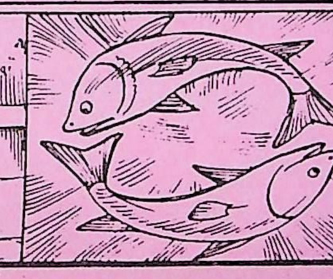
अथ श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

नवग्रह फलम्

चतुर्थ खण्डः


अथ ग्रह फलादेश प्रकरणम् (४)

विभिन्न राशियों पर, विभिन्न भावों में स्थित, विभिन्न ग्रहों का फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए-

'मेष' लग्न में सूर्य- 'मेष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है- (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक तेजस्वी, विद्वान, साहसी, स्वस्थ, स्वाभिमानी, पराक्रमी, महत्वाकांक्षी, व्यवहारकुशल, धीर-गंभीर तथा अधिक संतानों वाला होता है। दाम्पत्य-सुख में कमी रहती है। पत्नी अधिक सुन्दर नहीं होती। पति-पत्नी में मन-मुटाव भी रह सकता है। दैनिक-आजीविकोपार्जन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो आर्थिक-कठिनाइयाँ आती हैं। विद्याध्ययन तथा संतान-पक्ष में भी कठि-नाइयाँ आती हैं। कुटुम्ब, बन्धन-विषयक विवाद उठते हैं। आकस्मिक धन का लाभ होता है तथा आयु बड़ी होती है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो बुद्धि-बल एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। जातक भाग्यशाली, धार्मिक, दीर्घायु, यशस्वी होता है तथा ओजस्वी वाणी वाला एवं भाइयों का सुख पाता है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक भूमि, भवन, वाहन सम्पन्न, विद्वान, विद्या द्वारा सुख पाने वाला, पिता के अनुकूल तथा राजकीय मामलों में विफलता पाने वाला होता है। कुछ सम्मान अवश्य बना रहता है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो जातक विद्वान्, बुद्धिमान, यशस्वी, सन्तान-सुख से पूर्ण, कटुभाषी, अहंकारी तथा आमदनी के साधनों में रुकावट पाने वाला होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ आने पर भी जातक परम विद्वान, बुद्धिमान तथा बाहरी संबंधों से सफलता पाने वाला होता है। संतान-पक्ष से कुछ चिन्ताएँ रहती हैं। शत्रु-पक्ष कुछ कठिनाइयाँ खड़ी करता है, परन्तु पराजित भी होता है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो जातक सुख बल से

कठिनाइयों का सामना करने वाला, स्त्री के विषय में चिन्तित, संतान-पक्ष में कमजोरी तथा जीवन-यापन में कठिना-इयाँ पाने वाला होता है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो जातक को गुप्त-धन का लाभ होता है, संतान-पक्ष में कमजोरी, दैनिक-जीवन में कठिनाइयाँ, कुटुम्ब विषयक असंतोष एवं संघर्षपूर्ण जीवन रहता है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो जातक विद्वान, बुद्धिमान, ज्ञानी, धर्मात्मा, ईश्वरभक्त, दयालु, दानी, तीर्थ सेवी, भाई-बहिन तथा पराक्रम की वृद्धि वाला एवं निरन्तर सफलताएँ पाने वाला सौभाग्यशाली होता है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो जातक विदेशी भाषा का जानकार होता है। भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख पाता है तथा बुद्धि-बल से राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ पाता है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो जातक अर्थ-लाभ के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा लाभ भी खूब उठाता है। विद्या, बुद्धि तथा संतान का विशेष लाभ होता है। स्वार्थ-पूर्ति हेतु कटु-वचन कहकर लाभ उठाता है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो जातक का खर्च अधिक होता है। संतान एवं विद्या-पक्ष में कुछ हानि होती है। मानसिक-चिन्ताएँ रहती हैं। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

'वृष' लग्न में सूर्य - 'वृष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है —

(१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक को माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है, शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सफलता मिलती है तथा स्वभाव उग्र एवं व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। (2) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब का सुख मिलता है, माता के सुख में कुछ कमी रहती है। भूमि, भवन का सुख होते हुए भी पूर्ण उपभोग नहीं कर पाता। पुरातत्त्व का लाभ, आयु की वृद्धि तथा दैनिक जीवन में सुख रहता है। (3) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो भूमि, भवन एवं माता का सुख मिलता है, भाई-बहिन का सुख, पराक्रम की वृद्धि, धर्म-पालन में लापरवाही तथा भाग्योन्नति हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन तथा पिता का सुख

यथेष्ट मात्रा में मिलता है। ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन हो, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन, मोटर सुख, विद्या तथा संतान सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। जातक तेजी, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी होता है। आय के साधन उत्तम रहते हैं। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं द्वारा उत्पन्न कठिनाइयों पर विजय मिलती है; माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी, बाहरी-स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध, परदेश वास तथा खर्च की अधिकता रहते हुए भी सुख की उपलब्धि होती है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में सफलता; भूमि, भवन एवं मातृ-सुख की उपलब्धि, शारीरिक सौन्दर्य तथा पारिवारिक-सुख में कुछ कमी तथा हृदय में थोड़ी अशान्ति- ये फल प्राप्त होते हैं (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो परदेशवास, पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ; माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख में विघ्न एवं कुटुम्ब तथा धन का लाभ होता है (९) सूर्य 'नवमभाव' में हो तो मोटर सुख-सौभाग्य, पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख की वृद्धि एवं माता, भूमि तथा भवन के विषय में कुछ असंतोष तथा बुद्धिबल से सफलता मिलती है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता एवं माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख का लाभ मिलता है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो आय में अत्यधिक वृद्धि, माता, भूमि, भवन तथा कुटुम्ब का सुख, विद्या एवं संतान पक्ष में वृद्धि तथा जीवन आनन्दमय बीतता है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध, शत्रु-पक्ष पर कठिनाइयों के बाद प्रभाव की स्थापना; माता, भूमि, भवन तथा परिवार के सुख में कुछ कमी तथा परदेश में रहने का लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न में सूर्य- 'मिथुन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है- (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक अत्यन्त तेजस्वी, साहसी, परिश्रमी, उद्योगी, पुष्ट शरीर का, भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख पाने वाला, व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में सफल, हिम्मती, क्रोधी

फुर्तीला, प्रभावशाली तथा गृहस्थ-जीवन से सुखी होता है। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख को बढ़ाता है। भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। दैनिक जीवन में कुछ अशान्ति रहती है तथापि जातक धनी और हिम्मती होता है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो जातक अत्यन्त पराक्रमी, भाई-बहिनों वाला, प्रभावशाली, सुखी तथा आय एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ न्यूनता वाला होता है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख, पराक्रम तथा माता, भूमि, भवन एवं सम्पत्ति-सुख का लाभ, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं धन, सुख तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि में कमी, सन्तान से कष्ट, पराक्रम में कमी एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर धनोपार्जन में सफलता मिलती है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो पराक्रम-वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाई-बहिनों से वैमनस्य, खर्च की अधिकता, कठिन परिश्रम तथा साहस-वृद्धि से प्रभाव होते हैं। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री से सुख, शक्ति तथा प्रभाव में वृद्धि, व्यवसाय में लाभ, शारीरिक-सौन्दर्य की उपलब्धि तथा गार्हस्थ्य-जीवन सुखमय होता है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्त्व, आयु, पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी, कुटुम्ब का सामान्य सुख तथा परिश्रम से आर्थिक-क्षेत्र में लाभ होता है (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो कठिन परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति, धर्म-पालन में उदासीनता, भाई-बहनों से असन्तोष तथा पराक्रम, परिश्रम, उद्योग एवं तेज में वृद्धि होती है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय से लाभ तथा सम्मान प्राप्ति; पराक्रम, भूमि, भवन तथा मातृ-सुख में वृद्धि एवं सुख-सन्तोष की उपलब्धि होती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, यथेष्ट लाभ, भाई-बहिन के सुख में वृद्धि तथा सन्तान एवं विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है। जातक बड़ा साहसी तथा परिश्रमी होता है (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों से लाभ, शत्रुपक्ष पर प्रभाव-स्थापन होता है तथा जातक भीतरी कमजोरी छिपाकर हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

कर्क लग्न में सूर्य- 'कर्क' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक पुरुषार्थी, तेजस्वी, प्रभावशाली, धन एवं कुटुम्ब की शक्ति पाने वाला तथा व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त करने वाला होता है। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन, कुटुम्ब तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है, आयु में कमी तथा दैनिकचर्या में कठिनाइयाँ आती हैं। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा धन, भाग्य, धर्म, प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी तथा राज्य, व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं यशमान का लाभ होता है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो संतान सुख में बाधा, परन्तु संतान प्रभावशालिनी होती है। विद्या क्षेत्र में सफलता, धन की वृद्धि, आय उत्तम रहती है। जातक स्पष्टवादी तथा उग्र स्वभाव का होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव, बाहरी संबंधों से लाभ तथा खर्च अधिक रहता है। झगड़े एवं परिश्रम से प्रभाव की वृद्धि होती है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट, व्यवसाय में परेशानियाँ, मूत्रेन्द्रिय में विकार, पारिवारिक कठिनाइयाँ, परन्तु प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो आयु व निकटों का आक्रमण, पुरातत्व की हानि, पेट में बीमारी धन तथा कुटुम्ब-सुख में कमी, परन्तु रहन-सहन धनिकों जैसा होता है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो धर्म, मान-प्रतिष्ठा एवं भाग्य की प्रबलता, पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिनों का सुख हो, जातक स्वार्थी, सुखी हो। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ एवं माता, भूमि, भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो धन का लाभ, विद्या-बुद्धि में प्रवीणता, संतान-पक्ष से लाभ तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी रहती है। जातक ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है। (१२) सूर्य

'द्वादशभाव' में हो तो बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का यथेष्ट लाभ, परन्तु खर्चीली ढंग के रहन-सहन से खर्च की अधिकता, कौटुम्बिक तथा आर्थिक सुख में कमी तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'सिंह' लग्न में सूर्य — 'सिंह' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य, शक्ति तथा आत्मबल का लाभ, लम्बा कद होता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ तथा असंतोष बने रहते हैं। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि, पुरातत्व का लाभ एवं समाज में प्रतिष्ठा होती है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों से वैमनस्य, पराक्रम में कमी होते हुए भी हिम्मत में वृद्धि, भाग्यवृद्धि तथा धर्म में आस्था होती है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन तथा शारीरिक-सुख का लाभ, पिता से वैमनस्य एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष प्रयत्नों से ही लाभ होता है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक आत्मज्ञानी तथा बुद्धिबल द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करने वाला तथा अहंकारी होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक यशस्वी, कठिनाइयों से न घबराने वाला, कम सुखी, अधिक खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाने वाला होता है। रोग एवं परेशानी भी रहती है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो जातक व्यवसाय-क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता पाने वाला, स्त्री-पक्ष से वैमनस्य वाला, शारीरिक शक्तिशाली, स्वाभिमानी तथा अपने यश का विस्तार करने वाला होता है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो जातक आयु, पुरातत्व एवं बाहरी सम्बन्धों की शक्ति पाने वाला, क्रोधी तथा कठिन परिश्रमी, कौटुम्बिक सुख पाने वाला होता है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो भाग्य शक्ति प्रबल, धर्म में रुचि, भाई-बहनों से असन्तोष, स्थूल शरीर, भाग्यशाली, ईश्वर भक्ति तथा पराक्रम के विषय में लापरवाही रहेगी,

(१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता से वैमनस्य, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति तथा प्रतिष्ठा एवं माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख रहता है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अनैतिक-शक्ति से वृद्धि, विद्या, बुद्धि तथा संतान का सुख रहता है। जातक स्वार्थी तथा उग्र स्वभाव का होता है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो शरीर दुर्बल, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, खर्च में अधिकता, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव तथा अनेक कठिनाइयों के बावजूद उन पर विजय आदि फल प्राप्त होते हैं।

'कन्या' लग्न में सूर्य— 'कन्या' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक दुर्बल शरीर का, खूब खर्च करने वाला, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाने वाला तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा असंतोष पाने वाला होता है। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब की हानि, खर्च के कारण कठिनाई तथा पुरातत्व एवं आयु का लाभ होता है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी, पुरुषार्थ द्वारा सफलता, हिम्मत तथा प्रभाव की वृद्धि के साथ ही भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता-भूमि तथा भवन के सुख में कमी, बाहरी स्थानों से सुख तथा धन का लाभ एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से कुछ असंतोष। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कमी, खर्च चलाने की परेशानी तथा सामान्य लाभ होता है। ऐसा जातक चंचल स्वभाव का तथा घुमावदार बातें करने वाला होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं से परेशानी, परिश्रम द्वारा खर्च चलाया जाना, बाहरी संबंधों से सामान्य लाभ तथा खर्च की अधिकता रहती है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि, बाहरी स्थानों से हानि-लाभ दोनों, शरीर दुर्बल, स्वभाव क्रोधी तथा चंचल एवं धन की ओर से चिंता रहती है।

(८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व के कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि, खर्च अधिक, बाहरी संबंधों से लाभ, कौटुम्बिक-सुख में कमी, धन-हानि तथा धन के विषय में अत्यधिक चिन्ता—ये फल होते हैं। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो जातक प्रायः नास्तिक होता है। बाहरी संबंधों से लाभ, भाई-बहिन के सुख में कमी तथा धन के विषय में चिन्ता रहती है (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाई, खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों से लाभ तथा भूमि, भवन एवं माता के सुख में कुछ कमी रहती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो यद्यपि आमदनी होती है परन्तु खर्च चलाने की चिन्ता रहती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, सुख तथा सम्मान मिलता है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। [illegible] है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों से लाभ तथा सम्मान की उपलब्धि, शत्रु-पक्ष एवं रोग आदि से परेशानी, परन्तु साहस द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव-स्थापित करता है।

'तुला' लग्न में सूर्य— 'तुला' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है— (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक शक्ति एवं सौन्दर्य में कमी, पराक्रम की कमी, स्त्री-पक्ष से लाभ, सुन्दर स्त्री की उपलब्धि तथा व्यवसाय की उन्नति होती है। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक धन तथा कुटुम्ब से सुखी, प्रभावशाली, परन्तु आयु तथा पुरातत्व की कुछ हानि पाता है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के साथ, धन तथा धर्म की वृद्धि हो। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि, भवन एवं माता का अपूर्ण सुख, आमदनी में कठिनाई तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता एवं सम्मान की उपलब्धि हो। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से असंतोष, विद्याध्ययन में कठिनाई, बुद्धि एवं परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ आय तथा दिमाग में कुछ परेशानियाँ होती हैं। (६) सूर्य 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रुओं पर विजय तथा उनसे लाभ, आय

आय, बाहरी सम्बन्धों से लाभ तथा खर्च की अधिकता होती है। जातक बहुत हिम्मती तथा बहादुर होता है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दरी पत्नी मिलती है, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है। चित्त चिन्ताग्रस्त बना रहता है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो कठिनाइयों से धनोपार्जन तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। आयु की वृद्धि, परन्तु पुरातत्त्व के लाभ में कमी आती है। धन-वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कौटुम्बिक-सुख भी मिलता है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो धर्म एवं भाग्य की वृद्धि होती है। धन तथा सुख खूब मिलता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता का लाभ, आय में वृद्धि, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी होती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में बहुत वृद्धि होती है। सन्तान-पक्ष से असंतोष, विद्याध्ययन में कमी तथा वाणी में तेजी रहती है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाभ, शत्रु-पक्ष के मिलता झगड़ों से लाभ एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न में सूर्य— 'वृश्चिक' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, क्रोधी, आत्माभि-मानी, प्रभावशाली, दबंग; पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से सुख, सहयोग तथा सम्मान पानेवाला, सुन्दर वस्त्र-भूषणों का शौकीन, घमण्डी होता है। स्त्री से वैमनस्य तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो पितृ-पक्ष से धन एवं कौटुम्बिक-सुख का लाभ, राज्य तथा व्यवसाय से लाभ, आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ तथा दैनिक जीवन सुखी होता है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी; पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता; धर्म तथा भाग्य की वृद्धि एवं तेजवृद्धि हो।

(४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता से मतभेद, भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी; राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र से लाभ एवं जातक स्वउन्नति करने वाला होता है। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान, सहयोग तथा लाभ एवं आमदनी के श्रेष्ठ साधन उपलब्ध होते हैं। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय, माता से कुछ मतभेद, पिता से भी मतभेद; राज्य तथा व्यवसाय में सफलता, खर्च तथा बाहरी संबंधों से परेशानी रहती है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री पक्ष से संतोष, दैनिक व्यवसाय में सफलता तथा जातक प्रभावशाली, भोगी, सुखी एवं उन्नतिशील होता है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश एवं लाभ; कौटुम्बिक-सुख, बाहरी स्थानों से संबंध तथा परिश्रम द्वारा धन की यथेष्ट वृद्धि होती है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो धर्म तथा भाग्य की उन्नति; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, भाई-बहिनों से मतभेद, पराक्रम में सामान्य वृद्धि तथा सुखी जीवन होता है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा लाभ, प्रतिष्ठा वृद्धि, माता के साथ वैमनस्य तथा भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो पिता से श्रेष्ठ लाभ, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान तथा धन-लाभ; विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का लाभ हो। जातक स्वाभिमानी, तेजस्वी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च कठिनाई से चलना, बाहरी स्थानों के संबंध से कष्ट एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। मुकदमे, झगड़े आदि से लाभ मिलता है।

'धनु' लग्न में सूर्य - 'धनु' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो शक्तिशाली शरीर, धार्मिक रुचि होती है। जातक

सौभाग्यशाली होता है। सुन्दर स्त्री, उत्तम गृहस्थ-सुख तथा दैनिक व्यवसाय से लाभ होता है। (२) सूर्य 'द्वितीयभाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ प्रचुर धन-संग्रह, कुछ मतभेदों के साथ कौटुम्बिक-सुख, आयु-वृद्धि, पुरातत्व का लाभ तथा भाग्योन्नति होती है। जातक स्वार्थ-सिद्धि हेतु धर्म का पालन करता है। (३) सूर्य 'तृतीयभाव' में हो तो कुछ असंतोष सहित भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। धर्म-पालन तथा भाग्य-वृद्धि के साथ ही जातक हिम्मती तथा यशस्वी होता है। (४) सूर्य 'चतुर्थभाव' में हो तो माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है, धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में प्रभाव, सहयोग तथा लाभ। (५) सूर्य 'पंचमभाव' में हो तो संतान, विद्या तथा बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। जातक धार्मिक, ज्ञानी तथा विद्वान होता है। दैनिक आमदनी में कुछ कमी रहती है। वाणी में उग्रता के कारण अधिक उन्नति नहीं होती। (६) सूर्य 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष एवं झगड़े मुकद्दमों से लाभ हो। धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं, बाहरी संबंधों से लाभ तथा भाग्य-वृद्धि। (७) सूर्य 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से सुख एवं दैनिक व्यवसाय में सफलता मिले। जातक भाग्यशाली, ईश्वर-भक्त, प्रभावशाली तथा श्रेष्ठ शारीरिक-सुख पाने वाला होता है। पत्नी कुछ तेज स्वभाव की होती है। (८) सूर्य 'अष्टमभाव' में हो तो आयु-वृद्धि, पुरातत्व का लाभ, दैनिक आय उत्तम, तथापि भाग्योन्नति में रुकावटें। कौटुम्बिक-सुख तथा धन-संचय में कमी रहती है। (९) सूर्य 'नवमभाव' में हो तो भाग्य, धर्म, यश तथा प्रभाव की वृद्धि। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद तथा पराक्रम में कुछ कमी हो। (१०) सूर्य 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग तथा सफलताओं की उपलब्धि, माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख, प्रतिष्ठा वृद्धि के साथ जातक धार्मिक तथा बड़ा भाग्यशाली होता है। (११) सूर्य 'एकादशभाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में वृद्धि; विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक सज्जन, मधुरभाषी, विद्वान तथा सद्गुणी होता है। (१२) सूर्य 'द्वादश

भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों से कुछ विलम्ब के साथ सफलता मिलती है, धर्म तथा परोपकार में अधिक खर्च एवं शत्रु-पक्ष, मुकदमे, झगड़े आदि से लाभ एवं विजय की प्राप्ति होती है।

मकर लग्न में सूर्य- 'मकर' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है —— (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी, कभी-कभी शारीरिक कष्ट भी तथापि आयु की वृद्धि, स्त्री-पक्ष से सामान्य कठिनाई तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं। (२) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय नहीं होता, कुटुम्ब-सुख में व्यवधान; आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जातक रईसी ढंग का जीवन बिताता तथा खर्च करता है। (३) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में विशेष वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में कमी, आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ, भाग्योन्नति में रुकावटें तथा धर्म-पक्ष में कुछ कमी रहती है। (४) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख, आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ, दैनिक जीवन रईसी ढंग का, पिता के सुख में कमी तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें आती हैं। (५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कष्ट, विद्याध्ययन में कठिनाई, बुद्धि में कमजोरी, स्वभाव में क्रोध, लाभ हेतु विशेष परिश्रम की आवश्यकता तथा आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय, आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ, खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों के संबंध से असंतोष रहता है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ, यदा-कदा बीमारी एवं स्वास्थ्य-सौन्दर्य में कमी रहती है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व का विशेष लाभ, धन-संचय में कठिनाई तथा कौटुम्बिक सुख में बाधायें आती हैं। जातक बड़ा तेजस्वी, हिम्मती, बहादुर तथा प्रसिद्ध होता है। दैनिक जीवन भी अपना प्रभाव पूर्ण रहता है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि, धर्म-पालन में

कुछ कमी, यश में कमी तथा भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं होती। किसी जातक (हँसी?) ढंग का जीवन बिताता है। (10) सूर्य 'दशमभाव' में हो तो जातक पिता पक्ष से कोई-कष्ट पाता है। राज तथा व्यवसाय-पक्ष में विघ्न-बाधायें आती हैं; आयु तथा पुरातत्व की भी कुछ हानि होती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का साधारण-सुख उपलब्ध होता है। (11) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में वृद्धि, आयु तथा पुरातत्व शक्ति का विशेष लाभ, संतान पक्ष से कष्ट एवं विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। जातक उग्र स्वभाव का होता है। (12) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च एवं बाहरी संबंधों में कठिनाई, उदर-विकार, आयु तथा पुरातत्व की भी कुछ कठिनाई तथा शत्रु-पक्ष या कुछ कठिनाई के साथ विजय मिलती है। झगड़े खत्म हो जाते हैं।

'कुम्भ' लग्न में सूर्य– 'कुम्भ' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है — (1) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परन्तु शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह बड़ा तेजस्वी तथा दौड़-धूप करने वाला होता है। स्त्री-पक्ष से विशेष सुख मिलता है। पुरुषार्थ तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जीवन आनन्दमय बना रहता है। (2) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है। स्त्री-पक्ष से कोई असंतोष रहता है। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि के साथ जीवन प्रभावशाली बना रहता है। (3) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख मिलता है, पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। व्यवसाय तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता मिलती है, भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधा आती है। सम्मान भी अधिक नहीं मिलता। (4) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाई से मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं। पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

(५) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी से सुख प्राप्त होता है। ~~स्वास्थ्य~~ लाभ उत्तम रहता है। जातक प्रभावी, धनी तथा प्रभावशाली होता है। (६) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष तथा झगड़े-मुकदमे में विजय, ननिहाल से कुछ कठिनाई के साथ सफलता, खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्रोतों से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। (७) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री का पर्याप्त सुख, व्यवसाय में सफलता, ससुराल से लाभ, गृहस्थ जीवन के सुख तथा शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। (८) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति की वृद्धि, स्त्री-पक्ष से परेशानी, दैनिक आमदनी में कठिनाई, कठिन परिश्रम द्वारा धन का संचय तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि होती है। (९) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म में कमी, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। जातक स्वार्थ-सिद्धि हेतु उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। वह बड़ा साहसी, चौकन्ना तथा पराक्रमी होता है। (१०) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से लाभ होता है, स्त्री-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है, स्त्री-पक्ष से लाभ होता है; विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष की उन्नति होती है तथा इनसे सुख मिलता है। (१२) सूर्य 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहने के कारण कठिनाई होती है। बाहरी संबंधों से लाभ, स्थानीय व्यवसाय से हानि, स्त्री-सुख में कमी तथा शत्रु-पक्ष एवं झगड़े आदि में लाभ होता है।

<u>'मीन' लग्न में सूर्य</u>– 'मीन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल इस प्रकार होता है— (१) सूर्य 'प्रथम भाव' में हो तो जातक की शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु स्वास्थ्य विकार होता रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाने के लिए विशेष दौड़-धूप करनी पड़ती है।

स्त्री-सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद मिलता है तथा दैनिक आमदनी के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (2) सूर्य 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं प्रभाव में वृद्धि, कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि, आयु तथा पुरातत्त्व पक्ष में कुछ कमी एवं दैनिक-जीवन में परेशानियाँ रहती हैं। (3) सूर्य 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में विशेष वृद्धि, भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य, शत्रु-पक्ष पर विजय, भाग्योन्नति, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं; जीवन सामान्य ढंग से बीतता है। (4) सूर्य 'चतुर्थ भाव' में हो तो सुख एवं प्रभाव में वृद्धि; माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी तथा चिन्ता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा लाभ की वृद्धि होती है। (5) सूर्य 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कुछ कष्ट, विद्या, बुद्धि में कुछ व्यवधानों के बाद वृद्धि, मस्तिष्क में चिन्ता तथा क्रोध का निवास, लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ तथा परिश्रम द्वारा सफलतायें मिलती हैं। (6) सूर्य 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु पर विजय, झगड़े-झंझटों से लाभ, खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से कुछ कष्ट तथा मानसिक-अशान्ति-से फल होते हैं। परन्तु जातक बड़ा हिम्मती, धैर्यवान तथा स्वाभिमानी होता है। (7) सूर्य 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य, दैनिक व्यवसाय में अधिक दौड़-धूप करने पर सफलता, शारीरिक-कष्ट, तथापि प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है। (8) सूर्य 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्त्वशक्ति की हानि, जीवन पर घोर संकट, पेट के निम्न भाग में विकार तथा गुप्तांग-पक्ष की दुर्बलता के अतिरिक्त धन तथा कौटुम्बिक-सुख की प्राप्ति हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ता है। (9) सूर्य 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। प्रभाव की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है। पराक्रम, प्रभाव तथा पुरुषार्थ की कुछ कठिनाइयों से वृद्धि हो। (10) सूर्य 'दशम भाव' में हो तो पिता से कुछ वैमनस्य रहता है। राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

एवं कुछ कठिनाइयों के साथ भाता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। (११) सूर्य 'एकादश भाव' में हो तो जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आय में आशातीत वृद्धि करता है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। (१२) सूर्य 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च चलाने में कठिनाइयाँ आती हैं। बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है तथा शत्रुपक्ष भी कठिनाइयाँ उत्पन्न करता रहता है, परन्तु खर्च के बल पर जातक शत्रु-पक्ष को परास्त करदेता है। यह व्यक्ति क्रोधी तथा अहंकारी भी होता है॥ **इति सूर्य फलम्** ॥

अथ-चन्द्र फलम्- विभिन्न राशियों पर, विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल निम्नानुसार समझना चाहिए-

'मेष' लग्न में चन्द्रमा- 'मेष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है— (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो मानसिक एवं शारीरिक सुख-शान्ति पूर्व स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त होती है। स्वास्थ्य उत्तम तथा दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव में हो तो जातक बड़ा धनी तथा ऐश्वर्यशाली, कौटुम्बिक-सुख सम्पन्न, परन्तु मातृ-सुख में कमी; दैनिक-जीवन कुछ अशान्ति पूर्ण तथा आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी पाता है। (3) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि एवं भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त होता है। जातक धर्मात्मा, उदार, दानी, विचारक, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थभाव में हो तो माता, भूमि, भवन आदि का पूर्ण सुख मिलता है। मनोरंजन के साधन उपलब्ध रहते हैं। पिता से वैमनस्य

रहता है। राज्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कमी रहती है। कुल मिलाकर स्वजनों के सम्पन्न होते हुए भी यशस्वी एवं सम्मानित नहीं बन पाता। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान, संततिवान, धी-गम्भीर, शान्त, सन्तोषी, माता से सुखी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, परन्तु आमदनी के साधनों में कठिनाइयाँ पाने वाला, सबकुछ धैर्यपूर्वक सहन करने वाला तथा व्यवसाय एवं लाभ के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठाने वाला होता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठभाव' में हो तो जातक शत्रु-पक्ष से शान्ति पाने वाला, विपत्ति के समय धैर्य एवं विनम्रता से विजय पानेवाला होता है। घरेलू वातावरण में अशान्ति तथा कमियाँ रहती हैं। शुभ कार्यों में व्यय, बाहरी स्थानों से लाभ तथा शुभ कार्यों में रुचि होती है। (७) चन्द्रमा 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री-सुख, भोग-विलास, भूमि तथा सम्पत्ति-सुख की उपलब्धि; शारीरिक सौन्दर्य, सम्मान, मनोरंजन, यश, सुख में वृद्धि तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है। (८) चन्द्रमा 'अष्टमभाव' में हो तो मातृ-सुख, भूमि एवं अचल-सम्पत्ति की हानि, पुरातत्त्व तथा आयु सम्बन्धी संकट एवं घरेलू सुख-शान्ति में कमी होती है, तथापि धनोपलब्धि के अवसर निरंतर मिलते रहते हैं तथा धन-सुख प्राप्ति हेतु जातक प्रयत्नशील बना रहता है। (९) चन्द्रमा 'नवमभाव' में हो तो धर्म-कर्म, दान पुण्य, तीर्थयात्रादि की ओर आकर्षण एवं माता, भूमि तथा अचल-सम्पत्ति का सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि हो, जातक धनी तथा सौभाग्यशाली रहे। (१०) चन्द्रमा 'दशमभाव' में हो तो पिता से वैमनस्य, राज्य से सम्मान-लाभ, परिश्रमद्वारा व्यवसाय में सफलता एवं माता, भूमि, भवन आदि का सुख मिलता है। जातक अपना मकान बनवाता तथा सुखी रहता है। (११) चन्द्रमा 'एकादशभाव' में हो तो जातक अपने मनोबल से आय के साधनों को बढ़ाता तथा लाभ पाता है। विद्वान, बुद्धिमान तथा सन्ततिवान होता एवं उन्नति करता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादशभाव' में हो तो शुभ कार्यों एवं शान-शौकत में खर्च होता है। बाहरी स्थानों से संबंध, शत्रु पक्ष पर शान्ति से विजय-लाभ, सुखी एवं सन्तोषपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है।

'वृष' लग्न में चन्द्रमा- 'वृष' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो मनोबल में वृद्धि, भाई-बहनों का यथेष्ट सुख, पराक्रम वृद्धि, सफलता एवं सम्मान का लाभ, स्त्री तथा दैनिक आमदनी के पक्ष में कुछ असन्तोष तथा पारिवारिक व्यय चलाने में कठिनाइयाँ आती हैं। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो पराक्रम द्वारा धनोपार्जन, कौटुम्बिक सुख, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में कुछ कमी, आयु तथा पुरातत्व का लाभ एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत होता है। (३) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि; उद्योग, सफलता, धैर्य, साहस की वृद्धि होती है। धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती। भाग्य-वृद्धि हेतु अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में वृद्धि, भाई-बहिन का सुख, पराक्रम वृद्धि, पिता एवं राज्य के क्षेत्र में विशेष परिश्रम के बाद सफलता तथा सुखी जीवन। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष में विशेष सफलता, छोटे भाई-बहिनों से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध, बुद्धिबल से आय के साधनों में वृद्धि तथा ऐश्वर्य एवं धन की वृद्धि होती है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव, झगड़े-मुकदमे में विजय, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, व्यय की अधिकता तथा भीतरी चिन्ताएँ रहती हैं। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में हानि, चिन्ता, कठिनाइयाँ, संघर्षपूर्ण जीवन, परन्तु प्रतिष्ठा एवं यश की वृद्धि तथा शरीर सुन्दर एवं हृदय बलवान होता है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व का लाभ, पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कमी, धन-कुटुम्ब की वृद्धि तथा लाभ हेतु अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो धार्मिक एवं भाग्यशाली होने के साथ ही जातक को भाई-बहिनों का सहयोग मिलता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा जातक हिम्मती, प्रभावशाली एवं फुर्तीला होता है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता के साथ अल्प मतभेद, राज्य क्षेत्र में

अत्यधिक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय-प्राप्ति, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि एवं माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक-सुख यथेष्ट मिलता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि एवं विद्या-बुद्धि तथा संतान का श्रेष्ठ लाभ होता है। जातक विद्वान, बुद्धिमान, धनी, संतोषवान, मधुरभाषी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी; एवं झगड़े अथवा शत्रु क्षेत्र में बड़ी युक्तियों से काम लेने पर सफलता मिलती है।

'मिथुन' लग्न में चन्द्रमा

- 'मिथुन' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है —— (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-शक्ति एवं मनोबल द्वारा धनोपार्जन, पर्याप्त कौटुम्बिक-सुख, सुख, धन, यश तथा शारीरिक-सौन्दर्य का लाभ एवं स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख, दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयाँ, पुरातत्त्व की हानि तथा मानसिक-चिन्ता रहते हुए भी सुख तथा यश की उपलब्धि होती है। (3) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि, भाग्योन्नति में रुकावटें, धर्म-पक्ष में कमी तथा धन, यश, प्रतिष्ठा का लाभ होता है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुख में कमी, परन्तु भूमि, भवन, सम्पत्ति एवं कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि; पिता एवं राज्य द्वारा सुख तथा प्रतिष्ठा का लाभ, धन, सुख तथा व्यवसाय में सफलता मिलती है। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष में कमी, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता, दैनिक आमदनी उत्तम, सुख, धन तथा प्रतिष्ठा का लाभ होता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो कड़े परिश्रम द्वारा धनोपार्जन, शत्रु-पक्ष द्वारा हानि की प्राप्ति, खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ तथा धन कमाने के संबंध में अपयश प्राप्त होता है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो

तो स्त्री-पक्ष में कुछ रुकावटों के साथ सफलता, विवाहोपरान्त भाग्योन्नति, व्यवसाय एवं रोजगार का सुख, शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रतिष्ठा का लाभ होता है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कठिनाई, धन, कौटुम्बिक-सुख तथा दैनिक आमदनी में बाधायें एवं धनोन्नति हेतु विशेष परिश्रम करना आवश्यक होता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो धन-वृद्धि, धर्म-पालन, भाग्य में कुछ असन्तोष के साथ उन्नति, भाई-बहिनों के सुख का लाभ तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य द्वारा सुख, सहयोग तथा सम्मान की उपलब्धि, व्यवसाय की उन्नति; माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुखों का लाभ परन्तु धनोन्नति में कुछ बाधायें उपस्थित होती हैं। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख का पर्याप्त लाभ तथा विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष में पर्याप्त सफलता मिलती है। जातक विद्वान, बुद्धिमान, सुखी तथा यशस्वी होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी संबंधों से लाभ, कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी, शत्रु-पक्ष से समझ-बूझ कर काम निकालना तथा रोग-झगड़े आदि के कारण अशान्ति के लक्षण होते हैं।

'कर्क' लगन में चन्द्रमा – 'कर्क' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो स्वास्थ्य, सौन्दर्य, शक्ति, यश एवं प्रतिष्ठा का लाभ, स्त्री-पक्ष से असन्तोषपूर्ण सुख, दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा जातक उच्च कोटि का विचारक एवं सद्गुणी होता है। (2) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की विशेष उपलब्धि व आयु तथा पुरातत्त्व-लाभ में कमी होती है, परन्तु जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीता है एवं प्रतिष्ठित तथा भाग्यशाली होता है। (3) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में वृद्धि, धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। जातक पुरुषार्थी, धनी, उद्यमी, दानी तथा ईश्वर भक्त होता है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन आदि का पर्याप्त सुख मिलता है, शरीर सुन्दर, मन कोमल; पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता एवं सुख-सफलता होती है।

(५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि तथा संतान-पक्ष में कठिनाई से सफलता, मन तथा शरीर दुर्बल, मानसिक-शक्ति के बल पर आय उत्तम तथा कुछ अशान्ति होती है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष के प्रति विनम्र रह कर काम निकालना पड़ता है। बाहरी संबंधों से यश, धन की प्राप्ति, खर्च की अधिकता, आत्मबल की वृद्धि होती है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष के बाद सफलता, व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ, भोग-विलास में विशेष रुचि, शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल तथा आत्मिक-बल की उपलब्धि एवं सुख मिलते हैं। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य एवं पुरातत्व के लाभ में कमी, आयु की वृद्धि तथा शारीरिक सम्पन्नता धन-जन की वृद्धि होती है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो मन तथा शरीर शक्तिशाली, भाग्योन्नति, धर्म-पालन, पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। जातक भाग्यशाली, धार्मिक, यशस्वी तथा सज्जन होता। (१०) चन्द्रमा 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ, उच्चपद प्राप्ति, भूमि तथा भवन आदि का सुख मिले। जातक उच्चपद, सौन्दर्य तथा शक्ति को प्राप्त करता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो सौन्दर्य शारीरिक, मानसिक शक्ति एवं आय में वृद्धि एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। यह जातक कटुभाषी भी होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी सम्पर्क से लाभ, शान्त स्वभाव द्वारा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापन एवं मानसिक-अशान्ति रहती है। शरीर पतला-दुबला होता है।

'सिंह' लग्न में चन्द्रमा - 'सिंह' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है —— (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो जातक दुर्बल शरीर का, अल्प-प्रिय, कुछ चिंतित रहनेवाला, तथा स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ तथा कुछ हानि पाने वाला होता है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीयभाव' में हो तो जातक का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है। कुटुम्ब से कुछ असन्तोष, धन की अल्प-हानि, बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख की उपलब्धि, आयु-वृद्धि तथा कुछ कमी के साथ पुरातत्व का लाभ होता है। (३) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो

भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी, बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ, भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। अन्य लोग जातक को धनी तथा सुखी समझते हैं। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो कुछ कष्ट के साथ माता, भूमि एवं भवन संबंधी सुख की अल्प परिमाण में प्राप्ति, घरेलू खर्चों से परेशानी; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति होती है। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो जातक को विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में बाधायें आती हैं। खर्च की चिन्ता से मस्तिष्क परेशान रहता है। बुद्धि-बल से आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु कुछ असन्तोष भी रहता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु तथा रोग के संबंध में अधिक खर्च करना पड़ता है। बाहरी स्थान से लाभ, आमदनी कम, खर्च अधिक एवं खर्च के द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसाय के क्षेत्र में हानि, घरेलू खर्च चलाने में कठिनाई, स्त्री-पक्ष से हानि, बाहरी सम्पर्क से लाभ तथा शरीर दुर्बल होता है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा चिन्ता, उदर-विकार, बाहरी स्थानों से लाभ, धन की कुछ हानि तथा कौटुम्बिक-सुख अल्प होता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो भाग्य-वृद्धि, धर्म-पालन में कमी, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी एवं मानसिक-दुर्बलता रहती है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलतायें, पैतृक-सम्पत्ति का अधिक व्यय; माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी एवं खर्च की अधिकता से मानसिक-अशान्ति रहती है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च भी अधिक रहता है। विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु बाहरी लोग जातक को धनी समझा जाता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के संबंध से सुख, यश तथा धन का लाभ; शत्रु-पक्ष पर मनोबल तथा धन-खर्च के बल पर विजय-लाभ तथा झगड़े-मुकदमे आदि में बहुत धन खर्च होता है।

'कन्या' लग्नमें चन्द्रमा - 'कन्या' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की वृद्धि, परिश्रम द्वारा धन तथा यश का लाभ, सुन्दरी पत्नी तथा व्यवसाय से धन का लाभ होता है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब की वृद्धि, धन का संचय, पुरातत्त्व एवं आयु में वृद्धि तथा सुख, सम्मान एवं यश का लाभ होता है। (3) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में कमी, धनोपार्जन में कठिनाई, चिन्ताएँ, परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में अभिरुचि रहती है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख, प्रसन्नता; राज्य, व्यवसाय तथा पिता के क्षेत्र में सम्मान, सफलता एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान, विद्या-बुद्धि तथा आमदनी की वृद्धि होती है तथा जीवन सुखी बीतता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष द्वारा मानसिक-अशान्ति तथा विनम्रता द्वारा उस पर सफलता पाकर लाभ-प्राप्ति, खर्च की अधिकता तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता रहता है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दरी पत्नी एवं भोगादि के साधनों की उपलब्धि, व्यवसाय में सफलता, शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सुख, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ, बाहरी स्थानों से लाभ, स्थानीय आमदनी के साधनों में रुकावटें तथा धन एवं कौटुम्बिक सुख की उपलब्धि होती है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो धन का यथेष्ट लाभ, आकस्मिक दैवी-सहायताओं की उपलब्धि, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम-वृद्धि में कुछ कमी रहती है। (१०) चन्द्रमा 'दशमभाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यवसाय से पूर्ण लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति; भूमि, भवन एवं माता के सुख तथा धन, सुख, यश की उपलब्धि होती है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी उत्तम, मनोबल द्वारा धन-लाभ, विद्या में कमी, सन्तानों से वैमनस्य तथा चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों से लाभ होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में

हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से पर्याप्त लाभ, खर्च के कारण कभी-कभी चिन्ता, शत्रु-पक्ष पर विजय, एवं धन खर्च करके विजय-लाभ तथा बीमारी एवं झगड़ों में धन खर्च होता है।

'तुला' लग्न में चन्द्रमा- 'तुला' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथमभाव' में हो तो सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं राजनीतिक क्षेत्र में सम्मान की उपलब्धि तथा सुन्दरी पत्नी एवं व्यावसायिक क्षेत्र में लाभ होता है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीयभाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब-सुख में कमी, धन-संचय के लिए युक्तियों का आश्रय लेने की आवश्यकता तथा आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है। (3) चन्द्रमा 'तृतीयभाव' में हो तो भाई बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, पुरातत्व का लाभ, धर्म, भाग्य एवं साहस की वृद्धि होती है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थभाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख का न्यून लाभ तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग एवं सफलता की प्राप्ति होती है। (५) चन्द्रमा 'पंचमभाव' में हो तो सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ एवं आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। जातक तीक्ष्ण बुद्धि तथा धनी होता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठभाव' में हो तो चतुराई, मनोबल एवं थोड़ी रुकावटें, शत्रु-पक्ष पर विजय, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें, खर्च की अधिकता तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (७) चन्द्रमा 'सप्तमभाव' में हो तो व्यवसाय-पक्ष में विशेष सफलता, स्त्री द्वारा उन्नति तथा प्रभाव-वृद्धि; पिता, राज्य एवं व्यवसाय से लाभ तथा यश की प्राप्ति एवं शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा की उपलब्धि होती है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि; पिता से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। (९) चन्द्रमा 'नवमभाव' में हो तो धर्म तथा भाग्य की वृद्धि; पिता, राज्य एवं व्यवसाय-

पक्ष से सुख, सहयोग तथा यश का लाभ, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र से सुख, सहयोग एवं धन का लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। जातक स्वाभिमानी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय से सफलता, यश, सम्मान की प्राप्ति तथा अन्य लाभ होते हैं। संतान-पक्ष से सामान्य असंतोष तथा विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। जातक चालाक तथा व्योपारी भी होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी स्थानों से लाभ, खर्च की अधिकता; पिता, व्यवसाय एवं राज्य-पक्ष से कुछ हानि, प्रतिष्ठा में कमी तथा शत्रु-पक्ष पर शक्ति एवं चतुराई से सफलता प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा- 'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है— (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो दुर्बल शरीर, धर्म-प्राप्ति में कुछ कठिनाई आना, मनोनुकूल तथा सुन्दर स्त्री का लाभ तथा दैनिक व्यवसाय में सफलताएं मिलती हैं। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय में सफलता, कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि, धर्म-पालन में त्रुटि, पुरातत्व का लाभ, आयु-वृद्धि एवं धन, सुख तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है। (३) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी, मानसिक शक्ति में प्रबलता, धर्म तथा भाग्य की उन्नति एवं पुरुषार्थ द्वारा यश तथा ऐश्वर्य की उपलब्धि होती है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख, धर्म-पालन, मनोयोग से भाग्योन्नति तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि, संतान का श्रेष्ठ लाभ, बुद्धि बल से भाग्योन्नति तथा धर्म में आस्था होती है।

(६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं के कारण मन में अशान्ति तथा शान्ति-नीति द्वारा उन पर सफलता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सफलता तथा मातृ-पक्ष पर खर्च चलता है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यशालिनी मिलती है। दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ रहता है। दैनिक-व्यवसाय में सफलताएँ मिलती हैं। भाग्य तथा यश की वृद्धि होती है। शरीर कुछ कमजोर रहता है तथा माता एवं भूमि-पक्ष में कुछ कमी रहती है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि, धन एवं कुटुम्ब-सुख का लाभ मिले। जातक ध्यानी, सुखी, शान्त तथा यशस्वी होता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो धर्म तथा भाग्य की श्रेष्ठ उन्नति, भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी, पराक्रम की वृद्धि, समृद्धि एवं सुख से पूर्ण जीवन बीतता है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में असाधारण सफलताएँ मिलें। जातक धर्मात्मा, भाग्यशाली, सुखी, यशस्वी तथा धनी हो। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो श्रेष्ठ लाभ, सुख, सौभाग्य, यश की उपलब्धि; विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ लाभ, मनोबल बढ़ा हो। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, परन्तु उसकी पूर्ति भी सरलता से होती रहे, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ, विवेकहीन व्यक्ति, शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकलता है तथा भाग्यबल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न में चन्द्रमा— 'धनु' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में 'चन्द्रमा' का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य का लाभ, आयु-वृद्धि, पुरातत्व का लाभ, दैनिक आय में कुछ कठिनाइयाँ तथा कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री-सुख प्राप्त होता है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी रहते हुए अमीरी ढंग का रहन-सहन, आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि एवं मन में कुछ बेचैनी सी बनी रहती है।

(३) चन्द्रमा 'तृतीयभाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख में कमी, पराक्रम वृद्धि हेतु प्रयत्न करना पड़े, आयु तथा पुरातत्व का लाभ, भाग्य एवं धर्म की वृद्धि एवं संघर्षपूर्ण जीवन है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुख में कुछ कमी, जायदाद, आयु एवं पुरातत्व का लाभ तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ हो। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में कुछ कमी; आयु एवं पुरातत्व का लाभ, मस्तिष्क में चिन्तायें तथा बड़ी कठिनाइयों के बाद आमदनी के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव, आयु एवं पुरातत्व का लाभ, खर्च की परेशानी, शत्रु-पक्ष के कारण मानसिक-कष्ट तथा बाहरी स्थानों से संबंधों में कमी रहती है। (७) चन्द्रमा 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट, दैनिक-व्यवसाय में कठिनाई, आयु तथा पुरातत्व का लाभ, दैनिक जीवन में प्रसन्नता, शारीरिक सौन्दर्य का लाभ, परन्तु स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। (८) चन्द्रमा 'अष्टमभाव' में हो तो आयु-वृद्धि, पुरातत्व का लाभ, दैनिक जीवन ऐश्वर्यपूर्ण, धन के विषय में चिन्ता तथा कौटुम्बिक सुख में कमी है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं, यश में कमी रहती है, धर्म का यथोचित पालन नहीं होता, आयु तथा पुरातत्व-लाभ की वृद्धि होती है; भाई-बहिनों से मतभेद, पराक्रम में भी यथोचित वृद्धि न होना तथा जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, आयु तथा पुरातत्व का लाभ; भूमि, भवन तथा माता के सुख में कुछ कमी, परन्तु जीवन ठाठ का बीतता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो कुछ परेशानियों के साथ लाभ, आयु तथा पुरातत्व की श्रेष्ठ शक्ति की उपलब्धता, दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण; विद्या, बुद्धि तथा संतान-पक्ष से कुछ कमी एवं चिन्तायें हैं।

(१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के मामले में बहुत कठिनाई, बाहरी संबंधों से लाभ; आयु एवं पुरातत्व की हानि, दैनिक-जीवन अशान्तिपूर्ण, परन्तु शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं झगड़ों में विजय मिलती है।

'मकर' लग्न में चन्द्रमा - 'मकर' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में चन्द्रमा का फल इस प्रकार होता है — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि, कार्य-कुशलता एवं यश का लाभ हो। पत्नी सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिनी मिले, दैनिक व्यवसाय में सफलता। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब की, स्त्री के कारण कुछ कठिनाई का अनुभव, आयु तथा पुरातत्व-शक्ति में वृद्धि एवं रहन-सहन ठाट-बाट का होता है। (३) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख, पराक्रम की वृद्धि; स्त्री, व्यवसाय तथा कुटुम्ब से सुख की उपलब्धि, भाग्य तथा धर्म की वृद्धि हो। जातक धनी, सुखी, सम्पन्न तथा यशस्वी होता है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख, घरेलू वातावरण उल्लासमय, सुन्दरी पत्नी तथा व्यवसाय में सफलता की उपलब्धि, पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन, मान, प्रतिष्ठा तथा सहयोग का लाभ होता है। (५) चन्द्रमा 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता, स्त्री तथा दैनिक आमदनी का सुख एवं स्थायी आमदनी के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं। जातक विनोदी स्वभाव का होता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में विनम्रता से काम निकलता है। स्त्री से विरोध, व्यवसाय में कठिनाइयों का सामना, खर्च की अधिकता तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की उपलब्धि, दैनिक व्यवसाय में पूर्ण सफलता, घरेलू-जीवन में आनंद, शारीरिक प्रभाव में कुछ कमी तथा यश एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में असंतोष रहता है।

(८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ, परन्तु स्त्री एवं दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, मन में अशान्ति, गार्हस्थ्य-सुख में कमी, धन तथा कौटुम्बिक-सुख की कुछ कठिनाइयों के साथ उपलब्धि, परन्तु दैनिक-जीवन ठाट-बाट का रहता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो धर्म तथा भाग्य की विशेष वृद्धि एवं भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की भी वृद्धि होती है। जातक धनी, यशस्वी, न्यायी तथा धार्मिक होता है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं स्वामी पक्ष मार्फत द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान तथा आर्थिक-लाभ की उपलब्धि होती है। मनोबल बढ़ा रहता है। पत्नी स्वाभिमानिनी तथा सुन्दर मिलती है, दाम्पत्य-जीवन आनन्दमय बना रहता है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में कुछ कमी रहती है, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी न्यूनता रहती है। गृहस्थी की चिन्ताएँ बनी रहती हैं, परन्तु विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट सुख मिलता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक होता है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। स्त्री-सुख में कमी तथा दैनिक-आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ रहती हैं। मन चिन्तित तथा अशान्त रहता है। शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों में विनम्रता से काम निकालने की भी प्रभाव की स्थापना होती है।

'कुम्भ' लग्न में चन्द्रमा - 'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' फल इस प्रकार होता है— (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर अस्वस्थ एवं मन चिन्तित रहता है, परन्तु शत्रुओं पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में सफलता मिलती है। स्त्री से कुछ मतभेद रहता है। दैनिक आमदनी के क्षेत्र में चिन्ताएँ तथा कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो परिश्रम पूर्वक धन का संचय होता है। कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष से परेशानी

रहते हुए भी झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ उठाता है। आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में कुछ परेशानी रहती है।
(3) चन्द्रमा 'तृतीयभाव' में हो तो मनोबल एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद
रहता है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद वृद्धि होती है। (4) चन्द्रमा 'चतुर्थभाव'
में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों (मुकद्दमों आदि)
से लाभ मिलता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। (5) चन्द्रमा 'पंचमभाव'
में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गुप्त-युक्तियों के
बल पर लाभ होता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में भी वृद्धि होती है। (6) चन्द्रमा 'षष्ठभाव'
में हो तो शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़े में सफलताएँ मिलती हैं। मन में
चिन्ताएँ, खर्च में कठिनाई तथा बाहरी संबंधों से परेशानी भी रहती है। (7) चन्द्रमा 'सप्तमभाव' में
हो तो स्त्री को बीमारी, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव, व्यवसाय-क्षेत्र में कठिनाई के बाद सफलता एवं शरीर में
रोग, मन में चिन्ताएँ रहते हुए भी मनोबल में वृद्धि होती है। (8) चन्द्रमा 'अष्टमभाव' में हो तो आयु
एवं पुरातत्त्व के विषय में कठिनाई आती है; शत्रु-पक्ष पर कठिनाइयों के बाद ही प्रभाव स्थापित होता है।
चिन्ताएँ भी रहती हैं, ननसाल-पक्ष कमजोर होता है, धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु
परिश्रम अधिक करना पड़ता है। (9) चन्द्रमा 'नवमभाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति
में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, यश में कमी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों
से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख में कुछ विघ्न आते हैं तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है।
(10) चन्द्रमा 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं, शत्रु-पक्ष
से भी परेशानी रहती है परन्तु माता, भूमि एवं भवन का सामान्य-सुख प्राप्त होता है। (11) चन्द्रमा

'एकादश भाव' में हो तो जातक अपने मनोबल तथा शारीरिक पराक्रम द्वारा आय की वृद्धि करता है, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ चिन्ता रहती है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने में कठिनाई रहती है, बाहरी सम्बन्धों से परेशानी तथा शत्रु-पक्ष से मानसिक-चिन्ताएं रहती हैं। शत्रु-पक्ष पर विनम्रता पूर्वक प्रभाव स्थापित करने में ही सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' की द्वादश भावों में स्थिति का फल - 'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होगा — (१) चन्द्रमा 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, सम्मान तथा यश की वृद्धि होती है। जातक मधुर स्वभावी, सर्वप्रिय तथा प्रभावशाली होता है। सन्तान एवं विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में बुद्धि-बल से उत्तम सफलता मिलती है। (२) चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का उत्तम सुख मिलता है। संतान-पक्ष से कुछ कठिनाई रहते हुए भी सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का अच्छा लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होकर जीवन आनन्दमय बना रहता है। (३) चन्द्रमा 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में वृद्धि, संतान-पक्ष से पूर्ण सहयोग मिलता है, परन्तु भाग्य एवं धर्म की उन्नति में रुकावटें आती हैं, यश कम मिलता है तथा स्वभाव में असहिष्णुता रहती है। (४) चन्द्रमा 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष की उन्नति, बुद्धि-बल से व्यवसाय में उन्नति, राज्य से सम्मान तथा पिता-पक्ष से सहयोग प्राप्त होता है। अनेक प्रकार से उन्नति-लाभ होता है। (५) चन्द्रमा 'पंचमभाव'

में हो तो माता, भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख-लाभ, विद्या तथा सन्तान-पक्ष की उन्नति, बुद्धि-बल से आजीविका में वृद्धि होती है एवं जातक ज्योतिष विद्या का, दूरदर्शी, कवि, विद्वानों का तथा वाक्पटु होता है। (६) चन्द्रमा 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से अशान्ति उत्पन्न किये जाने पर बुद्धि-बल द्वारा उसका प्रभाव स्थापित होता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं। बाहरी स्थानों से असन्तोषजनक लाभ तथा खर्च की अधिकता से परेशानी रहती है। (७) चन्द्रमा 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दर तथा बुद्धिमती पत्नी मिलती है। व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता; सन्तान-पक्ष एवं भोग-सुख तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, योग्यता एवं सम्मान की भी वृद्धि होती है। (८) चन्द्रमा 'अष्टम भाव' में हो तो आयु में वृद्धि, पुरातत्त्व का लाभ; विद्या एवं सन्तान-पक्ष में कमी, मन तथा मस्तिष्क में अशान्ति एवं धन तथा कौटुम्बिक-सुख में वृद्धि होती है। जातक सामान्य-जीवन व्यतीत करता है। (९) चन्द्रमा 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में रुकावटें आती हैं; सन्तान तथा विद्या पक्ष कमजोर रहता है। मन-मस्तिष्क में परेशानियाँ रहती हैं, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में यथेष्ट वृद्धि होती है। (१०) चन्द्रमा 'दशम भाव' में हो तो माता, पिता एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जातक विद्वान्, अनुशासन-प्रिय, बुद्धिमान तथा नीतिवान् होता है। माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। (११) चन्द्रमा 'एकादश भाव' में हो तो जातक बुद्धि-बल से अपनी आमदनी में यथेष्ट वृद्धि करता है। विद्या-बुद्धि की उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहता है, स्वार्थी भी होता है। (१२) चन्द्रमा 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक, बाहरी स्थानों से लाभ, सन्तान-पक्ष से कष्ट, विद्या में कमी तथा बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

विभिन्न राशियों में स्थित 'मंगल' का प्रभाव - जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित 'मंगल' का प्रभाव निम्नानुसार होता है -

'मेष' लग्न में 'मंगल' की बारह भावों में स्थिति का फल - 'मेष' लग्न में 'मंगल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होगा — (१) मंगल 'प्रथम भाव' में हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, आत्मबली, साहसी, लम्बी आयु वाला, परन्तु कभी-कभी रोगी होता है। पत्नी तथा दैनिक आमदनी के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। (२) मंगल 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक को शारीरिक कष्ट होता है तथा धन-संचय में कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है, परन्तु भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। (३) मंगल 'तृतीय भाव' में हो तो जातक पराक्रमी, साहसी होता है, शत्रु पक्ष को अपनी हिम्मत से पराजित करता है। भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति होती है तथा राज्य पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं। (४) मंगल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-सुख में भी कमी आती है। पिता एवं राज्य द्वारा लाभ होता है तथा धनोपार्जन हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ता है। (५) मंगल 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। कुछ कठिनाइयों के साथ आर्थिक-लाभ होता है, बाहरी स्थानों से आजीविका प्राप्त होती है तथा खर्च अधिक रहता है। (६) मंगल 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक निर्भय तथा शत्रुजयी होता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं, खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों से लाभ, शरीर से स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा अच्छा प्रभावशाली होता है। (७) मंगल 'सप्तम भाव' में

हो तो स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ, पिता एवं राज्य के द्वारा उन्नति एवं लाभ, शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभावशाली एवं धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि में न्यून सफलता प्राप्त होती है। (८) मंगल 'अष्टम भाव' में हो तो दीर्घायु एवं पुरातत्व का लाभ होता है परन्तु शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। आय के क्षेत्र में कठिनाइयों से सफलता मिलती है। धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ता बनी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। (९) मंगल 'नवम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति होती है। बाहरी स्थानों से सम्बंध, खर्च की अधिकता, पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में तथा माता, भूमि एवं भवन आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। (१०) मंगल 'दशम भाव' में हो तो पिता से शत्रुता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, शारीरिक प्रभाव में वृद्धि; माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी तथा विद्या-बुद्धि एवं संतान-पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। (११) मंगल 'एकादश भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में वृद्धि, धन के संबंध में असंतोष, संतान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी एवं शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। जातक बड़ा लालची होता है। (१२) मंगल 'द्वादश भाव' में हो तो जातक बाहरी स्थानों से अधिक सम्पर्क रखता है, खर्च अधिक होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में भी कमी रहती है। भाई-बहिनों के सुख में कमी, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रबलता रहती है। स्त्री-सुख में कमी आती है तथा दैनिक आमदनी में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'वृष' लग्न में मंगल की द्वादश भावों में स्थिति का फल- 'वृष' लग्न में 'मंगल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होगा— (१) मंगल 'प्रथम भाव' में हो

तो जातक को रक्त-विकार, आयु क्षीणता, दुर्बलता आदि की शिकायत होते हुए भी आत्मिक-शक्ति प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सुख मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्व संबंधी कठिनाइयाँ भी होती हैं। (२) मंगल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुम्ब के विषय में चिन्ता, बाहरी स्थानों से लाभ; विद्या-बुद्धि एवं संतान-पक्ष में कमजोरी, आयु तथा पुरातत्व के क्षेत्र में हानि एवं चिन्तायें तथा धर्म एवं भाग्य की वृद्धि होती है। (३) मंगल 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन एवं पराक्रम के पक्ष में हानि; स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि, शत्रुओं का पराभव, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि, प्रतिष्ठा में कमी तथा पिता एवं राज्य-पक्ष से हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। (४) मंगल 'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि, भवन एवं मातृ-सुख की हानि, घरेलू सुख में कमी, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता, बाहरी स्थानों से लाभ, खर्च की अधिकता, पिता एवं राज्य पक्ष से हानि तथा आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है। (५) मंगल 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में चिन्ता तथा हानि; स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में चिन्तायें; आयु एवं पुरातत्व की हानि, बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ, खर्च की अधिकता तथा व्यावसायिक उन्नति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (६) मंगल 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रुओं पर प्रभाव, स्त्री तथा दैनिक आमदनी के पक्ष में हानि, धर्म एवं भाग्य की वृद्धि, खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ, शरीर में कमजोरी तथा रक्त-वीर्य आदि के विकार रहते हैं। (७) मंगल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ लाभ; पिता एवं राज्य के

क्षेत्र में कठिनाइयाँ, शारीरिक-दुर्बलता एवं धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्तायें रहती हैं। (८) मंगल 'अष्टम भाव' में हो तो स्त्री, व्यवसाय, आयु एवं पुरातत्व विषयक हानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा परदेश में रहना पड़ता है। विदेश द्वारा धन-लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब विषयक परेशानियाँ रहती हैं तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी आती है। (९) मंगल 'नवम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से लाभ, भाग्य-बल से व्यावसायिक उन्नति, धर्म में आस्था, खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ; पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कमी एवं माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। (१०) मंगल 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य-पक्ष से कठिनाइयाँ, बाहरी स्थानों से सम्बन्धित व्यवसाय से लाभ; स्त्री पर प्रभाव होने पर भी उससे मनोमालिन्य; शारीरिक कमजोरी, रक्त-विकार आदि की शिकायतें; भूमि, भवन, माता तथा घरेलू-सुख में कमी, सन्तान से अनबन, विद्या का अल्प लाभ तथा सम्मान की वृद्धि होती है। (११) मंगल 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में वृद्धि, स्त्री-पक्ष तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ, धन तथा कौटुम्बिक क्षेत्र में कठिनाइयाँ, विद्या तथा सन्तान-पक्ष से कमी तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक बड़ा चतुर तथा स्वार्थी होता है। (१२) मंगल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होती है। स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी, शत्रु पर विजय एवं स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में लाभ-हानि के योग बनते-बिगड़ते रहते हैं।

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'मिथुन' लग्न में 'मंगल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है — (१) 'मंगल' 'प्रथम भाव' में

हो तो जातक शारीरिक-श्रम द्वारा यथेष्ट धन अर्जित करता है, शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है तथा माता एवं जोल्लू सुखों का असंतोषयुक्त लाभ होता है। स्त्री को बीमारी, परिश्रम द्वारा दैनिक आमदनी में लाभ एवं आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। ऐसा जातक क्रोधी तथा झगड़ालू स्वभाव का भी होता है। (2) मंगल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की हानि, शत्रु पक्ष से हानि, जुए-सट्टे में हानि; संतान-पक्ष में कमी तथा विद्या-बुद्धि का लाभ गुप्त-युक्तियों से होता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। धर्म में रुचि नहीं होती एवं भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं। (3) मंगल 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन का सुख कुछ परेशानी के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय तथा शत्रुओं से लाभ मिलता है। भाग्य तथा धर्म का सामान्य लाभ एवं राज्य तथा पिता के पक्ष से यश-मान का लाभ एवं प्रभाव-वृद्धि होती है। (4) मंगल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता से सामान्य वैमनस्य युक्त लाभ; भूमि, भवन आदि के सुख की कुछ कठिनाइयों के साथ उपलब्धि; स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सामान्य कठिनाइयाँ; पिता एवं राज्य द्वारा यश की उपलब्धि तथा आमदनी अच्छी बनी रहती है। (5) मंगल 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष द्वारा कुछ वैमनस्य से लाभ, परिश्रम द्वारा विद्या-बुद्धि की उपलब्धि, आयु-वृद्धि तथा पुरातत्व का लाभ; गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा यथेष्ट लाभ तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (6) मंगल 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर सफलता, झगड़ों तथा मामा के द्वारा लाभ; धर्म तथा भाग्य-क्षेत्र में कुछ कमी, खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ एवं शारीरिक-परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। (7) मंगल 'सप्तम भाव' में हो तो व्यावसायिक एवं स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता की उपलब्धि; पिता एवं राज्य-पक्ष से लाभ, शारीरिक-शक्ति में वृद्धि, धन संचय में कमी तथा कुटुम्ब के कारण क्लेश प्राप्त होता है।

(८) मंगल 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ तथा शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद विजय मिलती है। परिश्रम द्वारा लाभ, धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी एवं भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। (९) मंगल 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती। शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख कुछ कठिनाइयों के बाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। (१०) मंगल 'दशम भाव' में हो तो परिश्रम द्वारा राज्य एवं पिता के क्षेत्र में यश तथा लाभ की उपलब्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा घरेलू-सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष से वैमनस्य युक्त लाभ, विद्या के क्षेत्र में सफलता तथा आमदनी अच्छी रहती है। (११) मंगल 'एकादश भाव' में हो तो धन का स्थायी लाभ होता है, परन्तु धन-संचित नहीं हो पाता, कौटुम्बिक मामले भी कष्टप्रद रहते हैं। सन्तान-पक्ष से त्रुटिपूर्ण लाभ, विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता एवं शत्रु-पक्ष पर प्रभाव तथा उससे लाभ की प्राप्ति होती है। (१२) मंगल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ, पराक्रम की वृद्धि, भाई-बहिनों से कुछ परेशानी के बाद लाभ, शत्रु पक्ष से कभी हानि और कभी लाभ, मातृ-पक्ष दुर्बल, स्त्री से कुछ परेशानी तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी कोई रोग होना सम्भव होता है।

'कर्क' लग्न में 'मंगल' की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'कर्क' लग्न में 'मंगल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है — (१) मंगल 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी; पिता, राज्य, सन्तान एवं विद्या के पक्ष में भी दुर्बलता; भूमि, भवन तथा माता

का सुख, स्त्री-पक्ष में असन्तोष पूर्ण वृद्धि, व्यवसाय में कठिनाइयों के साथ सफलता तथा पुरातत्व एवं आयु के क्षेत्र में कुछ कमी आती है। (2) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का सुख मिले, राज तथा पिता से लाभ, संतान तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होते हुए भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव हो; आयु तथा पुरातत्व के क्षेत्र में कमी एवं भाग्य, यश तथा धर्म की वृद्धि होती है। (3) मङ्गल 'तृतीयभाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में वृद्धि; विद्या तथा सन्तान का लाभ, बुद्धिबल से भाग्य-वृद्धि, यश एवं धर्म का लाभ; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं विजय प्राप्त होती है। (4) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख; विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता; स्त्री तथा व्यवसाय का उत्तम लाभ; पिता एवं राज्य के क्षेत्र में सुख, सहयोग; व्यवसाय में लाभ तथा धन की पर्याप्त आमदनी रहती है। (5) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ; कुछ असन्तोष के साथ आयु एवं पुरातत्व का लाभ, खर्च की अधिकता तथा बाहरी सम्बन्धों से यथेष्ट लाभ होता है। (6) मङ्गल 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय, विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ; भाग्य तथा धर्म की वृद्धि, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, खर्च की अधिकता तथा शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं शक्ति में कुछ कमी रहती है। (7) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो अनेक सुन्दर स्त्रियों का लाभ होता है, यद्यपि उनसे कुछ मतभेद भी रहता है। दैनिक व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। पिता तथा राज्य से सुख, सम्मान एवं आर्थिक-लाभ की प्राप्ति होती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। वाणी प्रभावशालिनी होती है तथा धन का पर्याप्त संचय होता है। (8) मङ्गल 'अष्टमभाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में कुछ हानि होती है।

धन तथा कौटुम्बिक - सुख की वृद्धि एवं भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। पत्नी का द्वारा यथेष्ट आर्थिक - लाभ भी होता है। (९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष का सुख मिलता है, बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, खर्च अधिक रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। (१०) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय पक्ष से सुख, यश, लाभ की प्राप्ति; खर्च की अधिकता; बाहरी संबंधों से लाभ, शारीरिक - सौन्दर्य में कुछ कमी; माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ असन्तोष एवं विद्या - बुद्धि, सन्तान तथा उच्च पद का श्रेष्ठ लाभ होता है। (११) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो कठिन परिश्रम द्वारा यथेष्ट धन - लाभ; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता; धन तथा कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति; विद्या - बुद्धि एवं सन्तान का लाभ एवं शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी तथा शत्रुजयी होता है। (१२) मङ्गल 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ; राज्य, पिता, विद्या - बुद्धि तथा सन्तान पक्ष में कुछ कमी का अनुभव; भाई - बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि; शत्रु - पक्ष पर विजय और स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु बुद्धिभ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी भी रहती है।

'सिंह' लग्न में 'मङ्गल' की द्वादश भावों में स्थिति का फल - 'सिंह' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है — (१) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, भाग्यशाली, धर्मात्मा, ईश्वर भक्त तथा माता एवं भूमि - भवन का सुख प्राप्त करने वाला होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। (२) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक को धन, कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं भूमि -

भवन के सुख में कमी रहती है। विद्या, बुद्धि तथा संतान-पक्ष में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की भी वृद्धि होती है। (3) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय, धर्म तथा भाग्य की उन्नति एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख तथा सफलता प्राप्त होती है (4) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है; पिता एवं राज्य के क्षेत्र में सुख, सम्मान एवं सहयोग मिलता है। आमदनी की भी खूब वृद्धि होती है (5) मङ्गल 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है, आयु की वृद्धि तथा पुरातत्व का लाभ होता है। आमदनी खूब रहती है। बाहरी स्थानों से संबंध निर्बल रहते हैं तथा खर्च भी अधिक रहता है (6) मङ्गल 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है एवं भाग्य की शक्ति से सुख मिलता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। बाहरी संबंध कमजोर रहते हैं तथा खर्च की परेशानी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। (7) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। पिता से कुछ मतभेद रहते हुए भी उनसे तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से सफलता मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य, सौभाग्य, धन तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि होती है। (8) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है। आमदनी खूब होती है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख का लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। जीवन सुख से बीतता है। (9) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है, परन्तु खर्च की अधिकता से कष्ट होता है। भाई-बहिन का सुख असन्तोषप्रद रहता है, परन्तु

पराक्रम की वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। (10) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता तथा यश की उपलब्धि होती है। शारी-रिक प्रभाव तथा सौभाग्य में वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन आदि का सुख मिलता है। संतान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। (11) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख में वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शत्रु तथा रोगों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक बड़ा धनी, प्रभावशाली तथा शत्रुजयी होता है। (12) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के संबंध में कठिनाई होती है तथा बाहरी संबंधों से कष्ट मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख की हानि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय मिलती है, स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है।

'कन्या' लग्न में 'मङ्गल' की द्वादश भावों में स्थिति का फल- 'कन्या' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है— (1) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी, परन्तु भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, आयु-वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है। (2) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी, धन का लाभ; विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में प्रभाव रखने से सफलता, आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ एवं धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति में कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं। (3) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी; शत्रु-पक्ष

पर प्रभाव, भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कठिनाइयाँ, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक पराक्रम करने पर थोड़ी सफलता एवं पिता के सुख की अल्प उपलब्धि होती है। (४) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन तथा भाई-बहिन के सुख में कमी, पुरातत्व एवं आयु का लाभ; स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता एवं लाभ के मार्ग में रुकावटें आती हैं। (५) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता मिलती है एवं लाभ के मार्ग में रुकावटें आती हैं। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ, खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है। (६) मङ्गल 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय, भाई-बहिनों से कुछ विरोध, पराक्रम की वृद्धि, आयु तथा पराक्रम का श्रेष्ठ लाभ, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में दुर्बलता, खर्च की अधिकता तथा शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी एवं रक्त-विकार आदि की शिकायतें रहती हैं। (७) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कष्ट, आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि, पराक्रम की वृद्धि, भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी; पिता एवं व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति, शारीरिक-कष्ट तथा धन-संचय एवं कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी बनी रहती है। (८) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व का लाभ, भाई-बहिन के सुख में कमी, आमदनी के क्षेत्र में भी कुछ न्यूनता, धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख के क्षेत्र में असंतोष एवं पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। (९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी, आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, खर्च की अधिकता, पराक्रम-वृद्धि, कुछ कठिनाई के साथ भाई-बहिन के सुख की उपलब्धि एवं माता, भूमि

तथा भवन का सुख प्राप्त होता है तथा जीवन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। (10) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है; शारीरिक-विकार उत्पन्न होता है; परन्तु हिम्मत बनी रहती है; माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है; सन्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है। (11) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो लाभ के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं; आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है; धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है; विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है; सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है एवं शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है तथा बोलता भी बहुत है। (12) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं; पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में सामान्य वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में जोखिम एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल — 'तुला' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है — (1) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सुख एवं प्रतिष्ठा का लाभ, धन तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि; माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त हो, स्त्री का सुख मिले, व्यवसाय में उन्नति एवं आयु तथा पुरातत्त्व की उपलब्धि होती है। (2) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब का सुख मिले, कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान

एवं विद्या-बुद्धि का लाभ हो, आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति की उपलब्धि एवं भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। (३) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की वृद्धि, धन का लाभ, स्त्री-पक्ष में सफलता, शत्रु-पक्ष पर विजय, धर्म तथा भाग्य की उन्नति एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं। (४) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख, स्त्री तथा व्यवसाय का श्रेष्ठ लाभ, पिता के सुख में कमी, राज्य तथा व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें तथा आमदनी अच्छी बनी रहती है। जातक सुखी तथा धनी होता है। (५) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है, बुद्धि-बल से व्यवसाय में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। आमदनी अच्छी रहती है खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। (६) मङ्गल 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है, धन-संचय में कमी, स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाई के साथ सफलता, भाग्य तथा धर्म की वृद्धि, खर्च का आधिक्य, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी तथा झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ होता है। (७) मङ्गल 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ बन्धन-सा रहते हुए भी भोग का यथेष्ट लाभ, दैनिक व्यवसाय उन्नत; पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी, शरीर में अस्वस्थता अथवा रक्त-विकार की सम्भावना तथा धन एवं कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। (८) मङ्गल 'अष्टमभाव' में हो तो स्त्री-पक्ष एवं दैनिक व्यवसाय से कुछ कष्ट; बाहरी स्थानों के संबंध तथा पुरातत्त्व से लाभ, आमदनी में वृद्धि; पराक्रम द्वारा धन तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि, भाई-बहिनों का सामान्य सुख

तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। (९) मङ्गल 'नवमभाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म की यथेष्ट वृद्धि, भाग्यशालिनी पत्नी की उपलब्धि तथा विवाहोपरान्त विशेष लाभ, खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख की विशेष उपलब्धि होती है (१०) मङ्गल 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यापार व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, स्त्री तथा कुटुम्ब के सुख में कमी, शरीर दुर्बल; सम्मान, भूमि एवं भवन के साथ ही माता का सुख भी मिलता है। संतान-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा विद्या, बुद्धि की कुछ कमी रहती है (११) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो धन का पर्याप्त लाभ, स्त्री-पक्ष से सुख एवं लाभ की उपलब्धि, धन तथा कुटुम्ब का सुख तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। संतान से असंतोष, विद्या-बुद्धि तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमी रहती है (१२) मङ्गल 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ; धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा असन्तोष, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि, शत्रु-पक्ष पर सफलता, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असंतोष रहता है

'वृश्चिक' लग्न में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'वृश्चिक' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है— (१) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-शक्ति में वृद्धि, शत्रु-पक्ष पर सफलता; माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता तथा आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है (२) मङ्गल 'द्वितीयभाव' में हो तो शारीरिक-श्रम द्वारा धनो-पार्जन, कुछ परेशानियों के साथ कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि; शारीरिक-सुख तथा स्वास्थ्य में

कमी, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता, आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि एवं धन, भाग्य तथा यश की हानि होती है। (3) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिनों से सामान्य वैमनस्य, शत्रु-पक्ष पर विजय, धर्म का समुचित पालन न हो पाना, भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक भरोसा करना तथा पिता, राज्य एवं व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। (4) मङ्गल 'चतुर्थभाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी, स्त्री-पक्ष से सामान्य मतभेद युक्त सुख-लाभ, दैनिक व्यवसाय में सफलता, लाभ एवं यश की उपलब्धि होती है। आमदनी उत्तम रहती है। (5) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का लाभ, शत्रु-पक्ष पर युक्तियों से सफलता, आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि, आमदनी श्रेष्ठ, खर्च की अधिकता से परेशानी का अनुभव तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। (6) मङ्गल 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में सफलता, भाग्य तथा धर्म में कमी, यश में भी कुछ कमी, खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं शारीरिक-प्रभाव तथा आत्मबल में वृद्धि होती है। (7) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी, जननेन्द्रिय में विकार, दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ; पिता, राज्य एवं व्यापार-व्यवसाय-पक्ष से सुख, सम्मान एवं सफलता की उपलब्धि; शारीरिक-शक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। (8) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं सुख में कमी, आयु तथा पुरातत्त्व-लाभ में भी कमी, उदर-विकार, शत्रु-पक्ष से परेशानी, आमदनी उत्तम, धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि के लिए प्रयत्न करना पड़े तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है।

(९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो धर्म एवं भाग्य में कुछ कमी रहती है, शत्रु-पक्ष के कारण भाग्योन्न-
-ति में बाधा आती है। खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ, आमदनी उत्तम, पराक्रम
एवं भाई-बहिन के सुख में वृद्धि तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। (१०) मङ्गल
'दशम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सह-
-योग एवं सफलता की उपलब्धि, शत्रु-पक्ष पर विजय, शारीरिक-शक्ति में वृद्धि; माता, भूमि तथा
भवन के सुख में कुछ कमी तथा विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। (११)
मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो शारीरिक-श्रम द्वारा पर्याप्त लाभ, शत्रु-पक्ष से कुछ कष्ट,
शारीरिक बीमारी, धन तथा कौटुम्बिक-सुख में वृद्धि; विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता, शत्रु-
पक्ष पर विजय तथा ननसाल-पक्ष से लाभ होता है। (१२) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक
रहे, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख शान्ति का लाभ, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि, शत्रु-
पक्ष पर विजय, स्त्री से कुछ मतभेद रहते हुए भी सुख की उपलब्धि तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ
परेशानियों के साथ लाभ होता है।

'धनु' लग्न में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'धनु' लग्न में
'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है— (१) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो शारी-
-रिक शक्ति उत्तम रहती है; विद्या, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का
सुख कुछ कमी के साथ मिलता है; स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ लाभ होता
है। आयु एवं पुरातत्त्व का क्षेत्र भी कमजोर रहता है। (२) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन का साधारण
संचय होता है। कौटुम्बिक-सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है।

आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति में बड़ी कठिनाई के साथ थोड़ी-बहुत सफ-
-लता मिलती है। धर्म का पालन भी कम ही होता है। (३) मङ्गल 'तृतीयभाव' में हो तो पराक्रम-वृद्धि,
भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी, विद्या तथा सन्तान-पक्ष में कमजोरी तथा शत्रु-पक्ष पर विजय
प्राप्त होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक
सफलता मिलती रहती है एवं जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। (४) मङ्गल 'चतुर्थभाव' में हो
तो माता, भूमि एवं भवन के सुख की हानि होती है, सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का पक्ष कमजोर
रहता है। शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। स्त्री तथा दैनिक
व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण
सफलता मिलती है। बुद्धि योग से आमदनी बढ़ती है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है।
(५) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता
मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व में कमी रहती है। उदर-विकार सम्भव है। बुद्धियोग से आमदनी
के क्षेत्र में सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (६)
मङ्गल 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है तथा सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र
में कमी रहती है। कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता
है। बाहरी संबंधों में कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी तथा मस्तिष्क में
परेशानी रहती है। (७) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट, व्यवसाय में हानि, बाहरी
संबंधों से लाभ एवं पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में साधारण सफलता मिलती है। शरीर में
कुछ कमजोरी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब का उत्तम सुख प्राप्त होता है। (८) मङ्गल अष्टम

भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति में कमी; उदर-विकार तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ; संतान-पक्ष से कष्ट, विद्या-पक्ष में कमजोरी, कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी में वृद्धि, धन तथा कुटुम्ब के सामान्य-सुख की उपलब्धि, पराक्रम की वृद्धि तथा भाई-बहिनों से विरोध रहता है। (९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है; विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है, खर्च की अधिकता, बाहरी संबंधों से लाभ, भाई-बहिनों से विरोध, परा-क्रम में कमी एवं कुछ त्रुटि के साथ माता, भूमि एवं भवन के सुख की उपलब्धि होती है। (१०) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो राज्य के क्षेत्र में बुद्धि-योग से सफलता मिलती है तथा पिता एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में हानि होती है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी; माता, भूमि एवं भवन के सुख की कुछ कमी के साथ उपलब्धि; विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ, परन्तु संतान पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। (११) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है, खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी संबंधों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ होता है। धन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि होती है। विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होता है, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय एवं सफलता की उपलब्धि होती है। (१२) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता रहती है, बाहरी संबंधों से लाभ होता है, सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है, भाई-बहिनों से विरोध रहता है, तथापि पराक्रम की वृद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय, झगड़ों से लाभ तथा स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है। दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मकर' लगन में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'मकर' लग्न में

'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है— (१) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। शक्ति भी बढ़ती है। माता, भूमि एवं भवन का उत्तम सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। जातक सुखी, धनी तथा चतुर होता है। (२) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो सामान्य असन्तोष के साथ धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। माता के सुख में कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति होती है। आयु तथा पुरातत्व शक्ति की वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा जातक अपने आर्थिक-लाभ का विशेष ध्यान रखता है। (३) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। हिम्मत तथा शक्ति की वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति के अतिरिक्त पिता, राज्य एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। (४) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक-व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में प्रभाव, हठयोग, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी पर्याप्त बनी रहती है। धन-लाभ के साधन सरलता से मिलते रहते हैं। (५) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-सुख का लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है। आमदनी अच्छी रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। (६) मङ्गल 'षष्ठ भाव'

में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव, झगड़ों से लाभ; माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी, दैनिक आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ, आय तथा धर्म की उन्नति, खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ तथा शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। (७) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं गृहस्थी के सुख में कमी; व्यवसाय, माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी; पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ; शारीरिक-सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि, धन-संचय में कठिनाइयाँ तथा कौटुम्बिक-सुख की सामान्य उपलब्धि होती है। (८) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ; माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी; आमदनी यथेष्ट उत्तम, धन-संचय में सफलता, कौटुम्बिक-सुख की सामान्य उपलब्धि, भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि तथा पराक्रम का लाभ होता है। (९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं जातक धनी, यशस्वी, धार्मिक तथा न्यायप्रिय होता है। खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी, पराक्रमी तथा विनोदी स्वभाव का होता है। (१०) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है, सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है एवं विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। (११) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। कुछ कमी के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। शत्रु-पक्ष

पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। (१२) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, भाई-बहिनों का सुख मिलता है, पराक्रम में वृद्धि होती है, शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है, स्त्री-सुख में कुछ कमी आती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

'कुम्भ' लग्न में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल-

'कुम्भ' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है- (१) मङ्गल 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है; भाई-बहिन का सुख प्राप्त रहता है, पराक्रम बढ़ता है; माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सुख-लाभ एवं आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। (२) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ धन एवं कौटुम्बिक-सुख की प्राप्ति; भाई-बहिन तथा पिता के सुख में कुछ कमी; विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता; आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि एवं भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। (3) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि; शत्रु-पक्ष से कष्ट; ननसाल-पक्ष से हानि; भाग्य तथा धर्म की उन्नति एवं पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन तथा सहयोग का लाभ होता है। (४) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। पिता, राज्य एवं स्थायी-व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग एवं यश का लाभ होता है तथा आर्थिक आमदनी की वृद्धि होती है। (५) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। भाई-बहिन तथा पिता से भी सुख

प्राप्त होता है। राज्य तथा व्यवसाय-क्षेत्र से लाभ होता है; आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आमदनी खूब रहती है, खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी खूब होता है। (६) मङ्गल 'षष्ठ भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। भाई-बहिन तथा पिता से कुछ मत-भेद रहता है। राज्य में प्रभाव की कमी तथा कठिनाइ-श्रम द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों से लाभ होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। (७) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। भाई-बहिन का सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। (८) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। आमदनी अच्छी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। (९) मङ्गल 'नवम भाव' में हो तो धर्म एवं भाग्य की विशेष उन्नति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख प्राप्त होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। पराक्रम की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का सुख मिलता है एवं माता, भूमि तथा भवन का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। (१०) मङ्गल 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पराक्रम में वृद्धि होती है। शारीरिक-

सौन्दर्य में कमी रहती है, परन्तु मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। माता के सुख में थोड़ी कमी रहती है, परन्तु भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है। (११) मङ्गल 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी उत्तम रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है, पराक्रम में वृद्धि होती है तथा धन का यथेष्ट उपार्जन होता है। कौटुम्बिक-सुख खूब मिलता है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का उत्तम लाभ होता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननसाल-पक्ष भी कमजोर रहता है। (१२) मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से यथेष्ट लाभ भी होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। परदेश में हेकड़ उन्नति होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष में कमजोरी, ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है तथा स्त्री से सुख मिलता है एवं दैनिक आमदनी भी उत्तम बनी रहती है।

'मीन' लग्न में मङ्गल की द्वादश भावों में स्थिति का फल— 'मीन' लग्न में 'मङ्गल' की विभिन्न भावों में स्थिति का फल इस प्रकार होता है— (१) मङ्गल 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि; धन, कुटुम्ब तथा भाग्य की समृद्धि; माता, भूमि एवं भवन के सुख का पर्याप्त लाभ; व्यवसाय तथा पिता सुख की वृद्धि, स्त्री-पक्ष उत्तम तथा आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। (२) मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुंब की वृद्धि, विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी; आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि एवं भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। जातक का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है।

(3) मङ्गल 'तृतीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब का सुख मिलता है एवं पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जातक धनी, यशस्वी, सुखी, शत्रु-जयी तथा धार्मिक होता है। (4) मङ्गल 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख की प्राप्ति के साथ ही भाग्यशालिनी पत्नी मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय एवं घरेलू सुख की अभिवृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं तथा घर बैठे ही आर्थिक-लाभ होता रहता है। ऐसा जातक बहुत धनी होता है। (5) मङ्गल 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या तथा सन्तान का पक्ष दुर्बल रहता है; धन, कौटुम्बिक-सुख, भाग्य तथा धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति की वृद्धि होती है। आमदनी बढ़ती है, खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। (6) मङ्गल 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी खर्च ठाठ से चलता है। कुटुम्ब से थोड़ा सुख मिलता है। भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है। खर्च की अधिकता रहती है। बाहरी सम्बन्ध असंतोषजनक रहते हैं। शारीरिक-शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है। (7) मङ्गल 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री भाग्यशालिनी मिलती है, व्यवसाय में लाभ होता है, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आमदनी खूब रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। (8) मङ्गल 'अष्टम भाव' में हो तो जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य, धर्म तथा यश में कमी आती है। आमदनी अच्छी रहती है, परिश्रम द्वारा

धन का संचय होता है। कौटुम्बिक-सुख मिलता है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। (९) मंगल 'नवमभाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। खर्च की कठिनाई रहती है। बाहरी संबंधों से असन्तोष होता है। भाई-बहिनों का सुख मिलता है, पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। (१०) मंगल 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है; धन तथा कौटुम्बिक सुख की उपलब्धि होती है। शारीरिक शक्ति, प्रभाव, यश, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की उपलब्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा वाणी में रूक्षता पाई जाती है। (११) मंगल 'एकादश भाव' में हो तो जातक की आमदनी में आपधिक वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की भी वृद्धि होती है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी खूब मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। (१२) मंगल 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन एवं कौटुम्बिक-सुख की कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

विभिन्न राशियों के विभिन्न भावों में 'बुध' का प्रभाव- जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित 'बुध' का प्रभाव निम्नानुसार होता है-

'मेष' लग्न के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल- 'मेष' लग्न की जन्म कुण्डली

भू० सं० ८२८३

कु० २०

के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (1) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो जातक पुरुषार्थी, रोग-पीड़ित तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी पाने वाला होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा तथा स्त्री-सुख के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। (2) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होती है, परन्तु धन-प्राप्ति हेतु कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है, आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है। (3) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है, भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है, पराक्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है, धर्म-पालन भी होता है। जातक विवेकी तथा परिश्रमी होता है। (4) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। पिता एवं राज्य-पक्ष में सफलता मिलती है। व्यवसाय में लाभ होता है। कुछ परेशानियों के बाद सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता है। (5) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष परिश्रम से सफलता मिलती है। बुद्धि-विवेक द्वारा भाग्य की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष से भी सफलता मिलती है। (6) बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रहता है एवं पुरुषार्थ द्वारा बड़े-बड़े काम सिद्ध होते हैं। भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है, स्व-पराक्रम के संबंध में कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से हानि उठानी पड़ती है। (7) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो पुरुषार्थ द्वारा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है, परन्तु स्त्री-पक्ष से कठिनाइयाँ आती रहती हैं। सामान्य शारीरिक कष्ट तथा रोग होते हैं

भाई-बहिन से सहयोग मिलता है तथा विवेक-बुद्धि प्रखर रहती है। (८) बुध 'अष्टमभाव' में हो तो पराक्रम, आयु एवं पुरातत्त्व के विषय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रु-पक्ष से हानि पहुँचने की सम्भावना रहती है। धनोपार्जन के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। (९) बुध 'नवमभाव' में हो तो भाग्य-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु शत्रु-पक्ष के संबंध से भाग्य-वृद्धि में सफलता मिलती है। पराक्रम की वृद्धि होती है, स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। कुछ परेशानियों के साथ उन्नति होती है। (१०) बुध 'दशमभाव' में हो तो पराक्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा अत्यधिक उन्नति, पिता से कुछ वैमनस्य तथा राज-पक्ष से सम्मान एवं शत्रु-पक्ष में सफलता की प्राप्ति होती है। पराक्रम की वृद्धि, स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ-प्राप्ति तथा कुछ परेशानियों के साथ उन्नति होती है। (११) बुध 'एकादशभाव' में हो तो परिश्रम एवं बुद्धि-विवेक द्वारा आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिन के सुख का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ मिलता है। विद्या के क्षेत्र में सफलता एवं सन्तान-क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सुख मिलता है। (१२) बुध 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च तथा बाहरी संबंधों में कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है, स्व-विवेक द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है तथा युक्ति-युक्तियों एवं खर्च से काम लेने पर कार्य सिद्ध होते हैं।

'वृष' लग्न के विभिन्न भावों में बुध का फल- 'वृष' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सुन्दर, मधुरभाषी, कुटुम्ब एवं धन की शक्ति पाने वाला, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का लाभ पाने वाला तथा स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता एवं सहयोग पाने वाला होता है। (२) बुध

'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब-सुख की वृद्धि होती है, सन्तान-पक्ष में परेशानियाँ तथा विद्या बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। जीवन ऐश्वर्यशाली बना रहता है। (3) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिनों के सुख का लाभ, पराक्रम द्वारा धनोपार्जन, धर्म में रुचि एवं भाग्य में वृद्धि होती है। जातक बुद्धिमान, विद्वान, पराक्रमी, साहसी, धनी, धर्मात्मा तथा सज्जन होता है। (4) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि, भवन एवं माता का यथेष्ट सुख मिलता है। पिता तथा राज्य से यथेष्ट लाभ होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक धनी, विवेकी, विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है। (5) बुध 'पंचम भाव' में हो तो जातक बहुत सन्तानों वाला, बुद्धिमान तथा विद्वान् होता है एवं बुद्धि-बल से पर्याप्त धनोपार्जन करता हुआ भरपूर कौटुम्बिक-सुख भी प्राप्त करता है। आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी रहते हुए भी बुद्धि-बल से उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष से सहयोग मिलता है तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। (6) बुध "षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष द्वारा अशान्ति का अनुभव तथा बुद्धि-बल से उनपर कुछ सफलता की प्राप्ति; सन्तान एवं कुटुम्ब से परेशानी तथा मतभेद, खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन की उपलब्धि होती रहती है। (7) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो बुद्धिमती पत्नी का लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलताएँ मिलती रहती हैं। विद्या, कुटुम्ब तथा सन्तान-पक्ष से सुख एवं धन का लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलताओं की प्राप्ति होती है। (8) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति की वृद्धि; कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान-पक्ष से परेशानियों का अनुभव एवं कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन होता है, परन्तु रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। (9) बुध 'नवम भाव' में हो तो

बुद्धि-योग द्वारा आय एवं धन की वृद्धि; धर्म, विद्या, सन्तान तथा कौटुम्बिक-सुख का लाभ, भाई-बहिनों का सुख तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। जातक सुखी, धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य पक्ष से विशेष लाभ तथा सम्मान मिलता है। बुद्धि-बल से व्यवसाय में भी पर्याप्त आर्थिक-लाभ होता है। सन्तान-पक्ष से भी सुखी रहता है। माता, भूमि, भवन तथा जीवन से यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा धन-संचय में बाधा पड़ती है। कुटुम्ब, सन्तान तथा विद्या पक्ष से अल्प लाभ मिलता है, चिन्ताओं के कारण मस्तिष्क परेशान रहता है। विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है तथा सन्तान-पक्ष प्रबल रहता है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ तथा खर्च की अधिकता रहती है। विद्या, सन्तान, कुटुम्ब तथा धन की ओर से असंतोष रहता है। बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती रहती है।

'मिथुन' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल— 'मिथुन' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित बुध का फल इस प्रकार होता है— (१) यदि बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य का लाभ; माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख की यथेष्ट उपलब्धि, पत्नी से विशेष सुख एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक धनी, सुखी, ज्ञानी तथा बुद्धिमान होता है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि; शारीरिक एवं माता के सुख में कमी; भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का यथेष्ट सुख, आयु-वृद्धि तथा पुरातत्व का लाभ होता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम की वृद्धि; माता, भूमि तथा भवन के सुख की उपलब्धि तथा पुरुषार्थ द्वारा आय एवं धर्म की उन्नति होती है। जातक बड़ा

हिम्मती, सज्जन, धीर-गंभीर तथा यशस्वी होता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन एवं सम्पत्ति का पर्याप्त सुख मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा मनोविनोद के साधनों की वृद्धि होती है, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमियाँ रहती हैं तथा स्त्री-सुख भी उचित ढंग का नहीं होता। (५) बुध 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का उत्तम लाभ होता है। बुद्धि-बल से पर्याप्त लाभ होता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। जातक गंभीर, चतुर, आत्म-विश्वासी एवं शान्ति-प्रिय होता है। (६) बुध 'षष्ठम भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु माता, भूमि, भवन के सुख एवं शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से सुख मिलता है तथा झगड़े-झंझटों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष एवं दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है। मातृ-पक्ष में कुछ कमी रहते हुए भी भूमि तथा भवन का उत्तम सुख मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य, सुख, यश तथा चातुर्य का लाभ होता है। जातक बड़ा स्वाभिमानी होता है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है; माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है; शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की हानि होती है। जातक को परदेश में रहना पड़ता है। धन एवं कौटुम्बिक-सुख का लाभ होता है तथा कुछ परेशानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो शारीरिक श्रम एवं विवेक द्वारा धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। जातक धनी, सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा विवेकी होता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो उन्नति हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ता है। पिता का अल्प-सुख मिलता है एवं राज्य-क्षेत्र में विशेष सफलता नहीं मिलती। शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुख के साधनों में

भु० सं०
2328
कु० र०

वृद्धि होती है। कभी सम्मान और कभी अपमान मिलता रहता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो स्व-विवेक एवं शारीरिक-परिश्रम द्वारा यथेष्ट लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है, विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है; सन्तान से लाभ होता है। जातक सुन्दर, सुखी, धनी, विवेकी तथा मधुरभाषी होता है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ; माता, भूमि, भवन के सुख में कमी एवं जन्मभूमि से दूर रहने पर लाभ एवं सुख की उपलब्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर शान्ति एवं विवेक के द्वारा सफलता मिलती है। भीतरी चिन्तायें रहते हुए भी ऊपरी प्रभाव बना रहता है।

'कर्क' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल– 'कर्क' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है– (१)- बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर दुर्बल रहता है, भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। आयु-वृद्धि होती है, पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है तथा दैनिक जीवन सुखी एवं प्रभाव पूर्ण बना रहता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी, भाग्य तथा धर्म में कमजोरी रहती है। अपयश भी उठाना पड़ता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है; बहिन-भाइयों का सुख ज्यादा होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में साधारण सफलतायें मिलती हैं। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या एवं

सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है, बुद्धि-बल से लाभ तथा बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। जातक हिम्मती तथा बुद्धिमान होता है। (६) बुध 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर शान्ति एवं नम्रता से सफलता मिलती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है; खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री का सुख मिलता है एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। शारीरिक-शक्ति सामान्य रहती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति होती है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ होता है; भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है; बाहरी स्रोतों के संबंधों से खर्च चलता है; धन का लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। (९) बुध नवमभाव में हो तो धर्म एवं भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। बाहरी संबंधों से सामान्य-लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। पुरुषार्थ की वृद्धि होती है; परन्तु भाग्योन्नति में बाधाएं आती रहती हैं। (१०) बुध 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलताएं मिलती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन-सुख का सामान्य-लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। भाई-बहिन का सुख तथा पराक्रम सामान्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर शान्ति, चतुराई तथा खर्च के बल पर सफलता मिलती है। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। बुद्धि-विवेक तथा वाणी के बल पर लाभ होता है। (१२) बुध 'द्वादशभाव' में हो तो बाहरी संबंधों से लाभ; भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी, शत्रु-पक्ष पर सामान्य सफलता एवं धन खर्च करके

कठिनाइयों पर नियन्त्रण स्थापित होता है।

'सिंह' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल – 'सिंह' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है – **(१)** बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। स्त्री एवं दैनिक-व्यवसाय पक्ष में उन्नति सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक दानी, भोगी, विवेकी तथा धनी होता है। **(२)** बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में संकट तथा चिन्ताएँ रहती हैं। दैनिक जीवन असन्तोषजनक रहता है। उदर-विकार संभव है। **(३)** बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख की वृद्धि होती है। भाग्योन्नति होती है तथा धर्म-पालन भी होता है। जातक धनी-सुखी, यशस्वी, धर्मात्मा तथा पराक्रमी होता है। **(४)** बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय होता है। राज्य, व्यवसाय एवं पिता के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की उपलब्धि होती है। **(५)** बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है, धन की उन्नति होती है, आमदनी उत्तम रहती है तथा जातक धनी, सुखी, विद्वान, सज्जन, परन्तु स्वार्थी होता है। **(६)** बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर नम्रता एवं धन की शक्ति से सफलता मिलती है। खर्च अधिक होता है, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। कौटुम्बिक-सुख कम मिलता है। **(७)** बुध 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दरी पत्नी मिलती है तथा दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख उपलब्ध होता है। शारीरिक-सौन्दर्य, आत्मिक-बल,

विवेक तथा यश की वृद्धि होती है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर संकट आते हैं तथा पुरातत्व की हानि होती है। धन की कमी रहते हुए भी दैनिक खर्चों की पूर्ति होती है। कौटुम्बिक-सुख भी चिन्तनीय रहता है। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है; पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। जातक धनी, सुखी, ईमानदार, उदार, सज्जन, ईश्वर भक्त तथा अत्यधिक यशस्वी होता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं। धन तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो धन, यश एवं सुख की वृद्धि होती है, लाभ यथेष्ट होता है। सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक धनी, सुखी, यशस्वी, विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, शत्रु-पक्ष में धन तथा विवेक से सफलता मिलती है तथा झगड़े-टंटों के कारण हानि भी उठानी पड़ती है।

'कन्या' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल— 'कन्या' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है— (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दैनिक आमदनी में कुछ कमी रहती है। अत्यधिक स्वाभिमानी होने के कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं हो पाती। (2) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आयु तथा पुरातत्व की शक्ति मिलती है। जातक धनी तथा सुखी होता है एवं रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है। (3) बुध 'तृतीयभाव'

मेंं हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में सफलता मिलती है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा सुख में वृद्धि होती है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है। उच्च-पद की प्राप्ति; आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जातक सुन्दर, सुखी, धनी तथा स्वाभिमानी होता है। (६) बुध 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विवेक एवं युक्तियों से सफलता मिलती है। ननिहाल से लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य, पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध से सुख तथा लाभ की उपलब्धि होती है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है तथा पत्नी के व्यक्तित्व के समक्ष जातक स्वयं को कुछ हीन अनुभव करता है। पिता, राज्य एवं स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव तथा मानसिक सुख-शान्ति में कुछ कमी रहती है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी; पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ, बाहरी सम्बन्धों से आजीविका प्राप्ति, गुप्त-युक्तियों से धन की वृद्धि तथा कुटुम्ब से प्रेम रहता है। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है; राज्य, पिता तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है एवं जातक सुखी, धनी, सज्जन तथा यशस्वी होता है।

(१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में आशातीत यश, धन-मान तथा सफलता की उपलब्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। थोड़ा संतान सुख, शक्ति तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहता है। जातक सुन्दर, भाग्यशाली, यशस्वी तथा सुखी होता है।
(११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलतायें मिलती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य, मनोबल तथा सुख में वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष भी विशेष उन्नत रहता है। जातक सुखी, धनी, विद्वान तथा ऐश्वर्यशाली होता है।
(१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक होता है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र से असन्तोष रहता है। शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। जातक दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान होता है।

<u>'तुला' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल</u> – 'तुला' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर दुर्बल होता है, बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है, खर्च अधिक रहता है, भाग्य में कमी होते हुए भी लोग जातक को भाग्यवान समझते हैं। धर्म का पालन होता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी रहती है। धन अधिक खर्च होता है। स्वार्थ के लिए धर्म-पालन होता है। आयु एवं पुरातत्व का यथेष्ट लाभ होता है। जातक सामान्यतः धनी माना जाता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। भाग्योन्नति में सामान्य रुकावटें आती हैं। धर्म-पालन होता है। सामान्यतः ऐसा

जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा धर्मात्मा होता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से यथेष्ट लाभ होता है तथा खर्च भी अधिक रहता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से सुख, सहयोग, लाभ, सम्मान तथा यश की उपलब्धि होती है। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष सशक्त होता है। विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कमी के साथ होता है। बाहरी संबंधों से आय-वृद्धि होती है। खर्च खूब रहता है। आमदनी भी यथेष्ट होती है। जातक प्रतिष्ठित, भाग्यशाली एवं धर्म-पालक होता है। (६) बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं। खर्च भी कठिनाई से चलता है। धर्म एवं आय का क्षेत्र भी कमजोर रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। खर्च की अधिकता बनी रहती है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का खर्च भलीभाँति चलता है तथा धर्म का पालन भी होता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। शारीरिक-सुख तथा मान-प्रतिष्ठा की उपलब्धि होती है। जातक भाग्यवान् समझा जाता है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। भाग्य तथा धर्म का क्षेत्र दुर्बल रहता है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। खर्च चलाने में भी परेशानियाँ आती हैं। कठिनाइयों के बावजूद भी धन की वृद्धि होती है, परन्तु यश कम ही मिल पाता है। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में वृद्धि होती है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम होता है।

भाग्योन्नति में कमी रहती है। भूमि, भवन तथा माता का पर्याप्त सुख मिलता है, जिसके कारण जातक धनी समझा जाता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी यथेष्ट होती है, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलतायें मिलती हैं। बुद्धि तथा वाणी के बल पर जातक उन्नति करता है, यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से कुछ कठिना-इयों के साथ लाभ तथा सुख की प्राप्ति भी होती है। शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा कुछ अनुचित साधनों द्वारा शत्रु-पक्ष से काम निकालना पड़ता है। जातक सुखी तथा धनी होता है।

'वृश्चिक' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल- 'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-प्रभाव में वृद्धि होती है तथा आयु एवं शक्ति का लाभ होता है। स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई के बाद सहयोग मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में परिश्रम के बाद सफलता मिलती है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। स्व-विवेक से भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। जातक सुखी, धनी, पराक्रमी तथा धर्मात्मा होता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय क्षेत्र में सुख, सफलता, लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है। (५) बुध 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कष्ट होता है, परन्तु स्व-विवेक से

लाभ भी ज्यादा होता है। आयु-क्षेत्र में कुछ परेशानी तथा पुरातत्त्व का स्वल्प लाभ होता है। आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा जीवन सुख से बीतता है। (६) बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी की वृद्धि होती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक बल तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु-वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्व-विवेक द्वारा धन-संचय होता है तथा कौटुम्बिक सुख की उपलब्धि होती है। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ एवं भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक सुखी तथा भाग्यशाली होता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ पिता का सुख मिलता है एवं राज्य तथा व्यवसाय से लाभ एवं सम्मान मिलता है। पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ भी होता है। कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख भी उपलब्ध होता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी खूब रहती है एवं आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक कुछ रूखे स्वभाव का भी होता है। (१२) बुध द्वादश भाव में हो तो खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। शत्रु-पक्ष में विवेक तथा विनम्रता से काम निकालना पड़ता है। चित्त में अशान्ति-सी रहती है। जीवन प्रगतिशील बना रहता है।

'धनु' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल — 'धनु' लग्न की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक एवं मानसिक शक्ति उत्तम रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पत्नी सुन्दर मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन भी प्राप्त होता है। दैनिक आमदनी भी अच्छी रहती है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी लाभ होता है। आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ के साथ ही दैनिक जीवन आनन्दमय तथा ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की वृद्धि होती है एवं भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख मिलता है। विवेक-बुद्धि से प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है एवं भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में कमी रहती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। स्त्री, गृहस्थी, दैनिक आमदनी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। आर्थिक-आय अच्छी रहती है। जातक चतुर, बुद्धिमान तथा यशस्वी होता है। (६) बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कमी रहती है। ननसाल-पक्ष से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-सुख मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ होता है। दैनिक व्यवसाय, राज्य तथा पिता से भी सहयोग एवं लाभ मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की

शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी अत्यधिक कठि-
-नाइयों एवं घाटे का सामना करना पड़ता है। सामान्य रहन-सहन अच्छा रहता है। धन तथा कुटुंब
की वृद्धि हेतु विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म
की विशेष वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में सफलता मिलती है। स्त्री-पक्ष
उत्तम रहता है। विवेक बुद्धि से अत्यधिक धन तथा सम्मान का लाभ होता है। भाई-बहिन
के सुख तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है। जातक बहुत सुखी जीवन बिताता है।
(१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएं
मिलती हैं। धन-सम्मान की पर्याप्त उपलब्धि होती है। माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि
एवं भवन के सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी
खूब होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती
है। स्त्री-पक्ष भी सुख तथा लाभदायक रहता है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च
अधिक रहता है, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। पिता, राज्य तथा स्त्री-सुख
की हानि होती है। जन्म-स्थान में रहकर व्यवसाय करने से घाटा होता है, परदेश में रहकर करने
से लाभ होता है। शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझटों में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न के विभिन्न भावों में 'बुध' का फल — 'मकर' लग्न की कुण्डली
के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथम भाव' में
हो तो शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि; शत्रु-पक्ष पर स्व-विवेक से प्रभाव-स्थापन; स्त्री
तथा दैनिक आमदनी के पक्ष में सफलता, परन्तु कभी-कभी व्यवसाय में कठिनाई का सामना करना पड़ता

है। (2) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि; मान-प्रतिष्ठा एवं धर्म का लाभ एवं आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाग्योन्नति में कभी-कभी कठिनाइयाँ आती हैं। (3) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। विवेक बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति सम्भव होती है। (4) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। भाग्योन्नति होती है, परन्तु घरेलू सुख-शान्ति में कुछ विघ्न आते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। (5) बुध 'पंचम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। परिश्रम से आमदनी, भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। भाग्य में यथेष्ट वृद्धि होती है। (6) बुध 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। (7) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो स्व-विवेक द्वारा भाग्योन्नति, स्त्री-पक्ष से अशान्ति, व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ विशेष लाभ एवं भौतिक प्रभाव तथा यश की वृद्धि होती है। (8) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु में वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्योन्नति में अनेक बाधाएँ आती हैं, यश की कमी रहती है तथा शत्रु-पक्ष से अशान्ति मिलती है। कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है। (9) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर सफलता एवं झगड़ों से लाभ होता है। भाइयों से विरोध होता है तथा पराक्रम शिथिल रहता है। (10) बुध 'दशम भाव' में

हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, प्रतिष्ठा तथा सुख-सहयोग की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय, धनोपार्जन में सफलता एवं माता, भूमि तथा भवन के सुख की उपलब्धि होती है। उन्नति के मार्ग में कुछ रुकावटें भी आती हैं। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आय में अत्यधिक वृद्धि, शत्रु-पक्ष पर सफलता, विवेक द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति एवं स्वार्थयुक्त धर्म-पालन होता है। संतान-पक्ष से कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता होते हुए भी बिना किसी कठिनाई के उसकी पूर्ति होती रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है। भाग्योदय में कठिनाइयाँ आती हैं, यश की कमी रहती है, शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाइयाँ मिलती हैं, परन्तु भाग्य-बल से वे दूर हो जाती हैं और विजय मिलती है।

'कुम्भ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'बुध' का फल— 'कुम्भ' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है — (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी, परन्तु आयु, पुरातत्त्व एवं सन्तान पक्ष में लाभ तथा प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है। कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय से लाभ होता है। (2) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-सञ्चय नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब से भी विरोध रहता है। विद्या एवं सन्तान-पक्ष दुर्बल, आयु का श्रेष्ठ लाभ, पुरातत्त्व का अपूर्व लाभ एवं विद्या-बुद्धि तथा विवेक के बल पर लाभ एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। (3) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों से कष्ट, सन्तान से परेशानी तथा विद्या, बुद्धि एवं पराक्रम का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। भाग्य तथा धर्म की भी कठिनाइयों से उन्नति होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष बना रहता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि, भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। माता के सुख

में कुछ कमी रहती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पिता के कारण कुछ परेशानी तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति मिलती है। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है एवं विद्या बुद्धि के क्षेत्र में श्रेष्ठ लाभ होता है। विवेक-बुद्धि द्वारा आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। (६) बुध 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से अशान्ति, विवेक-बुद्धि द्वारा झगड़े के मामलों में सफलता एवं विद्या, संतान, आयु, पुरातत्त्व के पक्ष में कमजोरी रहती है तथा परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (७) बुध 'सप्तम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री तथा दैनिक-व्यवसाय-पक्ष में सफलता मिलती है। विद्या, बुद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। शारीरिक परेशानियाँ रहते हुए भी प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का विशेष लाभ होता है। दैनिक-जीवन प्रभावशाली रहता है। वाणी तथा विवेक की प्रचुर शक्ति उपलब्ध होती है। सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती रहती है। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कठिनाइयाँ आती हैं। (९) बुध 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है। सन्तान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। जातक धनी तथा सुखी रहता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सन्तान, विद्या-बुद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में पर्याप्त लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख की उपलब्धि कुछ कमी के साथ होती है। यश तथा विवेक की वृद्धि होती है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी खूब होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनंद

पूर्ण बना रहता है। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ भी मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति की हानि होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकलता है तथा विवेक के उपयोग द्वारा सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'बुध' का फल – 'मीन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल इस प्रकार होता है– (१) बुध 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा माता, भूमि एवं भवन का सुख भी थोड़ा ही मिलता है। स्त्री-पक्ष से सुख तथा व्यवसाय में सफलता मिलती है। (२) बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है। भूमि तथा भवन का लाभ होता है। आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है तथा दैनिक-जीवन उल्लास पूर्ण बना रहता है। (३) बुध 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की वृद्धि, भाई-बहिनों के सुख का यथेष्ट लाभ; माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। जातक यशस्वी भी होता है। (४) बुध 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष से भी सफलता मिलती है। भोग-जीवन उल्लास पूर्ण बना रहता है। पिता, राज्य तथा स्वामी व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जातक धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है। (५) बुध 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। जातक कार्य-कुशल तथा मधुरभाषी होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। आमदनी में वृद्धि होती है तथा सुख, धन, विवेक एवं यश की उपलब्धि होती है। (६) बुध

'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकलता है। माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कम मिलता है। व्यवसाय-क्षेत्र में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। (७) बुध 'सप्तमभाव' में हो तो सुन्दरी स्त्री, व्यावसायिक सफलता, उत्तम जोरू सुख तथा माता, भूमि एवं भवन के श्रेष्ठ सुख की उपलब्धि होती है। शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थ-संचालन हेतु अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (८) बुध 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है, दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है; स्त्री-सुख में अधिक तथा मातृ-सुख में सामान्य कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। जीवन सामान्यतः सुख से बीतता है। (९) बुध 'नवमभाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म की वृद्धि; माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय का श्रेष्ठ लाभ; पराक्रम की वृद्धि एवं भाई-बहिन के सुख की उपलब्धि होती है। जातक सुखी, धनी, यशस्वी तथा पराक्रमी होता है। (१०) बुध 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं लाभ की उपलब्धि; स्त्री-पक्ष से सुख; माता, भूमि, भवन तथा जोरू-सुख की प्राप्ति एवं धन, यश तथा सुख मिलता है। (११) बुध 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। जातक बुद्धिमान, धनी, सुखी, मधुरभाषी तथा यशस्वी होता है। (१२) बुध 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। माता, भूमि, भवन, जोरू-सुख तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। जातक धैर्यवान तथा हिम्मती होता है।

जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित 'गुरु' का फल

के विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित 'गुरु' का प्रभाव निम्नानुसार होता है — जन्मकुण्डली

'मेष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल

'मेष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न
भावों में स्थित 'गुरु' का फल इस प्रकार होता है — (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो अत्यधिक यश, बाहरी
स्थानों पर प्रतिष्ठा एवं उन्नति होती है। जातक बुद्धिमान, विद्वान, सन्ततिवान तथा विवेकी होता है। स्त्री तथा
दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। (२) गुरु
'द्वितीय भाव' में हो तो बाहरी-स्थानों के सम्पर्क से धन तथा भाग्य की वृद्धि होती है। कभी-कभी
हानि भी उठानी पड़ती है। शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त होती है। आयु एवं पुरातत्त्व की
का लाभ होता है। राज्य एवं पिता के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। (३) गुरु 'तृतीय भाव में हो तो भाई-
बहिनों का सुख मिलता है, पराक्रम बढ़ता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। भाग्य
तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव'
में हो तो माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।
पिता एवं राज्य के सुख में कमी रहती है। बाहरी स्थानों से अच्छा संबंध रहता है। व्यय की अधिकता
रहती है। जातक धनी, दीर्घायु तथा खर्चीला होता है। (५) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक विद्वान,
बुद्धिमान तथा सन्ततिवान होता है। भाग्य-वृद्धि होती है, परन्तु आमदनी के क्षेत्र में कभी-कभी कठिना-
इयाँ आती रहती हैं। बाहरी सुख तथा स्वास्थ्य रहता है। जातक बुद्धिमान, विद्वान तथा धर्मात्मा होता
है। (६) गुरु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति
होती है। पिता एवं राज्य संबंध में कमी आती है। व्यय की अधिकता रहती है तथा बाहरी संबंधों से

लाभ होता है। कुटुम्ब से मतभेद रहता है तथा धन-प्राप्ति में कठिनाइयाँ आती हैं। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। आमदनी के मार्ग में भी रुकावटें आती हैं, शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। भाई-बहिन तथा पराक्रम का पक्ष उत्तम रहता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो खर्च के मामले में कठिनाइयाँ आती हैं। पुरातत्त्व तथा आयु का लाभ होता है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ तथा सुख मिलता है। खर्च की अधिकता रहती है। धन तथा कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख प्राप्त होता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है। भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक धर्मात्मा, भाग्यशाली, सुन्दर, धर्मात्मा तथा विद्वान होता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यापार व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। धन तथा कौटुम्बिक सुख का अल्प-लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है एवं शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आय की थोड़ी कम उन्नति होती है। भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान पक्ष उत्तम रहता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक होता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष में समझदारी से सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल — 'वृष' लग्न की जन्मकुंडली

के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का फल इस प्रकार होता है — (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-परिश्रम से लाभ, पुरातत्व की उन्नति, विद्या-बुद्धि का लाभ, सन्तान-पक्ष सामान्य; स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय-पक्ष में त्रुटिपूर्ण सफलता एवं भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। जातक परिश्रम द्वारा उन्नति करता है। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। राज्य पक्ष से साधारण सफलता, पिता से वैमनस्य तथा विशेष परिश्रम से व्यवसाय की उन्नति होती है। (३) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि, व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता, स्त्री-पक्ष से सुख; भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी तथा आमदनी उत्तम रहती है। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में कमी, परन्तु भूमि, भवन का लाभ; आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि; राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कमी, खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। (५) गुरु 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्व काफी लाभ होता है। धर्म एवं भाग्य पक्ष में कमी रहती है। बुद्धि योग से आमदनी अच्छी होती है। आजीविकोपार्जन हेतु शारीरिक-श्रम अधिक करना पड़ता है। (६) गुरु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में बुद्धिमत्ता से विजय मिलती है। आयु तथा पुरातत्व के लाभ में कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। धन-संचय में विशेष परिश्रम से सफलता मिलती है, परन्तु कौटुम्बिक-सुख में कमी रहती है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं

व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आमदनी अच्छी रहती है। शरीर में दुर्बलता रहती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। जातक स्वार्थी, धनी तथा ऊपरी दृष्टि से सज्जन प्रतीत होता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु आमदनी के साधनों में कुछ कठिनाई आती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है, खर्च की अधिकता रहती है, परिश्रम द्वारा धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है एवं माता, भूमि तथा भवन सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा प्रभाववृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है। जातक की उन्नति में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। लाभ भी कम होता है। धन की वृद्धि होती है तथा कौटुम्बिक-सुख भी प्राप्त होता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी होती है, परन्तु परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष से अल्प लाभ होता है। व्यवसाय द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। जातक ऐश्वर्यशाली होता है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। भूमि, भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है।

तथा मातृ-सुख में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। आयु पक्ष में कुछ कमी रहती है। पुरातत्व की हानि होती है तथा आय खर्च अधिक रहता है।

'मिथुन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'मिथुन' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का फल इस प्रकार होता है— (1) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, सुख, स्वाभिमान तथा मनोबल का लाभ होता है। पिता तथा राज्य से भी लाभ मिलता है। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष कुछ कमजोर रहता है। स्त्री-सुख उत्तम रहता है तथा भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है। (2) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। आयु तथा पुरातत्व के लाभ में कमी रहती है। पिता एवं राज्य से सहयोग मिलता है तथा व्यवसाय द्वारा धन की वृद्धि होती है। (3) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सुन्दरी पत्नी द्वारा सुख मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। धन-लाभ हेतु परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आमदनी अच्छी रहती है। (4) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आयु तथा पुरातत्व के क्षेत्र में कमी रहती है। पिता तथा राज्य पक्ष से सहयोग मिलता है। स्थायी व्यवसाय से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ लाभ भी होता है। (5) गुरु 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष कुछ दुर्बल रहता है। भाग्योन्नति कठिनाइयों के साथ होती है। आमदनी अच्छी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव तथा स्वाभिमान का लाभ होता है।

(६) गुरु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय; स्त्री-पक्ष से मतभेद; राज्यद्वारा सम्मान तथा उन्नति का लाभ, पिता से कुछ मत भेद, खर्च की अधिकता; बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ, परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि तथा कुटुम्ब से सहयोग प्राप्त होता है। (७) गुरु 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य-क्षेत्र से सुख सहयोग एवं सम्मान मिलता है; आमदनी अच्छी रहती है; शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की उपलब्धि, पराक्रम-वृद्धि तथा भाई-बहनों के सुख की उपलब्धि होती है। जातक धनी, सुखी तथा सन्तुष्ट रहता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से कष्ट, स्त्री-पक्ष से कष्ट, खर्च की अधिकता; बाहरी स्थानों से कपट पूर्ण संबंधों द्वारा सामान्य लाभ; परिश्रम द्वारा धन की कुछ वृद्धि तथा माता, भूमि एवं भवन आदि का सामान्य सुख उपलब्ध होता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति; पिता, राज्य तथा स्त्री-पक्ष से असन्तोष; शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की उपलब्धि; पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख की वृद्धि, विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता तथा सन्तान-पक्ष से असन्तोष की प्राप्ति होती है; (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो राज्य एवं पिता से पूर्ण सुख-सहयोग का लाभ; व्यवसाय में सफलता; धन का उत्तम संचय; माता, भूमि तथा भवन के सुख की उपलब्धि एवं शत्रु-पक्ष पर प्रभाव-स्थापन की प्राप्ति होती है। जातक सब प्रकार से सुखी रहता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय से श्रेष्ठ लाभ तथा सहयोग की उपलब्धि; भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि, विद्या-बुद्धि का लाभ, परन्तु सन्तति-पक्ष दुर्बल एवं स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय से पर्याप्त

भू० सं०

कु० र०

लाभ मिलता है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता, बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ तथा यश की प्राप्ति; पिता के सुख में कुछ कमी; व्यवसाय में हानि; माता, भूमि तथा भवन के सुख का लाभ; शत्रु-पक्ष में सफलता तथा आयु एवं पुरातत्व के संबंध में संकटों का सामना करना पड़ता है।

'कर्क' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल –

'कर्क' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का फल इस प्रकार होता है — (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो जातक को शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का पूर्ण सुख मिलता है। दैनिक खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं तथा स्त्री-पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है। भाग्य तथा धर्म की शक्ति प्रबल बनी रहती है। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की उपलब्धि होती है। (३) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा स्त्री-पक्ष से क्लेश होता है। धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। सामान्यतः ऐसा जातक धनी, हिम्मती, धार्मिकता तथा शत्रुजयी होता है। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। शत्रु-पक्ष से शान्ति; आयु तथा पुरातत्व के क्षेत्र में कुछ असन्तोष, व्यवसाय, पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता, खर्च की अधिकता तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (५) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। बुद्धि तथा सन्तान के सहयोग से भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सं० भू० १२७८

कु० २०

लाभ के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य, आत्म-बल तथा यश की वृद्धि होती है। प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। (६) गुरु 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रुओं पर विशेष प्रभाव रहता है। यश प्राप्त होता है, परन्तु भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। धन तथा कौटुम्बिक सुख का भी लाभ होता है। जातक धर्मी, सुखी तथा यशस्वी होता है। (७) गुरु 'सप्तमभाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष से व्यवसाय को हानि पहुँचती है। परिश्रम से लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख उपलब्ध होता है। (८) गुरु 'अष्टमभाव' में हो आयु एवं पुरातत्त्व का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। शत्रु-पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा भाग्य-पक्ष दुर्बल रहता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है एवं माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। (९) गुरु 'नवमभाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की भी उपलब्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम का यथेष्ट लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। झगड़ों, मुकद्दमों तथा परिश्रम द्वारा उन्नति होती है। (१०) गुरु 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का यद्यपि सुख कुछ असन्तोष के बाद मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा परिश्रम एवं झगड़े द्वारा उन्नति होती है। (११) गुरु 'एकादशभाव' में हो तो परिश्रम एवं शत्रु-पक्ष द्वारा लाभ, सामान्य त्रुटि के साथ भाई-बहिनों के सुख की उपलब्धि; पराक्रम की वृद्धि; विद्या, बुद्धि तथा

सन्तान के क्षेत्र में सफलता एवं स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु ऐसा जातक धनी अवश्य होता है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी सम्बन्धों से लाभ, खर्च की अधिकता; भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी एवं माता, भूमि तथा भवन का सुख बड़े परिश्रम के बाद मिलता है। शत्रु-पक्ष पर सफलता एवं आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

'सिंह' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'सिंह' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का फल इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की उपलब्धि होती है। सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है एवं आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक सुख की उपलब्धि होती है। सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट, शत्रु-पक्ष तथा ननिहाल-पक्ष से कुछ हानि होती है। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। पिता से मतभेद रहता है एवं राजकीय-क्षेत्र तथा व्यवसाय से असन्तोष रहता है। (३) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सन्तान-सुख कुछ कठिनाई के बाद मिलता है तथा आयु का लाभ होता है। स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। बुद्धि-बल से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आमदनी अच्छी रहती है। जातक बड़ा साहसी होता है। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है तथा सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। पिता से वैमनस्य रहता है। राज्य तथा व्यवसाय से यथेष्ट लाभ नहीं होता। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ

एवं सुख प्राप्त होता है। (५) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। पुरातत्त्व का लाभ होता है। आमदनी उत्तम रहती है। शारीरिक-सुख, मनोबल, यश तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। जीवन में सुख-दुःख-दोनों के अनुभव होते रहते हैं। (६) गुरु 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से चिन्ता रहती है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष दुर्बल रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है। दैनिक सुख में कमी आती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। बाहरी संबंधों से अच्छा लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री से वैमनस्य, दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानी; विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सामान्य सफलता; आयु की वृद्धि, पुरातत्त्व का सामान्य लाभ; व्यापार से उत्तम आमदनी; शारीरिक-सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि एवं पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि; सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-बुद्धि में कुछ कमी रहती है। खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ, सामान्य कौटुम्बिक सुख की उपलब्धि होती है तथा धन-वृद्धि हेतु प्रयत्नशील रहना पड़ता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ उपलब्ध होता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि; पुरातत्त्व के क्षेत्र में सफलता; शारीरिक प्रभाव, सुख तथा मनोबल की उपलब्धि; भाई-बहिनों से असन्तोष, परन्तु पराक्रम की वृद्धि; विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होते हुए भी प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता-पक्ष से हानि तथा राज्य-पक्ष से सम्मान मिलता है। विद्या-

बुद्धि तथा सन्तान के साथ ही पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की उपलब्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सामान्य-सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है तथा झगड़े-झंझट के कारण चिन्ताएँ बनी रहती हैं। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी, आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम की भी वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मतभेद रहता है। सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है। दैनिक-व्यवसाय तथा स्त्री के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है; बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता रहता है; विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी बनी रहती है। आयु की विशेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य-लाभ होता है।

'कन्या' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'कन्या' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की उत्तम उपलब्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। स्त्री एवं दैनिक-व्यवसाय के पक्ष से सुख मिलता है। भाग्योन्नति तथा धर्म के क्षेत्र में बाधाएँ आती रहती हैं। ऐसा जातक सज्जन तथा धनी होता है। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएँ आती हैं। दैनिक व्यवसाय की उन्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, यश, सहयोग तथा सम्मान की उपलब्धि होती है।

(३) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक-व्यवसाय के पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं। कुछ रुकावटों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आमदनी बहुत अच्छी रहती है। जातक धनी तथा सुखी बना रहता है। (४) गुरु 'चतुर्थभाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं स्वामी व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता रहता है। (५) गुरु 'पंचमभाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है। मातृ-पक्ष कमजोर रहता है। भाग्य तथा धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। आमदनी बढ़ी रहती है तथा शारीरिक शक्ति, सम्मान, प्रभाव एवं कार्य-कुशलता की वृद्धि होती है। जातक सुखी तथा धनी होता है। (६) गुरु 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकलता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है, पिता, राज्य एवं स्वामी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सुख, यश तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं। खर्च अधिक, बाहरी सम्बन्धों से लाभ तथा कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता। धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक-व्यवसाय के पक्ष में विशेष लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। आमदनी की अधिक वृद्धि होती है। शारीरिक-सौन्दर्य, सुख तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। जातक सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के सुख में कुछ कमी आती है।

खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है तथा माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ परेशानियों के साथ उपलब्ध होता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु धर्म का पालन होता है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। सुख-सम्मान की वृद्धि होती है। भोगेच्छा प्रबल रहती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या एवं सन्तान-पक्ष कुछ दुर्बल रहता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी प्राप्त होती है। धन तथा कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर शान्ति-नीति से विजय मिलती है तथा उससे लाभ भी होता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी की वृद्धि एवं माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। सन्तान से परेशानी, विद्या-बुद्धि में कमी; सुन्दरी तथा सुयोग्य पत्नी का लाभ, भोगादि के श्रेष्ठ सुख तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ की उपलब्धि होती है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक करता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। स्त्री-सुख में कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख सामान्य रहता है। शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकालना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। जातक का जीवन सामान्यतः सुखी बना रहता है।

'तुला' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'तुला' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-प्रभाव, पुरुषार्थ एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी

आती है। शत्रु-पक्ष पर हिम्मत के द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है। विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है तथा धर्म एवं भाग्य की वृद्धि होती है। (2) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि, भाई-बहिनों के सुख में कमी, धन-बल से शत्रु-पक्ष पर विजय-लाभ, आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, सुख, सम्मान तथा अन्य लाभ प्राप्त होते हैं। (3) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम-वृद्धि, भाई-बहिनों के सुख में सामान्य कमी एवं शत्रु-पक्ष पर प्रभाव-स्थापन होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। धर्म तथा भाग्य की वृद्धि एवं आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। जातक धनी, धार्मिक तथा भाग्यशाली होता है। (4) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष में परेशानी उठानी पड़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है। (5) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद रहता है। पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। आमदनी यथेष्ट रहती है। शारीरिक शक्ति तथा प्रभाव की उपलब्धि रहते हुए भी स्वास्थ्य कमजोर बना रहता है। (6) गुरु 'षष्ठम भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। पुरुषार्थ में भी कुछ कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से यथेष्ट सम्मान तथा सफलता की उपलब्धि होती है। खर्च अधिक रहता है, बाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से कुछ मतभेद बना रहता है। (7) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति होती है।

स्त्री की शक्ति मिलती है, परन्तु उसके साथ कुछ मतभेद भी रहता है। पुरुषार्थ द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन होता है। कुछ शारीरिक-परेशानियों के होते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्त्व एवं आयु की वृद्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है एवं माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। (९) गुरु 'नवमभाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। यश मिलता है। शत्रु-पक्ष तथा अन्य झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। शरीर में कुछ कमजोरी रहते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का उत्तम सुख मिलता है। पराक्रम बढ़ता है। सन्तान से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा उनसे कुछ मतभेद भी रहता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है तथा शत्रु-पक्ष का प्रभाव स्थापित होता है। (११) गुरु एकादश भाव में हो तो आमदनी तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष से भी लाभ होता है। भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सन्तान-क्षेत्र में कुछ कमी रहती है, परन्तु विद्या-बुद्धि अधिक होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल- 'वृश्चिक' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-शक्ति एवं प्रतिष्ठा का लाभ; विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता

का लाभ; स्त्री से कुछ मतभेद तथा दैनिक व्यवसाय में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु बाद में लाभ भी होता है। स्त्री-सुख भी मिलता है। धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। जातक सुखी रहता है। (2) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का उत्तम सुख मिलता है; सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है; शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से सफलता मिलती है, आयु तथा पुरातत्व की शक्ति बढ़ती है एवं राज्य तथा पिता द्वारा यश, सम्मान एवं सहयोग तथा व्यवसाय द्वारा लाभ होता है। जातक बड़ा धनी तथा बुद्धिमान होता है। (3) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख में बाधा आती है, पराक्रम में कमी रहती है; विद्या, धन तथा कौटुम्बिक-सुख भी कम उपलब्ध होता है; स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाई से सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं आमदनी में यथेष्ट वृद्धि होती है। (4) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता से कुछ वैमनस्य रहता है; भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है; विद्या तथा सन्तान-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है; आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है; राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, लाभ तथा सम्मान की उपलब्धि होती है, खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। (5) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। आमदनी खूब रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य, शक्ति, सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। जातक बड़ा यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है। (6) गुरु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर बुद्धि-बल से सफलता प्राप्त होती है। धन एवं कुटुम्ब के कारण झगड़े में फँसना पड़ता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सम्मान तथा लाभ की उपलब्धि होती है।

खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब के साथ कुछ वैमनस्य भी रहता है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो सामान्य मतभेदों के बावजूद स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। आमदनी अच्छी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। विद्या, बुद्धि, सन्तान, कुटुम्ब एवं धन के सुख में कमी रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। (९) गुरु 'नवमभाव' में हो तो धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। शारीरिक प्रभाव एवं मान-सम्मान की उपलब्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा जातक यशस्वी बनता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से सुख, सहयोग तथा लाभ की उपलब्धि होती है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ मिलता है। शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। (१२) गुरु 'द्वादशभाव' में हो तो जातक के खर्च में वृद्धि होती है, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। विद्या-बुद्धि एवं संतान-पक्ष भी कमजोर रहता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। बाहरी सम्बन्ध भी कमजोर ही रहते हैं। शत्रु-पक्ष पर चतुराई से सफलता प्राप्त होती है। आयु तथा पुरातत्त्व की उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक प्रायः अशान्त ही बना रहता है।

'धनु' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'धनु' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं सुख की उपलब्धि होती है; भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय का सुख रहता है एवं भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। जातक सुन्दर, गुणी, धार्मिक, धनी, सज्जन तथा मधुरभाषी होता है। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कौटुम्बिक-सुख की हानि होती है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा सुख में भी कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का पक्ष कमजोर रहता है। शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। झगड़ों में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख, सम्मान, यश तथा सफलता का लाभ होता है। (३) गुरु 'तृतीयभाव' में हो तो कुछ मतभेद के साथ भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है एवं पराक्रम में कमी आती है। भूमि, भवन तथा माता का सामान्य-सुख मिलता है। स्त्री सुन्दर मिलती है तथा उससे सुख प्राप्त होता है। व्यवसाय में सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। स्वार्थी आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ होता है। खर्च भलीभाँति चलता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। (५) गुरु 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष में सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। आमदनी में कठिनाई रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। (६) गुरु

'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष एवं रोगादि से परेशानी रहती है तथा उनका निराकरण बुद्धि-बल से ही हो पाता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। माता का अल्प सुख मिलता है, भूमि तथा भवन का सुख नहीं मिलता। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से सुख, सम्मान तथा लाभ की उपलब्धि होती है, खर्च अधिक रहता है, बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। धन तथा कुटुम्ब की ओर से परेशानी रहती है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक आमदनी में सफलता ज्यादा होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है, आमदनी के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा स्वाभिमान की उपलब्धि होती है। भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। खर्च अधिक रहता है, बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ ही मिलता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। धर्म का यथा विधि पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा यश की उपलब्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सहयोग का लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वाभिमान की उपलब्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब-पक्ष से असन्तोष रहता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है तथा शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से प्रभाव स्थापित हो पाता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो शारीरिक-

श्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। भाई-बहनों से असंतोष रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी नहीं होती। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन अच्छा बना रहता है।

'मकर' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— मकर' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर दुर्बल रहता है, भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, पराक्रम अल्प रहता है, खर्च चलाने में कठिनाई आती है, बाहरी स्थानों के संबंध भी असन्तोषपूर्ण रहते हैं; विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है; सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों की उपलब्धि होती है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र उत्तम रहते हैं। भाग्य तथा धर्म-पालन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। (२) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय में कमी, कुटुम्ब से परेशानी, खर्च की अधिकता, बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से काम निकालना—ये फल होते हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ मिलता है एवं पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं। (३) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का सुख मिलता है, परन्तु पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च ठीक से चलता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। स्त्री सुख मिलता है एवं दैनिक आमदनी उत्तम बनी रहती है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव

आते रहते हैं। आमदनी अच्छी बनी रहती है। (४) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। (५) गुरु 'पंचमभाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से थोड़ा-बहुत लाभ होता है। विद्या-बुद्धि के पक्ष में कुछ कमी रहती है। बुद्धि-बल से खर्च चलता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिनों से सामान्य सुख मिलता है। पराक्रम की वृद्धि होती है। भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। आमदनी अच्छी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। (६) गुरु 'षष्ठभाव' में हो तो खर्च से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है, भाई-बहिनों से सामान्य-विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। पिता, राज्य एवं व्यव-साय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करने पर भी कम ही मिलता है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो पत्नी सुन्दरी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय से सुख प्राप्त होता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आमदनी अच्छी रहती है। शारी-रिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म का पक्ष कमजोर रहता है। बाहरी संबंधों से कुछ लाभ होता है, जिससे खर्च चलता

रहता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। मन अशान्त रहता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफलता मिलती है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय का क्षेत्र दुर्बल रहता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों से लाभ होने के साथ खर्च भली भाँति चलता रहता है। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कठिनाइयाँ आती हैं। माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु खर्च के बल पर भूमि तथा भवन का सुख उपलब्ध होता है। शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी उत्तम रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है। खर्च आराम से चलता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सन्तान-पक्ष से असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता रहता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। माता, भूमि एवं भवन का सामान्य-सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर युक्ति से प्रभाव स्थापित होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। ऐसा जातक समाज में प्रभावशाली बना रहता है तथा इसका खर्च भी राजसी प्रकार का होता है।

'कुम्भ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'कुम्भ' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) गुरु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक शक्ति, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सुख तथा लाभ मिलता है।

भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। (2) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का यथेष्ट सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। झगड़े-मुकदमे आदि से लाभ मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है एवं राज्य, पिता तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र से सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। (3) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है, धन तथा कुटुम्ब का सुख यथेष्ट मिलता है। सुन्दर पत्नी मिलती है। दैनिक व्यवसाय से लाभ होता रहता है। ससुराल से भी लाभ होता है। कुछ रुकावटों के साथ भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। आमदनी बहुत अच्छी रहती है। (4) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुख में कुछ कमी रहती है, तथापि माता से लाभ भी होता है। भूमि तथा भवन का उत्तम सुख मिलता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी होती है। (5) गुरु 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की भी वृद्धि होती है। धन की आमदनी अच्छी रहती है। राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि एवं यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। (6) गुरु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ मिलता है। ननिहाल-पक्ष उन्नत होता है। कुटुम्ब से कुछ झंझट रहता है एवं धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से विशेष लाभ होता है। खर्च अधिक रहता तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। (7) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री सुन्दर मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से सुख एवं धन का लाभ भी होता है। दैनिक व्यवसाय उत्तम रहता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख बना रहता है। आमदनी खूब

होती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की भी वृद्धि होती है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु की वृद्धि होती है एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। संचित-धन की हानि होती है तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से परेशानी मिलती है। परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा माता, भूमि एवं भवन का सुख साधारण रहता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य की विशेष वृद्धि होती है तथा धर्म का यथाविधि पालन होता है। कौटुम्बिक-सुख तथा धन का यथेष्ट लाभ होता है। शारीरिक-प्रभाव की वृद्धि होती है। भाई-बहिन का सुख उत्तम रहता है, पराक्रम बढ़ता है एवं विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में यथेष्ट सफलताएं मिलती हैं। भाग्य प्रबल रहता है, जीवन ऐश्वर्य पूर्ण व्यतीत होता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है। (११) गुरु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में सफलताएं मिलती हैं। स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी अच्छी बनी रहती है। (१२) गुरु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से भी परेशानी बनी रहती है। संचित-धन नष्ट हो जाता है। कुटुम्ब में अशान्ति बनी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख अल्पमात्रा में मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आयु एवं पुरातत्त्वशक्ति की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'गुरु' का फल— 'मीन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (1) गुरु 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएं मिलती हैं। जातक बड़ा धनी तथा भाग्यशाली होता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, दैनिक आमदनी में वृद्धि होती है तथा भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है। (2) गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की पर्याप्त वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमजोरी रहती है। धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेने पर सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएं मिलती हैं। जातक धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है। (3) गुरु 'तृतीय भाव' में हो तो कुछ मतभेद के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है, पराक्रम में वृद्धि होती है, पिता से भी सामान्य मतभेद रहता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है। दैनिक आमदनी उत्तम रहती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। कभी-कभी आमदनी के मार्ग में रुकावटें भी आती हैं। (4) गुरु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू-सुख में वृद्धि होती है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती हैं। खर्च के कारण परेशानी भी रहती है तथा बाहरी स्थानों से संबंध असंतोष-जनक रहते हैं। (5) गुरु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का श्रेष्ठ लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष

से सफलताऐं मिलती हैं। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। (६) गुरु 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताऐं मिलती हैं। शारीरिक-परिश्रम के बल पर उन्नति होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असन्तोष-जनक रहते हैं। धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। (७) गुरु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री सुख मिलता है। स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र से सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। आमदनी कम रहती है। शारीरिक स्वास्थ्य, सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। पराक्रम बहुत बढ़ता है तथा कुछ असन्तोष के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। (८) गुरु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है। खर्च की अधिकता रहती है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। (९) गुरु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय पक्ष से लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य, यश तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष से यथेष्ट लाभ होता है। जातक वाणी का धनी तथा कलात्मक रुचि वाला होता है। (१०) गुरु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताऐं प्राप्त होती हैं। धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। झगड़ों में

विजय मिलती है। जातक सुखी, धनी, पराक्रमी, शूरवीर, यशस्वी तथा हुकूमत करने वाला होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी बहुत कम होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि होती है। भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। पराक्रम की अल्प वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के सुख की वृद्धि होती है। स्त्री सुख मिलता है तथा स्त्री से सुख-सहयोग भी मिलता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी असन्तोष रहता है। शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के सुख तथा लाभ में कमी होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है एवं दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में 'शुक्र' का फल — जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न राशियों पर स्थित 'शुक्र' का फल निम्नानुसार होता है —

'मेष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित शुक्र का फल — 'मेष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित, बलिष्ठ तथा चतुर होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। व्यवसाय तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक धनी, कुटुम्बवान् एवं सौभाग्यशाली होता है। स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। अपनी योग्यता के कारण आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम, चातुर्य, साहस एवं भाई-बहनों की वृद्धि होती है।

स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। जातक पराक्रमी, धनी तथा सुखी होता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। राज्य, पिता तथा व्यापार/व्यवसाय का क्षेत्र उन्नतिशील बना रहता है। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आमदनी अच्छी रहती है। जातक विद्वान, धनवान, सन्तानवान, सुखी तथा भाग्यशाली होता है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो गुप्त-चातुर्य द्वारा शत्रु-पक्ष पर काम लेने की आवश्यकता पड़ती है तथा जातक कठिनाइयों का शिकार बना रहता है। खर्च में अधिकता रहती है। बाहरी स्थानों के संबंधों में सफलता मिलती है। प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष रहते हैं तथा बुद्धि-बल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलतायें मिलती हैं। जातक सुन्दर, कार्य-कुशल, पुष्ट, प्रतिष्ठित, सुखी तथा धनी होता है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्व की शक्ति का लाभ होता है। कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा चातुर्य द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्य, स्त्री, कुटुम्ब-सुख, पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख की वृद्धि होती है। जातक सुखी, धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी, भाग्यशाली तथा भाई-बहिनों से युक्त होता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य पक्ष से सुख मिलता है। व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। जातक धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

(११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो चातुर्य द्वारा लाभ एवं स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सुख की प्राप्ति होती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी होशियारी से सफलता मिलती है। जातक सुखी, धनी, चतुर तथा स्वार्थी होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी सम्बन्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा यश की प्राप्ति होती है। खर्च भी अधिक रहता है। शत्रु-पक्ष में छल तथा भेद-नीति से काम निकलता है तथा शत्रुओं द्वारा कुछ हानि भी उठानी पड़ती है। जातक संघर्षपूर्ण सामान्य-जीवन बिताता है।

'वृष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल — 'वृष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शुक्र 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं आत्मिक-बल में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है, परन्तु कभी कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है। व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। कुल मिलाकर जीवन सुख में बीतता है। (2) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो परिश्रम द्वारा धन एवं कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है। शारीरिक-सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष से चातुर्य द्वारा लाभ मिलता है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की वृद्धि होती है; भाई-बहिन का सुख कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। जातक धनी, यशस्वी, पराक्रमी तथा चतुर होता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में कमी आती है। भूमि तथा भवन के सुख के विषय में भी कुछ असन्तोष रहता है, तथापि सुख के लिए साधन प्राप्त होते रहते हैं। शत्रु पक्ष पर शान्ति एवं चातुर्य से सफलता मिलती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में मान, प्रतिष्ठा, लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है।

(५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या एवं संतान-पक्ष कमजोर रहता है; बुद्धि-चातुर्य द्वारा शत्रु-पक्ष से सफलता प्राप्त होती है। कठिन परिश्रम एवं दिमागी हेर-फेर से आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक चिन्ता, शारीरिक-सौंदर्य में कमी तथा मानसिक-परेशानी का शिकार बना रहता है।
(६) शुक्र 'षष्ठभाव' में हो तो शारीरिक-शक्ति एवं चातुर्य द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। शारीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी रहती है। माता द्वारा लाभ होता है। पदोन्नति का योग भी बनता है। नाती सम्बन्धों से लाभ होता है। खर्च की अधिकता रहती है। अत्यन्त प्रतापी होते हुए भी जातक किसी-न-किसी झगड़े में फँसा रहता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से वैमनस्य एवं परेशानी; व्यवसाय-क्षेत्र में कठोर शारीरिक-परिश्रम द्वारा सफलता, शरीर में रुग्णता एवं सांसारिक कार्यों में दक्षता—ये फल प्राप्त होते हैं। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो शारीरिक-सौंदर्य में कमी आती है; रोगादि का कष्ट बना रहता है; आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है; कठिन-परिश्रम से धन-वृद्धि होती है, शत्रु-पक्ष से कष्ट, उदर-विकार तथा माता के पक्ष में कमजोरी—ये फल होते हैं। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो शारीरिक-श्रम द्वारा भाग्यो-न्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। शारीरिक-दुर्बलता होते हुए भी रोग आदि के योग रहते हैं। भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर तथा झगड़े के माम-लों में विजय प्राप्त होती है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता के साथ साधारण-वैमनस्य रहता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा परिश्रम के बाद सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। माता, भूमि एवं भवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफ-लता मिलती है। जातक अहंकारी, परन्तु सुखी तथा उन्नतिशील बना रहता है। (११) शुक्र एकादश

भाव' में हो तो आमदनी की वृद्धि होती है। शरीर स्वस्थ तथा नीरोग होता है। शत्रु-पक्ष से लाभ मिलता है। सन्तान-पक्ष से कमी तथा विद्याध्ययन में लापरवाही रहती है। प्रयत्नों द्वारा लाभ तथा उन्नति की प्राप्ति होती है। (12) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। शरीर से दुर्बल रहने पर भी जातक परिश्रमी होता है। शत्रु-पक्ष से हानि होती है, परन्तु ऐसा जातक चतुर तथा धन कमाने में कुशल होता है।

'मिथुन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल- 'मिथुन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (1) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर दुर्बल रहता है; परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य की प्रचुर उपलब्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। स्त्री के साथ मतभेद पूर्ण प्रेम रहता है। दैनिक कार्यों तथा व्यवसाय में युक्तिपूर्वक सफलता मिलती है। जातक बहुत विलासी होता है। (2) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, तथापि धन का संचय नहीं हो पाता। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छा रहता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु संतान-पक्ष में कमी रहती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। जीवन आनन्दमय बना रहता है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के सुख, पराक्रम, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है, फिर भी चातुर्य अधिक होता है। धर्म तथा भाग्य की वृद्धि हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ता है। पुरुषार्थ द्वारा खर्च चलाने एवं चतुराई से काम निकालने में कुशलता प्राप्त होती है। (4) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। संतान का सुख भी कम मिलता है। अन्य सुखों में भी व्यवधान आता है। पिता तथा राज्य द्वारा सुख-सम्मान मिलता है। गुप्त चातुर्य से मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है।

(५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। जातक चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। बुद्धि द्वारा लाभ प्राप्त होता है, परन्तु आय से खर्च अधिक रहता है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर गुप्त-चतुराई एवं धन खर्च कर के सफलता प्राप्त होती है। सन्तान-पक्ष एवं विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं। आमदनी से खर्च अधिक रहता है। झगड़े-झंझट एवं मुकदमेबाजी में राशियाँ खर्च होती रहती हैं। (७) शुक्र 'सप्तमभाव' में हो तो पत्नी बुद्धिमती एवं चतुर होती है, परन्तु उसके कष्ट एवं चिन्ताओं की उपलब्धि होती है। दैनिक खर्च चलाने के लिए बड़ी चतुराई तथा बुद्धिमानी से काम लेना पड़ता है। शरीर दुर्बल होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। जातक कूटनीतिज्ञ तथा परिश्रमी होता है। सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करने पड़ते हैं तथा खर्च अधिक बना रहता है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है। पराक्रम में कुछ कमी आती है। जातक भाग्यवादी होता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत हानि उठानी पड़ती है। राज्य, विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। जातक अपने अहंकारी स्वभाव के कारण बारम्बार हानि उठाता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है, परन्तु खर्च भी खूब रहता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है। सन्तान-पक्ष से भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। (१२) शुक्र 'द्वादश

भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। विद्या तथा संतान पक्ष में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। शत्रु-पक्ष में चतुराई से प्रभाव स्थापित होता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

'कर्क' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल – 'कर्क' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है – **(1)** शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, सुख एवं चातुर्य का लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। भोगादि में रुचि रहती है। जातक विलासी, धनी तथा सुखी होता है। **(2)** शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो सामान्य असन्तोष के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। माता के सुख में कुछ कमी रहती है। आयु में वृद्धि होती है। पुरातत्व का लाभ होता है। जातक धनी तथा सुखी जीवन बिताता है। **(3)** शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी रहती है। माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। जातक अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपा कर हिम्मती बना रहता है। **(4)** शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आमदनी में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलताएं मिलती हैं। जातक बड़ा चतुर, यशस्वी, प्रतिष्ठित तथा धनवान होता है। **(5)** शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान का श्रेष्ठ लाभ होता है। आमदनी अच्छी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। **(6)** शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी एवं अशान्ति रहती है। लाभ के मार्ग में परतन्त्रता का योग बनता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ मिलता है तथा खर्च की अधिकता बनी रहती है।

(७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो दैनिक आमदनी एवं स्त्री-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, चातुर्य एवं सुख की उपलब्धि होती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परदेश में हल्की उन्नति होती है। स्त्री-सुख में कुछ कमी रहती है। धन-संचय नहीं हो पाता तथा कौटुम्बिक-सुख में भी कमी रहती है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो धर्म एवं भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख मिलता है। बहिन-भाई के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। जातक धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होता है। जातक धनी, सुखी, सुशील, शृंगार-प्रिय, चतुर, गंभीर तथा ऐश्वर्यशाली होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। विद्या-बुद्धि, संतान के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। जातक चतुर, धनी तथा सुखी होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी स्थानों के संबंधों से सुख तथा लाभ प्राप्त होता है। खर्च अधिक रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। परदेश में रहना पड़ता है। शत्रु-पक्ष से चतुराई तथा धन-खर्च द्वारा काम निकालने में सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल- 'सिंह' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का फल इस प्रकार होता है— (१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, शृंगार, यश तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। भाई-बहिनों से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है। स्त्री-पक्ष में सफलता मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय से लाभ होता है। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख न्यून परिमाण में प्राप्त होता है। पिता, राज्य एवं

व्यवसाय के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण रहता है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि पुरुषार्थ द्वारा होती है। जातक योग्य, चतुर तथा पराक्रमी होता है। (4) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के साथ सामान्य-मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन का यथेष्ट सुख मिलता है तथा रहन-सहन रईसी होता है। (5) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिन तथा पिता का सुख प्राप्त होता है। सर्वत्र सम्मान की उपलब्धि होती है। राज्य-पक्ष से सुख मिलता है। जातक सुखी, धनी, राजनीतिज्ञ तथा यशस्वी होता है। (6) शुक्र 'षष्ठभाव' में हो तो जातक चतुर, प्रभावशाली तथा शत्रुजयी होता है। पिता के साथ सामान्य-मतभेद रहता है। राज्य-पक्ष से सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से सुख तथा लाभ की उपलब्धि होती है। गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलताएँ मिलती हैं। (7) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। भाई-बहिन तथा पिता का सुख मिलता है। गृहस्थी का संचालन कुशलता पूर्वक होता है। यश मिलता है। शारीरिक-शक्ति, मनोबल एवं हिम्मत की वृद्धि होती है। ऐसा जातक उन्नति करने वाला होता है। (8) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाई-बहिन तथा पिता के सुख में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है। राज्य-पक्ष से सफलताएँ मिलती हैं। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी बनी रहती है। (9) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक

सुखी, धनी, यशस्वी, चतुर तथा हिम्मती होता है। (१०) शुक्र 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलतायें मिलती हैं। भाई-बहिनों का सुख भी रहता है। माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक चतुर, प्रभावशाली, परिश्रमी तथा भाग्यवान् होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में खूब वृद्धि होती है। भाई-बहिन तथा पिता का श्रेष्ठ सुख मिलता है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष लाभ होता है। जातक सुखी तथा धनी होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। पिता, भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर चतुराई से प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों में हिम्मत से विजय प्राप्त होती है।

'कन्या' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव- 'कन्या' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है—(१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो धन एवं कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी रहती है। जातक अधर्म पूर्वक धन कमाने का भी प्रयत्न करता है। स्त्री, पुत्र तथा भाग्यवान मिलती है। व्यवसाय एवं रोजगार में यथेष्ट सफलता मिलती है। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है। धन, सुख तथा यश की उपलब्धि होती है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन का उत्तम सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। कौटुम्बिक-सुख भी बढ़ता है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। जातक धनी, धर्मात्मा, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

(५) शुक्र 'पंचमभाव' में हो तो संतान-पक्ष से श्रेष्ठ लाभ होता है। विद्या, बुद्धि, धन, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। बुद्धि-चातुर्य के बल पर आमदनी की वृद्धि होती है तथा निरन्तर उन्नति होती रहती है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो भाग्य, धन तथा कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी आती है। धर्म में रुचि नहीं होती। चतुराई से धन की वृद्धि होती है तथा परिश्रम द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलताएँ प्राप्त होती हैं। झगड़े-मुकदमों से लाभ होता है। बाहरी संबंधों से सुख तथा लाभ की उपलब्धि होती है। खर्च अधिक रहता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दर स्त्री मिलती है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त होती हैं। जातक भोगी, सुखी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। धन-वृद्धि के लिए शारीरिक-सुखों की चिन्ता नहीं रहती। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो भाग्य कमजोर रहता है। धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन नहीं हो पाता। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। गुप्त-चातुर्य एवं कठोर परिश्रम द्वारा धन-संचय होता है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो जातक धर्मात्मा एवं बड़ा भाग्यशाली होता है। धन तथा यश-सम्मान की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों की शक्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। कौटुम्बिक-सुख भी पूर्ण मिलता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलताएँ मिलती हैं। अच्छे कार्यों से धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। (११) शुक्र 'एकादशभाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है। धन, कुटुम्ब, धर्म, भाग्य की वृद्धि होती है। विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा योग्य होता है। (१२) शुक्र 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से हानि होती है। भाग्योन्नति में व्यवधान पड़ता है। धन-संचय नहीं हो पाता। शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों में सफलता मिलती है। कौटुम्बिक-सुख में कमी रहती है।

'तुला' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल- 'तुला' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो जातक के शारीरिक एवं आत्मिक-बल तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। कभी-कभी शारीरिक-परेशानी भी होती है। स्त्री-पुरुष तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कमी रहती है तथा सफलता के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। जीवन अमीरी ढंग से बीतता है। (3) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। पराक्रम में वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। जीवन प्रभावशाली ढंग से बीतता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की उपलब्धि होती है। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष कुछ दुर्बल रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। बुद्धि-बल से उन्नति होती है तथा लाभ मिलता है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बाहरी सम्बन्धों तथा खर्च के कारण कुछ परेशानी रहती है। जीवन ठाठ से बीतता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री-पक्ष से शक्ति मिलती है। परिश्रम द्वारा दैनिक आमदनी की उपलब्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य, आत्मिक-बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो

आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। धन-संचय हेतु चतुराई का सहारा लेना पड़ता है तथा कुटुम्बियों से कुछ मतभेद बना रहता है। (९) शुक्र 'नवमभाव' में हो तो कुछ कमी के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य की उपलब्धि होती है। पराक्रम की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो शारीरिक-श्रम तथा चातुर्य द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष से सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के बारे में कठिनाइयाँ आती हैं। बाहरी संबंधों से कष्ट होता है। आयु तथा पुरातत्त्व में भी कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। झगड़े आदि में हिम्मत तथा चतुराई से सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल — 'वृश्चिक' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शुक्र 'प्रथमभाव' में हो तो शरीर दुर्बल रहता है, परन्तु चातुर्य एवं कार्यकुशलता की वृद्धि होती है। स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। इन क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक सुख की कुछ परेशानी रहती है। धन का लाभ भी होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जातक धनी तथा बड़ा समझा जाता है। (३) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी

संबंधों से लाभ होता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी रहती है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष भी दुर्बल रहता है। बाहरी संबंधों से सुख मिलता है तथा खर्च आराम से चलता रहता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सुख, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलताएँ मिलती हैं। जातक किसी कला का विशेषज्ञ होता है। वह स्त्री के प्रभाव में रहता है तथा वाक्पटु भी होता है। बाहरी संबंधों से शक्ति एवं लाभ की उपलब्धि होती है। आमदनी के में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। गृहस्थी के संचालन में कुछ परेशानियाँ आती हैं। बाहरी स्थानों के संबंधों से अधिक परिश्रम द्वारा कम लाभ होता है। खर्च की अधिकता बनी रहती है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक आमदनी के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के संबंध से खर्च चलाने में सहायता मिलती है। शरीर दुर्बल होते हुए भी प्रभाव तथा कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। जातक यशस्वी तथा बुद्धिमान होता है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में संकटों का सामना करना पड़ता है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में भी कठिनाइयाँ रहती हैं। गुप्त-चातुर्य एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कठिनाइयाँ आती हैं। जातक चतुराई से काम लेकर अपनी प्रतिष्ठा बचाता है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री-पक्ष से परेशानी रहती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। भाई-बहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी असंतोषजनक स्थिति रहती है। जातक बड़ी चतुराई से अपना काम निकालता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ

कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख-सहयोग प्राप्त होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में कमी आती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय का क्षेत्र भी असंतोषपूर्ण रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध से चातुर्य द्वारा कुछ लाभ मिलता है। विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष कुछ कमजोर रहता है। (१२) शुक्र 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियाँ रहती हैं। शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियों के बाद सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल — 'धनु' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शुक्र 'प्रथमभाव' में हो तो स्वास्थ्य कुछ कमजोर रहता है, तथापि जातक परिश्रमी एवं चतुर होता है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है तथा यशस्वी होता है। स्त्री से कुछ मतभेद युक्त सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में चतुराई से लाभ प्राप्त करता है। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन खूब मिलता है, परन्तु कुटुम्बियों से मतभेद रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा उस पर प्रभाव स्थापित रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति की वृद्धि होती है। (३) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है। कुछ कमी के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है। धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सामान्यतः जीवन सुखी रहता है। (४) शुक्र 'चतुर्थभाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है। शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त

होती है। पिता से हानि, राज्य-क्षेत्र से असफलता एवं व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में अनेक प्रकार की बाधायें आती हैं। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। वाक्पटुता, चातुर्य एवं कला की उपलब्धि होती है। विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। परिश्रम द्वारा आमदनी तथा धन की वृद्धि होती है। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ कठिनाइयों के साथ उत्तम लाभ होता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद युक्त लाभ मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होना संभव रहता है। शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव की उपलब्धि होती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। बाहरी स्थानों के संबंधों से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। कुटुम्ब का सहयोग मिलता है तथा धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। धर्म में कम श्रद्धा रहती है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। जातक भाग्यवान समझा जाता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव होता है। शत्रु-पक्ष के कारण भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। घर के भीतर भी प्रभाव बना रहता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में वृद्धि होती है एवं शत्रु-पक्ष से विशेष लाभ होता है।

कुछ कठिनाइयों के बाद विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष से त्रुटिपूर्ण लाभ मिलता है। जातक बड़ा विद्वान, गुणी तथा चतुर होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी संबंधों से लाभ होता है। झगड़े तथा शत्रुओं के कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु चतुराई से लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है।

'मकर' लग्न के द्वादश भावों में 'शुक्र' का फल– 'मकर' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सामाजिक-प्रतिष्ठा की उपलब्धि होती है। सन्तान से सुख मिलता है। विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। पत्नी सुन्दरी तथा उपयोग मिलती है। दैनिक आमदनी भी अच्छी रहती है। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से लाभ होता है। सन्तान-पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व में कुछ कमी आती है। जातक धनी तथा यशस्वी होता है, परन्तु चिन्तित रहता है। (३) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। भाई-बहिन का सुख कुछ कम मिलता है। विद्या एवं सन्तान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी रहती है। यश भी कम ही मिल पाता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि-बल से आमदनी भी अच्छी रहती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। जातक रसिक, शीलवान, विचारशील तथा सुख-शान्तिपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-

बुद्धि एवं संतान का यथेष्ट लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा जातक हुकूमत-पसन्द तथा कानून का पालक होता है। आमदनी पर्याप्त रहती है तथा नित्य उन्नति होती चली जाती है। (६) शुक्र 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। पिता के साथ सामान्य मतभेद रहता है। राज्य से सम्मान मिलता है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्बल रहता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। दिमागी चिन्ताएँ बनी रहती हैं। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो पत्नी कुलीन तथा सुयोग्य मिलती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय से सुख मिलता है। विद्या तथा सन्तान का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है। शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव की उपलब्धि होती है। राजकीय तथा सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा बढ़ती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति मिलती है। पिता एवं संतान-पक्ष से कष्ट होता है। राज्य तथा विद्या पक्ष त्रुटिपूर्ण रहता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्नति होती है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पुरुषार्थ द्वारा उन्नति होती है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी उत्तम रहता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है तथा दैनिक-जीवन उल्लास पूर्ण बना रहता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। जातक अपनी निजी योग्यता के बल पर उन्नति करता है।

(१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता रहता है। पिता-पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट, राज्य-पक्ष से असफलता तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकालना पड़ता है। उन्नति करने में विलम्ब होता है।

'कुम्भ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल- 'कुम्भ' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शुक्र 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सुख की उपलब्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। भाग्य एवं धर्म का पक्ष प्रबल रहता है। स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है, परन्तु दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुंब का विशेष सुख मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख की भी यथेष्ट उपलब्धि होती है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी आती है। दैनिक जीवन में कुछ चिन्ताएँ बनी रहती हैं, तथापि जातक बड़ा धनी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है। (३) शुक्र 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का सुख मिलता है, पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख उपलब्ध होता है। भाग्य की अत्यधिक उन्नति होती है। धर्म का यथाविधि पालन होता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। (५) शुक्र 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। भाग्य की वृद्धि होती रहती है तथा चतुराई के बल पर खूब लाभ होता है। (६) शुक्र 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। माता के

सुख में कमी आती है। मातृभूमि से दूर रहना पड़ता है। भूमि, भवन, भाग्य तथा धर्म का पक्ष दुर्बल रहता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ असंतोष युक्त सुख मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने पर सफ-लता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। शारीरिक-सौन्दर्य, सुख, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन में अशान्ति रहती है, पुरातत्त्व के सुख में कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख अत्यन्त दुर्बल रहता है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की परिश्रम द्वारा उन्नति होती है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है। धर्म का भी समुचित रूप से पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जातक धार्मिक, यशस्वी तथा प्रति-ष्ठित होता है। माता, भूमि एवं भवन का भी यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में यथेष्ट वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। संतान पक्ष से सुख मिलता है। विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। जातक धनी, ज्ञानी, चतुर तथा यशस्वी होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। अल्पायु में ही माता-पिता का वियोग हो जाता है। यश में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर चतुराई के बल से विजय मिलती है तथा झगड़े-टंटे मुकदमे आदि में लाभ होता है। जीवन संघर्ष पूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शुक्र' का फल- 'मीन' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शुक्र 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का सुख तथा पराक्रम भी बढ़ता है। पुरातत्त्व की शक्ति एवं आयु का लाभ होता है। जीवन आनन्दमय बना रहता है। स्त्री-सुख में कमी आती है, गृहस्थ-जीवन असन्तोषयुक्त रहता है। दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। (२) शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो पुरुषार्थ द्वारा धन-वृद्धि के प्रयत्न में पूर्ण सफलता नहीं मिलती कौटुम्बिक-सुख में भी कुछ कमी रहती है। आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। जातक अपनी समझदारी के कारण ठीक रईसी ढंग का जीवन बिता पाता है। (३) शुक्र 'तृतीयभाव' में हो तो भाई-बहनों की शक्ति मिलती है, परन्तु उनसे कुछ परेशानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में रुकावटें आती हैं, परन्तु जातक अपने परिश्रम के बल पर सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। (४) शुक्र 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से सुख, सहयोग, सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, परन्तु लाभ में कुछ कमी रहती है। (५) शुक्र 'पञ्चम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान का यथेष्ट सुख मिलता है। भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है। आयु तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक धन के बल पर अपना प्रत्येक काम पूरा करा लेता है। (६) शुक्र 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ मिलती हैं, परन्तु जातक अपनी चतुराई द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर लेता है। भाई-बहिनों से कष्ट होता है। पराक्रम, पुरातत्त्व तथा

आयु में कमी होती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती रहती है। (७) शुक्र 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिनों का सुख तथा पराक्रम भी निर्बल रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व में कमी आती है। शारीरिक-सौंदर्य, स्वास्थ्य, शक्ति, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की उपलब्धि होती है। (८) शुक्र 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से परेशानी रहती है। जातक लापरवाह किस्म का होता है। (९) शुक्र 'नवम भाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म-वृद्धि के मार्ग में रुकावटें आती हैं। जीवन आनन्दमय बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। (१०) शुक्र 'दशम भाव' में हो तो पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। जातक अपने चातुर्य के बल पर उन्नति करता है। (११) शुक्र 'एकादश भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। आयु, पुरातत्त्व की शक्ति तथा पराक्रम में भी खूब वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में प्रयत्नों से ही सफलता मिलती है। जातक स्वार्थ-साधन में चतुर होता है। (१२) शुक्र 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर चातुर्य के बल से सफलता मिलती है। जातक झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।

भु० सं० ८३२३

कु० २०

विभिन्न लग्नों के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का फल- विभिन्न लग्नों वाली जन्म-कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव निम्नानुसार होता है-

'मेष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल- 'मेष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (1) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा मान-प्रतिष्ठा में कमी आती है। राज्य-क्षेत्र में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। पराक्रम तथा भाई-बहिनों की वृद्धि होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती। राज्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। (2) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होने पर भी अशान्ति का सामना करना पड़ता है। आयु में वृद्धि होती है। जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। (3) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। पिता तथा राज्य से सहयोग मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी-सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं। (4) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में वृद्धि होती रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा मन में कुछ चिन्तायें भी बनी रहती हैं। (5) शनि 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान से मतभेद रहता है। दैनिक व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में सफलता मिलती है। आमदनी खूब रहती है। राज्य तथा पिता से भी लाभ रहता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। (6) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो पिता के साथ वैमनस्य रहता है।

राज्य-पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रुओं पर विजय मिल-ती है। पुरातत्त्व तथा आयु के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों से सफलता मिलती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असन्तोष रहता है। पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। जातक बहुत हिम्मती तथा प्रभावशाली होता है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो दैनिक व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य से बहुत लाभ होता है। भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ असन्तोष रहता है तथा घरेलू-सुख में भी कमी आती है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। आमदनी के क्षेत्र में कमी रहती है। राज्य तथा पिता-पक्ष से अल्प लाभ होता है। कठिन परिश्रम द्वारा धन तथा कौटुम्बिक-सुख का लाभ होता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में कमी रहती है। जातक क्रोधी तथा तेज ज़बान का होता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो भाग्य की उन्नति आरम्भ में कम तथा बाद में अधिक होती है। धर्म-पालन भी कम ही होता है। पिता तथा राज्य द्वारा लाभ मिलता है। आमदनी अच्छी रहती है। ऐश्वर्य का लाभ होता है। पराक्रम वृद्धि के साथ ही भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। जातक धनी, यशस्वी तथा शत्रुजयी होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य द्वारा विशेष सुख तथा लाभ प्राप्त होता है। खर्च अधि-क रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध असंतोषजनक रहते हैं। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। जातक ऐश्वर्यवान्, विलासी तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी खूब रहती है। पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है।

विद्या तथा सन्तान-पक्ष भी त्रुटिपूर्ण रहता है। आयु की वृद्धि होती है। पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है तथा दैनिक जीवन में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च बहुत अधिक होता है। पिता एवं राज्य पक्ष से तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी हानि उठानी पड़ती है। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। भाग्योन्नति में बहुत कठिनाइयाँ आती हैं। अधिक परिश्रम करके बहुत थोड़ी सफलता मिलती है।

'वृष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल – 'वृष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक पुष्ट तथा भाग्यशाली होता है। भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। पिता एवं राज्य द्वारा सम्मान का लाभ होता है। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। माता के सुख में कमी आती है। आयु की वृद्धि होती है। आमदनी के उत्तम अवसर प्राप्त होते हैं। राज्य के क्षेत्र में प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य की उन्नति होती है। खर्च की कमी रहती है तथा बाहरी संबंधों में भी अनियमितता रहती है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के साथ वैमनस्य होता है। भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। मामा से शक्ति मिलती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है। (५) शनि 'पंचम भाव'

में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में असंतोष रहता है। आमदनी के साधनों में भी कमजोरी रहती है। धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है। सामान्यतः जातक धनी तथा प्रतिष्ठित होता है। (६) शनि 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं। आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में चिन्तायुक्त लाभ होता है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध असंतोष जनक रहता है तथा खर्च की भी परेशानी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मेल नहीं रहता। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। कुटुम्ब-संचालन में कुछ कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। पिता तथा राज्य से शक्ति प्राप्त होती है। भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव भी उत्तम रहता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ दीर्घायु प्राप्त होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति के लिए विशेष कष्ट उठाना पड़ता है। धन का संचय होता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। (९) शनि 'नवमभाव' में हो तो धर्म एवं भाग्य की वृद्धि होती है। राज्य तथा पिता से श्रेष्ठ लाभ होता है। अनुचित-मार्ग से भी आमदनी में वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है। भाई-बहिनों से मन-मुटाव रहता है। शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है। माता से लाभ होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा यथेष्ट लाभ होता है एवं प्रतिष्ठा मिलती है। खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध त्रुटि पूर्ण रहते हैं। माता, भूमि, भवन तथा घरेलू-सुख में कमी आती है। स्त्री-पक्ष भाग्यशाली होता है। दैनिक जीवन में चिन्ताएँ रहती हैं। जातक बड़ा

भाग्यवान तथा सफल व्यवसायी होता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलताएँ मिलती हैं। पिता एवं राज्य-पक्ष से असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। भाग्य प्रबल रहता है। शारीरिक प्रभाव तथा आयु की शक्ति प्राप्त होती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्व के विषय में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च एवं बाहरी संबंधों से परेशानी का अनुभव होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय, भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमियाँ रहती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। झगड़े-मुकदमे आदि से लाभ होता है। भाग्य की थोड़ी बहुत वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल– 'मिथुन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है एवं पराक्रम में कमी आती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में असं-तोष रहता है। पिता से वैमनस्य रहता है तथा स्वामी व्यापार के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय की शक्ति तथा कौटुम्बिक-सुख की हानि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कष्ट के साथ प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक सज्जन, स्वाभिमानी तथा भाग्यवान होता है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में कुछ कमी आती है एवं भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। कुछ कठिनाइयों

के साथ भाग्य की वृद्धि होती है। धर्म का पालन भी होता है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। (4) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। शत्रु पक्ष पर कड़ाई से प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़ों से लाभ मिलता है। पिता एवं राज्य क्षेत्र से असन्तोष तथा वैमनस्य रहता है। शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है। जातक को भाग्यवान् भी समझा जाता है। (5) शनि 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आय-वृद्धि भी होती है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठि-नाइयाँ आती हैं। आमदनी के क्षेत्र में कमी आती है। धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है तथा कुटुम्ब से भी अल्प सुख प्राप्त होता है। (6) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु एवं झगड़ों में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। ठाठ-बाट में खर्च अधिक होता है। पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के सुख में बाधा पड़ती है। जातक अत्यन्त परिश्रमी होता है। (7) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-दुःख-दोनों की प्राप्ति होती है। जननेन्द्रिय में कष्ट होता है। आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य की वृद्धि होती है। शारीरिक-प्रभाव में कुछ कमी के साथ वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। ऐसा जातक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर उन्नति करता है। (8) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का यथाविधि पालन नहीं हो पाता।

पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। धन-संचय में कमी रहती है। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक अपनी वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो कुछ कमियों के साथ भाग्यशाली बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि रहती है तथा यश का लाभ होता है। आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। शत्रु-पक्ष द्वारा उत्पन्न कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। जातक बड़े ठाठ का जीवन व्यतीत करता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता के सुख में कमी आती है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती हैं। बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ संबंध रहते हैं। खर्च अधिक रहता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। धन-प्राप्ति हेतु अनुचित उपायों का अवलम्बन भी लेना पड़ता है। शरीर-कष्ट रहता है तथा भाग्य-वृद्धि भी होती है। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जीवन पर अनेक संकट तथा खतरे भी आते हैं। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन एवं कौटुम्बिक-सुख की कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर कठिनाइयों के बाद विजय मिलती है। भाग्य-वृद्धि होती है। धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति सुख-दुःख तथा यश-अपयश दोनों प्राप्त करता है एवं भाग्यशाली समझा जाता है।

'कर्क' लग्न के द्वादश भावों में स्थित शनि का फल— 'कर्क' लग्न की

जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में कोई रोग भी रहता है। भाई-बहिन का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है। पराक्रम में वृद्धि होती है। व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री का सुख होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता, सम्मान एवं लाभ की उपलब्धि होती है। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब-सुख की हानि पहुँचती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। अमीरी ढँग का जीवन रहते हुए भी पारिवारिक-सुख तथा धन की कमी बनी रहती है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है। भाई-बहिनों द्वारा परेशानी मिलती है। सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बुद्धि की कमी रहती है। भाग्य में रुकावटें आती हैं। धर्म में अरुचि रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का भी होता है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु भूमि-भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शरीर में आलस्य तथा रोग रहता है। घरेलू-सुख में भी कुछ कमी रहती है। (५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री बुद्धिमती मिलती है, परन्तु उसके कारण कुछ कष्ट भी होता है। व्यवसाय में बुद्धि-प्रयोग से सफलता मिलती है। आमदनी अच्छी रहती है। धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। स्त्री तथा

व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख की भी पर्याप्त उपलब्धि होती है। आय एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है एवं माता, भूमि तथा भवन का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री एवं दैनिक आमदनी के क्षेत्र में परेशानियाँ बनी रहती हैं। बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ रहती हैं। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव होता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो धर्म-पालन एवं भाग्योन्नति में कुछ कठि-नाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आमदनी बढ़ती है। पराक्रम में भी वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। कुछ कठिनाइयों के बाद शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य तथा व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। पुरातत्त्व एवं आयु की हानि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। माता, भूमि, भवन आदि का सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में लाभ होता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय से भी लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कष्ट रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। जातक

कम पढ़ा-लिखा होते हुए भी अपने परिश्रम तथा चातुर्य के बल पर सुखी जीवन व्यतीत करता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। आयु, पुरातत्व, स्त्री एवं दैनिक आमदनी की शक्ति की हानि होती है। धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। शत्रु उत्पात करते रहते हैं, परन्तु उन पर प्रभाव बना रहता है। धर्म-पालन में कमी आती है तथा भाग्य की शक्ति भी क्षीण रहती है। इन सब कठिनाइयों के बावजूद भी जातक ठाठ का जीवन व्यतीत करता है।

'सिंह' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल – 'सिंह' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-कष्ट, रोग आदि होते हैं तथा शत्रु-पक्ष पर कुछ प्रभाव बना रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख, यश तथा लाभ की प्राप्ति होती है। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख की हानि-लाभ-दोनों होते हैं। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में बाधाएं आती हैं। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्व के सम्बन्ध में असन्तोष रहता है। आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसे जातक का जीवन प्रायः सुख-दुःख पूर्ण बना रहता है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो प्रभाव एवं पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। स्त्री-पक्ष में विशेष प्रभाव बना रहता है। आमदनी भी अच्छी रहती है। सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का क्षेत्र कुछ कमजोर रहता है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी आती है। खर्च के कारण भी परेशानी बनी रहती है।

(४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में असन्तोष रहता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रुओं पर विजय मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। शरीर में तेज रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। (५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं। स्त्री तथा दैनिक आमदनी से सुख मिलता है। स्त्री बुद्धिमती होती है। आमदनी में वृद्धि होती है, धन की वृद्धि होती है तथा सामान्य कौटुम्बिक-सुख भी मिलता है। जातक बहुत भोगी होता है। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है ननिहाल-पक्ष से भी लाभ होता है। दैनिक आमदनी तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है। पुरातत्व का सामान्य लाभ होता है। परन्तु आयु-पक्ष से कुछ अशान्ति रहती है। खर्च अधिक रहने के कारण परेशानी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख भी मिलता है। जातक अपनी हिम्मत के बल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है।
(७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है। भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है। यश में कमी आती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं मानसिक-शक्ति का ह्रास होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु में वृद्धि होती है, स्त्री-पक्ष में अशान्ति रहती है, दैनिक आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रु-पक्ष से परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा लाभ की उपलब्धि होती है। धन-वृद्धि के लिए विशेष श्रम करना पड़ता है। कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। विद्या-बुद्धि में कमी रहती है तथा सन्तान द्वारा

कष्ट प्राप्त होता है। (९) शनि 'नवमभाव' में हो तो भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में रुकावटें आती हैं। आमदनी यथेष्ट रहती है। भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े के मामलों से लाभ-हानि- दोनों प्राप्त होते हैं। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। माता के साथ वैमनस्य रहता है। भूमि तथा भवन का सुख अल्प परिमाण में मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी बहुत अच्छी रहती है। शत्रु-पक्ष से विशेष लाभ होता है। कुछ परेशानियों के साथ स्त्री का सुख मिलता है। दैनिक आय भी उत्तम रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा बीमारी का शिकार भी बनना पड़ता है। सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। आयु तथा पुरातत्व के विषय में भी चिन्तायें रहती हैं। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से कुछ लाभ रहता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। धन-जन वृद्धि हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं, धर्म की हानि होती है। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र से कष्ट मिलता है। जातक अपयशी तथा रोगी भी होता है।

'कन्या' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल— 'कन्या' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान से वैमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी

रहती है। स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। पिता की ओर
से सामान्य परेशानी रहती है तथा राज्य एवं स्थानीय-व्यापार के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। (२) शनि
'द्वितीय भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि का सुख ज्यादा होता है, परन्तु सन्तान से वैमनस्य रहता है। माता,
भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। आमदनी के क्षेत्र
में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। प्रत्येक क्षेत्र में स्वार्थ रहता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय
ज्यादा होती है। (3) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों से परेशानी रहती है। शत्रु-पक्ष पर
विजय मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में सामा-
न्य कठिनाइयाँ आती रहती हैं। परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है। खर्च में कठिनाई का अनुभव होता
है तथा बाहरी स्थानों से असन्तोष रहता है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के
सुख में कमी रहती है तथा सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है। विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। शत्रु-पक्ष
पर विजय मिलती है। झगड़ों से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं। पिता, राज्य एवं व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ
आती हैं, पर परिश्रम द्वारा लाभ होता है। शरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है। (५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो
विद्या-बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शत्रु-पक्ष में युक्ति
युक्तियों से विजय मिलती है। स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती
हैं। परिश्रम द्वारा लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। जीवन सुखी परन्तु संघर्षपूर्ण रहता
है। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। विद्या एवं संतान
पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि
होती है। खर्च की परेशानी रहती है। बाहरी सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। भाई-बहिनों द्वारा कष्ट मिलता

है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की सम्भावना रहती है। सन्तान-पक्ष में परेशानी रहती है, शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। बुद्धि-बल से भाग्योन्नति तथा धर्म का पालन होता है। शरीर में रोग रहता है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव होता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। पिता एवं राज्य-पक्ष से कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा व्यवसाय में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है। धन-संचय हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। विद्या की उपलब्धि कम होती है, परन्तु चातुर्य अधिक होता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो बुद्धि-बल से भाग्योन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आमदनी के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। ऐसा जातक बड़ा चतुर, हिम्मती, नीतिज्ञ तथा प्रभावशाली होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ की उपलब्धि होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। खर्च के मामले में असंतोष रहता है। बाहरी स्थानों से संबंध भी सुखदायक नहीं रहते। माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-सुख में कमी आती है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कठोर परिश्रम से ही सफलता मिलती है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है। शरीर में रोग रहता है। संतान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्रायः होती है। पुरातत्त्व की हानि होती है। आयु पर भी संकट आते हैं।

(१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से परेशानी होती है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि विशेष प्रयत्नों से होती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। रोगादि से कुछ कष्ट होता है। बुद्धि-बल से भाग्योन्नति होती है। धर्म में रुचि रहती है। जातक ठाठ-बाट पर खूब खर्च करता है।

'तुला' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल – 'तुला' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शनि 'प्रथमभाव' में हो तो जातक स्थूल शरीर का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। पराक्रम में कठिनाई से ही वृद्धि होती है। स्त्री से कुछ मतभेद रहता है। दैनिक आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, कुटुम्बियों से कुछ मतभेद रहता है, सन्तान-पक्ष में कमी तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है। कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी अच्छी रहती है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। बहिनों-भाइयों से कुछ मतभेद रहता है। मातृ-सुख मिलता है। विद्या तथा सन्तान की यथेष्ट शक्ति मिलती है, परन्तु सन्तान से कुछ मतभेद भी रहता है। धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। जातक सुखी, मानी तथा प्रभावशाली होता है।

(५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। स्त्री से मतभेद रहता है तथा दैनिक-व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब से मतभेद बना रहता है। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के बाद मिलता है। ~~यही स्थिति~~ विद्या तथा सन्तान-क्षेत्र की भी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक आमदनी के पक्ष में अशान्ति तथा कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है। विद्या तथा संतान का पक्ष भी कमजोर रहता है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। कद लम्बा होता है तथा शारीरिक-सुख भी मिलता है। भूमि तथा भवन एवं माता का सुख कुछ कठिनाई के साथ प्राप्त होता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। माता, भूमि, भवन, संतान तथा विद्या के पक्ष में कमी आती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धन-संचय में कमी रहती है। कौटुम्बिक-सुख में व्यवधान पड़ता है। विद्या तथा संतान से सामान्य लाभ होता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो बुद्धि द्वारा भाग्योन्नति होती है। धर्म का पालन भी होता है। विद्या, सन्तान, भूमि, भवन एवं माता का सुख भी मिलता है। आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, पराक्रम की वृद्धि होती है। बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। विद्या का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से मतभेद रहता है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों

से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री-सुख में कुछ कमी रहती है। व्यव-साय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है। शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। आयु तथा पुरातत्व की शक्ति मिलती है। जातक मनमौजी, स्वार्थी तथा लापरवाह स्वभाव का होता है। (१२) शनि 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। धन-संचय में कमी रहती है, कुटुम्ब से मतभेद रहता है, शत्रु-पक्ष पर सामान्य प्रभाव रहता है एवं धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसे जातक की बुद्धि तथा वाणी कुछ गुमचुप्पा बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल— 'वृश्चिक' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक उग्र तथा शान्त – दोनों प्रकार के स्वभाव वाला होता है। माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन, कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि होती है। आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। व्यक्ति धनी तथा सुखी रहता है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती

है। भाग्य की उन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है तथा धर्म का भी थोड़ा पालन होता है। व्यापार भली भाँति चलता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। मातृ-पक्ष द्वारा अशान्ति मिलती है। पिता से मतभेद रहता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अल्प सफलता मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। जातक पराक्रमी बहुत होता है। (५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-सुख मिलता है, परन्तु सन्तान से मतभेद भी रहता है। विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। माता से वैमनस्य रहता है, परन्तु भूमि, भवन का साधारण-सुख प्राप्त होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी अच्छी रहती है। कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है तथा धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो मातृ-पक्ष में युक्ति से काम निकलता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख अल्प-मात्रा में प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में सुख-सफलता मिलती है। कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा श्रम अधिक करना पड़ता है। माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। जीवन आमोदपूर्ण तथा प्रभावशाली बना रहता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। माता के सुख में बहुत कमी आती है। भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों का सुख भी कम मिलता है। पिता से वैमनस्य रहता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है।

धन-संचय में कमी आती है, कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है तथा विद्या, बुद्धि एवं संतान का पक्ष अपूर्ण रहता है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो कुछ रुकावटों के साथ भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आमदनी खूब रहती है तथा धन का उत्तम लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिनों का सुख कम मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। माता से कुछ मतभेद रहता है तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम सफलता मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन सुखमय बना रहता है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में बहुत वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन तथा भाई-बहिन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। पराक्रम की वृद्धि होती है। शारी-रिक सौन्दर्य में कमी आती है। कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है। आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, बाहरी संबंधों से लाभ तथा सुख की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन, माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी आती है। धन-संचय तथा कौटुम्बिक-सुख में भी कमी रहती है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अधिक धनवान न होते हुए भी अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

'धनु' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल— 'धनु' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो

शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। भाई-बहनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। स्त्री तथा दैनिक-आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में भी पूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का अल्प सुख मिलता है। आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। (३) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है। भाग्य तथा यश की उन्नति होती है। धर्म में कम श्रद्धा रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी लाभ नहीं मिलता। (४) शनि चतुर्थ भाव में हो तो माता के सुख में कमी रहती है। भूमि, भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन तथा कुटुम्ब का सुख भी असन्तोष जनक रहता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय क्षेत्र की उन्नति होती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। (५) शनि 'पञ्चम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है। व्यवसाय तथा स्त्री के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आमदनी खूब रहती है। कौटुम्बिक सुख तथा धन-संचय के लिए गुप्त-युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है। (६) शनि 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। कुटुम्बियों से कुछ विरोध रहता है। आयु की वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से हानि होती है। भाई-बहनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा पुरुषार्थी होता है।

कु०
र०

(७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री का लाभ तो होता है, परन्तु उससे सुख कम ही मिलता है। दैनिक आमदनी अच्छी रहती है। भाई-बहिन तथा कुटुम्बियों से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में रुकावटें आती हैं। शरीर में कुछ कष्ट रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा परदेश में रहना पड़ता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु में वृद्धि होती है एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक-सुख, धन-संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कमी बनी रहती है। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में बाधायें आती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता है। आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से धन-लाभ होता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध असन्तोष जनक रहते हैं। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय से सफलता प्राप्त होती है। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कुटुम्ब तथा भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। सन्तान से कष्ट मिलता है। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है। बाहरी स्थानों के संबंध भी असन्तोष-जनक रहते हैं। धन, कुटुम्ब तथा भाई

सं० भृ० ३२३८

कु० र०

बहिन के सुख में भी कमी रहती है। गुप्त युक्तियों के सहारे लाभ मिलता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी ठीक से नहीं हो पाता।

'मकर' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल – 'मकर' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शनि का प्रभाव इस प्रकार होता है – (1) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। जातक स्वाभिमानी तथा पराक्रमी होता है। पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों से असन्तोष रहता है। स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक आमदनी की वृद्धि हेतु विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। (2) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय एवं कौटुम्बिक-सुख का यथेष्ट लाभ होता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। कुछ कठिनाइयों के साथ आय में वृद्धि होती है। (3) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के बल पर धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है। (4) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। शरीर सुन्दर होता है तथा आत्मबल की अधिकता पाई जाती है। (5) शनि 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का विशेष लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं वाणी की विशेषता भी मिलती है। स्त्री

से कुछ असन्तोष रहता है, फिर भी उसके विशेष अनुरक्ति बनी रहती है। व्यवसाय-पक्ष में गुटिपूर्ण सफल-
-ता मिलती है। आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धन एवं कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि होती है।
(६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर
प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा धन-संग्रह में कमी आती है। आयु
तथा पुरातत्त्व का विशेष लाभ नहीं होता। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध
रहते हैं। भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। (७) शनि 'सप्तम
भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष में शक्ति तथा आत्मीयता की प्राप्ति होती है एवं परिश्रम द्वारा दैनिक आमदनी में
वृद्धि होती है। धन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। शारीरिक
सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा प्रभाव एवं स्वाभिमान बढ़ता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ
कमी रहती है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक-सौन्दर्य
तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। धन तथा कुटुम्ब को हानि पहुँचती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के
क्षेत्रों में सफलताएँ मिलती हैं। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है। (९) शनि 'नवम
भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की पर्याप्त उन्नति होती है। शारीरिक-प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब
का सुख भी मिलता है। आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिन के सुख में कमी
आती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। शारीरिक-शक्ति के बल पर शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती
है तथा झगड़ों से लाभ होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के
क्षेत्र में अत्यधिक सुख, सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी
यथेष्ट मिलता है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असंतोष रहता है। माता, भूमि तथा

भवन के सुख में कमी आती है। स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा दैनिक आमदनी में परेशानियाँ आती हैं। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। शारीरिक-सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, आत्मबल तथा प्रभाव की उपलब्धि होती है। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। आयु के विषय में चिन्ता रहती है, परन्तु पुरातत्त्व प्राप्ति का लाभ होता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्रोतों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक-स्वास्थ्य के सुख में कमी आती है। धन प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में विजय मिलती है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। जातक धनी तथा सौभाग्यशाली होता है।

'कुम्भ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल — 'कुम्भ' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) शनि 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। जातक ऐश्वर्यशाली तथा यशस्वी जीवन बिताता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक आमदनी में परेशानी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ रहती हैं। (२) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्रोतों से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की स्थिति सामान्य रहती है। खर्च की परेशानी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। (3) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-

बहनों से कष्ट मिलता है। शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान के सुख में वृद्धि होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता रहता है। (४) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख मिलता है। शारीरिक-शक्ति एवं बाहरी प्रभाव के कारण शत्रु-पक्ष से रक्षा प्राप्त होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी रहती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। (५) शनि 'पंचम भाव' में हो तो विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च की चिन्ताएँ भी रहती हैं। स्त्री तथा दैनिक आमदनी के पक्ष में कठि-नाइयों का अनुभव होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता रहती है। (६) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो परिश्रम द्वारा प्रभाव की वृद्धि होती है तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है। शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। आयु तथा पुरातत्व-शक्ति की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से परेशानी रहती है तथा दैनिक-आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है। भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शारीरिक-सौन्दर्य, यश, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। (८) शनि 'अष्टम भाव' में हो तो आयु की वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्व की कुछ हानि होती है। शरीर तथा खर्च के बारे में चिन्ताएँ रहती हैं। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पिता से वैमनस्य रहता है। राज्य एवं व्यवसाय क्षेत्र की उन्नति में बाधाएँ आती हैं। धन तथा कुटुम्ब का पूर्ण सुख नहीं मिलता। संतान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि

का कुछ कमी के साथ लाभ होता है। (९) शनि 'नवमभाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की यथेष्ट उन्नति होती है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य की वृद्धि होती है। बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है। आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। कभी-कभी आकस्मिक-लाभ भी होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। (१०) शनि 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। खर्च खूब रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता रहता है। शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव तथा यश की वृद्धि होती है। विद्या, बुद्धि की खूब वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। (१२) शनि 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ अधिक होता है। परेशानियाँ भी करनी पड़ती हैं। धन तथा कौटुम्बिक-सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, परन्तु उस पर प्रभाव भी स्थापित होता है। धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'शनि' का फल— 'मीन' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) शनि 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में न्यूनाधिकता बनी रहती है। स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा

दैनिक व्यवसाय में लाभ-हानि के योग आते रहते हैं। पिता से वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। (2) शनि 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय में कठिनाई आती है तथा हानि भी होती है। कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। बाहरी संबंध हानिकर सिद्ध होते हैं। माता, भूमि एवं भवन के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट शक्ति मिलती है। आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। (3) शनि 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहनों द्वारा सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सन्तान-पक्ष से कठिनाई तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कमी रहती है। खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ भी होता है। (4) शनि 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में कभी लाभ, कभी हानि होती है। पिता, राज्य तथा व्यव--साय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। (5) शनि 'पंचमभाव' में हो तो सन्तान पक्ष से हानि-लाभ-दोनों प्राप्त होते हैं। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ-दोनों की प्राप्ति होती है। धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से क्लेश मिलता है। (6) शनि 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों में खर्च करके लाभ उठाता है। बीमारी में भी बहुत खर्च होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ

कमी रहती है। (७) शनि 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में सुख-दुःखतथा हानि-लाभ-दोनों प्राप्त होते हैं। खर्च की परेशानी रहती है, बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, भाग्य तथा धर्म की उन्नति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। माता के सुख में हानि-लाभ-दोनों के योग रहते हैं तथा भूमि-भवन के सुख में कमी रहती है। (८) शनि 'अष्टमभाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों से विशेष लाभ होता है। पिता से अंत-रोध तथा राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से साधारण-लाभ होता है। धन का संचय नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब से परेशानी रहती है। सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। दिमाग में चिन्ताएँ भी रहती हैं। (९) शनि 'नवम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धर्म-पालन में कमी रहती है। आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। (१०) शनि 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा कठि--नाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु आमदनी अच्छी रहती है। खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में हानि-लाभ दोनों होते हैं। (११) शनि 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी अच्छी रहती है तथा बाहरी स्थानों से पर्याप्त लाभ होता है। खर्च भी अधिक रहता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा धन-प्राप्ति के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में भी कुछ कमी आती है। आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। जातक स्वार्थी तथा रूक्ष वाणी बोलने वाला होता है। (१२) शनि 'द्वादशभाव में

हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिन्ता रहती है। शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश एवं धर्म की सामान्य उन्नति ही हो पाती है।

विभिन्न लग्नों के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का फल— विभिन्न लग्नों वाली जन्म-कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का फल निम्नानुसार होता है—

'मेष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल— 'मेष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। अनेक प्रकार की चिन्ताएँ बनी रहती हैं। जातक बड़ा हिम्मती तथा झूठ-फरेब एवं गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन सम्बन्धी चिन्ताएँ तथा अनेक प्रकार के संकट बने रहते हैं। कौटुम्बिक क्लेश भी रहते हैं, परन्तु बारम्बार हानि उठाकर भी जातक अन्त में अपने युक्तिबल से सभी क्षतियों की पूर्ति करने में समर्थ हो जाता है। वह समाज में धनी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित भी होता है। (३) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। जातक हिम्मती, साहसी, युक्ति-कुशल तथा अपनी भीतरी कमजोरी को प्रकट न होने देने वाला होता है एवं इन्हीं गुणों के कारण सफलता भी प्राप्त करता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। घरेलू-शान्ति भी नहीं रहती। मानसिक-अशान्तियाँ बनी रहती हैं। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने पर भी अधिक सफल नहीं हो पाता। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो विद्या के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों के बाद भी थोड़ी ही सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष

से भी कष्ट होता है, परन्तु गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलताएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा तथा परेशानियों में फँसा रहने वाला होता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-पक्ष में हिम्मत, बहादुरी तथा गुप्त-युक्तियों से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता। बारम्बार मुसीबतों का शिकार बनते रहने पर भी साहस एवं धैर्य के बल पर सब पर विजय पाता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक आमदनी के संबंध में कष्ट एवं चिन्ताएँ रहती हैं, परन्तु गुप्त-युक्तियों के बल पर उन सब का निराकरण भी होता रहता है। जीविकोपार्जन-क जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं तथा जैसे-तैसे निर्वाह होता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पुरातत्त्व-विषयक हानि भी होती है। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने पर भी चिन्ताओं तथा परेशानियों का अन्त नहीं हो पाता। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म-पालन में भी रुचि नहीं रहती। बारम्बार अपयश, कष्ट एवं निराशा का सामना करना पड़ता है। अपमान भी होता है। अत्यधिक दुःख तथा बहुत कम सफलताएँ प्राप्त होती हैं। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं नौकरी, व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में बहुत संकट आते हैं। भाग्योन्नति में बहुत कम सफलता मिलती है तथा अनेक प्रकार के दुःख उठाने पड़ते हैं। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा उसके लिए कठोर परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। ऐसा जातक परिश्रमी, मितव्ययी, धनी तथा स्वार्थी होता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च की अधिकता के कारण कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट मिलता है। कभी-

कभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना तथा ठाठ से रहना — ये दोनों बातें साथ-साथ भी चलती हैं, परन्तु चिन्ता एवं ऋण के बोझ से मुक्ति नहीं मिल पाती।

'वृष' लग्न के द्वादशभावों में स्थित 'राहु' का फल — 'वृष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (1) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य की कुछ हानि होती है, परन्तु गुप्त-चातुर्य एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता मिलती है। जातक बड़ा हिम्मती तथा साहसी होता है। वह अनेक युक्तियों से अपने प्रभाव तथा व्यक्तित्व को बढ़ाने में सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी चोट अथवा मूर्च्छा का शिकार भी बनना पड़ता है। (2) 'राहु' द्वितीय भाव' में हो तो युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी कठिनाइयों तथा संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है। (3) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कष्ट का अनुभव होता है, तथापि जातक अपनी भीतरी कमजोरियों एवं चिन्ताओं को बड़ी चतुराई से छिपा कर हिम्मत बनाये रहता है तथा प्रकट रूप से भी बड़ा साहसी होता है। (4) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में कष्ट तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है एवं अनेक संकट उठाने पड़ते हैं। अन्त में, कठोर परिश्रम तथा गुप्त-उपायों द्वारा सामान्य धन तथा सुख की उपलब्धि होती है। (5) राहु 'पंचमभाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है। मस्तिष्क सम्बन्धी कुछ कमियों के साथ विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है। जातक अधिक बोलने वाला, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा नशेबाज होता है। (6) राहु 'षष्ठभाव' में हो तो जातक शत्रु-पक्ष का हिम्मत के साथ मुकाबिला करता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाता है। मामा के सुख में कुछ कमी रहती है।

जातक गुप्त-युक्तियों तथा गुप्त-विद्याओं में कुशल होता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष द्वारा कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। गुप्त-युक्तियों के आश्रय से थोड़ी बहुत सफलता प्राप्त होती है। इन्द्रिय-विकारों का सामना भी करना पड़ता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में अनेक हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि जातक सौम्य एवं सज्जन बना रहता है। वह गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त होकर, गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है तथा बाहरी सम्बन्धों के बल पर जीवन का निर्वाह करता है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सफलता पाने के लिए गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम का आश्रय लेना पड़ता है। सुख-दुःख तथा गरीबी-अमीरी का क्रम निरन्तर चलता रहता है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं गुप्त-युक्तियों, परिश्रम तथा धैर्य का आश्रय लेना पड़ता है। देखने में जातक अमीर तथा प्रतिष्ठित दिखाई देता है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो कुछ रुकावटों के साथ आमदनी के क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त होती रहती हैं। गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ होता है। संकट के समय भी धैर्य न खोने के कारण अन्ततः सफलता मिलती है। जातक बहुत स्वार्थी भी होता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। चातुर्य तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। ऊपरी दिखावे में जातक सम्पन्न तथा प्रभावशाली प्रतीत होता है। कठिन परिश्रम द्वारा उसे सफलताएं भी मिलती हैं।

'मिथुन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'मिथुन' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथम भाव' में

हो तो जातक प्रभावशाली, लम्बे कद का, विवेकी, स्वार्थी, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा बड़ा हिम्म-
-ती होता है। वह कष्ट-साध्य कार्यों तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर अपनी उन्नति करता है तथा धन-
सम्मान उपलब्ध करता है। (2) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-सम्पत्ति एवं कौटुम्बिक-सुख की
विशेष हानि उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम का आश्रय लेकर भी धन-प्राप्ति के क्षेत्र में
सामान्य सफलतायें ही मिलती हैं। बहुत समय बाद धन का अल्प-सुख मिलता है। (3) राहु 'तृतीय भाव'
में हो तो पराक्रम की वृद्धि होती है परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। उन्नति हेतु अत्यधिक परिश्रम
तथा हिम्मत से काम लेने वाला ऐसा जातक बड़ा धैर्यवान तथा गुप्त-युक्तियों का ज्ञाता होता है,
परन्तु कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। (4) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि,
भवन एवं घरेलू सुख में कमी तथा असंतोष की प्राप्ति होती है। गुप्त-युक्तियों के बल पर सुख-प्राप्ति का
प्रयत्न करने पर भी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती। (5) राहु 'पंचम भाव' में हो तो अनेक कठिनाइयों
के बाद विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है। जातक गुप्त-
युक्तियों का ज्ञाता, बुद्धिमान, असत्यवादी, भ्रमोत्पादक तथा अनेक चिन्ताओं से ग्रस्त रहने वाला होता है।
(6) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-क्षेत्र पर विशेष प्रभाव बना रहता है तथा उन पर विजय भी मिलती है।
जातक अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान, चतुर, वाग्मी एवं
गुप्त-युक्तियों का जानकार होता है। (7) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री को बहुत कष्ट प्राप्त होता है।
व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। मूत्रेन्द्रिय में कोई विकार होता है। जातक असत्य-भाषण,
गुप्त युक्तियों तथा अनुचित-तरीकों से भी अपना स्वार्थ-साधन करता है। (8) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो
पुरातत्त्व एवं आयु के सम्बन्ध में अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। पेट के निम्न भाग में कोई

विकास भी हो सकता है। जातक कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता पाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा अपनी कठिनाइयों का किसी को पता भी नहीं चलने देता। (९) राहु 'नवमभाव' में हो तो भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। वह अपने परिश्रम तथा गुप्त-युक्ति बल पर भाग्य की वृद्धि तो करता है, परन्तु पूर्ण सुख-सम्मान नहीं पाता। उसे विलम्ब से थोड़ी सफलता ही मिल पाती है। (१०) राहु 'दशमभाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कठिन परिश्रम के बाद ही थोड़ी-बहुत सफलता मिल पाती है। बार-बार संकट आते रहते हैं। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने से आमदनी में वृद्धि होती है। कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन का उपार्जन भी होता है। कभी-कभी घोर संकट का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अन्त में खूब सफलता मिल जाती है। ऐसा जातक थोड़े लाभ से संतुष्ट न होकर विशेष लाभ के लिए नित नई योजनाएं बनाता रहता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ भी होता है। गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा चातुर्य के बल पर जातक अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी लोगों की दृष्टि में प्रभावशाली बना रहता है।

'कर्क' लग्न के द्वादश भावों में स्थित राहु का फल- 'कर्क' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा हृदय चिन्तित बना रहता है। कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने सम्मान को बचाये रखता है तथा अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक को धन

तथा कौटुम्बिक-सुख की हानि प्राप्त होती है। गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन वृद्धि हेतु प्रयत्नशील रहता है तथा कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता है। अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदैव चिन्तित रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा हिम्मती होता है। (३) राहु 'तृतीयभाव' में हो तो पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। कठिन-परिश्रम, गुप्त युक्तियों तथा पुरुषार्थ का सहारा लेकर जातक अपनी स्वार्थ-सिद्धि करता है। भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में कुछ कमी आती है तथा भूमि, भवन का सुख भी अल्पमात्रा में ही प्राप्त होता है। देश छोड़कर परदेश में रहना पड़ता है तथा कभी-कभी असफलताओं का विशेष शिकार भी बनना पड़ता है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो विद्याध्ययन में कठिनाई आती है तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। बहुत समय बीत जाने पर ही सन्तान का सुख मिलता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा होने पर भी अपनी बातों से बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी प्रभावित करता है। यह स्वभाव से जिद्दी तथा कानून का ज्ञाता होता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष द्वारा उत्पन्न कठिनाइयों का जातक भेद-नीति द्वारा दमन करने में सफल होता है। वह पाप-पुण्य की चिन्ता न करने वाला, चतुर तथा गुप्त-युक्तियों का जानकार होता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ तथा कठिनाइयाँ आती हैं। जननेन्द्रिय में विकार होना भी सम्भव है। कोर्ट मामलों में कभी-कभी घोर कष्ट उठाना पड़ता है, परन्तु अन्त में सफलता भी मिल जाती है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु के सम्बन्ध में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। पुरातत्त्व की भी हानि होती है उदर-विकार रहता है। जीवन-निर्वाह हेतु अनेक प्रकार की गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

(९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथावत नहीं हो पाता। कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर कुछ सफलता भी मिल जाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अनेक कष्ट भोगने तथा अनेक बार निराश होने के बाद परिश्रम, धैर्य तथा बहादुरी के बल पर थोड़ी बहुत उन्नति तथा प्रतिष्ठा का लाभ होता है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो बड़ी चतुराई से यथेष्ट धन का लाभ होता है। कभी-कभी सामान्य कठिनाइयाँ भी आती हैं तथा संकटों को पार करना पड़ता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो गुप्त-युक्तियों के बल पर बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है तथा परदेश में विशेष सम्मान एवं ख्याति उपलब्ध होती है। ऐसा जातक अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं करता तथा बड़ी चतुराई एवं बुद्धिमानी से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है।

'सिंह' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल— 'सिंह' लग्न वालों की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य तथा सुख में कमी आती है। कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों तथा साहस के सहारे आगे बढ़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से चिन्तित भी बना रहता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी घोर आर्थिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा ऋण-ग्रस्त भी होना पड़ता है। कभी आकस्मिक रूप से धन का लाभ भी होता है। ऐसा जातक चतुर-चालाक होता है तथा धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। (३) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा

भाई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा साहसी, धैर्यवान, पराक्रमी तथा गुप्त-युक्तियों द्वारा गंभीरता पूर्वक स्वार्थ-सिद्धि करने वाला एवं दृढ़ निश्चयी होता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा भूमि, एवं भवन के सुख में बाधा पड़ती है। परदेश में रहना पड़ता है। हिम्मत, गुप्त-युक्ति तथा धैर्य के बल पर सुख-साधनों को जुटाता तथा संकटों का सामना करता है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या की कमी रहती है। बुद्धि-बल से अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयत्न करने वाला ऐसा जातक विनम्रता, शिष्टता एवं सत्य से दूर रहता है तथा गुप्त-युक्तियों द्वारा स्वार्थ-साधन करता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो युक्ति-बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। कभी-कभी शत्रुओं द्वारा अधिक परेशानी भी पैदा की जाती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, बहादुर, धैर्यवान तथा साहसी होता है। झगड़े के समय अपनी बहादुरी प्रदर्शित करता है। ननसाल-पक्ष से हानि उठानी पड़ती है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी परेशानियाँ आती रहती हैं। जातक बड़ी हिम्मत के साथ सभी संकटों का सामना करता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उनसे छुटकारा पा लेता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पेट के निम्नभाग में विकार रहता है। चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ घेरे रहती हैं। पुरातत्व की भी हानि उठानी पड़ती है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक बार रुकावटें तथा परेशानियाँ आती हैं एवं धर्म-पालन में अरुचि रहती है। जातक भाग्य-वृद्धि के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है। धैर्यवान् तथा साहसी होने के कारण परेशानियों को हटाने में थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो

तो पिता के सुख में कमी रहती है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तथापि गुप्त-युक्तियों के सहारे कठिनाइयों पर विजय तथा सफलता प्राप्त होती है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। धैर्य, साहस, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर लाभ की वृद्धि होती रहती है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। बाह-री संबंधों से हानि होती है, परन्तु गुप्त-युक्तियों, परिश्रम तथा साहस के बल पर थोड़ी-बहुत सफ-लता भी प्राप्त हो जाती है।

'कन्या' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'कन्या' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथमभाव' में हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से शक्तिशाली, दृढ़ मनोबल वाला तथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी शारीरिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा जातक गहरी सूझ-बूझ वाला तथा कठोर परिश्र-मी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी बड़े धैर्य से काम लेकर उन्नति करता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-कुटुम्ब की ओर से परेशानी रहती है। गुप्त-प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ धन-संचय होता है, परन्तु प्रकट रूप से जातक को धनवान् ही समझा जाता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन का लाभ तथा हानि — दोनों ही होते हैं। (3) राहु 'तृतीयभाव' में हो तो पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है। युक्ति तथा हिम्मत से काम लेने पर सफलता मिलती है। ऐसा जातक स्वार्थ-सिद्धि हेतु भले-बुरे का विचार नहीं करता।

(४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता का श्रेष्ठ सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं मोटर-सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जन्म-भूमि में दुःख तथा बाहरी स्थान में सुख की प्राप्ति होती है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है एवं विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक अधिक विद्वान न होने पर भी बड़ी-चढ़ाई की बातें करता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने हेतु सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कभी-कभी चिन्ताएँ भी परेशान करती हैं। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। झगड़ों तथा संकटों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमजोरी प्रकट नहीं होने देता। कठिन संकटों के समय भी विचलित नहीं होता तथा गुप्त-युक्तियों द्वारा उन पर नियन्त्रण भी प्राप्त कर लेता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। मूत्रेन्द्रिय में विकार होना भी सम्भव है। जातक गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर अपना काम चलाता रहता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उदर-विकार भी रहता है। गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर जातक आगे बढ़ता है, परन्तु चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ सदैव घेरे रहती हैं। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो जातक भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा धर्म का भी उचित पालन नहीं कर पाता। कभी-कभी भाग्य के विषय में घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। धैर्य, साहस तथा युक्ति-बल पर ही थोड़ी-बहुत उन्नति हो पाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता के साथ विरोध करते हुए उन्नति होती है। राज्य

तथा व्यवसाय के क्षेत्र में गुप्त-युक्ति एवं चातुर्य के बल पर भी सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। कभी-कभी संकट भी आते हैं, परन्तु फिर स्थिति सँभल जाती है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों सामना भी बहुत करना पड़ता है। कभी लाभ तो कभी बहुत घाटा होता है। गुप्त-युक्तियों, साहस, चौर्य तथा पराक्रम के बल पर जातक लाभ उठाता है, परन्तु कभी-कभी धोखा भी खा जाता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है। गुप्त-युक्ति, चौर्य साहस तथा पराक्रम के बल पर अपना खर्च चलाता है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

'तुला' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'तुला' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर दुर्बल रहता है। परेशानियाँ भी रहती हैं। उन्नति के लिए गुप्त चातुर्य का आश्रय लेना पड़ता है। कभी-कभी बड़ी कठिनाइयाँ भी आती हैं तथा सूझ-बूझ द्वारा उन पर विजय भी मिलती है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संग्रह हेतु अत्यधिक कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन लाभ भी होता है तो कभी घोर आर्थिक-संकट आ जाते हैं। गुप्त-युक्तियों से आश्रय लेकर किसी प्रकार काम चलता है। कुटुम्बियों द्वारा कष्ट भी मिलता है। (३) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में कमी आने पर युक्तियों का सहारा लेने से उसमें वृद्धि हो जाती है। भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा जीवन में कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। पुरुषार्थ एवं युक्तियों के बल पर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है; परन्तु युक्तियों, साहस एवं दृढ़ता के बल पर संकटों पर विजय भी मिलती है। जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

(५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। मन सदैव चिन्तित तथा परेशान रहता है। स्वार्थ-सिद्धि हेतु उचित अनुचित का विचार न करके जातक गुप्त-युक्तियों से काम लेता है तथा ऊपर से बड़ी दृढ़ता प्रदर्शित करता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठाकर भी विजय प्राप्त होती है। जातक बड़ा बहादुर, हिम्मती तथा गुप्त-युक्तियों का जानकार होता है। उसे अपना प्रभाव स्थापित करने में भी सफलता मिलती है। (७) राहु सप्तम भाव में हो तो स्त्री-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी बड़े संकट आते हैं, परन्तु गुप्त-युक्ति, धैर्य तथा साहस के बल पर उन सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त हो जाती है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर बड़े-बड़े संकट आते हैं, परन्तु मृत्यु नहीं होती। पुरातत्त्व की हानि होती है तथा दैनिक जीवन में भी अनेक संघर्ष, चिन्ता तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो गुप्त-युक्तियों के बल पर भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। कभी-कभी भाग्योन्नति में बाधाएँ भी आती हैं, परन्तु धैर्य, चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर, उन पर विजय भी प्राप्त हो जाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता के सुख में कमी आती है, राज्य-क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, व्यवसाय के क्षेत्र में भी संकट आते हैं तथा उन्नति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के बाद ही सफलता मिलती है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं, जिन पर गुप्त-युक्तियों, धैर्य, हिम्मत तथा चतुराई के बल पर विजय प्राप्त होती है तथा उन्नति भी होती है। कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। बाहरी स्रोतों से कुछ लाभ होता है।

ऐसा जातक बड़ा विवेकी, कूटनीतिज्ञ, पराक्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'वृश्चिक' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल – 'वृश्चिक' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है – (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर के किसी भाग में गुप्त-कष्ट अथवा चिन्ता का निवास रहता है। कभी-कभी मृत्युतुल्य शारीरिक-कष्ट भी होता है। उन्नति के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसा जातक आतुर, स्वार्थी तथा तेज स्वभाव का होता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। कुटुम्ब के विषय में चिन्ताएँ रहती हैं। जातक असाधारण साहसी, कठिन परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों वाला होते हुए भी ऋणी रहता है। (३) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिन का सुख भी खूब मिलता है, परन्तु उनके विषय में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। जातक चतुर, हिम्मती तथा कठिन परिश्रमी होता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है, कभी-कभी पारिवारिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है तथा उनके निवारण हेतु गुप्त-युक्तियों, हिम्मत तथा धैर्य का सहारा लेना पड़ता है। जातक परिश्रमी तथा होशियार होता है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो विद्याध्ययन एवं संतान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाद में कुछ सफलता भी मिलती है। जातक चतुर तथा युक्ति-प्रवीण होता है तथा हर समय चिन्तित रहते हुए भी अपनी परेशानियों को किसी पर प्रकट नहीं करता। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा उन पर विजय मिलती है। जातक गुप्त-चातुर्य एवं हिम्मत के बल पर कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कभी-कभी स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के कारण

जो संकटों में भी फँसा जाना पड़ता है, परन्तु हिम्मत, चतुराई एवं युक्ति-युक्तियों के बल पर उससे छुट-कारा भी हो जाता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्व का लाभ होता है एवं आयु की वृद्धि होती है। जीवन ठाठ-बाट का तथा उत्साहपूर्ण बना रहता है। यश भी खूब मिलता है, तथापि कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक बाधायें आती हैं तथा धर्म के प्रति अश्रद्धा भी बनी रहती है। मन चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। अनेक बार आर्थि-क निराशा भी होती है। अनेक प्रकार के कष्ट सहने के बाद अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी मिल जाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता द्वारा परेशानी रहती है एवं राज्य तथा व्यव-साय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। कभी-कभी बड़ी निराशा भी होती है. परन्तु अन्त में धैर्य, एवं चातुर्य के बल पर संकटों पर विजय पाकर थोड़ी-बहुत उन्नति भी हो जाती है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी की खूब वृद्धि होती है। अधिक मुनाफा कमाने के लिए जातक उचित अनुचित का विचार भी नहीं करता। वह बड़ा चालाक तथा चतुर होता है। कभी-कभी आक-स्मिक धन-लाभ होता है तो कभी आकस्मिक रूप से धन-हानि के अवसर भी आते हैं। अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

'धनु' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल— 'धनु' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी-कभी कठिन शारीरिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में सीधा तथा भीतर से चालाक होता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में कमी रहती है। कभी-कभी कौटुम्बिक कारणों से

बड़े संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। प्रायः ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करना पड़ता है। (३) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। भाई-बहिनों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहते। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्यवान एवं साहसी होने के कारण जातक उन्हें चुपचाप सहन कर लेता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में विशेष कमी रहती है। भूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता। कभी-कभी घोर संकट उठाने पड़ते हैं तथा धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों का सहारा लेने पर उनसे छुटकारा मिलता है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। जातक की वाणी में रूखापन होता है तथा चिन्ताओं से घिरे रहकर, गुप्त युक्तियों के बल पर अपना काम चलाता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर अपना प्रभाव रहता है तथा जातक चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्हें परास्त करता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, बहादुर, धैर्यवान तथा हिम्मती होता है एवं मातृ-पक्ष को भी कुछ हानि पहुँचाता है। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो जातक को स्त्री-पक्ष की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। आमदनी बढ़ाने के लिए जातक अनेक उपायों का आश्रय लेता है तथा चिन्तित एवं दुःखी जीवन बिताता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन पर कई बार घोर संकट आते हैं एवं मृत्यु-तुल्य परिस्थितियाँ बन जाती हैं। उदर में विकार रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है तथा जातक परेशानियों से घिरा रहता है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में घोर संकट आते हैं। धर्म में आस्था नहीं रहती। जातक प्रायः नास्तिक होता है तथा भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक परिश्रम करता

हुआ गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। (१०) राहु 'दशमभाव' में हो तो पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय में हानि का शिकार बनना पड़ता है। जातक अपनी हिम्मत तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है, परन्तु अधिक सफल नहीं हो पाता। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु जातक अपने धैर्य तथा हिम्मत से काम लेकर, उनपर विजय प्राप्त करता है। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कष्टों का अनुभव भी होता है। जातक हिम्मती होने के कारण घबराता नहीं है तथा परेशानियों पर विजय पाने का प्रयत्न करता रहता है।

'मकर' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'मकर' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। शरीर में किसी प्रकार चोट भी लग सकती है। कभी कोई खराब बीमारी भी हो सकती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, चतुर तथा युक्ति-बल से अपने प्रभाव की वृद्धि करने वाला होता है। (२) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्ता रहती है तथा कष्ट प्राप्त होता है। कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप में लोग जातक को धनी समझते हैं, परन्तु यथार्थ में धन की कमी रहती है। बाद में युक्ति-बल से आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ भी हो जाती है। (3) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों की ओर से कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। भीतर से दुर्बलता अनुभव करते हुए भी जातक प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। (४) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। मातृभूमि को त्यागना भी पड़ सकता है। गुप्त-युक्तियों के बल

पर प्रभाव में वृद्धि होती है तथा जातक हिम्मती और धैर्यवान होता है। (५) राहु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कष्ट होता है एवं विद्याध्ययन में भी कठिनाई आती है, परन्तु बुद्धि बहुत तीव्र होती है। जातक अपनी होशियारी तथा गुप्त युक्तियों के बल पर विद्या तथा संतान-दोनों ही क्षेत्रों में सफलता भी प्राप्त कर लेता है। (६) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है। जातक कूटनीतिज्ञ, विवेकी, तीव्र-बुद्धि तथा गुप्त-युक्तियों का ज्ञाता होता है तथा प्रायः कभी भी धोखा नहीं खाता। (७) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से अत्यधिक कष्ट होता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। मूत्रेन्द्रिय में रोग होता है। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर कठिनाइयों पर कुछ विजय भी प्राप्त कर लेता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य भी कष्ट होता है। पुरातत्व की हानि होती है। उदर अथवा गुदा सम्बन्धी विकार भी होता है। गुप्त-युक्ति-यों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-यापन होता है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में विभिन्न बाधायें आती हैं। धर्म-पालन में भी कमी रहती है। कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर थोड़ी-बहुत उन्नति हो जाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु गुप्त-युक्तियों के बल पर उनका निवारण करते हुए भाग्योन्नति की चेष्टा की जाती है, यद्यपि अनेक बार संकटों में फँसना पड़ता है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो परिश्रम तथा युक्ति बल से विशेष लाभ होता है तथा कभी-कभी बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है। सुख-दुःख आते-जाते बने रहते हैं। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। बाहरी

स्त्रोतों के संबंधों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। हिम्मती होने के कारण जातक अपनी कठिनाइयों को प्रकट नहीं होने देता तथा उन्हें दूर करने के लिए विशेष परिश्रम करता रहता है।

'कुम्भ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'कुम्भ' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (1) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर में कहीं चोट लगती है तथा स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। जातक गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है तथा मस्तिष्क-शक्ति का प्रभाव भी स्थापित करता है। (2) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी आर्थिक-संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर जातक धन-संचय करता है तथा धनवान भी समझा जाता है। वह बड़ा हिम्मती होता है। (3) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों तथा चातुर्य के बल पर सुख के साधन प्राप्त कर समाज में सम्मानपूर्ण स्थान बनाता है। (4) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पक्ष से बहुत कष्ट होता है। घरेलू-जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आती है, परन्तु अनेक संघर्षों से जूझने के बाद सफलता भी प्राप्त होती है। (5) राहु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से पहले कष्ट होता है, परन्तु बाद में सुख मिलता है। विद्या-बुद्धि का विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी भीतरी कमजोरी को छिपाने में कुशल, प्रभावशाली, चतुर तथा मधुरभाषी होता है। (6) राहु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि में बुद्धि-बल से सफलता प्राप्त करता है। भीतरी रूप से परेशान रहते हुए भी धैर्य एवं साहस को नहीं छोड़ता तथा अन्त में सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। (7) राहु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष

से बहुत कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं; परन्तु जातक अपनी हिम्मत तथा परिश्रम के बल पर सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। (८) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन पर अनेक संकट आते हैं तथा पुरातत्व की भी हानि होती है। पेट के निम्न भाग में विकार रहता है, फिर भी आयु लम्बी होती है। जातक स्व-विवेक एवं बुद्धि-बल पर जीवन प्रभावशाली ढंग से व्यतीत करता है। (९) राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं एवं धर्म का पालन भी यथोचित रूप से नहीं होता, परन्तु अन्ततः अपने बुद्धि चातुर्य के बल पर जातक सभी कठिनाइयों पर विजय पाकर उन्नति करता है तथा अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता से कष्ट, राज्य से संकट तथा व्यवसाय में हानि होती है, तथापि अपने पराक्रम तथा युक्ति-बल से जातक कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए सफलता पा लेता है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु जातक अपने युक्ति-बल से उन पर थोड़ी-बहुत विजय प्राप्त कर लेता है तथा अपनी परेशानी किसी पर प्रकट भी नहीं होने देता। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के बारे में बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। बाहरी सम्बन्धों से थोड़ा लाभ होता है। जातक अपना खर्च चलाने के लिए कठोर परिश्रम करता रहता है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'राहु' का फल — 'मीन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) राहु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु जातक युक्ति-बल से अपने प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि करता है। बाद में सभी कठिनाइयों पर विजय पाकर उन्नति करता है।

(2) राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त नहीं होता। जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है; तथापि आर्थिक-कष्ट परेशान करते ही रहते हैं। (3) राहु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है एवं भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है। जातक बुद्धि तथा पुरुषार्थ द्वारा सफलता-प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील बना रहता है एवं बहादुर तथा हिम्मती होता है। (4) राहु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता का विशेष सुख मिलता है तथा परिश्रम के बल पर भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी सुख के साधन उपलब्ध होते हैं। (5) राहु 'पंचम भाव' में हो तो विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं एवं सन्तान-पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। जातक की वाणी में रूखापन होता है, मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। (6) राहु 'षष्ठभाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त भी करता रहता है। तथापि शत्रुगण बारम्बार परेशान करते रहते हैं। ननिहाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। ऐसा जातक बड़ा बहादुर, हिम्मती, चौकन्ना, चतुर तथा सावधान होता है। (7) जातक 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु जातक युक्ति-बल एवं चातुर्य से उनपर विजय प्राप्त करता रहता है। गृहस्थ-जीवन में आने वाले संकटों को भी हटाता रहता है। (8) राहु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन में अनेक बार संकट आते हैं, परन्तु आयु लम्बी होती है। पुरातत्त्व के संबंध में भी कठिनाई आती रहती है, परन्तु जातक अपनी चतुराई से उसका भी निराकरण करता रहता है। (9)

राहु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म की उन्नति में बाधायें आती हैं तथा यश का लाभ भी नहीं होता, किन्तु कठिन परिश्रम, गुप्त-युक्ति तथा हिम्मत के साथ जातक भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। कभी-कभी आकस्मिक-लाभ भी होता है तो कभी कभी अत्यधिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। लम्बे संघर्ष के बाद ही भाग्योन्नति हो जाती है। (१०) राहु 'दशम भाव' में हो तो पिता-पक्ष से कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बारम्बार हानि प्राप्त होती है। मान प्रतिष्ठा में भी कमी रहती है, तथापि जातक बुद्धि-बल एवं परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है। (११) राहु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। मुनाफा बहुत होता है, परन्तु कभी-कभी अर्थोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं, जिन पर जातक धैर्य एवं परिश्रम के साथ सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी आकस्मिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते हैं। (१२) राहु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने में बड़ी कठिनाई आती है, परन्तु जातक अपने धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर, उन पर विजय पाने का प्रयत्न करता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से कठिनाइयों का अनुभव भी होता है।

विभिन्न लग्नों की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का फल— विभिन्न लग्नों वाली जन्म कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव निम्नानुसार होता है—

'मेष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'मेष' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-कष्ट, मानसिक-चिन्तायें तथा अन्य प्रकार की परेशानियाँ बनी रहती हैं। शरीर में

कहीं चोट भी लगती है तथा सौन्दर्य में भी कमी आती है। ऐसा जातक हिम्मती, परिश्रमी तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला होते हुए भी अनेक कमियों का शिकार बना रहता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो शारीरिक-कष्ट, चिन्ता, धन की कमी, कौटुम्बिक-परेशानी एवं झगड़ों का शिकार बना रहता है तथा जातक अपने युक्ति-बल से अपनी आर्थिक-स्थिति में जोड़-बहुत सुधार भी कर लेता है और निश्चित निर्धन तथा दुःखी रहते हुए भी अपनी असलियत को प्रकट नहीं होने देता, अतः लोग उसे धनवान ही समझते हैं। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम तथा भाई-बहिन के क्षेत्र में कमजोरी आती है, जातक भीरु-स्वभाव का होता है तथा गुप्त-युक्तियों के आश्रय से स्वार्थ-साधन करना ही उसका उद्देश्य रहता है, तथापि अत्यधिक परिश्रम करने पर भी सफलता कम ही मिल पाती है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में बहुत कमी आती है। कुटुम्ब के विषय में भी अशान्ति बनी रहती है। मनोबल बना रहने से जातक संकट के समय अपना काम निकाल लेता है। अपना जन्मस्थान छोड़ कर विदेश में भी जा सकता है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं। स्मरण शक्ति की दुर्बलता के कारण अधिक विद्याध्ययन नहीं कर पाता। सन्तान-पक्ष से भी दुःखी रहता है। वाणी में कठोरता तथा उग्रता रहती है। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी सफलता कम ही मिलती है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर प्रभाव तथा विजय की उपलब्धि होती है। जातक बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा विवेकी होता है परन्तु मन के भीतर कुछ कमजोरी भी छिपी रहती है। ननिहाल-पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। पारिवारिक गुत्थियों को सुलझाने में भी अनेक युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है, स्त्री-पक्ष से कुछ कमियों के साथ ही सफलता मिलती है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य

कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों के आश्रय से जातक कुछ कठिनाइयों पर विजय भी पा लेता है, तथापि उसके कष्टों का अन्त नहीं होता। शरीर में कोई-न-कोई रोग भी बना ही रहता है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो, तो जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा धनी होता है, परन्तु जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं; जिनके कारण कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। जीवन सुखी, धनी, धार्मिक, परन्तु संघर्षपूर्ण बना रहता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है। व्यवसाय में परिवर्तन करने की आवश्यकता भी अनेक बार आती है। गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर जातक मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाता तथा सफलताएँ प्राप्त करता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो, तो आमदनी बहुत अच्छी रहती है। गुप्त-युक्तियों के बल पर अधिक मुनाफा होता है तथा आमदनी के साधनों में अनेक बार परिवर्तन के साथ ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता भी पड़ती है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो, तो बाहरी स्थानों के संबंधों से कष्ट मिलता है। खर्च संबंधी परेशानियाँ भी बहुत होती हैं। बाहरी संबंधों में परिवर्तन भी आते रहते हैं। खर्च अच्छे कामों में ही होता है तथा कभी-कभी अल्प लाभ भी होता है।

<u>'वृष' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल</u>— 'वृष' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। मन में कुछ चिन्ताएँ भी रहती हैं। जातक अपने शारीरिक श्रम एवं एवं योग्यता के बल पर अन्य लोगों को प्रभावित भी करता है। शरीर पर कहीं चोट अथवा घाव का चिह्न भी होता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुम्ब के संबंध में अनेक

चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जातक अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों का सहारा लेता है तथा धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में थोड़ी सी ही सफलता प्राप्त कर पाता है। (3) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में कमी आती है। भाई-बहिनों के सम्बन्ध से कष्ट एवं हानि की उपलब्धि होती है। जातक आन्तरिक दुर्बलता को छिपाये रख कर, गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के सहारे अपने अभावों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। (4) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो पराक्रम में कमी आती है एवं भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट तथा हानि का सामना करना पड़ता है। गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर काम चलता है। जातक को परदेश में भी रहना पड़ता है। (5) केतु 'पंचम भाव' में हो तो विद्या-बुद्धि एवं संतान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक बड़ा धैर्यवान्, साहसी तथा अपने मन्तव्य को छिपाने वाला होता है। (6) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव बना रहता है तथा धैर्य, परिश्रम, युक्ति आदि के बल पर सभी विघ्न-बाधाओं पर विजय भी प्राप्त होती है। मामा के पक्ष से कुछ हानि भी होती है। जातक परिश्रमी, चतुर तथा धैर्यवान् होता है। (7) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से बहुत कष्ट तथा हानि प्राप्त होती है। मूत्राशय के रोग की बीमारी भी सम्भव है। व्यवसाय तथा [illegible] के कभी-कभी बड़ी असफलताएँ मिलती हैं तथा परिश्रम द्वारा कुछ सफलता मिलती है। (8) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु एवं पुरातत्त्व का विशेष लाभ होता है। जातक बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा गुप्त-युक्तियों से सम्पन्न होता है एवं अपना जीवन ऐश्वर्यशाली ढंग से बिताता है। (9) केतु 'नवम भाव' में हो तो कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति होती है। धर्म में आस्था रखते हुए भी विशेष श्रद्धा नहीं रहती। जातक साहसी तथा परिश्रमी होता है।

(१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बड़े परिश्रम से साधारण सफलता प्राप्त होती है। भीतर से कमजोर रहते हुए भी जातक दिखावे में अमीर लगता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी अच्छा लाभ होता है तो कभी बड़े संकट भी आते हैं। जातक खर्ची तथा साहसी होता है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च चलाने में बहुत कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी मिलती है, परन्तु जातक बड़ा खर्ची, साहसी, उद्योगी तथा धैर्यवान् होता है।

'मिथुन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'मिथुन' लग्न की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। चोट, रोग तथा गुप्त-चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है। गुप्त-युक्तियों तथा शारीरिक-परिश्रम के बल पर ही अपने स्वार्थों की पूर्ति हो पाती है तथा विवेकी होने पर भी स्वाभिमान की कमी रहती है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ता रहती है। धन-संचय न हो पाने से विशेष कष्ट रहता है। कौटुम्बिक कारणों से क्लेश बना रहता है। चौर्य तथा गुप्त-युक्तियों का सहारा लेकर ही जातक थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त कर पाता है। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में तो अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है। जातक अपनी पराक्रम-वृद्धि के कारणों से ही परेशानी उठाता है। वह बड़ा जिद्दी, हठी, बहादुर तथा साहसी भी होता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुखों की प्राप्ति हेतु चतुराई का सहारा लेने पर ही सफलता मिलती है। भूमि, भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है। गुप्त-युक्तियों, चौर्य तथा साहस के बल पर सुख प्राप्त करने में अन्ततः जातक सफल हो जाता है।

(५) केतु 'पंचमभाव' में हो तो विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा संतान-पक्ष में भी कठिनाइयों के बाद सामान्य सफलता मिलती है। जातक गुप्त-चातुर्य, चौर्य तथा हिम्मत के बल पर ही इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर पाता है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रु का दमन करने में सफल होता है। मुकदमे आदि में भी विजयी होता है। वह अपनी आन्तरिक कमजोरी को छिपा कर, बड़ी हिम्मत से काम लेता तथा लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। जातक अधिक विषयी (भोगी) होता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्नति भी खूब करता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु पर भी अनेक बार संकट आते हैं। पेट की कोई बीमारी भी हो सकती है। जातक अपनी हिम्मत तथा बहादुरी के बल पर संकट के समय भी धैर्य नहीं खोता। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में कुछ बाधाएँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है। धर्म का पूर्णतः पालन नहीं हो पाता। गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर ही प्रत्येक क्षेत्र में थोड़ी-बहुत उन्नति हो पाती है। (१०) केतु 'दशमभाव' में हो तो पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। मान-प्रतिष्ठा की भी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर ही सामान्य सफलताएँ मिल पाती हैं। (११) केतु 'एकादशभाव' में हो तो आमदनी के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी घोर आर्थिक-संकट भी आते हैं। धैर्य तथा परिश्रम द्वारा इस क्षेत्र में थोड़ी बहुत सफलता मिलती है। (१२) केतु 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण कभी-कभी आकस्मिक संकट का सामना करना पड़ता है।

बाहरी विरोधों से भी कुछ परेशानी बनी रहती है, परन्तु हिम्मत-धैर्य तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर जातक बड़ी चतुराई से अपना वर्चस्व चलाता रहता है।

'कर्क' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'कर्क' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— **(1)** केतु 'प्रथमभाव' में हो तो शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है। शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। चेचक की बीमारी हो सकती है तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। **(2)** केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन की अत्यधिक हानि होती है तथा उसके कारण कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। कुटुम्ब से क्लेश प्राप्त होता है। जातक ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा जोखिम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने प्रभाव की वृद्धि कर पाता है। **(3)** केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की वृद्धि होती है एवं जातक कठोर परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड स्वभाव का तथा उग्र प्रकृति का होता है। भाई-बहिनों के सुख में भी कमी आती है। **(4)** केतु 'चतुर्थभाव' में हो तो माता के सुख में कमी आती है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। बार-बार स्थान-परिवर्तन भी करना पड़ता है। कभी-कभी घोर संकट भी आते हैं। अन्त में, सामान्य-सुख भी मिलता है। **(5)** केतु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक बहुत चालाक तथा बातूनी होता है। वह अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरों को प्रभावित करने में सफल हो जाता है। संतोषी तथा शीलवान भी नहीं होता। **(6)** केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष से अत्यधिक सफलताएं मिलती हैं। कठिन परिस्थितियों में भी जातक धैर्य तथा साहस

नहीं खोता। वह चालाक, साहसी, पराक्रमी होता है तथा दया, शील, संयम आदि सद्गुणों से रहित भी होता है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। विक्षिप्त, जिद्दी, हठी तथा कठिन परिश्रमी होता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। पेट विकार-ग्रस्त रहता है। धन का संकट एवं गुप्त चिन्ताएँ घेरे रहती हैं। जातक अपनी उन्नति तथा सुख के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों तथा विफलताओं का शिकार भी होना पड़ता है। पर गुप्त रूप से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता रहता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं, यश तथा प्रतिष्ठा को भी धक्का लगता है। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो जातक आर्थिक-लाभ प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा परिश्रम एवं गुप्त-चातुर्य द्वारा आय की वृद्धि भी करता है। बारम्बार संकटों का सामना करके भी हिम्मत नहीं हारता। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के बारे में बहुत परेशानी होती है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कष्ट मिलता है। ऐसा जातक मन-ही-मन दुःखी रहने वाला तथा गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला होता है।

'सिंह' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'सिंह' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी आती है। कभी बाहरी चोट लगने से शरीर पर स्थायी चिह्न

भी बन जाता है। जातक मन-ही-मन अत्यधिक चिन्तित बना रहता है तथा सुख पाने हेतु कठिन परिश्रम भी करता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-संचय में कमी रहती है, जिसके कारण चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धन-वृद्धि हेतु जातक कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है। कौटुम्बिक-सुख भी पूर्णरूपेण नहीं मिल पाता। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। जातक निडर, साहसी, पराक्रमी, चतुर, शक्तिशाली, हठी तथा लापरवाह भी होता है। वह प्रत्येक कार्य को अपने बाहुबल से ही पूरा करता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में कमी आती है। घरेलू-सुख तथा भूमि-भवन के सुख में विघ्न पड़ता है। परदेश में रहना पड़ता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रमी तथा गुप्त-युक्तियों का प्रयोक्ता होते हुए भी प्रायः परेशान ही बना रहता है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से शक्ति मिलती है, तथापि कभी-कभी कष्ट भी उठाना पड़ता है। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में परिश्रम करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिलती। जातक स्वयं को बुद्धिमान समझता है, तथापि उसकी वाणी प्रभावहीन होती है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो परिश्रम द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। जातक बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है एवं गुप्त-युक्तियों तथा साहस के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता है तथा संकट आने पर भी घबराता नहीं है। ननिहाल-पक्ष से हानि उठानी पड़ती है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-सुख तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कमी होती है। जातक अपने गुप्त-साहस के बल पर गृहस्थी को चलाता है। कभी-कभी बड़ी मुसीबतों में फँस कर भी साहस नहीं छोड़ता और अन्ततः सफलता पाता ही रहता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होना संभव होता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्व की हानि भी

होती है। पेट के निम्न भाग में कुछ विकार भी रहता है। गुप्त-युक्तियों तथा पराक्रम के बल पर कठिनाइयों पर विजय भी पाता है तथा कभी घबराता नहीं है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में बाधायें आती हैं एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है। कठिन परिश्रम करके भी जातक यशस्वी नहीं बन पाता। कभी-कभी घोर संकटों में पड़ जाता है, तथापि साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर कुछ सफलता एवं शान्ति प्राप्त कर लेता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता से कुछ कष्ट मिलता तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है। जातक अपने साहस एवं चातुर्य के बल पर ही कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर पाता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो धन की कमी का कष्ट विशेष रूप से अनुभव होता है तथा जातक अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए घोर परिश्रम एवं स्वार्थ करता है। लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता तथा गुप्त-युक्तियों एवं धैर्य के बल पर कठिनाइयों को पार भी कर लेता है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च बड़ी कठिनाई से चल पाता है। जातक को मानसिक-चिन्तायें तथा परेशानियाँ घेरे रहती हैं। अनेक बार संकटों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है, तथापि गुप्त युक्ति-बल, धैर्य, परिश्रम तथा साहस के बल पर सभी कठिनाइयों पर विजय पाकर, जातक ऊँचे-नीचे अपना काम चलाता ही रहता है।

'कन्या' लग्न की जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल - 'कन्या' लग्न की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) केतु 'प्रथमभाव' में हो तो शारीरिक-कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। शरीर पर किसी चोट के लगने अथवा रोग होने का चिह्न भी बनता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है। जातक बड़ा हिम्मती, धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है।

कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन-हानि भी होती है तो कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन का लाभ भी होता है। जातक धन-वृद्धि के लिए अथक परिश्रम करता है तथा परेशान भी बना रहता है। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है। जातक संकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता, वह कठिन परिश्रमी होता है तथा अपने बाहु-बल का भरोसा रखता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। गृहस्थ-जीवन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी गृहस्थ-सुख में संकट भी आ जाता है तो कभी-कभी वृद्धि भी हो जाती है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष की चिन्ता रहती है एवं विद्या-लाभ हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। जातक विद्या-बुद्धि में कम होते हुए भी स्वयं को अपना ज्ञानवान प्रदर्शित करता है तथा वाक्पटु होता है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। ननिहाल-पक्ष से परेशानी होती है। जातक धैर्यवान, बहादुर तथा अमन्द स्वभाव का होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बनाने में सफलता भी प्राप्त करता है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट होता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु जातक अपने युक्ति-बल तथा साहस से उनके निवारण का प्रयत्न करता है और कुछ सफलता भी पाता है। गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाई से सफल बन पाता है। मूत्रेन्द्रिय में कोई विकार होने की संभावना भी रहती है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन पर अनेक बार प्राणघातक संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। पेट में भी विकार रहता है। जातक बड़ा परिश्रमी, क्रोधी, धैर्यवान तथा हिम्मत से काम लेने वाला होता है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो धर्म-क्षेत्र में कमी रहती है तथा भाग्योन्नति में बड़े संकट आते हैं। जातक कभी-कभी विशेष चिन्तनीय स्थितियों से

भी गुजरता है, परन्तु बुद्धि, साहस तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर संकटों से छुटकारा पाने में भी बहुत कुछ सफल हो जाता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रभाव स्थापित नहीं हो पाता। मान-हानि तथा धन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। झगड़े-झंझट आदि की परेशानियों में भी फँसना पड़ता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आय के साधनों में वृद्धि होती, परन्तु मानसिक-परेशानियाँ भी अधिक रहती हैं। कभी-कभी संकट एवं हानि का सामना भी करना पड़ता है तथा कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। जातक बड़ा चौकन्ना तथा परिश्रमी होता है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च के कारण चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कष्टकारक सिद्ध होते हैं। धैर्य तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उनसे छुटकारा भी मिल जाता है। कभी-कभी विशेष संकट भी आ जाते हैं।

'तुला' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल — 'तुला' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो कभी-कभी शारीरिक-संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु जातक अपने गुप्त-चातुर्य (कौशल) के बल पर उन पर विजय प्राप्त करता है तथा भीतर से कमजोर रहते हुए भी ऊपर से स्वयं को बड़ा हिम्मती तथा चौकन्ना प्रदर्शित करता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-प्राप्ति एवं धन-संचय के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर जातक धनोपार्जन करता है, फिर भी परेशानियाँ बनी ही रहती हैं। कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट मिलता है। जातक बड़ा हिम्मती तथा परिश्रमी होता है। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है एवं भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है। भाई-बहिनों के कारण कष्ट भी उठाना पड़ता

है। जातक बड़ा परिश्रमी तथा धैर्यवान होता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। घरेलू-झगड़े भी बहुत रहते हैं, परन्तु जातक अपने धैर्य, साहस तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है तथा कुछ सफल भी होता है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो संतान-पक्ष से कष्ट मिलता है एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है, तथापि फिकर बने ही रहते हैं। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो झगड़े-झंझट, रोग तथा शत्रु-पक्ष में बड़ी हिम्मत बहादुरी तथा धैर्य से काम लेने पर सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक कभी घबराता नहीं है। उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिलती है ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है दैनिक आमदनी में भी बहुत व्यवधान पड़ते हैं स्त्री तथा दैनिक-व्यवसाय के पक्ष में सफलता पाने के लिए बहुत हिम्मत, धैर्य तथा परिश्रम से काम लेना पड़ता है। गुप्त-युक्तियों से थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्व की हानि होती है। पेट में कुछ विकार भी रहता है। धैर्य, साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त हो जाती है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक बाधाएँ आती हैं तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ईश्वर तथा धर्म में श्रद्धा कम रहती है। जातक स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म के विरुद्ध चलने तथा अनुचित-साधनों का प्रयोग करने से भी नहीं चूकता। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता द्वारा कष्ट तथा राज्य द्वारा परेशानी होती है। व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ आती हैं तथा अनेक उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी के

क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु जातक अपने धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्हें दूर कर, सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर बहुत घाटा होता है तथा अनेक संकटों को पार करने के बाद ही सफलता मिलती है। (१२) केतु 'द्वादशभाव' में हो तो खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। खर्च चलाने के लिए विवेक बुद्धि से काम लेना तथा कठिन परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी कभी कभी बड़ी कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'वृश्चिक' लग्न वाले जातक की कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शरीर में कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। जातक उग्र स्वभाव का, कमजोर दिमाग का तथा शारीरिक-श्रम करने वाला होता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन-लाभ प्रयत्नों से होता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी होता है। कौटुम्बिक-सुख में कुछ कमी रहती है। जातक अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव सतर्क बना रहता है। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के संबंधों से कष्ट का अनुभव होता है। झगड़े-झंझटों में सफलता मिलती है। जातक बड़ा साहसी, पराक्रमी, धैर्यवान तथा हिम्मतवाला होता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के कारण परेशानी होती है। भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है एवं चित्त अशान्त बना रहता है। कठिन परिश्रम से कुछ राहत मिलती है। परदेश में रहने से कुछ सुख मिलता है। घर में सदैव अशान्ति बनी रहती है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से

कष्ट मिलता है। ऐसा जातक बड़ा साहसी, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला, धैर्यवान तथा जिद्दी होता है। अपनी गुप्त-चिन्ताओं को किसी पर प्रकट नहीं होने देता। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। झगड़ों तथा कठिनाइयों पर अपनी बहादुरी, धैर्य तथा युक्ति-बल से विजय प्राप्त करता है। ननिहाल-पक्ष कमजोर होता है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है। गृहस्थ-जीवन में अनेक संकट आते हैं एवं दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों तथा साहस के बल पर संकटों में थोड़ी-बहुत कमी ला सकने में समर्थ हो जाता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पुरातत्त्व की हानि होती है। जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने पर भी संकटों से मुक्ति नहीं मिल पाती। (९). केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में बड़े संकट आते हैं तथा धर्म की हानि होती है। जातक हर समय चिन्ताओं से घिरा रहता है। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी सफलता नहीं मिल पाती। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता द्वारा कष्ट मिलता है। राज्य-क्षेत्र में मान-भंग होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में घोर संकट आते हैं। गुप्त-युक्ति, पराक्रम, धैर्य आदि से कुछ राहत तो मिलती है, फिर भी जीवन सुख से नहीं बीतता। (११) 'केतु 'एकादश भाव' में हो तो आय उत्तम रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कभी आर्थिक-संकट भी आ जाते हैं। जातक चालाक, धूर्त तथा मतलबी होता है। उसे अपनी आमदनी से कभी संतोष नहीं हो पाता। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से

लाभ भी होता है। गुप्त-युक्ति, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर विजय तो पाता है, परन्तु कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'धनु' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल- 'तुला' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है — (१) केतु 'प्रथम भाव' में होतो जातक के शारीरिक-आकार तथा शक्ति में वृद्धि होती है। परन्तु सौन्दर्य में कमी आती है। वह जिद्दी स्वभाव का, परिश्रमी, धैर्यवान तथा कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करने वाला होता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो कौटुम्बिक-सुख में कमी आती है तथा धन-संचय के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी घोर आर्थिक-संकट भी आते हैं तथा प्रायः ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है। जातक बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है। (३) केतु 'तृतीयभाव' में हो तो पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई बहिन की ओर से कष्ट का अनुभव होता है। जातक गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला, परिश्रमी तथा साहसी होता है। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में बहुत कमी आती है, मातृ-भूमि से दूर भी रहना पड़ता है। भूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता, परन्तु जातक परिश्रमी तथा धैर्यवान होता है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष से हानि तथा विद्याध्ययन में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अत्यधिक प्रयत्नों के बावजूद अल्प-सफलता मिलती है। ऐसा जातक जिद्दी स्वभाव का, परिश्रमी, चिन्तित बना रहने वाला तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े आदि में लाभ उठाता है। संकट के समय कभी हिम्मत नहीं हारता तथा बहादुरी से सामना करता हुआ सफलता प्राप्त करता है।

(७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से कोई हानि उठानी पड़ती है तथा दैनिक आमदनी में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। जातक धैर्य तथा साहस के साथ गृहस्थ-जीवन को सफल बनाने में कोशिश ही सफलता प्राप्त कर पाता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर बड़े-बड़े संकट आते हैं तथा मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पेट में विकार भी रहता है। पुरातत्व की हानि होती है तथा दैनिक-जीवन में परेशानियाँ बनी रहती हैं। कोई पराक्रम करने पर भी सुख नहीं मिल पाता। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में अनेक बाधायें आती हैं। गुप्त-युक्तियों तथा पराक्रम का सहारा लेने पर भी आंशिक सफलता ही मिल पाती है। धर्म तथा ईश्वर में आस्था कम रहती है। चिन्तायें तथा असफलतायें घेरे रहती हैं। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य लाभ, सम्पत्ति, सहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। पराक्रम तथा युक्तिबल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में आकस्मिक वृद्धि होती है। कभी कभी संकटों का शिकार भी होना पड़ता है तो कभी-कभी गुप्त युक्तियों द्वारा उसपर विजय भी मिल जाती है, तथापि पूर्ण संतोष नहीं मिल पाता। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहने के कारण परेशानी तथा संकट घेरे रहते हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट मिलते हैं। गुप्त-युक्तियों, धैर्य तथा पराक्रम से काम लेने पर भी आंशिक सफलता ही मिल पाती है।

'मकर' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल— 'मकर' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी कोई बड़ी चोट लगने की सम्भावना

भू० सं० २०२८

कु० र०

भी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति उग्र तथा जिद्दी स्वभाव का होता है एवं अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है। (2) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कुटुम्ब के विषय में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा हिम्मत एवं गुप्त-युक्तियों के आश्रय से धन की कमी को पूरा करने में बहुत थोड़ी सफलता ही मिल जाती है। (3) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बहिनों के पक्ष में संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। जातक गुप्त-युक्ति, साहस, धैर्य आदि के बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहता है। (4) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो माता के सुख में कमी आती है तथा माता के कारण कष्ट भी प्राप्त होता है। घरेलू-जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-शक्ति का ह्रास भी करना पड़ता है। कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर अन्त में थोड़ी बहुत सुख पाने में सफलता मिल जाती है। (5) केतु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहती है। मस्तिष्क में गुप्त-चिन्तायें रहती हैं। बुद्धि तीव्र होती है, अतः उससे काम लेकर जातक अपनी कठिनाइयों के निवारणार्थ प्रयत्नशील बना रहता है। (6) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं के कारण कठिनाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु गुप्त-युक्तियों के बल पर जातक उन पर विजय भी पा लेता है। झगड़ों में सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष को हानि पहुँचती है, जातक संकट के समय भी धैर्य नहीं छोड़ता। (7) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं, गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ आती हैं और दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। जातक गुप्त-युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के बल पर बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है। (8) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं तथा जातक मृत्यु-तुल्य कष्ट प्राप्त करता है। पेट में विकार रहता है। आजीविकोपार्जन हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ता है। सामाजिक जीवन संघर्षपूर्ण रहता है, तथापि जातक भीतर से चिन्तित रहते हुए भी ऊपर से प्रभावशाली

बने रहने का प्रयत्न करता है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं, परन्तु जातक अपनी हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर, उन पर विजय पाकर भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कभी-कभी भाग्य के क्षेत्र में कठिन संकट भी आते हैं, परन्तु अन्त में उनका निराकरण भी हो जाता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता से कष्ट, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यावसायिक-क्षेत्र में संकटों की प्राप्ति होती है, परन्तु जातक अपनी गुप्त-युक्ति एवं परिश्रम के बल पर, उन पर विजय प्राप्त करता है। यों, सम्पूर्ण जीवन संघर्ष तथा परिवर्तन पूर्ण बना रहता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आय में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा जातक अपने परिश्रम एवं गुप्त-युक्ति-बल से आमदनी को निरन्तर बढ़ाता भी रहता है। कठिनाइयों पर विजय पाकर भी, गुप्त रूप में चिन्तित भी बना रहता है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति साहसपूर्वक कठिनाइयों का सामना करता है तथा अन्त में अपने परिश्रम, धैर्य तथा गुप्त-युक्तियों के बल से उन पर विजय भी पा लेता है।

'कुंभ' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल- 'कुम्भ' लग्न की जन्मकुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है – (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो जातक के शरीर पर कहीं चोट या घाव का चिह्न बनता है। शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धैर्यवान, गुप्त युक्ति सम्पन्न तथा परिश्रमी होता है एवं अपने इन्हीं गुणों के आधार पर सम्मान भी प्राप्त करता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन तथा कुटुम्ब-सुख के संबंध में कष्ट होता है, कुटुम्ब में नित नये उपद्रव खड़े होते रहते हैं। धैर्य, परिश्रम तथा त्याग-मार्ग का आश्रय लेकर जातक धन कमाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी कर लेता है।

भृ० सं० २०३४

कु० र०

(3) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई बहिन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है एवं इन्हीं गुणों के बल पर सफलता भी प्राप्त करता है। (4) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-सुख में कमी रहती है अथवा हानि होती है। मातृभूमि से दूर भी रहना पड़ता है। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर इन कमियों को दूर करने में थोड़ी बहुत सफलता भी पा लेता है। (5) केतु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-सुख पाने के लिए कष्ट साध्य-उपायों एवं गुप्त-युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है, परन्तु फिर भी अल्प-सफलता ही मिलती है। विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। मस्तिष्क में अशान्ति रहती है तथा शील एवं विवेक की भी कमी रहती है। (6) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रुओं द्वारा अशान्ति उत्पन्न किए जाने पर भी जातक उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने तथा विजय पाने में सफल रहता है। जातक मन में भयभीत रहते हुए भी प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है एवं कठोर परिश्रमी, धैर्यवान तथा गुप्त-युक्तियों का जानकार भी होता है। (7) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है एवं दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी संकटों का सामना करना पड़ता है। जननेन्द्रिय में विकार भी रहता है। जातक अपने परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सामान्य सफलताएँ प्राप्त कर पाता है। (8) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु की वृद्धि होती है, तथापि अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। पुरातत्त्व का सामान्य-लाभ होता है तथा कई बार हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। अन्त में, गुप्त-युक्तियों के बल पर कठिनाइयों को दूर कर पाने में थोड़ी सफलता भी मिल जाती है। (9) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। तथापि जातक लगभग असफलताएँ मिलने

परन्तु निराश नहीं होता और अपनी गुप्त-युक्तियों, धैर्य एवं पराक्रम के बल पर भाग्य की उन्नति करता है। (१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता से बहुत कष्ट मिलता है, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय के क्षेत्र से हानि होती है। फिर भी जातक अपने धैर्य, साहस तथा युक्ति-बल से असफलताओं पर विजय पाने में समर्थ होता है। (११) केतु 'एकादश भाव' में हो तो आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता है। जातक कठिनाइयाँ आने पर भी धैर्य नहीं छोड़ता तथा उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। वह न्याय-मार्ग से धन कमाता तथा सुखी बना रहता है। (१२) केतु 'द्वादश भाव' में हो तो खर्च अधिक रहने के कारण जातक को परेशानी का अनुभव होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर, उन पर विजय प्राप्त करता है तथा गहन-निराशा के समय भी हिम्मत नहीं हारता। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ भी होता है।

'मीन' लग्न के द्वादश भावों में स्थित 'केतु' का फल – 'मीन' लग्न की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का प्रभाव इस प्रकार होता है— (१) केतु 'प्रथम भाव' में हो तो किसी समय शरीर पर सांघातिक चोट लगती है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी आती है। गुप्त-युक्तियों तथा पराक्रम के बल पर जातक अपने व्यक्तित्व का विकास भी करता है। (२) केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो धन एवं कौटुम्बिक-सुख के क्षेत्र में कष्ट का अनुभव होता है। बड़ी युक्तियों तथा धैर्य एवं पराक्रम के बल पर कुछ सफलताएँ मिलती हैं। कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी होता है। बाहरी लोगों की दृष्टि में ऐसा जातक धन-सम्पन्न तथा कौटुम्बिक-सुख से पूर्ण ही दिखाई देता है। (३) केतु 'तृतीय भाव' में हो तो जातक

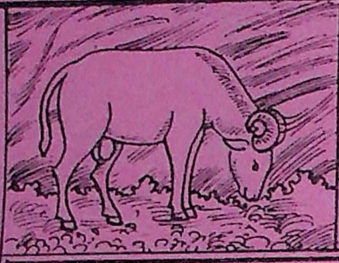
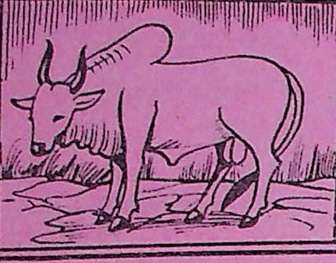
के पराक्रम की आंशिक वृद्धि होती है तथा कुछ कष्ट के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, हिम्मती, पराक्रमी तथा गुप्त-युक्तियों का जानकार होता है। वह अपनी कठिनाइयों को बाहरी लोगों पर प्रकट नहीं होने देता। (४) केतु 'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पक्ष से बहुत सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू-सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसा जातक घोर संकटों के समय भी विचलित नहीं होता तथा हिम्मत के साथ उनका सामना करता हुआ सफलता प्राप्त करता है। (५) केतु 'पंचम भाव' में हो तो सन्तान-पक्ष में संकट का सामना करना पड़ता है। दिमाग में चिन्तायें भरी रहती हैं। विद्याध्ययन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। जातक गुप्त-युक्तियों, शौर्य तथा पराक्रम के बल पर कमियों को दूर करने हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। (६) केतु 'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों में विजय तथा सफलता प्राप्त होती है। परेशानी आने पर भी वह हिम्मत को बनाये रखता है तथा बहादुरी से काम लेकर उन्हें दूर करता है। (७) केतु 'सप्तम भाव' में हो तो स्त्री एवं दैनिक-व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी स्त्री-पक्ष से कष्ट-कारक तो कभी सुख भी मिलता है। ऐसा जातक साहस पूर्वक अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। (८) केतु 'अष्टम भाव' में हो तो आयु पर अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकट आते हैं, तथापि जीवन की रक्षा भी होती रहती है। पुरातत्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। जातक अपनी गुप्त-युक्तियों, पराक्रम, चातुर्य तथा साहस के बल पर लाभ उठाता रहता है तथा बड़ा धैर्यवान् भी होता है। (९) केतु 'नवम भाव' में हो तो भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं, परन्तु जातक अपने शौर्य, साहस, पराक्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल से, अपना विजय प्राप्त करके उन्नति करता है। घोर संकटों के अवसरों पर भी विचलित नहीं होता। अन्ततः भाग्य तथा धर्म की कुछ उन्नति होती है, परन्तु यश में कमी फिर भी बनी ही रहती है।

(१०) केतु 'दशम भाव' में हो तो पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की उपलब्धि होती है। जातक अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। (११) केतु 'एकादशभाव' में हो तो आमदनी में आकस्मिक वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, तथापि धैर्य एवं साहस के साथ उन पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा जातक बड़ा साहसी, बहादुर, धैर्यवान तथा सुखी होता है। (१२) केतु 'द्वादशभाव' में हो तो जातक को खर्च के कारण कष्ट का अनुभव होता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से भी असन्तोष मिलता है, तथापि अपनी गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा पराक्रम के बल पर सभी कठिनाइयों का मुकाबिला करके उन पर विजय पाता तथा उन्नति लाभ करता है।

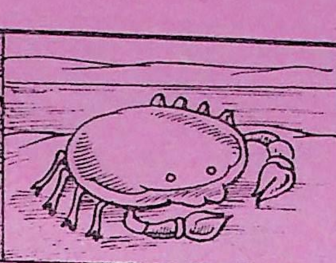
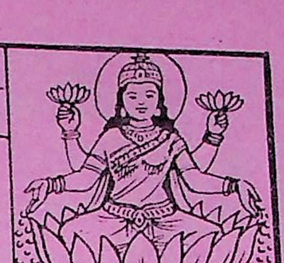
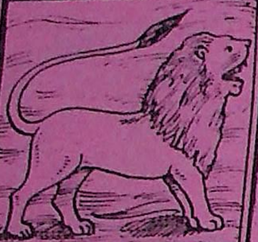
॥ विभिन्न लग्न-राशि स्थित विभिन्न भावापन्न नवग्रहों का फलादेश समाप्त ॥

॥ इति चतुर्थखण्डम् ॥


इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्
चतुर्थ खण्डः समाप्तम्

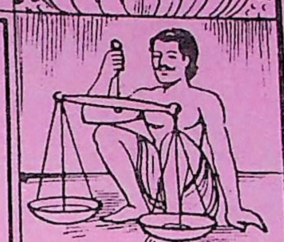
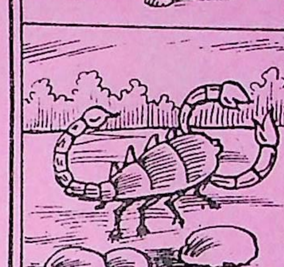


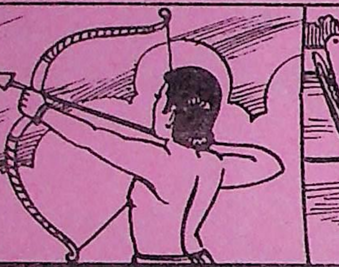
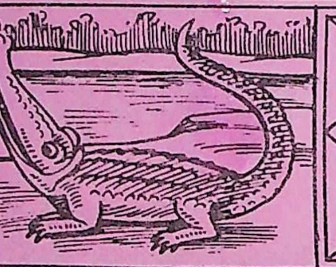
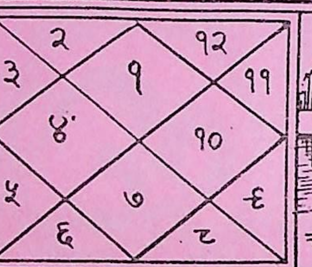




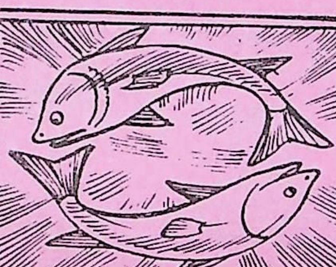

अथ श्री भृगु संहिता कुण्डलीरहस्यम्

प्रकीर्ण विषयाः

पञ्चम खण्डः


प्रकीर्ण-विषय खण्ड (५)

किसी जन्म कुण्डली के समुचित फलादेश की जानकारी के लिए निम्नलिखित विषयों को जानना आवश्यक है।

राशि — भ-चक्र के ३० अंश अथवा ९ भागों की एक 'राशि' होती है। जिस प्रकार सम्पूर्ण आकाश-मण्डल को २७ नक्षत्रों में बाँटा गया है, उसी प्रकार उसे १२ राशि अथवा १०८ भाग या ३६० अंशों में भी बाँटा गया है। राशियों के नाम क्रमशः इस प्रकार होते हैं— १ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ और १२ मीन। जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में इन राशियों के प्रतीक-चिह्न अंकों को लिखा जाता है, यथा— मेष के लिए १, वृष के लिए २ आदि। जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' में जिस राशि का अंक होता है, उस अंक वाली राशि ही जातक की जन्म-लग्न होती है तथा जिस भाव में चन्द्रमा की स्थिति हो, उस भाव में जो अंक लिखा हो, उस अंक वाली राशि ही जातक की 'जन्म-राशि' होती है। जन्म लग्न तथा जन्म राशि के इस अन्तर को भली भाँति ध्यान में रखना चाहिए।

ग्रह — ग्रहों की कुल संख्या ९ मानी गई है। इनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं— १ सूर्य, २ चन्द्रमा, ३ मङ्गल, ४ बुध, ५ गुरु या बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु और ९ केतु। आधुनिक काल के पाश्चात्य ज्योतिषियों ने १ हर्षल, २ नेपच्यून तथा ३ प्लूटो नामक तीन नये ग्रहों की खोज और की है। परन्तु भारतीय ज्योतिष में अभी तक ९ ग्रहों को ही मुख्य मान कर उनके फलादेश पर विचार किया जाता है। इनमें भी मुख्य ग्रह केवल सात ही हैं। राहु तथा केतु को 'छाया ग्रह' माना गया है। इनका आकाश मण्डल में कोई

ज्योतिष्पिण्ड नहीं है।

चन्द्रमा, बृहस्पति तथा शुक्र ये तीन 'शुभ ग्रह' माने गये हैं। बुध को 'नपुंसक-ग्रह' माना गया है, यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, वैसा ही प्रभाव देता है। सूर्य, मंगल तथा शनि को 'क्रूर ग्रह' माना गया है। राहु-केतु की गणना भी क्रूर-ग्रहों में की गई है, परन्तु कुछ विद्वान् केतु को भी शुभग्रह मानते हैं।

(१) सूर्य - इसे 'क्रूर ग्रह' अथवा 'पाप ग्रह' भी कहा जाता है। यह पूर्व दिशा का स्वामी है। स्नायु, मेरुदण्ड, नेत्र, हृदय आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव रहता है। इसके द्वारा आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, पिता, राज्य, देवालय, शोक, अपमान, कलह, रोग — अतिसार, ज्वर, मंदाग्नि, मानसिक-रोग तथा नेत्र-विकार आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। यह जन्म से सप्तम स्थान में 'बली' तथा मकर से छः राशियों तक 'चेष्टा-बली' होता है। यह 'दशम भाव' का कारक है। इसे नवम तथा दशम भाव का भी कारक माना गया है।

(२) चन्द्रमा - इसे 'शुभ ग्रह' माना जाता है। यह पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है। वात श्लेष्मा आदि पर इसका विशेष प्रभाव रहता है। इसके द्वारा मन, चित्तवृत्ति, सम्पत्ति, माता, पिता, [illegible], राजकीय-अनुग्रह, उदर, मस्तिष्क, शारीरिक-स्वास्थ्य एवं जलीय-रोग, स्त्री-जन्य रोग, मानसिक-रोग एवं शीत रोग आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। यह जन्म से चतुर्थ स्थान में 'बली' तथा मकर से छः राशियों तक 'चेष्टा-बली' रहता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की दशमी तक यह क्षीण रहता है (कुछ विद्वानों के मतानुसार कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की [illegible] तक क्षीण रहता है)। शेष अवधि में पूर्ण ज्योतिर्मान माना जाता है। क्षीण-चन्द्रमा को 'पाप-ग्रह' तथा पूर्ण-चन्द्रमा को शुभग्रह माना जाता है। चतुर्थ भाव में 'बली' चन्द्रमा ही पूर्ण फलदायी होता है, क्षीण-चन्द्रमा नहीं। अतः चन्द्रमा के इस शुभाशुभत्व पर भी ध्यान देना आवश्यक है। इसे चतुर्थ भाव का 'कारक' माना गया है।

(३) मङ्गल - इसे 'क्रूर' अथवा 'पापग्रह' माना जाता है। यह दक्षिण दिशा का स्वामी है। यह उत्तेजना, तृष्णा तथा दुःख आदि पर विशेष प्रभाव रखता है। इसके द्वारा धैर्य, पराक्रम, भाई-बहिन, शक्ति तथा रक्त आदि के संबंध में विचार करना चाहिए। यह तीसरे तथा छठे स्थान में 'बली' तथा दशम स्थान में 'दिग्बली' होता है। यह चन्द्रमा के साथ 'चेष्टा-बली'; द्वितीय भाव में बलहीन तथा छठे भाव का कारक है।

(४) बुध - यह 'नपुंसक' लिङ्ग ग्रह है। यह उत्तर दिशा का स्वामी है। यह व्यवसाय, चिकित्सा, कानून, शिल्प, ज्योतिष आदि पर प्रभाव रखता है। इसके द्वारा बुद्धि-भ्रम, विवेक-शक्ति, जिह्वा एवं तालु से उच्चारण किए जाने वाले शब्द तथा अवयव एवं गुप्त-रोग, श्वेत कुष्ठ, मूकत्व, वात रोग, संग्रहणी आदि का विचार किया जाता है। यह चतुर्थ एवं दशम स्थान का 'कारक' है। चतुर्थ स्थान में यह बल-हीन भी होता है। यह जिस ग्रह के साथ बैठा हो, उसी के स्वभाव के अनुरूप स्वयं भी शुभ अथवा अशुभ फल देने वाला शुभ ग्रह अथवा पाप-ग्रह बन जाता है। पूर्णचन्द्र, गुरु तथा शुक्र के साथ शुभ-फलदायक एवं सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु तथा क्षीण-चन्द्र के साथ अशुभ फलदाता होता है। यदि अकेला हो तो शुभ फल देता है।

(५) गुरु - यह 'शुभ ग्रह' माना जाता है। यह पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी है। यह हृदय की शक्ति का कारक है। इसके द्वारा पारलौकिक-सुख, आध्यात्मिक-सुख, धन, विद्या, पुत्र, पौत्र तथा शोथ-गुल्म आदि रोगों का विचार किया जाता है। यह लग्न में तथा चन्द्रमा के साथ किसी भी भाव में बैठे तो चेष्टा-बली होता है। इसे पंचम, नवम, दशम तथा एकादश भाव का 'कारक' माना गया है।

(६) शुक्र - यह 'शुभ ग्रह' माना गया है। यह दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी है। यह काम, वीर्य आदि धातुओं तथा काव्य-संगीत, वाहन शय्या, कामेच्छा, पत्नी (स्त्री), आँख, वस्त्र, आभूषण आदि

का अधिपति है। इसके द्वारा सांसारिक-सुख, व्यावहारिक-सुख एवं चातुर्य आदि का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो इसके द्वारा माता के संबंध में भी विचार किया जाता है। यह छठे स्थान में निष्फल तथा सातवें स्थान में अनिष्टकर होता है।

(7) शनि- इसे 'क्रूर' अथवा 'पाप' ग्रह माना गया है। यह पश्चिम दिशा का स्वामी तथा नपुंसक जाति का है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक-बल, दृढ़ता, ऐश्वर्य, यश, मोक्ष, ~~योगाभ्यास~~, नौकरी, विदेशी-भाषा, विपत्तिसंबन्ध दर्द आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह माता-पिता का कारक भी होता है। पाप-ग्रह होने पर भी इसका अन्तिम-परिणाम सुखदायक होता है। यह जातक को दुर्भाग्य तथा संकटों का शिकार बनाने के बाद शुद्ध एवं सात्विक बना देता है। यह सप्तम भाव में बली, तथा चन्द्रमा अथवा किसी अन्य वक्री ग्रह के साथ रहने पर 'चेष्टा-बली' होता है। इसे छठे, आठवें, दसवें तथा बारहवें भाव का 'कारक' माना जाता है।

(8) राहु- इसे 'क्रूर' ग्रह माना गया है। इसे दक्षिण दिशा का स्वामी मानते हैं। यह गुप्त युक्ति-बल, कष्ट एवं त्रुटियों का कारक है। यह जिस भाव में बैठता है, उसकी उन्नति को रोक देता है।

(9) केतु- इसे 'क्रूर' ग्रह की संज्ञा दी गई, परन्तु कुछ विद्वान इसे 'शुभ ग्रह' मानते हैं। यह गुप्त-युक्ति-बल, कठिन-कर्म, भय तथा त्रुटियों का कारक है। इसे भी उसी दिशा का स्वामी माना जाता है। इसके द्वारा हाथ-पाँव, क्षुधा जनित-कष्ट, मातामह (नाना) एवं चर्म रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशियों से विचारणीय विषय- 'मेष' राशि द्वारा मस्तक के सम्बन्ध में; 'वृष' राशि द्वारा मुँह तथा कपोलों के संबंध में; 'मिथुन' राशि द्वारा स्कन्ध तथा बाहुओं के सम्बन्ध में; 'कर्क' राशि

द्वारा वक्षःस्थल एवं स्तनों के सम्बन्ध में; 'सिंह' राशि द्वारा हृदय के सम्बन्ध में; 'कन्या' राशि द्वारा पेट के सम्बन्ध में; 'तुला' राशि द्वारा नाभि से निचले अंगों के विषय में; 'वृश्चिक' राशि द्वारा जननेन्द्रिय के सम्बन्ध में; 'धनु' राशि द्वारा पाँवों की सन्धि तथा जाँघों के सम्बन्ध में; 'मकर' राशि द्वारा पाँवों के घुटनों के सम्बन्ध में; 'कुम्भ' राशि द्वारा पेट के भीतरी भागों के सम्बन्ध में तथा 'मीन' राशि द्वारा पाँवों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशि-स्वामी- 'मेष' एवं 'वृश्चिक'- इन दो राशियों का स्वामी 'मंगल' है। 'वृष' एवं 'तुला'- इन दो राशियों का स्वामी 'शुक्र' है। 'मिथुन' एवं 'कन्या'- इन दो राशियों का स्वामी 'बुध' है। 'कर्क' राशि का स्वामी 'चन्द्रमा' है। 'सिंह' राशि का स्वामी 'सूर्य' है। 'धनु' तथा 'मीन'- इन दो राशियों का स्वामी 'बृहस्पति' है तथा 'मकर' और 'कुम्भ'- इन दो राशियों का स्वामी 'शनि' है। 'राहु' तथा 'केतु' छाया-ग्रह होने के कारण किसी राशि के स्वामी नहीं माने जाते; परन्तु कुछ विद्वान् बुध की राशि 'कन्या' पर 'राहु' का तथा 'मिथुन' पर 'केतु' का भी आधिपत्य स्वीकार करते हैं।

ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री- 'सूर्य' के चन्द्रमा, मंगल तथा गुरु 'मित्र' हैं; बुध 'सम' है तथा शुक्र और शनि 'शत्रु' हैं। 'चन्द्रमा' के सूर्य और बुध 'मित्र' हैं, मंगल, बुध, शुक्र, शनि तथा गुरु 'सम' हैं एवं शत्रु कोई नहीं है। 'मंगल' के सूर्य, चन्द्र तथा गुरु 'मित्र' हैं; शुक्र और शनि 'सम' हैं तथा बुध 'शत्रु' है। 'बुध' के सूर्य और शुक्र 'मित्र' हैं; मंगल, गुरु तथा शनि 'सम' हैं एवं चन्द्रमा 'शत्रु' है। 'गुरु' के सूर्य, चन्द्र तथा मंगल 'मित्र' हैं; शनि 'सम' है तथा शुक्र और बुध 'शत्रु' हैं। 'शुक्र' के बुध और शनि 'मित्र' हैं; मंगल और गुरु 'सम' हैं तथा सूर्य और चन्द्र 'शत्रु' हैं। 'शनि' के बुध और शुक्र 'मित्र' हैं; गुरु 'सम' है तथा सूर्य, चन्द्र और मंगल 'शत्रु' हैं।

राहु-केतु के छाया-ग्रह होने के कारण नैसर्गिक-मैत्री चक्र में इन्हें स्थान नहीं दिया गया है, यद्यपि ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से 'मित्रता' मानते हैं तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल एवं गुरु से शत्रुता रखते हैं। 'बुध' इन दोनों के लिए 'सम' है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु - ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से 'शत्रुता' मानते हैं; बुध इन दोनों से 'समभाव' रखता है तथा शुक्र और शनि इन दोनों से 'मित्रता' मानते हैं।

ग्रहों की अवस्थाएँ- प्रत्येक ग्रह के ३० अंश होते हैं। जातक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह कितने अंश पर था, इसका ज्ञान उस समय के 'पञ्चाङ्ग' द्वारा होता है। ३ से ९ अंश तक का ग्रह 'किशोरावस्था' का, १० से २२ अंश तक का ग्रह 'युवावस्था' का तथा २३ से २८ अंश तक का ग्रह 'वृद्धावस्था' वाला होता है। २९ से २ अंश तक (२९, ३०, १ और २) का ग्रह 'मृतक-अवस्था' का माना जाता है। 'किशोर' एवं 'वृद्धावस्था' वाले ग्रह अपना आधा प्रभाव प्रकट करते हैं; 'युवावस्था' वाले ग्रह पूर्ण प्रभाव प्रकट करते हैं तथा 'मृतक-अवस्था' वाले ग्रह का प्रभाव न के बराबर होता है।

जन्मकुण्डली के द्वादश भावों से विचारणीय विषय- जन्मकुण्डली के द्वादश भावों को क्रमशः इन नामों से पुकारा जाता है — १ तनु, २ धन, ३ सहज, ४ सुहृद्, ५ पुत्र, ६ रिपु, ७ जाया, ८ आयु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय और १२ व्यय।

'**प्रथम भाव**' से जातक के स्वरूप, आकृति, चिह्न, आयु, जाति, मस्तिष्क, विवेक, शील, सुख, दुःख आदि के विषय में विचार किया जाता है। लग्नेश की स्थिति एवं बलाबल के अनुसार ही जातक की कार्य-कुशलता, जातीय उन्नति-अवनति का ज्ञान इस भाव से प्राप्त करते हैं। इस भाव का कारक सूर्य है। इसमें मिथुन, कन्या, तुला अथवा कुम्भ राशियों की स्थिति को बलवान माना जाता है।

'द्वितीय भाव' से जातक के धन, सौन्दर्य, मिष्टवादन, आँख, नाक, कान, कुल, कुटुम्ब, मित्र, सुखोपभोग, बन्धन, गायन, क्रय-विक्रय, रत्न, स्वर्ण-चाँदी, धन तथा संचित-पूँजी आदि के विषय में विचार किया जाता है।

'तृतीय भाव' से जातक के पराक्रम, शौर्य, धैर्य, साहस, कर्म, सहोदर, सेवक, आभूषण, कान, पेशा-व्यापार तथा श्वास, प्रलाप, दमा आदि रोगों का विचार किया जाता है।

'चतुर्थ भाव' से जातक के माता-माता का सुख, अन्तःकरण, घर, गाँव, उपवन, सम्पत्ति, चतुष्पद, वाहन, निधि, दयालुता, उदारता, छल-कपट एवं षड्यन्त्र तथा उदर सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है। यह स्थान विशेष कर 'माता' का है।

'पंचम भाव' से जातक की विद्या, बुद्धि, सन्तान, विनय, नीति, प्रबन्ध-कुशलता, देवभक्ति, धन-प्राप्ति के उपाय, आकस्मिक-धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना, मामा का सुख, हाथ का यश तथा कीर्ति, गर्भाशय, मूत्र पिण्ड आदि के विषय में विचार किया जाता है।

'षष्ठ भाव' से जातक के शत्रु, चिन्ता, सन्देह, जागीर, यश, मामा की स्थिति, गुदा तथा पीड़ा, व्रण, रोग आदि के विषय में विचार किया जाता है।

'सप्तम भाव' से जातक की स्त्री, कामेच्छा, रमण शक्ति, विवाह, स्वास्थ्य, मित्र, दैनिक आमदनी, व्यवसाय, झगड़े-झंझट, जननेन्द्रिय तथा बवासीर की बीमारी आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

'अष्टम भाव' से जातक की आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, मानसिक-चिन्तायें, पुरातत्त्व, संकट, ऋण, समुद्र-यात्रा तथा जननेन्द्रियों के रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

'नवम भाव' से जातक के पुण्य, धर्म, तप, शील, तीर्थ-यात्रा, दान, प्रकाश, विद्या, मानसिक वृत्ति, पिता का सुख एवं भाग्योदय आदि के संबंधों में विचार किया जाता है।

'दशम भाव' से जातक के ऐश्वर्य-भोग, यश, नेतृत्व, प्रभुत्व, सम्मान, राजकीय-संबंध, व्यवसाय, नौकरी, अधिकार तथा पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

'एकादश भाव' से जातक की आमदनी, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, रत्न, वाहन तथा मांगलिक-कार्य आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

'द्वादश भाव' से जातक के व्यय, व्यसन, दान, बाहरी सम्बन्ध, यात्रा, रोग, दण्ड एवं हानि आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

भावों की संज्ञाएं- भावों की १ त्रिकोण, २ केन्द्र, ३ पणफर, ४ आपोक्लिम तथा ५ मारक — ये पाँच विशिष्ट संज्ञाएं हैं। पाँचवें तथा नवें भावों को **'त्रिकोण'** कहते हैं। पहले, चौथे, सातवें तथा दसवें भावों को **'केन्द्र'** कहते हैं। दूसरे, पाँचवें, आठवें तथा ग्यारहवें भावों को **'पणफर'** कहते हैं। तीसरे, छठे, नवें तथा बारहवें भावों को **'आपोक्लिम'** कहते हैं। दूसरे तथा सातवें भावों को **'मारक'** कहते हैं। कुछ विद्वान दूसरे तथा पाँचवें भाव को 'पणफर' एवं तीसरे और ग्यारहवें भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं। कुछ अन्य मनीषी छठे तथा आठवें भाव को 'पणफर' एवं दूसरे तथा बारहवें भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं। इन भावों में स्थित ग्रह विशिष्ट फलदायक होते हैं।

मूल त्रिकोण- आगे लिखे अनुसार, जो ग्रह जिस राशि के जितने अंशों पर हो, उसे 'मूल त्रिकोण' स्थित माना जाता है। 'मूल त्रिकोण' स्थित ग्रह भी विशिष्ट-फलदायक माने जाते हैं —

'सूर्य' - सिंह राशि में १ से २० अंश तक; **'चन्द्रमा'** - वृष राशि में ४ से ३० अंश तक;

'मंगल' — 'मेष' राशि में १ से १८ अंश तक; **'बुध'** — 'कन्या' राशि में १ से १५ अंश तक; **'गुरु'** — 'धनु' राशि में १ से १३ अंश तक; **'शुक्र'** — 'तुला' राशि में १ से १० अंश तक एवं **'शनि'** — 'कुम्भ' राशि में १ से २० अंश तक। **'राहु'** को 'कर्क' राशि में तथा **'केतु'** को 'मकर' राशि में 'मूल-त्रिकोण-गत' माना जाता है।

ग्रहों की उच्च-स्थिति — कौन सा ग्रह किस राशि के कितने अंश बीत जाने पर 'उच्च' गत माना जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए। उच्च राशि गत ग्रह भी विशिष्ट फल दायक होते हैं —

'सूर्य' — 'मेष' राशि के १० अंश पर; **'चन्द्रमा'** — 'वृष' राशि के ३ अंश पर; **'मंगल'** — 'मकर' राशि के २८ अंश पर; **'बुध'** — 'कन्या' राशि के १५ अंश पर; **'गुरु'** — 'कर्क' राशि के ५ अंश पर; **'शुक्र'** — 'मीन' राशि के २७ अंश पर एवं **'शनि'** — 'तुला' राशि के २० अंश पर। कुछ विद्वान 'मिथुन' राशि के १५ अंश पर तथा कुछ 'वृष' राशि में **'राहु'** को 'उच्च-स्थित' मानते हैं। इसी प्रकार कुछ के मत से 'धनु' राशि के १५ अंश पर तथा कुछ 'वृश्चिक' राशि में **'केतु'** की 'उच्च-स्थिति' मानते हैं।

ग्रहों की नीच स्थिति — जो ग्रह जिस राशि के जितने अंशों पर 'उच्च-गत' माना जाता है, उससे सातवीं राशि पर, उतने ही अंशों में वह 'नीच-गत' माना जाता है, इसे निम्नानुसार स्पष्ट समझें। नीच-राशि गत अधिकांश ग्रह अशुभ फलदायक होते हैं —

'सूर्य' — 'तुला' राशि के १० अंश पर; **'चन्द्रमा'** — 'वृश्चिक' राशि के ३ अंश पर; **'मंगल'** — 'कर्क' राशि के २८ अंश पर; **'बुध'** — 'मीन' राशि के १५ अंश पर; **'गुरु'** — 'मकर' राशि के ५ अंश पर; **'शुक्र'** — 'कन्या' राशि के २७ अंश पर तथा **'शनि'** — 'मेष' राशि के २० अंश पर। कुछ विद्वान 'धनु' राशि के १५ अंश पर तथा कुछ 'वृश्चिक' राशि में **'राहु'** को 'नीच-गत' मानते हैं। इसी प्रकार कुछ के मत से 'मिथुन' राशि के १५ अंश पर तथा कुछ 'वृष' राशि में **'केतु'** को 'नीच-गत' मानते हैं।

ग्रहों के बलाबल- ग्रहों के बल 4 प्रकार के माने गए हैं —(1) सर्वोच्च बली, (2) उच्च बली; (3) बली तथा (4) निर्बल। 'उच्च राशि गत' ग्रह 'सर्वोच्च बली' होता है। 'मूल त्रिकोण स्थित' ग्रह 'उच्च बली' होता है। 'स्वक्षेत्री' अर्थात् अपनी ही राशि में स्थित ग्रह 'बली' होता है। 'नीच राशि गत' ग्रह 'निर्बल' होता है।

ग्रहों के बल 6 प्रकार के और भी माने गए हैं, यथा—**(1) स्थान-बल** – उच्च राशिगत, स्व-क्षेत्री, मित्र ग्रह की राशि में स्थित एवं मूल त्रिकोण गत ग्रह 'स्थान बली' होता है। **(2) दिग्बल–** जन्म कुण्डली के प्रथम भाव को 'पूर्व'; चतुर्थ भाव को 'उत्तर'; सप्तम भाव को 'पश्चिम' तथा दशम भाव को दक्षिण दिशा माना जाता है। **'बुध' और 'गुरु'** प्रथम भाव (पूर्व दिशा) में स्थित हों; **'चन्द्रमा'** तथा **'शुक्र'** चतुर्थ भाव (अर्थात् उत्तर दिशा) में स्थित हों; **'शनि'** सप्तम भाव (अर्थात् पश्चिम दिशा) में स्थित हो तथा **'मंगल'** दशम भाव (अर्थात् दक्षिण दिशा) में स्थित हो — तो 'दिग्बली' माने जाते हैं। **(3) काल-बल** – जिस जातक का जन्म रात्रि के समय हुआ हो, उसकी जन्मकुण्डली के ग्रहों में से **चन्द्रमा, मंगल** और **शनि** ये तीनों तथा जिसका जन्म दिन के समय हुआ हो उसकी जन्मकुण्डली के ग्रहों में से **सूर्य, बुध** और **शुक्र** - ये तीनों ग्रह 'काल-बली' होते हैं। मतान्तर से **'गुरु'** को दिन-रात्रि – दोनों ही समय में **'कालबली' माना गया है। (4) नैसर्गिक-बल –** शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सूर्य – ये ग्रह उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं अर्थात् शनि से मंगल अधिक बलवान होता है तथा मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र तथा चन्द्र से सूर्य अधिक बलवान होता है। इसी क्रम की विपरीत स्थिति में सूर्य से चन्द्रमा कम बलवान है तथा चन्द्रमा से शुक्र, शुक्र से गुरु, गुरु से बुध, बुध से मंगल तथा मंगल से शनि कम बलवान होता है। **(5) चेष्टा-बल** – मकर से

मिथुन तक (मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष और मिथुन) किसी भी राशि में स्थित सूर्य तथा चन्द्रमा 'चेष्टा-बली' होते हैं। मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि - ये पाँचों ग्रह चन्द्रमा के साथ रहने पर 'चेष्टा-बली' होते हैं। (६) **दृग्बल-** जन्मकुण्डली में जिन क्रूर (दुष्ट या पाप) ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती है, वे उनकी शुभ दृष्टि के कारण 'दृग्बली' हो जाते हैं।

पूर्वोक्त ६ प्रकार के बलों में से किसी भी प्रकार के बल को प्राप्त बलवान ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव का विशेष फल अपने स्वभावानुसार देता है। किसी भाव स्थित किसी भी ग्रह के फलाफल की यथार्थ जानकारी के लिए उस भाव में स्थित राशि तथा ग्रह के स्वभाव एवं बल आदि का समन्वय करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

ग्रहों की दृष्टि - ग्रहों की दृष्टियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं - (१) एकपाद या एक चरण दृष्टि अर्थात् चतुर्थांश दृष्टि, (२) द्विपाद या दो चरण दृष्टि अर्थात् अर्द्धांश दृष्टि, (३) त्रिपाद या तीन चरण दृष्टि अर्थात् तीन चौथाई दृष्टि एवं (४) पूर्ण दृष्टि अर्थात् सम्पूर्ण (चार चरणों की) दृष्टि।

जन्मकुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उससे तृतीय एवं दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ एवं अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह नियम सभी ग्रहों पर लागू होता है, परन्तु इस नियम के अतिरिक्त 'मंगल' जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त चतुर्थ तथा अष्टम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार 'गुरु' जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त पंचम तथा नवम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। 'शनि' जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त तृतीय तथा दशम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। अपूर्ण दृष्टि को 'खण्ड दृष्टि' भी कहते हैं।

'राहु' तथा 'केतु' की दृष्टि अन्य ग्रहों के समान सीधी न पड़कर उल्टी पड़ती है; यथा- लग्न में बैठा हुआ 'राहु' एकादश तथा चतुर्थ भाव को एक पाद दृष्टि से देखता है।

ग्रहों के दृष्टि तथा स्थान सम्बन्ध - ग्रहों के '**दृष्टि-सम्बन्ध**' दो प्रकार के होते हैं- (१) सामान्य-दृष्टि-सम्बन्ध तथा (२) पारस्परिक-दृष्टि-सम्बन्ध। जब कोई ग्रह अपने स्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) को देखता है अथवा उस स्थान (भाव) में बैठे हुए किसी ग्रह को देखता है तो उसे '**सामान्य दृष्टि सम्बन्ध**' कहा जाता है। जब कोई दो ग्रह अलग-अलग भावों में बैठे हुए एक दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं तो उसे '**पारस्परिक-दृष्टि-सम्बन्ध**' कहा जाता है। जब कोई दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे के स्थान (भाव) में बैठे हों तो उसे उन ग्रहों का '**स्थान-सम्बन्ध**' कहा जाता है।

उक्त सामान्य अथवा पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध तथा स्थान-सम्बन्ध के कारण ग्रह अपने गुण-धर्म-स्वभाव आदि का एक दूसरे से मिलकर, जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। ऐसी स्थिति में एक ग्रह का स्वभाव दूसरे में सम्मिलित हो जाता है।

स्थानाधिपति अथवा भावेश - जन्मकुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव) में स्थित हो, उस राशि का स्वामी ग्रह ही उस स्थान (भाव) का 'स्थानाधिपति' अथवा 'भावेश' होता है, फिर वह किसी अन्य भाव में ही क्यों न बैठा हो। यथा - जन्मकुण्डली के तृतीय भाव में 'सिंह' राशि (५) हो तो उसका स्वामी या भावेश 'सूर्य' होगा, अतः सूर्य को 'तृतीयेश' कहा जायेगा। अब यदि वह सूर्य तृतीय भाव में न बैठकर दशम भाव में बैठा हो तो यह कहा जाएगा कि तृतीयेश दशम भाव में बैठा है। इसी प्रकार सब भावों में स्थित राशियों के आधार पर इनके स्वामी ग्रहों की जानकारी प्राप्त करके यह देखना चाहिए कि वे अपने ही भाव में बैठे हैं अथवा किसी अन्य भाव में हैं।

उच्च राशिगत ग्रहों का फल– जिस जातक की जन्मकुण्डली में **'सूर्य'** उच्च राशि गत हो, वह गौरवर्ण, भाग्यशाली, धीर-गंभीर, धनी, निपुण, यशस्वी, सुखी, विद्वान्, दण्डाधिकारी, सेनापति, क्रोधी तथा बलवान् होता है। **'चन्द्रमा'** उच्च राशि का हो तो जातक सुखी, यशस्वी, सम्मानित, अलंकार प्रिय, विलासी, मिष्ठान्न भोगी, लोक प्रिय, उदार हृदय, चपल स्वभाव का तथा स्त्री वियोगी होता है। **'मङ्गल'** उच्च का हो तो जातक उग्र स्वभाव, शस्त्र-विद्या में निष्णात, संग्रामजयी, साहसी, शूर-वीर, कर्तव्यनिष्ठ, बलिष्ठ, क्रोधी तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। **'बुध'** उच्च का हो तो जातक बड़ा विद्वान, अत्यन्त बुद्धिमान, लेखक, सम्पादक, सुखी, राजा अथवा राजमान्य, शत्रु-नाशक, वंश-वृद्धिकर्ता, निष्कपट, [illegible] तथा आलसी स्वभाव का होता है। **'गुरु'** उच्च का हो तो जातक सुन्दर, चतुर, विद्वान्, सुशील, सत्कर्म कर्ता, सद्गुणी, सुखी, राजप्रिय, मंत्री, शासक, ऐश्वर्यशाली, अनेक विषयों से युक्त धर्मात्मा तथा सदाचारी होता है। **'शुक्र'** उच्च का हो तो जातक सुखी, भाग्यवान, संगीत-प्रिय, कामी, विलासी, कलाप्रेमी, धन-जन का दाता, भोगी, संगीतज्ञ, कवि तथा यशस्वी होता है। **'शनि'** उच्च का हो तो जातक सुखी, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली, चतुर, साहसी, राजा, शासक, पृथ्वी पति, सहस्रों के मुखिया, दृढ़ मैत्री करने वाला, साहसी, लोक प्रसिद्ध तथा सम्मानित होता है। **'राहु'** उच्च का हो तो जातक धनी, साहसी, लम्पट, गुप्त-तेजस्वी, गुप्त विलास वाला, मायावी, शूर वीर, दुष्ट, क्रूर, पापी, तान्त्रिक तथा राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। **'केतु'** उच्च का हो तो जातक भ्रमण-प्रिय, सुखी, अधिकार-सम्पन्न, रोगों का निवारण करने वाला, मिथ्यावादी, मायावी, नीच प्रकृति का तथा गुप्त शक्तियों का ज्ञाता होता है।

मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों का फल– **'सूर्य'** मूल त्रिकोणस्थ हो तो जातक सम्मानित, धनवान, यशस्वी, सुखी, धनी तथा सब कार्यों में कुशल होता है। **'चन्द्रमा'** मूल त्रिकोणस्थ हो तो जातक

युक्त, भाग्यवान, ऐश्वर्यशाली, धनवान, भोगी तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। 'मंगल' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक साधारण धनी, स्वार्थी, क्रोधी, दुष्ट, लम्पट, खल, क्रूर, चरित्रहीन, धनी, लोहशील तथा अपयशी होता है। 'बुध' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक विद्वान, उपजापक, चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, महत्वाकांक्षी, विजयी, विनोदी, बुद्धिमान, राजमान्य तथा धनवान होता है। 'गुरु' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक विद्वान, राजमान्य, राजप्रिय, सम्मानित, चतुर बुद्धिमान, तपस्वी, सुखी, यशस्वी, उच्च अधिकारी, ग्राम अथवा मठ का स्वामी होता है। 'शुक्र' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक स्त्रियों का प्रिय, जमीदार, कृषि-भवन-वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, राजा के समान ऐश्वर्यशाली, अनेक पुरस्कारों का विजेता, प्रतापी तथा यशस्वी होता है। 'शनि' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक अस्त्र शस्त्रों का निर्माता एवं जानकार, वैज्ञानिक, कर्तव्यनिष्ठ, यान चालक, शूर वीर, साहसी, नेता, कुल-पालक, सुखी तथा धन-धान्य से पूर्ण होता है। 'राहु' मूल त्रिकोणस्थ हो तो जातक धनी, भोगी तथा वाचाल होता है। 'केतु' मूलत्रिकोणस्थ हो तो जातक सुखी, धनी, वाचाल, प्रवासी एवं गुप्त युक्तियों वाला होता है। (**टिप्पणी**- प्राचीन ज्योतिषी 'राहु' तथा केतु' का 'मूल त्रिकोण' नहीं मानते)।

स्वक्षेत्री ग्रहों का फल - 'सूर्य' स्वक्षेत्री हो तो जातक सुन्दर, सुखी, ऐश्वर्यवान, पराक्रमी, अधिकारी, विद्या उद्योग तथा परिश्रम करने वाला, भोगी, साहसी, तेजस्वी तथा आवेश उग्र स्वभाव का होता है। 'चन्द्रमा' स्वक्षेत्री हो तो जातक सुन्दर, धनी, तेजस्वी, विनम्र, भाग्यशाली, साधु-चरित्र का, दयालु, परोपकारी, मनस्वी, यशस्वी तथा सहृदय होता है। 'मङ्गल' स्वक्षेत्री हो तो जातक साहसी, बलवान, यशस्वी, कृषक, भूस्वामी अथवा सैनिक, धनी तथा चंचल स्वभाव वाला होता है। 'बुध' स्वक्षेत्री हो तो जातक विद्वान, लेखक, सम्पादक, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान तथा अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। 'गुरु' स्वक्षेत्री हो तो जातक सुखी,

शास्त्रज्ञ, वैद्य, कवि, काव्य-प्रेमी, विद्वान, आत्मबली तथा धनवान होता है। 'शुक्र' स्वक्षेत्री हो तो जातक विद्वान, गुणवान, विचारक, धनवान, स्वतन्त्र प्रकृति का, सुन्दर तथा कृषि संबंधी व्यवसाय करनेवाला होता है। 'शनि' स्वक्षेत्री हो तो जातक पराक्रमी, कष्ट-सहिष्णु, उग्र स्वभाव का, यशस्वी, लोक-प्रिय तथा सुन्दर नेत्रों वाला होता है। 'राहु' स्वक्षेत्री हो तो जातक सुन्दर, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है। 'केतु' स्वक्षेत्री हो तो जातक चौपायों, कर्मठ, कष्ट-सहिष्णु, चिन्ताशील तथा गुप्त-युक्तियों वाला होता है।

मित्र क्षेत्री ग्रहों का फल – '**सूर्य**' मित्र-क्षेत्री (अपने किसी मित्र ग्रह की राशि पर स्थित) हो तो जातक व्यवहार-कुशल, सौभाग्यशाली, दृढ़ मैत्री करने वाला, यशस्वी, दानी, शास्त्रज्ञ तथा सुप्रसिद्ध होता है। '**चन्द्रमा**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक सुखी, धनी, गुणी, चतुर तथा भाग्यवान होता है। '**मङ्गल**' मित्र क्षेत्री हो तो जातक धनी, मित्र-प्रेमी, तेजस्वी, पराक्रमी, शक्तिशाली, उग्र स्वभाव का तथा शत्रु-जयी होता है। '**बुध**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक शास्त्रज्ञ, विनोदी-स्वभाव का, कार्य दक्ष, सुन्दर रूपवान, यशस्वी, ज्ञानी तथा धनी होता है। '**गुरु**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक सुखी, बुद्धिमान, प्रसिद्ध, यशस्वी, सत्कर्म करने वाला, उन्नतिशील, एवं श्रेष्ठ लोगों द्वारा प्रशंसित होता है। '**शुक्र**' मित्र क्षेत्री हो तो जातक सुखी, गुणी, सन्तानवान, धनवान तथा बन्धु-बान्धवों को प्रिय होता है। '**शनि**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक सुखी, धनी, परान्नभोगी, प्रेमी स्वभाव का, कुकर्म करने वाला तथा कभी कभी दुःख पाने वाला होता है। '**राहु**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक धनी, सुखी, गुप्त-योजनाएं बनाने वाला, मिथ्यावादी, बुद्धिमान, पराक्रमी, साहसी तथा कुकर्मी होता है। '**केतु**' मित्र-क्षेत्री हो तो जातक उन्नतिशील, दुःखी तथा परोपकारी होता है।

शत्रु क्षेत्री ग्रहों का फल- '**सूर्य**' शत्रु-क्षेत्री (अपने किसी शत्रु ग्रह की राशि पर स्थित) हो तो जातक सदैव दुःख पाने वाला, नौकरी करने वाला, विलम्ब-पीड़ित तथा नीच स्वभाव का होता है।

'चन्द्रमा' शत्रु-क्षेत्री हो तो जातक हृदयरोगी एवं अपनी माता के कारण दुःख पाने वाला होता है। 'मङ्गल' शत्रुक्षेत्री हो तो जातक विकलाङ्ग, व्याकुल, दीन-मलीन तथा मित्रों के वश में रहने वाला होता है। 'बुध' शत्रु-क्षेत्री हो तो जातक सामान्य-सुख पाने वाला, वाचालशील, कर्तव्यहीन, दुःखी, मूर्ख, परन्तु अपनी बात का धनी होता है। 'गुरु' शत्रु क्षेत्री हो तो जातक भाग्यशाली, क्रोधी, चतुर, दयालु तथा अपनी आजीविका को स्वयं ही नष्ट करने वाला होता है। 'शुक्र' शत्रु-क्षेत्री हो तो जातक नौकरी द्वारा आजीविका प्राप्त करने वाला, दुःखी तथा दुर्बुद्धि होता है। 'शनि' शत्रु-क्षेत्री हो तो जातक किसी-न-किसी कारणवश चिन्तित एवं दुःखी बना रहने वाला, मलिन-हृदय, रोगी तथा धनहीन होता है। 'राहु' शत्रु-क्षेत्री हो तो जातक शत्रु-क्षेत्री शनि जैसा फल करता है। यदि सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव को अधिक हानि पहुँचाता है। 'केतु' शत्रु-क्षेत्री हो तो उसका फल भी राहु जैसा ही समझना चाहिए।

नीच राशिस्थ ग्रहों का फल - 'सूर्य' नीच राशि पर हो तो जातक बन्धु-सेवी, पाप-कर्म करने वाला, कटुभाषी, आत्मबलहीन, किसी पर विश्वास न करने वाला, अल्पकेशी तथा विकृत दाँतोंवाला होता है। 'चन्द्रमा' नीच राशि पर हो तो जातक नीच प्रकृति वाला, रोगी, अल्पधनी, दुर्बुद्धि, बकवादी, निद्रालु, धूर्त तथा नाचने एवं बाजा बजाने वालों की संगति करने वाला होता है। 'मङ्गल' नीच राशि पर हो तो जातक कृतघ्न, चोर, दुष्ट-हृदय वाला, रात्रि में भ्रमण करने वाला, परन्तु बुद्धिमान, गुणी तथा धनवान होता है। 'बुध' नीच राशि पर हो तो जातक अपयश प्राप्त करने वाला, बन्धु-विरोधी, चंचल-स्वभाव का, क्षुद्रबुद्धि, उग्र प्रकृति का तथा सन्तान-विहीन होता है, परन्तु उसकी पत्नी सुशीला एवं पतिव्रता होती है। 'गुरु' नीच राशि पर हो तो जातक अपयशी, अपवादी, दुष्ट होने के साथ ही सुखभोगी, अनेक लोगों का भरण-पोषण करने वाला, परदेशवासी, कलह-प्रिय तथा सुन्दर-स्त्री से युक्त भी होता है। 'शुक्र' नीच राशि पर हो तो

जातक किसी-न-किसी कारण से चिन्तित, दुःखी बना रहने वाला, विनोदी, कौतुकी, चतुर, पण्डित तथा अनेक कलाओं में कुशल होता है। 'शनि' नीच राशि पर हो तो जातक स्वजन-विनाशक, बन्धु-बान्धवों से दुःखी, स्वेच्छाचारी, दुष्ट प्रकृति वाला, उच्च अधिकारी, ग्राम आदि का अधिपति, लुब्ध, दुःखी तथा चंचल स्वभाव का होता है। सन्तान से दुःख एवं पीड़ा भी भोगता है। 'राहु' नीच राशि पर हो तो जातक कुरूप, पापी, दुर्बुद्धि, बन्धु-बान्धवों से हीन, खल तथा दुष्ट हृदय वाला होता है। 'केतु' नीच राशि पर हो तो जातक सुशील, दुःखी, काना, कामी, शत्रुजयी तथा स्त्री-विहीन होता है।

विशिष्ट-ज्ञातव्य — (1) उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री अथवा उच्च क्षेत्र एवं स्वक्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह जिस स्थान पर बैठे होते हैं अथवा जहाँ दृष्टि डालते हैं, उस स्थान के फल (भाव) की वृद्धि करते हैं। (2) दूसरे तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं। विशेषतः ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ ग्रह विशेष लाभप्रद होता है। (3) तृतीय भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की वृद्धि करते हैं। (4) प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव में बैठे हुए ग्रह प्रायः उत्तम फल देते हैं। (5) छठे, आठवें तथा बारहवें भाव में क्रूर-ग्रहों — शनि तथा केतु का बैठना शक्ति एवं शुभ फल देने वाला होता है। (6) आठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि अवश्य पहुँचाते हैं। (7) जो ग्रह जिस भाव का 'कारक' माना गया है, वह यदि अकेला उसी भाव में बैठा हो तो भाव को बिगाड़ देता है अर्थात् अशुभ फल देता है। (8) जिस भाव का स्वामी उच्च राशिस्थ, स्वक्षेत्री, मित्र क्षेत्री अथवा मूल-त्रिकोण स्थित होता है, उस भाव का शुभ फल प्राप्त होता है। (9) जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पापग्रह बैठा हो, उसके शुभ फल की हानि पहुँचती है। (10) जो ग्रह सूर्य के साथ अथवा उसके निकटवर्ती अंशों

पर होता है, उसे 'पूर्ण अस्त' माना जाता है। जो ग्रह सूर्य से ८ अंश की दूरी पर होता है, उसे 'अल्प अस्त' माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य से १५ अंश की दूरी पर होता है, उसे 'पूर्ण उदित' माना जाता है। (११) 'पूर्ण उदित' ग्रह पूर्ण प्रभाव देता है, 'अल्प अस्त ग्रह' अल्प प्रभाव देता है तथा 'पूर्ण अस्त' ग्रह प्रभावहीन होता है। (१२) जिस भाव का अधिपति किसी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भाव में शुभग्रह बैठा हो, अथवा जिस भाव को शुभग्रह देख रहा हो, उसका फल शुभ होता है। (१३) जिस भाव में कोई पाप ग्रह बैठा हो, अथवा उस भाव के अधिपति के साथ कोई पापग्रह बैठा हो अथवा उस भाव पर भाव के अधिपति पर पापग्रह की दृष्टि पड़ रही हो, तो उसका फल अशुभ होता है। (१४) किसी भाव का स्वामी पापग्रह हो और वह लग्न से तृतीय स्थान में बैठा हो तो शुभ फल देता है, परन्तु किसी भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह उस भाव से तीसरे स्थान पर बैठा हो तो मध्यम फल देता है। (१५) जिस भाव में उसका अधिपति ग्रह अथवा शुक्र, बुध या गुरु में से कोई बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह से संयुक्त अथवा दृष्ट न हो, तो वह शुभ फल देने वाला सिद्ध होता है। (१६) आठवें भाव में जो राशि हो, उसका स्वामी जिस भाव में बैठा हो, उसे बिगाड़ देता है। (१७) राहु, केतु जिस भाव में बैठते हैं, उसे बिगाड़ देते हैं। (१८) चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु – ये सब क्रमशः एक दूसरे से अधिक ग्रह शुभ फल हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों तो अधिक शुभ फल देते हैं और यदि पापग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु) की राशि में बैठे हों तो अल्प शुभ-फल देते हैं। स्मरणीय है कि फल का विचार करते समय केतु को प्रायः पापग्रह माना जाता है, परन्तु वैसे केतु की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है। (१९) सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु – ये सब क्रमशः एक दूसरे से अधिक पापग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों तो अधिक शुभ-फल देते हैं और यदि ये अपने मित्र की राशि, उच्च राशि अथवा किसी शुभ ग्रह की राशि में बैठे हों, तो न्यूनमात्रा में

अशुभ-फल देते हैं। (२०) राहु सिंह में अशुभ फल देता है, केतु वृष में शुभ फल देता है तथा केतु सिंह में अशुभ फल देता है, राहु वृष में शुभ फल देता है — यह इन दोनों ग्रहों की विशेषता है। (२१) द्वितीय, पंचम अथवा सप्तम भाव में गुरु अकेला बैठा हो, तो वह जातक के स्त्री-पुत्र तथा धन के लिए सदैव अनिष्टकर सिद्ध होता है। (२२) छठे भाव में बैठा हुआ गुरु शत्रु-नाशक होता है। (२३) आठवें भाव में बैठा हुआ शनि दीर्घायु देता है। (२३) दसवें भाव में बैठा हुआ भाग्यवृद्धि करता है। (२४) पहले, चौथे, पाँचवें, नवें तथा दसवें भाव में बैठा हुआ गुरु उस भाव के सब दोषों को नष्ट कर देता है। (२५) ग्यारहवें भाव में राहु हो तथा चन्द्रमा शुभ लग्न में हो तो तमाम दोष नष्ट हो जाते हैं। (२६) पहले, चौथे, पाँचवें, नवें तथा दसवें भाव में 'बुध' हो तो वह सौ दोषों को दूर करता है। इन्हीं भावों में 'शुक्र' हो तो दो सौ दोषों को तथा 'गुरु' हो तो एक लाख दोषों को दूर कर देता है। (२७) लग्न का स्वामी (लग्नेश) यदि चौथे, दसवें अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो वह अनेक दोषों को दूर कर देता है। (२८) एक ही भाव में कई ग्रहों की युति (स्थिति) हो तो उसके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है। ग्रहों की युति के फलादेश के सम्बन्ध में आगे लिखा जाएगा, उसे देखें। (२९) सामान्यतः पुरुष तथा स्त्रियों की जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के फलादेश एक जैसा ही प्रभाव डालते हैं। अतः फलादेश में जहाँ स्त्री शब्द आया हो, वहाँ यदि स्त्री की कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा रहा हो तो 'पुरुष' समझना चाहिए और पुरुष की कुण्डली में स्त्री समझना चाहिए। कुछ विशेष परिस्थितियों में कुछ ग्रह पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के ऊपर भिन्न प्रकार का प्रभाव भी प्रदर्शित करते हैं। (३०) जन्म-कुण्डली जन्मकालीन ग्रह-स्थिति की परिचायक होती है तथा उन ग्रहों की स्थिति का जातक के जीवन पर 'स्थायी-प्रभाव' पड़ता रहता है, परन्तु आकाश मण्डल में विभिन्न ग्रह निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं, जिनका तात्कालिक 'अस्थायी-प्रभाव' भी जातक के दैनिक-जीवन पर पड़ता रहता है। अतः स्थायी प्रभाव के साथ ही ग्रहों के अस्थायी प्रभाव का विचार करना भी आवश्यक है।

(३१) सम्मिलित-परिवार के सभी सदस्यों की जन्मकुण्डली के ग्रहों का थोड़ा-बहुत प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता रहता है। अतः सम्मिलित परिवार के किसी सदस्य के विषय में ग्रहों का फलादेश ज्ञात करते समय यदि अन्य परिवार के अन्य सदस्यों की जन्मकुण्डलियों का भी सम्यक् अध्ययन करके ही निष्कर्ष निकालना उचित होता है।

ग्रहों की युति का फल - जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में, विभिन्न ग्रहों की युति का फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए -

दो ग्रहों की युति का फल - (१) 'सूर्य' और 'चन्द्रमा' की युति हो तो जातक दुष्ट, कपटी, नम्र, अभिमानी, अविनयी, क्षुद्र-हृदय, कार्य-कुशल, पराक्रमी, विनयहीन, स्त्री-वशी तथा पत्थरों का व्यवसाय करने वाला होता है। (२) 'सूर्य' और 'मंगल' की युति हो तो जातक तेजस्वी, क्रोधी, मिथ्यावादी, मूर्ख, बलवान, कलह-प्रिय तथा धर्म-कर्म एवं धन-हीन होता है और वह अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है। (३) 'सूर्य' और 'बुध' की युति हो तो जातक यशस्वी, प्रियवादी, श्रेष्ठ विद्वान्, बुद्धिमान, मंत्री, राजा का सेवक, वेदज्ञ, गीत-वाद्य में कुशल, कवि, सेवा-कर्म करने में पटु, स्थिर धनी, यशस्वी तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है। (४) 'सूर्य' और 'गुरु' की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, चपलता, धनवान्, चतुर, परोपकारी, पौरोहित्य-कर्म करने में कुशल, प्रसिद्ध, मित्रवान्, राजमान्य तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। (५) 'सूर्य' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक संगीत, वाद्य एवं शस्त्र विद्या में निपुण, बुद्धिमान, नाटककार, कार्यक्षम, मित्रवान, बलवान, तीक्ष्णदृष्टि तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है। (६) 'सूर्य' और 'शनि' की युति हो तो जातक विद्वान्, गुणवान्, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, धर्मात्मा, धातु का काम करने में कुशल तथा वृद्धों के समान आचरण करने वाला होता है। (७) 'चन्द्रमा' और 'मंगल' की युति हो तो जातक युद्ध-कुशल, प्रतापी, आत्महीन, कलह-प्रेमी, धातु-शिल्प में कुशल, माता का शत्रु, रक्त-विकार का रोगी तथा व्यवसाय द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। (८) 'चन्द्रमा'

और **'बुध'** की युति हो तो जातक कवि, युक्त, गुणी, प्रियवादी, दयालु, हँसमुख, अधिक बोलने वाला, विषयासक्त, कुल-धर्म का पालक तथा दुर्बल-शरीर वाला होता है। (९) **'चन्द्रमा'** और **'गुरु'** की युति हो तो जातक सुशील, विनम्र, धार्मिक, परोपकारी, सच्चा मित्र, देव-ब्राह्मण-भक्त, भाई-बहिनों से स्नेह रखने वाला, धनी तथा सुख-मान वाला होता है। (१०) **'चन्द्रमा'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक झगड़ालू, व्यसनी, सुगन्ध-प्रिय, वस्त्र-कार्य में कुशल, अनेक कार्यों का ज्ञाता तथा अच्छे वस्त्राभूषणों वाला होता है। (११) **'चन्द्रमा'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक आचार-हीन, सत्कार्य-हीन, अल्प-सन्ततिवान, पर-स्त्री-गामी, वृद्धा स्त्री में आसक्त, हाथी-घोड़े रखने वाला एवं व्यवसायी तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है। (१२) **'मंगल'** और **'बुध'** की युति हो तो जातक कुरूप, कृपण, धनहीन, मल्लविद्या में कुशल, लोहे अथवा सोने का व्यवसाय करने वाला, बहु-स्त्रीगामी, विधवा से विवाह करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है। (१३) **'मंगल'** और **'गुरु'** की युति हो तो जातक मेधावी, शास्त्रज्ञ, मन्त्रज्ञ, वाक्पटु, शिल्प-निपुण, शीलवान, चतुर, घोड़ों का प्रेमी, सेना का अधिकारी, प्रधान अथवा उच्चपद पाने वाला होता है। (१४) **'मंगल'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक गुणी, गणितज्ञ, प्रपंची, मिथ्यावादी, परस्त्रीगामी, अहंकारी, शठ, पापी, सबसे शत्रुता रखने वाला, तथापि सबसे आदर पाने वाला होता है। (१५) **'मंगल'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक ऐन्द्रजालिक, जादूगर, कलह-प्रिय, चोर, मिथ्यावादी, शस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, मित्र-हीन, सुख-हीन, अपयशी, स्व-धर्म त्याग कर पर-धर्म ग्रहण करने वाला, अनुचित बात कहने वाला तथा विष अथवा मदिरा का निर्माता किंवा विक्रेता होता है। (१६) **'बुध'** और **'गुरु'** की युति हो तो जातक धैर्यवान्, पण्डित, नीतिज्ञ, विलासी, उदार, गुणी, सुगन्ध-प्रिय तथा नृत्य-वाद्य में कुशल होता है। (१७) **'बुध'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक वेदज्ञ, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, प्रतापी, सुखी, शिल्पज्ञ, चतुर, सुरूप, आस्तिक, धनी

तथा अनेक लोगों पर हुकूमत करने वाला होता है। (१८) 'बुध' और 'शनि' की युति हो तो जातक चंचल-चित्त वाला, कलह-प्रिय, उद्योगहीन, अनुचित बोलने वाला, भ्रमणशील, लिपि-कला आदि में कुशल तथा दुर्बल शरीर वाला होता है। (१९) 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक विद्वान्, गुणवान, धनवान, शास्त्रज्ञ, शास्त्रार्थ करने वाला, अत्यन्त सुखी, यशस्वी, धनी तथा सुन्दरी स्त्री, पुत्र एवं मित्र आदि से सुखी होता है। (२०) 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक शूर-वीर, यशस्वी, धनी, प्रधान सेनापति, कला-कुशल तथा स्त्री द्वारा इच्छित सुख पाने वाला होता है। (२१) 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक चंचल बुद्धि वाला, आलसी, लवण तथा अम्लरस का प्रेमी, उन्नत प्रकृति वाला, शिल्प-आलेखन में प्रवीण तथा दारुण संग्राम करने वाला होता है।

तीन ग्रहों की युति का फल - (१) 'सूर्य' 'चन्द्र' और 'मंगल' की युति हो तो जातक शूर-वीर, अश्व-विद्या में कुशल, रक्त-विकार से ग्रस्त, दया-हीन तथा पन्ना आदि के निर्माण में कुशल होता है। (२) 'सूर्य', 'चन्द्र' और 'बुध' की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान, प्रियवादी, प्रतापी, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, वाक्पटु, शास्त्रज्ञ, कलाकार, सभा-प्रिय तथा राजा का सेवक होता है। (३) 'सूर्य', 'चन्द्र' और 'गुरु' की युति हो तो जातक स्थिर-बुद्धि, धार्मिक, चंचल स्वभाव का, चतुर, धूर्त, पर्यटन-प्रेमी, विद्वान्, सेवा-कुशल, देव-ब्राह्मण-पूजक तथा राजा का मंत्री होता है। (४) 'सूर्य', 'चन्द्र' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक सुन्दर, परम तेजस्वी, अत्यन्त प्रतापी, भाग्यवान, व्यसनी, शत्रुसंहर्ता, परधनापहारी, धर्म में प्रीति न रखने वाला तथा दन्त-विकारी होता है। (५) 'सूर्य', 'चन्द्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक धर्म-पालक, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, घोड़े-हाथी पालने वाला, सर्व परिश्रम करने वाला, धातु-कर्म में कुशल, अत्यन्त धूर्त, शील-रहित, वेश्या-प्रेमी तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

(६) 'सूर्य', 'मंगल' और 'बुध' की युति हो तो जातक साहसी, प्रबल पराक्रमी, कठोर-प्रकृति का, निर्लज्ज, सलाह देने में चतुर तथा धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के सुख से युक्त होता है। (७) 'सूर्य', 'मंगल' और 'गुरु' की युति हो तो जातक उदार-हृदय, प्रियवादी, सत्यवादी, उग्र-प्रकृति, नीतिज्ञ, सेनापति, राजा का मंत्री, सब कार्यों को करने में कुशल, श्रेष्ठ वक्ता तथा धनी होता है। (८) 'सूर्य', 'मंगल' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक सुन्दर, अत्यन्त चतुर, दयालु, गुणी, धनी, विनम्र, अधिक बोलने वाला, सुशील अथवा कुशील, कार्य-कुशल, नेत्र-रोगी, विख्यात तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। (९) 'सूर्य', 'मंगल' और 'शनि' की युति हो तो जातक मूर्ख, निर्धन, स्वजनों द्वारा तिरस्कृत, विकल, बन्धु-विहीन, कलही, व्याकुल, रोगी, रक्त रोगों वाला तथा धन एवं पशुओं से रहित होता है। (१०) 'सूर्य', 'बुध' और 'गुरु' की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, शास्त्रप्रिय, लेखक, चतुर, निग्रही, अत्यन्त धनी तथा नेत्र-रोगी होता है। (११) 'सूर्य', 'बुध' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक माता, पिता एवं गुरुजनों द्वारा तिरस्कृत, स्त्री के कारण दुःखी, आचार-विहीन, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि तथा परदेश वासी होता है। (१२) 'सूर्य', 'बुध' और 'शनि' की युति हो तो जातक दुराचारी, परम दुष्ट, नपुंसकों जैसे स्वभाव का, बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, शत्रु द्वारा पराजित तथा नीच मनुष्यों का साथी होता है। (१३) 'सूर्य', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक पण्डित, शूर-वीर, परोपकारी, अल्पभाषी, धनहीन, नेत्र-रोगी, दुष्ट-स्वभाव का, पराये कामों में अधिक रुचि रखने वाला, तथा राजा का आश्रित होता है। (१४) 'सूर्य', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक सुन्दर, निर्भय, प्रगल्भ, विचारक, बन्धु-हितैषी, बहुमित्रवान्, मितव्ययी तथा राजा का प्रिय होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार राजा से द्वेष रखने वाला होता है। (१५) 'सूर्य', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक दुराचारी, बन्धु-विहीन, कुष्ठ-रोगी, कला-विहीन, कुकर्मी

सम्मान हीन तथा शत्रुओं से भयभीत होता है। (१६) 'चन्द्र, मंगल' और 'बुध' की युति हो तो जातक पापी, दुराचारी, अपमानित, अत्यन्त दीन, नीचों का संगी, आजीविका-विहीन तथा बन्धु-बान्धवों से हीन होता है। (१७) 'चन्द्र', 'मंगल' और 'गुरु' की युति हो तो जातक सुन्दर, बलवान, क्रोधी, अपहरण कर्ता, नारियों में आसक्त, पर-स्त्री गामी, स्त्रियों को प्रिय, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा फोड़ा-फुंसी आदि विकारों से ग्रस्त रहता है। (१८) 'चन्द्र', 'मंगल' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक चंचल स्वभाव का, निर्लज्ज, भ्रमणशील, कुशील व शीत से डरने वाला होता है। इसकी माता तथा पत्नी दुष्ट स्वभाव की होती हैं, परन्तु पुत्र शीलवान् होता है। (१९) 'चन्द्र, मंगल' और 'शनि' की युति हो तो जातक कुटिल, कलह-प्रिय, लोक-द्वेषी, क्रूर स्वभाव का तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है। इसकी माता का बाल्यावस्था में ही देहावसान हो जाता है। (२०) 'चन्द्र', 'बुध' और 'गुरु' की युति हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, धनी, यशस्वी, तेजस्वी, अत्यन्त प्रसिद्ध, कुशल वक्ता, श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला तथा स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के सुख से युक्त होता है। (२१) 'चन्द्र', 'बुध' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान, ईर्ष्यालु, दुराचारी, धन का लोभी, नीच-कर्म द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला तथा शास्त्र के विषय में विशेष श्रद्धालु होता है। (२२) 'चन्द्र', 'बुध' और 'शनि' की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, प्रियवादी, कला-कुशल, पण्डित, विनम्र, विश्व प्रसिद्ध, ग्राम का अधिपति, राजाओं को प्रिय तथा लम्बे शरीर वाला होता है। (२३) 'चन्द्र', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक विद्वान, मन्त्रज्ञ, चतुर, कला-कुशल, राजाओं को प्रिय तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। इसकी माता अत्यन्त सुशील होती है। (२४) 'चन्द्र', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक अत्यन्त चतुर, अपहरण-कुशल, स्त्रियों को प्रिय, कामातुर, राजा द्वारा सम्मानित, उच्च अधिकारी तथा स्वस्थ शरीर

वाला होता है। (२५) 'चन्द्र', **'शुक्र'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक वेदज्ञ, धर्मात्मा, श्रेष्ठ पुरोहित, चिन्तक, लेखक तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। (२६) **'मंगल'**, **'बुध'** और **'गुरु'** की युति हो तो जातक परोपकारी, संगीतज्ञ, श्रेष्ठ कवि, स्त्रियों को प्रिय, पर-हित-साधक तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। (२७) **'मंगल'**, **'बुध'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर का, बहुत बोलने वाला, हीन-कुल में उत्पन्न, अंग-हीन, अत्यन्त उत्साही, ढीठ, धनी, चंचल तथा संतोषी-प्रकृति का होता है। (२८) **'मंगल'**, **'बुध'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर तथा सुन्दर नेत्रों वाला, नेत्र-रोगी, मुख-रोगी, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, डरपोक, सहिष्णु, हास्य-प्रिय, वन में रहने की इच्छा करने वाला, परदेशवासी तथा दूत कर्म करने वाला होता है। (२९) **'मंगल'**, **'गुरु'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक सुखी, सबको प्रसन्नता देने वाला, राजा का प्रिय, श्रेष्ठ लोगों द्वारा सम्मानित तथा उत्तम स्त्री-पुत्रों वाला होता है। (30) **मंगल, गुरु** और **शनि** की युति हो तो जातक कृश-शरीर का, निर्धन, कुकर्मी, दुराचारी, मित्रों द्वारा निन्दित, परन्तु राजा का कृपा-पात्र होता है। (३१) **मंगल, शुक्र** और **शनि** की युति हो तो जातक श्रेष्ठ स्वभाव का, परदेशवासी, सदैव दुःख भोगने वाला तथा स्त्री-सुख से रहित होता है। (३२) **'बुध'**, **'गुरु'** और **'शुक्र'** की युति हो तो जातक सत्यवादी, परम यशस्वी, सदैव प्रसन्न रहने वाला, शत्रुहन्ता, सुन्दर तथा राजाद्वारा सम्मानित होता है। (३३) **'बुध'**, **'गुरु'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, शीलवान, भाग्यवान, धैर्यवान, पण्डित, सुखी, श्रेष्ठ वस्त्राभूषणों वाला एवं श्रेष्ठ स्त्री का पति होता है। (३४) **'बुध'**, **'शुक्र'** और **'शनि'** की युति हो तो जातक चुगलखोर, धूर्त, मिथ्यावादी, धैर्यवान, दुराचारी, पर-स्त्री-गामी, दूर देशों की यात्रा करने वाला, स्वदेश प्रेमी, कलाओं का ज्ञाता तथा नीच लोगों के साथ रहने वाला

होता है। (३५) गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेकर भी धनी, यशस्वी, सुशील, कीर्तिवान, भूस्वामी, राजा जैसा प्रतापी, निर्मल हृदय वाला तथा अत्यन्त यशस्वी होता है।

चार ग्रहों की युति का फल (१) सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक चुगलखोर, मायावी, बकवादी, चोर, लेखक, चित्रकार, भार्या पर अधिकार रखने वाला, प्रत्येक कार्य करने में कुशल तथा सुख-भोगी होता है। (२) सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्पज्ञ, बलवान, कार्य-कुशल, धनवान, नीतिज्ञ, तेजस्वी, शोक-रहित, बड़े नेत्रों वाला तथा स्वर्णतुल्य कान्तिमान शरीर वाला होता है। (३) सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक विद्वान, धनवान, वाक्पटु, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, स्त्री-पुत्र के सुख से सम्पन्न, वाणी से सम्बन्धित कार्यों (वकालत, वक्तृता, अध्यापन) आदि कार्यों द्वारा आजीविका अर्जित करने वाला होता है। मतान्तर से-ऐसा जातक मलिन, परस्त्रीगामी, खोटे स्वभाव का, चोर तथा धन-हीन होता है। (४) सूर्य, चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक धनहीन, दुर्बल, पीड़ित, दुर्बल शरीर वाला, बौना अथवा विषम कद वाला एवं भिक्षा द्वारा आजीविका प्राप्त करने वाला होता है। (५) सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक तेजस्वी, नीतिज्ञ, शिल्पज्ञ, शोक-रहित, अत्यन्त धनी, रोग-रहित, गौरवर्ण तथा सुन्दर नेत्रों वाला होता है। (६) सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक छोटे कद वाला, मन में व्याकुल रहने वाला, सुन्दर, सुवक्ता, कान्तिमान तथा राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला होता है। (७) सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक निर्धन, पीड़ित, कुटुम्ब-हीन, विकलांग, नेत्ररोगी, माता-पिता से हीन तथा भिक्षुक होता है। (८) सूर्य, चन्द्र, गुरु तथा शुक्र की युति हो तो जातक सुखी, गुणी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा जल, मृग एवं वन से प्रीति रखने वाला प्रकृति-प्रेमी होता है।

(९) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक यशस्वी, धनी, प्रतापी, सर्वत्र सम्मानित, सुन्दर नेत्रों वाला, पतले शरीर का, स्त्रियों को प्रिय तथा अनेक पुत्रों वाला होता है। (१०) सूर्य, चन्द्र, शुक्र तथा शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला, तथा-दि लोगों का नेतृत्व करने वाला होता है। (११) 'सूर्य', 'मंगल', 'बुध' और 'गुरु' की युति हो तो जातक शूर-वीर, शस्त्रधारी, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, पर-स्त्रीगामी एवं व्रत-विरहित अथवा व्रत का व्यवसायी होता है। (१२) 'सूर्य', 'मंगल', 'बुध' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक चोर, दुर्जन, निर्लज्ज, पर-स्त्रीगामी, विषम अंगों वाला, परन्तु देव-ब्राह्मण-पूजक एवं सदैव विजय पाने वाला होता है। (१३) 'सूर्य', 'मंगल', 'बुध' और 'शनि' की युति हो तो जातक प्रतापी, कवि, योद्धा, मन्त्री अथवा राजा, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता, नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला तथा नीच आचरण करने वाला होता है। (१४) 'सूर्य', 'मंगल', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, यशस्वी, नीतिज्ञ, मनुष्यों का पालक, सुन्दर शरीर वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है। (१५) सूर्य, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दयालु, धनी, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध सेनापति, मन्त्री, राजा द्वारा पूजित, अन्न का संचय करने वाला तथा सब कार्यों में सफलता पाने वाला होता है। (१६) 'सूर्य', 'मंगल', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक दुराचारी, कटुभाषी, नीचकर्म करने वाला, मूर्ख, जन-द्रोही, मांसाहारी तथा नीच जाति के मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है। (१७) 'सूर्य', 'बुध', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक बुद्धिमान, धनवान, सुखी, प्रसन्न, मानी, विनयी, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त तथा सब कार्यों में सफलता पाने वाला होता है। (१८) 'सूर्य', 'बुध', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला, नपुंसक-तुल्य

तथा अनेक भाइयों वाला होता है। (१९) 'सूर्य', 'बुध', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, पण्डित, सुवक्ता, पवित्र-हृदय, उच्च विचारों वाला, भाग्यशाली, सुखी, भाइयों द्वारा सम्मानित, मित्रवान तथा स्त्री-पुत्रादि से सुखी होता है। (२०) 'सूर्य', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक सुखी, कवि, विद्वान्, करुणामय, राजा का प्रिय, परन्तु परम कृपण होता है। (२१) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध' और 'गुरु' की युति हो तो जातक परम विद्वान, बुद्धिमान, सत्यवादी, शास्त्रज्ञ, लोक-पूजित, सुखी-जीवन बिताने वाला, मन्त्रज्ञ तथा राजा का कृपापात्र होता है। (२२) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक झगड़ालू, नीच-प्रकृति का, बन्धु-विद्वेषी, मातृ-द्रोही, वेद शास्त्र-निंदक, नींद में समय बिताने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम रखने वाला होता है। ऐसे जातक की पत्नी कुलटा होती है। (२३) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध' और 'शनि' की युति हो तो जातक सुखी, साहसी, स्त्री-पुत्र तथा मित्रादि से युक्त, वीर-वंश में जन्म लेने वाला तथा दो माताओं वाला होता है। (२४) 'चन्द्र', 'मंगल', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक धनी, शूर-वीर, पण्डित, सत्यवादी, दयालु, साहसी, नीतिज्ञ, पुत्र वाला, अङ्गहीन तथा व्याकुल रहने वाला होता है। (२५) 'चन्द्र', 'मंगल', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक धनी, शूर-वीर, सत्यवादी, पंडित, दयालु, उन्मादी, वचन-पालक, राजा द्वारा सम्मानित, परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है। (२६) 'चन्द्र', 'मंगल', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक कुल-वंचक, मतिहीन, सबका शत्रु, दरिद्र, उद्वेगी, जुआरी, मलिन, सर्प जैसी आँखों वाला, मांस-मद्य-सेवी तथा वीर-वंश में जन्म लेकर भी कायर स्वभाव का होता है। इसकी स्त्री भी कुलटा होती है। (२७) 'चन्द्र', 'गुरु', 'शुक्र' और 'बुध' की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, दयालु, दानी, चतुर, पंडित, शास्त्रज्ञ, धनी, शत्रु-विहीन तथा माता-पिता से रहित होता है। (२८) 'चन्द्र', 'गुरु', 'शनि' और 'बुध' की युति हो तो जातक

कवि, ज्ञानी, यशस्वी, धनिक, इन्द्रियजित, बन्धु-प्रिय, तेजस्वी, राज्य मन्त्री तथा सर्वप्रिय होता है। (२९) '**चन्द्र**', '**बुध**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक धनी, गाँव का स्वामी, राजा द्वारा सम्मानित, अनेक पत्नियों वाला तथा नेत्र-रोगी होता है। (30) '**चन्द्र**', '**गुरु**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक पंडित, परोपकारी, नरश्रेष्ठ, पर-स्त्री-गामी तथा धन-हीन होता है। इसकी पत्नी मोटे शरीर वाली होती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा जातक स्थूल शरीर वाला, धनिक तथा चतुर होता है। (३१) '**मंगल**', '**बुध**', '**गुरु**' और '**शुक्र**' की युति हो तो जातक सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ, लोकप्रिय तथा अपनी स्त्री से कलह करने वाला होता है। (३२) '**मंगल**', '**बुध**', '**गुरु**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक सत्यवादी, पवित्र-हृदय, विनम्र, धैर्यवान्, विद्वान्, सुवक्ता, शूर-वीर, परन्तु धन-हीन होता है। (३३) '**मंगल**', '**बुध**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक मधुर-भाषी, मल्लविद्या में निपुण, लोक-प्रसिद्ध, पुष्ट-शरीर का तथा कुत्तों को पालने वाला होता है। (३४) '**मंगल**', '**गुरु**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक विजयी, मानी, विनम्र, साहसी, विद्वान, धनी, धूर्त, पर-स्त्रीगामी तथा श्रेष्ठ मनुष्यों को प्रिय होता है। (३५) '**बुध**', '**गुरु**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता, शस्त्र-विद्या का प्रेमी तथा विषय-भोग में लीन रहने वाला कामी होता है।

<u>पाँच ग्रहों की युति का फल</u> – (१) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**बुध**' और '**गुरु**' की युति हो तो जातक दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है। इसकी पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा जातक स्त्री-हीन भी हो सकता है। (२) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**बुध**' और '**शुक्र**' की युति हो तो जातक मिथ्यावादी, दयालु स्वभाव का, बन्धुहीन, दूसरों का काम करने वाला तथा हिजड़ों जैसी आकृति का होता है। (३) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**बुध**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक चोर, सदैव दुःखी, बन्धन (जेल) पाने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से रहित प्रायः

अल्पायु होता है। (४) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**गुरु**' और '**शुक्र**' की युति हो तो जातक दुःखी, नेत्र-रोगी अथवा जन्मान्ध, माता-पिता के सुख से रहित, संगीतज्ञ तथा हाथी के प्रेम करने वाला होता है। (५) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**गुरु**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक कामी, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक, दूसरों को दुःख देने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, सज्जनों का शत्रु तथा वृक्ष जैसी आकृति वाला होता है। (६) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**मंगल**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक धनहीन, अधर्मी, सबका द्वेषी, पर-स्त्रीगामी तथा आचार-विचार-हीन होता है। (७) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**बुध**', '**गुरु**' और '**शुक्र**' की युति हो तो जातक धनी, यशस्वी, चतुर, राजाद्वारा सम्मानित, न्यायाधीश, राज्यमंत्री तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है। (८) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**बुध**', '**गुरु**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक ऋणग्रस्त, कायर, उन्मादी, उग्र स्वभावी, वेश्यागामी, दुष्ट कर्म करने वाला, पराल भोजी, धूर्त तथा अपने मित्रों के कारण दुःख पाने वाला होता है। (९) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**बुध**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक लम्बे कद तथा अधिक रोम कूप वाला, उत्साही, रोगी-शरीर वाला एवं धन, सन्तान, मित्र तथा सुखों से हीन होता है। (१०) '**सूर्य**', '**चन्द्र**', '**गुरु**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक पण्डित, समर्थ, निर्भय, चंचल, ऐन्द्रजालिक, सुवक्ता, पापी, वाग्छल में पटु, स्त्रियों को प्रिय तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है। (११) '**सूर्य**', '**मंगल**', '**बुध**', '**गुरु**' और '**शुक्र**' की युति हो तो जातक धनी, समर्थ, सुखी, स्वच्छ, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त, बहुत थोड़े रखने वाला, सेनापति एवं राजा का प्रिय होता है। (१२) '**सूर्य**', '**मंगल**', '**बुध**', '**गुरु**' तथा '**शनि**' की युति हो तो जातक भिक्षुक, अल्पधनी, जर्जर, मलिन, रोगी, जड़, पुत्रवान् तथा उद्विग्न चित्तवाला होता है। (१३) '**सूर्य**', '**मंगल**', '**बुध**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक दुःखी, स्थान-भ्रष्ट, कुकुष्ठित, दरिद्र, रोगी तथा शत्रु-पीड़ित होता है। (१४) '**सूर्य**', '**मंगल**', '**गुरु**', '**शुक्र**' और '**शनि**' की युति हो तो जातक विद्वान, विद्यावान, तपस्वी, धनी,

भाई-बन्धुओं से पृथक तथा धातु, पत्थर अथवा रसायन के काम में प्रवीण प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति होता है। (१५) 'सूर्य', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो, तो जातक दयालु, धर्मात्मा, धनी, बलवान, सुवक्ता, सेनापति, मित्रों का प्रिय तथा माता-पिता एवं गुरु का भक्त होता है। (१६) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो, तो जातक विद्वान, धनवान, सज्जन, निष्पाप, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान एवं सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। (१७) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक मलिन, पराई-सेवा करने वाला तथा अन्त में भीख माँगने वाला होता है। इसे 'तौंधी' रोग भी हो सकता है। (१८) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, निर्धन, दुःखी, दुष्ट-कर्म करने वाला, पर-निन्दक, कठोर-हृदय, नपुंसक तथा अपने मित्रों से भी शत्रुता रखने वाला होता है। (१९) 'चन्द्र', 'मंगल', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक मलिन, पराई-सेवा करने वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, दुष्ट स्वभाव का, परन्तु विद्वान होता है। इसके अनेक मित्र तथा अनेक शत्रु होते हैं। (२०) 'चन्द्र', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक धनी, सुखी, अत्यन्त गुणवान, विद्वान, यशस्वी, न्यायाधीश, लोकपूजित तथा राजा का मंत्री होता है। (२१) 'मंगल', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक चंचल, आलसी, धनी, सुखी, लोकप्रिय, दीर्घायु, पवित्र-वक्ता, अधिक सोने वाला तथा तामसी स्वभाव का होता है।

छै ग्रहों की युति का फल- (१) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु' और 'शुक्र' की युति हो तो जातक यशस्वी, भाग्यवान, भोगी, धनवान, विद्वान, धर्मात्मा, अल्पभाषी तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। (२) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु' और 'शनि' की युति हो तो जातक दयालु, परोपकारी, चंचल-चित्त, शुद्ध अन्तःकरण वाला, विवाद में विजय पाने वाला तथा वनों में विचरण करने वाला होता है।

(3) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक चिन्तित, प्रत्येक बात में निंदा करने वाला, संग्राम अथवा विवाद में विजय पाने वाला, वन-पर्वतों में विचरण करने वाला तथा हिंसक स्वभाव वाला होता है। (4) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'मंगल', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी, लोभी, क्रुद्ध, स्त्रियों को प्रिय, मन्दबुद्धि, राजाओं का कृपापात्र तथा युद्ध करने के लिए तत्पर रहने वाला होता है। (5) 'सूर्य', 'चन्द्र', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक धर्मज्ञ, वेदज्ञ, दयालु, क्षमाशील, स्त्री-विहीन, राज-मन्त्री, राजा द्वारा सम्मानित तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। (6) 'सूर्य', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक क्षमाशील, ब्रह्मविद्या का वेत्ता, भिक्षुक, वनवासी, तीर्थयात्री एवं धन, स्त्री, पुत्रादि से विहीन होता है। (7) 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि' की युति हो तो जातक धनी, सुखी, गुणी, यशस्वी, पवित्र हृदय वाला, आलसी, अनेक पत्नियों वाला, राजमान्य अथवा राजमन्त्री होता है।

सात ग्रहों की युति का फल- 'सूर्य', 'चन्द्र', 'मंगल', 'बुध', 'गुरु', 'शुक्र' और 'शनि'- ये सातों ग्रह यदि एक ही भाव में एक साथ बैठे हों तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, धनी, दानी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा त्रिलोकी का पालनकर्ता होता है।

स्त्री-जातक

सामान्यतः स्त्री अथवा पुरुष की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का फलादेश एक जैसा ही होता है, तथापि कुछ ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति के कारणस्वरूप स्त्रियों के संबंध में उनके फलादेश में अन्तर आ जाता है। ऐसे अन्तर वाले फलादेश के संबंध में आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए-

(१) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि में हों, वह स्वाभाविक स्त्री-आकृति वाली होती है।

(२) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि में हों, वह पुरुषों की सी आकृति वाली होती है।

(३) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि में हों और उन पर शुभ-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, वह श्रेष्ठ शीलवती तथा सुन्दर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली होती है।

(४) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि में हों और उन पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, वह पापिष्ठा तथा बुरे कर्म करने वाली होती है।

(५) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि में हों और उन पर शुभ-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, उसे मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए।

(६) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि में हों और उन पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, उसे भी मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए। जो ग्रह अधिक बली हो, उसी के अनुसार स्त्री का स्वभाव भी समझना चाहिए।

(७) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल-ग्रह बैठा हो, उसका पति निरुद्यमी होता है।

(८) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न अथवा सातवें भाव पर शुभ-ग्रहों की दृष्टि न हो, उसका पति भी निरुद्यमी होता है।

(९) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सातवें भाव में बुध तथा शनि बैठे हों, उसका पति नपुंसक होता है।

(१०) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सातवें भाव में स्थिर राशि हो, उसका पति सदैव पास बना रहता है।

(११) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सातवें भाव में चर राशि हो, उसका पति सदैव परदेश में रहता है।

(१२) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सातवें भाव में द्वि-स्वभाव राशि हो, उसका पति घर तथा परदेश में- दोनों जगह रहता है।

(१३) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में 'सूर्य' बैठा हो, वह अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है।

(१४) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में 'मंगल' बैठा हो, वह बाल-विधवा होती है।

(१५) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में 'शनि' बैठा हो तथा सभी पाप ग्रहों की उस पर दृष्टि हो, वह बिना विवाह के ही रह जाती है। यदि विवाह हो भी जाय तो उसके पति की शीघ्र मृत्यु होती है।

(१६) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में सभी पाप-ग्रह एकत्र हों, वह अवश्य विधवा होती है।

(१७) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में शुभग्रह बलहीन हों तथा पापग्रह भी हों, वह अपने पति को छोड़ कर दूसरा पति करती है।

(१८) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में एक पाप ग्रह बलहीन बैठा हो और उसे कोई शुभग्रह न देखता हो, उसे उसका पति त्याग देता है।

(१९) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में चन्द्र-मंगल की युति हो, वह अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष-गमन करती है।

(२०) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में मेष, वृश्चिक, मकर अथवा कुम्भ - इन में से किसी राशि वाली 'लग्न' हो और उसमें चन्द्रमा तथा शुक्र- दोनों ही बैठे हों तथा उन पर पापग्रहों की दृष्टि भी पड़ रही हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुष-गमन करती है।

(२१) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के लग्न (प्रथम भाव) में चन्द्रमा तथा शुक्र - दोनों बैठे हों, वह ईर्ष्यालु-स्वभाव की, दूसरों को सन्ताप देने वाली तथा स्वयं सदैव सुखी रहने वाली होती है।

(२२) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के लग्न (प्रथम भाव) में बुध तथा चन्द्रमा - दोनों बैठे हों, वह संगीत-कुशला, गुणवती, सुखी, सुन्दरी तथा सब की प्रिय होती है।

(२३) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के लग्न (प्रथम भाव) में बुध, शुक्र तथा चन्द्रमा - तीनों बैठे हों, वह अनेक प्रकार के सुखों से युक्त, धनी तथा गुणवती होती है।

(२४) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न से आठवें स्थान (अष्टम भाव) में कोई पापग्रह बैठा हो तथा दूसरे भाव में कोई शुभग्रह बैठा हो, उसकी मृत्यु अपने पति की मृत्यु से पहले होती है।

(२५) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में वृष, वृश्चिक, सिंह अथवा कन्या - इनमें से किसी भी राशि पर चन्द्रमा स्थित हो, वह अल्प-पुत्रों वाली होती है।

(२६) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में मंगल, शुक्र तथा बुध बलवान हों तथा लग्न में सम राशि हो, वह ब्रह्म विद्या में प्रवीण, अनेक शास्त्रों की ज्ञाता तथा ब्रह्मवादिनी होती है।

(२७) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह बैठा हो, वह संन्यासिनी हो जाती है। नवें भाव में जो ग्रह बैठा हो, उसी की प्रव्रज्या समझनी चाहिए। सूर्य से तपस्विनी, चन्द्रमा से कपालिनी, मंगल से रक्तवस्त्र-धारिणी, बुध से दण्डी, गुरु से यति, शुक्र से चक्रिणी तथा शनि से नग्ना (दिगम्बरी) होती है।

(२८) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के केन्द्र में शुभग्रह बैठे हों तथा छठे, नवें अथवा बारहवें भाव में पाप ग्रह हो तथा सप्तम भाव में पुरुष-राशि हो वह शान्त स्वभाव की, ऐश्वर्यशालिनी, पुत्रवती, रानी अथवा

रानी जैसी होती है।

(२६) जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में बुध उच्च का होकर लग्न में बैठा हो तथा गुरु एकादश भाव में हो, वह ऐश्वर्यशालिनी, रानी अथवा रानी जैसी होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।

राजयोग

जिनकी जन्म कुण्डलियों में आगे लिखे गए योग हों, वे राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होते हैं—

(१) यदि दसवें, ग्यारहवें, पहले, दूसरे तथा तीसरे भावों में सभी शुभ ग्रह बैठे हों तो राजा हो।

(२) यदि लग्न में चन्द्रमा और गुरु, दशम भाव में शुक्र एवं बुध, मकर अथवा कुंभ राशि के शनि हो तो जातक राजा अथवा राजतुल्य होता है।

(३) यदि गुरु-बुध की युति हो अथवा गुरु-बुध के द्वारा दृष्ट हो तथा गुरु मीन अथवा धनु राशि का होकर केन्द्र में बैठा हो तो जातक महाराजा होता है।

(४) यदि चन्द्रमा केन्द्र में हो तथा गुरु लग्न को छोड़कर नवम अथवा पंचम दृष्टि से किसी केन्द्र को देख रहा हो, साथ ही बलवान दृष्टि से शुक्र को भी देखता हो तो जातक राजा के समान भाग्यशाली है।

(५) यदि गुरु लग्न में तथा बुध केन्द्र में बैठा हो और नवम भाव के स्वामी द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक राजमान्य होता है।

भू० सं० २००८

कु० र०

(६) यदि गुरु सप्तम, नवम अथवा पंचम भाव में बैठा हो तथा लग्नेश की उस पर दृष्टि हो तो जातक राजमान्य होता है।

(७) यदि शनि केन्द्र, पंचम अथवा नवमभाव में अपनी उच्च राशि अथवा स्व त्रिकोण राशि में हो तथा दशम भाव पर उसकी दृष्टि भी हो तो जातक राजमान्य होता है।

(८) यदि नवमभाव का स्वामी चन्द्रमा के साथ द्वितीय भाव में बैठा हो तो जातक राजमान्य हो।

(९) यदि चन्द्रमा मंगल के साथ द्वितीय अथवा तृतीय भाव में बैठा हो अथवा राहु के साथ पंचम भाव में बैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१०) यदि जन्म-कुण्डली में पाँच ग्रह उच्च के हों तो जातक चक्रवर्ती राजा अथवा मंत्री होता है।

(११) यदि जन्मकुण्डली में बुध उच्च का हो, मंगल तथा शनि मकर राशि में हो तथा गुरु, चन्द्रमा एवं शुक्र - तीनों धनु राशि में हों तो ऐसा जातक महाराजा होता है।

(१२) यदि सूर्य सिंह राशि में, चन्द्रमा मीन में, मंगल मकर में, शनि कुंभ में हो तथा लग्न भी मीन राशि का हो तो जातक महाराजा होता है।

(१३) यदि मंगल मेष राशि का होकर लग्न में बैठा हो तो जातक राजा होता है।

(१४) यदि गुरु कर्क लग्न में हो तथा मंगल मेष राशि का होकर दशमभाव में बैठा हो तो जातक राजनीतिज्ञ एवं शत्रुजयी राजा होता है।

(१५) यदि बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो, दशम भाव में मेष का सूर्य हो तथा एकादश भाव में शनि, शुक्र और बुध तीनों बैठे हों, तो जातक अत्यन्त पराक्रमी राजा होता है।

(१६) यदि मकर राशि की लग्न में शनि बैठा हो, सूर्य सिंह राशि में, बुध मिथुन राशि में,

मंगल मेष राशि में, शुक्र तुला राशि में तथा चन्द्रमा कर्क राशि में हो तो जातक समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का अधिपति (महाराजा) होता है।

(१७) यदि शुक्र मिथुन राशि में हो, बुध कन्या राशि का होकर लग्न में बैठा हो, मंगल तथा शनि मकर राशि में हों तथा चन्द्रमा और गुरु मीन राशि में हों तो जातक शत्रु-नाशक, अत्यन्त पराक्रमी तथा ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

(१८) यदि सिंह राशि का सूर्य लग्न में बैठा हो, चन्द्रमा मेष राशि में, शनि कुंभ राशि में, गुरु धनु राशि में तथा मंगल मकर राशि में बैठे हों तो जातक राजाधिराज होता है।

(१९) यदि मेष राशि का गुरु लग्न में बैठा हो, चन्द्रमा चतुर्थ भाव में तथा शुक्र दशम भाव में हो तो जातक बहुत बड़ा राजा होता है।

(२०) यदि कर्क राशि का गुरु लग्न में बैठा हो तथा सप्तम, चतुर्थ अथवा दशम भाव में शुक्र, शनि और मंगल हों तो जातक अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

(२१) यदि वृष का चन्द्रमा लग्न में हो तथा चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में सूर्य, गुरु तथा शनि बैठे हों तो जातक अत्यन्त प्रतापी एवं यशस्वी राजा होता है।

(२२) यदि गुरु, चन्द्र, बुध तथा शुक्र लग्न, तृतीय, नवम एवं एकादश भाव में बैठे हों तथा मकर का शनि लग्न में बैठा हो तो जातक राजाधिराज होता है।

(२३) यदि मीन राशि का शुक्र बुध के साथ लग्न में बैठा हो, मंगल मकर राशि पर हो तथा गुरु एवं चन्द्रमा धनु राशि पर हो तो जातक चक्रवर्ती राजा होता है।

(२४) यदि गुरु उच्च का होकर केन्द्र में बैठा हो तथा शुक्र दशम भाव में हो तो जातक पद्म

यशस्वी राजा होता है।

(२५) यदि मेष के गुरु तथा सूर्य लग्न में हों, मंगल दशम भाव में हो तथा शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा नवम भाव में हों तो जातक दिग्विजयी राजा होता है।

(२६) यदि मेष में सूर्य, कर्क में गुरु तथा तुला राशि में शनि और चन्द्रमा हो तो ऐसा जातक बहुत बड़ा राजा होता है।

(२७) यदि द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा शुक्र, गुरु एवं चन्द्रमा केन्द्र में हों, परन्तु वे न तो अस्त हों और न शत्रु-ग्रहों दृष्ट ही हों तो जातक शत्रुजयी एवं अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

(२८) यदि कर्क राशि में गुरु, मेष में सूर्य, मीन में शुक्र तथा वृष राशि में चन्द्रमा हो और वह शनि द्वारा दृष्ट भी हो, तो जातक अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

(२९) यदि पंचम भाव में बुध, शुक्र तथा गुरु हों, परन्तु वे अस्त न हों; मकर का मंगल सूर्य से रहित हो तथा नवम भाव में शनि बैठा हो तो जातक राजाधिराज होता है।

(३०) यदि गुरु तथा शुक्र चतुर्थ भाव में हों तो जातक धनी, पराक्रमी एवं पृथ्वीपति होता है।

(३१) यदि कर्क राशि में गुरु के साथ चन्द्रमा बैठा हो तो जातक कश्मीर देश का राजा होता है।

(३२) यदि उच्च राशि के चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। यदि चन्द्रमा बलवान हो तो किसी भी अन्य स्थान का राजा हो सकता है।

(३३) यदि जन्म राशि का स्वामी लग्न में हो तथा लग्नेश बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो नीच-कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी राजा होता है।

(३४) यदि मेष का सूर्य चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो जातक राजा होता है।

(३५) यदि गुरु तथा शुक्र उच्च राशिगत होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो उसका जातक राजा अथवा राजमन्त्री होता है।

(३६) यदि पापग्रह लग्न में हो और उस पर कर्क के गुरु की दृष्टि पड़ रही हो तो उक्त जातक बड़ा धनी तथा यशस्वी राजा अथवा राजा के समान होता है।

(३७) यदि गुरु मकर राशि के अतिरिक्त किसी अन्य राशि का होकर लग्न में बैठा हो अथवा कर्क राशिगत होकर कर्क के नवांश में हो तो जातक राजा होता है।

(३८) यदि गुरु चन्द्रमा के साथ केन्द्र में बैठा हो तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो एवं कोई ग्रह नीच का न हो तो जातक यशस्वी राजा होता है।

(३९) यदि द्वितीय भाव में बुध, शुक्र और गुरु बैठे हों तथा सप्तम भाव में मंगल और चन्द्रमा हों तो जातक शत्रुजयी एवं अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

(४०) यदि शुक्र नवम भाव में हो, चन्द्रमा दशम भाव में हो तथा अन्य सभी ग्रह एकादश भाव में हों तो जातक राजा होता है।

(४१) यदि राहु तथा मंगल षष्ठ भाव में हों तथा बुध और सूर्य दशम भाव में हों तो जातक राजा होता है।

(४२) यदि वृष राशि में गुरु, मिथुन में चन्द्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में सूर्य और बुध तथा तुला राशि में शुक्र हो तो जातक महाराजा होता है।

(४३) यदि बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो तथा अन्य सभी ग्रह यदि बलवान हों तो भी जातक धनी, दीर्घायु, सुखी, सेनापति, राजमान्य तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

(४४) यदि धनु का मंगल और शुक्र, मीन का बृहस्पति, तुला का बुध तथा नीच के शनि और चन्द्रमा हों तो ऐसा जातक धन-हीन राजा होता है।

(४५) यदि मीन का शुक्र अथवा बुध हो, द्वितीय भाव में राहु हो तथा लग्न में सूर्य हो तो जातक भोगी, दानी, यशस्वी, राजमान्य एवं पृथ्वी का स्वामी होता है।

(४६) यदि तृतीय भाव में गुरु तथा एकादश भाव में चन्द्रमा हो तो जातक प्रसिद्ध राजा होता है।

(४७) यदि पंचम भाव में गुरु एवं दशम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक वंश का पालक, बुद्धिमान, जितेन्द्रिय तथा तपस्वी राजा होता है।

(४८) यदि तुला, धनु अथवा मीन राशि का शनि लग्न में बैठा हो तो जातक पृथ्वीपति (राजा) होता है।

(४९) यदि कर्क में गुरु, एकादश भाव में चन्द्रमा, बुध और शुक्र तथा मेष राशि में सूर्य हो तो जातक पृथ्वीपति होता है।

(५०) यदि लग्न में शनि व चन्द्रमा तथा अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक वेश्या-प्रेमी मानी राजा होता है।

(५१) यदि छठे, आठवें, दूसरे, तीसरे तथा बारहवें भाव में सभी ग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक राजसिंहासन पर बैठता है। इसे 'सिंहासन योग' भी कहते हैं।

(५२) यदि अष्टम भाव में पापग्रह तथा लग्न में अन्य शुभग्रह हों तो ऐसा जातक समाज का नेता होता है। इसे 'ध्वज योग' भी कहते हैं।

(५३) यदि सभी ग्रह चारों केन्द्रों में स्थित हों तो जातक महायशस्वी राजा होता है। इसे 'चतुःसागर योग' कहते हैं।

(५४) यदि पंचम, ~~नवम~~, सप्तम तथा लग्न – इन भावों में सभी ग्रह हों तो जातक अपने कुल को पालने वाला ऐश्वर्यशाली होता है। इसे 'हंस योग' भी कहते हैं।

(५५) यदि शुक्र तुला में, मंगल मेष में तथा गुरु स्वराशि पर स्थित हो तो ऐसा जातक राजा होता है।

(५६) यदि सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला तथा मकर – इन चारों राशियों में स्थित हों तो जातक महाधनी राजा होता है। इसे भी 'चतुःसागर योग' कहा जाता है।

(५७) यदि सभी ग्रह कर्क, मिथुन, मीन, कन्या तथा धनु राशि में स्थित हों तो ऐसा जातक राजसिंहासन पर बैठता है। इसे 'दण्ड योग' भी कहते हैं।

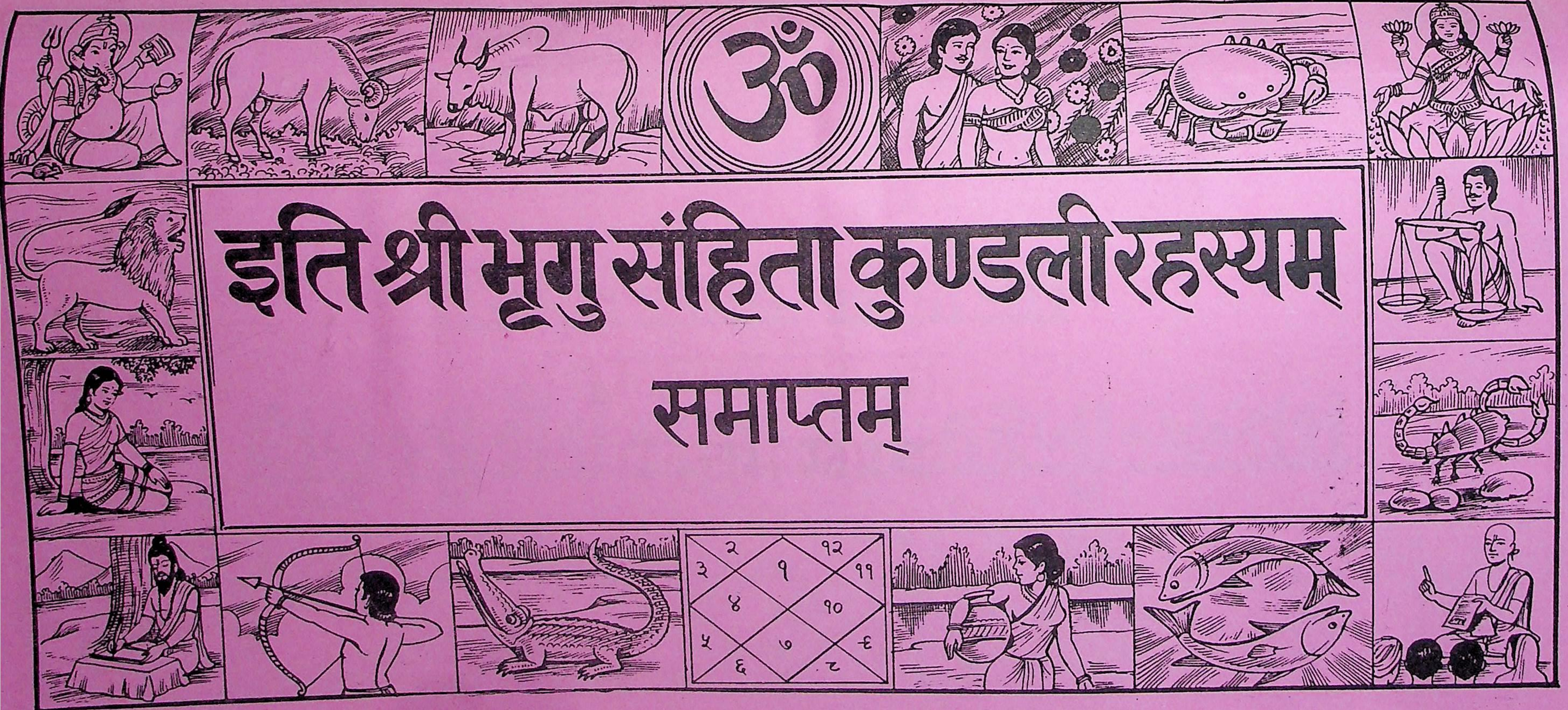
(५८) यदि प्रथम, द्वितीय तथा द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्य सभी भावों में सभी ग्रहों की स्थिति हो तो ऐसा जातक अपने कुल का प्रधान, गुणी, धनी, प्रतापी, धैर्यवान, सुखी, प्रियवादी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। इसे 'वापी योग' भी कहते हैं।

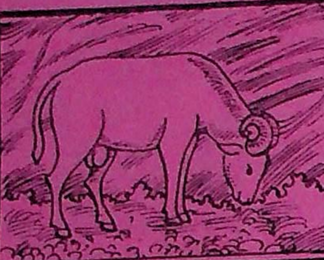
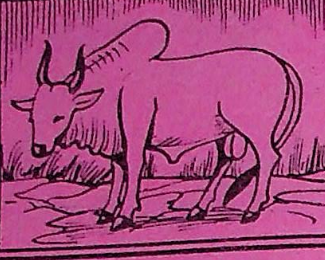
(५९) यदि सूर्यादि सातों ग्रह जन्मकुण्डली के दशम तथा एकादश भाव में स्थित हों अथवा लग्न और सप्तम भाव में बैठे हों तो नीच कुल में उत्पन्न जातक भी राजा होता है।

(६०) यदि लग्न अथवा किसी भी भाव से आरम्भ करके क्रमशः सातों भावों में सातों ग्रह स्थित हों तो ऐसा जातक महाराजा होता है। इसे 'एकावली योग' भी कहते हैं।

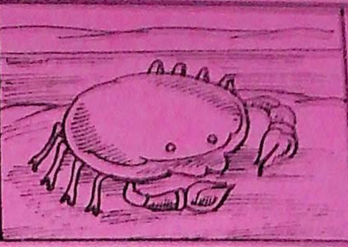
(६१) यदि सभी ग्रह मेष, कुंभ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्चिक राशि में हों तो ऐसा जातक राजा अथवा राजा द्वारा पूजित सब प्रकार के ऐश्वर्यों का स्वामी होता है।

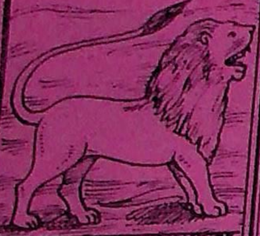
॥समाप्तोऽयं ग्रंथः॥


ॐ
इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्
समाप्तम्
२
१२
३
१
११
४
१०
५
७
९
६
८








इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

पञ्चम खण्डः समाप्तम्